लेव तोलस्तोय

युद्ध और शान्ति

लेव तोलस्तोय

युद्ध और शान्ति

उपन्यास
चार खण्डों में

खण्ड 3

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादक : डॉ० मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : देमेन्ती श्मारिनोव

ЛЕВ ТОЛСТОЙ

ВОЙНА И МИР

Том III

На языке хинди

LEO TOLSTOY

WAR AND PEACE

Vol. III

In Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-001494-8
ISBN 5-05-002099-9

अनुक्रम

भाग १

१

सन् १८११ के अन्त में पश्चिमी यूरोप में ख़ूब ज़ोर से सैनिक शक्ति बढ़ाने और फ़ौजें जमा करने का काम शुरू हो गया तथा १८१२ में यह विराट सैनिक दल-बल – लाखों-लाख लोग (यदि परिवहन और रसद के लोगों को भी इनमें शामिल कर लिया जाये) पश्चिम से पूरब यानी रूस की सीमाओं की ओर बढ़ने लगे। ठीक इसी तरह से रूसी सेनायें भी १८११ से अपनी इन सीमाओं पर जमा हो रही थीं। १२ जून को पश्चिमी यूरोप की सेनाओं ने रूस की सीमाओं को लांघा और युद्ध आरम्भ हुआ यानी मानव के विवेक तथा मानवीय प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल एक घटना घटी। लाखों लोगों ने एक-दूसरे के विरुद्ध इतने अनगिनत अपराध किये, एक-दूसरे की आंखों में धूल झोंकी, एक-दूसरे के साथ ग़द्दारी, चोरी तथा जालसाज़ी की, नक़ली नोट जारी किये, लूट-मार की, आगें लगायीं और हत्यायें कीं कि दुनिया भर के सारे न्यायालय शताब्दियों तक इनके पूरे ब्योरे एकत्रित नहीं कर पायेंगे तथा मज़े की बात यह है कि ऐसा करनेवाले लोग इस सब को अपराध नहीं मानते थे।

यह असाधारण घटना क्यों घटी? इसके क्या कारण थे? इतिहासज्ञ भोले-भाले विश्वास के साथ कहते हैं कि इस घटना के कारण थे – ओल्डेंबर्ग के ड्यूक के साथ नेपोलियन द्वारा किया गया अन्याय*, महाद्वीपीय प्रणाली की अवहेलना**, नेपोलियन की सत्ता-सम्बन्धी महत्त्वाकांक्षा, ज़ार अलेक्सान्द्र की दृढ़ता, राजनयिकों की भूलें, आदि, आदि।

---

* १८०७ में रूस और फ़्रांस के बीच हुई तिलज़ीत की सन्धि के अनुसार (उपन्यास के पहले खण्ड में इसका उल्लेख है) ओल्डेंबर्ग की रियासत की स्वाधीनता स्वीकार की गयी थी। ज़ार अलेक्सान्द्र की मौसी ओल्डेंबर्ग के ड्यूक की पत्नी थी। किन्तु १८१० में नेपोलियन ने इस रियासत को अपने राज्य में मिला लिया और ड्यूक को सत्ता से वंचित कर दिया। – सं०

** इस प्रणाली के अनुसार रूस को इंगलैंड के साथ व्यापार नहीं करना चाहिये था। – सं०

अगर यही कारण थे तो मेतेरनिख़ *, रुम्यान्त्सेव ** तथा टालीरान *** के लिये दोपहर के अन्तराल और शाम की पार्टी शुरू होने के पहले के समय में ज़रा अच्छी तरह से कोशिश करके कोई नोट लिख देना या नेपोलियन के लिये ज़ार अलेक्सान्द्र को इतना लिख भेजना ही काफ़ी होता: सम्राट, मेरे भाई, मैं ओल्डेंबर्ग के ड्यूक को उसकी रियासत लौटाने को तैयार हूं – और युद्ध न होता।

इस बात को समझा जा सकता है कि उस वक़्त के लोगों को यह मामला ऐसे ही प्रतीत हुआ था। यह भी समझा जा सकता है कि इंगलैंड के षड्यन्त्र ही नेपोलियन को युद्ध के कारण प्रतीत हुए थे (जैसाकि उसने सेंट हेलेन द्वीप पर अंग्रेज़ों के बन्दी के रूप में बिताये गये वर्षों के समय कहा भी था); यह भी समझना कठिन नहीं कि इंगलैंड के संसद-सदस्यों को नेपोलियन की महत्त्वाकांक्षा ही युद्ध का कारण प्रतीत हुई थी, कि ओल्डेंबर्ग के ड्यूक को उसके साथ किया गया अन्याय ही युद्ध का कारण प्रतीत हुआ था, कि व्यापारियों को महाद्वीपीय प्रणाली ही, जिसके कारण यूरोप तबाह हो रहा था, युद्ध का कारण प्रतीत हुई थी, कि पुराने सैनिकों तथा जनरलों ने उन्हें काम में लगाने की आवश्यकता को ही युद्ध का मुख्य कारण माना था, उस समय के राजतंत्रवादियों को ऐसा लगा था कि अच्छे सिद्धांतों की पुन:स्थापना ज़रूरी थी और उस वक़्त के राजनयिकों को इसका कारण यह प्रतीत हुआ कि सन् १८०६ में रूस और आस्ट्रिया के बीच हुई सन्धि को काफ़ी होशियारी से नेपोलियन से छिपाया नहीं गया था और यह कि नोट नं० १७८ अच्छे ढंग से नहीं लिखा गया था। यह समझना कठिन नहीं है कि ये तथा अन्य असंख्य कारण, जिनकी संख्या असंख्य विभिन्न दृष्टिकोणों पर निर्भर करती है, उस समय के लोगों के सामने प्रस्तुत किये गये। किन्तु हमें, उनके वंशजों को, जो

---

* क्लेमेन्स मेतेरनिख़ (१७७३–१८५६) – १८०९–१८२१ में आस्ट्रिया का विदेश-मन्त्री और वास्तव में राजाध्यक्ष। – सं०

** निकोलाई रुम्यान्त्सेव (१७५४–१८२६) – १८०७–१८१४ में रूस का विदेश-मन्त्री और १८१०–१८१२ में रूस की राज्य-परिषद का अध्यक्ष। – सं०

*** शार्ल मोरिस टालीरान (१७५४–१८३८) – फ़्रांसीसी राजकीय कार्यकर्त्ता, १७९८–१८०७ तथा १८१४–१८१५ में विदेश-मन्त्री। – सं०

इस घटना के बहुत बड़े पैमाने के सभी पक्षों पर सोच-विचार करते हैं और इसके सरल तथा भयानक अर्थ की तह में जाना चाहते हैं, ये कारण पर्याप्त प्रतीत नहीं होते। हम यह समझने में असमर्थ हैं कि लाखों-लाख ईसाइयों ने इस कारण एक-दूसरे की हत्या की, एक-दूसरे को यातना दी कि नेपोलियन सत्ता के मामले में बड़ा महत्त्वाकांक्षी था, कि ज़ार अलेक्सान्द्र बहुत दृढ़ थे, कि इंगलैंड ने छल-बल की नीति से काम लिया, कि ओल्डेंबर्ग के ड्यूक के साथ अन्याय हुआ था। यह समझ पाना सम्भव नहीं कि इन परिस्थितियों का हत्याओं और हिंसा-अत्याचार के साथ क्या सम्बन्ध है? क्या यूरोप के दूसरे छोर के लोगों ने स्मोलेन्स्क और मास्को गुबेर्निया (ज़िले) के हज़ारों लोगों को केवल इसलिये मौत के घाट उतारा और लूटा तथा ख़ुद भी उनके द्वारा मौत के शिकार हुए कि ड्यूक के साथ अन्याय हुआ था?

हमें – उनके वंशजों को, जो इतिहासज्ञ नहीं हैं और अनुसन्धान-प्रक्रिया की तरंग में नहीं बहते हैं और इसलिये किसी भी प्रकार की बाधा के बिना सामान्य सूझ-बूझ से काम लेते हुए घटनाओं के तथ्यों पर विचार कर सकते हैं, इस घटना के असंख्य कारण प्रतीत होते हैं। इन कारणों की खोज करते हुए हम जितनी अधिक गहराई में जाते हैं, उतने ही अधिक कारण हमारे सामने आते जाते हैं और हर कारण अलग से, या अनेक कारण एकसाथ ही हमें अपने तौर पर न्यायसंगत तथा इस घटना के विराट पैमाने को ध्यान में रखते हुए अपनी तुच्छता तथा असमर्थता (सभी आकस्मिक कारणों के मेल के बिना) के कारण ऐसी घटना के लिये अनुचित भी लगते हैं। अपनी सेनाओं को विस्चुला से पीछे हटाने और ओल्डेंबर्ग की रियासत को ड्यूक को लौटाने से नेपोलियन का इन्कार करना भी हमें वैसे ही तुच्छ कारण प्रतीत होता है जैसे कि किसी फ़्रांसीसी कॉरपोरल का फ़्रांसीसी सेना में दूसरी बार सेवा करने की इच्छा या अनिच्छा प्रकट करना। वह इसलिये कि अगर एक कॉरपोरल, दूसरा कॉरपोरल, तीसरा कॉरपोरल, हज़ारों कॉरपोरल और सैनिक फ़ौज में जाने को तैयार न होते तो नेपोलियन की सेना में उतने ही लोग कम हो जाते और युद्ध न हो पाता।

अगर नेपोलियन इस मांग का बुरा न मानता कि अपनी सेनाओं को विस्चुला से पीछे हटा ले और अपनी फ़ौजों को आगे बढ़ने का हुक्म न देता तो युद्ध न होता। किन्तु यदि सभी सार्जेंट दूसरी बार सेना में

जाने को तैयार न होते तो भी युद्ध न होता। युद्ध तो तब भी न हो पाता, यदि इंगलैंड षड्यन्त्र न करता, यदि ओल्डेंबर्ग का ड्यूक न होता और ज़ार अलेक्सान्द्र अपने को अपमानित न अनुभव करता, रूस में निरंकुश सरकार न होती, फ़्रांसीसी क्रांति न होती और उसके बाद अधिनायकतन्त्र तथा साम्राज्य की स्थापना न होती और वह सब न होता जिसके कारण फ़्रांसीसी क्रांति हुई, आदि, आदि। इनमें से एक कारण की अनुपस्थिति में भी कुछ न हुआ होता। तो यों कहना चाहिये कि इन सभी, असंख्य कारणों ने एकसाथ मिलकर वह किया, जो हुआ। इसलिये इस युद्ध का कोई एकमात्र कारण नहीं था और युद्ध इसी वजह से हुआ कि उसे होना था। मानवीय भावनाओं और विवेक को त्यागकर लाखों लोगों को अपने जैसे लोगों की हत्या करने के लिये उसी तरह पश्चिम से पूरब की ओर जाना था, जैसे कुछ शताब्दियां पहले लोगों की भारी भीड़ अपने ही जैसे लोगों की हत्या करने के लिये पूरब से पश्चिम की ओर गयी थी।*

नेपोलियन और ज़ार अलेक्सान्द्र के कार्य-कलाप भी, जिनके शब्दों पर शायद यह निर्भर करता था कि युद्ध हो या न हो, उन सैनिकों के कार्य-कलापों की तरह ही स्वतन्त्र नहीं थे जो शान्तिकाल में अपने नाम की परची निकल आने पर या युद्धकाल में अनिवार्य भरती के फलस्वरूप युद्ध-क्षेत्र में गये। इसके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता था, क्योंकि अगर नेपोलियन और अलेक्सान्द्र की इच्छा को यानी उन लोगों की इच्छा को पूरा होना था जिनपर शायद युद्ध का होना या न होना निर्भर करता था, तो यह आवश्यक था कि अनेक परिस्थितियां एकसाथ सामने आतीं, जिनमें से एक की अनुपस्थिति में भी यह घटना नहीं घट सकती थी। यह आवश्यक था कि लाखों लोग, जिनके हाथों में वास्तविक शक्ति थी, वे सैनिक जो बन्दूक़ें-तोपें चलाते थे, रसद पहुंचाते और तोपें ले जाते थे, इन इने-गिने तथा दुर्बल लोगों की इच्छा पूरी करने को राज़ी हो जाते और असंख्य जटिल तथा विविधतापूर्ण कारण उन्हें ऐसा करने को प्रेरित करते।

विवेकहीन घटनाओं के स्पष्टीकरण के लिये (अर्थात् ऐसी घटनाओं के स्पष्टीकरण के लिये जिनकी बुद्धिसंगतता को समझने में हम असमर्थ

---

* १३-१५वीं शताब्दियों के मंगोल-तातार आक्रमणों से अभिप्राय है। – सं०

होते हैं) इतिहास में भाग्यवाद का दामन थामे बिना काम नहीं चलता। इतिहास की ऐसी घटनाओं को हम जितनी अधिक बुद्धिसंगतता या विवेक से स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं, हमारे लिये वे उतनी ही अधिक विवेकहीन और समझ में न आनेवाली हो जाती हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने लिये जीता है, निजी लक्ष्यों की प्राप्ति के हेतु अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग करता है और पूरे मन से ऐसा अनुभव करता है कि वह किसी कार्य को करे या न करे। किन्तु जैसे ही किसी एक क्षण में वह उस कार्य को कर डालता है, वैसे ही वह पत्थर की लकीर की तरह परिवर्तनहीन हो जाता है, इतिहास का अंग बन जाता है और इतिहास में उसका स्वतन्त्र नहीं, बल्कि पूर्वनियत महत्त्व होता है।

हर इन्सान की ज़िन्दगी के दो पहलू हैं – एक पहलू तो उसका व्यक्तिगत जीवन है जिसमें वह अपनी रुचियों की अमूर्त्तता के अनुपात में स्वतन्त्र होता है। उसके जीवन का दूसरा पक्ष दलगत है जिसमें वह अनिवार्य रूप से उन नियमों का अनुकरण करता है जो उसके लिये पहले से निर्धारित कर दिये जाते हैं।

चेतन रूप से मानव अपने लिये जीता है, किन्तु अचेतन रूप से वह ऐतिहासिक, सभी लोगों यानी सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन बनता है। उसके द्वारा किया गया काम अपरिवर्तनीय हो जाता है और उसका वह काम उसी समय किये गये लाखों अन्य लोगों के काम के साथ मिलकर ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त कर लेता है। सामाजिक सोपान पर आदमी जितनी अधिक ऊंचाई पर खड़ा होता है, जितने अधिक लोगों के साथ उसका सम्बन्ध जुड़ा होता है, दूसरे लोगों पर उसकी जितनी अधिक सत्ता होती है, उसकी हर गति-विधि की पूर्व-नियतता तथा अनिवार्यता उतनी ही अधिक सुस्पष्ट होती है।

"बादशाह का दिल है भागवान के हाथ में।"

बादशाह – गुलाम है इतिहास का।

इतिहास – यानी मानवजाति का अचेतन, सार्विक, दलगत जीवन बादशाहों के जीवन के हर पल का अपने लक्ष्यों के साधन के रूप में उपयोग करता है।

इस चीज़ के बावजूद कि किसी भी अन्य समय की तुलना में इस वक़्त यानी १८१२ में नेपोलियन को ऐसा लगता था कि अपने लोगों का ख़ून बहाना या न बहाना उसके ही निर्णय पर निर्भर करता है (जैसाकि ज़ार अलेक्सान्द्र ने उसे अपने अन्तिम पत्र में लिखा भी था), मगर वास्तव में किसी भी अन्य समय की तुलना में वह इस वक़्त उन अनिवार्य नियमों की सबसे अधिक कड़ी गिरफ़्त में था जो उसे सार्विक ध्येय अर्थात् इतिहास के लिये वह करने को विवश कर रहे थे जिसका होना ज़रूरी था, जबकि उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपनी इच्छा से ही यह सब कुछ कर रहा है।

पश्चिम के लोग इसलिये पूरब की ओर बढ़ रहे थे कि एक-दूसरे की जान लें। कारणों के संयोग के नियमानुसार हज़ारों ऐसे छोटे-मोटे अन्य कारण भी एकसाथ आ मिले ताकि पश्चिम के लोग पूरब की ओर बढ़ें और युद्ध हो – महाद्वीपीय प्रणाली की अवहेलना के कारण नाराज़गी, ओल्डेंबर्ग के ड्यूक के साथ ज़्यादती, फ़्रांसीसी सेनाओं का प्रशा में घुस जाना, जो (नेपोलियन को ऐसा ही लगा) केवल इसलिये किया गया था कि बल के आधार पर शान्ति प्राप्त की जाये, फ़्रांसीसी सम्राट का युद्ध-प्रेम और उसपर हावी होनेवाली लड़ाइयों की आदत और इसी के अनुरूप फ़्रांसीसी लोगों का मूड, जंग की शानदार तैया-रियां और उनपर होनेवाला बहुत बड़ा ख़र्च और इस ख़र्च को लौटाने की आवश्यकता में दिलचस्पी, ड्रेसडेन में फ़्रांसीसी सम्राट को नशे में ला देनेवाला उसका ज़ोरदार आदर-सत्कार, कूटनीतिक वार्ताएं, जो तत्कालीन लोगों की दृष्टि में केवल इसी सच्ची भावना से की गयी थीं कि शान्ति स्थापित हो सके, मगर जिनसे दोनों पक्षों के अहंभाव को केवल ठेस ही लगी थी, और इसी तरह के लाखों-लाख अन्य आक-स्मिक कारण थे जो अनिवार्य रूप से घटनेवाली इस घटना के अनुरूप बन गये थे।

सेब जब पककर नीचे गिरता है, तो किस कारण? गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार या इसलिये कि उसकी डंडी सूख जाती है या इस कारण कि धूप उसे सुखाती है, कि वह भारी हो जाता है, कि हवा उसे झकझोरती है या इसलिये कि पेड़ के नीचे खड़ा हुआ लड़का उसे खाना चाहता है?

इनमें से कोई भी कारण इसके लिये ज़िम्मेदार नहीं है। यह तो

केवल उन परिस्थितियों का मेल है जिनके अन्तर्गत जीवन-सम्बन्धी स्वाभाविक तथा स्वतःस्फूर्त घटना घटती है। वह वनस्पतिशास्त्री, जो इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि सेब इसलिये गिरता है कि उसके कोशिकीय ऊतक मुरझा गये हैं, उतना ही सही और ग़लत भी होगा जितना पेड़ के नीचे खड़ा हुआ लड़का जो यह कहेगा कि सेब इसीलिये गिरा कि वह उसे खाना चाहता था और उसने इसके लिये प्रार्थना की थी। इसी तरह वह व्यक्ति भी सही और साथ ही ग़लत होगा जो यह कहेगा कि नेपोलियन इस कारण मास्को गया कि वह ऐसा चाहता था और इसलिये तबाह हुआ कि ज़ार अलेक्सान्द्र उसकी तबाही चाहते थे। इसी प्रकार वह आदमी भी सही और ग़लत होगा जो यह कहेगा कि नीचे से खोदा गया तथा हिलता-डुलता हुआ हज़ारों टन का पर्वत इस कारण नीचे जा गिरा कि आख़िरी मज़दूर ने उसपर कुदाल से बहुत ज़ोरदार आख़िरी चोट की थी। ऐतिहासिक घटनाओं के मामले में तथाकथित महान व्यक्ति एक लेबल के समान ही होते हैं जो उस घटना को कोई नाम प्रदान करते हैं, मगर उस घटना से स्वयं उनका न्यूनतम सम्बन्ध होता है।

उनका प्रत्येक कार्य-कलाप, जो उन्हें अपनी स्वतन्त्र इच्छा का परिणाम प्रतीत होता है, ऐतिहासिक अर्थ में स्वतन्त्र नहीं होता, वह इतिहास-क्रम की एक कड़ी और अनन्तकाल से पूर्वनियत होता है।

२

२६ मई को नेपोलियन ड्रेसडेन से रवाना हुआ जहां वह तीन हफ़्ते तक दरबारियों से घिरा रहा था। उसके दरबारियों में राजकुमार, ड्यूक, बादशाह और एक शहंशाह यानी सम्राट तक भी शामिल था। रवाना होने से पहले नेपोलियन ने उन राजकुमारों, बादशाहों और सम्राट के प्रति अपना स्नेह प्रदर्शित किया जो इसके योग्य थे और उन बादशाहों और राजकुमारों की भर्त्सना-आलोचना की जिनसे वह ख़ुश नहीं था। उसने आस्ट्रिया की सम्राज्ञी को अपने, अर्थात् वे हीरे-मोती भेंट किये जो उसने दूसरे बादशाहों से लिये थे और, जैसा कि हमें उसका इतिहासकार बताता है, सम्राज्ञी मरीया-लुईज़ा का बड़े प्यार

से आलिंगन करके उसे जुदाई के ग़म में घुलते हुए छोड़ दिया। सम्राज्ञी मरीया-लुईज़ा के लिये, जो पेरिस में नेपोलियन की दूसरी पत्नी होने के बावजूद उसकी पत्नी मानी जाती थी*, जुदाई का यह दुख बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल था। राजनयिक शान्ति-स्थापना की सम्भावना में बेशक पक्का विश्वास रखते थे और इसी उद्देश्य से बहुत मन लगाकर यत्न कर रहे थे, सम्राट नेपोलियन ने बेशक सम्राट अलेक्सान्द्र को स्वयं एक पत्र लिखा था और उसमें उसे "सम्राट, मेरे भाई" लिखकर सम्बोधित किया था और सच्चे दिल से यह यक़ीन दिलाया था कि वह युद्ध नहीं चाहता और हमेशा उसे प्यार तथा उसका आदर करता रहेगा, वह अपनी सेना की तरफ़ बढ़ता जा रहा था और हर विश्राम-स्थल पर इस आशय के नये आदेश देता था कि उसकी सेना और अधिक गति से पश्चिम से पूरब की तरफ़ बढ़ती जाये। निजी नौकरों-चाकरों, एडजुटेंटों और अंग-रक्षकों से घिरा हुआ वह छः घोड़ों की बन्द बग्घी में पोज़न, टोर्न, दानज़िग और केनिग्सबर्ग के मार्ग पर बढ़ता चला जा रहा था। इनमें से प्रत्येक नगर में हज़ारों लोग बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से उसका स्वागत करते थे।

नेपोलियन की सेना पश्चिम से पूरब की तरफ़ जा रही थी और जहां-तहां बदले जानेवाले छः घोड़ों की बग्घी में वह ख़ुद भी उधर ही जा रहा था। १० जून को वह अपनी सेना से जा मिला और उसने एक पोलैंडी काउंट की जागीर पर उसके लिये विलकोवीस्की वन में तैयार किये गये एक घर में रात बितायी।

अगले दिन नेपोलियन अपनी बग्घी में सवार होकर सेना को पीछे छोड़ते हुए नाइमन नदी पर पहुंच गया और पोलैंडी वर्दी पहनकर फ़ौज के उतारे की जगह चुनने के लिये तट पर गया।

नदी के दूसरे तट पर तैनात कज़्ज़ाकों और दूर-दूर तक फैले स्तेपी-मैदानों को देखकर, जिनके मध्य में सीथिया राज्य की राजधानी की भांति, जिसपर सिकन्दर महान ने आक्रमण किया था, पावन-पवित्र मास्को नगर अवस्थित था, नेपोलियन ने सभी रणनीतिक और कूटनी-

---

* यहां नेपोलियन की पहली पत्नी जोज़ेफ़ीना बोगार्ने (१७६३–१८१४) से अभिप्राय है जो १८०४ में फ़्रांस की सम्राज्ञी घोषित की गयी थी। १८०९ में नेपोलियन ने उसे तलाक़ देकर आस्ट्रिया के सम्राट की बेटी मरीया-लुईज़ा से शादी कर ली थी। – सं०

तिक धारणाओं के प्रतिकूल अचानक हमले का हुक्म दे दिया और अगले दिन उसकी सेनायें नाइमन के पार उतरने लगीं।

१२ जून की सुबह को नेपोलियन नाइमन नदी के खड़े, बायें तट पर लगे अपने तम्बू से बाहर आया और उसने विलकोवीस्की वन से लगातार बाहर आ रहे और नाइमन नदी पर बनाये गये तीन पुलों पर बढ़ते सेना-दलों को दूरबीन में से देखा। उसकी सेनाओं को मालूम था कि वह यहां है, उनकी नज़रें उसे ढूंढ़ रही थीं और जब उन्हें फ़्रॉक-कोट और टोप पहने, टीले पर खड़े नेपोलियन की अमले से अलग झलक मिली तो उन्होंने हवा में अपनी टोपियां उछालीं, 'सम्राट ज़िन्दाबाद!' के नारे लगाये और वे उन्हें छिपानेवाले विराट वन से निरन्तर बाहर आते तथा तीन भागों में बंटते हुए तीन पुलों पर दूसरी ओर उतरने लगे।

"अब तो ख़ूब मज़ा आयेगा। जब वह ख़ुद किसी चीज़ को अपने हाथ में ले लेते हैं तो मामला ख़ूब गर्म हो जाता है। क़सम भगवान की... वह सामने दिखाई दे रहे हैं... हुर्रा सम्राट! तो ये हैं एशिया के विराट स्तेपी-मैदान... वैसे है यह बेहूदा देश। तो विदा, मेरे दोस्त ब्युशे! मास्को में मैं सबसे शानदार महल तुम्हारे लिये ही रिज़र्व कर रखूंगा। विदा, मेरी शुभकामनाएं। सम्राट को देखा? हुर्रा! अगर मुझे इंडिया का गवर्नर बना दिया गया तो मैं तुम्हें काश्मीर का मिनि-स्टर बना दूंगा... हुर्रा! वह रहे सम्राट! देख रहे हो उन्हें? मैंने उन्हें दो बार ऐसे ही नज़दीक से देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं। नन्हा कॉरपोरल*... मैंने उन्हें एक बूढ़े के वक्ष पर तमग़ा लगाते देखा... हुर्रा सम्राट!" बूढ़े और जवान, सर्वथा भिन्न स्वभावों और समाज में भिन्न स्थितियोंवाले लोग फ़्रांसीसी भाषा में यह सब कह रहे थे। इन सभी लोगों के चेहरों पर चिर-प्रतीक्षित युद्ध-अभियान के आरम्भ की ख़ुशी और भूरा फ़्रॉक-कोट पहने टीले पर खड़े व्यक्ति के प्रति उल्लास तथा निष्ठा का एक ज़ैसा भाव था।

१३ जून को बढ़िया नसल का एक छोटा-सा अरबी घोड़ा नेपोलियन के सामने लाया गया। वह उसपर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाते हुए नाइमन के एक पुल को पार करने लगा। कान

---

* नेपोलियन का उपनाम। – सं०

बहरे करनेवाली सैनिकों की ऊंची, उल्लासपूर्ण आवाज़ें लगातार उसका साथ देती रहीं। वह सम्भवतः इसीलिये इस शोर को बर्दाश्त करता रहा कि इस प्रकार अपने प्रति प्रकट किये जानेवाले प्रेम-प्रदर्शन से उन्हें मना नहीं कर सकता था। किन्तु लगातार साथ देनेवाला यह उल्लासपूर्ण कोलाहल उसे परेशान कर रहा था और युद्ध-सम्बन्धी उन चिन्ताओं-विचारों की ओर से उसका ध्यान हटा रहा था जिनमें वह अपनी सेनाओं से मिलने के बाद से डूबा रहता था। उसने नावों के हिलते-डुलते पुल को पार किया, तेज़ी से बायीं ओर को मुड़ गया और निशानेबाज़ों की गार्ड-रेजिमेंट के सवारों के पीछे-पीछे, जो ख़ुशी से दीवाने होते हुए फ़ौजों के बीच से उसके लिये रास्ता बनाने की ख़ातिर अपने घोड़ों को उसके आगे-आगे दौड़ा रहे थे, कोव्नो* की ओर चला गया। चौड़ी वीलिया नदी के तट पर तैनात पोलैंडी उलान** रेजिमेंट के क़रीब पहुंचकर उसने अपना घोड़ा रोक दिया।

"सम्राट ज़िन्दाबाद!" पोलैंडी सैनिक भी बहुत उत्साह से चिल्ला उठे और नेपोलियन की झलक पाने के लिये अपनी क़तारें तोड़ने और एक-दूसरे के साथ रेल-पेल करने लगे। नेपोलियन ने नदी पर सभी ओर दृष्टि डाली, घोड़े से नीचे उतरा और तट पर पड़े एक लट्ठे पर बैठ गया। उसके मूक संकेत के अनुसार उसे दूरबीन दे दी गयी जिसे उसने अपने को सौभाग्यशाली अनुभव करनेवाले एक निजी सेवक की पीठ पर टिका दिया और उस पार देखने लगा। इसके बाद वह लट्ठों के बीच बिछा दिये गये नक़्शे पर बहुत ध्यान से नज़र दौड़ाने लगा। सिर ऊपर उठाये बिना उसने कुछ कहा और उसके दो एड-जुटेंट अपने घोड़ों को पोलैंडी उलानों की ओर सरपट दौड़ा ले चले।

"क्या? क्या कहा है सम्राट ने?" एक एडजुटेंट के पोलैंडी रेजिमेंट तक पहुंच जाने पर उलानों में उक्त शब्द सुनायी दिये।

नेपोलियन ने यह कहा था कि पांझ यानी ऐसी छिछली जगह ढूंढ़ी जाये जहां से नदी को आसानी से पार करना सम्भव हो। पोलैंडी

---

* कोव्नो – रूस के पश्चिम में नाइमन नदी के तट पर स्थित काउनस नगर का पुराना नाम। अब यह लिथुआनियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र का एक प्रमुख नगर है। – सं०

** उलान – हल्की घुड़सेना का सैनिक। – सं०

उलान-रेजिमेंट के कर्नल ने, जो एक सुन्दर, बूढ़ा व्यक्ति था, जोश से लाल होते और हकलाते हुए एडजुटेंट से यह पूछा कि क्या उसे इस बात की अनुमति मिल सकती है कि पांभ की तलाश किये बिना ही वह अपने उलानों के साथ नदी को पार कर ले। स्पष्टतः इस बात से डरते हुए कि कहीं उसे इन्कार न कर दिया जाये, कर्नल ने उस छोकरे की भांति, जो घोड़े पर सवार होने की अनुमति पाने के लिये गिड़गिड़ाता है, यह अनुरोध किया कि उसे सम्राट की नज़रों के सामने ही नदी को पार करने की अनुमति दे दी जाये। एडजुटेंट ने उत्तर दिया कि उसके ऐसे उत्साह-प्रदर्शन से सम्राट सम्भवतः नाराज़ नहीं होंगे।

एडजुटेंट के इतना कहते ही बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले बूढ़े कर्नल का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा, उसकी आंखों में चमक आ गयी और वह अपनी तलवार को हवा में लहराते हुए चिल्ला उठा – "सम्राट ज़िन्दा-बाद!" उसने अपने उलानों को अपने पीछे-पीछे आने का आदेश दिया, घोड़े को एड़ लगायी और उसे नदी की तरफ़ सरपट दौड़ा ले चला। उसने कुछ-कुछ हिचकते-अड़ते घोड़े को गुस्से से आगे धकेला, उसे पानी में घुसा दिया और गहराई की तरफ़ बढ़ाने लगा जहां पानी की धार बहुत तेज़ थी। सैकड़ों उलान उसके पीछे-पीछे नदी में कूद गये। मभधार और तेज़ धारा में बेहद ठण्ड और दहशत महसूस होती थी। घोड़ों से नीचे गिरते हुए उलान एक-दूसरे का सहारा लेते थे, एक-दूसरे के साथ चिपक जाते थे। कुछ घोड़े डूब गये, कुछ लोग भी डूब गये, बाक़ी कुछ लोग ज़ीन पर और कुछ लोग अयाल को थामे हुए तैरने की कोशिश कर रहे थे। वे उस पार पहुंचने का प्रयास कर रहे थे और इस चीज़ के बावजूद कि आध किलोमीटर से कुछ ही दूरी पर पांभ था, यह गर्व अनुभव कर रहे थे कि वे लट्ठे पर बैठे व्यक्ति की नज़रों के सामने, जो उनकी तरफ़ देख भी नहीं रहा था, नदी को पार कर रहे हैं और डूब रहे हैं। एडजुटेंट ने तट पर लौटकर और अच्छा मौक़ा ढूंढ़कर जब सम्राट के प्रति पोलैंडियों की निष्ठा की ओर उसका ध्यान आकृष्ट किया तो भूरा फ़्रॉक-कोट पहने यह छोटा-सा आदमी उठकर खड़ा हो गया और बेरथियर * को अपने पास बुलवाकर

---

* मार्शल बेरथियर (१७५३–१८१५) – १८१४ तक नेपोलियन के मुख्य सैनिक कार्यालय का अध्यक्ष था। – सं०

उसके साथ तट पर इधर-उधर टहलने तथा हिदायतें देने लगा। वह कभी-कभी डूबते हुए पोलैंडी उलानों की तरफ़ नाराज़गी से देख भी लेता था जो उसके चिन्तन, उसके ख़्यालों में ख़लल डाल रहे थे।

नेपोलियन के लिये यह जानना कुछ नया नहीं था कि उसकी उपस्थिति से सारी दुनिया में – अफ़्रीका से मास्को तक लोगों पर उसका आश्चर्यचकित करनेवाला प्रभाव पड़ता था और वे अपनी सुध-बुध भूलकर आत्मबलिदान की पागलों जैसी हरकतें करने लगते थे। उसने घोड़ा लाने का हुक्म दिया और अपने तम्बू की ओर चला गया।

घुड़सैनिकों की मदद के लिये बेशक नावें भेजी गयीं, फिर भी उनमें से कोई चालीस लोग डूब गये। अधिकतर घुड़सवार इस ओर के तट पर ही वापस आ गये। कर्नल और कुछ लोगों ने नदी पार कर ली और बड़ी मुश्किल से उस तट पर पहुंचे। किन्तु पानी से तर-ब-तर कपड़ों के साथ, जिनसे जल-धारायें बह रही थीं, तट पर पहुंचते ही वे उस जगह की ओर देखते हुए, जहां नेपोलियन खड़ा था, किन्तु जो अब वहां नहीं था, "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्ला उठे और इस क्षण उन्होंने अपने को सौभाग्यशाली अनुभव किया।

शाम को दो आदेशों के साथ-साथ – एक तो यह कि रूस में भेजने के लिये तैयार किये गये जाली नोट जल्दी से जल्दी लाये जायें और दूसरे यह कि उस सैक्सोन को गोली मार दी जाये जिससे फ़्रांसीसी सेनाओं की तैनाती की सूचना देनेवाला पत्र प्राप्त हुआ था, उसने यह तीसरा आदेश भी जोड़ दिया कि किसी आवश्यकता के बिना नदी में कूद जानेवाले पोलैंडी कर्नल को Légion d'honneur* में शामिल कर लिया जाये जिसका ख़ुद नेपोलियन अध्यक्ष था।

जिसकी मौत आती है, उसकी अक़्ल गुम हो जाती है। विनाश काले विपरीत बुद्धि!

---

* यह वह संस्था थी जिसके लिये फ़्रांसीसी सेना में से "स्वतन्त्रता-संग्राम में राज्य की महत्त्वपूर्ण सेवा करनेवाले" लोगों को सदस्य चुना जाता था और ख़ुद नेपोलियन ही इसका अध्यक्ष था। – सं०

३

इसी वक़्त रूसी सम्राट एक महीने से अधिक समय से वील्ना* में रह रहे थे, सेनाओं और युद्धाभ्यास का निरीक्षण कर रहे थे। युद्ध के लिये, जिसके शुरू होने की सभी को सम्भावना दिखाई दे रही थी, कुछ भी तैयारी नहीं हुई थी और इसी तैयारी के हेतु सम्राट पीटर्सबर्ग से यहां आये थे। कार्य-विधि की कोई सामान्य योजना नहीं थी। अब तक जो योजनायें पेश की गयी थीं, उनमें से किसको स्वीकार और अस्वीकार किया जाये, यह दुविधा सम्राट के एक महीने तक मुख्य सैनिक कार्यालय में रहने के बाद और भी बढ़ गयी थी। तीन प्रकार की सेनाओं में से प्रत्येक का अपना सेनापति था, किन्तु सभी सेनाओं का कोई एक सेनाध्यक्ष नहीं था और सम्राट अपने ऊपर यह ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं थे।

सम्राट जितनी अधिक देर तक वील्ना में रहते जा रहे थे, युद्ध की प्रतीक्षा करते-करते ऊब जाने के कारण सभी लोग उसकी तैयारी की ओर उतना ही कम ध्यान दे रहे थे। सम्राट के निकटवर्ती लोग केवल इसी बात के लिये अधिकतम यत्नशील थे कि सम्राट यथासम्भव हंसी-ख़ुशी में अपना समय बितायें और प्रत्याशित युद्ध के बारे में भूल जायें।

बड़े-बड़े पोलैंडी ज़मींदारों-जागीरदारों, ऊंचे दरबारियों और स्वयं सम्राट के यहां अनेक बॉल-नृत्यों और समारोहों-उत्सवों के आयोजन के बाद जून के महीने में सम्राट के एक पोलैंडी एडजुटेंट-जनरल के दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि सम्राट के एडजुटेंट-जनरलों की ओर से सम्राट के लिये सन्ध्या-भोज और बॉल-नृत्य का आयोजन किया जाये। सभी ने इस विचार का सहर्ष समर्थन किया। सम्राट ने भी अपनी सहमति दे दी। एडजुटेंट-जनरलों ने चन्दा देकर आवश्यक धनराशि जमा कर ली। उस महिला को, जिसे सम्राट की सबसे अधिक चहेती माना जाता था, बॉल-नृत्य की मेज़बान होने के लिये आमन्त्रित किया गया। वील्ना ज़िले के ज़मींदार काउंट बेनिगसेन ने अपने उपनगरीय

---

* वील्ना – अब वील्नियूस, लिथुआनियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की राजधानी और पश्चिमी रूस का एक प्रमुख नगर। – सं०

बंगले पर यह समारोह मनाने का प्रस्ताव किया और इस तरह ज़ाकरेतो में काउंट के बंगले पर १३ जून को बॉल-नृत्य, सन्ध्या-भोज, नौका-विहार और आतिशबाज़ी की व्यवस्था करने का निर्णय किया गया।

इसी दिन, जब नेपोलियन ने अपनी सेना को नाइमन नदी को पार करने का आदेश दिया और उसकी अग्रणी सेना कज़्ज़ाकों को पीछे धकेलकर रूस की सीमा में घुस आई, सम्राट अलेक्सान्द्र एडजुटेंट-जनरलों द्वारा काउंट बेनिगसेन के बंगले पर आयोजित बॉल-नृत्य में अपनी शाम बिता रहे थे।

हर्षोल्लास से परिपूर्ण यह बहुत ही भव्य समारोह था। ऐसे समारोहों के पारखियों का कहना था कि किसी एक ही जगह पर इतनी अधिक सुन्दरियां जमा हो जायें, ऐसा तो बहुत ही कम होता है। सम्राट के पीछे-पीछे जो रूसी महिलायें पीटर्सबर्ग से वील्ना आई थीं, उनमें काउंटेस बेजूख़ोवा भी शामिल थी। इस बॉल-नृत्य में वह अपने गदराये बदनवाले, तथाकथित रूसी सौन्दर्य से दुबली-पतली पोलैंडी सुन्दरियों पर छा गयी। सम्राट ने उसकी ओर ध्यान दिया और उसे एक बार अपने साथ नाचने का सम्मान प्रदान किया।

बोरीस द्रुबेत्स्कोई भी, जो अपनी पत्नी को मास्को छोड़ आया था और अब अपने को छड़ा बताता था, इस बॉल-नृत्य में हिस्सा ले रहा था। यह सही है कि वह एडजुटेंट-जनरल नहीं था, मगर उसने इस समारोह के लिये बड़ा चन्दा देकर इसमें अपना नाम लिखवा लिया था। बोरीस अब अमीर आदमी था, उसने बड़ा पद और मान-सम्मान प्राप्त कर लिया था, उसे अब किसी की सरपरस्ती की ज़रूरत नहीं थी और वह अपने उच्चतम समवयस्कों के बराबर दर्जा रखता था।

रात के बारह बजे भी नाच चल रहा था। अपनी पसन्द का कोई नृत्य-साथी न मिलने पर हेलेन ने ख़ुद ही बोरीस को अपने साथ माज़ूर्का नाच नाचने को निमन्त्रित किया। वे इस नृत्य का तीसरा जोड़ा थे। सुनहरी कढ़ाईवाली जाली की काली पोशाक में से हेलेन के बाहर झांकते सुन्दर, नंगे कंधों को उदासीनता से देखते हुए बोरीस पुराने, साझे परिचितों की चर्चा कर रहा था और साथ ही अचेतन ढंग से तथा दूसरों को भी इसकी चेतना करवाये बिना लगातार सम्राट की ओर देखता जा रहा था जो इसी हॉल में थे। सम्राट नाच नहीं रहे थे, दरवाज़े के पास खड़े थे और कभी एक तो कभी दूसरे व्यक्ति से कुछ

ऐसे मधुर शब्द कहते थे जो केवल वही कह सकते थे।

माज़ूर्का नाच शुरू होने पर बोरीस ने देखा कि एडजुटेंट-जनरल बालाशोव, जो सम्राट का एक घनिष्ठ व्यक्ति था, दरबर के तौर-तरीक़ों की अवहेलना करते हुए किसी पोलैंडी महिला से बातचीत कर रहे सम्राट के बिल्कुल नज़दीक जाकर खड़ा हो गया। महिला से बातचीत करने के बाद सम्राट ने प्रश्नसूचक दृष्टि से बालाशोव की तरफ़ देखा और स्पष्टतः यह समझकर कि बालाशोव ने केवल इसीलिये ऐसा व्यवहार किया है कि इसके अवश्य कोई महत्त्वपूर्ण कारण हैं, उन्होंने महिला के सामने ज़रा सिर झुकाकर विदा ली और बालाशोव की ओर मुड़े। बालाशोव ने बोलना शुरू ही किया कि सम्राट के चेहरे पर हैरानी झलक उठी। उन्होंने बालाशोव का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसको अपने साथ लिये हुए हॉल से बाहर चल दिये। सम्राट के ऐसा करने पर उनके सामने आनेवाले लोग लगभग तीन मीटर तक दायें-बायें हटने लगे और इस तरह उनके जाने के लिये चौड़ा रास्ता बनता चला गया। सम्राट जब बालाशोव के साथ जा रहे थे तो बोरीस ने देखा कि युद्ध-मन्त्री अराकचेयेव का चेहरा बहुत उत्तेजित हो उठा है। भृकुटि चढ़ाकर सम्राट की ओर देखते तथा अपनी लाल नाक से सूं-सूं करते हुए वह इस आशा से भीड़ में से आगे आ गया कि सम्राट उसे सम्बोधित करेंगे। (बोरीस यह समझ गया कि अराकचेयेव बालाशोव से ईर्ष्या करता है और इस कारण अप्रसन्न है कि स्पष्टतः कोई महत्त्वपूर्ण समाचार उसके माध्यम से सम्राट तक नहीं पहुंचा है)।

किन्तु अराकचेयेव की ओर कोई ध्यान दिये बिना बालाशोव को साथ लिये हुए सम्राट रोशनी से जगमगाते बाग़ में बाहर चले गये। हाथ में तलवार लिये और ग़ुस्से से अपने इर्द-गिर्द देखते हुए अराकचेयेव कोई बीस क़दम तक इनके पीछे-पीछे गया।

माज़ूर्का नाच की मुद्राओं में भाग लेते हुए बोरीस लगातार यह सोचकर परेशान होता रहा कि बालाशोव कौन-सी ख़बर लाया है और किस तरह वह दूसरों से पहले इसे जान ले।

माज़ूर्का नाच की उस मुद्रा में, जब बोरीस को महिलायें चुननी थीं, वह हेलेन के कान में यह फुसफुसाकर कि काउंटेस पोतोत्स्काया को चुनना चाहता है, जो सम्भवतः बाहर छज्जे में चली गयी थी,

तख़्तों के चिकने फ़र्श पर लगभग फिसलते हुए बाग़ में ले जानेवाले दरवाज़े की तरफ़ भाग गया और बालाशोव के साथ बरामदे में प्रवेश कर रहे सम्राट को देखकर जहां का तहां रुक गया। बालाशोव को साथ लिये हुए सम्राट दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने लगे। बोरीस यह ज़ाहिर करते हुए कि वह झटपट उनके रास्ते से नहीं हट पाया, भरेठ के साथ आदरपूर्वक सट गया और उसने सिर झुका लिया।

सम्राट ने व्यक्तिगत रूप से अपमानित आदमी के अन्दाज़ में ये शब्द कहे:

"युद्ध की घोषणा के बिना वह रूस में घुस आये! मैं तो केवल तभी सन्धि करूंगा जब शत्रु का एक भी सशस्त्र सैनिक मेरी धरती पर नहीं रहेगा।" बोरीस को ऐसा प्रतीत हुआ कि सम्राट को ये शब्द कहना अच्छा लगा, अपने विचार व्यक्त करने के ढंग से उन्हें प्रसन्नता हुई थी, मगर वह इस बात से अप्रसन्न थे कि बोरीस ने उन्हें सुन लिया था।

"किसी को भी इसकी कानों कान ख़बर नहीं होनी चाहिये!" सम्राट ने माथे पर बल डालते हुए इतना और कह दिया। बोरीस समझ गया कि ये शब्द उसे ध्यान में रखते हुए कहे गये हैं और उसने आंखें मूंदकर ज़रा सिर झुका दिया। सम्राट फिर से हॉल में आ गये और कोई आध घण्टे तक बॉल-नृत्य में उपस्थित रहे।

बोरीस को ही सबसे पहले यह मालूम हुआ कि फ़्रांसीसी सेना ने नाइमन नदी को पार कर लिया है। इसकी बदौलत वह कुछ महत्त्वपूर्ण लोगों को यह जता पाया कि बहुत-सी बातें, जिन्हें दूसरे नहीं जान पाते, उसे मालूम होती हैं और इस तरह वह इन लोगों की नज़र में और ऊपर उठ गया।

फ़्रांसीसी सेना के नाइमन को पार करने का आकस्मिक समाचार एक महीने तक की ऐसी प्रत्याशा के बाद और बॉल-नृत्य के समय विशेष रूप से अप्रत्याशित था। यह समाचार मिलने के फ़ौरन बाद क्रोध और अपमान की भावना के कारण सम्राट ने वे शब्द कह दिये जो बाद में प्रसिद्ध हो गये और जो ख़ुद उन्हें भी अच्छे लगे थे और उनकी भावनाओं को पूरी तरह व्यक्त करते थे। बॉल-नृत्य से घर लौटने के पश्चात रात के दो बजे उन्होंने अपने सेक्रेटरी शिश्कोव

को बुलवाया और उससे कहा कि वह सेनाओं के नाम एक आदेश तथा फ़ील्ड-मार्शल सल्तिकोव को एक फ़रमान लिख भेजे जिसमें उन्होंने अनिवार्य रूप से ये शब्द जोड़ने की मांग की कि वह उस समय तक सन्धि करने को तैयार नहीं होंगे जब तक एक भी सशस्त्र फ़्रांसीसी सैनिक रूसी धरती पर बना रहेगा।

अगले दिन नेपोलियन के नाम यह पत्र लिखा गया –

"सम्राट, मेरे भाई! इस चीज़ के बावजूद कि आप महामान्य के प्रति मैंने अपने वचनों का बड़ी निष्ठा से पालन किया है, कल मुझ तक यह ख़बर पहुंची है कि आपकी सेनायें रूस की सीमाओं के भीतर आ गयी हैं और केवल अभी-अभी मुझे पीटर्सबर्ग से आपके इस आक्रमण के स्पष्टीकरण के रूप में एक नोट मिला है जिसमें आपके राजदूत काउंट लोरिस्टन ने मुझे सूचित किया है कि आप महामान्य, तब से ही अपने को मेरे साथ युद्ध की स्थिति में मानते हैं, जब फ़्रांस में मेरे राजदूत प्रिंस कुराकिन ने अपने पासपोर्टों की मांग की थी।* ड्यूक बास्सानो ने जिन कारणों से ये पासपोर्ट देने से इन्कार किया था, उनसे मैं कभी भी ऐसा नहीं मान सकता था कि मेरे राजदूत का व्यवहार आपके आक्रमण का आधार बन सकता है। हक़ीक़त यह है, जैसाकि मेरे राजदूत ने स्वयं इसकी घोषणा की थी, उसे मेरी ओर से ऐसा करने का कोई आदेश नहीं दिया गया था और ज्योंही मुझे इसका पता चला, त्योंही मैंने प्रिंस कुराकिन के प्रति अपनी अप्रसन्नता प्रकट की और आदेश दिया कि वह पहले की तरह ही अपना राजदूत का कर्त्तव्य निभाता रहे। अगर आप महामान्य, इस प्रकार की ग़लतफ़हमी के कारण हमारे जनगण का ख़ून नहीं बहाना चाहते और अपनी सेनाओं को रूस की सीमाओं से बाहर ले जाने को तैयार हैं तो मैं इस घटना की ओर कोई ध्यान नहीं दूंगा और हमारे बीच समझौता हो जायेगा।

---

* यहां इस बात का उल्लेख है कि फ़्रांस में रूस का राजदूत अलेक्सान्द्र कुराकिन (१७५२–१८१८) फ़्रांस के विदेश-मन्त्री मोरे (ड्यूक बास्सानो) के साथ रूस और फ़्रांस के बीच कुछ विवादपूर्ण प्रश्नों के हल और उनपर समझौते के लिये बातचीत करता रहा था। इन वार्ताओं का कोई अच्छा नतीजा नहीं निकला और मई १८१२ में कुराकिन ने अपना तथा दूतावास के सभी कर्मचारियों के फ़्रांस से जाने के लिये पासपोर्ट मांगे। फ़्रांसीसी राजनयिकों ने कुराकिन के इस व्यवहार को रूस और फ़्रांस के बीच सम्बन्ध-विच्छेद माना। – सं०

ऐसा न होने पर मैं उस आक्रमण का सामना करने को विवश हो जाऊंगा जिसके लिये मैं अपने को किसी प्रकार भी ज़िम्मेदार नहीं मानता। महामान्य जी, अभी तो आपके लिये यह सम्भव है कि आप मानव-जाति को एक नये युद्ध की विभीषिका से बचा लें।

अलेक्सान्द्र।"

४

१३ जून को रात के दो बजे सम्राट अलेक्सान्द्र ने बालाशोव को अपने पास बुलवाया, नेपोलियन के नाम उसे अपना पत्र पढ़कर सुनाया और यह आदेश दिया कि वह व्यक्तिगत रूप से उसे फ़्रांसीसी सम्राट को पहुंचा दे। बालाशोव को विदा करते हुए सम्राट ने फिर से अपने ये शब्द दोहराये कि जब तक एक भी सशस्त्र फ़्रांसीसी सैनिक रूसी धरती पर रहेगा, वह सन्धि नहीं करेंगे और हुक्म दिया कि वह अवश्य ही ये शब्द नेपोलियन से कह दे। सम्राट ने नेपोलियन के नाम अपने पत्र में ये शब्द नहीं लिखे थे, क्योंकि अपनी व्यवहार-कुशलता से उन्होंने यह महसूस किया था कि इस क्षण, जब सुलह के लिये आख़िरी कोशिश की जा रही है, इन्हें लिखना ठीक नहीं होगा, किन्तु बालाशोव को यह हिदायत कर दी कि वह अवश्य ही व्यक्तिगत रूप से उन्हें नेपोलियन से कह दे।

बालाशोव १३ जून की रात के अन्तिम पहर में रवाना हुआ। एक बिगुलवादक और दो कज़्ज़ाक उसके साथ थे। पौ फटते तक वह नाइमन नदी के इस ओर यानी रूसी तट पर स्थित रिकोन्टी गांव में पहुंच गया जहां फ़्रांसीसियों की अग्रिम सैनिक-चौकियां थीं। फ़्रांसीसी घुड़सवार सन्तरियों ने उसे रोका।

सुर्ख़ वर्दी और झबरीली टोपी पहने एक छोटे फ़्रांसीसी अफ़सर ने अपने घोड़े को बढ़ाते आ रहे बालाशोव को पुकारकर रुकने का आदेश दिया। बालाशोव ने फ़ौरन अपना घोड़ा नहीं रोका और उसे क़दम-क़दम आगे बढ़ाता रहा।

छोटे फ़्रांसीसी अफ़सर ने माथे पर बल डालकर तथा कोई गाली बककर बालाशोव के सामने अपना घोड़ा खड़ा करते हुए उसका रास्ता रोक दिया, अपनी तलवार पर हाथ रख लिया, रूसी जनरल पर ज़ोर से चिल्लाते हुए यह पूछा कि क्या वह बहरा है और उससे जो कुछ कहा जा रहा है, उसे सुनता क्यों नहीं। बालाशोव ने अपना परिचय दिया। छोटे फ़्रांसीसी अफ़सर ने एक सैनिक को अपने बड़े अफ़सर के पास भेजा।

बालाशोव की ओर कोई ध्यान दिये बिना छोटा फ़्रांसीसी अफ़सर अपने साथियों से रेजिमेंट के मामलों की चर्चा करने लगा और उसने रूसी जनरल की तरफ़ देखने तक की तकलीफ़ भी गवारा नहीं की।

सत्ता और शक्ति-स्रोत के बिल्कुल निकट रहने तथा केवल तीन घण्टे पहले ही सम्राट से बातचीत करनेवाले, अपने ऊंचे पद के कारण सामान्यतः आदर-सत्कार के आदी बालाशोव को यहां, अपनी रूसी धरती पर ही ऐसे शत्रुतापूर्ण, इतना ही नहीं, अपने प्रति ऐसे अशिष्ट व्यवहार तथा भोंडे शक्ति-प्रदर्शन का सामना करना बहुत ही अजीब लगा।

बादलों के पीछे से सूर्योदय होने ही लगा था। हवा में ताज़गी थी और ओसकण पड़े हुए थे। गांव से ढोर-डंगरों को सड़क पर भेजा जा रहा था। पानी में उठनेवाले बुलबुलों की तरह खेतों में से भरत पक्षी अपनी तान छेड़ते हुए आकाश की ओर उड़ रहे थे।

गांव से किसी बड़े फ़ौजी अफ़सर के आने की राह देखते हुए बालाशोव अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ा रहा था। रूसी कज़्ज़ाक और बिगुलवादक तथा फ़्रांसीसी हुस्सार कभी-कभार एक-दूसरे की तरफ़ चुपचाप देख लेते थे।

सुन्दर, मोटे-ताज़े भूरे घोड़े पर सवार फ़्रांसीसी हुस्सार रेजिमेंट का कर्नल, जो स्पष्टतः अभी-अभी बिस्तर से उठा था, दो हुस्सारों के साथ गांव से बाहर आया। कर्नल, दोनों सैनिक और उनके घोड़े — सभी बहुत खुश और बांके-छैले लग रहे थे।

युद्ध-अभियान का यह वह प्रारम्भिक समय था, जब सेनायें ख़ूब सजी-धजी होती हैं, शान्तिकाल की परेड जैसे रंग में होती हैं। अन्तर केवल इतना ही होता है कि उनकी पोशाकों में जंगी सज-धज कुछ

और बढ़ जाती है और साहसिक कृत्यों की वह प्रसन्नतापूर्ण भावना भी अधिक तीव्र होती है जो युद्ध-अभियान के आरम्भ में हमेशा पायी जाती है।

फ़ांसीसी कर्नल ने बड़ी मुश्किल से अपनी जम्हाई रोकी, किन्तु शिष्टता से पेश आया। सम्भवतः वह बालाशोव के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ रहा था। वह बालाशोव को अपने सैनिकों और अग्रणी चौकियों से आगे ले गया तथा उसे यह सूचित किया कि सम्राट से मिलने की उसकी इच्छा सम्भवतः बहुत जल्द ही पूरी हो जायेगी, क्योंकि जहां तक उसे मालूम था, सम्राट का निवास-स्थान कहीं निकट ही था।

रिकोन्टी गांव को पीछे छोड़ते हुए ये लोग फ़ांसीसी हुस्सारों के खूंटों से बंधे घोड़ों, सन्तरियों और सैनिकों के पास से गुज़रे जिन्होंने अपने अफ़सर को सलामी दी और रूसी वर्दी को कौतूहल से देखा। ये गांव के दूसरे छोर पर पहुंच गये। कर्नल ने बालाशोव को बतलाया कि दो किलोमीटर की दूरी पर डिवीज़न-कमांडर से उसकी भेंट होगी जो उसे उसकी मंज़िल पर पहुंचा देगा।

सूरज आकाश में ऊंचा जा चुका था और चटक हरियाली पर प्रसन्नतापूर्वक चमक रहा था।

एक मदिरालय के पास से गुज़रकर इन लोगों ने अपने घोड़ों को एक टीले पर बढ़ाया ही था कि इन्हें घुड़सवारों का एक दल अपनी तरफ़ आता दिखाई दिया। मुश्की घोड़े पर, जिसका साज़ धूप में चमक रहा था, लम्बे क़द का एक व्यक्ति इस दल के आगे-आगे था। इस व्यक्ति के टोप में कलगी लगी हुई थी, उसके लम्बे-लम्बे काले बाल कंधों पर लहरा रहे थे, वह लाल लबादा पहने था और फ़ांसीसियों के घुड़सवारी के अन्दाज़ में अपनी लम्बी-लम्बी टांगों को आगे की ओर बढ़ाये था। जून महीने की तेज़, चमकती धूप में अपनी कलगी, हीरों और सुनहरी फ़ीतियों की लौ देते हुए यह व्यक्ति घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ बढ़ा आ रहा था।

थियेटरी और समारोही मुख-मुद्रा बनाये कंगनों, कलगी, मालाओं और सोंने से सजा-धजा तथा घोड़े को सरपट दौड़ाता आ रहा यह आदमी जब बालाशोव से कोई ८–१० मीटर दूर रह गया तो फ़ांसीसी कर्नल मूल्नेर सम्मानपूर्वक फुसफुसाया – "नेपल्ज़ का बादशाह।" वास्तव

में यह म्युराट था जिसे अब "नेपल्ज़ का बादशाह" * ... कहा जाता था। यद्यपि यह समझ पाना बिल्कुल सम्भव नहीं था कि वह क्यों नेपल्ज़ का बादशाह था, किन्तु उसे ऐसे ही बुलाया जाता था, ख़ुद उसे भी इस बात का पूरा यक़ीन था और इसीलिये वह पहले की तुलना में ज़्यादा शान-बान तथा महत्त्वपूर्ण रंग-ढंग बनाये था। उसे अपने नेपल्ज़ का बादशाह होने का इतना अधिक विश्वास था कि नेपल्ज़ से रवाना होने की पूर्ववेला में पत्नी के साथ नेपल्ज़ की सड़कों पर सैर-सपाटे के वक़्त जब कुछ इतालवी "बादशाह ज़िन्दाबाद!" चिल्ला उठे तो वह उदासी से मुस्कराते हुए पत्नी की ओर मुड़ा और बोला – "इन बदक़िस्मतों को यह मालूम नहीं कि मैं कल इन्हें छोड़कर जा रहा हूं!"

इस बात का पूरा यक़ीन करने पर भी कि वह नेपल्ज़ का बादशाह है, कि अपनी छोड़ी हुई प्रजा के दुःख के कारण उसे अफ़सोस हो रहा है, पिछले कुछ समय में, उस वक़्त के बाद जब उसे फिर से फ़ौज में लौटने का हुक्म दिया गया था और ख़ास तौर पर दानज़िग में नेपोलियन के साथ मुलाक़ात होने के पश्चात्, जब उसके महाप्रतापी साले यानी नेपोलियन ने उससे यह कहा था कि "मैंने तुम्हें तुम्हारे ढंग से नहीं, बल्कि मेरे ढंग से शासन करने को बादशाह बनाया था," वह अच्छी तरह से पाले-पोसे गये, मगर बहुत ज़्यादा न मुटानेवाले तथा काम करने के योग्य उस घोड़े की तरह जो अपने को बग्घी में जुता हुआ अनुभव करता है, ख़ुशी से अपनी पहलेवाली ड्यूटी बजाने लगा था। हां, उसने अपने को अधिक से अधिक मूल्यवान तथा चटक वस्त्रों-आभूषणों से सजा लिया था और स्वयं यह न जानते हुए कि क्यों और किसलिये ऐसा कर रहा है, बड़े सन्तोष तथा बड़ी प्रसन्नता से पोलैंड की सड़कों पर सरपट दौड़ा जा रहा था।

रूसी जनरल को देखकर उसने बादशाह की तरह बड़ी शान से कंधों पर लहराते घुंघराले बालोंवाला अपना सिर पीछे की तरफ़ अकड़ा लिया और फ़्रांसीसी कर्नल पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। कर्नल ने बड़े

---

* ईओखिम म्युराट (१७६७–१८१५) – एक मदिरालय के मालिक का बेटा, नेपोलियन की सेना का एक मार्शल, जिसे १८०८ में नेपल्ज़ का बादशाह घोषित किया गया था। नेपोलियन की छोटी बहन कारोलीना के साथ उसकी शादी हुई थी। – सं०

आदर से बादशाह सलामत को बालाशोव के आने का उद्देश्य बताया, मगर किसी भी तरह बालाशोव शब्द का ढंग से उच्चारण नहीं कर पाया।

"बाल-माचोव!" बादशाह ने बड़ी दृढ़ता से उस मुश्किल पर क़ाबू पाते हुए जो कर्नल को बालाशोव का उच्चारण करते समय अनुभव हुई थी, फ़्रांसीसी में कहा तथा बादशाह जैसे कृपालु ढंग से इतना और जोड़ दिया–"आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई जनरल!" जैसे ही उसने ऊंचे-ऊंचे और तेज़ी से बोलना शुरू किया, वैसे ही उसकी बादशाही शान-बान हवा हो गयी और वह अनजाने ही अपने स्वभाव के मुताबिक़ ख़ुशमिज़ाजी तथा बेतकल्लुफ़ी से बातचीत करने लगा। उसने बालाशोव के घोड़े के अयालों पर अपना हाथ रख दिया।

"तो जनरल, ऐसा लगता है कि मामला युद्ध की तरफ़ बढ़ रहा है," म्युराट ने फ़्रांसीसी में इस तरह कहा मानो ऐसी परिस्थितियों के बारे में दुख प्रकट कर रहा हो जिनपर उसके लिये राय प्रकट करना सम्भव न हो।

"हुज़ूर," बालाशोव ने उत्तर दिया, "जैसाकि आप, महामान्य, स्वयं देख सकते हैं, रूसी सम्राट युद्ध नहीं चाहते," बालाशोव ने "महामान्य" शब्द का अधिकाधिक उपयोग करते हुए कहा। उसके इस सम्बोधन में उस कृत्रिमता को अनुभव किया जा सकता था जो ऐसे व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए अनिवार्य रूप से आ जाती है जिसके लिये यह उपाधि नयी-नयी होती है।

बालाशोव की बात सुनते हुए म्युराट का चेहरा मूर्खतापूर्ण सन्तोष से चमक रहा था। किन्तु बादशाह की उपाधिवाले व्यक्ति के अपने कर्त्तव्य होते हैं: उसने बादशाह और मित्र-राष्ट्र का प्रतिनिधि होने के नाते ज़ार अलेक्सान्द्र के दूत के साथ बातचीत करने की आवश्यकता अनुभव की। वह घोड़े से नीचे उतर आया, उसने बालाशोव का हाथ अपने हाथ में लिया और अपनी जगह पर आदरपूर्वक खड़े रह गये अपने अमले से थोड़ा दूर हटकर इधर-उधर टहलने और बड़े महत्त्वपूर्ण ढंग से बातचीत को आगे बढ़ने की कोशिश करने लगा। उसने यह याद दिलाया कि सम्राट नेपोलियन ने प्रशा से अपनी सेना हटाने की मांग के कारण अपने को अपमानित अनुभव किया है, ख़ास तौर पर अब, जबकि इस मांग के बारे में सभी को पता चल गया है और इससे

फ़ांस की प्रतिष्ठा पर आंच आ गयी है। बालाशोव ने कहा कि इस मांग में अपमान की कोई बात नहीं है, क्योंकि ... म्युराट ने उसे टोक दिया:

"तो आप यह मानते हैं कि सम्राट अलेक्सान्द्र यह आग नहीं भड़का रहे हैं?" उसने ख़ुशमिज़ाजी और मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ अचानक पूछा।

बालाशोव ने बताया कि क्यों वह ऐसा मानता है कि वास्तव में नेपोलियन ही युद्ध आरम्भ कर रहा है।

"ओह, मेरे प्यारे जनरल," म्युराट ने उसे फिर से टोक दिया, "मैं सच्चे दिल से यह चाहता हूं कि दोनों सम्राट इस मामले को आपस में ही तय कर लें और मेरी इच्छा के विरुद्ध आरम्भ होनेवाला यह युद्ध जल्दी से जल्दी समाप्त हो जाये," उसने ऐसे नौकर के अन्दाज़ में कहा जो अपने मालिकों के झगड़े के बावजूद नौकरों के बीच दोस्ती के अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना चाहते हैं। और वह युद्ध की बात छोड़कर युवराज यानी ज़ार अलेक्सान्द्र के छोटे भाई का हालचाल और उसकी सेहत के बारे में पूछने तथा नेपल्ज़ में उसके साथ बिताये गये बहुत ही सुखद और मनोरंजक समय की मधुर स्मृतियों की चर्चा करने लगा। कुछ क्षण बाद मानो बादशाह के रूप में अपनी गरिमा का सहसा ध्यान आने पर वह तन गया, उसी मुद्रा में खड़ा हो गया जिसमें अपने राज्याभिषेक के समय खड़ा रहा था और दायां हाथ झटककर बोला – "मैं अब आपको और नहीं रोकूंगा, जनरल; कामना करता हूं कि आपको अपने उद्देश्य में सफलता मिले," और कशीदाकारी से सजे लाल लबादे तथा कलगी को लहराते और हीरों की चमक दिखाते हुए अपने अमले की तरफ़ चला गया जो आदरपूर्वक उसकी राह देख रहा था।

म्युराट के शब्दों से ऐसा मानते हुए कि शीघ्र ही वह ख़ुद नेपोलियन से मिल सकेगा, बालाशोव अपने घोड़े को आगे बढ़ा ले चला। किन्तु नेपोलियन से जल्द ही भेंट होने के बजाय अगले गांव में मार्शल दावू*

---

* लुई निकोला दावू (१७७०–१८२३) – फ़्रांसीसी मार्शल। उसने नेपोलियन द्वारा लड़ी गयी लड़ाइयों में हिस्सा लिया और रूस के विरुद्ध १८१२ के युद्ध अभियान में वह कोर-कमांडर रहा। – सं०

की पैदल सेना के सन्तरियों ने उसे उसी प्रकार रोक लिया जैसे अग्रणी चौकियों पर रोका गया था। कोर-कमांडर के एडजुटेंट को बुलवाया गया और वह उसे मार्शल दावू के पास ले गया।

५

सम्राट नेपोलियन के लिये दावू वैसे ही था, जैसे ज़ार अलेक्सान्द्र के लिये अराकचेयेव। वह अराकचेयेव की तरह कायर तो नहीं, मगर उसकी भांति आज्ञाकारी, बड़ा कठोर और क्रूर था तथा क्रूरता के अतिरिक्त अन्य किसी भी रूप में अपनी वफ़ादारी नहीं दिखा सकता था।

राजकीय प्रशासनतन्त्र में ऐसे लोगों की उसी तरह ज़रूरत होती है जैसे प्रकृति की व्यवस्था में भेड़ियों की। इसलिये ऐसे लोग हमेशा ही होते हैं, हमेशा ही प्रकट हो जाते हैं और अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं, चाहे राज्याध्यक्ष के सामने उनकी उपस्थिति और निकटता कितनी ही असंगत क्यों न हो। केवल इसी आवश्यकता के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि अराकचेयेव जैसा क्रूर व्यक्ति, जो ख़ुद अपने हाथों से ग्रेनेडियरों की मूंछें उखाड़ता था और स्नायुओं की दुर्बलता के कारण ख़तरे का सामना नहीं कर सकता था, जाहिल-गंवार और नीचे कुल का था, सूरमाओं की तरह नेक तथा कोमल भावनायें रखनेवाले ज़ार अलेक्सान्द्र के शासनतन्त्र में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था।

बालाशोव ने मार्शल दावू को एक किसान के झोंपड़े के सायबान में पीपे पर बैठा और हिसाब-किताब की जांच करते पाया। उसका एडजुटेंट उसके पास खड़ा था। मार्शल के लिये इससे बेहतर जगह की व्यवस्था करना बिल्कुल सम्भव था, किन्तु मार्शल दावू ऐसे लोगों में से था जो जान-बूझकर अपने जीवन की परिस्थितियों को दुखदतम बनाते हैं ताकि स्वयं दुखी होने का अधिकार पा सकें। इसी कारण वे हमेशा काम में बहुत व्यस्त और हड़बड़ी में रहते हैं। "मानवीय जीवन के उज्ज्वल पक्ष की ओर ध्यान देने का मेरे पास समय ही कहां है, जबकि आप देख रहे हैं कि मैं गन्दे सायबान में पीपे पर बैठा हुआ

काम कर रहा हूं," उसके चेहरे का भाव यह कह रहा था। ऐसे लोगों के जीवन की सबसे बड़ी ख़ुशी और आवश्यकता यही होती है कि ज़िन्दगी की रंगीनी सामने आते ही उसपर अपनी उदासी, अपनी सतत व्यस्तता की छाया डाल दें। बालाशोव को जब यहां लाया गया तो मार्शल दावू यही ख़ुशी हासिल कर रहा था। रूसी जनरल के आने पर मार्शल दावू अपने काम में और ज़्यादा डूब गया और चश्मे में से बालाशोव के चेहरे पर नज़र डालकर, जो सुहावनी सुबह तथा म्युराट के साथ बातचीत के फलस्वरूप खिला हुआ था, अपनी जगह से उठा नहीं, हिला-डुला तक नहीं, उसने और भी ज़्यादा नाक-भौंह सिकोड़ ली तथा द्वेषपूर्वक मुस्कराया।

बालाशोव के चेहरे पर इस प्रकार के स्वागत के अप्रिय प्रभाव को देखकर दावू ने अपना सिर ऊपर उठाया और रुखाई से यह पूछा कि उसे क्या चाहिये।

यह मानते हुए कि केवल इसी कारण उसका ऐसा स्वागत किया गया है कि दावू को मालूम नहीं है कि वह सम्राट अलेक्सान्द्र का एडजुटेंट-जनरल तथा नेपोलियन के पास भेजा गया उसका व्यक्तिगत दूत है, बालाशोव ने झटपट उसे अपना पद और अपने आने का उद्देश्य बताया। बालाशोव की बात सुनकर उसकी आशा के विपरीत दावू और भी कठोर तथा अशिष्ट हो गया।

"आपका पैकेट कहां है?" उसने पूछा, "मुझे दे दीजिये, मैं उसे सम्राट के पास भेज दूंगा।"

बालाशोव ने कहा कि उसे यह पैकेट सम्राट नेपोलियन को व्यक्तिगत रूप से देने का आदेश दिया गया है।

"आपके सम्राट के आदेशों का आपकी सेना में पालन किया जाता है, किन्तु यहां," दावू ने उत्तर दिया, "आपको वही करना होगा जिसका आपको हुक्म दिया जाता है।"

रूसी जनरल को मानो इस बात की और अधिक अनुभूति करवाने के लिये कि वह शक्ति के क्रूर रूप के सामने असहाय है, दावू ने एडजुटेंट को ड्यूटी-अफ़सर को बुलाने के लिये भेज दिया।

बालाशोव ने सम्राट के पत्रवाला पैकेट निकालकर मेज़ पर रख दिया (मेज़ दो पीपों पर रखे हुए दरवाज़े से बनायी गयी थी जिसके क़ब्ज़े अभी तक लटक रहे थे)। दावू ने पैकेट लेकर सिरनामा पढ़ा।

"मेरा आदर करने या न करने का आपको पूरा अधिकार है," बालाशोव ने कहा, "मगर यह कहने की अनुमति चाहता हूं कि मैं सम्राट अलेक्सान्द्र का एडजुटेंट-जनरल हूं..."

दावू ने चुपचाप बालाशोव की तरफ़ देखा और उसके चेहरे पर कुछ विह्वलता तथा परेशानी देखकर उसे सम्भवतः कुछ ख़ुशी हुई।

"आपके साथ यथायोग्य व्यवहार किया जायेगा," उसने कहा और पैकेट को जेब में डालकर सायबान से बाहर चला गया।

कुछ देर बाद मार्शल का एडजुटेंट श्रीमान डे कास्त्रे अन्दर आया और बालाशोव को उसके लिये तैयार किये गये निवास-स्थान पर ले गया।

बालाशोव ने इस दिन पीपों पर रखे उसी तख़्ते पर मार्शल के साथ उसी सायबान में ही लंच किया।

अगले दिन दावू सुबह ही कहीं रवाना हो गया, किन्तु जाने से पहले उसने बालाशोव को अपने पास बुलवाया और ज़ोर देकर कहा कि वह उससे यहीं रहने का अनुरोध करता है, अगर सामान को कहीं और ले जाने का आदेश मिले तो वह भी उसके साथ ही चला जाये तथा श्रीमान डे कास्त्रे के अलावा किसी से कोई बातचीत न करे।

चार दिन के एकान्तवास, ऊब, विवशता और अपनी तुच्छता की अनुभूति के बाद, जो ख़ास तौर पर इसलिये और भी अधिक महसूस हुई कि कुछ दिन पहले तक वह सत्ता के बहुत ऊंचे वातावरण में था, मार्शल के सामान और फ़्रांसीसी सेनाओं के साथ कई जगहों पर जाने के बाद, जिन्होंने इस पूरे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था, बालाशोव वील्ना पहुंचा। यह नगर भी अब फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े में था और बालाशोव उसी नगर-द्वार से इसमें दाख़िल हुआ जिससे चार दिन पहले यहां से गया था।

अगले दिन सम्राट नेपोलियन के निजी, ऊंचे पदाधिकारी काउंट ट्यूरेन ने बालाशोव के पास आकर सूचित किया कि सम्राट ने उसे अपने साथ भेंट का सम्मान प्रदान करने की इच्छा प्रकट की है।

बालाशोव को जिस घर में ले जाया गया, चार दिन पहले उसके सामने प्रेओब्राजेन्स्की गार्ड सेना* के सन्तरी पहरा दे रहे थे और अब

---

* यह एक सबसे पुरानी रूसी गार्ड सेना थी जिसका पीटर प्रथम ने १६८७ में मास्को के निकट प्रेओब्राजेन्स्की गांव में गठन किया था। – सं०

फ़र की टोपियां तथा छाती पर खुली नीली वर्दियां पहने दो फ़्रांसीसी ग्रेनेडियर खड़े थे तथा पोर्च के नज़दीक नेपोलियन के घोड़े और मामेल्यूक रुस्तान* के गिर्द हुस्सारों, उलानों, एडजुटेंटों, निजी सेवकों तथा जनरलों का शानदार दल नेपोलियन के बाहर आने की राह देख रहा था। नेपोलियन ने वील्ना के उसी घर में बालाशोव से भेंट की, जहां से सम्राट अलेक्सान्द्र ने उसे विदा किया था।

६

दरबारी शान-शौक़त के आदी होने के बावजूद बालाशोव नेपोलियन के दरबार की भव्यता और ठाट-बाट देखकर दंग रह गया।

काउंट ट्यूरेन उसे बड़े स्वागत-कक्ष में ले गया, जहां अनेक जनरल, सम्राट के उच्च पदाधिकारी और बड़े-बड़े पोलैंडी ज़मींदार प्रतीक्षा कर रहे थे। इन लोगों में से अनेक को बालाशोव ने रूसी सम्राट के दरबार में देखा था। ड्यूरोक** ने बताया कि सम्राट नेपोलियन सैर के लिये बाहर जाने के पहले रूसी जनरल से भेंट करेंगे।

कुछ मिनट तक इन्तज़ार करने के बाद इस समय ड्यूटी बजा रहा सम्राट का उच्च पदाधिकारी बड़े स्वागत-कक्ष में आया और शिष्ट-ता से बालाशोव को प्रणाम करने के बाद उससे अपने पीछे-पीछे आने को कहा।

बालाशोव छोटे स्वागत-कक्ष में पहुंचा जिसका एक दरवाज़ा उसी अध्ययन-कक्ष में खुलता था जिसमें से रूसी सम्राट ने उसे भेजा था। बालाशोव कोई दो मिनट तक इन्तज़ार करता हुआ अकेला ही खड़ा रहा। दरवाज़े के पीछे से तेज़ क़दमों की आवाज़ सुनायी दी। दरवाज़े के दोनों पट तेज़ी से खुले, उच्च पदाधिकारी प्रतीक्षा की मुद्रा में आदर-

---

* मिस्र के घुड़सवार सैनिकों को मामेल्यूक कहा जाता था। नेपोलियन ने पिरामिड के नज़दीक हुई लड़ाई में इस सेना को कुचल डाला था। वह एक मामेल्यूक रुस्तान को अपने साथ ले आया था और उसने उसे अपना अंग-रक्षक बना लिया था। – सं०

** ड्यूरोक (१७७२–१८१३) – मार्शल, नेपोलियन का प्रमुख एडजुटेंट। – सं०

पूर्वक खड़ा हो गया। एकदम गहरी ख़ामोशी छा गयी और अध्ययन-कक्ष में से किसी अन्य व्यक्ति के दृढ़ क़दमों की आहट मिली – यह नेपोलियन था। वह घुड़सवारी के लिये अभी-अभी तैयार हुआ था। वह गोल पेट तक को ढकनेवाली सफ़ेद वास्कट के ऊपर सामने से खुली नीली वर्दी, छोटी-छोटी टांगोंवाली मोटी-मोटी जांघों पर ख़ूब कसी हुई हिरन की खाल की बिरजिस और घुड़सवारी के ऊंचे बूट पहने था। उसके छोटे-छोटे बालों को स्पष्टतः अभी-अभी संवारा गया था, किन्तु एक लट उसके चौड़े मस्तक के मध्य में नीचे लटकी हुई थी। उसकी सफ़ेद, गुदगुदी गर्दन वर्दी के काले कालर में से काफ़ी बाहर को उभरी हुई थी और उससे यू-डी-कोलोन की सुगन्ध आ रही थी। उभरी ठोड़ीवाले उसके जवान, भरे-भरे चेहरे पर कृपा और सम्राट के अनुरूप भव्यता का भाव था।

नेपोलियन हर क़दम पर अपने पांव को ज़रा झटका देते और सिर को पीछे की ओर कुछ अकड़ाये हुए तेज़ी से बाहर आया। आगे की ओर निकले पेट और छाती तथा मोटे-मोटे चौड़े कंधोंवाली उसकी पूरी स्थूल तथा छोटी-सी आकृति में वह शान और बांकपन था जो ख़ूब अच्छी ज़िन्दगी बितानेवाले चालीस वर्षीय लोगों में होता है। इसके अलावा यह भी साफ़ नज़र आ रहा था कि आज वह बहुत अच्छे मूड में है।

बालाशोव के बहुत सिर झुकाकर तथा बड़े आदर से किये गये अभिवादन के उत्तर में उसने ज़रा सिर हिला दिया और उसके पास जाकर फ़ौरन ऐसे व्यक्ति की तरह बात करने लगा जो अपने समय के हर क्षण को बहुत मूल्यवान मानता है और अपने कथन को तैयार करने की भी परवाह नहीं करता, क्योंकि उसे यह विश्वास होता है कि वह हमेशा ही हर चीज़ ठीक और अच्छे ढंग से कहता है।

"नमस्ते, जनरल!" उसने कहा। "सम्राट अलेक्सान्द्र का जो पत्र आप लाये हैं, वह मुझे मिल गया है। आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई।" अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से उसने बालाशोव के चेहरे को ग़ौर से देखा और फिर फ़ौरन ही सामने की ओर देखने लगा।

यह स्पष्ट था कि बालाशोव के व्यक्तित्व में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। यह भी साफ़ था कि इस वक़्त जो कुछ **उसकी** आत्मा में हो रहा था, उसकी सिर्फ़ उसी में रुचि थी। उससे सम्बन्ध न रखनेवाली

किसी भी चीज़ का उसके लिये कोई महत्त्व नहीं था, क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि दुनिया की हर चीज़ केवल उसी की इच्छा पर निर्भर करती है।

"मैं न तो पहले युद्ध चाहता था और न अब चाहता हूं," नेपोलियन ने कहा, "लेकिन मुझे इसके लिये मजबूर कर दिया गया है। मैं तो **अब भी** (उसने इन शब्दों पर ख़ास ज़ोर दिया) उस स्पष्टीकरण पर विचार करने को तैयार हूं जो आप पेश कर सकते हैं।" और वह स्पष्ट तथा संक्षिप्त ढंग से रूसी सरकार के विरुद्ध अपनी नाराज़गी के कारण बताने लगा।

फ़्रांसीसी सम्राट जिस शान्त और मैत्रीपूर्ण अन्दाज़ में बात कर रहा था, उसके आधार पर बालाशोव को पक्का यक़ीन हो गया कि वह शान्ति चाहता है और बातचीत शुरू करने को तैयार है।

"हुजूर! मेरे सम्राट," बालाशोव ने बहुत पहले से फ़्रांसीसी में तैयार किये हुए अपने शब्द तब कहने शुरू किये जब नेपोलियन ने अपनी बात समाप्त करके उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। किन्तु उसपर टिकी हुई नेपोलियन की नज़र के कारण उसने घबराहट अनुभव की। "आप घबरा रहे हैं – अपने को सम्भालिये," बालाशोव की वर्दी और तलवार पर दृष्टि डालकर तनिक मुस्कराते हुए नेपोलियन ने मानो ऐसा कहा। बालाशोव सम्भल गया और बोलने लगा। उसने कहा कि सम्राट अलेक्सान्द्र रूसी राजदूत कुराकिन द्वारा पासपोर्टों की मांग को युद्ध आरम्भ करने का उचित कारण नहीं मानते, कि कुराकिन ने सम्राट की अनुमति के बिना अपनी इच्छा से ही ऐसा किया था, कि सम्राट अलेक्सान्द्र युद्ध नहीं चाहते, कि इंगलैंड के साथ रूस के किसी प्रकार के भी सम्बन्ध नहीं हैं।

"**अभी तक** नहीं हैं," नेपोलियन कह उठा और मानो इस बात से डरते हुए कि कहीं अपनी भावनाओं को वश में न रख पाये, उसने नाक-भौंह सिकोड़ी और ज़रा सिर झुकाकर बालाशोव को यह संकेत कर दिया कि वह अपनी बात जारी रख सकता है।

बालाशोव को जो कुछ कहने का आदेश दिया गया था, वह सब कह चुकने के बाद उसने यह और जोड़ दिया कि सम्राट अलेक्सान्द्र शान्ति चाहते हैं, किन्तु एक ही शर्त पर बातचीत करने को राज़ी होंगे... यहां बालाशोव हिचक गया – उसे वे शब्द याद हो आये जो

सम्राट अलेक्सान्द्र ने पत्र में नहीं लिखे थे, किन्तु जिन्हें सल्तिकोव के नाम आदेश में अवश्य ही लिखने को कहा था और यह हुक्म दिया था कि उन्हें नेपोलियन से भी ज़रूर कह दिया जाये। बालाशोव को ये शब्द याद आये – "जब तक एक भी सशस्त्र फ़्रांसीसी सैनिक रूसी धरती पर रहेगा मैं..." किन्तु किसी अजीब भावना ने उसे ऐसा कहने से रोक दिया। बेशक वह ऐसा करना चाहता था, मगर फिर भी ऐसा कर नहीं पाया। वह हिचका और बोला – "इस शर्त पर कि फ़्रांसीसी सेनायें नाइमन से पीछे हट जायें।"

इन अन्तिम शब्दों को कहते समय बालाशोव की घबराहट नेपोलियन से छिपी न रह सकी। नेपोलियन के चेहरे पर ऐंठन-सी हुई और उसकी टांग की बायीं पिंडली लयबद्ध ढंग से कांपने लगी। अपनी जगह से हिले बिना वह पहले से अधिक ऊंची आवाज़ में और जल्दी-जल्दी बोलने लगा। नेपोलियन द्वारा अब कहे जानेवाले शब्दों के दौरान बालाशोव ने कई बार नज़रें झुकायीं और अनचाहे ही नेपोलियन की बायीं टांग की पिंडली के कम्पन को देखे बिना न रह सका जो उसकी आवाज़ के अधिकाधिक ऊंची होने के साथ-साथ बढ़ता जा रहा था।

"मैं सम्राट अलेक्सान्द्र से कुछ कम शान्ति नहीं चाहता हूं," नेपोलियन ने कहना शुरू किया। "क्या शान्ति के लिये मैं ही अठारह महीने से सब कुछ नहीं कर रहा हूं? मैं अठारह महीनों से स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा कर रहा हूं। किन्तु बातचीत शुरू करने के लिये मुझसे किस चीज़ की अपेक्षा की जा रही है?" उसने त्योरी चढ़ाते और अपने छोटे-से, गुदगुदे और गोरे हाथ से ज़ोरदार प्रश्नसूचक संकेत करते हुए पूछा।

"हुज़ूर, यही कि आपकी सेनायें नाइमन से पीछे हट जायें।"

"नाइमन से पीछे हट जायें?" नेपोलियन ने इन शब्दों को दोहराया। "तो अब आप यह चाहते हैं कि हमारी सेनाओं को नाइमन से – केवल नाइमन से पीछे हटा लिया जाये?" सीधे बालाशोव की तरफ़ देखते हुए नेपोलियन ने फिर से कहा।

बालाशोव ने सादर सिर झुकाया।

चार महीने पहले पोमेरानिया से पीछे हटने की मांग की गयी थी और अब केवल नाइमन से। नेपोलियन तेज़ी से घूमा और कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगा।

"आप कहते हैं कि बातचीत शुरू करने के लिये मुझसे नाइमन नदी से पीछे हटने की मांग की जाती है। लेकिन दो महीने पहले ठीक इसी तरह मुझसे यह मांग की गयी थी कि मैं ओडर और विस्चुला से पीछे हट जाऊं और इसके बावजूद आप बातचीत शुरू करने को तैयार हैं।"

नेपोलियन ने कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चुपचाप चक्कर लगाया और फिर से बालाशोव के सामने आकर खड़ा हो गया। चेहरे की कठोरता से उसका चेहरा पथरा-सा गया था तथा बायीं टांग पहले से अधिक तेज़ी से कांपने लगी थी। बायीं पिंडली के अपने इस कम्पन के बारे में नेपोलियन को चेतना थी। "मेरी बायीं पिंडली का कम्पन मेरे लिये एक बड़ा चिह्न है," उसने कभी बाद में कहा।

"इस तरह की मांगें कि मैं ओडर और विस्चुला से पीछे हट जाऊं, प्रिंस बादेन्स्की* से की जा सकती हैं, मगर मुझसे नहीं," नेपोलियन अपने लिये सर्वथा अप्रत्याशित ही लगभग चीख़ उठा। "अगर आप लोग मुझे पीटर्सबर्ग और मास्को भी देते तो भी मैं ऐसी शर्तें न मानता। आप कहते हैं कि मैंने यह युद्ध आरम्भ किया है? लेकिन कौन अपनी सेना में पहले पहुंचा है? सम्राट अलेक्सान्द्र ही, मैं तो नहीं। और आप मुझसे तब बातचीत करने का प्रस्ताव कर रहे हैं जब मैं करोड़ों की रक़म ख़र्च कर चुका हूं, जब आपने इंगलैंड के साथ गठबन्धन कर लिया है और जब आपकी हालत पतली है – आप मुझसे बातचीत शुरू करने का प्रस्ताव कर रहे हैं! और इंगलैंड के साथ आपके गठबन्धन का क्या उद्देश्य है? क्या मिला है आपको उससे?" वह जल्दी-जल्दी कहता जा रहा था। स्पष्टतः अब वह शान्ति-सन्धि करने के लाभों और उसकी सम्भावनाओं के बारे में नहीं सोच रहा था, बल्कि यह सिद्ध करना चाहता था कि उसकी बात बिल्कुल सही है, वह बड़ा शक्तिशाली है, सम्राट अलेक्सान्द्र ग़लत है और उसने बहुत-सी ग़लतियां की हैं।

नेपोलियन ने सम्भवतः इस उद्देश्य से अपनी बात शुरू की थी कि सम्राट अलेक्सान्द्र की तुलना में उसकी स्थिति कितनी बेहतर है

---

* प्रिंस बादेन्स्की – सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम की पत्नी येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना का भाई था। – सं०

और वह यह ज़ाहिर करना चाहता था कि इसके बावजूद वह बातचीत आरम्भ करने को तैयार है। किन्तु उसने बोलना शुरू कर दिया था और वह जितना अधिक बोलता जाता था, अपने शब्दों को उतना ही कम अपने वश में रख पा रहा था।

उसके कथन का अब सम्भवतः केवल यही लक्ष्य था कि अपने को ऊंचा उठाये और ज़ार अलेक्सान्द्र को नीचे गिराये, ज़ार का अपमान करे यानी वही कुछ करे जो इस भेंट के आरम्भ में वह सबसे कम करना चाहता था।

"सुनने में आया है कि आपने तुर्कों के साथ सन्धि कर ली है?"

बालाशोव ने हामी भरते हुए सिर झुकाया।

"सन्धि हो गयी है..." बालाशोव ने कहना शुरू किया। किन्तु नेपोलियन ने उसे अपनी बात नहीं कहने दी। स्पष्टतः वह अकेला ही बोलना चाहता था और ऐसी वाकपटुता तथा अदम्य चिड़चिड़ेपन से बोलता जाता था जिसके सत्ता के नशे में चूर लोग आदी होते हैं।

"हां, मैं जानता हूं कि आपने मोल्दाविया और वालाख़िया प्राप्त किये बिना तुर्कों के साथ सन्धि कर ली है। मैंने आपके सम्राट को उसी प्रकार ये प्रान्त भी दे दिये होते जैसे फ़िनलैंड दिया।* हां," नेपोलियन कहता गया, "मैंने वादा किया था और सम्राट अलेक्सान्द्र को मोल्दाविया तथा वालाख़िया प्रान्त दे दिये होते, लेकिन अब उसे ये शानदार प्रान्त नहीं मिलेंगे। वह इन्हें अपने साम्राज्य में शामिल कर सकता था और एक ही शासनकाल में उसने रूस की सीमाओं को बोथनिया की खाड़ी से** डेन्यूब नदी के दहाने तक बढ़ा लिया होता। महान सम्राज्ञी येकातेरीना भी इससे अधिक कुछ न कर पाती," नेपोलियन अधिकाधिक उत्तेजित होते, कमरे में इधर-उधर आते-जाते और बालाशोव के सामने लगभग उन्हीं शब्दों को दोहराते हुए बोलता जा रहा था जो उसने सम्राट अलेक्सान्द्र से तिलज़ीत में ख़ुद कहे थे – "यह सब कुछ उसे मेरी दोस्ती की बदौलत मिलता... ओह, कितना

---

* १८०८–१८०९ का रूसी-स्वीडन युद्ध नेपोलियन ने भड़काया था। इसके फलस्वरूप फ़िनलैंड को स्वीडन से अलग करके रूस के साथ जोड़ दिया गया था। – सं०

** स्वीडन और फ़िनलैंड के बीच बाल्टिक सागर का उत्तरी भाग बोथनिया की खाड़ी कहलाता है। – सं०

शानदार शासनकाल, कितना शानदार शासनकाल!" उसने कई बार इन शब्दों को दोहराया, रुका, जेब से सोने की नासदानी निकाली और ज़ोर से नास ली।

"कितना शानदार शासनकाल **हो सकता था** सम्राट अलेक्सान्द्र का!"

नेपोलियन ने अफ़सोस से बालाशोव की तरफ़ देखा। बालाशोव ने कुछ कहना ही चाहा था कि उसने उसे फिर से टोक दिया।

"मेरे साथ दोस्ती रखते हुए ऐसी कौन-सी चीज़ थी जो वह चाहता, जिसकी वह इच्छा करता और वह उसे न मिलती?.." उसने मानो यह न समझ पाते हुए कंधे झटके। "नहीं, उसने मेरे दुश्मनों को ही अपने इर्द-गिर्द जमा करना बेहतर समझा। और वह भी कैसे दुश्मनों को?" वह कहता गया। "उसने श्टेन, आर्मफ़ील्ड, बेनिगसेन, विंत्सेन-गेरोदे जैसों को अपने पास बुला लिया। श्टेन – ग़द्दार है जिसे उसकी मातृभूमि से निकाल दिया गया, आर्मफ़ील्ड – दुराचारी और षड्यन्त्र-कारी है, विंत्सेनगेरोदे – फ़्रांसीसी भगोड़ा है, बेनिगसेन – वह इन सबकी तुलना में अधिक योग्य सैनिक है, लेकिन फिर भी विशेष योग्यता रखनेवाला नहीं। १८०७ में वह कुछ भी नहीं कर पाया था और उसके कारण सम्राट अलेक्सान्द्र के दिमाग़ में भयानक स्मृतियां ही जागृत होनी चाहिये थीं...* हम यह मान सकते हैं कि अगर ये लोग कुछ करने लायक़ होते तो इनका इस्तेमाल भी किया जा सकता था," नेपोलियन यह कहता जा रहा था और बड़ी मुश्किल से उन विचारों के लिये शब्द ढूंढ़ पा रहा था जो उसकी न्यायसंगतता या शक्ति (उसकी दृष्टि में इन दोनों का एक ही अर्थ था) को सिद्ध करते थे। "किन्तु ऐसा भी तो नहीं है। वे न तो युद्ध और न शान्ति के लिये ही किसी काम के हैं। कहते हैं कि इन सब में बार्कले सबसे ज़्यादा होशियार है, किन्तु उसकी पहली पैंतरेबाज़ियों को ध्यान में रखते हुए तो मैं ऐसा नहीं कह सकता। और ये करते क्या हैं, ये सभी दरबारी! प्फ़ुल योजना बनाता है, आर्मफ़ील्ड बहस करता है, बेनिगसेन सोच-विचार करता है और बार्कले, जिसे कोई अमली क़दम उठाना होता

---

* बेनिगसेन ने अलेक्सान्द्र प्रथम के पिता – सम्राट पावेल प्रथम की हत्या में भाग लिया था। – सं०

है, यह नहीं समझ पाता कि वह क्या तय करे और वक़्त बीतता जाता है। सिर्फ़ बग्रातिओन ही फ़ौजी आदमी है। वह बुद्धू है, मगर अनुभवी है, जल्दी से अनुमान लगा लेता है और इरादे का पक्का है... और इस बेहूदा भीड़ में आपका जवान सम्राट क्या भूमिका अदा करता है? ये लोग उसे बदनाम करते हैं और जो कुछ भी हो रहा है, उसकी सारी ज़िम्मेदारी उसपर ही डाल देते हैं। सम्राट को केवल तभी अपनी सेना के साथ होना चाहिये, जब वह ख़ुद सेनापति हो।" नेपोलियन ने सम्भवतः सम्राट अलेक्सान्द्र को सीधी चुनौती देते हुए ये शब्द कहे। वह जानता था कि सम्राट अलेक्सान्द्र अपने को सेनापति के रूप में प्रस्तुत करने को कितना अधिक उत्सुक हैं।

"युद्धाभियान को आरम्भ हुए एक सप्ताह बीत चुका है और आप वील्ना की भी रक्षा नहीं कर सके। आपको दो हिस्सों में बांट दिया गया है और पोलैंडी प्रान्तों से खदेड़ा जा चुका है। आपकी सेना में बड़बड़ाहट हो रही है।"

"नहीं, बात इसके विपरीत है, हुज़ूर," बालाशोव ने बमुश्किल वह याद करते हुए, जो उससे कहा गया था तथा बड़ी कठिनाई से शब्दों की इस आतिशबाज़ी का अर्थ समझने में सफल होते हुए कहा, "हमारी सेनायें तो बेचैन हैं कि..."

"मुझे सब कुछ मालूम है," नेपोलियन ने उसे टोक दिया, "मुझे सब कुछ मालूम है और मैं आपकी बटालियनों की संख्या भी उतनी अच्छी तरह से जानता हूं, जितनी अपनी बटालियनों की। आपके पास दो लाख सैनिक भी नहीं हैं, जबकि मेरे पास इससे तिगुने हैं। मैं क़सम खाकर कहता हूं," नेपोलियन ने यह भूलते हुए कहा कि उसकी यह क़सम कोई महत्त्व नहीं रखती, "क़सम खाकर कहता हूं कि विस्चु-ला के इस ओर मेरे पांच लाख तीस हज़ार सैनिक हैं। तुर्क आपके किसी काम नहीं आयेंगे, वे बिल्कुल निकम्मे हैं और आप लोगों के साथ सन्धि करके उन्होंने यह साबित भी कर दिया है। रहे स्वीडनवाले तो उनकी क़िस्मत में यही लिखा है कि पागल बादशाह उनपर शासन करें। उनका बादशाह पागल था, उन्होंने उसकी जगह दूसरे को यानी बेर्नाडोट * को बादशाह बना लिया और इसका भी फ़ौरन दिमाग़

* ज० ब० बेर्नाडोट (१७६३–१८४४) – १८०४ से नेपोलियन की सेना में मार्शल

चल निकला, क्योंकि किसी पागल के सिवा कौन-सा स्वीडी रूस के साथ गठबन्धन कर सकता है," नेपोलियन द्वेषपूर्वक मुस्कराया और नासदानी को फिर से नाक के निकट ले गया।

नेपोलियन के हर वाक्य पर बालाशोव ने आपत्ति करनी चाही और उसके पास आपत्ति करने को कुछ था भी। वह लगातार ऐसे व्यक्ति का सा भाव दिखा रहा था जो कुछ कहना चाहता है, किन्तु नेपोलियन उसे हर बार ही टोक देता था। स्वीडनवालों के पागलपन के जवाब में वह यह कहना चाहता था कि जब रूस उसके साथ है तो स्वीडन के लिये ख़तरे की कोई बात नहीं हो सकती। किन्तु नेपोलियन ने गुस्से से चिल्लाकर उसकी आवाज़ दबा दी। नेपोलियन चिड़चिड़ेपन की ऐसी स्थिति में था, जब स्वयं को अपनी न्यायसंगतता सिद्ध करने के लिये आदमी बोलता जाता है, बोलता जाता है और अधिक बोलता जाता है। बालाशोव बहुत परेशानी महसूस कर रहा था – सम्राट के दूत के नाते वह अपनी गरिमा पर आंच नहीं आने देना चाहता था और आपत्ति करने की आवश्यकता अनुभव करता था; किन्तु इन्सान के रूप में वह नेपोलियन के अनुचित क्रोध के पागलपन के सामने सहम गया था। वह जानता था कि नेपोलियन इस वक़्त जो कुछ भी कह रहा था, उसके इन शब्दों का कोई महत्त्व नहीं और जब वह शान्त हो जायेगा तो स्वयं लज्जा अनुभव करेगा। बालाशोव नज़रें झुकाये खड़ा था, नेपोलियन की मोटी-मोटी टांगों को देख रहा था और इसी कोशिश में था कि उसकी नज़र से नज़र न मिले।

"मैं क्या परवाह करता हूं आपके मित्र-देशों की?" नेपोलियन ने कहा। "मेरे भी मित्र हैं – पोलैंडवाले। अस्सी हज़ार हैं वे और बबर-शेरों की तरह लड़ते हैं। उनकी संख्या दो लाख हो जायेगी।"

सम्भवतः इस कारण और अधिक गुस्से में आकर कि ऐसा कहकर उसने स्पष्टतः झूठ बोला था तथा इसलिये भी कि बालाशोव अपने को क़िस्मत के रहम पर छोड़कर पहले की तरह विनम्र मुद्रा में उसके

था। स्वीडन के बुढ़ा गये बादशाह कार्ल १३वें ने १८१० में बेर्नाडोट को बेटा बना लिया और स्वीडन की संसद के निर्णय के अनुसार वह सिंहासन का उत्तराधिकारी तथा अमली तौर पर राज्याध्यक्ष बन गया। १८१२ में उसने रूस और १८१३ में इंगलैंड के साथ समझौता कर लिया। – सं०

सामने चुपचाप खड़ा था, वह तेज़ी से पीछे मुड़ा, बालाशोव के चेहरे के बिल्कुल नज़दीक आ गया और अपने गोरे हाथों को ज़ोर से तथा जल्दी-जल्दी हिलाते हुए लगभग चिल्ला उठा :

"आप यह जान लीजिये कि अगर आप प्रशा को मेरे ख़िलाफ़ उकसायेंगे, तो यह जान लीजिये कि मैं यूरोप के नक़्शे से उसका नाम-निशान मिटा दूंगा," उसने गुस्से से पीले और विकृत चेहरे के साथ तथा छोटे-से एक हाथ को ज़ोर से दूसरे हाथ पर मारते हुए कहा। "और मैं आपको द्विना, द्नेप्र से परे फेंक दूंगा तथा फिर से वह सीमा बहाल कर दूंगा जिसे अंधे और अपराधी यूरोप ने आपको लांघने दिया। हां, यह हाल होगा आपका, तो यह फल मिलेगा आपको मुझसे दूर होने का," उसने कहा और अपने मोटे-मोटे कंधों को ऐंठते हुए कई बार कमरे का चुपचाप चक्कर लगाया। उसने नासदानी को वॉस्कट की जेब में डाल दिया, फिर से निकाला, कई बार उसे नाक के क़रीब ले गया और बालाशोव के सामने रुक गया। वह चुप रहा, उसने बालाशोव की आंखों में सीधे उपहासपूर्वक देखा और धीमी आवाज़ में यह कहा – "और फिर भी आपके सम्राट का कितना शानदार शासन-काल **हो सकता था!**"

बालाशोव ने आपत्ति करने की आवश्यकता अनुभव करते हुए कहा कि रूसी पक्ष इस मामले को ऐसा निराशाजनक नहीं समझता है। नेपोलियन उसकी ओर पहले की तरह उपहासपूर्वक देखते और सम्भवतः उसकी बात न सुनते हुए ख़ामोश रहा। बालाशोव ने कहा कि रूस में युद्ध के अच्छे परिणामों की उम्मीद की जा रही है। नेपोलियन ने सौजन्य से ज़रा सिर झुका दिया मानो कह रहा हो – "ऐसा कहना तो आपका कर्त्तव्य है, किन्तु आप स्वयं इसपर विश्वास नहीं करते। मैंने आपको अपने दृष्टिकोण के सही होने का यक़ीन दिला दिया है।"

बालाशोव की बात समाप्त होने पर नेपोलियन ने फिर से नासदानी निकाल ली, नास की चुटकी ली और पांव को फ़र्श पर दो बार ज़ोर से पटककर मानो संकेत किया। इसी क्षण दरवाज़ा खुला, आदरपूर्वक झुके हुए उसके निजी पदाधिकारी ने उसे टोप और दस्ताने दे दिये तथा दूसरे ने उसकी ओर एक जेबी रूमाल बढ़ा दिया। इन दोनों की ओर देखे बिना नेपोलियन ने बालाशोव को सम्बोधित किया :

"सम्राट अलेक्सान्द्र को मेरी ओर से विश्वास दिला दीजिये," उसने टोप अपने हाथ में लेने के बाद कहा, "कि मैं उसके प्रति पहले की तरह ही निष्ठावान हूं। मैं उसे बहुत अच्छी तरह से जानता हूं और उसके श्रेष्ठ गुणों का बहुत ऊंचा मूल्यांकन करता हूं। मैं अब आपको और नहीं रोकूंगा, जनरल। सम्राट के नाम आपको मेरा पत्र मिल जायेगा।" इतना कहकर नेपोलियन तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ बढ़ चला। स्वागत-कक्ष के सभी लोग हड़बड़ाकर ज़ीने की ओर बढ़ने और जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरने लगे।

७

नेपोलियन ने बालाशोव से जो कुछ कहा था, उसके बाद, उसके क्रोधपूर्ण विस्फोटों और रुखाई से कहे गये इन शब्दों के बाद – "मैं अब आपको और नहीं रोकूंगा, जनरल, सम्राट के नाम आपको मेरा पत्र मिल जायेगा" – बालाशोव को यक़ीन हो गया था कि नेपोलियन न केवल उससे मिलना नहीं चाहेगा, बल्कि उससे, सम्राट अलेक्सान्द्र के उस दूत से, जिसके साथ उसने तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया था और मुख्यतः इसलिये कि जो नेपोलियन को शोभा न देनेवाले क्रोध का साक्षी बना था, कन्नी काटने की कोशिश करेगा। किन्तु बालाशोव को जब ड्यूरोक के ज़रिये इसी दिन सम्राट नेपोलियन के साथ लंच करने का निमन्त्रण मिला तो वह हैरान हुए बिना न रह सका।

खाने की मेज़ पर बेस्सेर, कोलेनकूर* और बेरथियर भी उपस्थित थे।

नेपोलियन प्रसन्नता और स्नेह प्रकट करते हुए बालाशोव से मिला। उसके चेहरे पर सुबह के अपने क्रोध-विस्फोटों के लिये न केवल लज्जा और भर्त्सना का कोई भाव नहीं था, बल्कि, इसके विपरीत,

---

* मार्शल बेस्सेर (१७६८–१८१३) – १८१२ में नेपोलियन की गार्ड-घुड़सेना का कमांडर था। कोलेनकूर – फ़्रांसीसी राजनयिक, १८०७ से १८११ तक रूस में राजदूत रहा था। – सं०

उसने बालाशोव को भी ख़ुशी के रंग में लाने की पूरी कोशिश की। साफ़ नज़र आ रहा था कि नेपोलियन को बहुत पहले से ही इस बात का यक़ीन हो चुका था कि उससे कभी कोई ग़लती नहीं हो सकती और उसके दृष्टिकोण के अनुसार वह जो कुछ भी करता था, वह इस कारण अच्छा नहीं होता था कि अच्छाई और बुराई की स्वीकृत धारणाओं के अनुरूप होता था, बल्कि इसलिये कि उसे करनेवाला वह यानी नेपोलियन था।

घोड़े पर वील्ना की सैर करने के बाद सम्राट नेपोलियन बहुत ख़ुश था। इस सैर के वक़्त लोगों की भीड़ ने बड़े हर्षोल्लास से उसका स्वागत और उसे विदा किया था। जिन सड़कों पर से वह गुज़रा था, उनके घरों की खिड़कियां उसके मोनोग्रामोंवाले क़ालीनों और झण्डों से सजी हुई थीं तथा पोलैंडी महिलाओं ने ख़ूब रूमाल हिला-हिलाकर उसका अभिनन्दन किया था।

खाने की मेज़ पर बालाशोव को अपनी बग़ल में बैठाकर उसने उसके साथ न केवल स्नेहपूर्वक, बल्कि ऐसे व्यवहार किया मानो वह बालाशोव को भी अपना ही दरबारी, उन लोगों में मानता हो जो उसकी योजनाओं से पूरी तरह सहमत थे और जिन्हें उसकी सफलताओं से ख़ुशी होनी चाहिये थी। बातचीत के दौरान नेपो-लियन मास्को की चर्चा और बालाशोव से रूसी राजधानी के बारे में पूछताछ करने लगा, सो भी एक जिज्ञासु पर्यटक की तरह नहीं, जो उस नयी जगह के सम्बन्ध में जानकारी पाना चाहता है जिसे देखने का इरादा रखता है, बल्कि इस विश्वास के साथ कि एक रूसी होने के नाते बालाशोव को उसकी इस जिज्ञासा से ज़रूर ख़ुशी होगी।

"मास्को की आबादी कितनी है, घरों की संख्या कितनी है? क्या यह सच है कि मास्को को पावन मास्को कहा जाता है? मास्को में कितने गिरजे हैं?" उसने जानना चाहा।

बालाशोव का यह उत्तर सुनकर कि मास्को में दो सौ से अधिक गिरजे हैं, वह बोला :

"इतने अधिक गिरजों की क्या ज़रूरत है?"

"रूसी बहुत श्रद्धालु लोग हैं," बालाशोव ने जवाब दिया। "वैसे तो मठों और गिरजों की बहुत बड़ी संख्या हमेशा जनता

के पिछड़ेपन की निशानी होती है," नेपोलियन ने अपनी इस टिप्पणी की प्रशंसा पाने के लिये कोलेनकूर की तरफ़ देखते हुए कहा।

बालाशोव ने बहुत आदरपूर्वक फ़्रांसीसी सम्राट के इस मत के प्रति अपनी असहमति प्रकट की।

"हर देश के अपने रंग-ढंग, अपने रीति-रिवाज होते हैं," बाला-शोव ने कहा।

"लेकिन यूरोप में और किसी भी जगह ऐसा नहीं है," नेपोलियन ने जवाब दिया।

"हुज़ूर, मैं माफ़ी चाहता हूं," बालाशोव बोला, "रूस के अलावा स्पेन में भी इतने ही अधिक मठ और गिरजे हैं।"

बालाशोव के इस जवाब की, जिसमें कुछ ही समय पहले स्पेन में फ़्रांसीसियों की पराजय* की ओर छिपा संकेत था, बाद में सम्राट अलेक्सान्द्र के दरबार में बहुत सराहना हुई थी, मगर यहां, नेपोलियन के लंच के समय इसका उचित मूल्यांकन नहीं हुआ और इसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया।

मार्शल महानुभावों के उदासीन और हतप्रभ चेहरों से ऐसा दिखाई दे रहा था कि वे उस चुभती चोट को नहीं समझ पा रहे हैं जिसकी ओर बालाशोव के लहजे ने संकेत किया था। "अगर कोई ऐसी फड़क-ती बात थी तो हम उसे नहीं समझे या फिर इसमें कोई चटपटी चीज़ ही नहीं है," उनके चेहरों के भाव कह रहे थे। इस उत्तर का इतना कम मूल्यांकन किया गया कि नेपोलियन ने इसकी तरफ़ कोई ध्यान ही नहीं दिया और भोलेपन से यह प्रश्न किया कि यहां से मास्को के लिये सीधा रास्ता किन शहरों से होता हुआ जाता है। बालाशोव ने, जो लंच के पूरे वक़्त बहुत सावधान रहा था, जवाब दिया कि जैसे प्रसिद्ध कहावत के अनुसार सभी रास्ते रोम को जाते हैं, वैसे ही सभी रास्ते मास्को जाते हैं, कि मास्को जाने के बहुत-से रास्ते हैं जिनमें **पोल्तावा** से होकर जानेवाला रास्ता भी है जिसे कार्ल १२वें ने चुना

---

* १८०८ में फ़्रांसीसियों ने स्पेन पर क़ब्ज़ा कर लिया था। किन्तु यूरोपीय राज्यों की सेनायें नेपोलियन की सेनाओं के विरुद्ध संघर्ष करती रहीं और १८१२ के आरम्भ में अंग्रेज़ जनरल वेलिंगटन की कमान में अंग्रेज़ी-स्पेनी-पुर्तगाली सेनाओं ने नेपोलियन की सेनाओं को कई लड़ाइयों में पराजित किया। – सं०

था।* अपने इस बहुत ही अच्छे जवाब से ख़ुश होने के कारण बालाशोव के चेहरे पर अनचाहे ही लाली दौड़ गयी। किन्तु बालाशोव ने "पोल्तावा" शब्द कहा ही था कि कोलेनकूर पीटर्सबर्ग से मास्को जानेवाली सड़क की असुविधाओं और पीटर्सबर्ग की अपनी स्मृतियों की चर्चा करने लगा।

लंच के बाद सभी लोग नेपोलियन के कक्ष में, जो चार दिन पहले सम्राट अलेक्सान्द्र का कक्ष था, कॉफ़ी पीने के लिये चले गये। सेवर** के प्याले से कॉफ़ी की चुसकी लेते हुए नेपोलियन बैठ गया और उसने बालाशोव को अपनी बग़ल में रखी कुर्सी पर बैठने का संकेत किया।

हम सभी लोग लंच के बाद के एक ऐसे जाने-माने मूड से परिचित हैं जो हर तरह के युक्तियुक्त कारणों की तुलना में व्यक्ति को अपने आपसे सन्तुष्ट होने और सभी को अपने मित्र मानने को मजबूर करता है। इस वक़्त नेपोलियन भी इसी मूड में था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह अपने भक्तों-श्रद्धालुओं से घिरा हुआ है। उसे विश्वास था कि लंच के बाद बालाशोव भी उसका भक्त, उसका प्रशंसक हो गया था। नेपोलियन ने मधुर और ज़रा व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ उसे सम्बोधित किया।

"मुझे बताया गया है कि यह वही कमरा है जिसमें सम्राट अलेक्सान्द्र रहा था। सच, अजीब बात है न, जनरल?" उसने स्पष्टतः इस बात के बारे में ज़रा भी सन्देह किये बिना कहा कि उसका यह कथन बालाशोव को अच्छा लगेगा क्योंकि यह अलेक्सान्द्र पर उसकी, नेपोलियन की श्रेष्ठता को प्रमाणित करता था।

बालाशोव इसका कोई उत्तर नहीं दे सका और उसने चुपचाप सिर झुका दिया।

"हां, चार दिन पहले विंत्सेनगेरोदे और श्टेन सलाह-मशविरा

---

* स्वीडन के साथ रूस के उत्तरी युद्ध (१७००–१७२१) के समय स्वीडन के बादशाह कार्ल १२वें ने उक्राइना से होते हुए मास्को पहुंचना चाहा, किन्तु १७०९ में पीटर प्रथम की कमान में रूसी सेनाओं ने पोल्तावा के निकट उसे पराजित कर दिया। इस लड़ाई ने युद्ध का रुख़ रूस के हक़ में कर दिया। – सं०

** पेरिस के निकट वह नगर जो चीनी मिट्टी के बढ़िया बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध है। – सं०

करते रहे थे," पहले जैसी विश्वासपूर्ण और कुछ-कुछ व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ नेपोलियन कहता गया। "एक बात मेरी समझ में नहीं आती," उसने कहा, "कि किसलिये सम्राट अलेक्सान्द्र ने मेरे सभी व्यक्तिगत शत्रुओं को अपने निकट कर लिया है? मैं यह समझने में... असमर्थ हूं। उसने यह क्यों नहीं सोचा कि मैं भी ऐसा ही कर सकता हूं?" उसने बालाशोव से यह पूछा और सम्भवतः इस प्रश्न ने उसमें सुबह के गुस्से की उस आग को फिर से हवा दे दी जो अभी तक बुझी नहीं थी।

"और उसे यह मालूम हो जाना चाहिये कि मैं ऐसा ही करूंगा," नेपोलियन ने कुर्सी से उठते और कॉफ़ी के प्याले को दूर हटाते हुए कहा। "मैं उसके सभी रिश्तेदारों – वीर्टेमबर्गों, बादेनों और वेईमास्र्कों* – को जर्मनी से बाहर निकाल दूंगा ... हां, मैं उन्हें निकाल बाहर करूंगा। वह उन्हें रूस में पनाह देने की व्यवस्था करे!"

बालाशोव ने अपने चेहरे के भाव से यह ज़ाहिर करते हुए सिर झुकाया कि वह तो जाने की अनुमति लेना चाहता है और केवल इसीलिये यह सब सुन रहा है कि ऐसा करने को विवश है। बालाशोव के चेहरे के उक्त भाव की ओर नेपोलियन कोई ध्यान नहीं दे रहा था। वह अब उसे अपने शत्रु के दूत के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति के रूप में सम्बोधित कर रहा था जो उसके प्रति पूरी तरह श्रद्धावान था और इसलिये जिसे अपने भूतपूर्व स्वामी के अपमान से खुश होना चाहिये।

"और सम्राट अलेक्सान्द्र ने सेनाओं की कमान किसलिये अपने हाथ में ले ली है? इसमें क्या तुक है? युद्ध तो मेरा धन्धा है, लेकिन उसका काम शासन करना है, सेनाओं की कमान सम्भालना नहीं। किसलिये उसने ऐसी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है?"

नेपोलियन ने फिर से नासदानी हाथ में ले ली, चुप रहते हुए कमरे में कई चक्कर लगाये और अचानक, अप्रत्याशित ही हल्की-सी मुस्कान के साथ तथा ऐसे विश्वास, फुर्ती और सादगी से, मानो वह

* अलेक्सान्द्र प्रथम की मां, मरीया फ़्योदोरोव्ना, शादी से पहले वीर्टेमबर्ग की प्रिंसेस थी, बहन यकतेरीना ओल्डेंबर्ग के ड्यूक की पत्नी थी, बहन मरीया प्रिंस साक्सेन-वेईमास्र्क की पत्नी थी और बीवी येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना बादेन के मार्क काउंट की बेटी थी यानी सभी रिश्तेदार जर्मन थे। – सं०

बालाशोव के लिये कोई महत्त्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि मधुर काम कर रहा हो, उसने चालीस वर्षीय रूसी जनरल के चेहरे की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया और केवल होंठों से मुस्कराते हुए उसका कान पकड़कर उसे धीरे से खींचा।

सम्राट द्वारा कान का खींचा जाना फ़्रांसीसी दरबार में सबसे बड़ा सम्मान और कृपाभाव माना जाता था।

"तो जनाब, सम्राट अलेक्सान्द्र के परम भक्त और दरबारी, आप कुछ बोलते क्यों नहीं?" उसने ऐसे कहा मानो उसकी उपस्थिति में उसके, नेपोलियन के सिवा, किसी अन्य का परम भक्त और दरबारी होना कोई हंसी-मज़ाक़ हो।

"जनरल के लिये घोड़े जोत दिये गये?" उसने बालाशोव के प्रणाम के उत्तर में ज़रा सिर झुकाते हुए पूछा।

"इन्हें मेरे घोड़े दे दीजिये, **बहुत लम्बा सफ़र है** इनका..."

बालाशोव द्वारा लाया गया पत्र ही अलेक्सान्द्र के नाम नेपोलियन का अन्तिम पत्र था। रूसी सम्राट को पूरे विस्तार से सारी बातचीत बता दी गयी और युद्ध आरम्भ हो गया।

८

मास्को में प्येर के साथ अपनी मुलाक़ात के बाद प्रिंस अन्द्रेई पीटर्सबर्ग चला गया। उसने अपने घरवालों से तो यही कहा कि वह काम-काज के सिलसिले में पीटर्सबर्ग जा रहा है, मगर वास्तव में उसका उद्देश्य प्रिंस अनातोल कुरागिन से मिलना था जिसके साथ अपनी मुलाक़ात को वह बिल्कुल ज़रूरी मानता था। कुरागिन, जिसके बारे में पीटर्सबर्ग पहुंचने पर उसने जानकारी प्राप्त की, वहां नहीं था। प्येर ने अपने साले को सूचित कर दिया था कि प्रिंस अन्द्रेई उसी की ख़ातिर पीटर्सबर्ग पहुंच रहा है। अनातोल कुरागिन ने उसी समय युद्ध-मन्त्री के पास जाकर नौकरी हासिल कर ली और मोल्दावियायी सेना में चला गया। इन्हीं दिनों पीटर्सबर्ग में प्रिंस अन्द्रेई की अपने प्रति हमेशा ही बहुत मेहरबान, अपने भूतपूर्व जनरल कुतूज़ोव से

भेंट हो गयी। कुतूज़ोव ने उससे यह प्रस्ताव किया कि वह उनके साथ ही मोल्दावियायी सेना में चले जिसका बूढ़े जनरल को सेनापति नियुक्त किया गया था। चुनांचे प्रिंस अन्द्रेई मुख्य सैनिक कार्यालय में नियुक्त होकर तुर्की चला गया।

प्रिंस अन्द्रेई को यह उचित नहीं लगा कि वह कुरागिन को पत्र लिखकर उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती दे। उसका ख़्याल था कि अगर किसी नये कारण के बिना वह उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारेगा तो इससे काउंटेस रोस्तोवा की बदनामी होगी और इसीलिये वह कुरागिन से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता था और यह इरादा रखता था कि इस भेंट के समय वह द्वन्द्व-युद्ध का कोई नया कारण या बहाना ढूंढ़ लेगा। किन्तु मोल्दावियायी सेना में भी उसकी कुरागिन से मुलाक़ात नहीं हो सकी, क्योंकि प्रिंस अन्द्रेई के तुर्क-फ़ौज में आने के कुछ ही समय बाद वह रूस लौट गया था। नये देश और जीवन की नयी परिस्थितियों में प्रिंस अन्द्रेई के लिये जीना कुछ आसान हो गया। उसकी मंगेतर की बेवफ़ाई के बाद, जिसके असर को वह उतना ही ज़्यादा महसूस करता था, जितना अधिक उसे दूसरों से दबाना-छिपाना चाहता था, उसके लिये जीवन की वे परिस्थितियां बहुत बोझल हो गयीं जिनमें वह अपने को सुखी-सौभाग्यशाली अनुभव करता था तथा स्वाधीनता और स्वतन्त्रता, जिन्हें वह पहले इतना अधिक मूल्यवान मानता था, और भी ज़्यादा कष्टप्रद हो गयीं। वह न केवल पहलेवाले उन विचारों पर चिन्तन नहीं करता था जो आउस्टेरलिट्ज़ के युद्ध-क्षेत्र में घायल होने पर आकाश को ताकते हुए उसके मस्तिष्क में आये थे, जिनकी बाद में उसे प्येर के साथ विस्तृत चर्चा करना अच्छा लगता था और जो फिर बोगुचारोवो की जागीर पर तथा स्विटज़रलैंड और रोम में उसके एकान्तवास के समय उसके मन पर छाये रहे थे, बल्कि वह तो अब इन विचारों को याद करते हुए भी घबराता था जिन्होंने उसके सामने असीम और उज्ज्वल क्षितिज प्रस्तुत कर दिये थे। उसकी तो अब पहले के विचारों से सम्बन्ध न रखनेवाली फ़ौरी और अमली चीज़ों में दिलचस्पी थी और वे पहले के आदर्श उससे जितने अधिक दूर होते जाते थे, वह उतने ही अधिक उत्साह से इन नयी रुचियों में लीन होता जाता था। ऐसे लगता था मानो पहले बहुत दूर उसके ऊपर छाई हुई आकाश की असीम मेहराब अब अचानक

बहुत नीची, ठोस रूप धारण करके उसे दबा देनेवाली मेहराब में बदल गयी है जिसमें सब कुछ स्पष्ट था, किन्तु जिसमें कुछ भी शाश्वत और रहस्यमय नहीं था।

प्रिंस अन्द्रेई अपने को जिन कामों में लगा सकता था, उनमें से सैन्य-सेवा उसके लिये सबसे आसान और जाना-पहचाना कार्य था। कुतूज़ोव के मुख्य सैनिक कार्यालय में ड्यूटी-जनरल के रूप में नियुक्त हो जाने पर उसने ऐसी लगन और निष्ठा से अपने को इस काम में लगा दिया कि कुतूज़ोव भी उसके इस कार्य-उत्साह और सलीक़े-तरीक़े से हैरान हुए बिना न रह सके। कुरागिन से तुर्की में भी भेंट न होने पर प्रिंस अन्द्रेई ने उसके पीछे-पीछे रूस जाने की ज़रूरत महसूस नहीं की। फिर भी वह इतना ज़रूर जानता था कि चाहे कितना ही वक़्त क्यों न बीत जाये, चाहे उसे उससे कितनी ही नफ़रत क्यों न हो, चाहे अपने को इस बात का यक़ीन दिलाने के लिये कि कुरागिन इस लायक़ नहीं है कि उससे टक्कर लेने के लिये इतने नीचे स्तर पर उतरा जाये और इसके हेतु वह चाहे कितनी ही दलीलों से अपने मन को समझाने की कोशिश क्यों न करे, कुरागिन के सामने आ जाने पर वह उसे उसी तरह से चुनौती दिये बिना नहीं रह सकेगा, जैसे कोई भूखा आदमी भोजन पर झपटे बिना नहीं रह सकता।

१८१२ में जब नेपोलियन के साथ युद्ध आरम्भ होने का समाचार बुख़ारेस्ट पहुंचा (जहां कुतूज़ोव पिछले दो महीनों से एक वालाख़ी औरत के साथ अपना सारा वक़्त बिता रहे थे) तो प्रिंस अन्द्रेई ने उनसे अनुरोध किया कि उसे पश्चिमी सेना में भेज दिया जाये। कुतूज़ोव ने, जो इस समय तक बोल्कोन्स्की की अत्यधिक क्रियाशीलता से ऊब चुके थे, और जो उनकी अपनी काहिली की भर्त्सना करती प्रतीत होती थी, उसे बार्कले के लिये एक कार्यभार सौंपकर बड़ी ख़ुशी से रवाना कर दिया।

पश्चिमी सेना में पहुंचने से पहले, जो उस वर्ष के मई महीने में ड्रीस्सा नगर के क़रीब मोरचाबन्दी किये थी, वह लीसियें गोरि की जागीर पर चला गया जो उसके रास्ते में, स्मोलेन्स्क राजमार्ग मे कुछेक किलोमीटर ही दूर थी। पिछले तीन वर्षों में प्रिंस अन्द्रेई के जीवन में इतना अधिक परिवर्तन हुआ था, उसने इतना अधिक मोचा-विचारा, अनुभव किया और देखा-भाला था (वह पूरब और

पश्चिम की बहुत यात्रा कर चुका था) कि लीसिये गोरि पहुंचने पर वह इस चीज़ से बिल्कुल दंग रह गया और उसे बड़ा अजीब-सा लगा कि छोटी से छोटी तफ़सील तक वहां की ज़िन्दगी ज्यों की त्यों थी, उसके रंग-ढंग में ज़रा भी तबदीली नहीं हुई थी। पत्थर के फाटक और छायादार मार्ग को पीछे छोड़ने पर वह यह अनुभव करते हुए लीसिये गोरि के बड़े मकान के पास पहुंचा मानो वह जादू में बंधा और गहरी नींद में सोया हुआ दुर्ग हो। इस घर में वही पहले जैसी गम्भीरता, वही सफ़ाई, वही ख़ामोशी थी, वही फ़र्नीचर, वही दीवारें, वही ध्वनियां, वही गंधें थीं, वही सहमे-सहमे चेहरे थे जिनपर समय ने अपने कुछ चिह्न अंकित कर दिये थे। प्रिंसेस मरीया पहले की तरह ही भीरु, कुरूप और जवानी की दहलीज़ से पीछे हटती जा रही लड़की थी, जो हमेशा भयभीत और नैतिक यातनाओं का शिकार रहती थी तथा व्यर्थ और किसी भी तरह की प्रसन्नता के बिना अपने जीवन के सबसे अच्छे वर्ष गंवाती जा रही थी। बुर्येन भी अपने जीवन के हर क्षण का ख़ुशी से उपयोग करनेवाली प्रसन्नतापूर्ण आशाओं से ओत-प्रोत, अपने से सन्तुष्ट और चंचल स्वभाव की वही पहले जैसी युवती थी। प्रिंस अन्द्रेई को लगा कि उसमें अब पहले से अधिक आत्म-विश्वास आ गया है। अपने बेटे के लिये वह स्विटज़रलैंड से डेसाल नाम के जिस अध्यापक को लाया था, वह अब रूसी ढंग का फ़्रॉक-कोट पहनता था और नौकरों के साथ ग़लत-सलत रूसी भाषा बोलता था, किन्तु पहले की तरह ही पढ़ा-लिखा, नेक और सीमित बुद्धिवाला पंडिताऊ क़िस्म का व्यक्ति था। बुज़ुर्ग प्रिंस में शारीरिक दृष्टि से केवल इतना ही परिवर्तन हुआ था कि उनका एक और दांत टूट जाने का आभास मिलता था। उनका रंग-ढंग वैसा ही था, हां, दुनिया में जो कुछ हो रहा था, उसके प्रति वह पहले की तुलना में अधिक द्वेषपूर्ण हो गये थे। सिर्फ़ नन्हा निकोलाई ही बड़ा हो गया था, बदल गया था, उसके गाल लाल-लाल और काले बाल लम्बे तथा घुंघराले हो गये थे और हंसते तथा ख़ुश होते समय अपने प्यारे-से मुंह का ऊपर-वाला होंठ वह अनजाने ही उसी तरह ऊपर उठाता था जैसे उसकी दिवंगता मां, टुइयां-सी प्रिंसेस उठाती थी। सिर्फ़ वही एक ऐसा था जो इस जादू में बंधे और निद्रामग्न दुर्ग में परिवर्तनहीनता के नियम का अपवाद था। यद्यपि बाहरी तौर पर सब कुछ ज्यों का त्यों था,

तथापि इस वक़्त के दौरान, जब प्रिंस अन्द्रेई इनसे दूर गया था, इन लोगों के आपसी सम्बन्ध बहुत बदल गये थे। इस परिवार के लोग एक-दूसरे के लिये पराये और शत्रुतापूर्ण दो दलों में बंटे हुए थे जो अब उसके आने पर ही एकसाथ हो गये थे, उसकी ख़ातिर ही उन्होंने अपने जीवन का सामान्य रंग-ढंग बदल दिया था। एक दल में बुज़ुर्ग प्रिंस, बुर्येन और वास्तुकार थे और दूसरे में प्रिंसेस मरीया, डेसाल, नन्हा निकोलाई तथा सभी आयायें और बूढ़ी नौकरानियां थीं।

प्रिंस अन्द्रेई के लीसिये गोरि आने पर घर के सभी लोग खाने की मेज़ पर एकसाथ बैठते थे, किन्तु सभी अटपटापन महसूस करते थे और प्रिंस अन्द्रेई यह अनुभव करता था कि वह मेहमान है, कि उसकी ख़ातिर ही वे लोग यह सब कर रहे हैं, कि उसकी उपस्थिति से सभी को परेशानी हो रही है। पहले दिन के लंच के वक़्त बरबस यह महसूस करते हुए प्रिंस अन्द्रेई मौन साधे रहा और बुज़ुर्ग प्रिंस बेटे को इस तरह अस्वाभाविक रूप से चुप देखकर ख़ुद भी उद्विग्नतापूर्ण चुप्पी बनाये रहे और भोजन समाप्त होते ही अपने कमरे में चले गये। शाम को प्रिंस अन्द्रेई जब पिता के कमरे में गया और उनमें दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश करते हुए जवान काउंट कामेन्स्की* के बहादुरी के कारनामों के बारे में बताने लगा तो बुज़ुर्ग प्रिंस ने अचानक ही उससे प्रिंसेस मरीया की चर्चा चला दी। उन्होंने अंधविश्वासों और कुमारी बुर्येन के प्रति मरीया के शत्रुतापूर्ण रवैये की, जो उनके शब्दों में उनकी एकमात्र सच्ची मित्र थी, कड़ी आलोचना की।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने कहा कि अगर वह बीमार हैं तो सिर्फ़ प्रिंसेस मरीया के कारण जो जान-बूझकर उन्हें यातना देती और चिढ़ाती-खिजाती है और ज़रूरत से ज़्यादा लाड़-प्यार तथा मूर्खतापूर्ण बातों से नन्हे निको-लाई को बिगाड़ती है। बुज़ुर्ग प्रिंस अच्छी तरह से जानते थे कि वह अपनी बेटी को यन्त्रणायें देते हैं, कि उसका जीवन बहुत दुखद है, किन्तु यह भी जानते थे कि वह अपनी बेटी को यातनायें दिये बिना नहीं रह सकते और वह इसी के लायक़ है। "प्रिंस अन्द्रेई, जो यह सब देखता

* काउंट मिखाईल कामेन्स्की (१७३८–१८०९) – फ़ील्ड मार्शल, जिसने १७६८–१७७४ की रूसी-तुर्की लड़ाइयों में हिस्सा लिया। – सं०

है, क्यों मुझसे अपनी बहन के बारे में कुछ भी नहीं कहता?" बुज़ुर्ग प्रिंस सोच रहे थे। "क्या वह यह समझता है कि मैं कोई बुरा आदमी या बूढ़ा उल्लू हूं जो किसी कारण के बिना अपनी बेटी से दूर और फ़्रांसीसी औरत के नज़दीक हो गया हूं? वह यह नहीं समझता और इसलिये मुझे उसे यह बात स्पष्ट करनी चाहिये, मुझे उससे सब कुछ कह देना चाहिये," बुज़ुर्ग प्रिंस सोच रहे थे। और वह बताने लगे कि किन कारणों से अपनी बेटी के बेहूदा स्वभाव को सहन नहीं कर सकते।

"अगर आप मेरी राय जानना चाहते हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने पिता की ओर देखे बिना कहा (वह जीवन में पहली बार पिता की आलोचना कर रहा था), "मैं यह कहना नहीं चाहता था, लेकिन अगर आप मेरी राय जानना चाहते हैं तो इस सबके बारे में मैं आपसे बिल्कुल साफ़-साफ़ कह देता हूं। अगर आपके और मरीया के बीच कोई ग़लतफ़हमी या झगड़ा है तो इसके लिये मैं मरीया को किसी तरह भी दोषी नहीं ठहरा सकता – मैं जानता हूं कि वह आपको कितना अधिक चाहती है और आपकी इज़्ज़त करती है। अगर आप मेरी राय जानना चाहते हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने झुंझलाते हुए कहा, क्योंकि पिछले कुछ समय से वह हमेशा ही जल्दी से झुंझला उठता था, "मैं सिर्फ़ इतना ही कह सकता हूं कि अगर कुछ ग़लतफ़हमियां हैं तो वह घटिया औरत ही, जो मेरी बहन की संगिनी होने के लायक़ नहीं है, इसके लिये ज़िम्मेदार है।"

बुज़ुर्ग पहले तो टकटकी बांधकर बेटे को देखते रहे और फिर ज़बरदस्ती मुस्करा दिये, जिससे उनके दांत की कमी की झलक मिली जिसका प्रिंस अन्द्रेई आदी नहीं हो पा रहा था।

"तुम किस संगिनी की बात कर रहे हो, मेरे प्यारे? किस संगिनी की? तो तुम लोग पहले ही इसकी चर्चा कर चुके हो! ठीक है न?"

"पिता जी, मैं भले-बुरे का फ़ैसला नहीं करना चाहता था," प्रिंस अन्द्रेई ने कठोर और कटु लहजे में कहा, "लेकिन आपने मुझे मुंह खोलने को मजबूर कर दिया और मैंने कह दिया तथा हमेशा यही कहूंगा कि प्रिंसेस मरीया दोषी नहीं... इसके लिये दूसरे दोषी हैं... यह फ़्रांसीसी औरत दोषी है..."

"तो तुमने अपना फ़ैसला सुना दिया!.. सुना दिया न!" बुज़ुर्ग

ने धीमी आवाज़ में और, जैसाकि प्रिंस अन्द्रेई को लगा, विह्वल होते हुए कहा, किन्तु एक क्षण बाद वह अचानक उछलकर खड़े हुए और चिल्ला उठे – "दफ़ा हो जाओ, दफ़ा हो जाओ! मैं तुम्हारी सूरत तक नहीं देखना चाहता!.."

प्रिंस अन्द्रेई ने इसी वक़्त यहां से चले जाना चाहा, किन्तु प्रिंसेस मरीया ने मिन्नत करके उसे एक दिन और रुकने को मना लिया। प्रिंस अन्द्रेई इस दिन पिता से नहीं मिला। बुज़ुर्ग अपने कमरे से बाहर नहीं आये, कुमारी बुर्येन तथा तीख़ोन के अतिरिक्त उन्होंने अन्य किसी को अपने कमरे में नहीं आने दिया और कई बार यह पूछा कि उनका बेटा चला गया या नहीं। अगले दिन, यहां से रवाना होने के पहले प्रिंस अन्द्रेई अपने बेटे के कमरे में गया। स्वस्थ-सुन्दर, मां की भांति घुंघराले बालोंवाला लड़का उसकी गोद में बैठ गया। प्रिंस अन्द्रेई उसे फ़्रांसीसी लेखक शार्ल पेर्रो का लिखा हुआ 'नीली दाढ़ीवाला' नामक क़िस्सा सुनाने लगा, मगर इसे अन्त तक सुनाये बिना ही अपने विचारों में खो गया। इस प्यारे बच्चे, अपने इस बेटे को जब वह गोद में बैठाये था तो उसके बारे में नहीं, बल्कि अपने बारे में सोच रहा था। वह इस चीज़ से संत्रस्त हो उठा कि ढूंढ़ने पर भी उसे अपने दिल में इस बात के मलाल की अनुभूति नहीं हुई कि उसने पिता को नाराज़ कर दिया था और न उसे इस बात का अफ़सोस ही महसूस हो रहा था कि जीवन में पहली बार वह पिता से झगड़ा करके घर से जा रहा था। उसे सबसे ज़्यादा परेशानी तो इस कारण हो रही थी कि कोशिश करने पर भी अपने बेटे के लिये वह पहलेवाला प्यार अनुभव नहीं कर रहा था जिसे उसने बेटे को दुलारकर तथा गोद में बैठाकर फिर से जागृत कर पाने की आशा की थी।

"आगे सुनाइये न," बेटे ने कहा। प्रिंस अन्द्रेई ने कोई जवाब दिये बिना उसे गोद से नीचे उतार दिया और कमरे से बाहर चला गया।

प्रिंस अन्द्रेई जैसे ही अपनी हर दिन की व्यस्तताओं से अलग हुआ, ख़ास तौर पर जैसे ही वह जीवन की उन पहलेवाली परिस्थितियों या वातावरण में लौटा, जिनमें उसने अपने को कभी सुखी अनुभव किया था, जीवन का विषाद अपनी पूरी शक्ति से उसके मन पर हावी हो

गया और उसने जल्दी से जल्दी इन यादों से निजात पाना तथा फ़ौरन किसी काम में जुट जाना चाहा।

"तो तुम्हारा जाना बिल्कुल तय है, अन्द्रेई?" बहन ने उससे पूछा।

"शुक्र है भगवान का कि जा सकता हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया, "मुझे इस बात का बड़ा अफ़सोस है कि तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।"

"किसलिये तुम ऐसी बात कह रहे हो!" प्रिंसेस मरीया बोली। "किसलिये तुम इस वक़्त ऐसी बात कह रहे हो जबकि ऐसे भयानक युद्ध में जा रहे हो और वह इतने बूढ़े हैं! कुमारी बुर्येन कह रही थी कि वह तुम्हारे बारे में पूछते रहे हैं..." मरीया ने जैसे ही यह कहना शुरू किया, उसके होंठ कांपने लगे और आंखें छलछला आईं। प्रिंस अन्द्रेई ने मुंह दूसरी ओर कर लिया और कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगा।

"हे भगवान! हे भगवान!" वह कह उठा। "कोई ज़रा सोचे तो कि किस तरह के, कैसे-कैसे घटिया लोग दूसरों की ख़ुशी छीन सकते हैं!" उसने ऐसे ग़ुस्से से कहा कि प्रिंसेस मरीया सहम गयी।

वह समझ गयी कि उन लोगों का उल्लेख करते हुए जिन्हें उसने घटिया कहा था, उसका अभिप्राय केवल कुमारी बुर्येन से नहीं था जिसने उसका जीवन दुखी बना दिया था, बल्कि उस व्यक्ति से भी था जिसने उसके भाई के जीवन की भी ख़ुशी छीन ली थी।

"अन्द्रेई, एक चीज़ के लिये मैं तुमसे विनती, तुम्हारी मिन्नत करती हूं," उसने उसकी कोहनी छूते और आंसुओं के बीच से चमकती आंखों से उसकी ओर देखते हुए कहा। "मैं तुम्हारी भावनाओं को समझती हूं (प्रिंसेस मरीया ने नज़रें झुका लीं)। तुम ऐसा नहीं सोचो कि लोग दुख-मुसीबतें देते हैं। लोग तो 'उनके' साधन मात्र हैं।" प्रिंसेस मरीया ने उस विश्वासपूर्ण और अभ्यस्त दृष्टि से प्रिंस अन्द्रेई के सिर के ज़रा ऊपर उस जगह की तरफ़ देखा जहां सुपरिचित प्रतिमा होती है। "दुख-मुसीबतें तो 'वही' देते हैं, लोग नहीं। लोग तो उनके साधन हैं, उनका कोई दोष नहीं। यदि तुम्हें ऐसा लगता है कि कोई तुम्हारे सम्मुख दोषी है तो तुम यह भूल जाओ और उसे क्षमा कर दो। हमें दण्ड देने का अधिकार नहीं है। और तब तुम क्षमा करने के

सुख को समझ जाओगे।"

"अगर मैं औरत होता तो मैंने ऐसा कर दिया होता, मरीया। यह नारी का सद्गुण है। किन्तु पुरुष को भूलना और क्षमा नहीं करना चाहिये और वह ऐसा कर भी नहीं सकता," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया और यद्यपि इस समय तक वह कुरागिन के बारे में नहीं सोच रहा था, तथापि उसका दबा-घुटा हुआ सारा गुस्सा उसके दिल में उमड़ने-घुमड़ने लगा। "अगर प्रिंसेस मरीया मुझसे क्षमा करने के लिये भी कहने लगी है तो इसका मतलब है कि बहुत पहले ही मुझे उसे दण्ड दे देना चाहिये था," उसने सोचा। प्रिंसेस मरीया को अब और कुछ जवाब दिये बिना वह उस सुखद, प्रतिशोधपूर्ण क्षण के बारे में सोचने लगा जब उसकी कुरागिन से, जिसके सम्बन्ध में उसे मालूम था कि वह सेना में है, भेंट होगी।

प्रिंसेस मरीया अपने भाई से यह अनुरोध करने लगी कि वह एक दिन और रुक जाये, उसने कहा कि अगर वह पिता जी से सुलह किये बिना चला जायेगा तो उन्हें कितना अधिक दुख होगा। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया कि वह सम्भवतः बहुत जल्द ही सेना से फिर यहां आयेगा, कि अवश्य ही पिता जी को पत्र लिख देगा और अब जितना अधिक यहां और ठहरेगा, उनका यह कलह उतना ही और अधिक बढ़ जायेगा।

"तो विदा अन्द्रेई! याद रखना कि दुख-मुसीबतें देनेवाले तो भगवान ही हैं और इसके लिये लोग कभी दोषी नहीं होते," प्रिंसेस मरीया द्वारा फ़्रांसीसी में कहे गये यही वे अन्तिम शब्द थे जो उससे विदा लेते समय उसने अपनी बहन के मुंह से सुने।

"क़िस्मत में ऐसा ही लिखा है!" लीसिये गोरि के घर के छायादार पथ पर बग्घी में जाते हुए प्रिंस अन्द्रेई सोच रहा था। "यह दयनीय और निर्दोष प्राणी उस बूढ़े द्वारा दी जानेवाली यातनाओं का शिकार होने के लिये यहां रहने को विवश है जिसका दिमाग़ ख़राब हो गया है। बूढ़ा यह महसूस करता है कि वह दोषी है, किन्तु अपने आपको बदल नहीं सकता। मेरा बेटा बड़ा हो रहा है और जीवन को देखकर ख़ुश हो रहा है जिसमें अन्य सभी की भांति या तो उसकी आंखों में धूल झोंकी जायेगी या वह ख़ुद दूसरों की आंखों में धूल झोंकेगा। मैं सेना में जा रहा हूं, भला किसलिये? मैं ख़ुद नहीं जानता और जिस

आदमी से नफ़रत करता हूं, उससे इसलिये मिलना चाहता हूं कि उसे अपनी हत्या करने और खिल्ली उड़ाने का मौक़ा दूं!" जीवन की परिस्थितियां पहले भी यही थीं, किन्तु पहले वे एक शृंखला की तरह आपस में जुड़ी हुई थीं, मगर अब अलग-अलग होकर बिखर गयी थीं। प्रिंस अन्द्रेई के मस्तिष्क में एक के बाद एक असम्बद्ध चीज़ आ रही थी और उसे किसी भी चीज़ में कोई तुक, कोई अर्थ नज़र नहीं आ रहा था।

६

प्रिंस अन्द्रेई जून के अन्त में सेना के मुख्य कार्यालय में पहुंचा। प्रथम सेना, जिसके साथ सम्राट अलेक्सान्द्र भी थे, ड्रीस्सा नदी के पास मोर्चाबन्द शिविर में थी। द्वितीय सेना प्रथम सेना से मिलने के लिये, जिसे, जैसाकि कहा जाता था, बहुत भारी फ़्रांसीसी सैनिक दल-बल ने प्रथम सेना से अलग कर दिया था, पीछे हट रही थी। रूसी सेना के सैनिक मामलों के रंग-ढंग से सभी नाख़ुश थे, किन्तु यह तो किसी ने सोचा तक नहीं था, किसी ने ऐसी कल्पना तक नहीं की थी कि रूसी प्रान्तों पर हमले का भी ख़तरा पैदा हो सकता है, कि युद्ध पश्चिम के पोलैंडी प्रान्तों से भी आगे बढ़ सकता है।

बार्कले डे टोल्ली, जिसके पास प्रिंस अन्द्रेई को भेजा गया था, उसे ड्रीस्सा नदी के तट पर मिला। चूंकि शिविर के आस-पास कोई बड़ा गांव या बस्ती नहीं थी, इसलिये सेना के साथ आनेवाले अनेक जनरलों और दरबारियों ने नदी के दोनों ओर के गांवों में कोई दस-बारह किलोमीटरों के घेरे में सबसे अच्छे घरों में डेरे डाल लिये थे। बार्कले डे टोल्ली सम्राट से कोई साढ़े चार किलोमीटर के फ़ासले पर ठहरा हुआ था। वह रूखे और उत्साहहीन ढंग से प्रिंस अन्द्रेई से मिला तथा अपने जर्मन लहजे में यह कहा कि वह सम्राट से उसकी नियुक्ति की बात करेगा और फ़िलहाल वह उसके मुख्य सैनिक कार्यालय से सम्बन्धित रह सकता है। प्रिंस अन्द्रेई को यह आशा थी कि अनातोल कुरागिन उसे यहां सेना में मिल जायेगा, किन्तु वह यहां नहीं था।

वह पीटर्सबर्ग में था और बोल्कोन्स्की को इस ख़बर से ख़ुशी हुई। अभी-अभी आरम्भ हो रहे एक विराट युद्ध के केन्द्र में होने के विचार में उसे बड़ी दिलचस्पी महसूस हुई और वह कुछ समय के लिये उस खीझ से मुक्ति पाकर प्रसन्न हुआ जो कुरागिन का ख़्याल आने पर उसके मन में पैदा होती थी। पहले चार दिनों के दौरान, जब उसे कुछ भी करना-धरना नहीं था, उसने घोड़े पर सवारी करते हुए शिविर की पूरी मोर्चेबन्दी के गिर्द चक्कर लगाया और अपने ज्ञान तथा अच्छी जानकारी रखनेवाले लोगों के साथ बातचीत के आधार पर उसके बारे में एक निश्चित धारणा बनाने का प्रयास किया। किन्तु यह शिविर उपयोगी है या नहीं, प्रिंस अन्द्रेई के लिये यह प्रश्न ऐसे ही बना रहा। अपने युद्धानुभव से उसे यह विश्वास हो चुका था कि युद्ध के मामले में बहुत ही सोच-समझकर बनायी गयी योजनायें भी कोई महत्त्व नहीं रखतीं (जैसाकि वह आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई में देख चुका था), कि सभी कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि शत्रु की अप्रत्याशित और उन गति-विधियों का क्या जवाब दिया जाता है जिनका किसी प्रकार भी पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता, कि सभी कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि कौन और कैसे युद्ध का संचालन करता है। इस अन्तिम प्रश्न को अपने लिये स्पष्ट करने के उद्देश्य से ही प्रिंस अन्द्रेई ने अपने पद तथा जान-पहचान का लाभ उठाते हुए सेना-संचालन के स्वरूप और इस संचालन में भाग लेनेवाले लोगों तथा दलों की गहरी जानकारी हासिल करने की कोशिश की और इस बारे में उसने जो स्थिति पायी, वह यह थी।

सम्राट जब वील्ना में थे तो पूरी सैनिक शक्ति तीन सेनाओं में विभाजित थी। प्रथम सेना बार्कले डे टोल्ली के अधीन थी, द्वितीय बग्रातिओन के और तृतीय तोर्मासोव के। सम्राट प्रथम सेना के अन्तर्गत थे, किन्तु सेनापति के रूप में नहीं। उन दिनों जारी की गयी आज्ञप्ति में यह नहीं कहा गया था कि सम्राट सेना की कमान अपने हाथ में लेंगे, बल्कि इतना ही, कि सम्राट सेना के साथ होंगे। इसके अलावा सम्राट के अधीन सेनापति का मुख्य सैनिक कार्यालय नहीं, बल्कि सम्राट का मुख्य कार्यालय ही था। उनके अधीन थे – सम्राट के मुख्य कार्यालय का अध्यक्ष, जनरल-क्वार्टर-मास्टर प्रिंस वोल्कोन्स्की, कुछ जनरल, सम्राट के एडजुटेंट, कूटनीतिक कर्मचारी और बहुत बड़ी

संख्या में विदेशी। किन्तु मुख्य सैनिक कार्यालय बिल्कुल नहीं था। इनके अतिरिक्त किसी निश्चित पद के बिना सम्राट के साथ ये लोग भी थे – भूतपूर्व युद्ध-मन्त्री अराकचेयेव, जनरलों में सबसे वरिष्ठ काउंट बेनिगसेन, सिंहासन का उत्तराधिकारी बड़ा ड्यूक कोन्स्तान्तीन पाव्लोविच, चांसलर काउंट रुम्यान्त्सेव, प्रशा का भूतपूर्व मन्त्री श्टेन, स्वीडी जनरल आर्मफ़ील्ड, युद्धाभियान की योजना का मुख्य रचयिता प्फ़ुल, सार्डीनिया में जन्मा एडजुटेंट-जनरल पाउलूची, वोल्ज़ोगेन तथा बहुत-से अन्य व्यक्ति भी। यद्यपि ये लोग सैनिक पदों के बिना सेना के साथ थे, तथापि अपनी ऊंची प्रतिष्ठा के कारण बड़ा असर-रसूख़ रखते थे और कोर-कमांडर तथा सेनापति भी अक्सर यह नहीं समझ पाते थे कि बेनिगसेन या बड़ा ड्यूक या अराकचेयेव या प्रिंस वोल्कोन्स्की किस हैसियत से कुछ पूछ रहा है या सलाह दे रहा है, और यह नहीं जान पाते थे कि सलाह की शक्ल में पेश किया जानेवाला वास्तव में सम्राट का कोई हुक्म है या उस व्यक्ति का हुक्म है और उसे पूरा किया जाये या न पूरा किया जाये। किन्तु यह तो स्थिति का बाहरी रूप था और किसी दरबारी के दृष्टिकोण से (सम्राट की उपस्थिति में सभी लोग दरबारी हो जाते हैं) सम्राट तथा इन सब लोगों की उपस्थिति का असली अर्थ सभी को स्पष्ट था। वह यह था – सम्राट ने सेनापति का पद ग्रहण नहीं किया था, किन्तु वह सभी सेनाओं का संचालन करते थे और उनके निकटवर्ती लोग उनके सहायक थे। अराकचेयेव बड़ी निष्ठा से क़ायदे-क़ानून को लागू करनेवाला और सम्राट का अंग-रक्षक था, बेनिगसेन वील्ना प्रान्त का बड़ा ज़मींदार था और मानो इस क्षेत्र की ओर से सम्राट का आदर-सत्कार करता था, मगर वास्तव में बहुत अच्छा जनरल था जो अच्छी सलाह दे सकता था और ज़रूरत होने पर किसी भी समय बार्कले की जगह ले सकता था। बड़ा ड्यूक इसलिये यहां था कि वह ऐसा चाहता था। प्रशा का भूतपूर्व मन्त्री श्टेन इस कारण यहां था कि अच्छा परामर्श दे सकता था और इसलिये भी कि सम्राट अलेक्सान्द्र उसके व्यक्तिगत गुणों का ऊंचा मूल्यांकन करते थे। आर्मफ़ील्ड नेपोलियन से सख़्त नफ़रत करता था और बहुत ही आत्मविश्वासपूर्ण जनरल था और इस गुण का सम्राट पर हमेशा बड़ा प्रभाव पड़ता था। पाउलूची इसलिये यहां था कि बड़े साहस और दृढ़ता से अपने विचार प्रकट करता था। एडजुटेंट-जनरल

इसलिये यहां थे कि वे हर उस जगह पर होते हैं जहां सम्राट होते हैं और अन्त में, मुख्य व्यक्ति प्फ़ुल इसलिये यहां था कि उसने नेपोलियन-विरोधी युद्ध-योजना तैयार की थी और सम्राट अलेक्सान्द्र को उसके कारगर होने का यक़ीन दिलाने के बाद युद्ध की सारी गति-विधियों का संचालन करता था। प्फ़ुल के साथ वोल्ज़ोगेन था जो प्फ़ुल के विचारों को उससे कहीं अधिक स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करता था, वह कक्षीय सिद्धान्तकार, उग्र तथा दूसरों को तिरस्कार से देखने की सीमा तक आत्मविश्वासी था।

उपर्युक्त रूसियों और विदेशियों के अलावा (ख़ास तौर पर विदेशी जो सामान्यतः पराये मामलों में बड़ी सक्रियता दिखाते हैं, हर दिन अप्रत्याशित रूप से नये विचार पेश करते थे) कम महत्त्व रखनेवाले बहुत-से अन्य लोग भी थे जो केवल इसलिये सेना के साथ थे कि उनके मुखिया यहां थे।

इस विराट, बेचैन, भव्य और दम्भी दुनिया में प्रिंस अन्द्रेई को बहुत ही उग्र रूप से उप-विभाजित निम्न झुकाव और दल दिखाये दिये।

पहला दल प्फ़ुल और उसके अनुयाइयों, युद्ध-सम्बन्धी सिद्धान्तकारों का था जो यह मानते थे कि युद्ध का एक विशेष विज्ञान या शास्त्र है और इस शास्त्र के ठोस नियम हैं, पैंतरेबाज़ी और शत्रु के गिर्द घूमकर जाने, आदि के नियम। प्फ़ुल और उनके अनुयायी युद्ध के काल्पनिक सिद्धान्तों के ठोस नियमों के अनुसार देश के भीतरी भागों में हटने की मांग करते थे और इस सिद्धान्त की हर अवहेलना को बर्बरता, जहालत और बदनीयती मानते थे। जर्मन प्रिंस, वोल्ज़ोगेन, विंत्सेनगेरोदे और अन्य, मुख्यतः जर्मन, इस दल में थे।

दूसरा दल इसके बिल्कुल विपरीत था। जैसाकि अक्सर होता है, यदि पहला दल अति की एक सीमा पर पहुंचा हुआ था तो दूसरा दूसरी सीमा पर। इस दल में वे लोग थे जो वील्ना से पोलैंड पर हमला करने और पहले से तैयार की गयी सभी योजनाओं से मुक्त होने की मांग करते थे। इस दल के प्रतिनिधि साहसपूर्ण कार्य-कलापों के समर्थक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना के भी प्रतिनिधि थे जिसके फलस्वरूप इस विवाद में इनका दृष्टिकोण और भी अधिक एकांगी था। ये रूसी थे – बग्रातिओन, इन्हीं दिनों में अधिक महत्त्व प्राप्त करता हुआ येर्मो-लोव और अन्य लोग। इस समय येर्मोलोव का यह मशहूर मज़ाक़ बहुत

प्रचलित था कि मानो उसने सम्राट से विनती की थी कि वह उसे जर्मन होने का सौभाग्य प्रदान करें। इस दल के लोग सुवोरोव का हवाला देते हुए यह कहते थे कि सोच-विचार के फेर में न पड़ने, नक़्शे के साथ मत्थापच्ची करने के बजाय लड़ना चाहिये, दुश्मन का मुंह तोड़ना चाहिये, उसे रूस में घुसने और रूसी सेनाओं का मनोबल ढीला नहीं होने देना चाहिये।

तीसरा दल दरबारियों का था जो उपर्युक्त दोनों दलों के दृष्टि-कोणों के बीच समझौते के पक्षधर थे और सम्राट इसी दल पर सबसे अधिक भरोसा करते थे। इस दल के अधिकतर लोग असैनिक थे, जिनमें अराकचेयेव भी शामिल था, और ये लोग उसी तरह से सोचते तथा बातें करते थे जैसे कोई निश्चित मत न रखनेवाले लोग सोचते तथा बातें करते हैं, मगर जो यह चाहते हैं कि उन्हें विशेष मत के समर्थक माना जाये। इनका कहना था कि युद्ध, विशेषकर बोनापार्टे (उसे फिर से बोनापार्ट के बजाय बोनापार्टे कहा जाने लगा था) जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के विरुद्ध युद्ध बहुत गहन चिन्तन और युद्ध-शास्त्र की बड़ी गहरी जानकारी की मांग करता है और इस मामले में प्फ़ुल बहुत प्रतिभावान है। किन्तु इसके साथ ही इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि सिद्धान्तकारों का बहुधा एकपक्षीय दृष्टिकोण होता है और इसलिये उन्हीं पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करना चाहिये, प्फ़ुल के विरोधियों, व्यावहारिक और युद्ध का अनुभव रखनेवाले लोगों की बातों पर भी कान देना चाहिये और फिर बीच का मार्ग अपनाना चाहिये। इस दल के लोग इस मत पर ज़ोर देते थे कि ड्रीस्सा के शिविर को प्फ़ुल की योजना के अनुसार बनाये रखकर दूसरी सेनाओं की गति-विधियों में परिवर्तन किया जाये। इस तरह से बेशक न तो एक और न दूसरे ही लक्ष्य की प्राप्ति होती थी, किन्तु इस दल के लोगों को ऐसा करना ही बेहतर लगता था।

चौथी विचारधारा का सबसे प्रमुख प्रतिनिधि बड़ा ड्यूक, सिंहासन का उत्तराधिकारी था जो आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई में उसके द्वारा अनुभव की गयी अपनी निराशा और कटु अनुभव को नहीं भूल पाया था। वहां वह शिरस्त्राण और कवच पहने हुए, मानो परेड में भाग लेने जा रहा हो, यह मानकर कि फ़्रांसीसियों को कुचल डालना बायें हाथ का खेल है, अचानक गार्ड-सेना की पहली क़तार में चला गया था

और मार-काट में बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा पाया था। इस दल के लोगों के तर्क-वितर्क में निष्कपटता का गुण और अवगुण भी था। ये लोग नेपोलियन से डरते थे, उसकी शक्ति और अपनी दुर्बलता के प्रति सचेत थे और किसी तरह की लाग-लपेट के बिना इसे साफ़ तौर पर ही व्यक्त करते थे। वे कहते थे – "इसका दुख-मुसीबतों, हमारी हेठी और हार के सिवा और कोई दूसरा नतीजा नहीं निकलेगा। हम वील्ना और वीतेब्स्क से पीछे हट गये, ड्रीस्सा से भी पीछे हट जायेंगे। हमारे लिये अक़्लमन्दी की सिर्फ़ एक ही बात रह गयी है – इससे पहले कि हमें पीटर्सबर्ग से निकाल दिया जाये, जल्दी से जल्दी सन्धि कर लेनी चाहिये!"

सेना के उच्च क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर फैले हुए इस मत का पीटर्सबर्ग में भी अनुमोदन किया जा रहा था और किन्हीं अन्य राजकीय कारणों से शान्ति का पक्ष-पोषक चांसलर रुम्यान्त्सेव भी इसका समर्थन करता था।

पांचवां दल बार्कले डे टोल्ली के अनुयाइयों का था जो इन्सान के रूप में तो इतना नहीं, जितना कि युद्ध-मन्त्री और सेनापति के नाते उसका समर्थन करते थे। वे कहते थे – "वह कैसा भी क्यों न हो (ये लोग हमेशा इसी तरह से अपनी बात शुरू करते थे), मगर ईमानदार और व्यावहारिक व्यक्ति है तथा उससे बेहतर अन्य कोई नहीं है। सही अर्थ में सेना की बाग-डोर उसके हाथ में दे दीजिये, क्योंकि किसी एक आदमी के हाथ में फ़ौज की पूरी ताक़त न होने की हालत में कामयाबी से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती और तब वह यह दिखा देगा कि क्या कर सकता है, जैसे कि फ़िनलैंड में उसने अपना कमाल दिखाया था। यदि हमारी सेना सुसंगठित-सुनियोजित और शक्तिशाली है तथा किसी भी तरह की हार का मुंह देखे बिना ड्रीस्सा तक पीछे हट पायी है तो इसके लिये हम केवल बार्कले के आभारी हैं। अगर बार्कले की जगह बेनिगसेन को सेनापति बना दिया गया तो सब कुछ चौपट हो जायेगा, क्योंकि बेनिगसेन १८०७ में ही अपनी अयोग्यता दिखा चुका है," इस दल के लोगों का कहना था।

इसके विपरीत, बेनिगसेन के पक्ष-पोषकों के छठे दल का यह मत था कि बेनिगसेन से अधिक व्यावहारिक और अधिक अनुभव रखनेवाला अन्य कोई व्यक्ति नहीं था। हम चाहें या न चाहें, लेकिन

आख़िर हमें उसी की शरण में जाना पड़ेगा। इस दल के लोग यह सिद्ध करते थे कि हमारी सेनाओं का ड्रीस्सा तक पीछे हटना बहुत ही लज्जा-जनक हारों और सतत भूलों का एक लम्बा सिलसिला था। "जितनी ज़्यादा भूलें करेंगे, उतना ही अधिक अच्छा होगा," ये लोग कहते, "कम से कम इतनी बात तो जल्द ही समझ में आ जायेगी कि यह सब ऐसे नहीं चल सकता। किसी बार्कले-वार्कले की नहीं, बल्कि बेनिगसेन जैसे आदमी की ज़रूरत है जिसने १८०७ में ही अपना जौहर दिखा दिया था, जिसकी नेपोलियन ने भी धाक मानी थी और जिसके प्रभुत्व को सहर्ष स्वीकार कर लिया जायेगा – ऐसा व्यक्ति केवल बेनिगसेन है।"

सातवां दल ऐसे लोगों का था जो हमेशा ही हर सम्राट, विशेषकर जवान सम्राट के इर्द-गिर्द पाये जाते हैं। सम्राट अलेक्सान्द्र के इर्द-गिर्द तो ख़ास तौर पर ऐसे लोग बहुत ज़्यादा थे – जनरल और सम्राट के एडजुटेंट, आदि। ये लोग सम्राट के रूप में नहीं, बल्कि सच्चे मन और निस्स्वार्थ भावना से एक व्यक्ति के रूप में उनके वैसे ही परम भक्त थे, जैसे १८०५ में रोस्तोव था, और सम्राट में न केवल सब कुछ अच्छा ही अच्छा, बल्कि सभी मानवीय गुण भी देखते थे। सेनापति के पद से इन्कार करके सम्राट ने जो नम्रता दिखाई थी, उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए ये लोग सम्राट के इस तरह आवश्यकता से अधिक विनम्र होने पर खेद भी प्रकट करते थे और यही चाहते तथा इस चीज़ पर ज़ोर देते थे कि उनके आराध्य सम्राट अपने अनावश्यक संकोच से मुक्त होकर खुले तौर पर यह घोषणा कर दें कि वह सेना की कमान अपने हाथ में लेते हैं, अपने अधीन सेनापति का मुख्य सैनिक कार्यालय स्थापित कर लें और ज़रूरी होने पर अनुभवी सिद्धान्तकारों तथा व्यावहारिक सैनिक ज्ञान से पगे लोगों से सलाह-मशविरा लेते हुए स्वयं सेना का संचालन करें। उनके ऐसा करने से ही सेना का उत्साह और मनोबल अपने चरम-बिन्दु पर पहुंच जायेगा।

आठवां, सबसे बड़ा दल ऐसे लोगों का था (जिनका अनुपात ९९ प्रतिशत था) जो न तो शान्ति और न युद्ध, न आक्रामक गतिविधियों और न ड्रीस्सा के नज़दीक अथवा किसी अन्य जगह पर रक्षात्मक शिविर, न बार्कले, न सम्राट, न फ़्फ़ुल, न बेनिगसेन के पक्ष-पोषक थे, बल्कि एक अन्य, और सबसे महत्त्वपूर्ण, यही चीज़ चाहते

थे कि जैसे भी हो, अधिकतम लाभ और आनन्द प्राप्त कर सकें। सम्राट के मुख्य कार्यालय के इर्द-गिर्द एक-दूसरी को काटती और सब कुछ गड़बड़ करती हुई षड्यन्त्र की जो तरंगें बह रही थीं, उनके इस गदले पानी में बड़ी सफलतायें, बहुत कुछ ऐसा प्राप्त किया जा सकता था जो किसी दूसरे समय असम्भव होता। इनमें कोई व्यक्ति अपनी लाभदायक स्थिति को बनाये रखने के लिये यदि आज प्फ़ुल से सहमत होता तो अगले दिन उसके विरोधी से और तीसरे दिन केवल इसीलिये कि अपने ऊपर कोई ज़िम्मेदारी न ले और सम्राट को ख़ुश कर सके, यह घोषणा कर देता कि अमुक विषय के बारे में उसका अपना कोई मत ही नहीं है। कोई अन्य व्यक्ति लाभ प्राप्त करने के लिये ख़ूब ज़ोर से उसी चीज़ के बारे में शोर मचाकर सम्राट का ध्यान आकर्षित करता जिसकी ओर एक दिन पहले स्वयं सम्राट ने संकेत किया होता था। वह छाती ठोंक-ठोंककर बैठक में डटकर बहस करता, चीख़ता-चिल्लाता, अपने से सहमत न होनेवाले को द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारता और इस तरह से यह सिद्ध करता कि वह सबके हित के लिये अपनी बलि देने को तैयार है। कोई तीसरा व्यक्ति दो बैठकों के बीच के अन्तराल में, जब उसके शत्रु अनुपस्थित होते, यह जानते हुए वफ़ादारी से की गयी अपनी सेवाओं के लिये पुरस्कार पाना चाहता कि इस वक़्त उसे इन्कार करना मुमकिन नहीं होगा। चौथा व्यक्ति संयोगवश ही सम्राट के सामने आने का ढोंग करते हुए अपने को काम में बेहद उलझा-उलझाया दिखाने की कोशिश करता। पांचवां व्यक्ति सम्राट के साथ भोजन कर पाने के अपने चिर वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये किसी ऐसे मत के पक्ष-विपक्ष में ज़ोरदार तर्क-वितर्क करता जो कुछ ही समय पहले सामने आया होता और इसकी ख़ातिर कमोबेश वज़नदार तथा उचित प्रमाणों का सहारा लेता।

इस दल के सभी लोग रूबल, पदक और ऊंचे पद पाने के फेर में रहते तथा इस दौड़-धूप में इनका इसी चीज़ पर ध्यान केन्द्रित रहता कि सम्राट की कृपादृष्टि की हवा किस दिशा में बह रही है। जैसे ही ये देखते कि इसका रुख़ अमुक दिशा में है, वैसे ही इन काहिल नर-मधुमक्खियों की यह भीड़ उसी दिशा में भिनभिनाने लगती और इस तरह सम्राट के लिये किसी अन्य दिशा में मुड़ना कठिन बना देती। स्थिति की ऐसी अनिश्चितता और भयानक ख़तरे की उपस्थिति के

वातावरण में, जो हर चीज़ को विशेष उग्रता प्रदान करता था, षड्-यन्त्रों, महत्त्वाकांक्षाओं, टकरावों, विभिन्न विचारों तथा दृष्टिकोणों के बवंडर में अपनी हित-साधना में व्यस्त लोगों का यह आठवां, सर्वाधिक बड़ा दल ही, जिसमें तरह-तरह के लोग शामिल थे, साझे ध्येय के लिये सबसे ज़्यादा गड़बड़ी और अस्पष्टता पैदा करता था। कोई भी प्रश्न क्यों न सामने आता, इन काहिल नर-मधुमक्खियों का यह दल पहलेवाले विषय को छोड़कर बड़े ज़ोर-शोर से इस नये विषय के गिर्द भिनभिनाने लगता और अपनी भिनभिनाहट से उनकी आवाज़ अस्पष्ट कर देता तथा दबा देता जो ईमानदारी से इसपर वाद-विवाद करते होते।

प्रिंस अन्द्रेई जिस समय यहां पहुंचा, उसी समय इन सभी दलों में से एक नया, नौवां दल अस्तित्व में आया था और अपनी आवाज़ उठाने लगा था। यह दल बुज़ुर्गों, बुद्धिमानों, राज-काज का बड़ा अनुभव रखनेवाले ऐसे लोगों का था, जो परस्पर विरोधी किसी भी दृष्टिकोण का समर्थन न करते हुए सम्राट के मुख्य कार्यालय में हो रही सभी चीज़ों को तटस्थता से देख सकते थे और इस अनिश्चितता, ढुलमुलपन, गड़बड़झाले तथा दुर्बलता की स्थिति से मुक्ति पाने के उपाय सोच सकते थे।

इस दल के लोग ऐसा सोचते और कहते थे कि सैनिक-दरबार के साथ सेना में सम्राट की उपस्थिति ही बुराई की सारी जड़ है। इसी के फलस्वरूप अनिश्चितता, अस्पष्टता और ढुलमुलपन के वे सम्बन्ध सेना में पैदा हो गये हैं जो राज-दरबार में तो अच्छे हो सकते हैं, किन्तु सेना में हानिकारक हैं, कि सम्राट को सेना-संचालन नहीं, शासन करना चाहिये, कि इस स्थिति से उबरने का मात्र यही उपाय है कि अपने दरबारियों के साथ सम्राट सेना से चले जायें, कि सम्राट की व्यक्तिगत सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये ही पचास हज़ार सैनिक किसी और काम के नहीं रहते, कि बुरे से बुरा, किन्तु स्वतन्त्र सेनापति, अच्छे से अच्छे, मगर सम्राट की उपस्थिति तथा उनके प्रभुत्व के कारण दबे हुए सेनापति से बेहतर होगा।

इसी समय, जब प्रिंस अन्द्रेई किसी काम-काज के बिना ड्रीस्सा के शिविर में रह रहा था, राजकीय सेक्रेटरी शिश्कोव ने, जो इस दल का एक मुखिया था, सम्राट के नाम एक पत्र लिखा जिसपर

बालाशोव और अराकचेयेव अपने हस्ताक्षर करने को राज़ी हो गये। इस पत्र में उसने सामान्य स्थिति पर अपने विचार प्रकट करने की सम्राट द्वारा दी गयी अनुमति का उपयोग तथा यह तर्क प्रस्तुत करते हुए कि सम्राट को राजधानी के लोगों को युद्ध के लिये अनुप्रेरित करना चाहिये, सम्राट से बहुत आदरपूर्वक यह अनुरोध किया कि वह सेना से चले जायें।

लोगों में जोश पैदा करने तथा मातृभूमि की रक्षा के लिये उठने का सम्राट द्वारा उनका आह्वान यही वे कारक थे (जिस सीमा तक उन्हें मास्को में ज़ार की व्यक्तिगत उपस्थिति का परिणाम माना जा सकता था) जो रूस की विजय के मुख्य कारण बने, सम्राट के सम्मुख प्रस्तावित किये गये और उन्होंने सेना से जाने के लिये एक बहाने के रूप में उन्हें स्वीकार कर लिया।

१०

यह पत्र तब तक सम्राट को दिया नहीं गया था, जब बार्कले ने लंच के वक़्त प्रिंस बोल्कोन्स्की को यह बताया कि तुर्की के युद्ध के बारे में पूछ-ताछ करने के लिये सम्राट व्यक्तिगत रूप से उससे मिलना चाहते हैं और इसलिये वह शाम के छः बजे बेनिगसेन के घर पर पहुंच जाये।

इसी दिन सम्राट के मुख्य कार्यालय में नेपोलियन की ऐसी नयी गति-विधि की ख़बर पहुंची जो रूसी सेना के लिये ख़तरनाक हो सकती थी – ऐसी ख़बर जो बाद में ग़लत साबित हुई। इसी सुबह को कर्नल मीशो* ने, जो सम्राट के साथ ड्रीस्सा की मोर्चेबन्दी देखने गया था, सम्राट के सामने यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि प्फ़ुल की योजना के अनुसार बनाया गया यह मोर्चेबन्द शिविर जिसे समर-नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता था और जिसकी बदौलत नेपोलियन की तबाही होनेवाली थी – यह शिविर बेतुका मामला था

---

* कर्नल मीशो (१७७१–१८४१) – सैनिक इंजीनियर जो सार्डीनी सेना से रूसी सेना में आया था। – सं०

और इससे रूसी सेना नष्ट हो जायेगी।

प्रिंस अन्द्रेई जनरल बेनिगसेन के घर पहुंच गया जो नदी-तट के बिल्कुल क़रीब किसी ज़मींदार के छोटे-से घर में रह रहा था। न तो बेनिगसेन और न सम्राट ही वहां पर थे। किन्तु सम्राट के एडजुटेंट चेर्निशोव ने प्रिंस अन्द्रेई का स्वागत किया और उसे यह बताया कि जनरल बेनिगसेन तथा मारक्विस पाउलूची को साथ लेकर सम्राट आज दूसरी बार ड्रीस्सा शिविर की मोर्चेबन्दी को देखने गये हैं जिसकी उपयोगिता के बारे में बहुत अधिक सन्देह पैदा हो गया है।

फ़्रांसीसी उपन्यास हाथ में लिये चेर्निशोव घर के पहले बड़े कमरे की खिड़की के पास बैठा था। यह कमरा पहले तो सम्भवतः संगीत-कक्ष था, क्योंकि उसमें अभी तक आर्गन बाजा रखा था जिसपर अब कुछ क़ालीनों का ढेर लगा हुआ था और कमरे के एक कोने में बेनिगसेन के एडजुटेंट की फ़ोल्डिंग खाट बिछी थी। यह एडजुटेंट यहीं था। ख़ूब मौज करने या बहुत ज़्यादा काम के कारण बुरी तरह से थका-हारा हुआ वह तह किये गये बिस्तर पर बैठा ऊंघ रहा था। इस कमरे में दो दरवाज़े थे – एक तो इसे भूतपूर्व ड्राइंगरूम से जोड़ता था और दूसरा दायीं ओर के कक्ष से। पहले दरवाज़े से जर्मन और कभी-कभी फ़्रांसीसी भाषा में बातचीत की आवाज़ सुनायी दे रही थी। सम्राट की इच्छा के अनुसार इस भूतपूर्व ड्राइंगरूम में युद्ध-परिषद की नहीं (सम्राट को चीज़ों को अस्पष्ट रखना पसन्द था), बल्कि ऐसे लोगों की बैठक बुलायी गयी थी जिनके विचार वह निकट भविष्य में सामने आनेवाली कठिनाइयों के बारे में जानना चाहते थे। यह युद्ध-परिषद नहीं, बल्कि एक तरह से ऐसे ख़ास लोगों की परिषद थी जिनकी मदद से सम्राट अपने लिये कुछ प्रश्नों को स्पष्ट करना चाहते थे। इस अर्ध-परिषद में स्वीडी जनरल आर्मफ़ील्ड, एडजुटेंट-जनरल वोल्ज़ोगेन, विंत्सेनगेरोदे (जिसे नेपोलियन ने भगोड़ा फ़्रांसीसी नागरिक कहा था), कर्नल मीशो, टोल, काउंट श्टेन (जिसका सेना से कोई वास्ता नहीं था) और प्फ़ुल को बुलाया गया था जो, जैसाकि प्रिंस अन्द्रेई ने सुना था, इस सारे मामले का आधार-स्तम्भ था। प्रिंस अन्द्रेई को उसे अच्छी तरह से देखने का मौक़ा मिल गया, क्योंकि उसके यहां आने के थोड़ी देर बाद प्फ़ुल भी यहीं आ गया और ड्राइंगरूम में जाने के पहले कुछ क्षण तक चेर्निशोव से बात करता रहा।

रूसी जनरल की भद्दे ढंग से सिली हुई वर्दी पहने, जो प्फ़ुल के शरीर पर फेंसी ड्रेस की तरह अटपटी-सी लग रही थी, प्रिंस अन्द्रेई को वह पहली नज़र में जाना-पहचाना-सा लगा, यद्यपि उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था। उसमें वैरोटेर, माक और श्मित तथा दूसरे जर्मन सैनिक सिद्धान्तकार जनरलों जैसा बहुत कुछ था जिनके साथ प्रिंस अन्द्रेई की सन् १८०५ में भेंट हो चुकी थी, किन्तु यह उनका विशिष्टतम रूप था। ऐसा जर्मन सैनिक सिद्धान्तकार, जिसमें उन अन्य सभी सिद्धान्तकारों क़े लक्षण हों, प्रिंस अन्द्रेई ने पहले कभी नहीं देखा था।

प्फ़ुल नाटा, बहुत दुबला-पतला, किन्तु बड़ी-बड़ी हड्डियों, भद्दी, मगर मज़बूत काठी, चौड़े चूतड़ों और हड़ीले कन्धोंवाला व्यक्ति था। उसके चेहरे पर बहुत अधिक झुर्रियां थीं और उसकी आंखें काफ़ी गहरी थीं। कनपटियों के पासवाले आगे के बालों को सम्भवतः जल्दी से ब्रश से संवार दिया गया था, जबकि उसके गुद्दी के बाल अजीब-से गुच्छों की तरह लटके हुए थे। वह बेचैनी और झल्लाहट से इधर-उधर देखता हुआ ऐसे अन्दर आया मानो जिस बड़े कमरे में दाख़िल हो रहा था, उसकी हर चीज़ से डरता हो। अटपटे ढंग से तलवार को सम्भाले हुए उसने चेर्निशोव को सम्बोधित करके जर्मन भाषा में यह पूछा कि सम्राट कहां हैं। साफ़ नज़र आ रहा था कि वह जल्दी से जल्दी ड्राइंगरूम में जाना, दुआ-सलाम के झंझट से छुट्टी पाकर काम की बात करने के लिये नक़्शे के सामने बैठ जाना चाहता था, जहां वह अपने को असली रंग में महसूस कर सकता था। चेर्निशोव के ये शब्द सुनकर कि सम्राट उस मोरचेबन्दी को देखने गये हैं जिसे उसने, ख़ुद प्फ़ुल ने अपनी योजना के अनुसार बनाया था, वह जल्दी-जल्दी सिर हिलाने और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराने लगा। आत्मविश्वासपूर्ण जर्मनों की तरह वह गुस्से से अपनी भारी-भरकम आवाज़ में बड़बड़ाया – "यह क्या बेवक़ूफ़ी है ... सब कुछ चौपट हो जायेगा ..." प्रिंस अन्द्रेई उसके ये शब्द नहीं सुन पाया और उसने ड्राइंगरूम में जाना चाहा, किन्तु चेर्निशोव ने यह कहते हुए प्फ़ुल से उसका परिचय करवाया कि प्रिंस अन्द्रेई तुर्की से आया है जहां लड़ाई का इतना अच्छा अन्त हो गया है। प्फ़ुल ने प्रिंस अन्द्रेई पर तो इतनी नहीं, जितनी उसके आर-पार जाती उड़ती-सी नज़र डाली और हंसते हुए जर्मन भाषा में कह उठा –

"वह युद्ध तो समर-नीति का बहुत बढ़िया नमूना रहा होगा।" और इसके बाद तिरस्कारपूर्वक मुस्कराकर उस कमरे में चला गया, जहां से आवाज़ें आ रही थीं।

यह स्पष्ट था कि प्फ़ुल हमेशा ही आसानी से भड़क उठने और व्यंग्य करनेवाला आदमी था। किन्तु आज तो वह ख़ास तौर पर इसलिये झल्ला उठा था कि उसके बिना ही उसके शिविर को देखने और उसपर टीका-टिप्पणी करने की हिम्मत की गयी थी। प्रिंस अन्द्रेई ने आउस्टेर-लिट्ज़ के अपने अनुभवों-संस्मरणों की बदौलत इस छोटी-सी एक मुलाक़ात के आधार पर ही इस व्यक्ति के बारे में एक साफ़ धारणा बना ली। प्फ़ुल दृढ़, बेहद ज़िद्दी और टस से मस न होनेवाले ऐसे आत्मविश्वासी लोगों में से एक था, जैसे कि केवल जर्मन होते हैं और वह इसीलिये ऐसा था कि जर्मन ही किसी अमूर्त्त विचार – विज्ञान, यानी परम सत्य के काल्पनिक ज्ञान को अपने आत्मविश्वास का आधार बना लेते हैं। फ़्रांसीसी इसलिये आत्मविश्वासी होता है कि अपने को बौद्धिक और शारीरिक – दोनों दृष्टियों से ऐसा मानता है कि क्या मर्द और क्या औरतें उसपर बरबस मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते। अंग्रेज़ के आत्म-विश्वास का आधार यह होता है कि वह संसार के सबसे सुव्यवस्थित राज्य का नागरिक है, क्योंकि अंग्रेज़ होने के नाते वह हमेशा यह जानता है कि उसे क्या करना चाहिये और यह भी जानता है कि अंग्रेज़ होने के नाते वह जो कुछ करता है, निस्सन्देह अच्छा ही करता है। इतालवी इसलिये आत्मविश्वासी होता है कि उत्तेजित हो जाता है और बहुत आसानी से ख़ुद को और दूसरों को भी भूल सकता है। रूसी इसलिये आत्मविश्वासी होता है कि कुछ भी नहीं जानता और जानना भी नहीं चाहता, क्योंकि यह नहीं मानता कि किसी भी चीज़ को पूरी तरह से जाना जा सकता है। इन सबमें आत्मविश्वासी जर्मन सबसे अधिक बुरा, सबसे ज़्यादा हठी और घृणित होता है, क्योंकि वह ऐसी कल्पना कर लेता है कि सचाई, विज्ञान को जानता है, जिसे उसने अपने मन से गढ़ा होता है, किन्तु वह उसे परम सत्य मानता है। प्फ़ुल भी सम्भवतः ऐसा ही था। उसका अपना सैन्य-विज्ञान था और वह था – फ़्रेड्रिक महान* के युद्धों के इतिहास के आधार पर बनाया

* फ़्रेडरिक महान (१७१२–१७८६) – १७४० से प्रशा का बादशाह और सेना-संचालक। – सं०

गया सेना की पैंतरेबाज़ी और शत्रु के गिर्द घूमकर जाने का सिद्धान्त। नवीनतम युद्ध-इतिहास में सामने आनेवाली सभी बातें उसे बेमानी, बर्बर और बेहूदा मुठभेड़ें ही लगती थीं जिनमें दोनों पक्षों की ओर से इतनी अधिक भूलें की गयी थीं कि इन युद्धों को युद्ध ही नहीं कहा जा सकता था – वे सिद्धान्त के अनुरूप नहीं थे और इसलिये विज्ञान का विषय नहीं बन सकते थे।

१८०६ के युद्ध की योजना बनानेवालों में प्फ़ुल भी शामिल था। इसी के आधार पर लड़ी गयी जेन और आउएरस्ताद की लड़ाइयों में नेपोलियन ने प्रशा की सेना को कुचल डाला था और फ़्रांसीसियों ने लगभग सारे प्रशा पर क़ब्ज़ा कर लिया था। किन्तु इस युद्ध के नतीजे में उसे अपने सिद्धान्त के ग़लत होने का ज़रा-सा भी सबूत नज़र नहीं आया। इसके विपरीत, उसके मतानुसार तो उसके सिद्धान्त की अवहेलना ही सारी असफलताओं का एकमात्र कारण थी और उसने अपने लाक्षणिक विनोदपूर्ण व्यंग्य से यह टिप्पणी की थी – "मैंने तो कहा था न कि सब कुछ चौपट हो जायेगा।" प्फ़ुल ऐसे सिद्धान्तकारों में से था जो अपने सिद्धान्त को इतना अधिक प्यार करते हैं कि सिद्धान्त के उद्देश्य – उसके व्यावहारिक प्रयोग को भूल ही जाते हैं। सिद्धान्त के प्रति अपने अत्यधिक अनुराग के कारण उसे उसका व्यावहारिक रूप फूटी आंखों नहीं सुहाता था और वह उसके बारे में कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। उसे तो असफलता से ख़ुशी भी होती थी, क्योंकि व्यवहार में सिद्धान्त से हटने के कारण होनेवाली असफलता उसकी दृष्टि में सिद्धान्त के औचित्य को ही प्रमाणित करती थी।

उसने प्रिंस अन्द्रेई और चेर्निशोव से प्रस्तुत युद्ध के बारे में ऐसे व्यक्ति के अन्दाज़ में कुछ शब्द कहे जिसे पहले से ही यह मालूम हो कि सब कुछ गड़बड़ हो जायेगा और यह कि उसे इस बात का कुछ अफ़सोस भी नहीं है कि ऐसा होनेवाला है। गुद्दी पर गुच्छों के रूप में लटकनेवाले बाल, जिन्हें संवारा नहीं गया था, और कनपटियों पर जल्दी से संवारे गये बाल तो इस चीज़ को और भी अधिक अच्छी तरह से व्यक्त कर रहे थे।

वह दूसरे कमरे में चला गया और उसी क्षण वहां से उसकी भारी-भरकम आवाज़ तथा बड़बड़ाहट सुनायी देने लगी।

११

प्रिंस अन्द्रेई अभी तक उधर ही देख रहा था जिधर फ़्फुल गया था कि इसी समय काउंट बेनिगसेन कमरे में आया और रुके बिना अभिवादन के रूप में प्रिंस बोल्कोन्स्की की ओर सिर झुकाकर तथा अपने एडजुटेंट को कुछ हिदायतें देकर कार्य-कक्ष की ओर चला गया। सम्राट उसके पीछे-पीछे अभी अपने घोड़े पर आ रहे थे और बेनिगसेन इसलिये जल्दी से आगे-आगे आ गया था कि वहां कुछ ज़रूरी तैयारी कर ले और सम्राट का वहां स्वागत कर सके। चेर्निशोव तथा प्रिंस अन्द्रेई बाहर पोर्च में आ गये। थके-थके-से सम्राट घोड़े से उतर रहे थे। मारक्विस पाउलूची सम्राट से कुछ कह रहा था। बायीं ओर को सिर झुकाये सम्राट कुछ खीझे-से पाउलूची की बात सुन रहे थे जो बड़े जोश से कुछ कह रहा था। सम्भवत: बातचीत को ख़त्म करने के इरादे से सम्राट कुछ आगे बढ़ गये, मगर उत्तेजना से लाल होता इतालवी शिष्टाचार को भूलकर उनके पीछे-पीछे चलता हुआ भी अपनी बात कहता गया :

"जहां तक उस आदमी का सवाल है जिसने ड्रीस्सा के इस शिविर की सलाह दी," पाउलूची उस समय कह रहा था, जब सम्राट पोर्च की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे और प्रिंस अन्द्रेई को देखकर उन्होंने उसके अपरिचित चेहरे पर बहुत ग़ौर से नज़र डाली।

"जहां तक उस आदमी का सवाल है, हुज़ूर, जिसने ड्रीस्सा के इस शिविर की सलाह दी," पाउलूची मानो अपने को क़ाबू में न रख पाते हुए गुस्से से कहता जा रहा था, "उसे या तो पागलख़ाने में भेजना चाहिये या फांसी के तख़्ते पर लटका देना चाहिये।" इतालवी की बात अन्त तक न सुनकर और मानो उसके इन शब्दों को सुने बिना और बोल्कोन्स्की को पहचानकर सम्राट ने कृपाभाव दिखाते हुए उससे कहा :

"तुम्हारे आने से बहुत ख़ुशी हुई। वहीं चले जाओ, जहां वे लोग जमा हो रहे हैं और मेरा इन्तज़ार करो।" इतना कहकर वह अपने कक्ष में चले गये। प्रिंस प्योत्र मिख़ाइलोविच वोल्कोन्स्की और बैरन श्टेन सम्राट के पीछे-पीछे गये तथा इनके बाद दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। सम्राट द्वारा दी गयी अनुमति के आधार पर प्रिंस अन्द्रेई पाउलूची

के साथ, जिसके साथ उसका तुर्की में ही परिचय हो चुका था, ड्राइंगरूम में चला गया जहां परिषद की बैठक में भाग लेनेवाले लोग जमा हो रहे थे।

प्रिंस प्योत्र मिखाइलोविच वोल्कोन्स्की तो एक तरह से सम्राट के कार्यालय का अध्यक्ष था। वोल्कोन्स्की नक़्शे लिये हुए सम्राट के कार्य-कक्ष से बाहर आया, ड्राइंगरूम में जाकर उसने उन्हें मेज़ पर बिछा दिया और वे प्रश्न प्रस्तुत कर दिये जिनपर वह एकत्रित महानुभावों के विचार सुनना चाहता था। मामला यह था कि रात के वक़्त यह समाचार मिला था (जो बाद में ग़लत साबित हुआ) कि फ़्रांसीसी सेनायें ड्रीस्सा शिविर के गिर्द घूमकर आगे बढ़ जाना चाहती थीं।

स्वीडी जनरल आर्मफ़ील्ड ही सबसे पहले बोलने लगा और सामने आनेवाली कठिनाइयों से बचने के लिये उसने अप्रत्याशित ही एक बिल्कुल नयी योजना पेश की। वह यह थी कि उन्हें पीटर्सबर्ग तथा मास्को की सड़कों से दूर सेना की तैनाती की एक नयी जगह चुननी चाहिये और उसके मतानुसार सभी सेनाओं को मिलकर शत्रु की प्रतीक्षा करनी चाहिये। उसकी यह नयी योजना पेश करने की तुक किसी की भी समझ में नहीं आयी और यह दिखाने के अतिरिक्त इसका कोई अर्थ नहीं हो सकता था कि उसके भी अपने कुछ विचार हैं। साफ़ नज़र आ रहा था कि आर्मफ़ील्ड ने यह योजना बहुत पहले तैयार की थी और इस समय उसने परिषद के सामने उपस्थित प्रश्नों के समाधान के लिये तो उतना नहीं (जिनके समाधान यह योजना पेश नहीं करती थी), जितना कि इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर इसे अभिव्यक्ति देने के लिये प्रस्तुत किया था। यह उन असंख्य योजनाओं में से एक थी जिन्हें इस बात का अनुमान लगाये बिना कि युद्ध का ऊंट किस करवट बैठेगा, साधार प्रस्तुत किया जा सकता था। कुछ लोगों ने आर्मफ़ील्ड की इस योजना की आलोचना की और कुछ ने इसका समर्थन किया। दूसरों की तुलना में जवान कर्नल टोल ने स्वीडी जनरल की योजना की कहीं कड़ी आलोचना की और बहस के वक़्त बग़ल की जेब से एक कापी निकाल ली, जिसमें बहुत कुछ लिखा हुआ था, और उसे पढ़ने की अनुमति मांगी। बहुत विस्तार से लिखी गयी टिप्पणी में उसने आर्मफ़ील्ड और प्फ़ुल की योजना से सर्वथा भिन्न युद्ध-योजना प्रस्तुत की। इतालवी मारक्विस पाउलूची ने टोल

की योजना पर आपत्ति करते हुए आगे बढ़कर आक्रमण करने की योजना का सुझाव दिया, जो, उसके शब्दों में, हमें अनिश्चय की स्थिति से उबारने और उस फन्दे (उसने ड्रीस्सा के शिविर को यही संज्ञा दी) से, जिसमें हम फंसे हुए थे, निकालने की एकमात्र योजना थी। इस पूरी बहस के दौरान प्फ़ुल और उसका दुभाषिया वोल्ज़ोगेन (जो दरबारी सम्बन्धों के मामले में उसका सेतु था) ख़ामोश रहे। प्फ़ुल केवल तिरस्कारपूर्वक नाक फरफराता और मुंह फेरकर यह ज़ाहिर करता रहा कि वह इस बकवास पर, जिसे इस वक़्त सुन रहा था, टीका-टिप्पणी करने के नीचे स्तर तक कभी नहीं जायेगा। किन्तु इस बैठक की अध्यक्षता कर रहे प्रिंस वोल्कोन्स्की ने जब उससे अपने विचार व्यक्त करने को कहा तो उसने सिर्फ़ इतना ही जवाब दिया:

"मुझसे कुछ भी पूछने की क्या ज़रूरत है? जनरल आर्मफ़ील्ड ने शत्रु के आक्रमण के लिये चंडावल को खुला छोड़ देने की बहुत बढ़िया सेना-तैनाती का सुझाव दिया है। या फिर इस इतालवी महानुभाव के आक्रमण का सुझाव। बहुत बढ़िया सुझाव है। या फिर यह कि पीछे हटा जाये। यह भी नेक ख़्याल है। मुझसे कुछ भी पूछने की क्या ज़रूरत है?" उसने कहा। "आप लोग मुझसे कहीं बेहतर यह सब जानते हैं।" किन्तु प्रिंस वोल्कोन्स्की ने जब त्योरी चढ़ाकर यह कहा कि वह सम्राट की ओर से उसकी राय जानना चाहता है तो प्फ़ुल उठकर खड़ा हो गया और अचानक जोश में आकर जर्मन में बोलने लगा:

"सब कुछ चौपट कर दिया, सब कुछ गड़बड़ कर डाला, सभी मुझसे ज़्यादा होशियार बनना चाहते थे और अब मेरे पास आये हैं: स्थिति को कैसे ठीक किया जाये? ठीक करने की कोई बात ही नहीं है। मैंने जो योजना बनायी है, उसे बिल्कुल ज्यों का त्यों रखते हुए अमली शक्ल दी जानी चाहिये," उसने अपनी हड़ीली उंगलियों को मेज़ पर मारते हुए कहा। "आख़िर कौन-सी कठिनाई सामने आ गयी है? सब बकवास है, बच्चों का खेल है।" वह नक़्शे के पास चला गया और अपनी एक हड़ीली उंगली को उसपर मारते हुए जल्दी-जल्दी बोलने और यह साबित करने लगा कि किसी तरह का संयोग भी ड्रीस्सा-शिविर की उपयोगिता को नष्ट नहीं कर सकता, कि सभी बातों को पहले से ध्यान में रखा गया है और अगर दुश्मन वास्तव

में ही शिविर के गिर्द चक्कर काटकर आगे बढ़ेगा तो ज़रूर तबाह हो जायेगा।

जर्मन भाषा न जाननेवाला पाउलूची उससे फ़्रांसीसी में कुछ प्रश्न करने लगा। वोल्ज़ोगेन अपने स्वामी, यानी प्फ़ुल की, जो बुरे ढंग से फ़्रांसीसी बोलता था, मदद तथा उसके शब्दों का अनुवाद करने लगा। वह बड़ी मुश्किल से ही ऐसा कर पा रहा था, क्योंकि प्फ़ुल बहुत जल्दी-जल्दी यह साबित कर रहा था कि न केवल वह सब कुछ, जो हुआ था, बल्कि जो कुछ हो सकता था, उसकी योजना में उसका पहले से ही ध्यान रखा गया था और अगर अब कुछ कठिनाइयां सामने आ गयी थीं तो सिर्फ़ इसीलिये कि हर चीज़ को बिल्कुल सही व्यावहारिक रूप नहीं दिया गया था। वह लगातार व्यंग्यपूर्वक हंसता था, अपनी बात को सिद्ध करता था और आख़िर उसने उसी तरह से तिरस्कारपूर्वक तर्क प्रस्तुत करना बन्द कर दिया जैसे कोई गणितज्ञ विभिन्न तरीक़ों से सही सिद्ध किये जा चुके किसी प्रश्न के हल के साथ और अधिक मत्थापच्ची करने से इन्कार कर देता है। वोल्ज़ोगेन ने उसकी जगह ले ली, वह उसके विचारों को फ़्रांसीसी में स्पष्ट करता और जब-तब प्फ़ुल से यह पूछता जाता था – "ठीक है न, हुज़ूर?" प्फ़ुल लड़ाई में बहुत ही उत्तेजित हो जानेवाले ऐसे व्यक्ति की भांति, जो अपने हिमायती को भी पीट डालता है, कभी-कभी वोल्ज़ोगेन पर भी गुस्से मे बरस पड़ता :

"इसमें पूछने की कौन-सी बात है? यह तो दिन के उजाले की तरह साफ़ है।" पाउलूची और मीशो दोनों एकसाथ वोल्ज़ोगेन पर फ़्रांसीसी में सवालों की बौछार कर रहे थे। आर्मफ़ील्ड जर्मन में प्फ़ुल को सम्बोधित करता था। टोल रूसी में प्रिंस वोल्कोन्स्की को कुछ समझा रहा था। प्रिंस अन्द्रेई चुपचाप सुन रहा था, सब कुछ देख रहा था।

यहां उपस्थित लोगों में क्रोधी, अत्यधिक दृढ़ और मूर्खता की हद तक आत्मविश्वास रखनेवाला प्फ़ुल ही प्रिंस अन्द्रेई को सबसे अधिक अपनी ओर खींच रहा था। इन सब लोगों में सम्भवतः वही एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने लिये कुछ नहीं चाहता था, किसी के प्रति भी शत्रुता का भाव नहीं रखता था और सिर्फ़ इसी बात का इच्छुक था कि वर्षों के श्रम के परिणामस्वरूप तैयार किये गये सिद्धान्त पर

आधारित योजना को व्यावहारिक रूप दिलवा सके। वह हास्यास्पद था, अपने व्यंग्यों के कारण अप्रिय था, किन्तु साथ ही अपने विचार के प्रति असीम निष्ठा के लिये बरबस आदर की भावना भी पैदा करता था। इसके अतिरिक्त, प्फ़ुल को छोड़कर, इस बैठक में बोलनेवाले सभी लोगों के भाषणों में एक सामान्य लक्षण था जो १८०५ की युद्ध-परिषद में दृश्यमान नहीं था – यह लक्षण था नेपोलियन के अत्यधिक शक्तिशाली होने की चेतना के कारण पैदा होनेवाला भय। इस भय को बेशक छिपाया गया था, मगर वह हर तर्क में व्यक्त हुआ था। सब यह मानते थे कि नेपोलियन के लिये कुछ भी असम्भव नहीं, कि वह सभी दिशाओं से प्रकट हो सकता है और वे उसके नाम के हौवे के आधार पर ही एक-दूसरे के सुझावों-प्रस्तावों को रद्द करते थे। लगता था कि केवल प्फ़ुल ही अपने सिद्धान्त के विरोधियों की भांति उसे, नेपोलियन को भी वहशी मानता था। किन्तु आदर की भावना के साथ-साथ प्फ़ुल प्रिंस अन्द्रेई के हृदय में तरस की भावना भी पैदा करता था। दरबारी लोग जिस लहजे में उससे बात करते थे, उन शब्दों से, जो पाउलूची ने उसके बारे में सम्राट से कहने की हिम्मत की थी, किन्तु मुख्यतः तो स्वयं प्फ़ुल की कुछ हताशापूर्ण अभिव्यक्तियों से यह स्पष्ट था कि दूसरे लोग भी यह जानते हैं और वह ख़ुद भी यह अनुभव कर रहा था कि उसका पतन निकट है। अपने आत्मवि-श्वास और जर्मन ढंग की चिड़चिड़ी व्यंग्यात्मकता के बावजूद कनपटियों पर संवारे गये तथा गुद्दी पर गुच्छों के रूप में लटकते बालोंवाला यह व्यक्ति दयनीय था। यद्यपि वह खीझ और तिरस्कार का दिखावा करते हुए इस तथ्य को छिपा रहा था, तथापि इस कारण स्पष्टतः हताश हो रहा था कि बहुत बड़े पैमाने पर अपने सिद्धान्त को जांचने-परखने और सारी दुनिया के सामने उसे सही साबित करने का एकमात्र अवसर उसके हाथ से निकला जा रहा है।

यह चर्चा बहुत देर तक चलती रही और जितनी अधिक देर तक यह जारी रही, बहस में उतनी ही ज़्यादा गर्मी आती गयी, वह चीख़-चिल्लाहट तथा व्यक्तिगत आक्षेपों की सीमा तक पहुंच गयी और इसी-लिये इन सारी बातों का कोई सामान्य निष्कर्ष निकालने की सम्भावना भी बहुत कम हो गयी। कई भाषाओं में हो रही इन बातों, पूर्वानु-मानों, योजनाओं, उनके खण्डनों और चीख़-चिल्लाहट को सुनते हुए

प्रिंस अन्द्रेई तो केवल हैरान ही हो रहा था। बहुत पहले, उसकी सैनिक गति-विधियों के समय उसके दिमाग़ में अक्सर आनेवाले ये विचार कि युद्धशास्त्र जैसी न तो कोई चीज़ है और न हो ही सकती है और अतः कोई तथाकथित सैनिक प्रतिभा भी नहीं हो सकती, अब उसके लिये प्रत्यक्ष सत्य बन गये थे। "ऐसे मामले में, जिसकी स्थिति और परिस्थितियां ही ज्ञात न हों, जिसका पूर्वानुमान ही न किया जा सकता हो तथा जिसमें सक्रिय सैनिक शक्ति का ठीक तौर पर अन्दाज़ लगाना और भी कम सम्भव हो, ऐसे मामले में सिद्धान्त तथा शास्त्र जैसी कोई चीज़ हो ही कैसे सकती है? न तो कोई यह जानता है और न जान ही सकता है कि एक दिन बाद हमारी तथा शत्रु की सेना की क्या स्थिति होगी और न कोई यही जान सकता है कि इस या उस दस्ते की कितनी निहित शक्ति है। कभी, जब सबसे आगे की क़तार में कोई कायर न हो जो 'हम कट गये!' चिल्लाकर भागने लगे, बल्कि कोई ज़िन्दादिल और साहसी व्यक्ति हो जो ज़ोर से 'हुर्रा!' कह उठे तो पांच हज़ार सैनिक तीस हज़ार सैनिकों के भी छक्के छुड़ा सकते हैं, जैसाकि शेनग्राबेन में हुआ था, मगर कभी पचास हज़ार भी आठ हज़ार के सामने पीठ दिखाकर भाग जाते हैं, जैसाकि आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई ने दिखाया था। हर अमली मामले की तरह युद्ध के मामले में भी शास्त्र जैसी कोई चीज़ कैसे हो सकती है जिसमें सभी कुछ का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, सभी कुछ असंख्य परिस्थितियों पर निर्भर करता है जिनका महत्त्व एक क्षण में ही निश्चित होता है तथा कोई भी यह नहीं कह सकता कि वह क्षण कब आयेगा। आर्मफ़ील्ड का कहना है कि हमारी सेना कट गयी, जबकि पाउलूची कहता है कि हमने फ़्रांसीसी सेना को दो तरफ़ा संकट की स्थिति में डाल दिया है। मीशो के मतानुसार ड्रीस्सा-शिविर की कमज़ोरी यह है कि नदी उसके पीछे है, जबकि प्फ़ुल की राय में यही इसकी शक्ति है। टोल एक योजना पेश करता है, आर्मफ़ील्ड दूसरी। सभी योजनायें अच्छी तथा बुरी हैं और हर सुझाव के लाभ केवल उस क्षण ही स्पष्ट हो सकते हैं, जब उसकी आज़माइश का वक़्त आयेगा। भला किसलिये ये सभी लोग सैनिक प्रतिभा की चर्चा करते हैं? क्या उसी को प्रतिभा कहना सम्भव है जो ठीक समय पर रसद लाने और किसी को दायें तथा किसी को बायें जाने का हुक्म दे सकता है? वे केवल इसीलिये ऐसी चर्चा करते हैं कि सेना के

लोगों में बड़ी चमक-दमक और उनके हाथों में सत्ता होती है और कमीनों, चापलूसों की भीड़ इसी सत्ता को प्रतिभा के अनुचित गुण प्रदान करते हुए उन्हें प्रतिभाशाली कहते हैं। इसके विपरीत, सबसे अच्छे जनरल, जिनसे मैं परिचित हूं, बुद्धू या अन्यमनस्क लोग होते हैं। बग्रा-तिओन सबसे अच्छा है – ख़ुद नेपोलियन ने यह स्वीकार किया है। फिर स्वयं नेपोलियन भी कैसा है! आउस्टेरलिट्ज़ के युद्ध-क्षेत्र में उसके चेहरे का आत्मतुष्टि और संकीर्णता व्यक्त करनेवाला भाव मुझे अच्छी तरह से याद है। अच्छे सेनापति में न केवल प्रतिभा और कोई ख़ास गुण ही नहीं, बल्कि इसके उलट, उसमें तो सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ मानवीय गुण – प्यार, कविता, कोमलता और मन में दुविधा पैदा करनेवाले दार्शनिक जैसे सन्देहों – का भी अभाव होना चाहिये। उसे कूपमंडूक और इस बात का दृढ़ विश्वास रखनेवाला होना चाहिये कि जो कुछ भी वह कर रहा है, बहुत महत्त्वपूर्ण है (वरना उसका धीरज उसका साथ नहीं देगा) और तभी वह बहादुर सेनापति बन सकेगा। भगवान न करें कि उसमें कहीं मानवीयता आ जाये, वह किसी को प्यार करने लगे, किसी पर दया करे और यह सोचने लगे कि क्या न्यायपूर्ण और क्या ऐसा नहीं है। यह समझना आसान है कि पुराने वक़्तों में ही उनके प्रतिभा होने का सिद्धान्त गढ़ लिया गया था, क्योंकि वे सत्ता के पर्यायवाची हैं। सैनिक मामलों की सफलता इन लोगों पर नहीं, बल्कि उस व्यक्ति पर निर्भर करती है जो फ़ौजी क़तार में खड़ा हुआ या तो 'मारे गये!' या 'हुर्रा!' चिल्ला उठता है। केवल इन सैनिक-पांतों में ही कोई इस विश्वास के साथ सैन्य-सेवा कर सकता है कि वह उपयोगी है!"

इस बहस को सुनते हुए प्रिंस अन्द्रेई इन्हीं विचारों में खोया रहा और केवल तभी चौंककर खड़ा हुआ, जब बैठक समाप्त हो गयी और पाउलूची ने उससे चलने को कहा।

अगले दिन परेड के वक़्त सम्राट ने प्रिंस अन्द्रेई से पूछा कि वह सेना में कहां काम करना चाहता है और प्रिंस अन्द्रेई ने सम्राट के अमले में रहने की प्रार्थना करने के बजाय सेना में जाने की अनुमति मांगकर दरबारी दुनिया में हमेशा के लिये अपना स्थान खो दिया।

१२

युद्ध शुरू होने के पहले रोस्तोव को अपने माता-पिता का पत्र मिला जिसमें संक्षिप्त रूप से उसे नताशा की बीमारी और प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसकी सगाई टूटने की सूचना दी गयी थी (सगाई टूटने का कारण नताशा का इन्कार बताया गया था) और उन्होंने फिर से यह अनुरोध किया था कि वह सेवानिवृत्त होकर घर आ जाये। यह पत्र मिलने पर रोस्तोव ने न तो छुट्टी लेने और न सेवानिवृत्त होने की कोशिश की, बल्कि माता-पिता को यह उत्तर लिख भेजा कि नताशा की बीमारी तथा प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसकी सगाई टूटने का उसे बहुत अफ़सोस है और वह उनकी इच्छा पूरी करने का भरसक प्रयास करेगा। सोन्या को उसने अलग से पत्र लिखा।

"मेरे हृदय की आराध्य रानी," उसने लिखा था। "मान-मर्यादा के अतिरिक्त अब अन्य कोई भी चीज़ मुझे गांव लौटने से नहीं रोक सकती थी। किन्तु अब युद्ध आरम्भ हो जाने पर मैं व्यक्तिगत सुख-सौभाग्य को अपने कर्त्तव्य तथा मातृभूमि के प्रति प्यार पर तरजीह दूं तो न केवल अपने मित्रों के सम्मुख, बल्कि ख़ुद अपनी नज़र में भी अपने को बेईमान महसूस करूंगा। किन्तु यह आख़िरी जुदाई है। यक़ीन मानो कि युद्ध समाप्त होते ही, अगर मैं ज़िन्दा रहा और तुम मुझे प्यार करती रहीं, तो मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर उड़ता हुआ तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा ताकि तुम्हें हमेशा के लिये अपने प्यार से दहकते सीने के साथ चिपका लूं।"

वास्तव में युद्धारम्भ ने ही रोस्तोव को गांव लौटने – जैसाकि उसने वादा किया था – और सोन्या से शादी करने से रोक दिया। ओतरादनोये गांव में पतझर के दिनों के शिकार, जाड़े के क्रिसमस त्योहार और सोन्या के प्यार ने उसके सम्मुख कुलीनों के जीवन के हर्ष-उल्लास और सुख-चैन की सम्भावनाओं के ऐसे द्वार खोल दिये थे जिनसे वह पहले अपरिचित था और जो अब उसे अपनी ओर खींचते थे। "प्यारी पत्नी, बच्चे, शिकारी कुत्तों और जोशीले बोर्ज़ोई कुत्तों के दस-बारह झुण्ड, खेतीबाड़ी का प्रबन्ध, पड़ोसियों के साथ मनोरंजन और कुलीनों के मामले में दिलचस्पी!" वह सोच रहा था। किन्तु अब तो जंग शुरू हो गयी थी और रेजिमेंट में बने रहना ज़रूरी था। चूंकि ऐसा

करना ज़रूरी था, इसलिये अपने स्वभाव के अनुसार निकोलाई रोस्तोव उस जीवन से भी ख़ुश था जो वह रेजिमेंट में बिता रहा था और उसे भी मधुर बना सकता था।

छुट्टी से लौटने और साथियों के बहुत ही हर्षपूर्ण स्वागत के बाद निकोलाई को घोड़े ख़रीदने के लिये भेज दिया गया और वह उक्रइना से इतने बढ़िया घोड़े लाया जिनसे ख़ुद उसे भी ख़ुशी हुई और उसके बड़े अफ़सरों ने भी उसकी ख़ूब तारीफ़ की। रोस्तोव की अनुपस्थिति में उसे कप्तान बना दिया गया और जब संख्या में वृद्धि करके रेजिमेंट को युद्ध के लिये तैयार किया गया तो उसे फिर से अपना पहलेवाला स्क्वाड्रन मिल गया।

जंग शुरू हो गयी, रेजिमेंट के लोगों को दुगुना वेतन देकर पोलैण्ड भेज दिया गया, नये अफ़सर, नये सैनिक और घोड़े आ गये और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि हंसी-ख़ुशी तथा जोश का वह मूड बन गया जो युद्ध के आरम्भ में हमेशा होता है। रेजिमेंट में अपनी अच्छी स्थिति की चेतना रखते हुए रोस्तोव पूरी तरह से सैन्य-सेवा की मौज-ख़ुशियों और दिलचस्पियों में खो गया, यद्यपि यह जानता था कि देर-सबेर उसे उनसे नाता तोड़ना होगा।

विभिन्न जटिल राजकीय, राजनीतिक और समरनीतिक कारणों से सेनायें वील्ना से पीछे हटीं। पीछे हटने के हर क़दम पर मुख्य सैनिक कार्यालय में तरह-तरह के हितों, तर्क-वितर्कों और गर्मागर्मी का पेचीदा तमाशा होता रहा। ऐसे सुहावने मौसम में और काफ़ी रसद के साथ पाव्लोग्राद हुस्सार रेजिमेंट के लिये इस तरह पीछे हटते जाना बहुत मामूली और हंसी-ख़ुशी का मामला था। केवल मुख्य सैनिक कार्यालय के लोगों में ही निराशा और बेचैनी हो सकती थी, वहीं षड्यन्त्र हो सकते थे, मगर आम सेनाओं में तो कोई अपने से यह पूछता तक नहीं था कि वे किधर और क्यों जा रहे हैं। अगर उन्हें पीछे हटते हुए अफ़सोस होता था तो सिर्फ़ इसलिये कि वह क्वार्टर छोड़ना पड़ता था जिसमें रस-बस गये थे या फिर किसी प्यारी-सी पोलैंडी प्रेयसी से विदा लेनी पड़ती थी। यदि किसी के दिमाग़ में यह ख़्याल आ भी जाता था कि हालात का रुख़ अच्छा नहीं है तो, जैसाकि अच्छे सैनिक को शोभा देता है, जिस आदमी के दिमाग़ में यह ख़्याल आता था, वह प्रसन्न रहने, हालात के आम रुख़ के बारे में नहीं, बल्कि उसी

समय अपने सम्मुख प्रस्तुत काम के बारे में सोचने की कोशिश करता था। शुरू में ये लोग पोलैंडी ज़मींदारों से जान-पहचान बढ़ाते और सम्राट तथा बड़े अफ़सरों के सामने परेड की तैयारी करते तथा परेड दिखाते हुए वील्ना के क़रीब बहुत ख़ुशी से पड़ाव डाले रहे। इसके बाद यह हुक्म मिला कि स्वेन्त्स्यानी की तरफ़ पीछे हट जायें और उस सारी रसद को नष्ट कर दें जिसे साथ ले जाना सम्भव न हो। हुस्सारों को स्वेन्त्स्यानी केवल इसलिये याद रहा कि यह "शराबी शिविर" था, जैसाकि इस पड़ाव की सारी सेनाओं ने इसे नाम दिया था, और इसलिये भी कि यहां सेना के ख़िलाफ़ इस कारण बहुत-सी शिकायतें आयी थीं कि उसने रसद जमा करने के आदेश का दुरुपयोग करते हुए पोलैंडी कुलीनों के घोड़े, बग्घियां और क़ालीन भी छीन लिये थे। रोस्तोव को स्वेन्त्स्यानी इसलिये स्मरण रहा कि यहां पहुंचने के पहले दिन ही उसने अपने क्वाटर मास्टर को बर्ख़ास्त कर दिया था और अपने स्क्वाड्रन के नशे में धुत्त सभी लोगों को किसी तरह भी अनुशासन में नहीं रख सका था जिन्होंने उसकी जानकारी के बिना पुरानी बियर के पांच पीपे हासिल कर लिये थे। स्वेन्त्स्यानी से अधिकाधिक पीछे हटते हुए ये ड्रीस्सा तक पहुंच गये, फिर ड्रीस्सा से भी पीछे हटे और रूस की सीमाओं के निकट जा पहुंचे।

पाव्लोग्राद रेजिमेंट ने १३ जुलाई को पहली बार एक संजीदा फ़ौजी कार्रवाई में हिस्सा लिया।

इस फ़ौजी कार्रवाई की पूर्ववेला में, १२ जुलाई की रात को बारिश और बिजली की कड़क के साथ बहुत ज़ोर का तूफ़ान आया। १८१२ की गर्मियों में तो आंधी-तूफ़ानों का यों भी ख़ूब ज़ोर रहा था।

पाव्लोग्राद रेजिमेंट के दो स्क्वाड्रन कूटू के खेत में पड़ाव डाले थे। कूटू के पौधों में बालियां आ चुकी थीं, मगर ढोर-डंगरों और घोड़ों ने इस फ़सल को पूरी तरह रौंद डाला था। मुसलाधार बारिश हो रही थी और जवान अफ़सर इल्यीन के साथ, जिसकी रोस्तोव सरपरस्ती करता था, जल्दी से बनायी गयी एक झोंपड़ी में बैठा था। इनकी रेजिमेंट का बड़े-बड़े गलमुच्छोंवाला एक अफ़सर, जो मुख्य सैनिक कार्यालय से लौटते हुए बारिश में बुरी तरह भीग गया था, रोस्तोव के पास आ गया।

"काउंट, मैं मुख्य सैनिक कार्यालय से लौट रहा हूं। आपने जनरल

रायेव्स्की के बहादुरी के कारनामे के बारे में सुना है?" और इस अफ़सर ने सल्तानोव्स्की लड़ाई की वे सभी तफ़सीलें सुना दीं, जो उसने मुख्य सैनिक कार्यालय में सुनी थीं।

रोस्तोव अपनी गर्दन को, जिससे पानी बह रहा था, कंधों के बीच दबाये हुए पाइप के कश खींच रहा था और कभी-कभी जवान अफ़सर इल्यीन की तरफ़ देखते हुए, जो उसके साथ सट गया था, मन मारकर यह सब सुन रहा था। सोलह वर्षीय जवान अफ़सर इल्यीन कुछ ही समय पहले रेजिमेंट में आया था और उसके लिये निकोलाई रोस्तोव अब वैसा ही था, जैसा सात साल पहले निकोलाई के लिये देनीसोव था। इल्यीन हर बात में रोस्तोव की नक़ल करता था और किसी औरत की तरह उसे चाहता था।

बड़े-बड़े गलमुच्छोंवाला ज़्दरजीन्स्की नाम का अफ़सर बड़े शब्दाडम्बर से यह बता रहा था कि सल्तानोव्स्की बांध कैसे एक तरह से रूसियों का थेर्मोपील* था, कैसे इसी बांध पर जनरल रायेव्स्की ने वीरता का ऐसा कारनामा किया था जो प्राचीन वीर-कृत्य के अनुरूप था। वह बता रहा था कि किस तरह जनरल रायेव्स्की भारी गोलाबारी में अपने दो बेटों को साथ लेकर इस बांध पर गया और उन दोनों को अपने अग़ल-बग़ल रखते हुए उसने दुश्मन पर हमला किया। रोस्तोव यह सुन रहा था और उसने ज़्दरजीन्स्की का उत्साह बढ़ाने के लिये न केवल कुछ कहा ही नहीं, बल्कि, इसके विपरीत, इस समय वह उस व्यक्ति जैसा लग रहा था जिसे सुनायी जानेवाली बात से शर्म आ रही हो, यद्यपि वह किसी तरह की आपत्ति करने का इरादा न रखता हो। आउस्टेरलिट्ज़ और १८०७ की लड़ाई के बाद रोस्तोव अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह जानता था कि सैनिक घटनाओं की चर्चा करते हुए लोग हमेशा झूठ बोलते हैं, जैसे कि वह ख़ुद भी करता रहा था। इसके अलावा उसके अनुभव ने उसे यह भी सिखा दिया था कि युद्ध में सब कुछ वैसे ही नहीं होता, जैसे हम कल्पना कर सकते हैं और सुना सकते हैं। इसलिये उसे न तो ज़्दरजीन्स्की की कहानी और न बड़े-बड़े गलमुच्छोंवाला ख़ुद ज़्दरजीन्स्की ही उसकी इस आदत

---

* थेर्मोपील – वह पहाड़ी दर्रा जिसकी स्पर्ताक के अनुयायियों ने ईसापूर्व के ४८०वें वर्ष में ईरानी सेना से वीरतापूर्ण रक्षा की थी। – सं०

के कारण अच्छा लग रहा था कि जिसे बात सुनाता था, उसके चेहरे पर बेहद झुक जाता था और इसके अतिरिक्त उसने तंग झोंपड़ी में बहुत-सी जगह भी घेर ली थी। रोस्तोव चुपचाप उसकी ओर देखता जा रहा था। "पहली बात तो यह है कि उस बांध पर, जिसपर उन्होंने हमला किया, इतनी घिचपिच और गड़बड़ होनी चाहिये थी कि अगर रायेव्स्की अपने बेटों के साथ आगे बढ़ा भी, तो इसका उन दसेक लोगों के अतिरिक्त, जो उसके बिल्कुल क़रीब थे, अन्य किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा होगा," रोस्तोव सोच रहा था। "बाक़ी लोग तो यह देख ही नहीं पाये होंगे कि रायेव्स्की कैसे और किसके साथ गया। फिर जिन्होंने उसे देखा होगा, उन्हें भी इससे कोई बड़ी प्रेरणा नहीं मिली होगी, क्योंकि ऐसे वक़्त में, जब उन्हें ख़ुद अपनी जान के लाले पड़े थे, उन्हें एक पिता की कोमल भावनाओं की क्या परवाह हो सकती थी? इसके अलावा मातृभूमि के भाग्य का इस बात से निर्णय नहीं होनेवाला था कि सल्तानोव्स्की बांध पर क़ब्ज़ा किया जाता है या नहीं, जैसे कि थेर्मोपील की लड़ाई के मामले में था। तो फिर किसलिये ऐसी क़ुर्बानी करने की ज़रूरत थी? और अपने बेटों को लड़ाई में घसीटने में क्या तुक थी? मैंने तो न केवल अपने छोटे भाई पेत्या को, बल्कि इस नौजवान, इल्यीन को भी, जो मेरा रिश्तेदार नहीं, किन्तु भला नौजवान है, अपने साथ न लिया होता और इसे ख़तरे से दूर रखा होता," ज़्दरजीन्स्की की बातें सुनते हुए रोस्तोव सोचता जा रहा था। किन्तु उसने अपने विचार व्यक्त नहीं किये – इस मामले में भी तजरबे ने उसे सीख दी थी। वह जानता था कि यह क़िस्सा हमारी सेना की कीर्ति को चार चांद लगाता था और इसलिये यह दिखावा करना ज़रूरी था कि यह सब कुछ ठीक है। उसने ऐसा ही किया।

"अब इस बारिश को और बर्दाश्त करना मुमकिन नहीं," इल्यीन यह देखकर कि रोस्तोव को ज़्दरजीन्स्की की बातें अच्छी नहीं लग रही हैं, कह उठा। "मेरी जुराबें, क़मीज़ और नीचे तक सब कुछ पानी मे तर हो गया है। कोई बेहतर जगह ढूंढ़ने जाता हूं। लगता है कि बारिश कुछ हल्की हो गयी है।" इल्यीन झोंपड़ी से बाहर चला गया और उसके बाद ज़्दरजीन्स्की भी घोड़े पर सवार होकर अपनी राह चलता बना।

पांच मिनट बाद इल्यीन कीचड़ में छपछप करता हुआ झोंपड़ी में भागा आया।

"हुर्रा! रोस्तोव, आओ, जल्दी से चलें। मैंने जगह ढूंढ़ ली है! यहां से कोई दो सौ क़दम की दूरी पर एक शराबख़ाना है। हमारे बहुत-से लोग वहां जमा भी हो गये हैं। कम से कम वहां कपड़े तो सुखा लेंगे और फिर मरीया हेनरिख़ोव्ना भी वहां है।"

मरीया हेनरिख़ोव्ना रेजिमेंट के डाक्टर की जवान और प्यारी-सी जर्मन बीवी थी जिसके साथ उसने पोलैण्ड में शादी की थी। या तो इस कारण कि डाक्टर के पास किसी जगह गिरस्ती जमाने के लिये काफ़ी पैसे नहीं थे या फिर इसलिये कि शादी के फ़ौरन बाद के दिनों में वह जवान बीवी से जुदा नहीं रहना चाहता था, हुस्सार रेजिमेंट जहां भी जाती, वह उसे हर जगह अपने साथ ले जाता और डाक्टर की जलन हुस्सार अफ़सरों के बीच हंसी-मज़ाक़ का आम विषय बन गयी थी।

रोस्तोव ने अपने कंधों पर बरसाती डाल ली, लाव्रूश्का को पुकारकर कहा कि वह उनकी सारी चीज़ें ले आये और ख़ुद शाम के अन्धेरे में, जिसे दूरी पर चमकनेवाली बिजली की कौंध ही जब-तब चीर डालती थी, कभी कीचड़ में फिसलता और कभी कम हो जानेवाली बारिश में छपछप करता हुआ इल्यीन के साथ चल दिया।

"रोस्तोव, तुम कहां हो?"

"यहां हूं। ओह, बिजली कैसे चमक रही है!" वे एक-दूसरे से कहते।

१३

शराबख़ाने में, जिसके सामने डाक्टर की मामूली-सी छतवाली बन्द घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी, पांच फ़ौजी अफ़सर जमा भी हो चुके थे। गुदगुदे बदन और सुनहरे बालोंवाली जर्मन मरीया हेनरिख़ोव्ना ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने सामनेवाले कोने में चौड़ी बेंच पर बैठी थी। उसका डाक्टर पति उसके पीछे सो रहा था। रोस्तोव और

इल्यीन के कमरे में दाख़िल होने पर हंसी-ख़ुशी के शोर-ग़ुल और ठहाकों से उनका स्वागत हुआ।

"अरे, वाह! आप लोग तो यहां ख़ूब मौज कर रहे हैं," रोस्तोव ने हंसते हुए कहा।

"और आप क्या खड़े-खड़े मुंह ताक रहे हैं?"

"क्या बढ़िया सूरत बनाये हैं आप लोग! कैसे पानी चू रहा है! हमारी बैठक का फ़र्श गीला नहीं कर दीजिये।"

"कहीं मरीया हेनरिख़ोव्ना की पोशाक गन्दी नहीं कर डालिये," लोगों ने कहा।

रोस्तोव और इल्यीन कोई ऐसा कोना ढूंढ़ने लगे जहां वे मरीया हेनरिख़ोव्ना की नज़र बचाकर, ताकि उसे शर्म महसूस न हो, अपने गीले कपड़े बदल सकते। वे विभाजक दीवार के पीछे चले गये, किन्तु वहां लगभग सारी जगह को घेरे हुए तीन अफ़सर एक ख़ाली बक्स पर बैठे थे तथा एक ही मोमबत्ती की हल्की रोशनी में ताश खेल रहे थे। वे किसी भी हालत में अपनी जगह से उठने को तैयार नहीं थे। मरीया हेनरिख़ोव्ना ने कुछ देर के लिये उन्हें अपना स्कर्ट दे दिया ताकि वे परदे के रूप में उसका इस्तेमाल कर लें। इसी परदे के पीछे रोस्तोव और इल्यीन ने लाव्रूश्का की मदद से, जो उनके थैले ले आया था, गीले कपड़े उतारकर सूखे कपड़े पहन लिये।

टूटी-फूटी अंगीठी में आग जला ली गयी। कहीं से एक तख़्ता लाकर उसे दो ज़ीनों पर टिका दिया गया और उसपर ज़ीनपोश बिछा दिया गया। छोटा-सा समोवार, रसद की सफ़री सन्दूक़ची और रम की आधी बोतल भी निकालकर रख दी गयी और मरीया हेनरिख़ोव्ना से यह प्रार्थना करके कि वह इस प्रबन्ध का संचालन करे, सभी उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये। किसी ने अपना धुला हुआ रूमाल पेश किया कि वह अपने सुन्दर हाथों को साफ़ कर ले, किसी ने उसके पांवों के नीचे अपनी फ़ौजी क़मीज़ बिछा दी ताकि उसे नमी महसूस न हो, किसी ने अपनी बरसाती से खिड़की को ढंक दिया ताकि वहां से हवा न आये और कोई उसके पति के मुंह पर से मक्खियों को दूर भगाने लगा ताकि वह जाग न जाये।

"इसकी चिन्ता नहीं कीजिये," मरीया हेनरिख़ोव्ना ने कुछ शर्माते

और ख़ुशी से मुस्कराते हुए कहा, "रात भर जागते रहने के बाद वह तो यों भी गहरी नींद सोता है।"

"नहीं, मरीया हेनरिख़ोव्ना," एक फ़ौजी अफ़सर ने जवाब दिया, "डाक्टर की तो ज़रूर सेवा करनी चाहिये। कौन जाने, जब वह मेरी टांग या बांह काटने लगेगा तो शायद उसे मुझपर कुछ तरस आ जाये।"

गिलास सिर्फ़ तीन थे। पानी इतना गन्दा था कि यह तय करना सम्भव नहीं था कि चाय तेज़ या हल्की है। समोवार में भी केवल छः गिलास पानी आता था। किन्तु इन्हीं बातों ने मरीया हेनरिख़ोव्ना के गुदगुदे और छोटे-छोटे नाख़ूनोंवाले हाथों से, जिनके नाख़ून बहुत साफ़ नहीं थे, बारी-बारी तथा पद के अनुसार अपना चाय का गिलास लेना और भी ज़्यादा सुखद बना दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि इस शाम को सभी अफ़सर सचमुच मरीया हेनरिख़ोव्ना के प्रेम-दीवाने थे। यहां तक कि वे अफ़सर भी, जो विभाजक दीवार के पीछे ताश खेल रहे थे, जल्द ही अपना खेल छोड़कर मरीया हेनरिख़ोव्ना के प्रति प्यार जताने के सामान्य मूड से प्रभावित होकर समोवार के क़रीब आ बैठे। ऐसे बांके और शिष्ट नौजवानों से घिरी होने पर मरीया हेनरिख़ोव्ना की ख़ुशी फूटी पड़ रही थी, चाहे वह उसे छिपाने की कितनी ही कोशिश क्यों न करती थी और अपने पीछे सो रहे पति के नींद में हिलने-डुलने पर स्पष्ट रूप से कुछ घबरा भी जाती थी।

चम्मच एक ही था, चीनी बहुत थी, मगर लोग उसे चाय में मिला नहीं पाते थे। इसलिये यह तय हुआ कि मरीया बारी-बारी से हर किसी के गिलास में चीनी मिलायेगी। रोस्तोव ने चाय का अपना गिलास लेकर और उसमें थोड़ी-सी रम डालकर मरीया हेनरिख़ोव्ना से अनुरोध किया कि वह उसे मिला दे।

"मगर आपने चीनी तो डाली नहीं?" उसने लगातार मुस्कराते हुए कहा मानो जो कुछ भी वह कहती थी और जो कुछ दूसरे कहते थे, वह सब बहुत मनोरंजक था और उसका कोई दूसरा अर्थ भी था।

"मुझे चीनी की नहीं, सिर्फ़ इस बात की ज़रूरत है कि आप अपने प्यारे-से हाथ से इसे मिला दें।"

मरीया हेनरिख़ोव्ना सहमत होते हुए चम्मच ढूंढ़ने लगी जो किसी दूसरे ने ले लिया था।

"आप अपनी उंगली से ही मिला दें, मरीया हेनरिख़ोव्ना," रोस्तोव ने कहा, "और ज़्यादा मज़ेदार हो जायेगी।"

"बहुत गर्म है!" मरीया हेनरिख़ोव्ना ने ख़ुशी से लाल होते हुए जवाब दिया।

इल्यीन पानी से भरी हुई बालटी ले आया, उसने उसमें रम की कुछ बूंदे डाल दीं और मरीया हेनरिख़ोव्ना के पास जाकर उसे उंगली से मिला देने का अनुरोध किया।

"मेरे लिये तो यही प्याला है," उसने कहा। "इसमें ज़रा अपनी प्यारी-सी उंगली डुबो दीजिये और मैं सारा पानी पी जाऊंगा।"

जब समोवार ख़ाली हो गया तो रोस्तोव ने ताश लेकर मरीया हेनरिख़ोव्ना के साथ "बादशाह" का खेल खेलने का प्रस्ताव किया। इस बात के लिये लाटरी डाली गयी कि खेल में मरीया हेनरिख़ोव्ना का साथी कौन बनेगा। रोस्तोव के सुझाव के मुताबिक़ खेल के नियम ये तय किये गये कि जो "बादशाह" बनेगा, उसे मरीया हेनरिख़ोव्ना का प्यारा-सा हाथ चूमने का अधिकार होगा और जो "गुलाम" रह जायेगा, उसे डाक्टर के जागने पर उसके लिये फिर से समोवार गर्म करना होगा।

"और अगर मरीया हेनरिख़ोव्ना 'बादशाह' बन गयी तो क्या होगा?" इल्यीन ने पूछा।

"वह तो वैसे ही बेगम है! उसका हर हुक्म क़ानून है।"

ताश का खेल शुरू ही हुआ था कि मरीया हेनरिख़ोव्ना के पीछे से अस्त-व्यस्त बालोंवाला डाक्टर उठकर बैठ गया। वह काफ़ी देर से नहीं सो रहा था, सारी बातें सुन रहा था और जो कुछ हो रहा था या कहा जा रहा था, उसे सम्भवतः उसमें कुछ भी दिलचस्प, हंसानेवाला और मनोरंजक प्रतीत नहीं हुआ था। उसका चेहरा उदास और खिन्न-सा था। उसने अफ़सरों से दुआ-सलाम नहीं की, अपने को खुजलाया और यह अनुरोध किया कि अफ़सर उसे जाने का रास्ता दे दें, क्योंकि वे रास्ता रोके थे। डाक्टर के बाहर जाते ही सभी अफ़सर अपने को वश में न रख पाते हुए ज़ोर से ठहाके लगाने लगे और शर्म से लाल होती हुई मरीया हेनरिख़ोव्ना की आंखों में तो आंसू तक आ गये जिससे वह सभी अफ़सरों की नज़रों में और भी ज़्यादा सुन्दर हो गयी। अहाते से लौटकर डाक्टर ने बीवी से कहा (जिसने अब

ख़ुशी से मुस्कराना बन्द कर दिया था और जो डांट पड़ने का इन्त-ज़ार करते हुए डरी-डरी-सी उसकी ओर देख रही थी) कि बारिश बन्द हो गयी है और अब उन्हें अपनी बन्द घोड़ा-गाड़ी में जाकर सोना चाहिये, वरना सारी चीज़ें चुरा ली जायेंगी।

"लेकिन मैं वहां एक अर्दली भेज दूंगा ... दो भेज दूंगा!" रोस्तोव ने कहा। "इस बात की फ़िक्र छोड़िये, डाक्टर।"

"मैं ख़ुद पहरे पर जा खड़ा होऊंगा!" इल्यीन बोला।

"नहीं, महानुभावो, आप लोग अच्छी तरह से सो चुके हैं और मैं दो रातों से नहीं सोया हूं," डाक्टर ने जवाब दिया और उदास-सी सूरत बनाये हुए बीवी के पास बैठकर खेल ख़त्म होने का इन्तज़ार करने लगा।

कनखियों से अपनी बीवी को घूर रहे डाक्टर के खिन्न चेहरे को देखकर फ़ौजी अफ़सर और भी ज़्यादा रंग में आ गये। उनमें से अधिकांश अपनी हंसी पर क़ाबू पाने में असमर्थ रहते तथा इसके लिये वे जल्दी से कोई अच्छा-सा बहाना पेश कर देते। बीवी को साथ लेकर डाक्टर जब अपनी बन्द घोड़ा-गाड़ी में चला गया तो फ़ौजी अफ़सर गीले गर्म ओवरकोट अपने ऊपर डालकर सोने के लिये लेट गये। किन्तु वे देर तक सो नहीं पाये। वे बातें करते रहे, डाक्टर की घबराहट और उसकी बीवी की हंसी-ख़ुशी की चर्चा चलाते रहे, कभी-कभी पोर्च में भाग जाते और लौटकर यह बताते कि बन्द घोड़ा-गाड़ी में क्या हो रहा है। रोस्तोव ने मुंह-सिर ढककर सोने का प्रयास किया, मगर फिर किसी की टीका-टिप्पणी उसका ध्यान अपनी ओर खींच लेती, फिर से बातचीत होने लगती और वे किसी कारण के बिना फिर से बच्चों की तरह ज़ोर से खिलखिलाकर हंसने लगते।

१४

रात के दो बजने के बाद तक कोई भी नहीं सोया था। उस वक़्त क्वाटर मास्टर यह आदेश लेकर आ गया कि उन्हें ओस्त्रोव्ने नाम की जगह की ओर रवाना होना है।

पहले की तरह ही बातें करते, हंसते और ठहाके लगाते हुए अफ़सर जल्दी-जल्दी तैयार होने लगे। फिर से समोवार में गन्दा पानी डालकर उसे गर्माया जाने लगा। किन्तु चाय का इन्तज़ार न करके रोस्तोव अपने स्क्वाड्रन की ओर चला गया। उजाला होने लगा था, बारिश बन्द हो गयी थी और बादल छंट रहे थे। नमी और ठण्डक महसूस हो रही थी, ख़ास तौर पर ऐसे कपड़ों में जो अभी तक पूरी तरह सूखे नहीं थे। शराबख़ाने से बाहर आते हुए रोस्तोव और इल्यीन ने पौ फटने के हल्के उजाले में डाक्टर की चमड़े की छतवाली घोड़ा-गाड़ी पर नज़र डाली जो बारिश के कारण अभी तक गीली थी और चमक रही थी तथा जिसके परदे के नीचे से डाक्टर की टांगें बाहर निकली हुई थीं। घोड़ा-गाड़ी के मध्य में उन्हें एक तकिये पर डाक्टर की बीवी की रात्रिकालीन टोपी की भी झलक मिली और उसकी निद्रामग्न सांसें भी सुनायी दीं।

"सचमुच बहुत प्यारी है न यह!" रोस्तोव ने अपने साथ बाहर आ रहे इल्यीन से कहा।

"बहुत ही मनमोहिनी है!" इल्यीन ने सोलह वर्ष के युवक की गम्भीरता के अनुरूप उत्तर दिया।

आध घण्टे बाद पूरी तरह तैयार स्क्वाड्रन सड़क पर क़तार बनाये खड़ा था। "सवार हो जाओ!" आदेश सुनायी दिया और सैनिक अपने ऊपर सलीब का निशान बनाकर घोड़ों पर सवार होने लगे। रोस्तोव ने सबसे आगे जाकर हुक्म दिया – "बढ़ो!" और हुस्सार चार-चार सवारों की क़तारें बनाकर अपनी तलवारों को खनखनाते, धीमे-धीमे बोलते और गीले रास्ते पर घोड़ों के छपछपाते सुमों की आवाज़ के साथ आगे जा रही प्यादा फ़ौज और तोपख़ाने के पीछे-पीछे उस बड़ी सड़क पर अपने घोड़ों को बढ़ाने लगे जिसके दोनों ओर भोज-वृक्ष उगे हुए थे।

छिन्न-भिन्न नीले-बैंगनी बादलों को, जो पौ फटने के समय लाल हो रहे थे, हवा तेज़ी से उड़ाये लिये जा रही थी। अधिकाधिक उजाला होता जा रहा था। वह फूली-फूली घास बिल्कुल साफ़ दिखायी दे रही थी जो गांव-गंवई के रास्तों के साथ हमेशा उगी रहती है और पिछले दिन की बारिश से यह अभी तक गीली थी। भोज-वृक्षों की झुकी हुई टहनियां भी गीली थीं, हवा में हिल-डुल रही थीं और चमकती

बूंदों को दायें-बायें गिरा रही थीं। सैनिक घुड़सवारों के चेहरे अधि-काधिक साफ़ दिखायी देने लगे थे। इल्यीन के साथ, जो हमेशा निकट ही रहता था, रोस्तोव रास्ते के किनारे-किनारे भोज-वृक्षों की दो क़तारों के बीच अपना घोड़ा बढ़ाता जा रहा था।

युद्ध-क्षेत्र में जाते समय रोस्तोव सेना का आम घोड़ा नहीं, बल्कि अपना ख़ास कज़्ज़ाकी घोड़ा इस्तेमाल करता था। घोड़ों के पारखी और प्रेमी रोस्तोव ने कुछ ही समय पहले दोन स्तेपी का सुनहरे अयाल तथा पूंछवाला बड़ा तेज़, मज़बूत और बढ़िया लाल घोड़ा ख़रीदा था और इस घोड़े पर कोई भी उसे मात नहीं दे सकता था। इस घोड़े पर सवारी करना रोस्तोव के लिये बड़ा सुखकर था। वह घोड़े, सुबह और डाक्टर की बीवी के बारे में सोच रहा था तथा एक बार भी उसे उस ख़तरे का ख़्याल नहीं आया जो उसके सामने आनेवाला था।

रोस्तोव को पहले तो लड़ाई में जाते हुए डर लगता था, मगर अब उसे भय की ज़रा भी अनुभूति नहीं हो रही थी। वह इस कारण भय अनुभव नहीं करता था कि गोलाबारी का आदी हो गया था (ख़तरे का आदी नहीं हुआ जा सकता), बल्कि इसलिये कि ख़तरे की हालत में अपने दिल पर क़ाबू पाना सीख गया था। युद्ध-क्षेत्र में जाते समय वह उस एक चीज़ को छोड़कर, जो बाक़ी सभी चीज़ों की तुलना में उसके लिये अवश्य अधिक महत्त्वपूर्ण होनी चाहिये थी, यानी सामने आनेवाले ख़तरे के बारे में न सोचने का अभ्यस्त हो गया था। सैनिक जीवन के आरम्भ में उसने अपने दिल को क़ाबू में रखने की चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न की, बुज़दिली के लिये बेशक अपने को कितना ही क्यों न फटकारा, वह ऐसा कर पाने में असमर्थ रहा। किन्तु वर्षों के बीतने पर अब यह अपने आप ही हो गया। इस समय इल्यीन के साथ-साथ भोज-वृक्षों के बीच से कभी-कभी हाथ में आ जानेवाली शाखाओं के पत्ते तोड़ते, कभी अपने पांव से घोड़े की रान को छूते और कभी मुड़े बिना अपने पीछे आ रहे हुस्सार को बुझे पाइप देते हुए रोस्तोव ऐसे चैन तथा निश्चिन्तता से घोड़ा बढ़ा रहा था मानो सैर-सपाटे को जा रहा हो। उसे बहुत अधिक और बेचैनी से बोलते जा रहे इल्यीन के विह्वल चेहरे को देखकर उसपर दया आ रही थी। वह अपने व्यक्तिगत अनुभव से भय और मृत्यु की प्रतीक्षा की उस

निकोलाई रोस्तोव।

यातनाप्रद स्थिति से परिचित था जिसे कोरनेट* इल्यीन इस वक़्त महसूस कर रहा था तथा जानता था कि वक़्त के सिवा कोई भी चीज़ उसकी मदद नहीं कर सकती।

बादलों के नीचे से सूरज जैसे ही आकाश की साफ़ हो गयी पट्टी पर उभरा, वैसे ही हवा ने अपने पंख समेट लिये मानो वह आंधी-पानी के बाद गर्मी की इस प्यारी सुबह की सुन्दरता को बिगाड़ने की हिम्मत न कर पा रही हो। बूंदें अभी भी गिर रही थीं, मगर धीरे-धीरे और—सब कुछ शान्त हो गया था। सूरज पूरी तरह बादलों से बाहर निकल आया, क्षितिज पर दिखायी दिया और उसके ऊपर लटके हुए संकरे तथा लम्बे बादल में ग़ायब हो गया। कुछ मिनट बाद सूरज बादल के छोर को चीरकर उसके ऊपरी सिरे पर और भी अधिक ज़ोर से चमकता हुआ दिखायी दिया। सभी कुछ जगमगा उठा, रोशन हो गया। इसी प्रकाश के साथ, मानो इसके प्रत्युत्तर में सामने की ओर तोपें गरजने लगीं।

रोस्तोव अभी इस बात पर विचार और यह तय भी नहीं कर पाया था कि तोपें कितनी दूरी पर गरज रही हैं कि वीतेब्स्क की ओर से काउंट ओस्टरमन-तोलस्तोय का एडजुटेंट सरपट घोड़ा दौड़ाता आया और उसने यह हुक्म सुनाया कि वे दुलकी चाल से सड़क पर अपने घोड़े बढ़ाने लगें।

रोस्तोव का स्क्वाड्रन प्यादा फ़ौज और तोपख़ाने से, जिसने भी अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी थी, आगे निकल गया, पहाड़ी से नीचे गया, लोगों के बिना किसी सुनसान गांव में से गुज़रकर फिर से पहाड़ी पर चढ़ गया। घोड़ों के बदन पर पसीने के झाग दिखायी देने लगे और लोगों के चेहरे तमतमा उठे थे।

"रुको, क़तार में खड़े हो जाओ!" सामने की ओर से डिवीज़न-कमांडर का हुक्म सुनायी दिया।

"बायें मुड़कर क़दम-क़दम आगे बढ़ो!" आगे से हुक्म मिला।

सेना की क़तार के साथ-साथ हुस्सार बायें पहलू बढ़ गये और हमारे उलानों के पीछे जा खड़े हुए जो सबसे आगे खड़े थे। दायीं ओर प्यादा फ़ौजों का बहुत बड़ा जमघट था—ये हमारी रिज़र्व सेनायें

---

* कोरनेट—रिसाले का छोटा लेफ़्टिनेंट।—सं०

थीं। इनके पीछे पहाड़ी पर क्षितिज के बिल्कुल निकट हमारी तोपें बहुत ही साफ़ हवा और सूरज की प्रखर और टेढ़ी-तिरछी किरणों में चमकती दिखायी दे रही थीं। सामने, घाटी के पीछे दुश्मन की फ़ौजें और तोपें नज़र आ रही थीं। हमारी अग्रिम सेना घाटी में शत्रु से उलझ भी गयी थी और उत्साह से गोलियां चला रही थी।

इन आवाज़ों से, जिन्हें उसने बहुत अरसे से नहीं सुना था, रोस्तोव का मन ऐसे खिल उठा मानो वह कोई सुखद संगीत सुन रहा हो। ठांय-ठांय-ठांय! – कभी अचानक, कभी एक-दूसरी के बाद तेज़ी से और कभी कई गोलियां एकसाथ ही चलतीं। इसके बाद ख़ामोशी छा जाती और फिर से मानो पटाखे फटने लगते जिनपर कोई पांव रखता जाता हो।

हुस्सार कोई एक घण्टे तक इसी जगह पर खड़े रहे। तोपें भी गरजने लगीं। अपने अमले के साथ काउंट ओस्टरमन इस स्क्वाड्रन के पीछे से अपने घोड़े पर गुज़रा, कुछ देर तक रुककर उसने रेजिमेंट-कमांडर से बातचीत की और फिर अपने घोड़े को तोपों की तरफ़ पहाड़ी पर बढ़ा ले गया।

ओस्टरमन के जाने के फ़ौरन बाद उलानों के लिये यह हुक्म सुनायी दिया:

"हमले के लिये क़तार में हो जाओ!" सामने खड़ी प्यादा फ़ौज ने दोनों ओर हटकर उनके लिये बीच में से जाने का रास्ता बना दिया। भाले ताने हुए उलानों ने अपने घोड़े बढ़ाये और फिर उन्हें बायीं ओर से पहाड़ी के नीचे नज़र आनेवाली फ़्रांसीसी सेना की तरफ़ दुलकी चाल से दौड़ाने लगे।

उलानों के पहाड़ी से नीचे जाते ही हुस्सारों को तोपख़ाने की रक्षा के लिये पहाड़ी पर जाने का आदेश मिला। हुस्सारों ने जैसे ही उलानों की जगह ली, वैसे ही शत्रु की अग्रिम चौकियों से सनसनाती और भनभनाती गोलियां आने लगीं, मगर वे कहीं दूर ही जा गिरती थीं।

बहुत समय से न सुनी गयी इस आवाज़ ने, गोलियां चलने की पहली आवाज़ों की तुलना में भी रोस्तोव के दिल पर अधिक सुखद और उत्साहपूर्ण प्रभाव डाला। वह घोड़े पर तनकर बैठ गया, पहाड़ी मे नज़र आनेवाले युद्ध-क्षेत्र को बहुत ध्यान से देखने और बड़े जोश मे उलानों के हमले में दिलचस्पी लेने लगा। उलानों ने फ़्रांसीसी घुड़सै-

निकों – ड्रगूनों – के निकट जाकर हमला किया, वहां धुएं में कुछ गड़बड़ हुआ और पांच मिनट बाद उलान बहुत तेज़ी से अपने घोड़ों को पीछे दौड़ाने लगे, मगर उधर ही नहीं जिधर से गये थे, बल्कि कुछ बायें को। लाल घोड़ों पर सवार नारंगी रंग की वर्दियां पहने उलानों के बीच और उनके पीछे भूरे घोड़ों पर सवार नीली वर्दियोंवाले फ़ांसीसी ड्रगून बहुत बड़ी संख्या में नज़र आ रहे थे।

१५

रोस्तोव उन पहले कुछ लोगों में से एक था जिसने शिकारी की अपनी तेज़ नज़र से नीली वर्दियोंवाले फ़्रांसीसी ड्रगून घुड़सैनिकों को हमारे उलानों का पीछा करते हुए देखा। अस्त-व्यस्त भीड़ के रूप में उलान अधिकाधिक निकट आते जा रहे थे और फ़्रांसीसी ड्रगून उनका पीछा कर रहे थे। अब साफ़ तौर पर यह देखना सम्भव था कि पहाड़ी से छोटे-छोटे नज़र आनेवाले ये लोग कैसे आपस में भिड़ते थे, एक-दूसरे से आगे निकलते थे और अपने हाथों तथा तलवारों को लहराते थे।

रोस्तोव अपने सामने के इस दृश्य को वैसे ही देख रहा था जैसे किसी जानवर के शिकार को देख रहा हो। उसका सहज-बोध उससे यह कह रहा था कि अगर वह अपने हुस्सारों को साथ लेकर फ़्रांसीसी ड्रगूनों पर टूट पड़े तो उनके पांव उखड़ जायेंगे। लेकिन अगर उनपर चोट करनी ही है तो अभी, इसी क्षण की जानी चाहिये, अन्यथा मौक़ा हाथ से निकल जायेगा। उसने अपने गिर्द देखा। उसके क़रीब खड़ा हुआ एक कप्तान भी उसकी तरह ही पहाड़ी के नीचे घुड़सेना को टकटकी बांधकर देख रहा था।

"अन्द्रेई सेवास्त्यानोविच," रोस्तोव ने उसे सम्बोधित किया, "हम तो इनका भुरकस निकाल सकते हैं..."

"ज़रूर निकाल सकते हैं," कप्तान ने जवाब दिया, "बुरा हाल हो सकता है इनका..."

रोस्तोव ने उसकी पूरी बात सुने बिना ही अपने घोड़े को एड़ लगा दी, घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ वह अपने स्क्वाड्रन के आगे

ले आया। वह स्क्वाड्रन को बढ़ने का हुक्म भी नहीं दे पाया कि सारा स्क्वाड्रन वही कुछ अनुभव करते हुए, जो वह अनुभव कर रहा था, उसके पीछे-पीछे बढ़ चला। रोस्तोव ख़ुद यह नहीं जानता था कि उसने कैसे और क्यों यह किया। उसने यह सब ज़रा भी सोचे-समझे बिना, किसी तरह का विचार किये बिना वैसे ही किया जैसे कि शिकार के वक़्त किया होता। उसने देखा कि फ़्रांसीसी ड्रगून नज़दीक हैं, कि वे अव्यवस्थित ढंग से सरपट घोड़े दौड़ाते आ रहे हैं। वह जानता था कि वे हमले की ताब नहीं ला सकेंगे, जानता था कि केवल एक ही क्षण था, जिसे अगर हाथ से निकल जाने देगा, तो वह फिर कभी वापस नहीं आयेगा। उसके गिर्द सनसनाती और भनभनाती हुई गोलियां उसे ऐसे उत्तेजित कर रही थीं, घोड़ा इतनी तेज़ी से आगे बढ़ना चाहता था कि वह अपने को क़ाबू में नहीं रख सका। उसने घोड़े को एड़ लगायी, हुक्म दिया और उसी क्षण अपने पीछे फैले हुए स्क्वाड्रन के घोड़ों की टापें सुनते हुए अपने घोड़े को पहाड़ी के नीचे ड्रगूनों की तरफ़ पूरी तेज़ दुलकी चाल से बढ़ाने लगा। पहाड़ी से नीचे पहुंचते ही ये किसी आदेश के बिना अपने घोड़ों को दुलकी चाल के बजाय सरपट दौड़ाने लगे और अपने उलानों तथा तेज़ी से उनका पीछा कर रहे ड्रगूनों के जितना अधिक निकट पहुंचते जाते थे, उनके घोड़े और भी तेज़ होते जा रहे थे। ड्रगून नज़दीक आ गये थे। हुस्सारों को देखकर आगेवाले ड्रगून अपने घोड़ों को वापस मोड़ने लगे और पीछेवाले रुक गये। वैसे ही जैसे उसने किसी भेड़िये का रास्ता काटा होता, उसने ड्रगूनों की अव्यवस्थित क़तारों का रास्ता काटने के लिये अपने बढ़िया घोड़े को पूरी तेज़ी से दौड़ाना शुरू किया। एक उलान रुक गया, दूसरा, जो घोड़े के बिना पैदल चल रहा था, ज़मीन पर लेट गया ताकि कुचला न जाये और घुड़सवार के बिना एक घोड़ा हुस्सारों के घोड़ों में आ मिला। लगभग सभी फ़्रांसीसी ड्रगून अपने घोड़ों को सरपट वापस दौड़ा रहे थे। रोस्तोव उनमें से एक को चुनकर, जो भूरे घोड़े पर सवार था, उसका पीछा करने लगा। रास्ते में एक झाड़ी आ गयी, बढ़िया घोड़ा उसे लांघ गया और काठी पर फिर से जमकर बैठने के पहले ही निकोलाई ने यह देख लिया कि कुछ ही क्षणों में अपने उस शत्रु के बराबर जा पहुंचेगा जिसे उसने अपना लक्ष्य बनाया था। यह फ़्रांसीसी, जो उसकी वर्दी को ध्यान में रखते हुए सम्भवतः अफ़सर था, अपने

भूरे घोड़े पर झुका हुआ था और उसे अपनी तलवार से अधिकाधिक तेज़ दौड़ाने की कोशिश कर रहा था। एक क्षण बाद रोस्तोव के घोड़े ने फ़्रांसीसी अफ़सर के घोड़े के पुट्ठे पर ज़ोर से अपनी छाती टकरा दी, फ़्रांसीसी का घोड़ा गिरते-गिरते बचा और इसी क्षण रोस्तोव ने, यह न जानते हुए कि उसने ऐसा क्यों किया, अपनी तलवार ऊपर उठायी और फ़्रांसीसी पर वार कर दिया।

रोस्तोव ने ज्योंही ऐसा किया, त्योंही सहसा उसका सारा जोश ठण्डा पड़ गया। फ़्रांसीसी अफ़सर तलवार के वार से तो इतना नहीं, क्योंकि इस वार के फलस्वरूप कोहनी के ऊपर उसकी बांह पर बहुत मामूली-सा ही घाव हुआ था, जितना कि घोड़ों के टकराने और भय के कारण नीचे गिर गया। रोस्तोव ने अपने घोड़े को रोका और उसकी आंखें अपने उस शत्रु के चेहरे को ढूंढ़ने लगी ताकि यह देख सकें कि उसने किसपर विजय प्राप्त की है। फ़्रांसीसी ड्रगून अफ़सर एक पांव पर ज़मीन पर कूद रहा था और उसका दूसरा पांव रकाब में फंसा हुआ था। भय से आंखें सिकोड़े, मानो किसी भी क्षण नये वार की प्रतीक्षा कर रहा हो, वह माथे पर बल डाले और बुरी तरह डरा-सहमा हुआ रोस्तोव को नीचे से ऊपर तक देख रहा था। एकदम पीला, कीचड़ के छींटों से सना हुआ जवान, ठोड़ी पर गुल तथा सुनहरे बालों तथा निर्मल, नीली आंखोंवाला उसका चेहरा किसी लड़ाकू जैसा और शत्रुता-पूर्ण नहीं, बल्कि बहुत साधारण शान्तिप्रिय व्यक्ति जैसा घरेलू चेहरा था। रोस्तोव के यह तय करने के पहले ही कि वह उसके साथ क्या सलूक करे, फ़्रांसीसी अफ़सर चिल्ला उठा – "मैं हथियार डालता हूं!" वह अपनी भयभीत नीली आंखों को रोस्तोव के चेहरे पर टिकाये हुए अपने पांव को जल्दी से जल्दी रकाब से निकाल लेना चाहता था, मगर उसे इसमें कामयाबी नहीं मिल रही थी। सरपट घोड़े दौड़ाते हुए उसके क़रीब पहुंचनेवाले कुछ हुस्सारों ने रकाब से उसका पांव निकाला और उसे ज़ीन पर बिठा दिया। सभी दिशाओं में हुस्सार फ़्रांसीसी ड्रगूनों से उलझ रहे थे – एक ड्रगून घायल हो गया था और यद्यपि उसका चेहरा लहू-लुहान था, तथापि वह अपना घोड़ा देने को तैयार नहीं था ; दूसरा हुस्सार के गिर्द बांहें डाले हुए उसके घोड़े पर बैठा था और तीसरा हुस्सार की मदद से उसके घोड़े पर सवार हो रहा था। फ़्रांसीसी प्यादा फ़ौज के सैनिक गोलियां चलाते हुए आगे-आगे भागे

जा रहे थे। हुस्सार अपने बन्दियों को साथ लिये हुए अपने घोड़ों को तेज़ी से पीछे दौड़ा रहे थे। दिल को कचोटनेवाली कोई कटु-सी भावना अनुभव करते हुए रोस्तोव भी दूसरों के साथ अपने घोड़े को सरपट वापिस दौड़ा रहा था। इस फ़्रांसीसी अफ़सर को बन्दी बनाने और उसपर किये गये वार से एक अस्पष्ट तथा उलझी-उलझायी-सी भावना उसके दिल-दिमाग़ पर हावी हो गयी थी जिसे वह किसी तरह भी समझ नहीं पा रहा था।

काउंट ओस्टरमन-तोलस्तोय ने लौटते हुए हुस्सारों का स्वागत किया, रोस्तोव को अपने पास बुलवाया, उसे धन्यवाद दिया और कहा कि वह सम्राट से उसके बहादुरी के इस कारनामे की चर्चा और यह अनुरोध करेगा कि उसे सेंट जार्ज के पदक से सम्मानित किया जाये। रोस्तोव को जब काउंट ओस्टरमन के पास बुलवाया गया तो यह याद करके कि उसने किसी हुक्म के बिना ही हमला शुरू किया था, उसे यक़ीन था कि मनमर्ज़ी की इस हरकत के लिये उसे सज़ा दी जायेगी। इसलिये ओस्टरमन की प्रशंसा और पुरस्कार के वचन से उसे और भी ज़्यादा सुखद हैरानी होनी चाहिये थी। किन्तु उसे नैतिक उबकाई की उसी पहलेवाली अप्रिय और अस्पष्ट भावना की अनुभूति हो रही थी। "क्या चीज़ मेरे मन को ऐसी यातना दे रही है?" जनरल से मिलने के बाद अपने घोड़े पर वापिस लौटते हुए वह सोच रहा था। "क्या इल्यीन का ख़्याल? नहीं, वह तो सही-सलामत है। क्या मैंने कोई शर्मनाक हरकत की है? नहीं, ऐसी भी कोई बात नहीं है!" पश्चाताप जैसी कोई दूसरी चीज़ ही उसे व्यथित कर रही थी। "हां, हां, ठोड़ी पर गुलवाला फ़्रांसीसी अफ़सर ही इसका कारण है। और मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब मैंने उसपर वार करने के लिये हाथ ऊपर उठाया था तो वह कैसे झिझक गया था।"

रोस्तोव ने देखा कि बन्दी बनाये गये फ़्रांसीसियों को ले जाया जा रहा है और वह अपने घोड़े को उन्हीं के पीछे सरपट दौड़ाने लगा ताकि ठोड़ी पर गुलवाले अपने फ़्रांसीसी पर एक नज़र डाल ले। अजीब-सी वर्दी पहने हुस्सारों के एक तेज़ घोड़े पर सवार वह बेचैनी से अपने इर्द-गिर्द देख रहा था। उसकी बांह का घाव लगभग घाव नहीं था। रोस्तोव को देखकर वह ढोंग करते हुए मुस्कराया और अभिवादन के रूप में उसने उसकी तरफ़ हाथ हिलाया। रोस्तोव अभी भी पहले

जैसी परेशानी और किसी कारण व्याकुलता अनुभव कर रहा था।

इस पूरे दिन और अगले दिन भी रोस्तोव के दोस्तों और साथियों ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि वह ऊबा-ऊबा और चिड़चिड़ा तो नहीं, किन्तु गुमसुम, ख़्यालों में खोया-खोया और किसी चीज़ के बारे में लगातार सोच रहा है। वह मन मारकर शराब पीता था, एकान्त चाहता था और किसी सोच में डूबा हुआ था।

रोस्तोव अपने इस शानदार कारनामे के बारे में ही विचार कर रहा था जिसने उसे हैरान करते हुए सेंट जार्ज का पदक दिलवा दिया था, उसे वीर के रूप में प्रसिद्ध कर दिया था और फिर भी कोई ऐसी चीज़ थी जो उसकी समझ में नहीं आ रही थी। "तो ये लोग हमसे भी ज़्यादा डर महसूस करते हैं!" वह सोच रहा था। "तो क्या यही वह चीज़ है जिसे वीरता का नाम दिया जाता है? क्या मैंने मातृ-भूमि के लिये ही यह सब किया है? ठोड़ी पर गुल और निर्मल नीली आंखोंवाले इस फ़्रांसीसी का भला क्या क़ुसूर है? और कैसे उसका दम ख़ुश्क हो गया था! उसने सोचा था कि मैं उसे मार डालूंगा। भला किसलिये मैं उसे मारता? मेरा हाथ कांप गया। और उन्होंने मुझे सेंट जार्ज का पदक दे दिया। कुछ भी, कुछ भी तो मेरी समझ में नहीं आ रहा!"

किन्तु इसी बीच, जब निकोलाई इन प्रश्नों पर विचार कर रहा था और स्पष्ट रूप से यह नहीं समझ पा रहा था कि कौन-सी चीज़ उसके मन को परेशान कर रही है, जैसाकि अक्सर होता है, नौकरी से सम्बन्धित भाग्य-चक्र उसके अनुकूल घूमने लगा था। ओस्त्रोव्ने की इस घटना के बाद उसे मान्यता मिल गयी, हुस्सारों की बटालियन की कमान उसे सौंप दी गयी और जब कभी किसी बहादुर अफ़सर की ज़रूरत महसूस होती तो उसी का नाम पेश किया जाता।

१६

नताशा की बीमारी की ख़बर सुनकर काउंटेस, जो अभी तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुई थीं और कमज़ोर थीं, पेत्या और घर के अन्य सभी लोगों को साथ लेकर मास्को आ गयीं और पूरा रोस्तोव-

परिवार मरीया द्मीत्रियेव्ना का घर छोड़कर अपने मास्को के मकान में आ बसा।

नताशा की बीमारी इतनी गम्भीर थी कि उसकी और घर के सभी लोगों की ख़ुशक़िस्मती से इस बात की तरफ़ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया कि इस बीमारी का कारण क्या है, कि ख़ुद नताशा ने कैसी हरकत की थी और किस वजह से प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसकी सगाई टूटी थी। वह इतनी ज़्यादा बीमार थी, न तो खाती-पीती थी, न सोती थी, स्पष्टतः दुर्बल होती जाती थी, खांसती थी और, जैसाकि डाक्टर संकेत करते थे, उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में थी। ऐसी हालत में इस मामले पर ग़ौर ही नहीं किया जा सकता था कि इस सारी घटना में वह स्वयं किस हद तक दोषी है। सिर्फ़ यही सोचा जा सकता था कि वह कैसे फिर से स्वस्थ हो जाये। डाक्टर अलग-अलग और मिल-कर सलाह-मशविरा करने के लिये एकसाथ आते, फ़्रांसीसी, जर्मन और लातीनी में बहुत-सी बातें करते, एक-दूसरे की बात काटते और जितनी भी बीमारियों से परिचित थे, उन सभी के लिये तरह-तरह की दवाइयों के नुसख़े लिखकर दे जाते। किन्तु उनमें से किसी के दिमाग़ में भी यह सीधा-सादा ख़्याल नहीं आया कि उन्हें उस रोग का, जिससे नताशा पीड़ित थी, उसी प्रकार ज्ञान नहीं हो सकता जैसे कि जीवित प्राणी को पीड़ित करनेवाली किसी भी बीमारी की पूरी जानकारी नहीं हो सकती, क्योंकि प्रत्येक जीवित व्यक्ति की अपनी विशिष्टतायें होती हैं और हमेशा ही उसकी अपनी नयी, जटिल तथा ऐसी बीमारी होती है जिसका चिकित्साशास्त्र को ज्ञान नहीं होता – फेफड़ों, जिगर, त्वचा, हृदय, स्नायु, आदि की बीमारी नहीं, जिनका चिकित्साशास्त्र की पुस्तकों में उल्लेख होता है, बल्कि जो इन अंगों के रोगों के असंख्य मेलों का परिणाम होती है। यह साधारण-सा विचार डाक्टरों के दिमाग़ में नहीं आ सकता था (ठीक उसी तरह जैसे जादूगर के दिमाग़ में यह ख़्याल नहीं आ सकता कि वह जादू नहीं कर सकता), क्योंकि इलाज करना ही उनका जीवन-कार्य था, क्योंकि इसी के लिये उन्हें पैसा मिलता था, क्योंकि इसी में उन्होंने अपने जीवन के सबसे अच्छे साल लगा दिये थे। किन्तु उनके दिमाग़ में इस ख़्याल के न आने का मुख्य कारण यह था कि वे देख रहे थे कि वे निस्सन्देह रूप से उपयोगी हैं और वास्तव में ही पूरे रोस्तोव-परिवार के लिये उपयोगी थे। वे

इस कारण उपयोगी नहीं थे कि बीमार नताशा को ऐसे पदार्थ निगलने को विवश करते थे जिनमें से अधिकांश हानिकारक थे (इनका हानिकारक प्रभाव इसलिये स्पष्ट नहीं होता था कि ये बहुत ही छोटी मात्रा में दिये जाते थे), बल्कि वे इसलिये उपयोगी, अनिवार्य और एकदम ज़रूरी थे (यही कारण है कि नीमहकीम, झाड़-फूंक करनेवाले और होमियोपैथ हमेशा थे और रहेंगे) कि वे रोगी और उसे प्यार करनेवाले लोगों की नैतिक आवश्यकता को पूरा करते थे। वे राहत पाने की शाश्वत मानवीय आवश्यकता, सहानुभूति और दौड़-धूप की उस तीव्र इच्छा को पूरा करते थे जो आदमी दुख-दर्द के वक़्त महसूस करता है। वे उस शाश्वत मानवीय आवश्यकता को पूरा करते थे जो बालक में उस समय अपने बहुत ही सरल रूप में सामने आती है, जब वह यह चाहता है कि उसके शरीर को उस जगह सहलाया जाये जहां उसे चोट लग जाती है। बच्चे को जैसे ही चोट लगती है, वैसे ही वह भागकर मां या आया की गोद में चला जाता है कि वे उस जगह को, जहां चोट लगी है, चूम लें या सहला दें और जब उस जगह को सहला दिया जाता है या चूम लिया जाता है तो उसे राहत मिल जाती है। बच्चा यह विश्वास करने को ही तैयार नहीं होता कि वयस्क लोग, जो उससे अधिक शक्तिशाली और समझदार हैं, उसका दर्द दूर करने में असमर्थ हैं। राहत पाने की उम्मीद और गुमटे को सहलाते वक़्त मां की सहानुभूति का भाव उसे चैन देते हैं। नताशा के लिये डाक्टर इस कारण उपयोगी थे कि वे उसके टीसते अंग को चूमते और सहलाते थे, यह विश्वास दिलाते थे कि अगर कोचवान अभी बग्घी में बैठकर अर्बात चौक के दवाफ़रोश की दुकान पर चला जायेगा और वहां से एक रूबल सत्तर कोपेक की पुड़ियां तथा सुन्दर डिबिया में बन्द गोलियां ख़रीद लायेगा और अगर वह भूल-चूक के बिना हर दो घण्टे के बाद उबले पानी में ये पुड़ियां घोलकर पीती रहेगी तो उसका कष्ट ज़रूर ही दूर हो जायेगा।

अगर ठीक समय पर नियमित रूप से दी जानेवाली दवाई की ये गोलियां न होतीं, अगर गुनगुना पेय और मुर्ग़ी के कटलेट न तैयार करवाने होते तथा उन ढेरों हिदायतों को पूरा करने की चिन्तायें न होतीं जो डाक्टर ने दी थीं और जो घर के लोगों को व्यस्त रखती थीं और सन्तोष प्रदान करती थीं, तो सोन्या, काउंट और काउंटेस

क्या करते और कुछ भी किये बिना बीमारी में घुलती जा रही नताशा को कैसे देखते रहते? डाक्टर के आदेश जितने ज़्यादा सख़्त और पेचीदा होते, नताशा के इर्द-गिर्द के लोगों को उन्हें पूरा करने से उतना ही अधिक चैन मिलता। काउंट को यदि यह मालूम न होता कि नताशा की बीमारी पर उनके हज़ारों रूबल ख़र्च हो रहे हैं और उसे स्वस्थ देखने के लिये उन्हें हज़ारों और रूबल ख़र्च कर डालने का भी अफ़सोस नहीं होगा, अगर उन्हें यह मालूम न होता कि बेटी के ठीक न होने पर वह और भी हज़ारों रूबलों की परवाह किये बिना उसे विदेश ले जायेंगे और वहां अच्छे से अच्छे डाक्टरों से सलाह-मशविरा करेंगे, अगर उन्हें बहुत विस्तार से यह बताने की सम्भावना न मिलती कि मेटीवियर और फ़ेल्लर नताशा की बीमारी को समझ नहीं पाये, मगर फ़्रीज़ समझ गया और मुदरोव ने और भी ज़्यादा अच्छी तरह से उसका रोग-निदान कर दिया तो वह अपनी चहेती बेटी की बीमारी को कैसे सहन करते? अगर डाक्टर की हिदायतों पर पूरी तरह से अमल न करने के लिये काउंटेस अपनी बीमार बेटी को जब-तब न डांट पातीं तो वह क्या करतीं?

"अगर तुम डाक्टर की बात पर कान नहीं दोगी और वक़्त पर दवाई नहीं पियोगी," काउंटेस अपनी मानसिक परेशानी भूलकर तथा खीझते हुए कहतीं, "तो कभी भी ठीक नहीं हो सकोगी! इस मामले में लापरवाही नहीं करनी चाहिये, जबकि तुम्हें निमोनिया हो सकता है," वह कहती जातीं और न तो उन्हें तथा न अन्य किसी की समझ में आनेवाले इस एक शब्द के उच्चारण से ही उनके मन को बड़ा चैन मिलता। इसी तरह सोन्या भी क्या करती, अगर उसे यह सुखद चेतना न होती कि नताशा की बीमारी के आरम्भ में वह तीन रातों तक सोई ही नहीं ताकि डाक्टर के सारे अनुदेशों को बिल्कुल ठीक ढंग से पूरा करने को चुस्ती से तैयार रहे और वह अब भी रातों को इसलिये जागती रहती थी कि नियत समय पर सुनहरी डिबिया में से नताशा को वे गोलियां देती रहे जो इतनी अधिक हानिकारक नहीं थीं? और तो और, नताशा को भी, बेशक वह यह कहती रहती थी कि कोई भी दवाई उसे स्वस्थ नहीं कर सकती और यह सब बकवास है, यह देखकर ख़ुशी होती थी कि उसके लिये इतनी क़ुर्बानियां की जा रही हैं और उसे नियत समय पर दवाई पीनी है। उसे तो इस

बात से भी ख़ुशी होती थी कि वह डाक्टर के अनुदेशों की अवहेलना करके यह दिखा सकती है कि उसे इलाज में कोई यक़ीन नहीं है और वह अपनी जान की ज़रा भी परवाह नहीं करती है।

डाक्टर हर दिन आता, नब्ज़ और ज़बान देखता और नताशा के उदास-मुरझाये चेहरे की ओर ध्यान दिये बिना उसके साथ हंसी-मज़ाक़ करता। किन्तु जब वह दूसरे कमरे में जाता, जहां काउंटेस भी उसके पीछे-पीछे जल्दी से पहुंच जातीं, तो वह गम्भीर मुद्रा बना लेता और सोच में डूबा-सा तथा सिर हिलाते हुए यह कहता कि यद्यपि नताशा की जान के लिये ख़तरा तो बना हुआ है, तथापि वह यह आशा करता है कि कुछ ही समय पहले शुरू की गयी नयी दवाई से उसे फ़ायदा होगा और उन्हें इन्तज़ार करना तथा सब्र से काम लेना चाहिये, कि बीमारी ज़्यादा तो मानसिक है, किन्तु...

काउंटेस ख़ुद अपने से और डाक्टर से अपनी इस हरकत को छिपाते हुए उसकी मुट्ठी में सोने की एक मुद्रा खोंस देतीं और हर बार शान्त मन से रोगी के पास लौटतीं।

नताशा की बीमारी के लक्षण ये थे कि वह बहुत कम खाती थी, बहुत कम सोती थी, खांसती थी और हमेशा बुझी-बुझी रहती थी। डाक्टरों का कहना था कि बीमार को दवा-दारू ज़रूर दी जानी चाहिये और इसलिये उसे शहर की गन्दी और उमस भरी हवा में ही रखा गया। १८१२ की गर्मियों में रोस्तोव-परिवार गांव की खुली हवा में नहीं गया।

इस चीज़ के बावजूद कि नताशा ने शीशियों और डिबियों से, जिनके संग्रह की शौक़ीन मदाम शोस्स ने इन्हें बड़ी संख्या में जमा कर लिया था, बहुत-सी गोलियां खायी थीं, पुड़ियां और दवाई की बूंदें पी थीं, इस चीज़ के बावजूद कि नताशा को गांव के अभ्यस्त जीवन से दूर रखा गया था, जवानी की उम्र ने अपना रंग दिखाया – नताशा का दुख हर दिन के जीवन के प्रभावों की तह के नीचे दबने लगा, वह उसके दिल को व्यथित करनेवाला टीसता हुआ दर्द नहीं बना रहा, अतीत की चीज़ बनने लगा और नताशा स्वस्थ होने लगी।

१७

नताशा कुछ शान्त हो गयी थी, किन्तु उसमें पहलेवाली प्रफुल्लता नहीं आयी थी। वह न केवल उन सभी चीज़ों से कन्नी काटती थी जो उसे प्रसन्नता प्रदान कर सकती थीं, जैसे कि बॉल-नृत्य, बग्घी में सैर, कन्सर्ट, थियेटर – बल्कि एक बार भी ऐसे नहीं हंसी थी कि उसकी हंसी की ओट में आंसुओं की अनुभूति न हो। वह गा नहीं पाती थी। जब भी वह हंसने लगती या अकेली होने पर गाने की कोशिश करती, तभी उसका गला आंसुओं से रुंध जाता। ये पश्चाताप के आंसू होते, उस निश्छल-निष्कपट समय की याद के आंसू होते जो अब कभी नहीं लौटेगा, इस बात की खीझ के आंसू होते कि उसने व्यर्थ ही अपनी उस जवान ज़िन्दगी को बरबाद कर डाला जो सुखी-सौभाग्यशाली हो सकती थी। हंसी और गाना – ये तो विशेष रूप से उसे अपने दुख की खिल्ली उड़ाते-से प्रतीत होते। चोंचलेबाज़ी की तो वह सोच ही नहीं सकती थी, इसके लिये उसे अपने को रोकने तक की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती थी। वह यह कहती और अनुभव भी करती थी कि इस समय तो उसके लिये सभी पुरुष विदूषक नास्तास्या इवानोव्ना के समान थे। उसके अन्तर में बैठा हुआ कोई सन्तरी उसे हर तरह की ख़ुशी से मना कर देता था। वास्तव में ही अब उसमें युवती के उस मस्ती भरे और आशाओं से ओतप्रोत जीवन की रुचियां-ख़ुशियां बाक़ी ही नहीं रही थीं। सबसे अधिक और बहुत विह्वल होकर वह पतझर के महीनों, शिकार, चाचा और क्रिसमस की उन छुट्टियों को याद करती थी जो उसने ओतरादनोये में निकोलाई के साथ बितायी थीं। उस वक़्त का एक दिन लौटाने के लिये ही वह भला कौन-सी क़ीमत चुकाने को राज़ी न हो जाती! मगर यह सब तो हमेशा के लिये ख़त्म हो चुका था। इसके पूर्वाभास ने उसे तब ठीक ही यह चेतावनी दी थी कि उन्मुक्तता और सभी तरह की ख़ुशियों के लिये तत्परता की यह स्थिति अब फिर कभी नहीं लौटेगी। किन्तु जीना तो था ही।

नताशा को यह सोचकर सन्तोष होता कि वह दूसरों से अच्छी नहीं है, जैसे कि वह अपने बारे में पहले सोचती थी, बल्कि सभी से, दुनिया के हर व्यक्ति से बुरी, कहीं अधिक बुरी है। किन्तु इतना

ही काफ़ी नहीं था। वह यह जानती और अपने आपसे पूछती थी – "आगे क्या है?" आगे कुछ भी नहीं था। जीवन में कोई भी ख़ुशी नहीं थी और ज़िन्दगी बीतती जा रही थी। नताशा सम्भवतः यही कोशिश करती थी कि किसी पर बोझ न बने, किसी के आड़े न आये, मगर ख़ुद अपने लिये वह कुछ भी नहीं चाहती थी। वह घर के सभी लोगों से कन्नी काटती थी और सिर्फ़ अपने भाई पेत्या के साथ ही उसे राहत मिलती थी। दूसरों की तुलना में उसके साथ उसे ज़्यादा वक़्त बिताना अच्छा लगता था। जब कभी वे दोनों ही होते तो वह कभी-कभी हंसती भी। वह लगभग घर से बाहर नहीं जाती थी और आगन्तुकों में केवल एक व्यक्ति – प्येर – के आने पर ही उसे ख़ुशी होती थी। काउंट बेज़ूख़ोव की तरह अन्य कोई भी उसके साथ इतनी कोमलता, सावधानी और साथ ही गम्भीरता से पेश नहीं आ सकता था। नताशा अचेतन रूप से ही उसके व्यवहार की इस स्नेहपूर्ण कोमलता को अनुभव करती और इसलिये उसकी संगत में उसे बड़ी ख़ुशी हासिल होती। उसकी इस स्नेहपूर्ण कोमलता के लिये वह तो उसके प्रति आभार भी नहीं अनुभव करती थी। उसे लगता कि प्येर को इस बात की ज़रूरत नहीं है कि वह नेकी करने के लिये कोई प्रयास करे। सभी के प्रति दयालु होना प्येर के लिये इतना स्वाभाविक था कि उसकी दयालुता में उसे कोई ख़ास बात ही नज़र नहीं आती थी। कभी-कभी नताशा को लगता कि उसकी उपस्थिति में प्येर झेंप रहा है और अटपटापन अनुभव कर रहा है, ख़ास तौर पर उस समय, जब वह उसे कोई ख़ुशी प्रदान करना चाहता या जब इस कारण घबराहट महसूस करता होता कि उसकी बातचीत से नताशा को कोई कटु चीज़ याद न आ जाये। इस बात की ओर उसका ध्यान जाता और इसे वह उसकी सामान्य दयालुता तथा झेंप का परिणाम मानती, जो उसकी धारणा के अनुसार वह सभी के मामले में अनुभव करता था। नताशा के लिये बहुत ही विह्वलता के क्षण में प्येर द्वारा संयोग से कह दिये गये इन शब्दों के बाद कि अगर वह बन्धन-मुक्त होता तो घुटनों के बल होकर उससे अपनी पत्नी बनने तथा उसे अपना प्यार देने की प्रार्थना करता, उसने नताशा के प्रति अपनी भावनाओं की कभी चर्चा नहीं की थी। नताशा के लिये यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट थी कि वे शब्द, जिन्होंने उस समय उसे इतनी अधिक सान्त्वना दी

थी, इसी तरह से कहे गये थे जैसे रोते बच्चे को तसल्ली देने के लिये सभी तरह के बेमानी शब्द कह दिये जाते हैं। बात यह नहीं थी कि प्येर शादीशुदा आदमी था, बल्कि यह कि वह उसके और अपने बीच नैतिकता की ऐसी मज़बूत दीवार महसूस करती थी – जो उसने कुरागिन के मामले में अनुभव नहीं की थी – कि उसके दिमाग़ में कभी यह ख़्याल तक नहीं आता था कि उसकी ओर से (प्येर की ओर से तो इसकी और भी कम सम्भावना थी) प्येर के साथ उसके सम्बन्ध प्यार का रूप ले सकते हैं, या फिर पुरुष और नारी के बीच ऐसी कोमल और काव्यमयी मैत्री में ही बदल सकते हैं, जिसके बहुत-से उदाहरण उसके सामने थे।

सन्त प्योत्र के उपवासकाल के अन्त में ओतरादनोये गांव की रोस्तोव-परिवार की पड़ोसिन अग्राफ़ेना इवानोव्ना बेलोवा मास्को के सन्तों के पूजा-पाठ के लिये मास्को आयी। उसने नताशा से भी धार्मिक संस्कार में भाग लेने का प्रस्ताव किया। नताशा ने सहर्ष इस प्रस्ताव का स्वागत किया। तड़के ही बाहर निकलने के डाक्टरों के निषेध के बावजूद नताशा ने इस बात के लिये हठ किया कि वह इस धार्मिक संस्कार में भाग लेगी और वह भी उस तरह से नहीं जैसे कि रोस्तोव-परिवार में आम तौर पर भाग लिया जाता था यानी घर पर ही तीन प्रार्थनायें नहीं सुनेगी, बल्कि अग्राफ़ेना इवानोव्ना बेलोवा के ढंग से पूरे एक हफ़्ते तक सुबह, दिन और शाम की प्रार्थनाओं में गिरजाघर जायेगी।

काउंटेस को नताशा के इस उत्साह से ख़ुशी हुई। दवाइयों और डाक्टरों के इलाज से कोई ख़ास फ़ायदा न होने पर उनके मन में यह आशा जगी कि उसे शायद दवाई की तुलना में प्रार्थना से ज़्यादा लाभ हो सके। यद्यपि उनके मन में कुछ शंकायें भी थीं और इस बात को डाक्टर से गुप्त रखना भी ज़रूरी था, तथापि वह नताशा की इच्छा से सहमत हो गयीं और उसे बेलोवा के साथ जाने की अनुमति दे दी। अग्राफ़ेना इवानोव्ना बेलोवा रात के तीन बजे नताशा को जगाने आती और अक्सर उसे पहले से ही जगा हुआ पाती। नताशा को यह चिन्ता रहती थी कि कहीं वह सुबह की प्रार्थना के समय सोती न रह जाये। जल्दी से हाथ-मुंह धोकर और बड़ी नम्रता से अपना सबसे मामूली फ़्रॉक और पुराना लबादा पहनकर वह सुबह की ठण्डक

में सिहरती हुई प्रातःकालीन हल्के, पारदर्शी प्रकाशवाली सुनसान सड़कों पर बाहर आ जाती। अग्राफ़ेना इवानोव्ना की सलाह पर नताशा अपने हलक़े के गिरजे में नहीं, बल्कि उस गिरजाघर में प्रार्थना करने जाती जहां बड़ी प्रभु-भक्त बेलोवा के शब्दों में पादरी बड़ा संयमी और उच्चा-दर्शोंवाला व्यक्ति था। गिरजे में हमेशा ही बहुत कम लोग होते। नताशा और बेलोवा हर दिन एक ही जगह पर, बायीं ओर के समूह-गान के पीछे मां मरियम की देव-प्रतिमा के सामने खड़ी होतीं और भोर के इस समय में नताशा जब प्रतिमा के सामने जल रही मोमबत्तियों और खिड़की से आ रहे प्रातःकालीन प्रकाश से आलोकित मां मरियम के काले चेहरे को देखते और प्रार्थना के शब्दों के अर्थ समझने की कोशिश करते हुए पादरी के प्रवचन सुनती तो एक परम तथा अनबूझ शक्ति के सम्मुख नम्रता की एक नवीन भावना अनुभव करती। जब वह इन शब्दों को समझ जाती तो उसकी व्यक्तिगत व्यथा-वेदनायें अपने सभी सूक्ष्म अर्थ-भेदों के साथ उसकी प्रार्थना से घुल-मिल जातीं। जब वह उन्हें न समझ पाती तो यह सोचकर उसे और भी अच्छा लगता कि सब कुछ समझ पाने की इच्छा स्वाभिमान है, कि सब कुछ समझना सम्भव नहीं, कि भगवान में आस्था रखनी और उनके सम्मुख नतमस्तक हो जाना चाहिये जो इन क्षणों में (वह ऐसा अनुभव करती) उसकी आत्मा का निदेशन कर रहे हैं। वह अपने ऊपर सलीब बनाती, बहुत झुककर भगवान को प्रणाम करती और जब न समझती तो अपनी तुच्छता से आतंकित होकर भगवान से विनती करती कि वह उसे सभी, सभी चीज़ों के लिये क्षमा कर दें और उसपर दया करें। प्रायश्चित की प्रार्थनाओं में ही नताशा का सबसे अधिक मन लगता। सुबह के वक़्त घर लौटते हुए, जब काम पर जाते राजगीर और सड़क बुहारनेवाले ही नज़र आते और अन्य सभी लोग घरों में सोते होते, नताशा को इस नयी भावना की अनुभूति होती कि उसके लिये अपनी बुराइयों को दूर करना और एक नये, स्वच्छ तथा सुख-सौभाग्य के जीवन-मार्ग पर क़दम बढ़ाना सम्भव है।

इस पूरे सप्ताह के दौरान, जब वह ऐसा जीवन बिताती रही, उक्त भावना हर दिन तीव्र होती चली गयी। धार्मिक संस्कार से प्राप्त होनेवाला सुख नताशा को इतना अधिक महान प्रतीत हुआ कि उसे लगा – वह सौभाग्यशाली रविवार के आने तक जीवित नहीं रह सकेगी।

किन्तु यह सौभाग्यशाली दिन आया और इस स्मरणीय रविवार को मलमल का सफ़ेद फ़्रॉक पहने नताशा जब धार्मिक संस्कार के पश्चात घर लौटी तो कई महीनों के बाद उसने पहली बार अपने को शान्त अनुभव किया और उसे आगे का जीवन भार नहीं लगा।

इस दिन नताशा की डाक्टरी जांच के बाद डाक्टर ने कहा कि उसे दवाई की वही पुड़ियां देने का क्रम जारी रखा जाये जो उसने दो हफ़्ते पहले शुरू की थीं।

"सुबह और शाम ज़रूर ही यह दवाई पी जाये," उसने अपनी सफलता से स्पष्टतः ख़ुश होते हुए ज़ोर दे कर कहा। "कृपया बहुत ध्यान और नियम से। काउंटेस, आप निश्चिन्त हो जायें," डाक्टर ने नर्म हथेली में बड़ी होशियारी से सोने की मुद्रा दबाते हुए मज़ाक़िया अन्दाज़ में कहा, "जल्द ही यह फिर से गाने और उछलने-कूदने लगेगी। मेरी इस अन्तिम दवाई का बहुत ही अच्छा असर हुआ है। पहले से बहुत बेहतर हो गयी है वह।"

काउंटेस ने नाख़ूनों की ओर देखकर थूका (इस तरह उन्होंने यह टोना किया कि बेटी को नज़र न लग जाये) और खिले हुए चेहरे के साथ ड्राइंगरूम में लौटीं।

१८

जुलाई के आरम्भ में मास्को में युद्ध के रंग-ढंग के बारे में अधिकाधिक चिन्ताजनक ख़बरें फैलने लगीं – यह चर्चा होने लगी कि सम्राट ने लोगों के नाम अपील जारी की है, कि सम्राट स्वयं सेना से मास्को आनेवाले हैं। चूंकि ११ जुलाई तक कोई लोकघोषणा और अपील सामने नहीं आई तो इनके बारे में और रूस की स्थिति के सम्बन्ध में अतिशयोक्तिपूर्ण अफ़वाहें सुनायी देने लगीं। यह कहा जाने लगा कि सम्राट इसलिये मोर्चे से लौट रहे हैं कि सेना ख़तरे में है, कि स्मोलेन्स्क पर दुश्मन का क़ब्ज़ा हो गया है, कि नेपोलियन दस लाख की सेना लेकर आया है, कि अब कोई चमत्कार ही रूस की रक्षा कर सकता है।

११ जुलाई, शनिवार को लोकघोषणा मास्को पहुंच गयी, मगर

अभी तक प्रकाशित नहीं हुई थी। प्येर ने, जो इस दिन रोस्तोवों के यहां आया था, यह वादा किया कि वह अगले दिन यानी इतवार को लंच के लिये आयेगा और काउंट रस्तोपचिन * से लोकघोषणा तथा अपील भी लेता आयेगा।

इस इतवार को रोस्तोव-परिवार सदा की भांति राज़ुमोव्स्की-परिवार के निजी गिरजाघर में दोपहर की प्रार्थना करने गया। जुलाई का गर्म दिन था। सुबह के दस बजे ही, जब रोस्तोव-परिवार के लोग गिरजाघर के सामने बग्घी से बाहर निकले तो गर्म हवा में, खोमचोंवालों की चिल्ल-पों, लोगों की भीड़ की उजली और चटक पोशाकों, छायादार मार्ग के तरुपत्तों, परेड के लिये जाती बटालियन के सैनिकों की सफ़ेद पतलूनों और बाजों, सड़कों पर घोड़ा-गाड़ियों की खड़खड़ाहट तथा गर्म सूरज की तेज़ चमक में वर्तमान से सन्तोष और असन्तोष की उस ग्रीष्मकालीन क्लांति की अनुभूति हो रही थी जिसे हम निर्मल गर्म दिन में नगर में विशेष उग्रता से अनुभव करते हैं। राज़ुमोव्स्की-परिवार के गिरजे में मास्को के सभी जाने-माने लोग, रोस्तोवों के सभी परिचित उपस्थित थे (इस वर्ष मानो किसी बात की प्रत्याशा में बहुत-से धनी परिवार, जो सामान्यतः अपने गांवों को चले जाते थे, शहर में ही थे)। बावर्दी नौकर के पीछे-पीछे, जो भीड़ में रास्ता बना रहा था, मां की बग़ल में चलती हुई नताशा को एक नौजवान द्वारा बहुत ही ऊंची फुसफुसाहट में अपने बारे में कहे गये ये शब्द सुनायी दिये:

"यही रोस्तोवा है, वही न..."

"कितनी दुबली हो गयी है, फिर भी सुन्दर है!"

उसने ऐसा सुना या उसे ऐसा लगा कि कुरागिन और बोल्कोन्स्की के नाम भी लिये गये थे। वैसे, उसे हमेशा ही ऐसे लगता रहता था। उसे हमेशा ऐसे प्रतीत होता कि उसकी ओर देखते हुए सब यही सोचते हैं कि उसके साथ कैसी बात हो गयी है। काली लेस से सजा बैंगनी रंग का फ़्रॉक पहने नताशा ऐसे अन्दाज़ में चली जा रही थी जैसे अन्दाज़ में केवल नारियां ही चल सकती हैं – उतनी ही

---

* काउंट रस्तोपचिन (१७६३–१८२६) – रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता। १८१२ में मास्को का गवर्नर-जनरल। – सं०

अधिक शान्ति और गरिमा से जितनी अधिक पीड़ा और लज्जा वह अपनी आत्मा में अनुभव कर रही थी। वह जानती थी और इसमें कोई भूल भी नहीं करती थी कि वह सुन्दर है, किन्तु अब उसे पहले की तरह इससे ख़ुशी नहीं होती थी। इसके विपरीत, पिछले कुछ समय में यही चीज़ तो उसे सबसे अधिक यातना दे रही थी और शहर में तेज़ धूपवाला यह गर्म दिन तो ख़ास तौर पर इस यातना को तीव्र कर रहा था। "एक और इतवार, एक और सप्ताह," उसने यह याद करते हुए अपने आपसे कहा कि कैसे वह पिछले इतवार को यहां आई थी, "और वही, जीवन के बिना जीवन और वही परिस्थितियां हैं जिनमें पहले जीना कितना आसान था। मैं सुन्दर हूं, जवान हूं और जानती हूं कि अब अच्छी भी हूं, पहले बुरी थी, मगर अब अच्छी हूं, मैं यह जानती हूं," वह सोच रही थी, "मगर फिर भी मेरे अच्छे से अच्छे साल योंही व्यर्थ ही बरबाद होते जा रहे हैं।" वह मां की बग़ल में खड़ी हो गयी और उसने अपने क़रीब खड़े परिचितों का अभिवादन किया। आदत के मुताबिक़ नताशा ने महिलाओं की पोशाकों को बहुत ध्यान से देखा, नज़दीक खड़ी एक महिला के आचार-व्यवहार और सलीब का निशान बनाने के उसके भद्दे ढंग की भर्त्सना की, फिर दुखी मन से उसने यह सोचा कि लोग उसपर टीका-टिप्पणी करते हैं और वह ख़ुद भी दूसरों में मीन-मेख़ निकालती है तथा अचानक प्रार्थना की ध्वनियां सुनकर उसे अपनी तुच्छता के कारण ग्लानि होने लगी, इस बात की ग्लानि होने लगी, कि वह अपनी पहलेवाली पवित्रता को फिर से खो बैठी है।

श्रद्धाभाव पैदा करनेवाला एक प्यारा-सा बुज़ुर्ग ऐसी विनम्र गम्भीरता से प्रार्थना करवा रहा था जो प्रार्थना करनेवालों की आत्माओं पर इतना उदात्त और शान्तिप्रद प्रभाव डालता है। गिरजे का बीच का दरवाज़ा खुला, परदा धीरे-धीरे हट गया और वहां से धीमी, रहस्यपूर्ण आवाज़ में कुछ सुनायी दिया। ऐसे आंसुओं से, जिनका कारण स्वयं नताशा भी नहीं समझती थी, उसका गला भर आया और वह प्रसन्नता तथा सन्ताप की भावना से विह्वल हो उठी।

"हे प्रभु, मुझे यह सिखाइये कि मैं क्या करूं, अपने जीवन को कैसे हमेशा, हमेशा के लिये रास्ते पर लाऊं! .." वह सोच रही थी।

वेदी के सामनेवाले मंच पर इसी समय डीकन आ गया, अंगूठे को फैलाये हुए उसने किमख़ाब के अपने लबादे के नीचे से लम्बे बालों को बाहर निकाला, छाती पर सलीब का निशान बनाया और ऊंची तथा गम्भीर आवाज़ में प्रार्थना के शब्द बोलने लगा :

"सभी मिलकर भगवान को याद करें!"

"सभी मिलकर – श्रेणियों के भेद-भाव के बिना, शत्रुता के बिना, भ्रातृत्वपूर्ण प्यार के बन्धन में बंधे हुए हम भगवान को याद करेंगे," नताशा सोच रही थी।

"स्वर्ग और अपनी आत्माओं की मुक्ति के लिये!"

"देवदूतों के संसार और उन अदेह प्राणियों की आत्माओं के लिये जो हमारे ऊपर रहते हैं," नताशा प्रार्थना कर रही थी।

जब सेना के लिये प्रार्थना की गयी तो उसे अपने भाई और देनीसोव की याद आयी। जब पृथ्वी और सागरों पर यात्रायें करनेवालों के लिये प्रार्थना की गयी तो उसे प्रिंस अन्द्रेई की याद आई और उसने उसके लिये तथा इस बात की प्रार्थंना की कि भगवान उसे उस बुराई के लिये क्षमा कर दें जो उसने उसके साथ की थी। जब प्यार करने-वालों के लिये प्रार्थना की गयी तो उसने अब पहली बार अपने परि-वारवालों के सम्मुख अपने अपराध को समझते और उनके प्रति अपने प्यार की सारी शक्ति को अनुभव करते हुए माता-पिता और सोन्या के लिये प्रार्थना की। जब अपने से नफ़रत करनेवालों के लिये प्रार्थना की गयी तो उसने शत्रुओं तथा अपने से घृणा करनेवालों की इसलिये कल्पना कर ली कि उनके लिये प्रार्थना कर सके। शत्रुओं में वह पिता के सभी लेनदारों और उनको शामिल करती थी जिनके साथ उनके काम-काजी सम्बन्ध थे। शत्रुओं और घृणा करनेवालों का विचार आने पर उसे हर बार अनातोल का भी ध्यान आ जाता था, जो बेशक उससे नफ़रत नहीं करता था, मगर जिसने उसके साथ इतनी अधिक बुराई की थी और वह ख़ुशी से शत्रु के रूप में उसके लिये भी प्रार्थना करती। केवल प्रार्थना के समय ही वह प्रिंस अन्द्रेई तथा अनातोल को ऐसे व्यक्तियों के रूप में शान्ति और स्पष्टता से याद कर पाती थी जिनके प्रति उसकी भावनायें भगवान के लिये उसकी भय तथा श्रद्धा-भावना की तुलना में बहुत ही तुच्छ थीं। जब ज़ार-परिवार और

सिनोड* के लिये प्रार्थना की गयी तो उसने अपने से यह कहते हुए विशेष रूप से बहुत झुककर प्रणाम किया और सलीब का निशान बनाया कि अगर वह समझती नहीं तो अपने मन में शंका भी नहीं ला सकती और जो भी हो, धर्म-संचालनकारी सिनोड को प्यार तथा उसके लिये प्रार्थना करती है।

प्रार्थना समाप्त होने पर डीकन ने स्कन्धपट से, जिसपर सलीबें कढ़ी हुई थीं, सलीब का निशान बनाया और बोला :

"अपने को और अपने जीवन को हम प्रभु ईसा को अर्पित करते हैं।"

"अपने को और अपने जीवन को हम प्रभु ईसा को अर्पित करते हैं," नताशा ने मन ही मन दोहराया। "हे भगवान, अपने को आपकी इच्छा के सम्मुख अर्पित करती हूं," वह सोच रही थी। "मैं कुछ भी नहीं चाहती, मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, मुझे यह सिखाइये कि मैं क्या करूं, अपने जीवन का क्या करूं! मुझे अपनी शरण में ले लीजिये, अपनी शरण में ले लीजिये!" नताशा मर्मस्पर्शी विह्वलता से मन ही मन यह कह रही थी, अपने ऊपर सलीब का निशान नहीं बना रही थी तथा अपनी पतली-पतली बांहों को ऐसे लटकाये हुए थी मानो इस प्रतीक्षा में हो कि अभी-अभी कोई अदृश्य शक्ति उसे ले जायेगी और उसे अपने से, अपने पश्चातापों, इच्छाओं, भर्त्सनाओं, आशाओं और बुराइयों से मुक्ति दिला देगी।

प्रार्थना के दौरान काउंटेस ने कई बार घूमकर बेटी के चमकती आंखोंवाले भाव-विभोर चेहरे पर नज़र डाली और भगवान से विनती की कि वह उसकी मदद करें।

प्रार्थना के दौरान और उसके क्रम को भंग करते हुए, जिसे नताशा बहुत अच्छी तरह से जानती थी, भजनीक अचानक वह चौकी ले आया जिसपर घुटने टेककर पादरी ट्रिनिटी दिन की प्रार्थना करता था और उसे वेदी के मुख्य द्वार के सामने रख दिया। बैंगनी रंग की मख़मली पोशाक पहने पादरी वेदी पर आया, उसने अपने बाल ठीक किये और मुश्किल से चौकी पर अपने घुटने टिकाये। प्रार्थना करनेवाले अन्य सभी लोगों ने भी ऐसा ही किया और आश्चर्य से एक-दूसरे की

---

* क्रान्तिपूर्व के रूस में पूर्वी रूसी ईसाई धर्म की सर्वोच्च धर्म-संचालन संस्था। – सं०

ओर देखा। यह सिनोड से इसी समय मिलनेवाली वह प्रार्थना थी जिसमें रूस को शत्रु के आक्रमण से रक्षा की विनती की गयी थी।

"सर्वशक्तिमान परमात्मा, हमारे त्राता प्रभु!" पादरी ने उस स्पष्ट, शान्त और विनम्र आवाज़ में प्रार्थना शुरू की जो स्लाव पादरियों का ही विशेष लक्षण है और जिसका रूसी हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। "सर्वशक्तिमान परमात्मा, हमारे त्राता प्रभु! अपने आज्ञाकारी लोगों पर अपनी दया, कृपा करें, हमारी विनती सुनें, हमें क्षमादान दें, दया की भिक्षा दें। शत्रु आपकी धरती को अस्त-व्यस्त कर रहा है, हमारे विरुद्ध उठकर आपकी सारी पृथ्वी को निर्जन बना देना चाहता है। देखिये, ये अवैध-उपद्रवी लोग आपके साम्राज्य को नष्ट करना, आपके पावन जेरुसलम, आपके प्यारे रूस को मिटाना चाहते हैं, आपके मन्दिरों, देव-स्थानों और वेदियों को ध्वस्त करना चाहते हैं। हे प्रभु, कब तक, कब तक पापियों की विजय होती रहेगी? कब तक अवैध-अपराधी अपनी सत्ता बनाये रहेंगे?

"सर्वशक्तिमान प्रभु! हमारी विनती सुनें। हमारे दयालु, सर्वसत्ता-सम्पन्न महान सम्राट, ज़ार अलेक्सान्द्र पाव्लोविच को अपनी शक्ति देकर सशक्त बनायें, उनकी सचाई और नम्रता को याद रखें, उनकी नेकी के लिये उन्हें पुरस्कृत करें। उनके परामर्शों, प्रयासों और कार्यों को अपना आशीर्वाद दें। अपने परम शक्तिशाली हस्त से उनके राज्य की रक्षा करें और शत्रु पर इसी प्रकार उनको विजयी बनायें जैसे अमालेक पर मोज़ेज़ को, मिदियाम पर गिदिओन को और गोलियाथ पर डेविड को विजयी बनाया था। उनकी सेना की रक्षा करें और उन्हें लड़ाई के लिये साहस प्रदान करें। अपनी ढाल और तलवार हाथ में लें और हमारी सहायता करें। हमारे विरुद्ध दुर्भावना रखनेवालों को लज्जित और कलंकित होना पड़े तथा आपमें निष्ठा रखनेवाली सेना के सम्मुख वे उसी प्रकार बिखर जायें जैसे हवा के सामने धूल तथा आपके शक्तिशाली देवदूत उन्हें दण्ड दें, पराजित करें। वे आपके दासों के पांवों पर गिरें और हमारी सेना उन्हें मिटा डाले। प्रभु! आप तो छोटे-बड़े – सभी की रक्षा करते हैं। आप तो भगवान हैं और आपके सामने इन्सान की कोई हस्ती नहीं।

"हमारे पूर्वजों के प्रभु! हमपर अपनी चिर कृपा और दयादृष्टि बनाये रखें। हमें अपने से दूर नहीं करें। हमारे पापों पर क्रुद्ध न हों,

बल्कि अपनी दयालुता के अनुरूप हमपर दया करें, आपकी उदारता हमारे अपराधों-पापों को क्षमादान दे। हमारे हृदयों को शुद्ध करें, उनमें न्याय-भावना को पुनर्जीवित करें। हममें अपने प्रति आस्था दृढ़ करें, आशा की ज्योति जलायें, एक-दूसरे के लिये सच्चा प्यार जगायें, हमें और हमारे पूर्वजों को आपके द्वारा दी गयी धरोहर की न्यायपूर्ण रक्षा के लिये हममें एकता की भावना पैदा करें।

"हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, हम जो आपमें आस्था रखते हैं, आप पर भरोसा करते हैं, जो आपसे आपकी कृपा की भीख मांगते हैं, आप हमें निराश नहीं होने दें और अपनी कृपा के रूप में ऐसा करें कि जो हमसे और हमारे पूर्वी ईसाई धर्म से घृणा करते हैं, उन्हें अपमानित होना पड़े और वे नष्ट हो जायें तथा सभी देशों के लोग यह देख लें कि आप हमारे स्वामी और हम आपके दास हैं। हे प्रभु, हमपर अपनी कृपादृष्टि रखें, हमारी रक्षा करें। अपनी कृपा से हम दासों के हृदय हर्षित होने दें। हमारे शत्रुओं का नाश करें और वे शीघ्रता से आपके सच्चे दासों के पांवों तले रौंदे जायें, क्योंकि आप ही तो उनके रक्षक, सहायक और उनके विजयदाता हैं जो आपमें आस्था रखते हैं और पिता, पुत्र तथा पावन आत्मा के रूप में जैसे पहले थी, जैसे अब है, वैसे ही सदा-सर्वदा आपकी कीर्ति अमर बनी रहेगी। अमीन।"

नताशा संवेदनशीलता की जिस स्थिति में इस समय थी, उसमें इस प्रार्थना ने उसके दिल पर बहुत ही गहरा प्रभाव डाला। उसने अमालेक पर मोज़ेज़, मिदियाम पर गिदिओन, गोलियाथ पर डेविड की विजय तथा आपके जेरुसलम के नाश से सम्बन्धित हर शब्द को बहुत ध्यान से सुना और उस कोमलता तथा भावुकता से, जिनसे उसका हृदय परिपूर्ण था, भगवान से प्रार्थना की, किन्तु इस बात को अच्छी तरह से समझ नहीं पाई कि इस प्रार्थना में उसने भगवान से किस बात का अनुरोध किया था। उसने बड़े उत्साह से इस चीज़ के लिये प्रार्थना की कि सबकी आत्मा में न्याय का वास हो, लोगों के हृदयों में आस्था, आशा और प्यार बढ़े। किन्तु वह शत्रुओं के पांवों तले रौंदे जाने के लिये प्रार्थना नहीं कर सकती थी, जबकि कुछ ही मिनट पहले उसने यह कामना की थी कि उनकी संख्या अधिक हो जाये ताकि वह उन्हें प्यार कर सके, उनके लिये प्रार्थना कर सके।

किन्तु वह घुटनों के बल होकर पढ़ी जानेवाली प्रार्थना के औचित्य के बारे में मन में शंका नहीं ला सकती थी। उसने लोगों को उनके पापों, विशेषकर अपने पापों के लिये मिलनेवाले दण्ड की कल्पना करते हुए अपने हृदय में भय और त्रास का स्पन्दन अनुभव किया और भगवान से यह प्रार्थना की कि वह उन सबको तथा उसे क्षमा करें, उन सबको तथा उसे शान्ति और जीवन में सुख-सौभाग्य प्रदान करें। उसे लगा कि भगवान उसकी प्रार्थना सुन रहे हैं।

१६

उस दिन के बाद, जब रोस्तोवों के यहां से जाते और नताशा की कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि को याद करते हुए प्येर ने आकाश में नज़र आ रहे धूमकेतु की ओर देखा था और यह अनुभव किया था कि उसके सम्मुख कुछ नया प्रकट हो रहा है, संसार की हर चीज़ की सारहीनता और बेतुकेपन के निरन्तर यातना देनेवाले प्रश्न ने उसे व्यथित करना छोड़ दिया। यह स्थायी प्रश्न "क्यों?" और "किसलिये?" जो पहले हर काम के समय उसके सामने बना रहता था, अब न तो किसी अन्य प्रश्न और न उसके उत्तर ने ही, बल्कि **उसके** बिम्ब ने उसका स्थान ले लिया था। जब वह कोई तुच्छ बात सुनता या ख़ुद कोई ऐसी ही बात करता, उसे लोगों के घटियापन और बेवक़ूफ़ी के बारे में कुछ मालूम होता या वह कहीं ऐसा कुछ पढ़ता तो पहले की तरह संतप्त न हो उठता, अपने से यह प्रश्न न करता कि लोग किसलिये दौड़-धूप कर रहे हैं, जबकि सब कुछ थोड़े ही समय का खेल है, सब कुछ अनिश्चित है, बल्कि उस रूप में **उसकी** कल्पना करता जिसमें उसने उसे अन्तिम बार देखा था और उसकी सारी शंकायें ग़ायब हो जातीं। ऐसा इसलिये नहीं होता था कि **वह** उसके सम्मुख प्रस्तुत प्रश्नों के उत्तर दे देती थी, बल्कि इसलिये कि **उसकी** कल्पना करते ही वह आत्मिक क्रियाशीलता के उस आलोकपूर्ण संसार में पहुंच जाता था जिसमें न कोई दोषी और न निर्दोष हो सकता था, सौन्दर्य और प्यार के ऐसे संसार में पहुंच जाता था, जिसके लिये जीने में कोई अर्थ

था। सामान्य जीवन की कैसी भी तुच्छता उसके सामने क्यों न आती, वह अपने आपसे यह कहता:

"कोई बात नहीं, अगर फ़लां-फ़लां ने राज्य और ज़ार को लूट लिया है, राज्य और ज़ार उसको आदर-सम्मान देंगे, किन्तु 'वह' तो मेरी ओर देखकर कल मुस्करा दी थी, उसने मुझसे अपने यहां आने का अनुरोध किया था, मैं उसे प्यार करता हूं और कोई तथा कभी भी यह नहीं जान पायेगा," वह सोचता।

प्येर पहले की तरह ही सोसाइटी में आता-जाता, बहुत शराब पीता और पहले जैसी काहिली तथा बेख़्याली की ज़िन्दगी बिताता, क्योंकि रोस्तोव-परिवार में बिताये जानेवाले घण्टों के अलावा बाक़ी वक़्त बिताना भी तो ज़रूरी था और उसकी आदतें तथा मास्को में परिचित हुए लोग उसे अदम्य रूप से उस जीवन की ओर खींचते थे जो उसे पसन्द था। किन्तु पिछले समय में, जब युद्ध-क्षेत्र से अधिकाधिक चिन्ताजनक समाचार आने लगे थे, जब नताशा का स्वास्थ्य सुधरने लगा था और वह अब उसमें पहले जैसी कोमल दया-भावना नहीं पैदा करती थी, उसके मन पर अधिकाधिक समझ में न आनेवाली बेचैनी हावी होने लगी थी। वह अनुभव करता कि जिस स्थिति में वह इस समय है, वह बहुत समय तक इसी तरह बनी नहीं रह सकती, कि कोई ऐसी भयंकर बात होनेवाली है जो उसके जीवन को पूरी तरह से ही बदल डालेगी और बड़ी अधीरता से हर चीज़ में ही निकट आ रही ऐसी भयंकर बात के लक्षण ढूंढ़ने लगा। प्येर के एक फ़्री मेसन बन्धु ने बाइबल में सेंट जोहन की प्रकाशना में नेपोलियन के बारे में की गयी भविष्यवाणी की चर्चा की।

प्रकाशना के तेरहवें अध्याय के अठारहवें पद में कहा गया है – "यह है बुद्धिमत्ता की बात। कोई बुद्धि रखनेवाला हिंसक पशु के अंक की गणना करे, क्योंकि यह एक व्यक्ति का अंक है और उसका कुल योग है छः सौ छियासठ।"

उसी अध्याय के पांचवें पद में कहा गया है – "उसे बड़ी-बड़ी बातें और ईश-निन्दा करने के लिये मुंह दिया गया है और उसे चालीस तथा दो साल की सत्ता प्रदान की गयी है।"

यदि फ़्रांसीसी वर्णमाला को लिखकर उसे इब्रानी के अनुरूप ही अंक प्रदान किये जायें जिसमें पहले दस अक्षर इकाइयों और बाद के

अक्षर दहाइयों के द्योतक हैं तो हमारे सामने यह कुल योग आता है :

a	b	c	d	e	f	g	h	i	k	l	m	n	o
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	20	30	40	50
p	q	r	s	t	u	v	w	x	y	z			
60	70	80	90	100	110	120	130	140	150	160			

यदि L'empereur Napoléon * के अक्षरों को अंकों के उक्त क्रम में ही लिखा जाये तो अंकों का योगफल ६६६ होगा। इसलिये नेपोलियन ही वह हिंसक पशु है जिसके बारे में बाइबल की प्रकाशना में भविष्यवाणी की गयी है। इतना ही नहीं, quarante deux ** शब्दों को अर्थात् इस हिंसक पशु को बड़ी-बड़ी बातें तथा ईश-निन्दा करने के लिये दी गयी अवधि इसी वर्ण तथा आंकड़ों के क्रम से लिखने पर ६६६ का योगफल सामने आता है और १८१२ में, जब फ़्रांसीसी सम्राट की आयु ४२ वर्ष की होती है, उसके सत्ताकाल के अन्त का भी समय आ जाता है। इस भविष्यवाणी से प्येर को बहुत आश्चर्य हुआ और वह अक्सर अपने से यह प्रश्न करने लगा कि इस हिंसक पशु यानी नेपोलियन की सत्ता का अन्त कैसे होगा। अक्षरों को आंकड़ों में व्यक्त करने और उनका योगफल निकालने की इसी विधि का उपयोग करते हुए प्येर ने इस प्रश्न का उत्तर पाने का प्रयास किया। उसने L'empereur Alexandre? La nation Russe? *** को आंकड़ों में लिखकर उनकी गिनती की, किन्तु योगफल ६६६ से बहुत ज़्यादा या बहुत कम निकला। ऐसी ही गणना करते हुए एक बार उसने फ़्रांसीसी में अपना नाम Comte Pierre Besouhoff **** लिख दिया। किन्तु वांछित अंक योगफल नहीं निकला। उसने हिज्जे बदल दिये – z की जगह s लिख दिया, de बढ़ा दिया और article le की वृद्धि कर दी, लेकिन फिर भी वही योगफल नहीं निकला जो वह चाहता था। तब उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि वह जो उत्तर चाहता है, उसके लिये प्रश्न में केवल उसका नाम ही नहीं, बल्कि जाति भी शामिल होनी चाहिये। उसने फ़्रांसीसी में Le Russe

* सम्राट नेपोलियन। (फ़्रांसीसी)

** बयालीस। (फ़्रांसीसी)

*** सम्राट अलेक्सान्द्र ? रूसी जाति ? (फ़्रांसीसी)

**** काउंट प्येर बेज़ूख़ोव। (फ़्रांसीसी)

Besuhof* लिखा और अंक-गणना करने पर ६७१ योगफल निकला। केवल ५ का अंक ही अधिक था। इसका अर्थ यह था कि 'e' अक्षर ही फालतू था जो L'empereur में छोड़ दिया गया था। 'E' अक्षर को छोड़ देने पर, यद्यपि ऐसा करना सही नहीं था, उसे वांछित उत्तर मिल गया यानी L'Russe Besuhof के अंकों का योगफल ६६६ के बराबर हो गया। इस खोज ने उसे बहुत उत्तेजित कर दिया। वह यह नहीं जानता था कि उस महान घटना के साथ, जिसकी बाइबल की प्रकाशना में भविष्यवाणी की गयी है, उसका कैसे और क्या सम्बन्ध हो सकता है, किन्तु ऐसा सम्बन्ध है, इसके बारे में उसे एक पल भी सन्देह नहीं होता था। नताशा के प्रति उसका प्यार, ईसा-विरोधी, नेपोलियन का आक्रमण, धूमकेतु, ६६६, L'empereur Napoléon और L'Russe Besuhof— इन सबको एकसाथ परिपक्व होना और फूटना था तथा उसे मास्को की आदतोंवाले अपने निरर्थक और आकर्षण की दुनिया के दुश्चक्र से बाहर निकलना था जिसमें वह अपने को बन्दी अनुभव करता था तथा उसे किसी महान कार्य और किसी महान सौभाग्य के पथ पर बढ़ाना था।

उस रविवार की पूर्ववेला में, जब गिरजे में उपर्युक्त प्रार्थना पढ़ी गयी, प्येर ने रोस्तोवों को यह वचन दिया था कि वह काउंट रस्तोपचिन से, जिसके साथ उसकी अच्छी जान-पहचान थी, रूस के नाम ज़ार अलेक्सान्द्र की अपील और सेना के नवीनतम समाचार भी लेकर आयेगा। इसलिये सुबह को, प्येर जब काउंट रस्तोपचिन के यहां गया तो वहां उसी समय सेना से आये सन्देशवाहक से उसकी भेंट हो गयी।

मास्को के बॉल-नृत्यों का बड़ा शौक़ीन यह सन्देशवाहक प्येर का अच्छा परिचित था।

"भगवान के लिये आप मेरी कुछ सहायता नहीं कर सकते?" सन्देशवाहक ने प्येर से अनुरोध किया, "मेरे पास माता-पिताओं के नाम पत्रों से भरा हुआ थैला है।"

इन पत्रों में निकोलाई रोस्तोव द्वारा अपने पिता के नाम भेजा गया एक पत्र भी था। प्येर ने यह पत्र ले लिया। इसके अलावा, काउंट

---

* रूसी बेजूख़ोव। (फ़्रांसीसी)

रस्तोपचिन ने प्येर को मास्कोवासियों के नाम सम्राट की इसी समय छपी अपील, सेना के नवीनतम आदेश और अपना नवीनतम बुलेटिन भी दे दिया। सेना के आदेशों को पढ़ते हुए उनमें से एक में घायलों, मारे गये और पुरस्कृत होनेवालों के समाचारों के बीच उसे निकोलाई रोस्तोव का नाम भी मिल गया जिसे ओस्त्रोव्ने की मुठभेड़ में वीरता दिखाने के लिये चौथी श्रेणी के सेंट जार्ज पदक से सम्मानित किया गया था। इसी आदेश में यह समाचार भी था कि प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की को निशानेबाज़ों की रेजिमेंट का कमांडर नियुक्त किया गया है। यद्यपि प्येर यह नहीं चाहता था कि रोस्तोवों को बोल्कोन्स्की की याद दिलाये, तथापि वह रोस्तोव दम्पति को बेटे के पुरस्कृत होने के समाचार से ख़ुश करने की अपनी इच्छा को भी नहीं दबा सका। इसलिये उसने सम्राट की अपील, परचे और अन्य आदेशों को लंच के वक़्त ख़ुद वहां ले जाने के लिये अपने पास रख लिया और छपा हुआ सेनादेश तथा निकोलाई का पत्र उनके पास भिजवा दिया।

काउंट रस्तोपचिन के साथ बातचीत, उसका चिन्ताजनक और व्यस्तता का अन्दाज़, सन्देशवाहक से भेंट, जिसने बड़ी लापरवाही से यह बताया कि सेना की कैसी बुरी हालत है, मास्को में जासूसों के पकड़े जाने की ख़बर, उस परचे के, जिसमें नेपोलियन की इस प्रतिज्ञा का उल्लेख था कि पतझर तक वह दोनों रूसी राजधानियों पर अधिकार कर लेगा, मास्को में फैल गये समाचार, अगले दिन सम्राट के मास्को आने की चर्चा – इन सभी चीज़ों ने प्येर की विह्वलता और प्रत्याशा की उस भावना को नयी तीव्रता प्रदान कर दी जो धूमकेतु के प्रकट होने और विशेषतः युद्धारम्भ के बाद से उसके मन पर लगातार छाई रहती थी।

सेना में जाने का विचार प्येर के दिल में बहुत दिनों से आ रहा था। उसने इस ख़्याल को अमली शक्ल भी दे दी होती, अगर वह फ़्री मेसन सोसाइटी का सदस्य न होता जिसके प्रति निष्ठावान रहने की उसने क़सम खायी थी और जो शाश्वत शान्ति तथा युद्ध के नाश का प्रचार करती थी और अगर बहुत-से मास्कोवासियों को वर्दी पहने तथा देशभक्ति का प्रचार करते देखकर उसे ऐसा क़दम उठाते हुए शर्म न महसूस होती। किन्तु प्येर के सेना में न जाने का मुख्य कारण यह अस्पष्ट धारणा थी कि L'Russe Besuhof के लिये, जिसका हिंसक

पशु का अंक ६६६ था, भाग्य ने पहले से ही यह तय कर दिया था कि बड़ी-बड़ी बातें तथा-ईश-निन्दा करनेवाले **हिंसक पशु** की सत्ता के नाश के महान कार्य में उसे क्या भूमिका अदा करनी है और इसलिये उसे कुछ भी किये-कराये बिना उसका इन्तज़ार करना चाहिये जो आगे होनेवाला है।

२०

सदा की भांति रोस्तोवों के यहां इतवार को उनके कुछ घनिष्ठ मित्र लंच पर आते थे।

प्येर कुछ पहले ही यहां पहुंच गया ताकि दूसरों के बिना उनसे मिल सके।

इस एक साल के दौरान प्येर इतना मोटा हो गया था कि अगर वह इतना लम्बा न होता, अगर उसके अंग इतने बड़े-बड़े न होते और अगर वह इतना ताकतवर न होता कि अपने शरीर के बोझ को आसानी से सम्भाल सके तो भद्दा दिखाई देता।

वह हांफता और कुछ बुदबुदाता हुआ सीढ़ियां चढ़ गया। कोचवान ने उससे यह नहीं पूछा कि वह उसका इन्तज़ार करे या नहीं। उसे मालूम था कि काउंट जब रोस्तोवों के यहां आता है तो आधी रात तक यहीं रहता है। रोस्तोवों के नौकर उसकी बरसाती उतरवाने और उसकी छड़ी तथा टोप लेने के लिये उसकी तरफ़ लपके। क्लब की आदत के मुताबिक़ प्येर अपनी छड़ी और टोप को ड्योढ़ी में ही छोड़ देता था।

रोस्तोवों के यहां उसने सबसे पहले नताशा को ही देखा। उसे देखने के पहले ड्योढ़ी में बरसाती उतारते हुए ही उसने उसकी आवाज़ सुन ली थी। वह संगीत-कक्ष में सरगम गा रही थी। उसे मालूम था कि बीमार होने के बाद से उसने कभी गाया नहीं था, इसलिये उसकी आवाज़ सुनकर उसे आश्चर्य और हर्ष हुआ। प्येर ने धीरे से दरवाज़ा खोला और सुबह की प्रार्थना के समयवाला बैंगनी रंग का वही फ़ॉक पहने नताशा को कमरे में चक्कर लगाते और गाते देखा। प्येर ने

जब दरवाज़ा खोला तो नताशा की पीठ उसकी ओर थी। किन्तु जब वह तेज़ी से मुड़ी और उसने प्येर का चौड़ा और आश्चर्यचकित चेहरा देखा तो शर्माकर लाल हो गयी और जल्दी-जल्दी उसके पास आ गयी।

"मैं फिर से गा पाने की कोशिश करना चाहती हूं," उसने कहा। "और कुछ नहीं तो मैं उसमें अपना ध्यान तो लगा सकूंगी," उसने मानो अपनी सफ़ाई पेश करते हुए कहा।

"यह तो बहुत अच्छी बात है।"

"कितनी खुश हूं मैं आपके आने से! आज मैं बहुत प्रसन्न हूं!" नताशा ने उसी पहले जैसी सजीवता से कहा जो प्येर ने बहुत समय से उसमें नहीं देखी थी। "आपको मालूम है कि निकोलाई को सेंट जार्ज का पदक मिला है? मुझे उसपर बड़ा गर्व है।"

"ज़रूर मालूम है, मैंने ही तो सेनादेश भिजवाया था। ख़ैर, अब मैं आपके गायन में बाधा नहीं डालना चाहता," इतना और कहकर उसने ड्राइंगरूम में जाना चाहा।

नताशा ने उसे रोक लिया।

"काउंट, क्या यह बुरी बात है कि मैं गा रही हूं?" उसने लज्जारुण होते, किन्तु नज़रें झुकाये बिना और प्रश्नात्मक दृष्टि से प्येर की ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं तो... इसमें बुराई की क्या बात हो सकती है? इसके विपरीत... लेकिन आप मुझसे यह क्यों पूछ रही हैं?"

"मैं खुद नहीं जानती," नताशा ने जल्दी से जवाब दिया, "लेकिन मैं कुछ भी ऐसा नहीं करना चाहूंगी जो आपको बुरा लगे। मैं हर चीज़ के लिये आप पर विश्वास करती हूं। आप नहीं जानते कि मेरे लिये आप कितना अधिक महत्त्व रखते हैं और आपने मेरे लिये कितना कुछ किया है!.." वह जल्दी-जल्दी और इस बात की तरफ़ ध्यान दिये बिना कहती जा रही थी कि उसके उक्त शब्दों से प्येर कैसे झेंप महसूस कर रहा था। "सेना के उसी आदेश में मैंने यह भी देखा कि 'वह', बोल्कोन्स्की (जल्दी-जल्दी और फुसफुसाते हुए उसने यह शब्द कह दिया), वह रूस में है और फिर से सेना में काम कर रहा है। आपका क्या ख़्याल है," उसने सम्भवतः इस बात से डरते हुए कि कहीं उसकी ताक़त जवाब न दे जाये, जल्दी-जल्दी कहा, "वह कभी तो मुझे माफ़ कर देगा या नहीं? उसके मन से मेरे खिलाफ़ गुस्सा

दूर हो जायेगा? आपका क्या ख़्याल है? आपका क्या ख़्याल है?"

"मेरे ख़्याल में..." प्येर ने जवाब दिया, "उसके माफ़ करने का तो कोई सवाल ही नहीं पैदा होता... अगर उसकी जगह मैं होता..." विचारों के आपस में मेल खाने के फलस्वरूप प्येर को अपनी कल्पना में फ़ौरन वह समय याद हो आया जब उसे तसल्ली देते हुए उसने नताशा से यह कहा था कि जैसा वह है, वैसा न होकर दुनिया का सबसे अच्छा इन्सान और अविवाहित व्यक्ति होता तो उसके सामने घुटने टेककर उससे अपनी पत्नी बनने की विनती करता और दया, कोमलता और प्यार की वही भावना उसके मन में उमड़ पड़ी और वही शब्द उसके होंठों पर आने को मचलने लगे। किन्तु नताशा ने उसे ये शब्द कहने का समय नहीं दिया।

"हां, आप – आपकी बात दूसरी है," नताशा ने बड़े उल्लास से 'आप' शब्द का उच्चारण करते हुए कहा। "आपसे अधिक दयालु, उदारमना और अच्छा आदमी मैं नहीं जानती और ऐसा आदमी हो भी नहीं सकता। अगर आप उस समय और अब भी न होते तो मुझे मालूम नहीं कि मेरा क्या हाल होता, क्योंकि..." अचानक उसकी आंखें छलछला आयीं। उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया, स्वरलिपियों को आंखों के सामने करके उन्हें छिपा लिया, वह फिर से गाने तथा हॉल में चक्कर काटने लगी।

इसी वक़्त ड्राइंगरूम से पेत्या भागता हुआ आया।

पेत्या अब लाल-लाल गालों, भरे-भरे लाल होंठोंवाला, नताशा से मिलता-जुलता पन्द्रह वर्षीय तरुण था। वह विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की तैयारी कर रहा था, मगर पिछले कुछ समय में उसने गुप्त रूप से अपने एक साथी, ओबोलेन्स्की के साथ मिलकर हुस्सार बनने का फ़ैसला कर लिया था।

पेत्या इसी मामले के बारे में अपने हमनाम से बात करने आया था।

उसने प्येर से यह पता लगाने का अनुरोध किया था कि वह हुस्सार बन सकता है या नहीं।

पेत्या की बात पर क़ान न देते हुए प्येर ड्राइंगरूम में चक्कर लगाता जा रहा था।

पेत्या ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिये उसकी आस्तीन को झटका दिया।

"भगवान के लिये कुछ बताइये न, प्योत्र किरील्लिच, कि मेरे मामले का कुछ बना या नहीं! सिर्फ़ आप ही पर उम्मीद लगा रखी है," पेत्या ने कहा।

"अरे हां, तुम्हारा मामला। तुम हुस्सार बनना चाहते हो न? हां, हां, बताऊंगा, बताऊंगा। आज सब कुछ बताऊंगा।"

"तो mon cher*, ले आये लोकघोषणा?" बुज़ुर्ग काउंट ने पूछा। "मेरी प्यारी काउंटेस आज सुबह की प्रार्थना के लिये राज़ु-मोव्स्की-परिवार के गिरजे में गयी थीं। वहां उन्होंने नयी प्रार्थना सुनी। उनका कहना है कि बहुत ही अच्छी प्रार्थना थी वह।"

"हां, ले आया हूं," प्येर ने जवाब दिया। "कल सम्राट यहां पधार रहे हैं... कुलीनों की एक असाधारण बैठक होगी और सुनने में आया है कि हर एक हज़ार भूदासों के पीछे दस की भर्ती होगी। मैं आपको निकोलाई के लिये बधाई देता हूं।"

"हां, हां, यह तो भगवान ने बड़ी कृपा की है। हमारी सेना के बारे में क्या ख़बर है?"

"हमारी सेना फिर पीछे हट गयी है। अफ़वाह है कि स्मोलेन्स्क के नज़दीक तक पीछे आ गयी है," प्येर ने जवाब दिया।

"हे भगवान, हे भगवान!" काउंट कह उठे। "लोकघोषणा कहां है?"

"आपका मतलब सम्राट की अपील! ओह, अभी, अभी देता हूं!" प्येर अपनी जेब में काग़ज़ ढूंढ़ने लगा, मगर वे उसे नहीं मिले। अपनी जेबों को थपथपाते हुए ही उसने ड्राइंगरूम में आनेवाली काउंटेस का हाथ चूमा और सम्भवतः नताशा की प्रतीक्षा में, जिसने गाना बन्द कर दिया था, मगर अभी तक ड्राइंगरूम में नहीं आई थी, बेचैनी से इधर-उधर नज़र दौड़ाई।

"क़सम खाकर कहता हूं, मुझे मालूम नहीं कि मैंने उसे कहां रख दिया है," प्येर ने कहा।

---

* मेरे प्यारे। (फ़्रांसीसी)

"आप तो हमेशा ही हर चीज़ गुम करते रहते हैं," काउंटेस ने टिप्पणी की।

चेहरे पर कुछ कोमलता और भावुकता का भाव लिये हुए नताशा यहां आई और चुपचाप प्येर की ओर देखते हुए बैठ गयी। नताशा के ड्राइंगरूम में आते ही प्येर का चेहरा, जिसपर मानो उदासी की घटा-सी छाई थी, सहसा खिल उठा और उसने काग़ज़ों को ढूंढ़ना जारी रखते हुए उसे कई बार बहुत ग़ौर से देखा।

"क़सम भगवान की, लगता है कि मैं उसे घर ही भूल आया हूं, बग्घी में जाकर अभी ले आता हूं। अभी जाता हूं..."

"तब आप लंच तक नहीं लौट पायेंगे।"

"ओह, फिर मेरा कोचवान भी तो चला गया।"

किन्तु इसी बीच सोन्या को, जो इन काग़ज़ों को ढूंढ़ने के लिये ड्योढ़ी में गयी थी, ये काग़ज़ प्येर के टोप में मिल गये। प्येर ने उन्हें बड़ी सावधानी से टोप के अस्तर के नीचे रखा हुआ था। प्येर ने उन्हें पढ़ना चाहा।

"नहीं, लंच के बाद," बुज़ुर्ग काउंट ने प्येर द्वारा इस अपील के पाठ में सम्भवतः बहुत मनोरंजन की पूर्वाशा करते हुए कहा।

लंच के वक़्त सेंट जार्ज के पदक से सम्मानित होनेवाले निकोलाई के स्वास्थ्य की कामना करते हुए शेम्पेन पी गयी और शिनशिन ने बूढ़ी जार्जियन प्रिंसेस की बीमारी तथा नगर के अन्य ऐसे समाचार सुनाये कि कैसे फ़्रांसीसी डाक्टर मेतिव्ये मास्को से ग़ायब हो गया है, कि लोग किसी जर्मन को पकड़कर रस्तोपचिन के पास ले गये और बोले कि वह शम्पिन्योन* है और रस्तोपचिन ने यह कहकर उसे रिहा कर दिया कि वह तो शम्पिन्योन नहीं, बल्कि साधारण बूढ़ा जर्मन कुकुरमुत्ता है।

"हां, वे लोगों को योंही पकड़ते रहते हैं, पकड़ते रहते हैं," काउंट ने कहा। "मैं तो इसीलिये काउंटेस से कहता रहता हूं कि कम फ़्रांसीसी बोला करें। आजकल इसका वक़्त नहीं है।"

---

* रूसी भाषा में जासूस के लिये श्पिओन शब्द का उपयोग होता है। आम लोग इसका ग़लत उच्चारण करते हुए शम्पिन्योन भी कह देते हैं जो एक प्रकार का बढ़िया कुकुरमुत्ता होता है। यहां यही शब्द-खिलवाड़ है। – सं०

"और आपने यह सुना?" शिनशिन बोला। "प्रिंस गोलीत्सिन ने रूसी पढ़ानेवाला एक अध्यापक नियुक्त कर लिया है – घर से बाहर फ़्रांसीसी में बातचीत करना ख़तरनाक होता जा रहा है।"

"तो काउंट प्योत्र किरील्लिच, अगर आम भर्ती शुरू हो जायेगी तो आपको भी घोड़े पर सवार होना पड़ेगा?" बुज़ुर्ग काउंट ने प्येर को सम्बोधित किया।

लंच के इस पूरे समय में प्येर ख़ामोश और ख़्यालों में डूबा-खोया रहा था। अपने को सम्बोधित किये जाने पर उसने मानो कुछ न समझते हुए काउंट रोस्तोव की ओर देखा।

"हां, हां, मोर्चे पर," उसने कहा। "नहीं! मैं क्या ख़ाक फ़ौजी बनूंगा! लेकिन वैसे, सब कुछ, सब कुछ बड़ा अजीब क़िस्सा है! मैं ख़ुद कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूं। मैं कुछ नहीं जानता, फ़ौज-वौज के मामलों में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं, मगर आज के ज़माने में कोई यह भी नहीं जानता कि उसकी क़िस्मत में क्या लिखा है।"

लंच के बाद काउंट बड़े इतमीनान से आरामकुर्सी पर बैठ गये और गम्भीर मुद्रा बनाकर उन्होंने सोन्या से, जिसकी अच्छे ढंग से पढ़ने के लिये प्रशंसा की जाती थी, सम्राट की अपील पढ़ने का अनुरोध किया।

"हमारी पुरानी राजधानी मास्को के नाम।

"शत्रु बहुत बड़े दल-बल के साथ रूस की सीमाओं में घुस आया है। वह हमारी प्यारी मातृभूमि को नष्ट-भ्रष्ट करने आ रहा है," अपनी पतली-सी आवाज़ में सोन्या बड़ी सावधानी से पढ़ती जा रही थी। काउंट आंखें मूंदे हुए यह सुन रहे थे और कुछ शब्दों पर ज़ोर से गहरी सांस लेते थे।

नताशा तनकर बैठी थी और कभी-कभी पिता तथा प्येर को बहुत ध्यानपूर्वक देख लेती थी।

प्येर यह महसूस करता कि नताशा उसकी तरफ़ देख रही है और उसकी यही कोशिश होती कि वह मुड़कर उसकी तरफ़ न देखे। अपील के हर गम्भीर वाक्य पर काउंटेस खीझ और खेद से सिर हिलातीं। इन सभी शब्दों में उन्हें यही नज़र आता कि उनके बेटे के इर्द-गिर्द मंडरानेवाला ख़तरा जल्द ही दूर नहीं होनेवाला है। होंठों पर

उपहासात्मक मुस्कान लिये शिनशिन सम्भवतः इस बात के लिये तैयार होकर बैठ गया था कि वह उसी चीज़ का मज़ाक़ उड़ाने से नहीं चूकेगा जो उसे ऐसा करने की सबसे पहले सम्भावना देगी। ऐसी चीज़ सोन्या के पाठ का ढंग भी हो सकती थी, वे शब्द भी जो काउंट कहेंगे और यदि इसके लिये कोई और आधार न मिला तो वह अपील का ही मज़ाक़ उड़ायेगा।

रूस के सामने मंडरा रहे ख़तरों, मास्को और विशेषकर इसके यशस्वी कुलीनों से की जानेवाली आशाओं के बारे में पढ़ने के बाद सोन्या ने कांपती आवाज़ में, जो मुख्यतः उस ध्यान का नतीजा थी जिससे सभी उसे सुन रहे थे, ये अन्तिम शब्द पढ़े – "हम अपनी राजधानी और राज्य के अन्य सभी स्थानों पर अपने लोगों के बीच जा खड़े होने, रूसी जन-प्रतिनिधियों को परामर्श देने और जन-सेनाओं का निर्देशन करने से नहीं हिचकिचायेंगे जो इस समय शत्रु का मार्ग रोक रही हैं और नयी बनायी जानेवाली जन-सेनाओं के बारे में भी ऐसा ही करेंगे ताकि उन सभी जगहों पर उसका मुंह तोड़ सकें जहां वह प्रकट हो। हमारी यही कामना है कि वह जो हमारी तबाही-बरबादी करने का इरादा रखता है, ख़ुद उसी का शिकार हो जाये और दासता से मुक्ति पानेवाला यूरोप रूस की कीर्ति को चार चांद लगाये!"

"बिल्कुल ठीक!" काउंट अपनी नम आंखों को खोलते हुए और नाक को कई बार ऐसे फरफराते हुए मानो तेज़ सिरके की गंधवाली शीशी उनके निकट कर दी गयी हो, सोत्साह कह उठे। "सम्राट का आदेश मिलते ही हम अपना सब कुछ क़ुर्बान कर देंगे, किसी भी चीज़ से इन्कार नहीं करेंगे।"

काउंट की देशभक्ति की इस भावना के बारे में शिनशिन अभी वह चुटकी नहीं ले पाया था जो उसने तैयार की थी कि नताशा उछलकर अपनी जगह से खड़ी हुई और लपककर काउंट के पास गयी।

"कितने अच्छे हैं हमारे पापा!" उसने काउंट को चूमते हुए कहा और फिर उसी अचेतन चंचलता से, जो सजीवता आने के बाद उसमें लौट आयी थी, उसने प्येर की ओर देखा।

"वाह री, देशभक्त!" शिनशिन ने कहा।

"देशभक्त होने की बात नहीं, लेकिन..." नताशा बुरा मानते

हुए बोली, "आप हर चीज़ का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन इसमें मज़ाक़ की कोई बात नहीं ..."

"मज़ाक़ का सवाल ही क्या पैदा होता है!" काउंट ने कहा। "सम्राट के कहने की देर है और हम सभी चल पड़ेंगे ... हम कोई जर्मन तो हैं नहीं ..."

"लेकिन आपने अपील में कहे गये इन शब्दों की ओर ध्यान दिया कि 'परामर्श के लिये'?"

"किसी भी चीज़ के लिये आदेश क्यों न मिले ..."

इसी समय पेत्या, जिसकी तरफ़ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा था, उत्तेजना से लाल होता हुआ काउंट के पास गया और कभी टूटती, कभी भारी तथा कभी पतली आवाज़ में बोला:

"पापा जी, अम्मां जी, अब मैं आप दोनों से निर्णायक रूप में यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आप मुझे सेना में जाने की इजाज़त दे दें, क्योंकि मैं ऐसा किये बिना नहीं रह सकता ... बस, बात ख़त्म ..."

काउंटेस ने घबराकर आसमान की तरफ़ देखा, हाथ पर हाथ मारा और झल्लाते हुए पति से बोलीं:

"यह नतीजा है आपके व्यर्थ बातें करने का!"

किन्तु काउंट ने इसी क्षण अपनी भावुकता को वश में कर लिया।

"यह भी ख़ूब रही," वह कह उठे। "ज़रा सूरत तो देखो इस फ़ौजी की! बेवक़ूफ़ी की बातें नहीं करो–तुम्हें तो पढ़ना-लिखना चाहिये।"

"यह बेवक़ूफ़ी की बात नहीं है, पापा जी। फ़ेद्या ओबोलेन्स्की मुझसे छोटा है और वह भी फ़ौज में जा रहा है। फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि अब मैं कुछ भी पढ़-लिख नहीं सकता, जब ..." पेत्या रुक गया, उत्तेजना के कारण पसीने आने की हद तक लाल हो गया, लेकिन फिर भी उसने कह ही दिया–"जब मातृभूमि ख़तरे में है।"

"बस, बस, बेवक़ूफ़ी की काफ़ी बातें कर चुके ..."

"लेकिन आपने तो ख़ुद ही यह कहा था कि हम सब कुछ क़ुर्बान कर देंगे।"

"पेत्या, मैं तुमसे कह रहा हूं कि चुप हो जाओ!" काउंटेस की ओर देखते हुए, जिनके चेहरे का रंग उड़ गया था और जो टकटकी

बांधकर पेत्या को देख रही थीं, काउंट चिल्ला उठे।

"लेकिन मैं आपसे कह रहा हूं और प्योत्र किरील्लिच भी यही कहेंगे ..."

"मैं तुमसे कह रहा हूं कि यह सब बकवास है। अभी तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे और तुम फ़ौज में जाना चाहते हो! बस, बस, मैंने तुमसे कह दिया," और काउंट अपील और दूसरे काग़ज़ अपने साथ लेकर, ताकि झपकी लेने से पहले उन्हें अपने कमरे में एक बार फिर पढ़ लें, ड्राइंगरूम से जाने को तैयार हो गये।

"प्योत्र किरील्लिच, तो आइये चलें, कुछ धूम्रपान करें ..."

प्येर घबराहट और अनिश्चय की स्थिति में था। स्नेह से कुछ अधिक कोई भावना व्यक्त करने और एकटक देखनेवाली नताशा की असाधारण रूप से चमकती और सजीव आंखों ने उसकी ऐसी हालत कर दी थी।

"नहीं, मेरे ख़्याल में मैं घर जा रहा हूं ..."

"घर जा रहे हैं? आप तो रात तक हमारे यहां रुकनेवाले थे ... आप तो यों भी बहुत कम आते हैं। और मेरी यह बिटिया ..." काउंट ने ख़ुशमिज़ाजी से नताशा की ओर संकेत करते हुए कहा, "सिर्फ़ आपके आने पर ही कुछ ख़ुश नज़र आती है ..."

"हां, मैं भूल गया था ... मुझे ज़रूर ही घर जाना चाहिये ... ज़रूरी काम है ..." प्येर ने झटपट कहा।

"अगर ऐसी बात है तो नमस्ते," काउंट ने कमरे से बाहर जाते हुए जवाब दिया।

"आप जा क्यों रहे हैं? किसलिये इतने परेशान हैं? किसलिये? .." चुनौती की नज़र से प्येर की आंखों में देखते हुए नताशा ने पूछा।

"इस कारण कि तुम्हें प्यार करता हूं!" प्येर ने कहना चाहा, मगर उसने यह कहा नहीं, आंसू आने की हद तक झेंप से लाल हो गया और नज़रें झुका लीं।

"इसलिये कि आपके यहां मेरा कम आना ही मेरे हित में होगा ... इसलिये कि ... नहीं, बात यह है कि मुझे काम है ..."

"किसलिये? नहीं, मुझे बताइये," नताशा ने दृढ़ता से कहना शुरू किया और फिर अचानक चुप हो गयी। दोनों ने सहमे-सहमे और घबराहट से एक-दूसरे की तरफ़ देखा। प्येर ने मुस्कराने की

कोशिश की, मगर मुस्करा नहीं पाया – उसकी मुस्कान व्यथा को व्यक्त कर रही थी। उसने मौन रहते हुए उसका हाथ चूमा और बाहर चला गया।

प्येर ने मन ही मन यह निर्णय कर लिया था कि अब फिर कभी वह रोस्तोवों के यहां नहीं आयेगा।

२१

पेत्या के अनुरोध को जब सभी ने पूरी तरह से ठुकरा दिया तो वह अपने कमरे में चला गया, उसने भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया और फूट-फूटकर रो पड़ा। जब वह गुमसुम, उदास-उदास और रोने के कारण लाल आंखें लिये हुए चाय की मेज़ पर आया तो सभी ने ऐसे ज़ाहिर किया मानो वे कुछ भी देख-समझ न रहे हों।

अगले दिन सम्राट मास्को आ गये। रोस्तोव-परिवार के कुछ नौकरों-चाकरों ने ज़ार के दर्शन करने की अनुमति ले ली। इस सुबह को पेत्या देर तक कपड़े पहनता, बाल संवारता और बालिग़ों की तरह कालर बनाता रहा। दर्पण के सामने खड़े होकर उसने नाक-भौंह सिकोड़ी, हाथों को तरह-तरह से हिलाया-डुलाया, कंधे झटके और फिर किसी से कुछ भी कहे बिना सिर पर टोपी रखी और यह कोशिश करते हुए कि उसपर किसी की भी नज़र न पड़े, पिछले दरवाज़े से बाहर चला गया। पेत्या ने यह इरादा बना लिया कि वह सीधा वहीं चला जायेगा जहां सम्राट हैं और उनके किसी निजी सेवा-अधिकारी से (पेत्या को ऐसा लगता था कि निजी सेवा-अधिकारी हमेशा ही सम्राट के इर्द-गिर्द बने रहते हैं) साफ़-साफ़ ही यह कह देगा कि वह, काउंट रोस्तोव, तरुण होते हुए भी अपनी मातृभूमि की सेवा करना चाहता है, कि तरुणावस्था उसकी देशभक्ति के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती और वह इसके लिये तैयार है... कपड़े पहनते हुए उसने बहुत-से ऐसे सुन्दर शब्द सोच लिये जो वह सम्राट के निजी सेवा-अधिकारी से कहेगा।

पेत्या ने इस आधार पर सम्राट तक पहुंच पाने में सफल होने

की आशा की थी कि वह अभी इतना कमउम्र है (पेत्या ने यह तक सोचा कि उसकी तरुणावस्था से सभी को कितना आश्चर्य होगा) और साथ ही उसने अपने कालर तथा बालों को वयस्कों की तरह व्यवस्थित किया था तथा अपनी धीमी और धीर-गम्भीर चाल से वयस्कों जैसा प्रभाव उत्पन्न करना चाहता था। किन्तु वह जितना अधिकाधिक आगे बढ़ता जाता था, क्रेमलिन के निकट अधिकाधिक संख्या में एकत्रित होते लोगों की तरफ़ उसका जितना अधिक ध्यान खिंचता जाता था, वह वयस्क लोगों की धीमी और धीर-गम्भीर चाल का अन्दाज़ उतना ही अधिक भूलता जाता था। क्रेमलिन के नज़दीक पहुंचते हुए वह इस बात की चिन्ता करने लगा कि लोग उसे धकिया न दें। इसलिये उसने रेल-पेल से अपने को बचाने की ख़ातिर बड़ी दृढ़ता से तथा भयानक सूरत बनाते हुए अपनी दोनों कोहनियों को बाहर की ओर निकाल लिया। किन्तु उसकी दृढ़ता के बावजूद त्रोइत्स्की फाटक के पास लोगों ने, जो सम्भवतः यह नहीं जानते थे कि देशभक्ति की कितनी प्रबल भावना लिये हुए वह क्रेमलिन की ओर जा रहा था, उसे दीवार के साथ ऐसे दबा दिया कि वह तब तक वहीं रुकने के लिये मजबूर हो गया, जब तक कि मेहराबों के नीचे से घोड़ा-गाड़ियां गुज़रती रहीं। नौकर के साथ एक औरत, दो व्यापारी और सेवानिवृत्त एक सैनिक पेत्या के निकट खड़े थे। कुछ समय तक फाटक के पास खड़े रहकर पेत्या ने सभी घोड़ा-गाड़ियों के गुज़र जाने की प्रतीक्षा किये बिना दूसरों से पहले ही आगे बढ़ना चाहा और वह दृढ़ता से दूसरों को कोहनियाने लगा। किन्तु उसके आगे खड़ी औरत, जिसे उसने सबसे पहले कोहनियां मारीं, उसपर ग़ुस्से से बरस पड़ी:

"अरे रईसज़ादे, धकम-पेल क्यों कर रहे हो, देखते नहीं कि सभी लोग अपनी जगहों पर खड़े हैं? तुम किसलिये आगे जाना चाहते हो?"

"ऐसे तो सभी आगे बढ़ सकते हैं," नौकर ने कहा। वह भी अपनी कोहनियां चलाने लगा और उसने पेत्या को फाटक के एक बदबू-वाले कोने में दबा दिया।

पेत्या ने चेहरे पर बह रहे पसीने को हाथों से पोंछा, पसीने से तर हो गये कालर को, जिसे उसने वयस्कों की भांति घर पर व्यव-स्थित किया था, संवारा।

पेत्या को लगा कि वह दूसरों के सामने जाने लायक़ नहीं है और यदि वह इसी हालत में निजी सेवा-अधिकारियों के सम्मुख जायेगा तो वे उसे सम्राट के पास जाने की इजाज़त नहीं देंगे। किन्तु भीड़-भड़क्के के कारण अपने को ठीक-ठाक करना और किसी दूसरी जगह पर जाना सम्भव नहीं था। घोड़ा-गाड़ी पर जानेवाला एक जनरल रोस्तोव-परिवार का परिचित था। पेत्या ने चाहा कि उसकी मदद ले, मगर इसे मर्दाना हरकत न मानते हुए उसने ऐसा नहीं किया। जब सभी घोड़ा-गाड़ियां गुज़र गयीं तो भीड़ आगे की ओर लपकी और पेत्या को भी उस मैदान में धकेल ले गयी जो लोगों से भरा हुआ था। मैदान में ही नहीं, घरों की छतों तक पर – सभी जगह लोग ही लोग थे। मैदान में पहुंचते ही पेत्या को सारे क्रेमलिन को गुंजानेवाले घण्टों और लोगों की ख़ुशी भरी आवाज़ें बि-ल्कुल साफ़ सुनायी देने लगीं।

कुछ समय तक मैदान में इतनी ज़्यादा घिचपिच नहीं थी, किन्तु अचानक सभी ने अपनी टोपियां उतार लीं और सभी तेज़ी से कहीं आगे की ओर बढ़ने लगे। भीड़ ने पेत्या को ऐसे दबा दिया कि उसके लिये सांस लेना भी कठिन हो गया। सभी लोग "हुर्रा! हुर्रा! हुर्रा!" चिल्ला उठे। पेत्या पंजों के बल ऊंचा उठा, उसने कोहनियां मारीं और चिकोटियां काटीं, किन्तु अपने इर्द-गिर्द के लोगों के सिवा वह और कुछ नहीं देख पाया।

सभी के चेहरों पर एक जैसे उत्साह और उल्लास का भाव था। पेत्या के क़रीब खड़ी एक सेठानी सिसक रही थी और उसकी आंखों से अश्रु-धारायें बह रही थीं।

"हमारे ज़ार पिता, फ़रिश्ते जैसे ज़ार पिता!" वह उंगली से आंसू पोंछते हुए कहती जा रही थी।

"हुर्रा!" सभी ओर से यही सुनायी दे रहा था।

क्षण भर को भीड़ एक ही जगह पर रुकी रही, किन्तु इसके बाद फिर तेज़ी से आगे बढ़ने लगी।

अपनी सुध-बुध भूलकर दांतों को ज़ोर से भींचे, पागलों की तरह आंखें फाड़े, कोहनियां मारते और "हुर्रा!" चिल्लाते हुए पेत्या भी आगे को लपका। ऐसे लगता था कि इस क्षण वह अपनी और दूसरों की हत्या तक करने को तैयार था। किन्तु उसके समान वहशियों जैसे

चेहरे बनाये और उसी की तरह "हुर्रा!" चिल्लाते हुए दूसरे लोग भी उसके दायें-बायें आगे बढ़ रहे थे।

"तो ऐसे हैं सम्राट!" पेत्या सोच रहा था। "नहीं, अपनी इच्छा प्रकट करने के लिये ख़ुद मुझे उनके सामने नहीं जाना चाहिये, यह तो धृष्टता होगी!" इस चीज़ के बावजूद उसने अपना पूरा ज़ोर लगाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश की और अपने आगे खड़े लोगों के पीछे से उसे एक ऐसी खुली जगह की झलक मिली जहां लाल क़ालीन बिछा था। किन्तु इसी समय भीड़ पीछे को हटी (पुलिस ने शाही जुलूस के कुछ ज़्यादा ही नज़दीक आ जानेवाले लोगों को पीछे की तरफ़ धकेल दिया था; सम्राट प्रासाद से उस्पेन्स्की गिरजे की ओर जा रहे थे) और इस क्षण पेत्या की बग़ल में अप्रत्याशित ही इतने ज़ोर की चोट लगी और उसे इस बुरी तरह से दबा दिया गया कि अचानक उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छा गया और वह बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो गिरजे का कोई छोटा-सा पुजारी या भजनीक, जो नीले रंग का घिसा हुआ-सा चोग़ा पहने था तथा जिसके पके, सफ़ेद बाल पीछे की ओर लटक रहे थे, उसकी बग़ल में एक हाथ डाले उसे सम्भाले था और दूसरे हाथ से भीड़ के दबाव मे उसकी रक्षा कर रहा था।

"एक रईसज़ादे को कुचल दिया!" पुजारी कह रहा था। "यह भी कोई बात हुई!.. धीरे, धीरे... कुचल डाला, कुचल डाला!"

सम्राट उस्पेन्स्की गिरजे में चले गये। भीड़ फिर से कुछ शान्त हो गयी और पुजारी पेत्या को, जिसका रंग उड़ा हुआ था तथा जो बड़ी मुश्किल से सांस ले रहा था, ज़ार-तोप* के पास ले गया। कुछ लोगों ने पेत्या पर दया प्रकट की, अचानक सारी भीड़ उसकी ओर मुड़ गयी और उसके गिर्द रेल-पेल होने लगी। पेत्या के नज़दीक खड़े लोग उसकी चिन्ता करने लगे, कुछ ने उसके फ़्रॉक-कोट के बटन खोल दिये, उसे ऊंची जगह पर रखी तोप पर बिठा दिया और उनको, जिन्होंने उसका ऐसा हाल कर डाला था, भला-बुरा कहने लगे।

"ऐसे तो किसी की जान ही ली जा सकती है। यह भी कोई

---

* ज़ार-तोप – १६वीं सदी में रूस में लोहे को ढालने की कला का श्रेष्ठ नमूना। यह तोप अब मास्को क्रेमलिन के सामने रखी है। – सं०

बात हुई! हत्यारे कहीं के! देखो तो बेचारे का चेहरा कैसे फक हो गया है!" लोग कह रहे थे।

पेत्या जल्द ही सम्भल गया, उसके चेहरे पर फिर से लाली आ गयी, दर्द दूर हो गया और इस अप्रिय समय की बदौलत उसे तोप पर जगह मिल गयी जहां से वह सम्राट के वापस जाने के वक़्त उन्हें देख पाने की आशा कर रहा था। पेत्या अब सम्राट से प्रार्थना करने की नहीं सोच रहा था। वह तो केवल यही चाहता था कि उनके दर्शन हो जायें – उसके लिये यह बहुत बड़े सौभाग्य की बात होगी!

बड़े उस्पेन्स्की गिरजे में प्रार्थना के समय, जो सम्राट के शुभागमन और तुर्कों के साथ शान्ति-सन्धि के उपलक्ष्य में एकसाथ हो रही थी, भीड़ कुछ बिखर गयी और क्वास पेय, मीठी रोटियां और पोस्त की मिठाइयां (जिनका पेत्या बहुत शौक़ीन था) बेचनेवाले सामने आ गये तथा आम बातचीत सुनायी देने लगी। एक सेठानी इस रेल-पेल में फट जानेवाली अपनी शॉल दिखाती हुई यह बता रही थी कि वह कितनी महंगी ख़रीदी गयी थी। दूसरी ने यह कहा कि आजकल सभी रेशमी चीज़ें बहुत महंगी हो गयी हैं। पेत्या को बचानेवाला पुजारी किसी कर्मचारी से इस बात की चर्चा कर रहा था कि बिशप के साथ आज कौन-कौन प्रार्थना करवा रहा था। पुजारी ने कई बार "संगत" शब्द दोहराया जो पेत्या की समझ में नहीं आया। दो जवान छुटभैये अख़रोट खा रही नौकरानियों के साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। इन सभी बातों में ख़ास तौर पर नौकरानियों के साथ हंसी-मज़ाक़ में, जो पेत्या की इस उम्र में विशेषतः रुचिकर हो सकते थे, उसे कोई दिलचस्पी महसूस नहीं हो रही थी। वह ऊंची जगह पर रखी तोप पर बैठा हुआ सम्राट और उनके प्रति अपने प्यार की बात सोचकर पहले की तरह ही विह्वल हो रहा था। भीड़ द्वारा दबा दिये जाने के समय अनुभूत पीड़ा और भय तथा उल्लास की भावना के घुलमिल जाने से उसकी चेतना में इस क्षण की महत्ता और अधिक बढ़ गयी।

अचानक तटबंध की ओर से तोपों की गरज सुनायी दी (यह तुर्कों के साथ शान्ति-सन्धि का अभिनन्दन किया जा रहा था) और लोगों की भीड़ यह देखने के लिये कि तोपें किस तरह चलायी जा रही हैं, तटबंध की ओर भाग चली। पेत्या ने भी उधर भाग जाना चाहा, किन्तु अपने संरक्षण में ले लेनेवाले पुजारी ने उसे जाने नहीं

दिया। तोपें अभी गरजती ही जा रही थीं कि फ़ौजी अफ़सर, जनरल और निजी सेवा-अधिकारी बड़े उस्पेन्स्की गिरजे से भागते हुए बाहर आये और उनके पीछे कुछ अन्य लोग इतमीनान से बाहर निकले। लोगों ने फिर से अपनी टोपियां उतार लीं और जो तोपों को चलते हुए देखने के लिये गये थे, वापस भागने लगे। आख़िर फ़ौजी वर्दियां पहने और पदक लगाये चार अन्य पुरुष बड़े गिरजे के दरवाज़े से बाहर आये। "हुर्रा! हुर्रा!" भीड़ फिर से चिल्ला उठी।

"कौन-से हैं? कौन-से हैं सम्राट?" पेत्या ने रुआंसी आवाज़ में अपने इर्द-गिर्द खड़े लोगों से पूछा। किन्तु किसी ने भी उसे उत्तर नहीं दिया। सभी अत्यधिक उत्साहित और अपनी धुन में थे। पेत्या ने इन चारों में से एक को चुनकर, जिसे आंखों में ख़ुशी के आंसू उमड़ आने के कारण वह स्पष्ट रूप से देख नहीं पाया था और जो वास्तव में सम्राट नहीं था, उसीपर अपना सारा उल्लास केन्द्रित कर दिया, विह्वलता के कारण अस्वाभाविक-सी आवाज़ में "हुर्रा!" चिल्ला उठा और उसने यह तय कर लिया कि हर हालत में अगले ही दिन फ़ौज में चला जायेगा।

लोगों की भीड़ सम्राट के पीछे-पीछे भागने लगी, महल तक उनके पीछे-पीछे गयी और फिर लोग अपने-अपने रास्ते जाने लगे। काफ़ी देर हो गयी थी, पेत्या ने कुछ भी नहीं खाया था और वह पसीने से तर-ब-तर हो रहा था। किन्तु वह घर नहीं गया और सम्राट के लंच के वक़्त कम हो गयी, मगर फिर भी काफ़ी बड़ी भीड़ के साथ खड़ा रहकर महल की खिड़कियों की तरफ़ देखता, कुछ और आशा करता तथा सम्राट के साथ भोजन करने के लिये पोर्च के सामने बग्घियों से उतरनेवाले ऊंचे पदाधिकारियों एवं मेज़ के इर्द-गिर्द खड़े और खिड़कियों में से नज़र आ रहे बैरों से भी ईर्ष्या करता रहा।

भोजन के समय सम्राट के निजी सेवा-अधिकारी वलूयेव ने खिड़की से बाहर झांककर कहा:

"लोग अभी भी आप हुज़ूर के एक बार फिर दर्शन कर पाने की आशा में खड़े हैं।"

भोजन लगभग समाप्त हो गया था, सम्राट बिस्कुट खाते हुए उठे और छज्जे में आ गये। लोगों की भीड़, पेत्या जिस्के मध्य में खड़ा था, छज्जे की तरफ़ उमड़ पड़ी।

"हमारे फ़रिश्ते! हमारे ज़ार पिता! हुर्रा! हमारे ज़ार पिता!" लोग और उनके साथ पेत्या भी चिल्ला रहा था। फिर से कुछ औरतें और भावुक क़िस्म के मर्द, जिनमें पेत्या भी शामिल था, ख़ुशी से रोने लगे। सम्राट अपने हाथ में जो बिस्कुट लिये थे, उसका एक बहुत बड़ा टुकड़ा टूटकर छज्जे के जंगले और जंगले से नीचे ज़मीन पर जा गिरा। देहाती ढंग का कोट पहने सबसे निकट खड़े कोचवान ने लपककर यह बिस्कुट उठा लिया। भीड़ के कुछ लोग कोचवान पर झपट पड़े। यह देखकर सम्राट ने बिस्कुटोंवाली प्लेट लाने का आदेश दिया और छज्जे से बिस्कुट नीचे फेंकने लगे। पेत्या की आंखों में उत्तेजना से मानो ख़ून उतर आया, कुचल दिये जाने के भय ने उसे और अधिक उत्तेजित कर दिया और वह बिस्कुटों पर टूट पड़ा। वह कारण तो नहीं जानता था, किन्तु सम्राट के हाथ से एक बिस्कुट लेना ज़रूरी था और इसके लिये मैदान में डटे रहना भी लाज़िमी था। वह तेज़ी से आगे बढ़ा और ऐसा करते हुए उसने बिस्कुट को झपट लेने की कोशिश कर रही एक बूढ़ी औरत को नीचे गिरा दिया। किन्तु बुढ़िया ने अपने को पराजित नहीं माना, यद्यपि वह ज़मीन पर पड़ी हुई थी (बुढ़िया बिस्कुटों को लोक रही थी, मगर वे उसके हाथ में नहीं आ रहे थे)। पेत्या ने घुटने से उसका हाथ एक तरफ़ हटा दिया, बिस्कुट झपट लिया और मानो इस बात से डरते हुए कि कहीं दूसरों से पीछे न रह जाये, फिर "हुर्रा!" चिल्ला उठा, मगर इस बार खरखरी आवाज़ में।

सम्राट चले गये और इसके बाद अधिकतर लोग अपने घरों को जाने लगे।

"मैंने कहा था न कि थोड़ा और इन्तज़ार करना चाहिये – मेरी बात ठीक निकली," सभी ओर लोग ख़ुशी से ऐसा ही कह रहे थे।

बहुत ख़ुश होते हुए भी पेत्या का मन घर जाने और इस विचार की चेतना से उदास हो रहा था कि आज के दिन का सारा आनन्द समाप्त हो चुका था। वह क्रेमलिन से घर नहीं, बल्कि अपने साथी ओबोलेन्स्की के यहां चला गया जिसकी उम्र पन्द्रह साल थी और जो उसी की भांति रेजिमेंट में जाना चाहता था। घर लौटने पर उसने बहुत ज़ोर देते हुए और दृढ़तापूर्वक यह घोषणा कर दी कि अगर उसे फ़ौज में जाने की इजाज़त नहीं मिलेगी तो वह घर से भाग जायेगा।

अगले दिन काउंट इल्या अन्द्रेइच रोस्तोव, जिन्होंने इस मामले में अभी घुटने नहीं टेके थे, यह मालूम करने गये कि किस तरह पेत्या को किसी ऐसी जगह पर नियुक्त करवा दिया जाये जो उसके लिये ख़तरनाक न हो।

२२

इसके दो दिन बाद यानी १५ जुलाई की सुबह को स्लोबोदस्कोई महल के सामने बहुत-सी बग्घियां खड़ी थीं।

महल के हॉल लोगों से भरे हुए थे। पहले हॉल में फ़ौजी वर्दियां पहने हुए कुलीन जमा थे और दूसरे में नीले कोट पहने, तमग़े-पदक लगाये दाढ़ियोंवाले सौदागर। जिस हॉल में कुलीन एकत्रित थे, वहां कोलाहल और बड़ी हलचल थी। सम्राट के छविचित्र के नीचे एक बड़ी मेज़ के गिर्द ऊंची टेकोंवाली कुर्सियों पर सबसे महत्त्वपूर्ण कुलीन बैठे थे। किन्तु अधिकतर कुलीन इधर-उधर आ-जा रहे थे।

सभी कुलीन, वही लोग जिनसे प्येर हर दिन क्लब में या उनके घरों पर मिला करता था, फ़ौजी वर्दियां पहने थे – कोई सम्राज्ञी येकतेरीना द्वितीया के समय की, कोई सम्राट पावेल प्रथम और कोई सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम के समय की नयी वर्दी तथा कोई कुलीनों की आम वर्दी। वर्दियां पहने हुए ये बूढ़े तथा जवान और जाने-पहचाने चेहरोंवाले लोग अजीब तथा अनूठे-से लग रहे थे। अध-अंधे, दंतहीन, गंजे, पीली चर्बी चढ़े या झुर्रियोंवाले तथा दुबले-पतले बूढ़े तो विशेष रूप से आश्चर्यचकित कर रहे थे। वे अधिकतर तो अपनी जगहों पर चुपचाप बैठे थे और अगर इधर-उधर आते-जाते तथा बातचीत करते थे तो अपने से कम उम्र के लोगों के साथ ही। क्रेमलिन के मैदान में जमा हुए लोगों की भांति पेत्या को इन सबके चेहरों पर भी परस्पर विरोधी भाव स्पष्ट लक्षित हो रहा था – यह भाव था गम्भीर प्रत्याशा और सामान्य, पिछले दिन के जीवन का, ताश के बोस्टन खेल, बावर्ची पेत्रूश्का, ज़िनाईदा द्मीत्रियेव्ना के स्वास्थ्य, आदि से सम्बन्धित हर दिन की ज़िन्दगी का।

प्येर भी कुलीनों की वर्दी पहने, जो उसके शरीर के लिये तंग और असुविधाजनक थी सुबह से यहां मौजूद था। वह बहुत उत्तेजित था – सिर्फ़ कुलीनों का नहीं, बल्कि व्यापारियों-सौदागरों – états généraux – का यह जमावड़ा Contrat social* और फ़्रांसीसी क्रान्ति के उन विचारों को ताज़ा कर रहा था जिन्हें उसने बहुत पहले ही भुला दिया था, मगर जो उसके स्मृति-पट पर बहुत गहरे अंकित हो चुके थे। सम्राट की लोकघोषणा के ये शब्द कि वह अपने लोगों को **परामर्श देने** आयेंगे, उसकी इस विचार-शृंखला की पुष्टि करते थे। वह यह मानते हुए कि इसी दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण बात होनेवाली है, जिसकी उसे बहुत समय से प्रतीक्षा थी, वह हॉल में इधर-उधर आ-जा रहा था, लोगों को ग़ौर से देख रहा था, उनकी बातें सुन रहा था, किन्तु उसे कहीं भी उन विचारों की अभिव्यक्ति नहीं मिली जो उसके दिल-दिमाग़ पर छाये हुए थे।

बहुत जोश पैदा करनेवाली सम्राट की लोकघोषणा सुनी गयी और इसके बाद कुलीन दलों में बंट गये। साधारण बातों के अलावा प्येर को यह विचार-विमर्श भी सुनने को मिला कि सम्राट जब यहां आयें तो कुलीन-मुखिया कहां खड़े हों, सम्राट के सम्मान में बॉल-नृत्य का कब आयोजन किया जाये और वह ज़िलों या प्रान्तों के अनुसार अथवा सभी की ओर से एकसाथ आयोजित किया जाये... आदि, आदि। किन्तु जैसे ही युद्ध और उस विषय की चर्चा छिड़ती जिसके लिये कुलीनों को यहां एकत्रित किया गया था, वैसे ही ढुलमुल और अनिश्चित-सी बातचीत होने लगती। स्वयं कुछ कहने के बजाय सभी दूसरों के मुंह से कुछ सुनना चाहते थे।

सेवानिवृत्त जहाज़ियों की वर्दी पहने अधेड़ उम्र का एक साहसी और सुन्दर पुरुष एक हॉल में कुछ कह रहा था तथा उसके गिर्द लोग जमा हो गये थे। प्येर इस वक्ता के गिर्द बन गये घेरे के पास आकर उसकी बातें सुनने लगा। सम्राज्ञी येकतेरीना द्वितीया के ज़माने की वर्दी पहने और अपने सभी सुपरिचित लोगों की भीड़ में मधुरता से मुस्कराते हुए इधर-उधर घूम रहे काउंट इल्या रोस्तोव भी इस दल

---

* रूसो के सामाजिक समझौते से अभिप्राय है, जिसके अनुसार लोग स्वेच्छा से अपने कुछ अधिकारों का राज्य-हित के लिये बलिदान करते हैं। – सं०

के पास आ गये, सदा की भांति दयालुता से मुस्कराते हुए वक्ता की बातें सुनने और सिर हिला-हिलाकर उसके साथ अपनी सहमति प्रकट करने लगे। सेवानिवृत्त नौसेना अफ़सर बहुत दबंगता से बोल रहा था – ऐसा उसे सुननेवाले लोगों के चेहरों के भाव तथा इस चीज़ से स्पष्ट था कि वे लोग, जिन्हें प्येर अत्यधिक विनम्र और शान्त व्यक्तियों के रूप में जानता था, अपनी नापसन्दगी ज़ाहिर करते हुए वक्ता से दूर हट जाते थे या उसके कथन का खण्डन करते थे। प्येर लोगों को धकियाता हुआ लोगों के बीच जा पहुंचा, वक्ता की बातें सुनता रहा और उसे विश्वास हो गया कि वह सचमुच ही उदारतावादी था, किन्तु जैसाकि उसने सोचा था, उससे बिल्कुल भिन्न अर्थ में। जहाज़ी गूंजती, गाती-सी, मधुर तुतलाहट और व्यंजनों को संक्षिप्त बनानेवाली कुलीनों की उस विशेष आवाज़ में बोल रहा था जिसमें नौकरों को पुकारकर ऐसा आदेश दिया जाता है – "अरे! पाइप लाओ!", आदि, आदि। वह रंग-रलियों के अभ्यस्त और हुक्म चलाने के आदी व्यक्ति के अन्दाज़ में बोल रहा था।

"अगर स्मोलेन्स्कवालों ने सम्राट से यह कहा है कि वे जन-सेना बनायेंगे तो क्या हुआ? स्मोलेन्स्कवाले क्या हमारे लिये कोई मिसाल बन सकते हैं? अगर मास्को प्रान्त के कुलीन ऐसा करना ज़रूरी समझेंगे तो वे दूसरे तरीक़ों से सम्राट के सम्मुख अपनी निष्ठा व्यक्त कर देंगे। क्या हम रूसी-फ़्रांसीसी युद्ध के समय सन् १८०७ में बनायी गयी जन-सेना को भूल गये हैं! उससे तो केवल पादरियों और चोर-लुटेरों को ही लाभ हुआ था..."

काउंट इल्या अन्द्रेइच रोस्तोव के होंठों पर मीठी-सी मुस्कान आ गयी और उन्होंने वक्ता की बात का अनुमोदन करते हुए सिर हिलाया।

"क्या हमारी जन-सेनाओं से राज्य को कोई फ़ायदा हुआ था? ज़रा भी नहीं! उन्होंने तो केवल हमारी खेतीबारी को ही तबाह कर डाला था। यही ज़्यादा अच्छा होगा कि हम फ़ौज में और अधिक लोगों को भेज दें... वरना मोर्चे से न तो सैनिक और न किसान ही, बल्कि लफ़ंगे ही वापस लौटेंगे। कुलीन अपने प्राणों की ज़रा भी परवाह नहीं करेंगे, सब के सब ख़ुद सेना में जायेंगे, इसके अलावा रंगरूटों को भी अपने साथ ले जायेंगे। समाट (वह इस तरह सम्राट शब्द का उच्चारण करता था) बस हमें पुकार लें और हम सब उनके लिये

अपने प्राण न्योछावर कर देंगे," वक्ता ने जोश में आकर कहा।

ख़ुशी के मारे काउंट इल्या अन्द्रेइय रोस्तोव के मुंह में पानी आ गया और उन्होंने प्येर को कोहनी मारी, किन्तु प्येर का ख़ुद बोलने को मन हो आया। वह अनुप्राणित होकर आगे बढ़ गया, यद्यपि अभी स्वयं यह नहीं जानता था कि किस चीज़ से अनुप्राणित हुआ है और क्या कहने जा रहा है। उसने बोलने के लिये मुंह खोला ही था कि एकदम दांतों के बिना तथा बुद्धिमत्तापूर्ण और चिड़चिड़े चेहरेवाला सिनेटर, जो वक्ता के बिल्कुल नज़दीक खड़ा था, उससे पहले ही बोल उठा। स्पष्टतः वाद-विवाद और तर्क-वितर्क का अभ्यस्त यह सिनेटर धीमी, किन्तु सुनाई देनेवाली आवाज़ में बोलने लगा:

"जनाब, मेरे ख़्याल में," दंतहीन पोपले मुंह से बुदबुदाते हुए उसने कहा, "हमें इस बात पर बहस करने के लिये नहीं बुलाया गया है कि इस क्षण भर्ती या जन-सेना राज्य के अधिक हित में होगी। हमें इसलिये बुलाया गया है कि हम सम्राट की उस अपील का जवाब दें जो उन्होंने बड़ी कृपा करते हुए हम लोगों के नाम जारी की है। इस बात का निर्णय हम उच्च सत्ताधारियों पर छोड़ देंगे कि राज्य के लिये क्या ज़्यादा अच्छा होगा – भर्ती या जन-सेना ..."

प्येर को सहसा अपने जोश का सही अभिव्यक्ति-मार्ग मिल गया। वह इस सिनेटर के विरुद्ध बुरी तरह से भड़क उठा जिसने अपनी आपत्ति से कुलीनों के निकट भविष्य के कर्त्तव्यों को नपी-तुली और तंग सीमाओं में बन्द करना चाहा था। उसने आगे बढ़कर सिनेटर को चुप करा दिया। वह स्वयं यह नहीं जानता था कि क्या कहेगा, किन्तु जब-तब फ़्रांसीसी शब्दों का इस्तेमाल करते हुए बड़े उत्साह से किताबी ढंग की रूसी भाषा में बोलने लगा।

"मैं माफ़ी चाहता हूं, हुज़ूर," उसने कहना शुरू किया (प्येर इस सिनेटर को बहुत अच्छी तरह से जानता था, किन्तु इस समय उसने उसे औपचारिक ढंग से सम्बोधित करना आवश्यक समझा), "बेशक मैं इन महानुभाव से (प्येर रुक गया। उसने फ़्रांसीसी में 'परम आदरणीय वक्ता' कहना चाहा) सहमत नहीं हूं ... जिनसे परिचित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त नहीं, किन्तु मैं यह समझता हूं कि सहानुभूति और उल्लास को अभिव्यक्ति देने के अतिरिक्त कुलीनों से यह आशा भी की जाती है कि हम उन उपायों पर सोच-विचार करें जिनसे

मातृभूमि की सहायता कर सकते हैं। मैं ऐसा मानता हूं," वह जोश में आते हुए कहता गया, "कि स्वयं सम्राट को यह देखकर ख़ुशी नहीं होगी कि हम केवल किसानों के स्वामी हैं और उन्हें तथा ख़ुद अपने को **chair à canon*** पेश करने को तैयार हैं और उन्हें कोई स... सलाह... नहीं दे सकते हैं।"

सिनेटर के चेहरे पर तिरस्कारपूर्ण मुस्कान और यह देखकर कि प्येर बड़े उग्र ढंग से बोल रहा है, इस दल में खड़े बहुत-से लोग यहां से हट गये। सिर्फ़ काउंट इल्या अन्द्रेइच ही प्येर के शब्दों से उसी प्रकार प्रसन्न हुए थे जैसे नौसेना के सेवानिवृत्त अफ़सर और फिर सिनेटर के भाषण से ख़ुश हुए थे तथा कुल मिलाकर हर उस भाषण से प्रसन्न होते थे जो अन्तिम होता था।

"मेरी राय में तो इन प्रश्नों पर विचार करने के पहले," प्येर कहता गया, "हमें सम्राट से यह पूछना चाहिये, महामान्य सम्राट से बहुत ही आदरपूर्वक हमें यह बताने का निवेदन करना चाहिये कि हमारी कुल कितनी सेना-शक्ति है, हमारी सेनाओं, हमारी फ़ौजों की स्थिति कैसी है और तब..."

प्येर ने उक्त शब्द कहे ही थे कि अचानक तीन दिशाओं से लोग उसपर बरस पड़े। सबसे ज़ोरदार हमला तो स्तेपान स्तेपानोविच अप्राकसिन ने किया जिसके साथ उसकी बहुत पुरानी जान-पहचान थी और ताश के बोस्टन खेल का यह खिलाड़ी हमेशा ही उसपर बड़ा मेहरबान रहा था। स्तेपान स्तेपानोविच फ़ौजी वर्दी पहने था और इस वर्दी के कारण या किसी दूसरी वजह से प्येर को अपने सामने एक बिल्कुल भिन्न व्यक्ति दिखाई दिया। चेहरे पर अचानक बुढ़ापे के अनुरूप क्रोध लाते हुए स्तेपान स्तेपानोविच प्येर पर चिल्ला पड़ा:

"सबसे पहले तो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हमें सम्राट से यह पूछने का कोई अधिकार नहीं है। दूसरे, अगर रूसी कुलीनों को ऐसा अधिकार होता भी तो भी सम्राट हमें इसका जवाब नहीं दे सकते। हमारी सेनायें दुश्मन की सेनाओं की गति-विधि के अनुसार हिलती-डुलती रहती हैं – उनकी संख्या घटती-बढ़ती रहती है..."

दूसरी आवाज़ मंझोले क़दवाले कोई चालीसेक साल के व्यक्ति की

---

* तोप के चारे के रूप में। – सं०

थी। किसी ज़माने में प्येर उसे जिप्सियों के यहां देखा करता था और जानता था कि जुए में वह बेईमानी करने का आदी था। फ़ौजी वर्दी पहनने से वह भी बदल गया था। प्येर के नज़दीक आकर उसने अप्राकसिन को टोक दिया।

"और यह सोच-विचार का नहीं, अमली काम करने का वक़्त है," इस कुलीन ने कहा। "रूस में युद्ध हो रहा है। हमारा दुश्मन रूस को तबाह करने, हमारे बाप-दादों की क़ब्रों को बेइज़्ज़त करने, हमारे बीवी-बच्चों को छीन ले जाने के लिये यहां आ रहा है।" कुलीन ने छाती ठोंकी। "अपने ज़ार पिता के लिये हम सभी उठ खड़े होंगे, सभी जंग के मैदान में जायेंगे!" अपने लाल-लाल दीदों को नचाते हुए वह चिल्लाया। भीड़ में से अनुमोदन करनेवाली कुछ आवाज़ें सुनायी दीं। "हम रूसी हैं और धर्म, सिंहासन और मातृभूमि की रक्षा के लिये अपना ख़ून बहाते हुए ज़रा भी नहीं हिचकिचायेंगे। अगर हम अपनी मातृभूमि के सच्चे सपूत हैं तो हमें शेख़चिल्लियों के ख़्याली पुलावों के फेर में नहीं पड़ना चाहिये। हम यूरोप को यह दिखा देंगे कि रूस किस तरह से रूस की रक्षा के लिये डट सकता है," कुलीन चिल्ला रहा था।

प्येर ने आपत्ति करनी चाही, किन्तु वह एक भी शब्द नहीं कह पाया। उसने महसूस किया कि उसके शब्दों की गूंज, उनमें चाहे कैसा ही अर्थ क्यों न निहित हो, जोश में आये हुए कुलीन के शब्दों की गूंज के सामने दब जायेगी।

काउंट रोस्तोव ने इस दल के पीछे से कुलीन वक्ता का अनुमोदन किया। वक्ता के शब्दों के अन्त में कुछ लोग तेज़ी से उसकी तरफ़ घूमकर कह उठे:

"बिल्कुल सही! सोलह आने सही!"

प्येर यह कहना चाहता था कि वह न तो धन-दौलत, न अपने किसानों और न अपने प्राणों की बलि देने का ही विरोध कर रहा था, लेकिन यह जानना ज़रूरी था कि वास्तविक स्थिति कैसी है ताकि उसके मुताबिक़ क़दम उठाये जा सकें। मगर वह यह कह नहीं पाया। बहुत-से लोग एकसाथ ही चीख़-चिल्ला और बोल रहे थे और इसलिये काउंट रोस्तोव सबके अनुमोदन में सिर नहीं हिला पा रहे थे। यह दल कभी बढ़ा, कभी बिखरा, कभी फिर से जमा हुआ और आख़िर सभी लोग

एकसाथ बोलते हुए बड़े हॉल, बड़ी मेज़ की ओर चले गये। प्येर न सिर्फ़ बोल ही नहीं पाया, बल्कि बड़े भद्दे ढंग से उसकी बात काटी गयी, उसे धकियाया गया, एक साझे शत्रु के रूप में लोगों ने उसकी ओर से मुंह भी फेर लिया। ऐसा इसलिये नहीं हुआ कि वे प्येर के भाषण के भाव से नाराज़ थे – इसके बाद हुए कई भाषणों के परिणाम-स्वरूप वे उसे भूल चुके थे – किन्तु भीड़ के अनुप्राणित होने के लिये ज़रूरी था कि वह प्यार तथा घृणा करने को अपने सामने कोई ठोस चीज़ देख सके। प्येर उसका ऐसा घृणा-बिन्दु बन गया। जोश में आये कुलीन के बाद बहुत-से अन्य लोग भी बोले, किन्तु सब इसी अन्दाज़ में बोले। अनेक ने बहुत बढ़िया और अनूठे भाषण दिये।

'रूसी दूत' पत्रिका के प्रकाशक ने, जिसे फ़ौरन पहचान लिया गया ("लेखक, लेखक!" भीड़ में यह सुनायी दिया) कहा कि ख़ून का ख़ून से ही जवाब दिया जाना चाहिये, कि उसने एक ऐसा बालक देखा था जो बिजली की कौंध-कड़क और बादल की गरज के वक़्त मुस्कराता था, लेकिन हम उसके समान बालक नहीं बनेंगे।

"हां, हां, हम गरज सुनकर मुस्करानेवाला बालक नहीं बनेंगे!" पिछली क़तारोंवाले लोगों ने अनुमोदन करते हुए दोहराया।

भीड़ उस बड़ी मेज़ के क़रीब आ गयी जिसके गिर्द फ़ौजी वर्दियां पहने, पदक लगाये सत्तर वर्षीय पके बालोंवाले और गंजे उच्च कुलीन बैठे थे, लगभग जिन सभी को प्येर ने उनके निजी मसख़रों के साथ घर पर या क्लब में ताश का बोस्टन खेल खेलते देखा था। लगातार कुछ बोलती, शोर मचाती भीड़ इस मेज़ के पास पहुंच गयी। भीड़ की रेल-पेल के कारण कुर्सियों की ऊंची टेकों के साथ बिल्कुल सटे हुए एक के बाद एक और कभी दो-दो वक्ता एकसाथ बोलते जा रहे थे। उनके पीछे खड़े लोग इस बात की तरफ़ ध्यान देते कि वक्ता कुछ कहना भूल गया है और वे फ़ौरन उसकी बात को पूरा कर देते। इस गर्मी और घिचपिच में अन्य लोग अपने दिमाग़ पर ज़ोर डाल रहे थे कि उन्हें कोई विचार सूझता है या नहीं और सूझ जाने पर वे उसे व्यक्त करने में देर न लगाते। प्येर के परिचित प्रतिष्ठित कुलीन कुर्सियों पर बैठे हुए कभी एक तो कभी दूसरे की ओर देखते और उनके चेहरों पर अधिकतर तो यही भाव दिखाई देता था कि उन्हें बहुत गर्मी लग रही है। लेकिन प्येर उत्तेजना अनुभव कर रहा था और

यह भावना प्रकट करने की सामान्य चाह कि हम कोई भी क़ुर्बानी करने को तैयार हैं, जो भाषणों के सार के बजाय ध्वनियों और चेहरों के भावों में कहीं अधिक व्यक्त हो रही थी, उसपर भी हावी हो गयी। उसने अपने विचारों को तो नहीं नकारा, किन्तु किसी कारण अपने को अपराधी ज़रूर महसूस किया और अपनी सफ़ाई पेश करनी चाही।

"मैंने तो सिर्फ़ इतना कहा था कि हमारे लिये क़ुर्बानी करना आसान हो जायेगा, अगर हमें यह मालूम होगा कि उसकी क्या ज़रूरत है," दूसरों से अधिक ऊंची आवाज़ में चिल्लाने की कोशिश करते हुए उसने कहा।

प्येर के क़रीब बैठे बूढ़े ने उसकी तरफ़ देखा, किन्तु उसी क्षण मेज़ के दूसरे सिरे पर शुरू हो गयी चिल्लाहट से उसका ध्यान उस ओर चला गया।

"हां, मास्को दुश्मन को सौंप दिया जायेगा! यह हमारा प्रायश्चित होगा!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

"वह मानवजाति का शत्रु है!" कोई दूसरा चिल्लाया। "मुझे कुछ कहने दीजिये... महानुभावो, आप मुझे कुचले दे रहे हैं!.."

२३

इसी समय जनरल की वर्दी पहने और पदकोंवाला रेशमी पटका बांधे आगे को बढ़ी हुई ठोड़ी तथा चौकस आंखोंवाला काउंट रस्तोपचिन तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ भीतर आया। कुलीनों की भीड़ उसे रास्ता देने के लिये पीछे हट गयी।

"सम्राट अभी यहां पधारेंगे," रस्तोपचिन ने कहा। "मैं उन्हीं के पास से आ रहा हूं। मैं तो यही समझता हूं कि वर्तमान स्थिति में कुछ अधिक सोच-विचार करने की ज़रूरत नहीं है। सम्राट ने हमें और व्यापारियों को बुलवा भेजने की कृपा की है। वहां से (उसने उस हॉल की तरफ़ संकेत किया जहां व्यापारी जमा थे) करोड़ों की धनराशि आ जायेगी और हमारा काम जन-सेना बनाना और अपने प्राणों की

भी परवाह न करना है... हमें कम से कम इतना तो करना ही चाहिये ! "

केवल मेज़ के गिर्द बैठे प्रतिष्ठित कुलीनों में सलाह-मशविरा होने लगा। इनकी यह बैठक बहुत ही धीमी आवाज़ में और शान्ति से हुई। कुछ ही समय पहले के शोर-शराबे की तुलना में तो यह तब ऊब भरी भी प्रतीत हुई, जब एक के बाद एक बुज़ुर्ग की आवाज़ में ये शब्द सुनायी दिये – "मैं सहमत हूं" या फिर विविधता के लिये किसी ने यह उत्तर दिया – "मेरी भी यही राय है," आदि, आदि।

मास्को के कुलीनों की ओर से सेक्रेटरी को यह प्रस्ताव लिखने का आदेश दिया गया कि स्मोलेन्स्क के कुलीनों की भांति वे भी अपने प्रति एक हज़ार भूदासों के पीछे साज़-सामान से लैस दस सैनिकों की व्यवस्था करेंगे। सलाह-मशविरा करनेवाले प्रतिष्ठित बुज़ुर्ग मानो राहत की सांस लेते हुए उठे, उन्होंने अपनी कुर्सियों को घसीटते हुए पीछे हटाया और टांगों को हरकत में लाने के लिये किसी की बांह में बांह डालकर बातचीत करते हुए हॉल में इधर-उधर टहलने लगे।

"सम्राट आ गये! सम्राट आ गये! " अचानक हॉलों में यह आवाज़ गूंज गयी और सभी लोग दरवाज़े की तरफ़ लपके।

कुलीनों की दो क़तारों के बीच के चौड़े मार्ग पर बढ़ते हुए सम्राट हॉल में पहुंचे। सभी के चेहरों पर आदर और दबी-दबी जिज्ञासा का भाव था। प्येर काफ़ी दूर खड़ा था और इसलिये पूरी तरह से वह सब नहीं सुन पाया जो सम्राट ने कहा। उसने जो कुछ सुना, उससे उसकी समझ में यही आया कि सम्राट ने राज्य के लिये बड़े ख़तरे और इस बात की चर्चा की है कि मास्को के कुलीनों से वह कैसी आशायें रखते हैं। जवाब में किसी ने कुछ ही समय पहले कुलीनों द्वारा किये गये निर्णय से सूचित किया।

"महानुभावो! " सम्राट ने कांपती आवाज़ में कहा। भीड़ में कुछ हलचल हुई और वह फिर से शान्त हो गयी। प्येर ने सम्राट को सुखद, मानवीय और विह्वलतापूर्ण आवाज़ में स्पष्ट रूप से यह कहते सुना – "रूसी कुलीनों की निष्ठा के बारे में मुझे कभी शंका नहीं हुई थी। किन्तु आज का दिन तो मेरी सभी आशाओं से बढ़-चढ़ गया है। मैं मातृभूमि की ओर से आपको धन्यवाद देता हूं। महानुभावो, हम हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठेंगे – वक़्त से ज़्यादा क़ीमती कुछ भी नहीं..."

सम्राट चुप हो गये, लोग उनके इर्द-गिर्द नज़दीक आने लगे और सभी ओर से उल्लासपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किये जाने लगे।

"हां, सम्राट के शब्द ... हीरों की तरह क़ीमती हैं," काउंट इल्या अन्द्रेइच ने कहीं पीछे से सिसकते हुए कहा। उन्होंने कुछ भी नहीं सुना था, किन्तु अपने ही ढंग से सब कुछ समझ लिया था।

कुलीनों के हॉल से सम्राट व्यापारियों के हॉल में गये और वहां कोई दसेक मिनट रहे। अन्य लोगों के साथ प्येर ने भी सम्राट को भाव-विह्वल होकर आंसू बहाते हुए व्यापारियों के हॉल से बाहर आते देखा। जैसाकि बाद में पता चला, सम्राट ने व्यापारियों के सामने ज्योंही बोलना शुरू किया त्योंही उनकी आंखें छलछला आयीं और उन्होंने कांपती आवाज़ में अपनी बात पूरी की। प्येर ने जब सम्राट को देखा तो वह दो व्यापारियों के साथ बाहर आ रहे थे। उनमें से एक को वह जानता था। मोटा-सा यह व्यक्ति ठेकेदार था और दूसरा, दुबला-पतला, लंबी ठोड़ी और पीले चेहरेवाला मेयर था। वे दोनों रो रहे थे। मेयर की आंखें गीली थीं, मगर मोटा-सा ठेकेदार बच्चे की तरह बिलख-बिलखकर रोता और लगातार यह दोहराता जा रहा था:

"हमारी जान और धन-दौलत भी ले लीजिये, हुज़ूर!"

प्येर इस वक़्त सिर्फ़ यही ज़ाहिर करने को बेचैन था कि वह सभी कुछ के लिये, हर क़ुर्बानी के लिये तैयार है। संविधानी प्रवृत्तिवाला उसका भाषण अब उसके मन को कचोट रहा था और वह अपनी इस मानसिक व्यथा से मुक्ति पाने का अवसर ढूंढ़ रहा था। यह मालूम होने पर कि काउंट मामोनोव पूरी रेजिमेंट की व्यवस्था कर रहा है, उसने फ़ौरन काउंट रस्तोपचिन को यह सूचित कर दिया कि वह एक हज़ार सैनिक देने और उनका सारा ख़र्च उठाने का ज़िम्मा लेता है।

बुज़ुर्ग काउंट रोस्तोव ने अपनी पत्नी को जब यह सारा हाल सुनाया तो वह आंसुओं को वश में न रख पाये, उन्होंने फ़ौरन पेत्या के अनुरोध को मान लिया और स्वयं सेना में उसका नाम लिखवाने गये।

अगले दिन सम्राट मास्को से चले गये। सभी कुलीनों ने अपनी वर्दियां उतार दीं, वे फिर से अपने घरों और क्लबों में सामान्य जीवन बिताने तथा कुछ हाय-वाय करते हुए कारिन्दों को जन-सेना के बारे में आदेश देने और हैरान होने लगे कि उन्होंने ऐसा क्यों किया है।

भाग २

१

नेपोलियन ने रूस के साथ इसलिये युद्ध आरम्भ किया कि वह ड्रेसडेन जाने का मोह संवरण नहीं कर पाया, कि उसे जो मान-सम्मान प्राप्त हुआ, उससे घमण्ड में आये बिना न रह सका, कि पोलैंडी वर्दी पहने बिना न रह सका, कि जून महीने की सुहावनी सुबह के प्रेरणा-दायी प्रभाव से नहीं बच सका, कि कुराकिन और बाद में बालाशोव के सामने ग़ुस्से से आग-बबूला हुए बिना नहीं रह सका।

सम्राट अलेक्सान्द्र ने इस कारण कोई भी बातचीत करने से इन्कार कर दिया कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपने को अपमानित अनुभव किया। बार्कले डे टोल्ली ने इसलिये बहुत ही अच्छे ढंग से सेना-संचालन का प्रयास किया कि अपना कर्त्तव्य पूरा करे और महान सेनापति की कीर्ति प्राप्त कर सके। निकोलाई रोस्तोव ने फ़्रांसीसियों पर इसलिये आक्रमण किया कि वह समतल मैदान में अपने घोड़े को सरपट दौड़ाने की इच्छा पर क़ाबू नहीं पा सका। ठीक इसी तरह से इस युद्ध में भाग लेनेवाले असंख्य लोगों ने अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों, आदतों, परिस्थि-तियों और उद्देश्यों-लक्ष्यों के अनुरूप अपनी भूमिका अदा की। यह मानते हुए कि वे जानते हैं कि क्या कर रहे हैं और उसे अपने लिये ही कर रहे हैं, वे भयभीत हुए, महत्त्वाकांक्षी बने, ख़ुश और नाराज़ हुए, उन्होंने तर्क-वितर्क किया, किन्तु वास्तव में वे सभी इतिहास के अनभिप्रेत साधन थे और उन्होंने ख़ुद उनसे छिपा हुआ, मगर हमारी समझ में आनेवाला कार्य सम्पन्न किया। अमल के मैदान में उतरनेवाले सभी लोगों के साथ अनिवार्य रूप से ऐसा ही होता है और सामाजिक सोपान पर उनकी जितनी अधिक ऊंची जगह होती है, वे उतने ही कम मुक्त होते हैं।

सन् १८१२ की घटनाओं में भाग लेनेवाले सभी लोग उस रंगमंच से हट चुके हैं, उनके निजी हितों का कहीं नाम-निशान भी बाक़ी

नहीं रहा और उस समय के केवल ऐतिहासिक परिणाम ही हमारे सामने रह गये हैं।

निजी हितों की पूर्त्ति के लिये यत्नशील इन सभी लोगों को भाग्य ने एक ऐसे महत्त्वपूर्ण परिणाम की प्राप्ति में योग देने को विवश कर दिया जिसका किसी को (न नेपोलियन, न अलेक्सान्द्र को, तथा इस युद्ध में भाग लेनेवाले अन्य लोगों की तो बात ही क्या की जाये) आभास तक नहीं था।

अब तो हमें यह स्पष्ट है कि १८१२ में फ़्रांसीसी सेना किस कारण नष्ट हुई थी। कोई भी इस चीज़ का खण्डन नहीं करेगा कि नेपोलियन की फ़्रांसीसी सेनाओं के नाश का एक ओर तो यह कारण था कि जाड़े के लिये पूरी जंगी तैयारी किये बिना वे रूस में दूर तक घुस गयीं और दूसरी ओर यह कि रूसी नगरों के भस्म होने तथा रूसी जनता के हृदय में शत्रु के विरुद्ध पैदा होनेवाली घृणा के फलस्वरूप युद्ध का स्वरूप ही बदल गया था। किन्तु उस समय तो कोई भी पहले से यह नहीं देख सकता था (जो अब बिल्कुल स्पष्ट लगता है) कि केवल इसी तरीक़े से सर्वश्रेष्ठ सेनापति के संचालन में आठ लाख सैनिकोंवाली संसार की सर्वोत्तम सेना उस रूसी सेना से टकराकर नष्ट हो जायेगी जिसकी सैनिक-संख्या फ़्रांसीसियों से आधी थी, जिसका अच्छी तरह से प्रशिक्षण नहीं हुआ था और अनुभवहीन सेनापति जिसकी कमान संभाल रहे थे। न केवल **कोई इसका पूर्वानुमान नहीं लगा सकता था**, बल्कि **रूसियों ने** लगातर इस बात के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया कि जो एक चीज़ रूस को बचा सकती थी, उसमें बाधा पड़ जाये। उधर नेपोलियन के बड़े अनुभव और तथाकथित सैनिक प्रतिभा के बावजूद **फ़्रांसीसियों की ओर से** इस बात की पूरी कोशिश की गयी कि गर्मी के अन्त में वे मास्को पहुंच जायें यानी वही करें जो उनकी तबाही का कारण बननेवाला था।

सन् १८१२ से सम्बन्धित इतिहास-पुस्तकों में फ़्रांसीसी लेखकों को यह कहना बहुत अच्छा लगता है कि नेपोलियन मोर्चे के आगे बढ़ते जाने के कारण पैदा होनेवाले ख़तरे को बहुत अच्छी तरह महसूस करता था, वह किसी जगह पर डटकर लड़ाई लड़ना चाहता था, कि उसके मार्शलों ने उसे स्मोलेन्स्क से आगे न बढ़ने का परामर्श दिया था। वे इस बात

पर बल देनेवाली इसी तरह की अन्य युक्तियां भी प्रस्तुत करते हैं मानो उसी समय इस युद्धाभियान का ख़तरा समझ में आ गया था। दूसरी तरफ़ रूसी इतिहासकारों को इस बात पर ज़ोर देना अच्छा लगता है कि युद्ध के आरम्भ में ही प्राचीन सीथिया जाति के लोगों की रणनीति के अनुरूप नेपोलियन को रूस में दूर तक खींच ले जाने की योजना बना ली गयी थी और उनमें से कुछ फ़्फ़ुल को, तो कुछ किसी फ़्रांसीसी को, तो कुछ टोल और कुछ सम्राट अलेक्सान्द्र को ही इसका श्रेय देते हैं। वे ऐसी टिप्पणियों-संस्मरणों, परियोजनाओं और पत्रों का भी उल्लेख करते हैं जिनमें वास्तव में ही इस ढंग की कार्रवाई के संकेत मिलते हैं। किन्तु जो कुछ हुआ, उसके पूर्वानुमानों के बारे में फ़्रांसीसी और रूसी इतिहासकारों के संकेत केवल इसीलिये पेश किये जाते हैं कि घटना ने उन्हें सही सिद्ध कर दिया था। किन्तु यदि यह घटना न घटती तो ये संकेत भी उसी तरह से भुला दिये जाते जैसे अब उन हज़ारों-लाखों विरोधी संकेतों तथा पूर्वानुमानों को भुला दिया गया है जो उस समय प्रस्तुत किये जाते थे, किन्तु जिन्हें घटना ने सही सिद्ध नहीं किया और इसलिये वे अतीत की कहानी बन गये। हर घटना के परिणाम के बारे में इतने अधिक अनुमान होते हैं कि उसका चाहे कोई भी अन्त क्यों न हो, हमेशा ही ऐसे लोग मिल जायेंगे जो यह कहेंगे – "मैंने तो तभी यह कह दिया था कि ऊंट इस करवट बैठेगा" और वे सर्वथा यह भूल जाते हैं कि उनके असंख्य अनुमानों में ऐसे भी थे जो इनके बिल्कुल प्रतिकूल थे।

ऐसे अनुमान कि नेपोलियन मोर्चे यानी सम्पर्क-रेखा के आगे बढ़ते जाने से पैदा होनेवाले ख़तरे के बारे में सजग था और दूसरी ओर यह कि रूसी अपने शत्रु को रूस में दूर तक खींच ले जाना चाहते थे, सम्भवतः इसी प्रतिकूल श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं और इतिहासकार बहुत ही यत्न करके यह बता सकते हैं कि नेपोलियन तथा उसके मार्शलों के दिमाग़ में इस तरह के ख़्याल थे और रूसी सेना-संचालकों ने इस ढंग की योजनायें बना ली थीं। सभी तथ्य ऐसी कल्पनाओं, ऐसे अनुमानों के विरुद्ध जाते हैं। पूरे युद्धकाल में रूसियों ने न केवल फ़्रांसीसियों को रूस में दूर तक खींच ले जाने की इच्छा ही प्रकट नहीं की, बल्कि रूसी सीमा को लांघते ही उन्हें रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगाया और नेपोलियन मोर्चे यानी सम्पर्क-रेखा के आगे बढ़ते जाने से न केवल डरा-

घबराया ही नहीं, बल्कि हर क़दम आगे बढ़ने पर इसे अपनी विजय मानते हुए ख़ुश हुआ और उसने उस तरह डटकर लड़ाई नहीं लड़नी चाही जैसे कि वह पहलेवाले युद्धाभियानों के समय करता रहा था।

युद्ध के आरम्भ में ही हमारी सेनायें कटकर एक-दूसरी से अलग हो गयी थीं और हमने जिस एकमात्र ध्येय की प्राप्ति के लिये अपनी पूरी कोशिश की, वह यही था कि किसी तरह उन्हें फिर से मिला लिया जाये, जबकि पीछे हटने और शत्रु को देश में दूर तक खींच लेने की दृष्टि से ऐसा करने में कोई फ़ायदा नहीं था। सम्राट अलेक्सान्द्र इसलिये सेना के साथ थे कि एक-एक चप्पा रूसी धरती की रक्षा के लिये उसे प्रेरणा दें, न कि इसलिये कि वह पीछे हटती जाये। फ़ुल की योजना के अनुसार ड्रीस्सा के गिर्द मोर्चेबन्दी करके विराट युद्ध-शिविर बनाया गया और यह तय किया गया कि हम इससे पीछे नहीं हटेंगे। हर क़दम पीछे हटने पर सम्राट सेना-संचालकों की भर्त्सना करते थे। मास्को के जलाये जाने की बात तो दूर, सम्राट तो शत्रु के स्मोलेन्स्क तक पहुंचने के विचार को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं थे और जब हमारी सेनायें आख़िर मिल गयीं तो सम्राट इस बात से बहुत नाराज़ हुए कि स्मोलेन्स्क हाथ से जाता रहा, उसे जला दिया गया और उसके बाहर एक भी ज़ोरदार लड़ाई नहीं लड़ी गयी।

तो ऐसी थी सम्राट की प्रतिक्रिया, जबकि रूसी सेना-संचालक और सभी रूसी लोग तो यह सोचकर और भी ज़्यादा ग़ुस्से में आ रहे थे कि हमारी सेनायें देश में दूर तक पीछे क्यों हटती जा रही हैं।

हमारी सेना को विभाजित करके नेपोलियन रूस में घुसता चला गया और उसने डटकर लड़ाई लड़ने के कई अवसरों को हाथ से निकल जाने दिया। अगस्त में वह स्मोलेन्स्क पहुंच गया और उसे सिर्फ़ इसी बात की धुन थी कि वह किस तरह से और आगे बढ़े, यद्यपि अब हम यह जानते हैं कि उसका आगे बढ़ना उसके लिये स्पष्टतः नाशकारी था।

तथ्य बिल्कुल साफ़ तौर पर यह बताते हैं कि न तो नेपोलियन ने मास्को की तरफ़ बढ़ने के ख़तरे को पहले से भांपा और न ही सम्राट अलेक्सान्द्र और रूसी सेना-संचालकों ने उस समय नेपोलियन को रूस में दूर तक खींच ले जाने की बात सोची थी, उन्होंने तो उसे रोकने

का ही प्रयास किया था। नेपोलियन रूस में दूर तक चला गया, ऐसा किसी योजना के परिणामस्वरूप नहीं हुआ (कोई भी ऐसी योजना की सम्भावना पर विश्वास नहीं करता था), बल्कि युद्ध में भाग लेनेवाले उन लोगों के षड्यन्त्रों, उद्देश्यों और इच्छाओं के जटिलतम आपसी प्रभाव के फलस्वरूप ऐसा हुआ, जिनको इस बात का आभास तक नहीं था कि क्या घटना घटनेवाली है और रूस की रक्षा का एकमात्र रास्ता क्या हो सकता है। सब कुछ संयोग से ही हुआ। हमारी सेना को तो शत्रु ने युद्ध के आरम्भ में ही दो भागों में काट दिया था। हमने दुश्मन का मुक़ाबला करने और उसे रोकने के स्पष्ट उद्देश्य से ही उन्हें मिलाने की कोशिश की, किन्तु सेनाओं के मिलाप का ऐसा प्रयास करते और साथ ही अत्यधिक शक्तिशाली शत्रु से मुठभेड़ से बचने के लिये पीछे हटते हुए हम फ़्रांसीसियों को स्मोलेन्स्क तक ले गये। किन्तु इतना कहना ही काफ़ी नहीं कि हम इसलिये पीछे हट रहे थे कि फ़्रांसीसी हमारी दोनों सेनाओं के बीच बढ़ रहे थे, बल्कि हम इस कारण भी और अधिक पीछे हटते गये कि दूसरी सेना का कमांडर बग्रातिओन नापसन्द किये जानेवाले जर्मन जाति के सेनापति बार्कले डे टोल्ली से नफ़रत करता था, किन्तु सेनाओं के मिल जाने पर उसके अधीन हो सकता था। इसलिये उसकी अधीनता की स्थिति से बचने के हेतु उसने सेनाओं के मिलन को टालने की हर मुमकिन कोशिश की। बग्रातिओन ने बहुत देर तक अपनी सेना को इसलिये बार्कले की सेना से नहीं मिलने दिया (यद्यपि सभी सेना-संचालकों का मुख्य ध्येय दोनों सेनाओं का मिलाप था) कि उसे लगा कि ऐसा करते हुए वह अपनी सेना को ख़तरे में डाल देगा, कि उसके लिये और अधिक दक्षिण को, और ज़्यादा बायें को हट जाना, पार्श्व तथा चंडावल से शत्रु को परेशान करना एवं उक्रइना में अपनी सेना में नये सैनिक भर्ती करना अधिक लाभदायक होगा। किन्तु वास्तव में ऐसा ही प्रतीत होता है कि उसने इसीलिये यह तरक़ीब सोची थी कि वह जर्मन सेनापति के अधीन नहीं होना चाहता था, जिसे नफ़रत करता था और पद की दृष्टि से वह जिससे वरिष्ठ था।

सम्राट इसलिये सेना के साथ थे कि उसे प्रेरणा दें, किन्तु उनकी उपस्थिति और इस जानकारी के अभाव ने कि वह क्या क़दम उठायें तथा क्या न उठायें और इसके अलावा उनके ढेरों सलाहकारों तथा

तरह-तरह की योजनाओं ने प्रथम सेना को पंगु बना दिया और वह पीछे हट गयी।

ड्रीस्सा सैनिक शिविर में दुश्मन के सामने डटने का इरादा बनाया गया था। किन्तु सेनापति बनने का सपना देखनेवाले पाउलूची ने सम्राट अलेक्सान्द्र पर असर डालने के लिये अचानक अपना पूरा ज़ोर लगा दिया, जिसके फलस्वरूप फ़ुल की सारी योजना को त्याग कर सब कुछ बार्कले को सौंप दिया गया। लेकिन चूंकि बार्कले पूरा विश्वास नहीं पैदा करता था, इसलिये उसके संचालन-अधिकारों को भी सीमित कर दिया गया था।

सेना विभाजित हो गयी थी, सेनाध्यक्षों में मतैक्य नहीं था, बार्कले को पसन्द नहीं किया जाता था। किन्तु इस गड़बड़, सेना-विभाजन और सेनापति की अलोकप्रियता के फलस्वरूप एक ओर तो ढुलमुलपन आया और लड़ाई से कन्नी काटी गयी (जिससे उस हालत में कन्नी काटना असम्भव होता अगर सेना बंटी हुई न होती और बार्कले सेनापति न होता) और दूसरी ओर जर्मनों के विरुद्ध अधिकाधिक ग़ुस्सा बढ़ता गया तथा देशभक्ति की भावना बलवती होती गयी।

आख़िर सम्राट सेना से चले गये। उनके सेना से जाने के लिये एकमात्र और सुविधाजनक यह बहाना पेश किया गया कि वह दोनों राजधानियों में जाकर लोगों को राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध के लिये उत्प्रेरित करेंगे। सम्राट की मास्को-यात्रा से रूसी सेना की शक्ति तिगुनी हो गयी।

सम्राट इसलिये सेना से गये थे कि सेनापति के स्वतन्त्र सेना-संचालन में बाधा न बनें और उन्होंने यह आशा की थी कि अधिक निर्णायक क़दम उठाये जायेंगे। किन्तु सेनापति की स्थिति और अधिक उलझ तथा कमज़ोर हो गयी। बेनिगसेन, युवराज और अनेक एडजुटेंट-जनरल इसीलिये सेना के साथ रह गये थे कि सेनापति की गति-विधियों पर नज़र रखें और उसे अधिक सक्रिय बनायें। किन्तु बार्कले "सम्राट की इन सभी आंखों" की कड़ी नज़र तले अपने को और भी कम स्वतन्त्र अनुभव करते हुए निर्णायक लड़ाई के मामले में और भी ज़्यादा सावधान हो गया और उससे कन्नी काटता रहा।

बार्कले सावधानी का समर्थक था। युवराज ने ग़द्दारी का इशारा किया और बड़ी लड़ाई की मांग की। ल्युबोमीर्स्की, ब्रानीत्स्की, व्लोत्स्की जैसों ने इस हद तक यह सारा शोर बढ़ाया कि बार्कले ने सम्राट के

पास ज़रूरी काग़ज़ात भेजने का बहाना करके इन सभी पोलैंडी एड्जुटेंट-जनरलों को पीटर्सबर्ग भेज दिया और बेनिगसेन तथा युवराज के साथ खुलकर टक्कर लेने लगा।

बग्रातिओन की इच्छा के विरुद्ध आखिर स्मोलेन्स्क में दोनों सेनायें मिल गयीं।

बग्रातिओन बग्घी में बैठकर बार्कले के निवास-स्थान पर पहुंचा। बार्कले अपना पद-चिह्न लगाकर उसके स्वागत के लिये बाहर आया और उसने अपने वरिष्ठ अधिकारी यानी बग्रातिओन के सामने रिपोर्ट पेश की। उदारता के इस प्रदर्शन में पीछे न रहते हुए पद-वरिष्ठता के बावजूद उसने बार्कले के अधीन काम करना स्वीकार कर लिया। किन्तु छोटा पद स्वीकार करने के बाद बार्कले के साथ उसका मतभेद और अधिक बढ़ गया। सम्राट के आदेश पर बग्रातिओन सीधे उन्हें ही अपनी रिपोर्टें भेजता था। उसने अराकचेयेव को लिखा – "सम्राट की इच्छा मेरे लिये क़ानून है, किन्तु मैं **मन्त्री** (बार्कले) के साथ किसी तरह भी काम नहीं कर सकता। भगवान के लिये मुझे, बेशक रेजिमेंट-कमांडर बनाकर ही, कहीं दूर भेज दें, लेकिन मैं यहां काम नहीं कर सकता। मुख्य सैनिक कार्यालय में इस तरह जर्मन ही जर्मन भरे हुए हैं कि किसी रूसी के लिये यहां जीना सम्भव नहीं और किसी बात का कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता। मैं तो यह समझता हूं कि ईमानदारी से सम्राट और मातृभूमि की सेवा कर रहा हूं, किन्तु नतीजा यह निकलता है कि वास्तव में मैं बार्कले की सेवा कर रहा हूं। स्वीकार करता हूं कि मैं ऐसा नहीं करना चाहता।" ब्रानीत्स्की और वींत्सेनगेरोदे जैसों ने, जिनकी भरमार थी, सेनापतियों के सम्बन्धों में और ज़हर घोल दिया और उनके बीच मतैक्य और भी कम हो गया। स्मोलेन्स्क के नज़दीक फ़्रांसीसियों पर हमला करने का इरादा बनाया गया। एक जनरल को युद्ध के लिये चुने जानेवाले स्थान का निरीक्षण करने को भेजा गया। बार्कले से बेहद नफ़रत करनेवाला यह जनरल अपने एक दोस्त, एक कोर-कमांडर के यहां पूरा दिन बिताकर बार्कले के पास लौटा और उस भावी रण-क्षेत्र को, जिसे उसने देखा तक नहीं था, हर दृष्टि से अनुपयुक्त बता दिया।

जब तक हमारे यहां भावी रण-क्षेत्र के बारे में वाद-विवाद और षड्यन्त्र होते रहे, जब तक हमारे लोग फ़्रांसीसियों को ढूंढ़ते रहे,

जिनके बारे में यह ग़लती हुई थी कि वे कहां है, इसी बीच फ़ांसीसी नेवेरोव्स्की के फ़ौजी डिवीज़न से आ टकराये और स्मोलेन्स्क के बिल्कुल नज़दीक पहुंच गये।

हमें अपनी सम्पर्क-रेखा को बनाये रखने के लिये अचानक स्मोलेन्स्क के निकट लड़ाई लड़नी पड़ी। लड़ाई लड़ी गयी। दोनों ओर से हज़ारों सैनिक खेत रहे।

सम्राट और पूरी रूसी जनता की इच्छा के विरुद्ध स्मोलेन्स्क को छोड़ना पड़ा। नगर के लोगों ने ही, जिनके साथ नगरपाल ने विश्वास-घात किया था, शहर को जला दिया और तबाह हुए नगरवासी अपने नुक़सान के बारे में सोचते, शत्रु के प्रति घृणा की आग को हवा देते और दूसरे रूसियों के लिये उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मास्को भाग गये। नेपोलियन आगे बढ़ा, हम पीछे हटे और वही स्थिति पैदा हो गयी जिसके कारण नेपोलियन को आख़िर मुंह की खानी पड़ी।

२

बेटे के जाने के अगले दिन बुज़ुर्ग प्रिंस निकोलाई बोल्कोन्स्की ने बेटी प्रिंसेस मरीया को अपने कमरे में बुलवाया।

"कहो, अब तो ख़ुश हो न?" उन्होंने बेटी से कहा। "बेटे के साथ मेरा झगड़ा करवा दिया! ख़ुश हो न? तुम तो बस, यही चाहती थीं! तुम्हारे मन की मुराद पूरी हो गयी न?.. मेरे दिल को इससे बहुत सदमा पहुंचा है, बहुत ही सदमा पहुंचा है। मैं बूढ़ा और कमज़ोर हूं और तुम मुझे ठेस लगाना चाहती थीं। तो ठीक है, ख़ुशी मनाओ, ख़ुशी मनाओ..." और इसके पश्चात एक सप्ताह तक प्रिंसेस मरीया की अपने पिता के साथ मुलाक़ात नहीं हुई। वह बीमार थे और कमरे से बाहर नहीं निकले।

प्रिंसेस मरीया को यह देखकर हैरानी हुई कि अपनी इस बीमारी के दौरान बुज़ुर्ग प्रिंस ने कुमारी बुर्येन को भी अपने पास नहीं आने दिया। सिर्फ़ तीख़ोन ही उनकी सेवा-सुश्रूषा करता रहा।

एक हफ़्ते बाद बुज़ुर्ग प्रिंस कमरे से बाहर आये, निर्माण करवाने

तथा बाग़-बगीचे लगवाने के काम में विशेष उत्साह दिखाते तथा कुमारी बुर्येन के साथ कोई सम्बन्ध न रखते हुए वह पहले जैसा सामान्य जीवन बिताने लगे। उनके चेहरे का भाव तथा प्रिंसेस मरीया के साथ उनकी बातचीत का रूखा अन्दाज़ यह कहता प्रतीत होता था – "तुमने मेरे ख़िलाफ़ चाल चली, इस फ़्रांसीसी औरत के साथ मेरे सम्बन्धों के बारे में प्रिंस अन्द्रेई से झूठ बोला और उसके साथ मेरा झगड़ा करवा दिया, लेकिन अब देखती हो कि मुझे न तो तुम्हारी और न इस फ़्रांसीसी औरत की ही ज़रूरत है।"

प्रिंसेस मरीया आधा दिन अपने भतीजे, प्यारे निकोलाई के साथ बिताती, उसके पाठों की जांच करती, ख़ुद उसे रूसी भाषा और संगीत सिखाती तथा उसके शिक्षक डेसाल के साथ बातचीत करती। दिन का दूसरा आधा भाग वह अपने कमरे में किताबों, बूढ़ी आया और "भगवान के बन्दों" के साथ बिताती जो पिछले दरवाज़े से कभी-कभी उसके पास आ जाते थे।

युद्ध के बारे में प्रिंसेस मरीया का सोचने का ढंग सभी औरतों जैसा ही था। वह भाई के बारे में चिन्तित होती जो जंग में हिस्सा ले रहा था, लोगों की क्रूरता और इस बात को न समझ पाते हुए कि वे किसलिये एक-दूसरे की हत्या करते हैं, संत्रस्त होती। किन्तु वह इस युद्ध का महत्त्व नहीं समझती थी जो उसे पहले के सभी युद्धों जैसा ही प्रतीत होता था। इस चीज़ के बावजूद कि डेसाल, जिसके साथ वह हर दिन बातचीत करती थी और जो इस लड़ाई की गति-विधि में गहरी दिलचस्पी लेता था तथा उसे अपना दृष्टिकोण समझाने की कोशिश करता था, इस चीज़ के बावजूद कि उसके पास आनेवाले भगवान के बन्दे ईसाई धर्म के इस विरोधी यानी नेपोलियन के हमले के बारे में लोगों में फैली अफ़वाहों की बहुत भयभीत होकर अपने ढंग से चर्चा करते थे और इस चीज़ के बावजूद भी कि यूलिया, जो अब प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया बन गयी थी और उसके साथ फिर से पत्र-व्यवहार करने लगी थी, उसे देशभक्तिपूर्ण पत्र लिखती थी, वह इस युद्ध का महत्त्व नहीं समझ पा रही थी।

"मेरी अच्छी सहेली, मैं आपको रूसी में पत्र लिख रही हूं," यूलिया ने लिखा था, "वह इस कारण कि मैं हर फ़्रांसीसी चीज़ से, फ़्रांसीसी भाषा से भी नफ़रत करती हूं जिसे सुन भी नहीं सकती...

यहां मास्को में हम सभी अपने आराध्य के प्रति उत्साह से ओतप्रोत हैं।

"मेरा बेचारा पति युद्ध के कष्ट और यहूदियों के घटिया ढाबों में भूख बर्दाश्त कर रहा है। किन्तु मुझे जो समाचार मिला है, वह मेरे उत्साह को और भी अधिक बढ़ा रहा है।

"आपने अवश्य ही रायेव्स्की के बहादुरी के कारनामे के बारे में सुना होगा जिसने अपने दो बेटों को बांहों में भरते हुए ये शब्द कहे थे – 'इनके साथ अपनी भी जान दे दूंगा, मगर हम पीछे नहीं हटेंगे!' वास्तव में ऐसा ही हुआ और यद्यपि शत्रु हमसे दुगुनी संख्या में था, हम पीछे नहीं हटे। हम जैसे भी सम्भव होता है, अच्छे ढंग से अपना समय बिताती हैं, किन्तु युद्ध के दिनों में तो युद्ध जैसा ही रंग-ढंग होता है। प्रिंसेस अलीना और सोफ़िया सारा दिन मेरे साथ बैठी रहती हैं तथा हम ज़िन्दा पतियों की विधवायें फाहे बनाती हुई बहुत प्यारी बातचीत करती रहती हैं। बस, आपकी ही कमी खटकती है, प्यारी सहेली..." आदि, आदि।

प्रिंसेस मरीया मुख्य रूप से तो इसलिये इस युद्ध का महत्त्व नहीं समझ पाती थी कि बुज़ुर्ग प्रिंस इसकी कभी चर्चा नहीं करते थे, इसके अस्तित्व की अवहेलना करते थे और खाने की मेज़ पर जब डेसाल इसका ज़िक्र करता तो प्रिंस उसपर हंसते। प्रिंस का अन्दाज़ इतना शान्त और विश्वासपूर्ण होता कि प्रिंसेस मरीया सोच-विचार किये बिना ही उनपर यक़ीन कर लेती।

जुलाई के पूरे महीने में बुज़ुर्ग प्रिंस बहुत ही सक्रिय और सजीव तक भी रहे। उन्होंने एक नया बाग़ लगवाना और घरेलू नौकरों के लिये एक नया मकान भी बनवाना शुरू कर दिया। प्रिंसेस मरीया को जिस एक ही बात से परेशानी होती, वह यह थी कि बुज़ुर्ग पिता बहुत कम सोते थे और अपने कमरे में सोने के बजाय हर दिन अपने सोने की जगह बदलते रहते थे। कभी वह गैलरी में अपनी सफ़री खाट बिछाने का आदेश देते, कभी ड्राइंगरूम में सोफ़े पर ही सो जाते या फिर कपड़े बदले बिना लम्बी टेकवाली आरामकुर्सी पर ही ऊंघते रहते, जबकि कुमारी बुर्येन की जगह पेत्रूशा नाम का छोकरा उन्हें कुछ पढ़कर सुनाता रहता और कभी वह भोजनालय में ही सो जाते।

१ अगस्त को प्रिंस अन्द्रेई का दूसरा पत्र आया। यहां से जाने के

कुछ ही दिनों बाद प्रिंस अन्द्रेई द्वारा भेजे गये पहले पत्र में उसने बड़ी नम्रता दिखाते हुए पिता से यह अनुरोध किया था कि उसने जो कुछ कहा था, उसके लिये वह उसे क्षमा कर दें और उसपर अपनी कृपादृष्टि बनाये रखें। बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटे के इस पत्र का स्नेहपूर्वक उत्तर दिया था और इस पत्र के बाद फ़्रांसीसी औरत यानी कुमारी बुर्येन को अपने से दूर हटा दिया था। प्रिंस अन्द्रेई ने दूसरा पत्र बेलोरूस के उत्तर-पूरब में अवस्थित वीतेब्स्क नगर पर फ़्रांसीसियों का क़ब्ज़ा हो जाने के बाद लिखा था, इसमें युद्ध का संक्षिप्त वर्णन था, स्पष्टीकरण के लिये छोटा-सा नक़्शा भी बना दिया गया था और इस बारे में भी विचार प्रकट किये गये थे कि आगे चलकर वह क्या करवट ले सकता है। इसी पत्र में प्रिंस अन्द्रेई ने पिता को यह भी लिखा था कि उनके लिये अब युद्ध के घटनास्थल के इतने निकट और शत्रु सेना के सीधे अभियान-मार्ग पर लीसिये गोरि में रहना ठीक नहीं था तथा यह सलाह दी थी कि वह मास्को चले जायें।

भोजन के वक़्त डेसाल के यह कहने पर कि वीतेब्स्क पर फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े की अफ़वाह सुनने को मिली है, बुज़ुर्ग प्रिंस को प्रिंस अन्द्रेई के पत्र का ध्यान आया।

"आज प्रिंस अन्द्रेई का पत्र मिला है," उन्होंने प्रिंसेस मरीया से कहा, "तुमने नहीं पढ़ा?"

"नहीं, mon père,*" प्रिंसेस ने घबराकर उत्तर दिया। प्रिंसेस को तो यह भी मालूम नहीं था कि भाई का पत्र आया है। इसलिये वह उसे पढ़ ही कैसे सकती थी।

"उसने इस युद्ध के बारे में लिखा है," प्रिंस ने उसी तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा जिस मुस्कान को होंठों पर लाकर वह इस युद्ध की चर्चा करने के आदी हो गये थे।

"यह पत्र तो बहुत दिलचस्प होना चाहिये," डेसाल ने कहा। "प्रिंस अन्द्रेई को तो यह मालूम हो सकता है..."

"ओह, बहुत ही दिलचस्प होगा!" कुमारी बुर्येन कह उठी।

"जाइये, जाकर वह पत्र मुझे ला दीजिये," बुज़ुर्ग प्रिंस ने कुमारी बुर्येन से कहा। "आपको तो मालूम ही है कि वह कहां है? छोटी मेज़ पर स्याही-चूस के नीचे।"

* पिता जी। (फ़्रांसीसी)

कुमारी बुर्येन ख़ुशी से उछलकर खड़ी हो गयी।

"ओह, नहीं," बुज़ुर्ग त्योरी चढ़ाकर चिल्लाये। "मिख़ाईल इवानोविच, तुम जाकर ले आओ!"

मिख़ाईल इवानोविच उठा और प्रिंस के कमरे की तरफ़ चल दिया। किन्तु उसके बाहर जाते ही बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेचैनी से इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई, नेपकिन फेंक दिया और ख़ुद चल दिये।

"कुछ भी तो करना नहीं जानते, सब गड़बड़ करते रहते हैं।"

बुज़ुर्ग प्रिंस जब तक लौटे नहीं, प्रिंसेस मरीया, डेसाल, कुमारी बुर्येन और नन्हा निकोलाई भी चुपचाप एक-दूसरे की ओर देखते रहे। मिख़ाईल इवानोविच को साथ लिये हुए बुज़ुर्ग प्रिंस ख़त और नक़्शा लेकर तेज़ क़दमों से वापस लौटे तथा खाने की मेज़ पर किसी को भी पढ़ने के लिये ख़त न देकर उन्होंने उसे अपने पास रख लिया।

ड्राइंगरूम में जाने पर उन्होंने प्रिंसेस मरीया को यह पत्र दे दिया तथा नये निर्माण का नक़्शा अपने सामने फैलाकर तथा उसपर अपनी नज़र टिकाकर उन्होंने प्रिंसेस को ऊंचे-ऊंचे पत्र पढ़ने का आदेश दिया। पत्र पढ़ने के बाद प्रिंसेस मरीया ने प्रश्नसूचक दृष्टि से पिता की ओर देखा। बुज़ुर्ग प्रिंस सम्भवतः अपने विचारों में गहरे डूबे हुए निर्माण के नक़्शे को बहुत ध्यान से देख रहे थे।

"इस बारे में आपका क्या ख़्याल है, प्रिंस?" डेसाल ने पूछने की हिम्मत की।

"मेरा? मेरा ख़्याल? .." निर्माण के नक़्शे से नज़र न हटाते हुए प्रिंस ने मानो कटुतापूर्वक चौंककर कहा।

"बहुत सम्भव है कि युद्ध का घटनास्थल हमारे इतना निकट आयेगा ..."

"हा-हा-हा! युद्ध का घटनास्थल!" बुज़ुर्ग ने मज़ाक़ उड़ाया। "मैं कहता रहा हूं और अब भी कहता हूं कि पोलैंड ही युद्ध का घटना-स्थल है और दुश्मन कभी भी नाइमन नदी से आगे नहीं आ पायेगा।"

डेसाल ने हैरानी से प्रिंस की तरफ़ देखा जो नाइमन नदी की बात कर रहे थे, जबकि दुश्मन तो द्नेप्र नदी के पास पहुंच चुका था। किन्तु प्रिंसेस मरीया ने, जो यह भूल गयी थी कि नाइमन नदी कहां पर है, यही सोचा कि उसके पिता ठीक कह रहे हैं।

"हिम के पिघलने पर वे लोग पोलैंड के दलदलों में डूब जायेंगे।

सिर्फ़ वही यह नहीं देख पाते," बुज़ुर्ग प्रिंस सम्भवतः १८०७ के युद्ध के बारे में सोचते हुए, जो उन्हें कुछ ही समय पहले की घटना प्रतीत हो रहा था, कहते गये। "बेनिगसेन को प्रशा में पहले प्रवेश करना चाहिये था, तब बिल्कुल दूसरी ही बात होती..."

"किन्तु, प्रिंस," डेसाल ने झिझकते हुए आपत्ति की, "पत्र में तो वीतेब्स्क की चर्चा की गयी है..."

"अरे हां, पत्र में? हां..." प्रिंस ने बुरा-सा मानते हुए कहा। "हां... हां..." उनके चेहरे पर अचानक उदासी का भाव आ गया। वह चुप हो गये। "हां, उसने लिखा है कि किसी नदी के पास फ़्रांसीसियों को पीट दिया गया है। क्या नाम है उस नदी का?"

डेसाल ने नज़रें झुका लीं।

"प्रिंस अन्द्रेई ने तो ऐसा कुछ भी नहीं लिखा है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"नहीं लिखा है? मैंने अपने मन से तो यह बात नहीं बनायी है।" सभी देर तक ख़ामोश रहे।

"हां... हां... तो मिख़ाईल इवानोविच," बुज़ुर्ग प्रिंस एकाएक अपना सिर ऊपर उठाकर तथा निर्माण के नक़्शे की तरफ़ इशारा करते हुए बोले, "यह बताओ कि तुम इसे कैसे बदलना चाहते हो..."

मिख़ाईल इवानोविच नक़्शे के पास गया और प्रिंस उसके साथ नवनिर्माण के नक़्शे की चर्चा करके तथा प्रिंसेस मरीया और डेसाल की तरफ़ ग़ुस्से से देखकर अपने कमरे में चले गये।

प्रिंसेस मरीया ने पिता पर जमी हुई डेसाल की परेशान और हैरान नज़र तथा उसकी ख़ामोशी की तरफ़ ध्यान दिया और वह इस बात से चकित हुई कि उसके पिता ड्राइंगरूम की मेज़ पर बेटे का ख़त भूल गये हैं। किन्तु वह न केवल डेसाल से इसकी चर्चा करते तथा उसकी परेशानी तथा ख़ामोशी का कारण पूछते हुए घबराती थी, बल्कि इसके बारे में सोचने से भी डरती थी।

शाम को बुज़ुर्ग प्रिंस ने प्रिंस अन्द्रेई का पत्र लाने के लिये, जो ड्राइंगरूम में रह गया था, मिख़ाईल इवानोविच को प्रिंसेस मरीया के पास भेजा। प्रिंसेस ने उसे पत्र दे दिया और बेशक उसे ऐसा करना अच्छा नहीं लगा, फिर भी उसने मिख़ाईल इवानोविच से यह पूछ ही लिया कि उसके पिता क्या कर रहे हैं।

"लगातार कुछ करते ही रहते हैं," मिख़ाईल इवानोविच ने आदर और व्यंग्य मिश्रित मुस्कान के साथ जवाब दिया जिससे प्रिंसेस मरीया के चेहरे का रंग उड़ गया। "नयी इमारत के बारे में बहुत चिन्तित हैं। कुछ देर तक पढ़ते रहे और अब," उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, "अलमारी के पास बैठे हैं, शायद वसीयत के मामले में व्यस्त हो गये हैं। (पिछले कुछ अरसे से बुज़ुर्ग प्रिंस उन काग़ज़ों में बहुत दिलचस्पी लेने लगे थे जिन्हें मौत के बाद छोड़नेवाले थे और जिन्हें अपना वसीयतनामा कहते थे।)

"अल्पातिच को स्मोलेन्स्क तो भेज रहे हैं न?" प्रिंसेस मरीया ने पूछा।

"ज़रूर भेज रहे हैं, वह तो बहुत देर से इन्तज़ार कर रहा है।"

३

मिख़ाईल इवानोविच ख़त लेकर जब बुज़ुर्ग प्रिंस के कमरे में लौटा तो बुज़ुर्ग प्रिंस आंखों को रोशनी से बचाने के लिये शेडवाली ऐनक चढ़ाये और शेडवाला शमादान सामने रखे हुए खुली अलमारी के पास बैठे थे, उनके फैले हुए हाथ में काग़ज़ थे और वह कुछ हद तक नाटकीय-सी मुद्रा में उन काग़ज़ों को पढ़ रहे थे (जिन्हें वह टिप्पणियां कहते थे) और जिन्हें उनकी मृत्यु के बाद सम्राट को दे दिया जाना चाहिये था।

मिख़ाईल इवानोविच जब कमरे में दाख़िल हुआ तो बुज़ुर्ग प्रिंस की आंखों में उस समय की याद आने के कारण जब उन्होंने ये टिप्पणियां लिखी थीं, आंसू उमड़ आये थे। उन्होंने मिख़ाईल इवानोविच के हाथ से ख़त लेकर उसे जेब में रख लिया, पाण्डुलिपि के काग़ज़ों को अलमारी में वापस रख दिया और काफ़ी देर से इन्तज़ार कर रहे अल्पातिच को बुलवा भेजा।

अल्पातिच को स्मोलेन्स्क में जो कुछ करना था, बुज़ुर्ग प्रिंस ने एक काग़ज़ पर वह सब लिख रखा था। वह दरवाज़े के पास खड़े अल्पातिच के क़रीब से इधर-उधर आते-जाते हुए उसे हिदायतें देने लगे।

"सबसे पहले तो यह कि इस नमूने के मुताबिक़ सुनहरे हाशिये-वाले ख़त लिखने के काग़ज़ों के सोलह दस्ते लाने हैं... नमूना इसलिये दिया जा रहा है कि काग़ज़ ज़रूर ऐसे ही हों, इसके बाद मिख़ाईल इवानोविच के नोट के मुताबिक़ वार्निश और मुहर लगाने की लाख।"

उन्होंने कमरे में इधर-उधर आते-जाते हुए सूची पर नज़र डाली।

"इसके बाद दस्तावेज़ के बारे में गवर्नर को ख़ुद जाकर ख़त देना।"

इसके बाद नयी इमारत के लिये दरवाज़े की कुंडियां लाने को कहा गया जिन्हें ज़रूर ही ख़ुद बुज़ुर्ग प्रिंस द्वारा सोचे गये नमूने के अनुरूप होना चाहिये था। इसके बाद वसीयतनामा रखने के लिये दफ़्ती के एक डिब्बे का आर्डर देने को कहा गया।

अल्पातिच को आदेश-अनुदेश देने का यह काम दो घण्टे से अधिक समय तक चलता रहा। प्रिंस उसे अभी भी जाने नहीं दे रहे थे। वह बैठ गये, सोचने लगे और आंखें मूंदकर ऊंघने लगे। अल्पातिच हिला-डुला।

"तो अब जाओ, जाओ। अगर किसी और चीज़ की ज़रूरत होगी तो मैं तुम्हें सूचित करवा दूंगा।"

अल्पातिच कमरे से बाहर चला गया। प्रिंस फिर से अलमारी के पास लौटे, उन्होंने उसमें झांका, हाथ से अपने काग़ज़ों को छुआ, उसे फिर से ताला लगाया और मेज़ के सामने बैठकर गवर्नर को पत्र लिखने लगे।

जब वह पत्र को मुहरबन्द करके उठे तो काफ़ी देर हो चुकी थी। वह सोना चाहते थे, मगर जानते थे कि सो नहीं पायेंगे और बिस्तर पर ही उनके दिमाग़ में सबसे बुरे ख़्याल आते हैं। उन्होंने तीख़ोन का पुकारा और उसे साथ लेकर यह फ़ैसला करने के लिये कि आज रात को उनका बिस्तर कहां लगाया जाये, कमरों का चक्कर काटने लगे। वह हर जगह का जायज़ा लेते हुए कमरों में जाते रहे।

बुज़ुर्ग प्रिंस को कोई भी जगह अच्छी प्रतीत नहीं हुई, किन्तु अपने कमरे का सोफ़ा, जिसके वह आदी थे, सबसे बुरा लगा। इस सोफ़े से उन्हें सम्भवतः उन विषादजनक विचारों के कारण डर लगता था जो इसपर लेटे रहने के समय उनके दिमाग़ में आते रहे थे। उन्हें कहीं भी अच्छा नहीं लगा, फिर भी पियानो के पीछे बैठक की छोटी-

सी जगह उन्हें सबसे ज़्यादा पसन्द आयी – वह अब तक यहां कभी नहीं सोये थे।

एक नौकर के साथ तीख़ोन पलंग यहां लाया और उसे बिछाने लगा।

"ऐसे नहीं, ऐसे नहीं!" बुज़ुर्ग प्रिंस चिल्ला उठे और उन्होंने ख़ुद पलंग को कोने से थोड़ा आगे किया तथा फिर पीछे हटा दिया।

"आख़िर तो सारे काम निपटा दिये, अब आराम करूंगा," प्रिंस ने सोचा और तीख़ोन से कहा कि वह उनके कपड़े बदलवा दे।

कोट और पैंट उतारते समय कष्ट अनुभव करते और इसलिये माथे पर बल डालते हुए प्रिंस ने कपड़े बदले, धम से पलंग पर बैठ गये और अपनी पीली तथा सूखी-सूखी टांगों को तिरस्कारपूर्वक देखते हुए मानो कुछ सोचने लगे। वास्तव में वह सोच नहीं रहे थे, बल्कि इन टांगों को ऊपर उठाने और पीछे हटकर पलंग पर लेटने की तकलीफ़ करने के क्षण को कुछ देर तक टाल रहे थे। "ओह, कितनी मुसीबत है यह सब! ओह, काश यह झंझट जल्द ही ख़त्म हो जाये और **आप** मुझे मुक्त कर दें!" वह सोच रहे थे। होंठों को भींचकर उन्होंने बीसवीं बार यत्न किया और बिस्तर पर लेट गये। किन्तु वह लेटे ही थे कि उनके नीचे अचानक उनका सारा पलंग मानो हांफता और हिचकोले खाता हुआ एक लयबद्ध ढंग से आगे-पीछे हिलने लगा। उनके साथ लगभग हर रात को ऐसा ही होता था। उन्होंने बन्द होती हुई अपनी आंखें खोल लीं।

"ज़रा चैन नहीं लेने देते, कमबख़्त कहीं के!" वह ग़ुस्से से किसी पर बड़बड़ाये। "हां, हां, कोई एक और महत्त्वपूर्ण बात भी थी, कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात जिसके बारे में मैं रात के वक़्त बिस्तर पर सोचना चाहता था। कुंडियां? नहीं, इनके बारे में तो मैंने कह दिया। नहीं, कुछ ऐसा, कुछ ऐसा था जिसकी ड्राइंगरूम में चर्चा होती रही थी। प्रिंसेस मरीया कोई बेतुकी बात कह रही थी। डेसाल – वह उल्लू – वह कुछ कह रहा था। शायद मेरी जेब में कुछ है – याद नहीं आ रहा।"

"तीख़ोन! भोजन के वक़्त किस चीज़ की चर्चा होती रही थी?"

"प्रिंस अन्द्रेई की, मिख़ाईल की..."

"चुप जाओ, चुप जाओ।" प्रिंस ने मेज़ पर ज़ोर से हाथ मारा।

"हां! मुझे मालूम है कि प्रिंस अन्द्रेई का ख़त आया है। प्रिंसेस मरीया ने उसे पढ़ा था। डेसाल ने वीतेब्स्क के बारे में कुछ कहा था। मैं उस ख़त को अब पढ़ूंगा।"

बुज़ुर्ग प्रिंस ने जेब में से ख़त लाने और उस छोटी-सी मेज़ को पलंग के नज़दीक कर देने का आदेश दिया जिसपर लेमोनेड और शमादान रखा था। वह चश्मा चढ़ाकर ख़त को पढ़ने लगे। केवल अभी, रात की ख़ामोशी और हरे शेड से छननेवाली हल्की रोशनी में पत्र को पढ़ने पर ही क्षण भर को उसका महत्त्व उनकी समझ में आया।

"फ़्रांसीसी वीतेब्स्क में हैं, चार दिन के कूच में ही वे स्मोलेन्स्क पहुंच सकते हैं। शायद वे वहां पहुंच भी गये हों।"

"तीख़ोन!" तीख़ोन उछलकर खड़ा हुआ। "नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं!" प्रिंस चिल्लाये।

उन्होंने ख़त शमादान के नीचे छिपा दिया और आंखें मूंद लीं। उनके मानस-पट पर डेन्यूब नदी, धूप नहायी दोपहर, सरकंडे और रूसी सेना-शिविर उभरा। उन्होंने अपनी कल्पना में देखा कि कैसे वह प्रफुल्ल, ख़ुशमिज़ाज तथा चेहरे पर एक भी झुर्री के बिना लाल-लाल गालोंवाले जवान जनरल के रूप में पोत्योमकिन* के रंग-बिरंगे तम्बू में प्रवेश करते हैं और सम्राज्ञी के कृपापात्र के विरुद्ध मन को झुलसनेवाली ईर्ष्या की आग उन्हें अब भी वैसे ही अत्यधिक बेचैन कर देती है। उन्हें वे सभी शब्द याद हो आते हैं जो उस वक़्त, पोत्योमकिन के साथ पहली भेंट के समय कहे गये थे। इसके बाद उन्हें स्मरण हो आता है पीले, थलथल चेहरेवाली, नाटी और मोटी महिला का – सम्राज्ञी-माता का – उनकी मुस्कान, उनके शब्दों का जो सम्राज्ञी ने पहली बार उनका स्नेहपूर्ण स्वागत करते हुए कहे थे, तथा ध्यान हो आता है शव-गाड़ी पर उनके चेहरे और उस झड़प का जो सम्राज्ञी के ताबूत के पास जाकर उनका हाथ चूमने के अधिकार के बारे में ज़ूबोव** के साथ हुई थी।

---

* ग्रिगोरी पोत्योमकिन (१७३९–१७९१) – प्रमुख रूसी राजकीय और सेना-कार्यकर्त्ता जो सम्राज्ञी येकतेरीना द्वितीया का कृपापात्र था। – सं०

** प्लातोन ज़ूबोव (१७६७–१८२२) – रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता, सम्राज्ञी येकतेरीना द्वितीया का अन्तिम कृपापात्र। – सं०

"ओह, कितना अच्छा हो कि मैं जल्दी से, बहुत जल्दी से उस वक़्त की ओर लौट जाऊं और वर्तमान का सब कुछ शीघ्रातिशीघ्र समाप्त हो जाये, कि ये सब मुझे चैन लेने दें!"

४

बुज़ुर्ग प्रिंस निकोलाई बोल्कोन्स्की की लीसिये गोरि जागीर स्मोलेन्स्क से साठ वेर्स्ता* और मास्को को जानेवाली मुख्य सड़क से तीन वेर्स्ता दूर थी।

उसी शाम को, जब बुज़ुर्ग प्रिंस ने अल्पातिच को आदेश-अनुदेश दिये, डेसाल ने प्रिंसेस मरीया से मिलने की अनुमति ली और प्रिंसेस से कहा कि चूंकि बुज़ुर्ग प्रिंस पूरी तरह से स्वस्थ नहीं थे और अपनी सुरक्षा के लिये कोई क़दम नहीं उठा रहे थे, जबकि प्रिंस अन्द्रेई के पत्र से स्पष्ट था कि लीसिये गोरि में रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं था, इसलिये वह बहुत आदरपूर्वक उसे यह सलाह देता है कि वह ख़ुद गवर्नर के नाम एक पत्र लिखकर उससे यह बताने की प्रार्थना करे कि वास्तविक स्थिति क्या है, लीसिये गोरि के लिये कितना ख़तरा है और अल्पातिच के हाथ यह पत्र स्मोलेन्स्क भेज दे। प्रिंसेस की ओर से डेसाल ने गवर्नर के नाम यह पत्र लिख दिया, प्रिंसेस ने हस्ताक्षर कर दिये, यह पत्र इस आदेश के साथ अल्पातिच को दे दिया गया कि वह उसे गवर्नर तक पहुंचा दे और किसी तरह का ख़तरा होने पर जल्दी से जल्दी वापस आ जाये।

सभी आदेश पाने के बाद अल्पातिच सफ़ेद समूरी टोपी पहने (जो बुज़ुर्ग प्रिंस द्वारा उपहारस्वरूप दी गयी थी) बुज़ुर्ग प्रिंस की भांति हाथ में छड़ी लिये चमड़े से मढ़ी उस टमटम पर सवार होने के लिये, जिसमें लालीमायल तीन घोड़े जुते हुए थे, अपने परिवार के साथ घर से बाहर आया।

बड़ी घण्टी पर कपड़ा बांधकर तथा छोटी घण्टियों में काग़ज़ ठूसकर उनकी आवाज़ दबा दी गयी थी। बुज़ुर्ग प्रिंस किसी को भी घण्टियों की आवाज़ के साथ लीसिये गोरि में से घोड़ा-गाड़ी ले जाने

* वेर्स्ता – पुरानी रूसी माप, एक किलोमीटर से कुछ अधिक। – अनु०

की इजाज़त नहीं देते थे। किन्तु अल्पातिच को लम्बी यात्रा के समय छोटी-बड़ी घण्टियों की आवाज़ सुनते जाना अच्छा लगता था। अल्पातिच के पिछलगे – बड़ा मुंशी, छोटा मुंशी, छोटी-बड़ी बावर्चिनें, दो बुढ़ियां, छोकरा नौकर, कोचवान और अन्य नौकर-चाकर उसे विदा कर रहे थे।

बेटी ने उसकी सीट पर तथा पीठ के पीछे रोयों से भरे हुए छींट-वाले छोटे-छोटे तकिये रख दिये। उसकी बूढ़ी साली ने चुपके से एक पोटली टमटम में छिपा दी। एक कोचवान ने सहारा देकर उसे टमटम में बिठाया।

"ओह, ओह, यह औरतों के झंझट! औरतें, औरतें!" अल्पातिच ने हांफते और बिल्कुल बुज़ुर्ग प्रिंस की तरह जल्दी-जल्दी बोलते हुए कहा तथा टमटम में बैठ गया। बड़े मुंशी को काम के बारे में आख़िरी हिदायतें देने के बाद और इस बार बुज़ुर्ग प्रिंस की नक़ल न करते हुए अल्पातिच ने गंजे सिर पर से टोपी उतारी और तीन बार अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

"सुनिये, अगर कुछ ऐसा-वैसा हो... तो आप लौट आइयेगा, याकोव अल्पातिच। ईसा मसीह की ख़ातिर हमपर तरस खाइये," उसकी बीवी ने जंग और दुश्मन के बारे में अफ़वाहों की तरफ़ इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा।

"औरतें, औरतें, औरतों के झंझट," अल्पातिच ने मन ही मन कहा और अपने इर्द-गिर्द कहीं तो कूटू की पीली होती, कहीं जई की घनी और अभी हरी फ़सलों तथा कहीं अभी काली पड़ी ज़मीन पर, जहां दूसरी बार हल चलाया ही जा रहा था, नज़र घुमाते हुए टमटम को आगे बढ़ा ले चला। अल्पातिच इस वर्ष की बहुत ही बढ़िया अनाज की फ़सल पर मुग्ध होता, कूटू के खेतों पर दृष्टि डालता, जहां किसी-किसी जगह कटाई भी होने लगी थी, तथा बुवाई और कटाई के बारे में अपने अनुमान लगाता एवं यह सोचता हुआ टमटम को आगे बढ़ाता जाता था कि बुज़ुर्ग प्रिंस का कोई आदेश-अनुदेश भूल तो नहीं गया था।

घोड़ों को खिलाने-पिलाने और कुछ आराम देने के लिये रास्ते में दो बार रुककर अल्पातिच ४ अगस्त की शाम को स्मोलेन्स्क पहुंच गया।

अल्पातिच के रास्ते में फ़ौजी घोड़ा-गाड़ियां और सेनायें आती रहीं और वह उन्हें पीछे छोड़ता गया। स्मोलेन्स्क के नज़दीक पहुंचने पर उसे कहीं दूर से गोलियां चलने की आवाज़ सुनायी दी, किन्तु इससे उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसके मन पर जिस चीज़ का बहुत बुरा असर पड़ा, वह यह थी कि स्मोलेन्स्क के छोर पर किन्हीं फ़ौजियों ने जई के एक बहुत बढ़िया खेत में खेमा गाड़ रखा था और वे सम्भवतः घोड़ों के चारे के लिये जई काट रहे थे। इस दृश्य से अल्पातिच हैरान हुए बिना न रह सका, मगर वह अपने काम के बारे में सोचता हुआ इसे जल्द ही भूल गया।

तीस से अधिक सालों के दौरान अल्पातिच के जीवन की सभी रुचियां प्रिंस बोल्कोन्स्की की इच्छाओं तक ही सीमित रही थीं और वह इस घेरे से कभी बाहर नहीं निकला था। प्रिंस के आदेशों से सम्बन्ध न रखनेवाली किसी भी चीज़ में न केवल उसकी दिलचस्पी ही नहीं थी, बल्कि उसके लिये उसका अस्तित्व ही नहीं था।

४ अगस्त को स्मोलेन्स्क पहुंचने पर अल्पातिच द्नेप्र नदी के पार उपनगरीय गाचेन्स्क बस्ती में फ़ेरापोन्तोव की उसी सराय में ठहरा जहां वह पिछले तीस साल से ठहरता रहा था। बारह वर्ष पहले फ़ेरापोन्तोव ने अल्पातिच की मदद से प्रिंस बोल्कोन्स्की से एक जंगल खरीद लिया था, व्यापार करने लगा था और अब इसी ज़िले में उसका अपना घर था, सराय और आटे की दुकान थी। फ़ेरापोन्तोव मोटा, काले बालों, लाल चेहरे, मोटे-मोटे होंठों तथा गुमटे जैसी मोटी नाक, काली, त्योरी चढ़ी भौंहों के ऊपर इसी तरह के गुमटों तथा मोटे पेटवाला मर्द था।

छींट की क़मीज़ पर वास्कट पहने फ़ेरापोन्तोव सड़क की ओर खुलनेवाली दुकान के पास खड़ा था। अल्पातिच को देखकर वह उसके पास गया।

"तुम्हारा स्वागत करता हूं, याकोव अल्पातिच। लोग-बाग शहर से जा रहे हैं और तुम शहर में आये हो," फ़ेरापोन्तोव ने कहा।

"शहर से जा रहे हैं, भला क्यों?" अल्पातिच ने पूछा।

"मैं यही तो कहता हूं – लोग-बाग मूर्ख हैं। फ़्रांसीसी से डरते हैं।"

"ये सब औरतों की बातें हैं, औरतों की!" अल्पातिच कह उठा।

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं, याकोव अल्पातिच। मैं उनसे कहता हूं कि उसे यहां न आने देने का हुक्म जारी किया गया है – इसका मतलब है कि नहीं आने दिया जायेगा। और कोचवान घोड़ा-गाड़ी के लिये तीन रूबल 'किराया ले रहे हैं – कोई धर्म-ईमान नहीं रहा उनका!"

याकोव अल्पातिच यह सब कुछ ध्यान से नहीं सुन रहा था। उसने चाय के लिये समोवार और घोड़ों के लिये सूखी घास लाने को कहा तथा चाय पीकर बिस्तर पर चला गया।

सराय के पास से रात भर फ़ौजें गुज़रती रहीं। अगले दिन अल्पातिच ने अपनी वह ख़ास जाकेट पहनी, जिसे वह केवल शहर में ही पहना था और अपने काम-धन्धे करने चल दिया। धूप नहायी सुबह थी और आठ बजे से ही गर्मी हो गयी थी। अल्पातिच ने सोचा कि फ़सल कटाई के लिये बहुत ही बढ़िया दिन है। नगर के बाहर से सुबह से ही गोलियां चलने की आवाज़ आ रही थी।

आठ बजे से गोलियों की ठांय ठांय में तोपों की धांय-धांय भी शामिल हो गयी। सड़कों पर बहुत-से लोग उतावली में इधर-उधर आ-जा रहे थे, बहुत बड़ी संख्या में फ़ौजी थे, किन्तु हर दिन की तरह ही किराये की बग्घियां चल रही थीं, दुकानदार अपनी दुकानों के पास खड़े थे और गिरजाघरों में प्रार्थनायें हो रही थीं। अल्पातिच ने वे सभी चीज़ें ख़रीद लीं जो उसे ख़रीदनी थीं, सरकारी दफ़्तरों में अपने काम निपटाये और गवर्नर के यहां गया। सरकारी दफ़्तरों में, दुकानों पर और डाकख़ाने में लोग सेनाओं और शत्रु की ही चर्चा कर रहे थे जिसने नगर पर हमला भी कर दिया था। सभी एक दूसरे से यह पूछते थे कि वे क्या करें और सभी एक-दूसरे को तसल्ली देने की कोशिश करते थे।

गवर्नर के घर के सामने अल्पातिच को बहुत बड़ी संख्या में लोग, कज़्ज़ाक सैनिक और गवर्नर की सफ़री बग़्घी दिखाई दी। दरवाज़े के पास उसकी दो कुलीनों से भेंट हो गयी जिनमें से एक को वह जानता था। उसका यह परिचित कुलीन, जो भूतपूर्व थानेदार था, बड़े जोश से कह रहा था:

"यह तो कोई हंसी-मज़ाक़ नहीं है। अगर कोई अकेला है तो फिर भी ख़ैरियत है। अकेले को तो सिर्फ़ अपनी ही जान का ख़तरा

हो सकता है, लेकिन अगर परिवार के तेरह आदमी हों और सारा सामान भी, तब... मामले को हम सब की पूरी बरबादी की हालत तक पहुंचा दिया है, इसके बाद क्या क़ीमत रह जाती है हमारे इन बड़े अफ़सरों की?.. ओह, इन बदमाशों को फांसी के तख़्ते पर लटका दिया जाना चाहिये..."

"बस, बस, अब चुप हो जाओ," दूसरे ने कहा।

"मेरी जूती परवाह करती है किसी की, बेशक गवर्नर भी सुने! आख़िर हम कोई कुत्ते तो नहीं हैं," भूतपूर्व थानेदार बोला और मुड़कर देखने पर उसे अल्पातिच दिखाई दिया।

"अरे, याकोव अल्पातिच, तुम्हारा यहां कैसे आना हुआ?"

"अपने स्वामी, अपने महामहिम के आदेश से श्रीमान गवर्नर के पास आया हूं," अल्पातिच ने बड़े गर्व से सिर ऊंचा करते और दिल पर हाथ रखते हुए, जैसाकि बुज़ुर्ग प्रिंस की चर्चा करते समय वह हमेशा करता था, उत्तर दिया... "मेरे हुज़ूर ने वास्तविक स्थिति मालूम करके आने का आदेश दिया है," उसने कहा।

"तो तुम भी जान लो वास्तविक स्थिति," ज़मींदार चिल्ला उठा, "ऐसा बुरा हाल कर दिया है कि न घोड़ा-गाड़ियां मिलती हैं, न कुछ और!.. यह सुन रहे हो?" उसने उस तरफ़ इशारा करते हुए कहा जिधर से गोलियां चलने की आवाज़ सुनायी दे रही थी।

"मामले को हम सब की पूरी बरबादी की हालत तक पहुंचा दिया है... बदमाश कहीं के!" उसने फिर से अपने वही शब्द कहे और ओसारे से नीचे उतर गया।

अल्पातिच ने सिर हिलाया और सीढ़ियां चढ़ने लगा। गवर्नर का प्रतीक्षा-कक्ष व्यापारियों, नारियों, कर्मचारियों से भरा हुआ था और वे चुपचाप एक-दूसरे की तरफ़ देख रहे थे। इस कक्ष का दरवाज़ा खुला, सभी अपनी जगहों से उठे और एकसाथ ही आगे को बढ़े। एक क्लर्क भागता हुआ दरवाज़े से बाहर आया, उसने एक व्यापारी से कुछ बातचीत की, गले में पदक लटकाये हुए एक मोटे-से कर्मचारी को अपने पीछे-पीछे आने को पुकारा और स्पष्टतः अपनी ओर उठी हुई सभी नज़रों तथा लोगों के प्रश्नों से बचने के लिये फिर से दरवाज़े के पीछे ग़ायब हो गया। अल्पातिच थोड़ा आगे बढ़ गया और क्लर्क के पुनः बाहर आने पर उसने फ़्रॉक-कोट के नीचे, जिसके सभी बटन

बन्द थे, हाथ रखकर उसकी ओर दो पत्र बढ़ाते हुए उसे सम्बोधित किया।

"बड़े जनरल प्रिंस बोल्कोन्स्की की ओर से जनाब बैरन आशु के नाम," अल्पातिच ने ऐसे गम्भीर तथा महत्त्वपूर्ण ढंग से कहा कि क्लर्क ने उसकी तरफ़ देखा और पत्र ले लिये। कुछ क्षण के बाद गवर्नर ने अल्पातिच को अपने पास बुलवाया और जल्दी-जल्दी यह कहा:

"प्रिंस और प्रिंसेस को यह बताना कि मुझे कुछ भी मालूम नहीं। मैं उच्चतम आदेश का पालन कर रहा हूं—यह रहा वह आदेश..."

उसने अल्पातिच को एक काग़ज़ पकड़ा दिया।

"वैसे, चूंकि प्रिंस की तबीयत अच्छी नहीं है, इसलिये मैं उन्हें यही सलाह देता हूं कि वह मास्को चले जायें। मैं ख़ुद भी अभी मास्को जा रहा हूं। उनसे कहना..." किन्तु गवर्नर अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। धूल-मिट्टी से लथपथ और पसीने से तर एक फ़ौजी अफ़सर भागता हुआ अन्दर आया और फ़्रांसीसी में कुछ बोलने लगा। गवर्नर के चेहरे पर बेहद परेशानी झलक उठी।

"तुम जाओ," गवर्नर ने अल्पातिच की ओर सिर झुकाते हुए कहा और फ़ौजी अफ़सर से कुछ पूछ-ताछ करने लगा। अल्पातिच जब गवर्नर के कक्ष से बाहर निकला तो लोगों ने बड़ी उत्सुक, भयभीत और असहाय नज़रों से उसकी तरफ़ देखा। अब नज़दीक ही और लगातार ऊंची होती जा रही गोलाबारी को बरबस सुनते हुए अल्पातिच तेज़ी से सराय की ओर बढ़ चला। गवर्नर ने अल्पातिच को जो काग़ज़ दिया था, उसमें यह लिखा था:

"आपको यक़ीन दिलाता हूं कि स्मोलेन्स्क के लिये अभी ज़रा-सा भी ख़तरा नहीं है और इस बात की भी बहुत कम सम्भावना है कि उसके लिये ऐसा ख़तरा पैदा हो। एक तरफ़ से मैं और दूसरी तरफ़ से प्रिंस बग्रातिओन स्मोलेन्स्क से पहले अपनी सेनाओं के मिलाप के लिये बढ़ रहे हैं और २२ तारीख़ को हमारी ये दोनों सेनायें मिल जायेंगी तथा हमारी दोनों सेनायें अपनी संयुक्त शक्ति से तब तक आपके अधीन उस गुबेर्निया यानी प्रान्त के अपने हमवतनों की रक्षा करेंगी जब तक कि उनके प्रयासों के फलस्वरूप शत्रु को हमारी मातृभूमि से खदेड़ नहीं दिया जायेगा या जब तक हमारी सेनाओं की पांतों में एक भी वीर सैनिक ज़िन्दा बाक़ी रह जायेगा। अतः आपको स्मोलेन्स्क के

निवासियों को आश्वस्त करने का पूरा अधिकार है, क्योंकि ऐसी दो वीर सेनायें जिनकी रक्षा कर रही हों, वे उनकी विजय का पूरा भरोसा कर सकते हैं।" (स्मोलेन्स्क के शहरी गवर्नर बैरन आशु के नाम बार्कले डे टोल्ली का निदेश, १८१२।)

लोग-बाग परेशानी की हालत में सड़कों पर घूम रहे थे।

घर के भांडे-बर्तनों, कुर्सियों और अलमारियों से ऊपर तक लदी हुई घोड़ा-गाड़ियां जब-तब फाटकों से बाहर निकलतीं और सड़कों पर जाने लगतीं। फ़ेरापोन्तोव के पड़ोसवाले घर के सामने भी छकड़े खड़े थे और औरतें एक-दूसरी से विदा लेती हुई रो रही थीं, दुखी हो रही थीं। एक कुत्ता छकड़े में जुते घोड़ों पर भोंकता हुआ उनके सामने इधर-उधर भाग रहा था।

अल्पातिच अपनी आम चाल से कहीं तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ अहाते में दाखिल हुआ और सीधा सायबान में चला गया जहां उसके घोड़े और टमटम थी। कोचवान सो रहा था, उसने उसे जगाया, घोड़े जोतने का आदेश दिया और घर की ड्योढ़ी की ओर बढ़ गया। गृह-स्वामी के कमरे से किसी बच्चे के रोने, किसी नारी के हृदय-विदारक ढंग से सिसकने और फ़ेरापोन्तोव का क्रोधपूर्ण तथा खरखरी आवाज़ में चीख़ना-चिल्लाना सुनायी दे रहा था। डरी-सहमी मुर्ग़ी की तरह ड्योढ़ी में इधर-उधर भागती हुई बावर्चिन अल्पातिच के भीतर आते ही कह उठी:

"मार मारकर मालकिन की लगभग जान ही ले ली! .. ऐसे बुरी तरह पीटा, बेरहमी से कमरे में ऐसे घसीटा! .."

"किस कारण?" अल्पातिच ने पूछा।

"इस कारण कि वह यहां से जाने की मिन्नत कर रही थी। वह तो औरत ठहरी! उसने कहा – 'मुझे यहां से ले चलो, मेरी और मेरे छोटे-छोटे बच्चों की जान ख़तरे में नहीं डालो, सभी लोग तो चले भी गये, हम यहां किसलिये बैठे हैं?' बस, वह उसे धुनने लगा। ऐसे बुरी तरह से पिटाई की, बड़ी बेरहमी से घसीटा!"

अल्पातिच ने उक्त शब्द सुनकर मानो अनुमोदन में सिर हिलाया और कुछ भी न जानना चाहते हुए गृह-स्वामी के कमरे के सामनेवाले कमरे की ओर चला गया जहां उसका ख़रीदा हुआ सामान रखा था।

"जंगली, हत्यारे," इसी क्षण दरवाज़े से बाहर निकलकर

सीढ़ियों से अहाते की ओर भागते हुए एक दुबली-पतली तथा पीले चेहरे-वाली औरत चिल्लायी। उसकी गोद में बच्चा था और उसके सिर पर से दुपट्टा नीचे खिसका हुआ था। फ़ेरापोन्तोव भी उसके पीछे-पीछे बाहर आया, मगर अल्पातिच को देखकर उसने अपनी वास्कट तथा बाल ठीक किये, जम्हाई ली और उसी कमरे में चला गया जिसमें अल्पातिच दाख़िल हुआ था।

"तो क्या वापस जा रहे हो?" उसने पूछा।

सराय के मालिक को कोई जवाब दिये बिना, मुड़कर उसकी तरफ़ देखे बिना ही उसने ख़रीदी हुई चीज़ों को ठीक-ठाक किया और पूछा कि उसे अपने रहने के लिये कितने पैसे देने हैं।

"हिसाब जोड़ लेंगे! कहो, गवर्नर के यहां हो आये?" फ़ेरापोन्तोव ने पूछा। "क्या बताया उसने?" अल्पातिच ने उत्तर दिया कि गवर्नर ने निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा।

"हमारे जैसे धन्धेवाला आदमी भला कैसे बोरिया-बिस्तर उठाकर यहां से जा सकता है?" फ़ेरापोन्तोव ने कहा। "नज़दीक के दोरोगोबूज नगर तक जाने के लिये ही एक छकड़े का सात रूबल भाड़ा मांगा जा रहा है। मैं कहता हूं कि इन लोगों का कोई धर्म-ईमान तो रहा ही नहीं!" उसने मत प्रकट किया।

"बृहस्पति के दिन सेलिवानोव ने अक्ल का काम किया – एक कुल* के लिये नौ रूबल के हिसाब से फ़ौज को आटा बेच दिया। चाय तो पियेंगे, न?" उसने पूछा। जब तक घोड़े जोते गये, अल्पातिच और फ़ेरापोन्तोव ने चाय पी, अनाज के मूल्य, फ़सल और फ़सल कटाई के लिये बहुत अच्छे मौसम की चर्चा की।

"मामला कुछ-कुछ शान्त होने लगा है," फ़ेरापोन्तोव ने चाय के तीन प्याले पीने के बाद उठते हुए कहा, "लगता है कि हमारे लोग उनपर हावी हो गये हैं। उन्होंने कह तो दिया है कि 'शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देंगे। मतलब यह है कि इतनी ताक़त है... कुछ ही दिन पहले यह सुनने में आया था कि मत्वेई इवानोविच प्लातोव** ने उन्हें मेरेइका

* कुल – पुरानी रूसी माप जो लगभग १४५ किलोग्राम के बराबर थी। – अनु०

** मत्वेई इवानोविच प्लातोव (१७५१–१८१८) – १८१२ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध और १८१३–१८१४ में रूसी सेना का जनरल। उसकी रेजिमेंट ने जुलाई १८१२ में मेरेइका नदी के पास फ़्रांसीसियों पर सफल आक्रमण किया। – सं०

नदी तक खदेड़ दिया, एक ही दिन में उनके कोई अठारह हज़ार फ़ौजी डुबो दिये।"

अल्पातिच ने अपनी चीज़ें समेटीं, उन्हें कमरे में आनेवाले कोचवान को दे दिया और सराय के मालिक का हिसाब चुका दिया। किसी टमटम के फाटक से बाहर जाते समय पहियों, घोड़ों के सुमों और घण्टियों की आवाज़ सुनायी दी।

दोपहर कभी की बीत चुकी थी। सड़क का आधा भाग छाया में था और आधा भाग धूप में ख़ूब चमक रहा था। अल्पातिच ने खिड़की से झांककर देखा और दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। अचानक दूरी पर सीत्कार और धमाके की अजीब-सी आवाज़ तथा इसके बाद तोप की ज़ोरदार गरज सुनायी दी जिससे खिड़कियों के शीशे कांप उठे।

अल्पातिच सड़क पर चला गया। सड़क पर से दो आदमी भागते हुए पुल की तरफ़ गये। विभिन्न दिशाओं से नगर में गिरनेवाले गोलों का सीत्कार, धमाके और विस्फोटक गोलों की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। किन्तु शहर के बाहर चलनेवाली तोपों की गरज की तुलना में ये आवाज़ें लगभग सुनायी नहीं दे रही थीं और शहर के लोगों का बहुत कम ध्यान आकृष्ट कर रही थीं। ये एक सौ तीस वे तोपें दहाड़ रही थीं जिनसे नेपोलियन ने दिन के चार बजने के बाद नगर पर ज़ोरदार गोलाबारी करने का आदेश दिया था। शुरू में लोग इस गोलाबारी का अर्थ नहीं समझ पाये।

आरम्भ में तो नगर में गिरनेवाले गोले और विस्फोटक गोले केवल जिज्ञासा ही पैदा करते थे। फ़ेरापोन्तोव की पत्नी, जो सायबान के नीचे बैठी हुई अभी तक लगातार रोती रही थी, चुप हो गयी और बच्चे को गोद में लिये हुए फाटक पर आ गयी तथा चुपचाप लोगों की ओर देखने तथा उनकी बातें सुनने लगी।

बावर्चिन और एक दुकानदार भी फाटक पर आ गया। सभी प्रसन्नतापूर्ण जिज्ञासा से अपने सिरों के ऊपर से गुज़र रहे गोलों की झलक पाने की कोशिश कर रहे थे। कोने से कुछ लोग बड़ी ज़िन्दादिली से बातें करते हुए निकले।

"इसे कहते हैं ज़ोर!" एक कह रहा था। "छत की तो धज्जियां उड़ा डालीं।"

"किसी सुअर की तरह ज़मीन में गड्ढा बना दिया," दूसरे ने कहा। "इसने अपना ज़ोर दिखा दिया, जी ख़ुश कर डाला!" उसने हंसते हुए अपनी बात जारी रखी। "यही शुक्र करो कि तुम एक तरफ़ को हट गये, वरना तुम्हारा काम तमाम हो जाता।"

फाटक पर खड़े लोगों ने इन दोनों को रोककर इनसे यह घटना सुनाने को कहा। इन्होंने बताया कि कैसे उनके क़रीब ही एक घर पर तोप का एक गोला गिरा था। इसी बीच तेज़ और मनहूस-सा सीत्कार करते तोप के गोले या प्यारी-सी सीटी बजाते विस्फोटक गोले लगातार लोगों के सिरों के ऊपर से गुज़रते जाते थे। किन्तु एक भी गोला इनके नज़दीक नहीं गिरा, सभी आगे निकल गये। अल्पातिच अपनी टमटम में जा बैठा। सराय का मालिक फाटक पर खड़ा था।

"तुम यहां क्या करने चली आयी हो!" वह बावर्चिन पर चिल्लाया जो लाल घाघरा पहने, अपनी आस्तीनों को ऊपर चढ़ाये और नंगी कोहनियों को झुलाते हुए लोगों की बातें सुनने के लिये फाटक पर आ गयी थी।

"यह भी एक अजूबा ही है," उसने कहना शुरू किया, मगर मालिक की आवाज़ सुनकर वह अपने ज़रा ऊपर को चढ़ाये घाघरे को नीचे करते हुए वापस चल दी।

फिर से, किन्तु इस बार बहुत निकट ही मानो ऊपर से नीचे की ओर झपटते पक्षी के पंखों जैसी सरसराहट हुई, सड़क के बीचोंबीच लपट कौंध गयी, धमाका हुआ और सड़क पर धुएं का बादल छा गया।

"ओह शैतान, यह तुम क्या कर रहे हो?" सराय का मालिक बावर्चिन की ओर लपकते हुए चिल्लाया।

इसी क्षण सभी दिशाओं से औरतें विलाप करने लगीं, बालक डरकर रोने लगा और फक चेहरे लिये हुए लोग बावर्चिन के आस-पास जमा हो गये। इस जमघट में बावर्चिन की आहें-कराहें और रोना-धोना सबसे ऊंचा सुनायी दे रहा था।

"ओ... ह, मेरे प्यारो! मेरे प्यारे, भले लोगो! मुझे मरने नहीं देना! मेरे प्यारे, भले लोगो!.."

पांच मिनट बाद एक भी आदमी सड़क पर बाक़ी नहीं रहा। लोग बावर्चिन को उठाकर, जिसकी जांघ विस्फोटक गोले का टुकड़ा लगने

से टूट गयी थी, रसोईघर में ले गये। अल्पातिच , उसका कोचवान, बच्चों के साथ फ़ेरापोन्तोव की बीवी और अहाते की देख-भाल करनेवाला नौकर—सभी तहख़ाने में बैठे हुए आवाज़ों पर कान लगाये थे। तोपों की गरज, गोलों की सनसनाहट और सभी आवाज़ों से अधिक ऊंची सुनायी देनेवाली बावर्चिन की दर्द भरी आहें-कराहें एक क्षण को भी शान्त नहीं हो रही थीं। घर की मालकिन बालक को कभी तो बांहों में झुलाती, कभी उसे प्यार से चुप कराती और कभी तहख़ाने में आनेवाले हर व्यक्ति से करुणाजनक फुसफुसाहट में यह पूछती कि उसका पति कहां है जो सड़क पर ही रह गया था। तहख़ाने में आनेवाले एक दुकानदार ने उसे बताया कि सेना का जोश और विजय में विश्वास बढ़ाने के लिये मालिक लोगों के साथ बड़े गिरजे से स्मोलेन्स्क की चमत्कारी देव-प्रतिमा लाने गया है।

शाम का झुटपुटा होने पर तोपों की गरज शान्त होने लगी। अल्पातिच तहख़ाने से निकलकर दरवाज़े के पास आ खड़ा हुआ। शाम का आकाश, जो पहले इतना साफ़ था, अब धुएं से ढका हुआ था। इस धुएं में से आसमान में बहुत ऊंचाई पर नये चांद का हंसिया बड़े अजीब ढंग से चमकता दिखाई दे रहा था। कुछ देर पहले तक की तोपों की भयानक गरज के बाद अब नगर के ऊपर शान्ति-सी छाई लगती थी और सारे नगर में गूंजती हुई क़दमों की आवाज़, आहें-कराहें, दूर से आनेवाली चीख़ें और आग की चटचट ही इस शान्ति को भंग करती थीं। बावर्चिन ने भी अब कराहना बन्द कर दिया था। दो दिशाओं से धुएं के काले बादल ऊपर उठते और दूर चले जाते। सड़क पर क़तारों में नहीं, बल्कि टूटी बांबी की इधर-उधर भागनेवाली चींटियों की भांति तरह-तरह की वर्दियां पहने सैनिक घबराहट में इधर-उधर आ-जा रहे थे या भाग रहे थे। अल्पातिच के सामने ही उनमें से कुछ फ़ेरापोन्तोव के अहाते में भाग गये। अल्पातिच फाटक पर आ गया। पीछे हटती हुई किसी रेजिमेंट के उतावली और रेल-पेल करते सैनिक रास्ते को रोके हुए थे।

"शहर को दुश्मन के हवाले किया जा रहा है, यहां से चले जाइये, चले जाइये," अल्पातिच को देखकर एक फ़ौजी अफ़सर ने उससे कहा और अगले ही क्षण सैनिकों पर चिल्लाया:

"अहातों में भागने के लिये मैं तुम्हारी अक़्ल ठिकाने करूंगा!"

अल्पातिच घर में वापस गया, उसने कोचवान को पुकारा और चलने का आदेश दिया। फ़ेरापोन्तोव के घर के सभी लोग अल्पातिच और कोचवान के पीछे-पीछे बाहर आ गये। धुआं और शाम के झुट-पुटे में अब साफ़ नज़र आनेवाली लपटें देखकर औरतें, जो अभी तक चुप थीं, अचानक विलाप करने लगीं। सड़क के दूसरे हिस्सों से मानो इनका अनुकरण करनेवाली अन्य औरतों का भी रोना-धोना सुनायी देने लगा। अल्पातिच और कोचवान ने सायबान में खड़े होकर कांपते हाथों से घोड़ों की उलझी हुई लगामें और जोतें ठीक कीं।

टमटम में बैठा हुआ अल्पातिच जब फाटक से बाहर जा रहा था तो उसने देखा कि कैसे फ़ेरापोन्तोव की खुली हुई दुकान में कोई दसेक फ़ौजी ऊंचे-ऊंचे बोलते-बतियाते हुए अपने थैलों और झोलों में गेहूं का आटा तथा सूरजमुखी के बीज भरते जा रहे हैं। इसी समय सड़क से लौटनेवाला फ़ेरापोन्तोव भी अपनी दुकान में गया। फ़ौजियों को वहां देखकर उसने उन्हें डांटना-डपटना चाहा, मगर अचानक अपना इरादा बदल लिया और बालों को नोचते हुए उसने सिसकियों से रुंधे जाते गले से ठहाका लगाया।

"नौजवानो, सब कुछ उठा ले जाओ! उन शैतानों के लिये कुछ नहीं छोड़ो!" वह ख़ुद बोरियां उठा-उठाकर बाहर फेंकते हुए चिल्लाया। कुछ फ़ौजी डरकर भाग गये और कुछ थैले भरते रहे। अल्पातिच को देखकर फ़ेरापोन्तोव ने उसे सम्बोधित किया।

"रूस का खेल ख़त्म हो गया!" उसने पुकारकर कहा। "अल्पातिच! रूस तबाह हो गया! अपने हाथ से सब कुछ जला डालूंगा। रूस तबाह हो गया!.." फ़ेरापोन्तोव अहाते की तरफ़ भाग गया।

फ़ौजियों की लगातार उमड़ती हुई भीड़ सारी सड़क को रोके थी और इसलिये अल्पातिच भी रुकने के लिये मजबूर था। बच्चों के साथ फ़ेरापोन्तोव की पत्नी भी अपनी घोड़ा-गाड़ी में बैठी हुई आगे बढ़ पाने का इन्तज़ार कर रही थी।

अब तक रात हो गयी थी। आकाश में सितारे चमक रहे थे और कभी-कभार धुएं से ढके हुए आकाश में से नया चांद झलक दिखा देता था। फ़ौजियों की क़तारों और दूसरी गाड़ियों के बीच धीरे-धीरे चल रही अल्पातिच और फ़ेरापोन्तोव की बीवी की गाड़ियों को द्नेप्र नदी की ओर जानेवाली ढलान पर रुकना पड़ा। चौक के नज़दीक,

जहां घोड़ा-गाड़ियां रुक गयी थीं, बग़ल की गली में एक मकान और दुकानें जल रही थीं। आग लगभग बुझती जा रही थी। लपटें कभी तो बिल्कुल नीची होकर काले धुएं में खो जातीं तो कभी अचानक ज़ोर से भड़क उठतीं और चौक में जमघट लगाये लोगों के चेहरों को अजीब ढंग से रोशन कर देतीं। आग के सामने लोगों की काली आकृतियों की झलक मिलती और निरन्तर चटकती आग की ध्वनि में लोगों की ऊंची-ऊंची आवाज़ें और शोर-ग़ुल सुनायी दे रहा था। अल्पातिच यह देखकर कि उसकी टमटम जल्दी ही आगे नहीं बढ़ पायेगी, उससे नीचे उतर आया और आग देखने के लिये बग़ल की गली में चला गया। आग के पास से फ़ौजी लगातार जल्दी-जल्दी आगे-पीछे आ-जा रहे थे और अल्पातिच ने देखा कि कैसे दो फ़ौजी और उनके साथ मोटा-सा ओवरकोट पहने एक और आदमी आग में से जलते लट्ठे निकालकर गली लांघते हुए उन्हें पड़ोस के अहाते में ले जा रहे हैं। कुछ दूसरे लोग फूस के पूले लिये जा रहे थे।

अल्पातिच उस बड़ी भीड़ के पास चला गया जो धू-धू जल रहे ऊंचे बखार के सामने खड़ी थी। उसकी सभी दीवारें जल रही थीं, पिछली दीवार गिर चुकी थी, तख़्तों की छत धंस गयी थी, शहतीर जल रहे थे। भीड़ सम्भवतः छत के गिरने का इन्तज़ार कर रही थी। अल्पातिच भी इसी की राह देख रहा था।

"अल्पातिच!" इस बूढ़े को अचानक किसी की जानी-पहचानी आवाज़ सुनायी दी।

"हे भगवान, छोटे मालिक, छोटे हुज़ूर," अल्पातिच ने फ़ौरन जवान प्रिंस की आवाज़ पहचानते हुए उत्तर दिया।

घुड़सवारी का लबादा पहने और मुश्की घोड़े पर सवार प्रिंस अन्द्रेई भीड़ के पीछे से अल्पातिच को देख रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"हुज़ू... हुज़ूर..." अल्पातिच मुश्किल से कह पाया और सिसकने लगा... "हुज़ूर, हुज़ूर... क्या सब कुछ ख़त्म हो गया? आपके पिता जी..."

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" प्रिंस अन्द्रेई ने अपना सवाल दोहराया।

इस क्षण आग की लपट ज़ोर से भड़क उठी और अल्पातिच को

छोटे मालिक का पीला तथा मुरझाया-सा चेहरा नज़र आया। अल्पातिच ने बताया कि किसलिये उसे स्मोलेन्स्क भेजा गया था और लौटने में कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा था।

"तो हुज़ूर, क्या सब कुछ ख़त्म हो गया?" उसने फिर पूछा।

प्रिंस अन्द्रेई ने कोई जवाब न देकर अपनी नोटबुक निकाली, उसमें से एक काग़ज़ फाड़ा, घुटना ऊपर उठाकर काग़ज़ को उसपर टिकाया और पेंसिल से कुछ लिखने लगा। उसने बहन को यह लिखा:

"स्मोलेन्स्क दुश्मन के हवाले किया जा रहा है। एक हफ़्ते बाद शत्रु लीसिये गोरि पर क़ब्ज़ा कर लेगा। सभी फ़ौरन मास्को चले जाओ। रवाना होते ही उस्व्याज नगर में विशेष सन्देहवाहक भेजकर मुझे इसकी सूचना दे देना।"

यह रुक्क़ा लिखने और उसे अल्पातिच को देने के बाद उसने उसे ज़बानी भी यह समझा दिया कि वह बुज़ुर्ग प्रिंस, प्रिंसेस, बेटे निकोलाई और उसके अध्यापक के लीसिये गोरि से जाने का कैसे प्रबन्ध करे और उसे किस तरह तथा किस जगह इसकी फ़ौरन सूचना भिजवा दे। प्रिंस अन्द्रेई अभी ये हिदायतें दे ही रहा था कि अपने अमले के साथ एक स्टॉफ़-अफ़सर घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास आ गया।

"आप कर्नल?" स्टॉफ़-अफ़सर जर्मन लहजे तथा प्रिंस अन्द्रेई के लिये जानी-पहचानी आवाज़ में चिल्लाया। "आपकी उपस्थिति में घर जलाये जा रहे हैं और आप खड़े तमाशा देख रहे हैं? ऐसा करने का क्या मतलब है? आपको इसका जवाब देना होगा," बेर्ग ने चिल्लाते हुए कहा। वह अब प्रथम सेना के बायें बाज़ू की प्यादा फ़ौज के स्टॉफ़-संचालक का सहायक था। यह मन को अच्छा लगने और, जैसाकि बेर्ग कहा करता था, सबकी नज़र में आनेवाला पद था।

प्रिंस अन्द्रेई ने उसकी तरफ़ देखा और कोई जवाब दिये बिना अल्पातिच को हिदायतें देता रहा:

"तो कह देना कि दस तारीख़ तक जवाब का इन्तज़ार करूंगा और अगर दस तारीख़ को मुझे यह सूचना नहीं मिलेगी कि सभी वहां से चले गये हैं तो मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर ख़ुद लीसिये गोरि पहुंच जाऊंगा।"

"प्रिंस, मैंने तो केवल इस कारण ही ऐसा कहा था," प्रिंस अन्द्रेई को पहचानने के बाद बेर्ग बोला, "क्योंकि हुक्म पूरा करना मेरा

फ़र्ज़ है और मैं हमेशा उसे बहुत अच्छी तरह से पूरा करता हूं... आप मुझे माफ़ कर दीजिये," बेर्ग ने अपनी सफ़ाई पेश करने की कोशिश की।

आग में कोई चीज़ चटकी-टूटी। क्षण भर को आग धीमी हो गयी; छत के नीचे से धुएं का काला बादल-सा उठा। पहले से कहीं अधिक ज़ोर से आग में कुछ टूटा और कोई बहुत बड़ी चीज़ धड़ाम से नीचे जा गिरी।

"ऊ-ऊ-ऊ-ऊ!" जलते अनाज के कारण पकती हुई रोटियों जैसी महक देते बखार की नीचे गिरती छत की आवाज़ को दोहराते हुए भीड़ चिल्ला उठी। ज्वाला ज़ोर से भड़क उठी और उसने आग के गिर्द खड़े लोगों के ख़ुशी से खिल उठनेवाले व्यथित चेहरों को रोशन कर दिया।

मोटा-सा ओवरकोट पहने आदमी अपना हाथ ऊपर उठाकर चिल्ला रहा था:

"वाह, मज़ा आ गया! आग अब ख़ूब ज़ोर से जल रही है! वाह, मज़ा आ गया!.."

"यही तो बखार का मालिक है!" कुछ आवाज़ें सुनायी दीं।

"तो समझ गये न," प्रिंस अन्द्रेई ने अल्पातिच को सम्बोधित करते हुए कहा, "मैंने जो कुछ तुमसे कहा है, सब ऐसे ही कह देना।" और बेर्ग से एक भी शब्द कहे बिना, जो उसकी बग़ल में चुपचाप खड़ा था, प्रिंस अन्द्रेई ने घोड़े को एड़ लगाई और उसे गली की तरफ़ बढ़ा ले गया।

५

हमारी सेनायें स्मोलेन्स्क से पीछे हटती जा रही थीं। शत्रु इनके पीछे-पीछे आ रहा था। १० अगस्त को वह रेजिमेंट, जिसकी कमान प्रिंस अन्द्रेई के हाथ में थी, बड़ी सड़क पर बढ़ती हुई लीसिये गोरि को जानेवाले रास्ते के क़रीब से गुज़री। तीन हफ़्तों से अधिक समय से सख़्त गर्मी पड़ रही थी, एकदम सूखा मौसम चल रहा था। हर दिन फूले-फूले बादल आकाश में घूमते रहते, कभी-कभी सूरज को अपनी ओट

में कर लेते, मगर शाम को आसमान फिर से साफ़ हो जाता और सूरज भूरी-लाल धुंध में डूब जाता। सिर्फ़ रात को ज़ोर से पड़नेवाली शबनम ही ज़मीन को ताज़गी देती। अनकटी रह जानेवाली फ़सल की बालें धूप में झुलस गयीं और उनके दाने बिखर गये। दलदल सूख गये थे। धूप से झुलसे हुए चरागाहों में चारा न मिलने पर पशु भूख से रम्भाते थे। केवल रातों को और वनों में ही तब तक ठण्डक रहती, जब तक ओस न सूखती। किन्तु उस रास्ते, उस बड़ी सड़क पर, जहां से सेनायें पीछे हट रही थीं, रातों को और जंगलों में भी यह ठण्ड नहीं होती थी। रास्ते की धूल की मोटी परत में ओस दिखायी ही नहीं देती थी। पौ फटते ही सेनायें कूच का डंका बजा देतीं। धुरी तक धूल में धंसी सामानवाली घोड़ा-गाड़ियां और तोप-गाड़ियां किसी तरह की आवाज़ पैदा किये बिना चलती जातीं और प्यादा सैनिक नर्म, दम घोंटती और रात के दौरान ठण्डी न हो जानेवाली गर्म धूल में टखनों तक धंसते हुए बढ़ते रहते। इस धूल का एक भाग तो पांवों और पहियों पर जम जाता और दूसरा भाग बादल-सा बनकर सेनाओं के ऊपर छा जाता और आंखों, बालों, नाक-कान और सबसे ज़्यादा बुरा तो यह था, कि इस रास्ते पर बढ़ रहे लोगों और जानवरों के फेफड़ों में घुसता रहता था। सूरज जितना अधिक ऊंचा जाता, धूल का बादल भी उतना ही अधिक ऊंचा होता जाता और धूल की इस गर्म तथा झीनी चादर में से मेघहीन सूरज को किसी तरह की ओट के बिना ही देखा जा सकता था। सूरज बहुत बड़ा, लाल-लाल गोला-सा लगता। हवा अपने पंख समेटे रहती और इस घुटे-घुटे वातावरण में लोगों के लिये सांस लेना मुश्किल होता। लोग नाक और मुंह पर रूमाल बांधे हुए चलते जाते। किसी गांव में पहुंचते ही लोग कुंओं पर टूट पड़ते। वे पानी के लिये हाथापाई करते और कीचड़ की हद तक उसे पीते जाते।

प्रिंस अन्द्रेई रेजिमेंट की कमान सम्भाले था और रेजिमेंट की सुव्यवस्था, सैनिकों की हित-चिन्ता, आदेश पाने तथा आदेश देने के काम में बहुत व्यस्त रहता था। स्मोलेन्स्क को जलाया गया और उसे दुश्मन के हवाले कर दिया गया – इस घटना ने प्रिंस अन्द्रेई के मन पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा। शत्रु के विरुद्ध धधकते क्रोध की नयी भावना ने उसे अपना दुख भूल जाने को विवश कर दिया। उसने जी-जान से अपने को रेजिमेंट के कामों में लगा दिया था, वह अपने सैनिकों तथा

अफ़सरों की बहुत चिन्ता करता था और उनके साथ बहुत मधुर ढंग से पेश आता था। रेजिमेंट के लोग उसे **हमारा प्रिंस** कहते थे, उसपर गर्व और उसे प्यार करते थे। किन्तु वह अपनी रेजिमेंट के लोगों, तिमोख़िन, आदि के साथ, ऐसे लोगों के साथ ही प्यार-मुहब्बत और हलीमी से पेश आता था जो बिल्कुल दूसरे तथा एकदम पराये वातावरण से सम्बन्ध रखते थे, जो उसके अतीत के बारे में न तो कुछ जान सकते थे और न उसे समझ ही सकते थे। किन्तु जैसे ही पुरानी जान-पहचान के किसी व्यक्ति, मुख्य सैनिक कार्यालय के किसी अफ़सर से उसकी भेंट हो जाती, वैसे ही उसका पारा चढ़ जाता, वह द्वेष, व्यंग्य और तिरस्कार के तीर चलाने लगता। अतीत की स्मृतियों से सम्बन्धित हर चीज़ से उसे नफ़रत थी और इसलिये पहले की इस दुनिया के मामले में वह सिर्फ़ यही कोशिश करता कि किसी तरह की कोई बेइन्साफ़ी न होने दे तथा अच्छी तरह से अपना **कर्त्तव्य** पूरा करे।

यह सही है कि प्रिंस अन्द्रेई को सभी कुछ अन्धकारमय और निराशाजनक प्रतीत होता था, ख़ास तौर पर ६ अगस्त को स्मोलेन्स्क को दुश्मन के हवाले करने (उसके मतानुसार उसकी रक्षा की जानी चाहिये थी और उसकी रक्षा की जा सकती थी) और इस चीज़ के बाद कि बीमार पिता को लीसिये गोरि को जिसे वह इतना अधिक प्यार करते थे, जहां उन्होंने इतना निर्माण-कार्य किया था और जहां लोगों को बसाया था दुश्मन की लूट के लिये छोड़कर मास्को भागना पड़ा था। किन्तु इस सबके बावजूद, रेजिमेंट-कमांडर होने के नाते प्रिंस अन्द्रेई सामान्य प्रश्नों के बारे में ही नहीं, बल्कि एक अन्य विषय अर्थात् अपनी रेजिमेंट के बारे में भी सोचता था। १० अगस्त को वह विराट सेना-दल, जिसमें उसकी रेजिमेंट भी शामिल थी, लीसिये गोरि के पास पहुंच गया। दो दिन पहले प्रिंस अन्द्रेई को यह सूचना मिल गयी थी कि उसके पिता, बहन और बेटा मास्को चले गये हैं। यद्यपि लीसिये गोरि में प्रिंस अन्द्रेई को कोई काम-काज नहीं था, तथापि अपने दुख को और अधिक तीव्र करने की अपनी लाक्षणिक इच्छा के अनुसार उसने निर्णय किया कि उसे लीसिये गोरि जाना ही चाहिये।

उसने अपने घोड़े पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया और पिता के उस गांव की ओर चल दिया जहां उसका जन्म हुआ था और जहां उसका बचपन बीता था। उस तालाब

के पास से गुज़रते हुए, जहां हमेशा दसियों किसान-औरतें बतियाते हुए कपड़े धोती और उन्हें थापियों से पीटती रहती थीं, प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि वहां अब एक भी औरत नहीं थी और कपड़े धोने के लिये बनाया गया लकड़ी का छोटा-सा प्लेटफ़ार्म तोड़ डाला गया था और वह एक पहलू को झुका तथा पानी में आधा डूबा हुआ तालाब के मध्य में तैर रहा था। प्रिंस अन्द्रेई अपने घोड़े को चौकीदार की कोठरी की तरफ़ ले गया। बग्घियों आदि के जाने के लिये बनाये गये पत्थरों के प्रवेश-द्वार पर कोई नहीं था और दरवाज़ा खुला हुआ था। बाग़ की रविशों पर घास-पात उग आया था और अंग्रेज़ी पार्क में बछड़े-बछियां तथा घोड़े घूम रहे थे। वह घोड़े को पौधाघर के नज़दीक ले गया – उसके शीशे टूटे हुए थे, बड़े-बड़े गोल पीपों में उगे हुए कुछ पेड़ नीचे गिरा दिये गये थे और कुछ सूख गये थे। उसने तारास नाम के माली को पुकारा, मगर कोई जवाब नहीं मिला। पौधाघर के गिर्द चक्कर लगाकर वह घोड़े को सजावटवाले बगीचे की तरफ़ ले गया। वहां उसने देखा कि लकड़ी की नक़्क़ाशीदार बाड़ पूरी तरह से टूटी हुई है और आलूबुख़ारों के पेड़ों को शाखाओं समेत तोड़ डाला गया है। एक बूढ़ा किसान (जिसे प्रिंस अन्द्रेई अपने बचपन में फाटक पर देखा करता था) एक हरी बेंच पर बैठा हुआ छाल के जूते बना रहा था।

यह बूढ़ा किसान बहरा था और उसने प्रिंस अन्द्रेई के घोड़े के अपने नज़दीक आने की आवाज़ नहीं सुनी। वह बुज़ुर्ग प्रिंस की मनपसन्द बेंच पर बैठा था और उसके क़रीब ही मगनोलिया की टूटी तथा मुर-झायी शाखाओं पर छाल के टुकड़े लटके हुए थे।

प्रिंस अन्द्रेई घोड़े को घर की तरफ़ बढ़ा ले गया। पुराने बाग़ में लिंडन के कुछ पेड़ काट डाले गये थे, अपने बछेरे के साथ एक चितक-बरी घोड़ी घर के बिल्कुल सामनेवाले गुलाब के पौधों के बीच घूम रही थी। नीचे की एक खिड़की को छोड़कर सभी खिड़कियों के शटर बन्द थे। प्रिंस अन्द्रेई को देखकर एक भूदास-छोकरा भागता हुआ घर में गया।

अपने परिवार को भेजकर अल्पातिच अकेला ही लीसिये गोरि गांव में रह गया था। वह घर में बैठा हुआ सन्त-महात्माओं की जीव-नियां पढ़ रहा था। प्रिंस अन्द्रेई के आने की ख़बर सुनकर वह कोट के बटन बन्द करता तथा नाक पर खिसक आये चश्मे के साथ घर से

बाहर आया, तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ प्रिंस के पास गया और कुछ भी कहे बिना प्रिंस के घुटने को चूमता हुआ रोने लगा।

कुछ क्षण बाद अपनी इस दुर्बलता पर झल्लाते हुए उसने मुंह फेर लिया और इसको सारी स्थिति बताने लगा। उसने बताया कि सभी बढ़िया और क़ीमती चीज़ों को बोगुचारोवो गांव में पहुंचा दिया गया था। लगभग बीस टन अनाज भी भेजा जा चुका था। घास और रबी की फ़सल, जो अल्पातिच के शब्दों में इस वर्ष बहुत अच्छी हुई थी, सेनाओं ने हरी ही काट ली थी। किसान तबाह हो गये थे, उनमें से कुछ बोगुचारोवो चले गये थे और थोड़े-से यहां रह गये थे।

अल्पातिच की पूरी बात सुने बिना ही प्रिंस अन्द्रेई ने उससे पूछा कि बहन और पिता जी यहां से कब रवाना हुए। उसका अभिप्राय यह था कि वे मास्को के लिये कब रवाना हुए। अल्पातिच ने यह समझते हुए कि बोगुचारोवो जाने के बारे में पूछा जा रहा है, यह जवाब दिया कि ७ तारीख़ को रवाना हुए थे और फिर से खेतीबारी के मामलों की तफ़सीलों में जाने तथा यह अपेक्षा करने लगा कि प्रिंस उसे ज़रूरी हिदायतें दे दें।

"अगर आपका हुक्म हो तो मैं रसीद लेकर सेना को जई दे दूंगा? हमारे यहां अभी कोई बीस टन और है," अल्पातिच ने जानना चाहा।

बूढ़े अल्पातिच की धूप में चमकती चांद को देखते और उसके चेहरे के भाव से यह अनुमान लगाते हुए कि बूढ़ा ख़ुद भी इस बात को समझता है कि इस वक़्त ऐसे सवाल करने में कोई तुक नहीं है और वह केवल अपने दुख को हल्का करने के लिये ही ऐसा कर रहा है, प्रिंस अन्द्रेई मन ही मन यह सोच रहा था कि उसे क्या जवाब दे।

"हां, दे देना," उसने उत्तर दिया।

"अगर हुज़ूर को बाग़ में गड़बड़ दिखाई दी है," अल्पातिच ने कहा, "तो इसे रोकना सम्भव नहीं था – तीन रेजिमेंटें यहां से गुज़रीं और उन्होंने रात को यहां पड़ाव डाला। ड्रगूनों ने तो ख़ास तौर पर बहुत... मैंने शिकायत लिख भेजने के लिये उनके अफ़सर का नाम और पद लिख लिया है।"

"तुम ख़ुद क्या करने की सोच रहे हो? अगर दुश्मन यहां क़ब्ज़ा कर लेगा तो भी क्या यहीं बने रहोगे?"

अल्पातिच ने प्रिंस की ओर अपना मुंह किया, ग़ौर से उसे देखा और अचानक बड़ी गम्भीरता से एक हाथ ऊपर उठाकर बोला:

"मेरे तो भगवान ही रक्षक हैं, जैसा वह चाहेंगे, वैसा ही होगा।"

बहुत-से किसान और घर के नौकर-चाकर चरागाह में से आ रहे थे, प्रिंस अन्द्रेई के क़रीब आने पर उन्होंने अपनी टोपियां उतार लीं।

"तो मैं अब चल दिया!" प्रिंस अन्द्रेई ने उसकी ओर झुकते हुए कहा। "ख़ुद भी यहां से चले जाओ, जो कुछ ले जा सकते हो, ले जाओ और लोगों से भी यह कह दो कि वे र्याज़ान या मास्को प्रान्त में स्थित जागीर पर चले जायें।" अल्पातिच प्रिंस अन्द्रेई के घुटने से चिपककर सिसकने लगा। प्रिंस अन्द्रेई ने धीरे से उसे परे हटाया और वापस जाने के लिये घोड़े को वीथि पर सरपट दौड़ाने लगा।

सजावटवाले बाग़ में बूढ़ा उस मक्खी की तरह जो अपने किसी प्रिय मृत व्यक्ति के चेहरे पर बैठी रहती है, पहले की तरह उदासीन भाव से बैठा छाल के जूते बनाता हुआ कलबूत पर ठक-ठक कर रहा था। दो बालिकायें अपने स्कर्टों के पल्लुओं में आलूबुख़ारे भरे हुए, जिन्हें वे पौधाघर से तोड़ लायी थीं, वहां से बाहर भागी आ रही थीं और प्रिंस के सामने आ गयीं। जवान मालिक को देखकर बड़ी बालिका, जिसके चेहरे पर भय झलक उठा था, जल्दी से अपनी छोटी सहेली का हाथ पकड़कर उसे अपने साथ खींचती और ज़मीन पर बिखरे गये कच्चे आलूबुख़ारों को उठाये बिना ही एक भोज वृक्ष के पीछे जा छिपी।

प्रिंस अन्द्रेई ने यह न चाहते हुए कि बालिकाओं को इस बात का पता चल जाये कि उसने उन्हें देख लिया है, घबराकर जल्दी से अपना मुंह दूसरी ओर कर लिया। उसे इस प्यारी-सी और डर से सहम जाने-वाली बच्ची पर तरस आ रहा था। वह उसकी तरफ़ देखने के ख़्याल से घबरा रहा था, मगर साथ ही ऐसा करने की अदम्य इच्छा भी अनुभव कर रहा था। इन लड़कियों की ओर देखते हुए जब उसे इस बात की चेतना हुई कि दुनिया में ऐसी दूसरी भी दिलचस्पियां हैं जिनसे वह बेगाना है, किन्तु जो उसकी अपनी दिलचस्पियों की भांति ही तर्क-संगत हैं तो उसे एक नयी, ख़ुशी भरी और चैन देनेवाली भावना की अनुभूति हुई। ये बालिकायें अपने पूरे मन से सम्भवतः सिर्फ़ यही चाहती थीं कि इन कच्चे आलूबुख़ारों को घर ले जाकर खा लें और पकड़ी

न जायें। प्रिंस अन्द्रेई भी उनकी इस इच्छा की पूर्त्ति की कामना कर रहा था। वह एक बार फिर से उनकी तरफ़ देखे बिना न रह सका। यह मानते हुए कि ख़तरा टल गया है, वे दोनों भोज वृक्ष की ओट से सामने आ गयीं और स्कर्टों के पल्लू थामे तथा पतली-पतली आवाज़ों में कुछ चिचियाती हुई अपनी नंगी तथा संवलायी टांगों के सहारे चरागाह की घास पर बहुत ख़ुश-ख़ुश तथा तेज़ी से भागी जा रही थीं।

उस बड़ी सड़क से हटकर, जिसपर सेनायें बढ़ रही थीं और जहां बहुत धूल-मिट्टी थी, प्रिंस अन्द्रेई में कुछ ताज़गी आ गयी थी। किन्तु लीसिये गोरि से कुछ ही दूर वह फिर से बड़ी सड़क पर आ गया और एक छोटे से तालाब के बांध के पास पड़ाव डाले हुए अपनी रेजिमेंट के क़रीब पहुंच गया। दिन का एक बज चुका था। धूल के बादल में से लाल गोले जैसा दिखाई देता सूरज प्रिंस अन्द्रेई के काले फ़ॉक-कोट में से उसकी पीठ को ऐसे जला और झुलस रहा था कि उसे बर्दाश्त करना मुश्किल था। पड़ाव डाले हुए रेजिमेंट के सैनिकों की बातचीत के धीमे-धीमे शोर के ऊपर पहले की तरह ही गतिहीन-सी धूल छाई हुई थी। हवा बिल्कुल नहीं थी। बांध पर से घोड़ा बढ़ाते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने काई की गन्ध और तालाब के पानी से आनेवाली ताज़गी महसूस की। उसका मन हुआ कि वह पानी में, बेशक वह कितना ही गन्दा क्यों न हो, डुबकी लगाये। उसने तालाब पर नज़र ड़ाली जहां से ख़ुशी भरी चीख़-चिल्लाहट और ठहाके सुनायी दे रहे थे। गंदले पानी और काईवाले इस छोटे-से तालाब की सतह सम्भवतः आध मीटर ऊंची हो गयी थी और उसका पानी बांध को भिगो रहा था, क्योंकि वह लोगों, सैनिकों के ईंट जैसे लाल रंग के हाथों, चेहरों और गर्दनोंवाले नंगे और गोरे शरीरों से भरा हुआ था, जो उसमें छपछप कर रहे थे। ठहाकों और ख़ुशी भरी चीख़-चिल्लाहटवाला यह सारा नंगा और गोरा मांस इस गन्दे डबरे में उसी तरह से इधर-उधर छपछप कर रहा था जैसे छोटे-से जलपात्र में ठूंस दी गयी ढेर सारी मछलियां। सैनिकों की इस छपछप में ख़ुशी की गूंज थी और इसीलिये वह विशेष रूप से विषादपूर्ण थी।

तीसरी कम्पनी का सुनहरे बालोंवाला एक जवान सैनिक, जिसकी पिंडली पर पेटी बंधी थी और जिससे प्रिंस अन्द्रेई परिचित था, अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते हुए तालाब से दूर जा रहा था ताकि

तेज़ी से दौड़कर आये और पानी में ज़ोर से छलांग लगाये। दूसरा, काले बालोंवाला छोटा अफ़सर, जिसके बाल हमेशा अस्त-व्यस्त रहते थे, अपनी गठी, मज़बूत काठी को उचकाते हुए कमर तक पानी में खड़ा था तथा कलाइयों तक बालों से ढके हाथों से सिर पर पानी डालते हुए ख़ुशी से फूत्कार कर रहा था। एक-दूसरे के बदन पर हाथ मारने, चीख़ने-चिल्लाने और हा-हू करने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

तालाब के तटों तथा बांध पर और तालाब में – सभी जगह गोरा-गोरा, स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट मांस था। छोटी-सी लाल नाकवाला तिमोख़िन नाम का अफ़सर बांध पर खड़ा हुआ तौलिये से अपना बदन रगड़ रहा था। प्रिंस अन्द्रेई को देखकर उसे शर्म महसूस हुई, फिर भी उसने उसे सम्बोधित करने का निर्णय किया:

"हुज़ूर, पानी ख़ासा अच्छा है, आप भी डुबकी लगा लें!" उसने कहा।

"गन्दा है," प्रिंस अन्द्रेई ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए जवाब दिया।

"हम आन की आन में इसे आपके लिये साफ़ कर देंगे," और तिमोख़िन कपड़े पहने बिना ही सैनिकों को तालाब से बाहर निकालने के लिये उधर भाग गया।

"प्रिंस नहाना चाहते हैं।"

"कौन-से प्रिंस? **हमारे** प्रिंस?" लोगों की आवाज़ें सुनायी दीं और सभी तालाब से निकलने की ऐसी उतावली करने लगे कि प्रिंस अन्द्रेई बड़ी मुश्किल से ही उन्हें रोक पाया। उसने सोचा कि सायबान में ही अपने शरीर पर थोड़ा पानी डाल लेना बेहतर रहेगा।

"मांस, शरीर, तोपों के लिये मांस," अपने नंगे बदन पर नज़र डालते हुए वह सोच रहा था और उसे ठण्ड के कारण तो इतनी नहीं, जितनी कि गन्दे तालाब में नहा रहे इतने अधिक लोगों के शरीरों को देखते हुए ख़ुद उसकी समझ में न आनेवाली घृणा और संत्रास के कारण झुरझुरी महसूस हुई।

स्मोलेन्स्क की सड़क पर मिख़ाइलोव्का में अपने पड़ाव से प्रिंस बग्रातिओन ने ७ अगस्त को यह पत्र लिखा:

"परम आदरणीय काउंट अलेक्सेई अन्द्रेयेविच!

(उसने यह पत्र काउंट अराकचेयेव को लिखा, किन्तु जानता था

कि सम्राट इसे पढ़ेंगे और इसलिये उसमें जितनी भी योग्यता थी, उसका पूरा उपयोग करते हुए उसने एक-एक शब्द पर खूब सोच-विचार किया।)

"मैं समझता हूं कि मन्त्री* स्मोलेन्स्क को शत्रु के हवाले कर देने के बारे में अपनी रिपोर्ट भेज चुका होगा। यह बहुत अफ़सोस और दुख की बात है और सारी सेना में इस कारण बड़ी निराश फैली हुई है कि सबसे महत्त्वपूर्ण जगह को व्यर्थ ही छोड़ दिया गया। अपनी ओर से, व्यक्तिगत रूप से मैंने तो उससे ऐसा न करने का बहुत ही अनुरोधपूर्ण आग्रह किया और फिर पत्र भी लिखा, मगर वह किसी तरह भी मेरी बात मानने को राज़ी न हुआ। मैं अपनी जान की क़सम खाकर कहता हूं कि नेपोलियन ऐसे शिकंजे में था, जैसे शिकंजे में कभी नहीं फंसा था, कि वह अपनी आधी फ़ौज से हाथ धो बैठता, मगर स्मोलेन्स्क पर क़ब्ज़ा न कर पाता। हमारी सेनायें ऐसी बहादुरी से लड़ीं और लड़ रही हैं कि कुछ न पूछिये। १५ हज़ार सैनिकों के साथ मैं ३५ घण्टों तक दुश्मन के सामने डटा रहा और उसकी पिटाई की, लेकिन उसने १४ घण्टों तक भी डटे रहना नहीं चाहा। यह शर्म की बात है, सारी सेना के माथे पर कलंक का टीका है; जहां तक खुद उसका सम्बन्ध है तो मेरे ख़्याल में तो उसे अब इस दुनिया में ज़िन्दा नहीं रहना चाहिये। अगर उसने यह लिखा है कि हमारा बहुत जानी नुक़सान हुआ है – तो यह ग़लत है। शायद चार हज़ार लोग, इससे ज़्यादा नहीं, लेकिन वह भी नहीं। वैसे बेशक दस हज़ार लोग भी मारे जाते – लड़ाई तो लड़ाई है! दूसरी तरफ़ दुश्मन का बेहिसाब जानी नुक़सान हुआ है...

"वह दो दिन और डटा रहता तो उसका क्या बिगड़ जाता? फ़्रांसीसी तो खुद ही पीछे हट जाते, क्योंकि उनके पास न तो लोगों और न घोड़ों को पिलाने के लिये ही पानी था। उसने मुझे वचन दिया था कि पीछे नहीं हटेगा, लेकिन अचानक यह सन्देश भिजवा दिया कि रात को पीछे हट रहा है। इस तरह से तो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती और हम जल्द ही दुश्मन को मास्को तक ले जा सकते हैं...

"ऐसी अफ़वाह है कि आप शान्ति-सन्धि करने की सोच रहे हैं।

---

* बार्कले डे टोल्ली से अभिप्राय है। – अनु०

भगवान न करें कि ऐसा हो! इतनी क़ुर्बानियां करने और ऐसे अटपटे ढंग से पीछे हटने के बाद सुलह की बात सोचना – ऐसे तो आप सारे रूस को अपने ख़िलाफ़ कर लेंगे और हममें से हर किसी को रूसी फ़ौजी वर्दी पहनते हुए शर्म आयेगी। अगर ऐसी नौबत आ ही गयी है तो जब तक रूस लड़ सकता है और जब तक लोगों में खड़े रहने की ताक़त है – हमें लड़ना चाहिये।

"सेना की कमान दो आदमियों के नहीं, एक आदमी के हाथ में होनी चाहिये। आपका मन्त्री शायद अच्छा मन्त्री हो, मगर जनरल के तौर पर बुरा ही नहीं, एकदम कूड़ा-करकट है और उसी के हाथों में हमारी मातृभूमि का पूरा भाग्य सौंप दिया गया है... सच कहता हूं कि मैं तो ग़ुस्से से पागल हुआ जा रहा हूं; लिखने की धृष्टता करने के लिये क्षमा चाहता हूं। बिल्कुल साफ़ है कि जो कोई सन्धि करने और मन्त्री के हाथों में फ़ौज की कमान देने की सलाह देता है, वह सम्राट को प्यार नहीं करता और हम सभी का नाश चाहता है। तो मैं आपको सही बात लिख रहा हूं – जन-सेना तैयार की जाये। नहीं तो मन्त्री बहुत ही चतुराई से मेहमान को अपने साथ राजधानी में ले जायेगा। सम्राट के एडजुटेंट श्रीमान वोल्ज़ोगेन को सारी सेना सन्देह की दृष्टि से देखती है। लोगों का कहना है कि वह हमसे कहीं ज़्यादा नेपोलियन का आदमी है और वही मन्त्री को सारी सलाह देता है। मन्त्री के प्रति मैं न केवल शिष्टता दिखाता हूं, बल्कि एक कॉरपोरल की तरह उसका हुक्म भी बजाता हूं, यद्यपि मैं उससे वरिष्ठ हूं। इससे मन दुखता है, लेकिन चूंकि मैं अपने सम्राट और उपकारी को प्यार करता हूं, इसलिये उसका हुक्म मानता हूं। केवल सम्राट के लिये अफ़सोस होता है कि ऐसी बहादुर फ़ौज को उन्होंने उसके हाथों में सौंप रखा है। ज़रा ग़ौर कीजिये, पीछे हटते हुए हमारे पन्द्रह हज़ार से अधिक सैनिक थकान के कारण तथा अस्पतालों में मौत के मुंह में चले गये। अगर हम हमला करते तो ऐसा न होता। भगवान के लिये मुझे यह बताइये कि हमारा रूस – हमारा यह देश – हमारी ऐसी कायरता के लिये हमसे क्या कहेगा और किसलिये हम अपनी इतनी अच्छी और बहादुर लोगों की यह धरती कमीनों के हवाले कर रहे हैं और हर रूसी के दिल में घृणा और लज्जा की भावना पैदा कर रहे हैं? किस चीज़ और किसका डर है हमें? इसमें मेरा तो कोई क़ुसूर

नहीं कि मन्त्री ढुलमुल, बुज़दिल, बुद्धू और ढीला-ढाला है तथा उसमें बुराइयां ही बुराइयां हैं। सारी सेना आठ-आठ आंसू रो रही है और उसे ख़ूब कोसती है..."

६

जीवन-व्यापारों को जिन असंख्य उप-विभागों में बांटा जा सकता है, उनकी दो श्रेणियां हैं। एक श्रेणी में विषयवस्तु या सार की प्रमुखता होती है और दूसरी में रूप की। दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत गांव, ज़िले, प्रान्तीय नगर, यहां तक कि मास्को से भी भिन्न पीटर्सबर्ग की ज़िन्दगी, ख़ास तौर पर ऊंची सोसाइटी की ज़िन्दगी का उल्लेख किया जा सकता है। इस ज़िन्दगी में कोई परिवर्तन नहीं होता।

१८०५ से हम बोनापार्ट के साथ सुलह कर रहे थे और लड़-झगड़ रहे थे, हमने संविधान बनाये और उन्हें रद्द किया, किन्तु आन्ना पाव्लोव्ना और एलेन के ड्राइंगरूमों का, जिनमें से पहला सात साल तथा दूसरा पांच साल से विद्यमान था, वही पहले जैसा रंग-ढंग था। पहले की तरह अब भी बोनापार्ट की सफलताओं पर आश्चर्य प्रकट किया जाता था और इन्हें तथा इसी प्रकार यूरोप के सम्राटों के उसके सामने झुकने को एक ऐसे द्वेषपूर्ण षड्यन्त्र के रूप में ही देखा जाता था जिसका उद्देश्य राजदरबार के उस दल को संतप्त और परेशान करना था जिसका आन्ना पाव्लोव्ना प्रतिनिधित्व करती थी। ठीक इसी तरह से एलेन के यहां, जहां रुम्यान्त्सेव ख़ुद जाने की कृपा करता था और जो एलेन को बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण नारी मानता था, १८०८ की भांति १८१२ में भी बड़े उल्लास-उत्साह से महान राष्ट्र और महान व्यक्ति की चर्चा की जाती थी, फ़्रांस के साथ झगड़े पर बहुत अफ़सोस ज़ाहिर किया जाता था, और जिसका, एलेन के यहां आनेवाले लोगों के मतानुसार, सुलह में अन्त होना चाहिये था।

सम्राट के सेना से लौटने पर पिछले कुछ समय में इन दोनों विरोधी दलों में कुछ हलचल हुई, इन दोनों ने एक-दूसरे के ख़िलाफ़ कुछ शत्रुता-प्रदर्शन भी किया, किन्तु उनका झुकाव पहले जैसा ही बना रहा।

आन्ना पाव्लोव्ना के दल में पक्के राजतन्त्रवादियों को छोड़कर अन्य किसी फ़ांसीसी को आमन्त्रित नहीं किया जाता था और यहां यह देशभक्तिपूर्ण भावना व्यक्त की जाती थी कि हमें फ़ांसीसी थियेटर में नहीं जाना चाहिये, कि इस थियेटर पर सरकार का एक पूरी फ़ौजी कोर जितना ही ख़र्च होता है। सैनिक घटनाओं पर बहुत कड़ी नज़र रखी जाती थी और हमारी सेना के बारे में अनुकूलतम सूचनायें फैलायी जाती थीं। एलेन के दल में, जिसमें रुम्यान्त्सेव और फ़ांसीसी आते थे, शत्रु तथा युद्ध की क्रूरता की सभी अफ़वाहों का खण्डन किया जाता और सुलह के लिये नेपोलियन के सभी प्रयासों की सविस्तार चर्चा की जाती। इस दल में उनकी भर्त्सना की जाती जो राजदरबार और राज-माता के संरक्षण में चलनेवाली महिला शिक्षा-संस्थाओं को जल्दी से जल्दी कज़ान ले जाने की सलाह देते थे। कुल मिलाकर एलेन के दल में युद्ध के सारे मामले को निरर्थक प्रदर्शन मात्र माना जाता था और यह कि शीघ्र ही सुलह के रूप में उसका अन्त हो जायेगा। यहां बिलीबिन के, जो अब पीटर्सबर्ग में था और हर समय एलेन के ड्राइंगरूम में उपस्थित रहता था, जैसे कि हर समझदार आदमी को यहां उपस्थित होना ही चाहिये था, इस मत की तूती बोलती थी कि बारूद नहीं, बल्कि जिन्होंने उसका आविष्कार किया, वही युद्ध के मामले को तय करेंगे। इस दल में मास्को के लोगों में उमड़नेवाली जोश की लहर और सम्राट के मास्को से लौटने के साथ इसके बारे में प्राप्त समाचार की व्यंग्यपूर्वक, किन्तु बड़ी समझदारी और सतर्कता से खिल्ली उड़ायी जाती थी।

इसके विपरीत, आन्ना पाव्लोव्ना के दल में इस जोश की बड़ी तारीफ़ और उसी अन्दाज़ में चर्चा की जाती जैसे यूनानी इतिहासज्ञ और दार्शनिक प्लुतार्ख़ ने यूनान और रोम के प्राचीन नायकों की है। पहले की तरह अब भी महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन प्रिंस वसीली इन दोनों दलों की साझी कड़ी था। वह अपनी "अच्छी, सुयोग्य मित्र" आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम और अपनी बेटी के "कूटनीतिक दल" में भी जाता और इन दोनों शिविरों में लगातार आने-जाने के कारण मामलों को अक्सर गड़बड़ा देता और एलेन के यहां वह कह देता जो उसे आन्ना पाव्लोव्ना के यहां कहना चाहिये था तथा इसके उलट भी।

सम्राट के पीटर्सबर्ग लौटने के कुछ ही समय बाद प्रिंस वसीली

ने आन्ना पाव्लोव्ना के यहां जंग के मामलों का ज़िक्र करते हुए बार्कले डे टोल्ली के ख़ूब बखिये उधेड़े, मगर इस बारे में वह दुविधा में ही रहा कि किसे सेनापति नियुक्त किया जाये। "बहुत गुणी" के नाम से विख्यात और यहां उपस्थित एक मेहमान ने बताया कि कैसे उसने उसी दिन पीटर्सबर्ग की जन-सेना के हाल ही में नियुक्त किये गये अध्यक्ष कुतूज़ोव को वित्त मन्त्रालय में रंगरूटों की भर्ती के आयोग की अध्यक्षता करते देखा था और उसने बड़ी सावधानी से यह विचार व्यक्त किया कि कुतूज़ोव ही सारी मांगों को पूरा कर सकनेवाले सेनापति हो सकते थे।

आन्ना पाव्लोव्ना उदासी से मुस्करायी और बोली कि कुतूज़ोव ने सम्राट का दिल दुखाने के अलावा और कुछ भी नहीं किया।

"कुलीनों की सभा में मैंने बार-बार यह कहा," प्रिंस वसीली बीच ही में बोल उठा, "लेकिन मेरी बात पर किसी ने कान ही नहीं दिया। मैंने कहा कि कुतूज़ोव का जन-सेना का अध्यक्ष चुना जाना सम्राट को अच्छा नहीं लगेगा। किन्तु उन्होंने मेरी बात पर कान नहीं दिया।"

"यह तो बस, दूसरे की बात का विरोध करने की ही झक है," प्रिंस वसीली कहता गया। "और वह भी किसे ख़ुश करने के लिये? यह सब इसलिये है कि हम बन्दरों की तरह मास्को के मूर्खतापूर्ण जोश की नक़ल करना चाहते हैं," प्रिंस वसीली ने क्षणभर को गड़बड़ाते और यह भूलते हुए कहा कि एलेन के यहां मास्को के जोश का मज़ाक़ उड़ाने और यहां उसकी तारीफ़ करने की ज़रूरत थी। किन्तु उसने फ़ौरन ही अपनी भूल सुधार ली। "क्या काउंट कुतूज़ोव को, रूस के सबसे वयोवृद्ध जनरल को यह शोभा देता है कि वह वित्त मन्त्रालय में रंगरूटों की भर्ती के आयोग की अध्यक्षता करते। उनकी ये सारी कोशिशें बेकार रहेंगी! क्या ऐसे आदमी को सेनापति नियुक्त करना उचित होगा जो अब घोड़े पर ढंग से सवारी भी नहीं कर सकता, युद्ध-परिषद की बैठक में सो जाता है और जिसका चाल-चलन बहुत ही बुरा है! बुख़ारेस्ट में उन्होंने कितनी नेकनामी कमायी है! मैं इस बात की तो चर्चा ही नहीं कर रहा हूं कि जनरल के नाते वह किस लायक हैं, लेकिन क्या ऐसे क्षण में बुढ़ापे के मारे और अंधे, हां, एकदम अंधे व्यक्ति को सेनापति नियुक्त करना ठीक होगा? बहुत बढ़िया रहेगा अंधा जनरल! उन्हें तो कुछ भी नज़र नहीं आता। यह

तो आंख-मिचौली खेलने जैसे होगा ... उन्हें तो कुछ भी दिखाई नहीं देता !"

किसी ने भी उसकी बात नहीं काटी।

२४ जुलाई को यह मत बिल्कुल न्यायसंगत था। किन्तु २६ जुलाई को कुतूज़ोव को प्रिंस की उपाधि दे दी गयी। प्रिंस की उपाधि देने का यह भी मतलब हो सकता था कि उनसे पिंड छुड़ाया जा रहा था और इसलिये प्रिंस वसीली के सोचने का ढंग ठीक ही सिद्ध हो सकता था, यद्यपि उसने अब इसे व्यक्त करने की उतावली नहीं की। किन्तु ८ अगस्त को एक कमेटी की, जिसमें जनरल-फ़ील्ड-मार्शल सल्तिकोव, अराकचेयेव, व्याज़मितीनोव, लोपुख़ीन और कोचुबेई शामिल थे, युद्ध के मामलों पर विचार करने के लिये बैठक हुई। कमेटी इस नतीजे पर पहुंची कि हमारी असफलताओं का कारण सेना-संचालकों में मतैक्य का अभाव था और इस चीज़ के बावजूद कि कमेटी के सदस्यों को यह मालूम है कि सम्राट कुतूज़ोव को पसन्द नहीं करते थे, उसने कुछ देर तक सोच-विचार करने के बाद यह सुझाव दिया कि कुतूज़ोव को ही सेनापति नियुक्त किया जाये। उसी दिन कुतूज़ोव को सेना और उस सारे क्षेत्र का पूर्णाधिकारी सेनापति नियुक्त कर दिया गया जहां सेना थी।

६ अगस्त को प्रिंस वसीली की आन्ना पाव्लोव्ना के यहां "बहुत गुणी" से फिर मुलाक़ात हुई। "बहुत गुणी" इस इच्छा से आन्ना पाव्लोव्ना की लल्लो-चप्पो कर रहा था कि वह उसे सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना की एक महिला शिक्षा-संस्था का डायरेक्टर नियुक्त करवा दे। प्रिंस वसीली एक ऐसे सौभाग्यशाली विजेता, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अन्दर आया जिसे अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति में सफलता मिल गयी हो।

"आपने सबसे महत्त्वपूर्ण ख़बर सुनी या नहीं? प्रिंस कुतूज़ोव फ़ील्ड-मार्शल हो गये हैं। सारे मतभेद ख़त्म कर दिये गये हैं। मैं बहुत ख़ुश हूं, बेहद ख़ुश हूं!" प्रिंस वसीली ने कहा। "आख़िर तो एक ढंग का आदमी चुना गया," वह ड्राइंगरूम में बैठे सभी लोगों पर अर्थपूर्ण और कड़ी नज़र डालते हुए बोला। अपनी इस इच्छा के बावजूद कि "बहुत गुणी" महिला शिक्षा-संस्था के डायरेक्टर की जगह पाना चाहता था, प्रिंस वसीली को वह उसके द्वारा कुछ दिन पहले व्यक्त किये गये मत

की याद दिलाये बिना न रह सका। (आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम में उसका यह व्यवहार प्रिंस वसीली और आन्ना पाव्लोव्ना के प्रति भी अशिष्ट था जिसने बड़ी ख़ुशी से इस समाचार का स्वागत किया था। मगर वह अपने को वश में न रख सका।)

"लेकिन सुनने में आया है कि वह तो अंधे हैं?" उसने प्रिंस वसीली को उसी के शब्द याद दिलाते हुए कहा।

"यह बकवास है। यक़ीन मानिये, उनकी नज़र ख़ासी अच्छी है," प्रिंस वसीली ने जल्दी-जल्दी, कुछ खांसते हुए अपनी उस भारी-भरकम आवाज़ में उत्तर दिया जिसके सहारे वह सभी कठिनाइयों पर पार पा लेता था। "उनकी नज़र ख़ासी अच्छी है," उसने इन शब्दों को दोहराया। "मुझे इस बात की ख़ास ख़ुशी है," वह रूसी में कहता गया, "कि सम्राट ने उन्हें सारी सेना और इस सारे क्षेत्र का पूर्ण अधिकार सौंप दिया है और ऐसा अधिकार कभी किसी सेनापति को नहीं मिला। वह दूसरे तानाशाह होंगे," उसने विजेता की तरह मुस्क-राते हुए अपनी बात समाप्त की।

"भगवान करें कि ऐसा ही हो, ऐसा ही हो," आन्ना पाव्लोव्ना ने कहा। "बहुत गुणी" ने, जो दरबारी सोसाइटी की दृष्टि से अभी नया आदमी था, आन्ना पाव्लोव्ना को ख़ुश करने के लिये उसके पहलेवाले मत का समर्थन करते हुए कहा:

"कहते हैं कि सम्राट ने अनिच्छा से उन्हें यह अधिकार दिया है। सुनने में आया है कि जब उन्होंने यह कहा कि 'सम्राट और मातृभूमि आपको यह सम्मान प्रदान करते हैं' तो उनके चेहरे पर उस युवती की भांति लाली दौड़ गयी थी जिसे 'जोकोंडा'* सुनाया जाता है।"

"हो सकता है कि उन्होंने पूरे मन से ऐसा न किया हो," आन्ना पाव्लोव्ना ने उत्तर दिया।

"ओह नहीं, बिल्कुल ऐसा नहीं है," प्रिंस वसीली ने बड़े जोश से इस बात का विरोध किया। अब वह कुतूज़ोव की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता था। प्रिंस वसीली के मतानुसार कुतूज़ोव ख़ुद तो अच्छे आदमी थे, साथ ही बाक़ी सब लोग भी उन्हें पूजते थे। "नहीं, ऐसा

---

* फ़्रांसीसी लेखक जॉन लाफ़ोन्टेन (१६२१-१६९५) द्वारा कविता में हल्के-फुल्के विषय पर रचा गया क़िस्सा। – सं०

हो ही नहीं सकता, क्योंकि सम्राट तो हमेशा ही उनके बड़े प्रशंसक रहे हैं," उसने कहा।

"केवल भगवान ऐसा करें कि प्रिंस कुतूज़ोव वास्तव में ही पूरा अधिकार अपने हाथ में ले लें," आन्ना पाव्लोव्ना ने ऐसी कामना व्यक्त की, "और **किसी को** भी इस मामले में टांग न अड़ाने दें।"

प्रिंस वसीली फ़ौरन समझ गया कि **किसी से** आन्ना पाव्लोव्ना का क्या अभिप्राय है। उसने खुसर-फुसर करते हुए कहा :

"मैं यक़ीनी तौर पर यह जानता हूं कि कुतूज़ोव ने एक अनिवार्य शर्त के रूप में यह मांग की है कि युवराज को किसी हालत में भी सेना के साथ नहीं होना चाहिये। आपको मालूम है कि उन्होंने सम्राट से क्या कहा?" और उसने वे शब्द दोहराये जो मानो कुतूज़ोव ने सम्राट से कहे थे – "'अगर वह कुछ बुरा करते हैं तो मैं उन्हें सज़ा नहीं दे सकता और अगर अच्छा करते हैं तो इनाम नहीं दे सकता।' ओह, वह तो एक सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हैं, वह प्रिंस कुतूज़ोव! और कैसी दृढ़ता है उनमें! एक ज़माने से मैं उन्हें जानता हूं।"

"सुनने में तो यह भी आया है," "बहुत गुणी" बोल उठा जो दरबारी ढंग की व्यवहारकुशलता के मामले में अभी बिल्कुल कच्चा था, "कि जनाब कुतूज़ोव ने अनिवार्य शर्त के रूप में यह मांग भी की है कि ख़ुद सम्राट भी सेना में नहीं आयें।"

"बहुत गुणी" के ऐसा कहते ही प्रिंस वसीली तथा आन्ना पाव्लोव्ना ने एकसाथ ही उसकी तरफ़ से मुंह फेर लिये और उसके बुद्धूपन पर आह भरते हुए उदासी से एक-दूसरे की तरफ़ देखा।

७

पीटर्सबर्ग में जब यह सब कुछ हो रहा था, उसी वक़्त फ़्रांसीसी सेनायें स्मोलेन्स्क को पीछे छोड़ती हुई मास्को के अधिकाधिक निकट पहुंचती जा रही थीं। नेपोलियन के इतिहासकार त्येर ने, जैसे कि नेपोलियन के दूसरे इतिहासकारों ने भी, अपने नायक की सफ़ाई देते हुए यह लिखा है कि नेपोलियन को उसकी इच्छा के विरुद्ध मास्को

की दीवारों की तरफ़ खींच लिया गया था। उसका और अन्य ऐसे इतिहासकारों का भी यह कथन सही है जो एक व्यक्ति की इच्छा में इतिहास के पूरे घटनाक्रम का स्पष्टीकरण ढूंढ़ते हैं। त्येर उसी तरह से सही है जैसे कि रूसी इतिहासकार जो यह मानते हैं कि रूसी सेना-संचालकों की कुशल रणनीति ही नेपोलियन को मास्को खींच लाई थी। किन्तु इस सम्बन्ध में पश्चदर्शन के नियम के अतिरिक्त, जो सारे अतीत को भविष्य में घटनेवाली घटनाओं के लिये ज़मीन तैयार करनेवाले के रूप में ही पेश करता है, पारस्परिकता या अन्योन्यता को भी ध्यान में रखना चाहिये जो सब कुछ गड़बड़ कर देती है। शतरंज के खेल में मात खा जानेवाला अच्छा खिलाड़ी सच्चे दिल से यह मानता है कि उसकी हार उसकी भूल का परिणाम है और अपनी इस भूल को वह खेल के आरम्भ में ही खोजता है, किन्तु यह भूल जाता है कि सारे खेल के दौरान उसने हर क़दम पर ही ऐसी भूलें की हैं, कि उसकी एक भी चाल पूरी तरह से दोषहीन नहीं थी। अपनी जिस ग़लती पर वह ध्यान केन्द्रित करता है, वह इसलिये उसके सामने उभरकर आती है कि प्रतिद्वन्द्वी ने उससे लाभ उठाया था। युद्ध का खेल शतरंज के खेल से कितना अधिक जटिल है जो एक निश्चित समय की सीमाओं में खेला जाता है और जिसमें एक व्यक्ति की इच्छा बेजान मशीनों का संचालन नहीं करती, बल्कि जो विभिन्न इच्छाओं के टकराव का परिणाम होता है?

स्मोलेन्स्क के बाद नेपोलियन ने दोरोगोबूज से आगे व्याज़्मा के क़रीब और फिर त्सारेवो-ज़ाइमिश्चे के नज़दीक लड़ाई लड़नी चाही, किन्तु हुआ यह कि अनगिनत कारणों के मेल के फलस्वरूप रूसी मास्को से एक सौ बारह वेर्स्ता दूर बोरोदिनो से पहले शत्रु का सामना नहीं कर पाये। नेपोलियन ने व्याज़्मा से सीधे मास्को की तरफ़ बढ़ने का आदेश दे दिया।

मास्को, इस महान साम्राज्य की एशियाई राजधानी, चीनी मन्दिरों जैसे असंख्य गिरजोंवाला, अलेक्सान्द्र के जनगण का पावन नगर मास्को – यह मास्को नेपोलियन की कल्पना को चैन नहीं लेने दे रहा था। सुनहरी पूंछ, सुनहरे अयाल तथा क़दम चाल से चलनेवाले अंग्रेज़ी ढंग के घोड़े पर सवार अपने रक्षकों, अंग-रक्षकों, नौकर-चाकरों और एडजुटेंटों से घिरा हुआ नेपोलियन व्याज़्मा से त्सारेवो-ज़ाइमिश्चे

की ओर बढ़ रहा था। मुख्य सैनिक कार्यालय का संचालक बेरथियर फ़्रांसीसी घुड़सेना द्वारा पकड़े गये एक रूसी क़ैदी से पूछ-ताछ करने के लिये पीछे रह गया था। कुछ देर बाद दुभाषिये लेलोर्न ड' इडेवील के साथ अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ वह नेपोलियन के पास पहुंचा और चेहरे पर विनोदपूर्ण भाव लिये हुए उसने अपना घोड़ा रोका।

"तो?" नेपोलियन ने पूछ-ताछ का नतीजा जानना चाहा।

"प्लातोव का यह कज़्ज़ाक कहता है कि प्लातोव का कोर बड़ी सेना से मिलने जा रहा है, कि कुतूज़ोव को सेनापति नियुक्त कर दिया गया है। बड़ा समझदार और बड़ा बातूनी आदमी है!"

नेपोलियन मुस्कराया, उसने हुक्म दिया कि इस कज़्ज़ाक को एक घोड़े पर सवार कराकर उसके पास लाया जाये। उसने ख़ुद उससे बात-चीत करनी चाही। कई एडजुटेंट सरपट घोड़े दौड़ाते हुए हुक्म बजाने गये और एक घण्टे बाद देनीसोव का भूदास लाव्रूश्का, जो बाद में रोस्तोव का अर्दली बन गया था, अर्दलियों की छोटी जॉकेट पहने, फ़्रांसी-सी ज़ीन कसे घोड़े पर सवार और चेहरे पर मक्कारी, शराब के नशे तथा ख़ुशमिज़ाजी का भाव लिये हुए नेपोलियन के क़रीब पहुंचा। नेपो-लियन ने आदेश दिया कि वह अपने घोड़े को उसके साथ-साथ बढ़ाता रहे और उससे पूछ-ताछ करने लगा:

"आप कज़्ज़ाक हैं?"

"जी, मैं कज़्ज़ाक हूं, हुज़ूर।"

नेपोलियन के इतिहासकार त्येर ने इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "कज़्ज़ाक यह न मानते हुए कि वह किसके साथ बात कर रहा है, क्योंकि नेपोलियन की सादगी में ऐसा कुछ भी नहीं था जो पूरब के व्यक्ति की कल्पना को सम्राट की उपस्थिति का आभास दे सकता, इसलिये वह बड़ी बेतकल्लुफ़ी से युद्ध की स्थिति के बारे में बातचीत करता रहा।" वास्तविकता यह थी कि एक दिन पहले लाव्रूश्का के नशे में गड़गच्च होने के कारण उसका मालिक भूखा ही रह गया था। इसके लिये उसकी अच्छी पिटाई हुई थी और उसे मुर्ग़ियां लाने के लिये गांव भेज दिया गया था। वहां उसने लूट-मार शुरू कर दी और आख़िर फ़्रांसीसियों के हाथों में आ गया। लाव्रूश्का जीवन में बहुत कुछ देख और अनुभव कर चुके उन उजड्ड और गुस्ताख़

अर्दलियों में से एक था जो हर चीज़ को मक्कारी और कमीनेपन से करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जो अपने मालिक की हर तरह की ख़िदमत करने को तैयार रहते हैं और जो मालिक के बुरे मनोवेग, ख़ास तौर पर घमंड और तुच्छता का बड़ी चालाकी से अनुमान लगा लेते हैं।

नेपोलियन की संगत में होने पर, जिसे उसने भली-भांति और आसानी से पहचान लिया था, लाव्रूश्का ज़रा भी नहीं घबराया और जी-जान से अपने नये स्वामियों का कृपापात्र बनने का प्रयास करने लगा।

वह बहुत अच्छी तरह से जानता था कि यह तो ख़ुद नेपोलियन है और उसके सामने उसने उससे अधिक घबराहट अनुभव नहीं की जितनी वह रोस्तोव या कोड़ेवाले क्वाटर मास्टर के अपने सामने होने पर अनुभव करता था, क्योंकि न तो क्वाटर मास्टर और न नेपोलियन ही उसका कुछ बिगाड़ सकता था।

अर्दलियों के बीच जो बातें होती रहती थीं, लाव्रूश्का वह सब बकता चला गया। उनमें से बहुत-सी बातें सच्ची भी थीं। किन्तु जब नेपोलियन ने उससे यह पूछा कि रूसियों का इस बारे में क्या ख़्याल है कि वे बोनापार्ट की जीत लेंगे या नहीं तो लाव्रूश्का ने आंखें सिकोड़ लीं और सोचने लगा।

इस प्रश्न में उसने उसी तरह बड़ी बारीक-सी चालाकी को अनुभव किया जिस तरह लाव्रूश्का जैसे लोग हमेशा हर चीज़ में अनुभव करते हैं। उसने माथे पर बल डाल लिया और कुछ देर तक चुप रहा।

"मामला यों है कि अगर लड़ाई जल्दी से होती है तब तो बिल्कुल ऐसा ही होगा," उसने सोचते हुए जवाब दिया। "लेकिन अगर तीन दिन बीत जाते हैं तो तीसरे दिन के बाद लड़ाई उलझ जायेगी।"

दुभाषिये लेलोर्न ड' इडेवील ने मुस्कराते हुए इसका यह अनुवाद किया – "अगर तीन दिन के पहले लड़ाई होती है तो फ़्रांसीसी जीत जायेंगे, लेकिन अगर तीन दिन के बाद होती है तो भगवान ही जानते हैं कि क्या होगा।" नेपोलियन मुस्कराया नहीं, यद्यपि स्पष्टतः वह ख़ुशी के मूड में था, और उसने इस वाक्य को दोहराने का हुक्म दिया।

लाव्रूश्का ने इस चीज़ की तरफ़ ध्यान दिया और यह ढोंग करते

हुए कि उसे कुछ मालूम नहीं कि वह कौन है, नेपोलियन को ख़ुश करने के लिये कहा:

"हम जानते हैं कि आपके यहां बोनापार्ट है जिसने दुनिया में सभी को पीट डाला है, लेकिन हमारी बात दूसरी है..." ये अन्तिम, डींग भरे और देशभक्तिपूर्ण शब्द उसकी ज़बान से कैसे निकल गये, वह ख़ुद भी यह नहीं जानता था। दुभाषिये ने अनुवाद करते समय लाव्रूश्का के अन्तिम शब्द छोड़ दिये और नेपोलियन मुस्करा दिया। त्येर ने लिखा है – "जवान कज़्ज़ाक ने अपने महाप्रतापी सहभाषी को मुस्कराने के लिये मजबूर कर दिया।" कुछ देर तक चुप रहने के बाद नेपोलियन ने बेरथियर से कहा कि वह यह देखना चाहता है कि "दोन-क्षेत्र की इस सन्तान" पर इस सूचना का क्या प्रभाव पड़ेगा कि वह ख़ुद सम्राट से, उस सम्राट से बातचीत कर रहा है जिसने पिरामिडों पर अपना अमर विजेता का नाम अंकित कर दिया है।

लाव्रूश्का को यह सूचना दी गयी।

लाव्रूश्का ने यह भांपते हुए कि उसे हैरान करने और इस उद्देश्य से यह बताया गया है कि नेपोलियन के विचारानुसार वह स्तम्भित हो जायेगा; अपने नये मालिकों को ख़ुश करने के लिये अत्यधिक आश्चर्य-चकित और भयभीत हो जाने का नाटक किया, अपने दीदे बाहर को निकाल लिये और उसी तरह का मुंह बना लिया जिस तरह का मुंह वह उस वक़्त बनाता था जब उसे कोड़े लगाने के लिये ले जाया था और जिसका वह आदी था। "नेपोलियन के दुभाषिये ने ज्योंही ये शब्द कहे," त्येर ने लिखा है, "त्योंही यह कज़्ज़ाक बुत बना-सा रह गया, उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला और वह उस विजेता पर नज़रें जमाये हुए, जिसका नाम पूर्वी स्तेपियों से उस तक पहुंच चुका था, उसके साथ-साथ घोड़ा बढ़ाता रहा। उसका बोलना-बतियाना अचानक बन्द हो गया और उल्लास की भोली-भाली तथा ख़ामोशी की भावना ने उसकी जगह ले ली। नेपोलियन ने कज़्ज़ाक को इनाम और यह हुक्म दिया कि उसे उस पक्षी की तरह आज़ाद छोड़ दिया जाये जिसे उसके प्यारे जन्म-क्षेत्र की ओर वापस लौटाया जाता है।"

नेपोलियन उस मास्को का सपना देखते हुए, जो उसके दिल-दिमाग़ पर छा गया था, आगे बढ़ गया, जबकि "प्यारे जन्म-क्षेत्र की ओर वापस लौटाया जानेवाला पक्षी" अपने मन से वह सब गढ़ते हुए,

जो घटा नहीं था और जो वह अपने लोगों को बतायेगा, अपने घोड़े को हमारी अग्रिम सेना-चौकियों की तरफ़ सरपट दौड़ा ले गया। उसके साथ वास्तव में जो कुछ हुआ था, उसे वह केवल इसलिये नहीं सुनाना चाहता था कि उसे सुनाने के लायक़ नहीं समझता था। वह कज़्ज़ाकों के पास पहुंचा, उसने उनसे यह पता लगाया कि प्लातोव के सेना-दल के साथ सम्बद्ध रेजिमेंट कहां है और शाम होते-होते अपने मालिक निकोलाई रोस्तोव को ढूंढ़ लिया जो यानकोवो में ठहरा हुआ था और इस समय घोड़े पर सवार होकर तथा इल्यीन को अपने साथ लेकर आस-पास के गांवों के सैर-सपाटे के लिये जाने को तैयार था। उसने लाव्रूश्का को एक अन्य घोड़े पर सवार होकर अपने साथ चलने को कहा।

८

प्रिंसेस मरीया मास्को में नहीं थी और ख़तरे से दूर नहीं हुई थी, जैसाकि प्रिंस अन्द्रेई ने मान लिया था।

अल्पातिच के स्मोलेन्स्क से लौटने पर बुज़ुर्ग प्रिंस अचानक मानो नींद से जागे। उन्होंने आदेश दिया कि गांवों से जन-सैनिक इकट्ठे करके उन्हें हथियारों से लैस किया जाये। उन्होंने सेनापति को इस आशय का एक पत्र भी लिख दिया कि उन्होंने लीसिये गोरि में ही बने रहने और आख़िरी दम तक डटे रहने का पक्का इरादा बना लिया है और वह इस बात का निर्णय उन्हीं पर छोड़ते हैं कि लीसिये गोरि की रक्षा के लिये कोई क़दम उठायें या न उठायें, जहां रूस का एक वयोवृद्ध जनरल या तो बन्दी बना लिया जायेगा या मारा जायेगा। उन्होंने घर के लोगों से भी यह कह दिया कि वह लीसिये गोरि में ही रहेंगे।

किन्तु ख़ुद लीसिये गोरि में ही रहने का निर्णय कर लेने पर बुज़ुर्ग प्रिंस ने प्रिंसेस मरीया और अपने पोते, नन्हे प्रिंस निकोलाई तथा उसके शिक्षक डेसाल के बोगुचारोवो और वहां से मास्को जाने का प्रबन्ध करने का आदेश दे दिया। कुछ समय पहले की बुज़ुर्ग प्रिंस की

उदासीनता की तुलना में अब सोये बिना की जानेवाली उनकी दौड़-धूप और सक्रियता के कारण चिन्तित प्रिंसेस मरीया उन्हें अकेले छोड़कर जाने की हिम्मत नहीं कर पायी और उसने अपने जीवन में पहली बार पिता की आज्ञा की अवहेलना करने का साहस किया। उसने जाने से इन्कार कर दिया और बुज़ुर्ग प्रिंस उसपर बुरी तरह से बरस पड़े। उन्होंने उसे अपने प्रति अन्याय और ज़्यादती करनेवाला सब कुछ याद दिलाया। बेटी को दोषी ठहराने की कोशिश करते हुए बुज़ुर्ग प्रिंस ने कहा कि उसने उनके नाक में दम कर रखा है, कि उसने ही बेटे के साथ उनका झगड़ा करवाया है, कि वह उनके बारे में अपने दिल में बहुत ही कमीने सन्देह रखती है, कि उनके जीवन में कटुता पैदा करना ही उसके जीवन का लक्ष्य बन गया है और यह कहकर उसे अपने कमरे से बाहर निकाल दिया कि अगर वह यहां से नहीं जायेगी तो उनकी बला से। उन्होंने कहा कि वह उसके अस्तित्व को ही नहीं जानना चाहते और अब यह चेतावनी देते हैं कि वह भूलकर भी उनके सामने न आये। प्रिंसेस मरीया को तो यह शंका थी कि बुज़ुर्ग प्रिंस उसे ज़बर्दस्ती यहां से भिजवा देंगे, किन्तु उनके ऐसा न करने और केवल इतना ही कहने से कि वह भूलकर भी उनके सामने न आये, उसे ख़ुशी हुई। वह जानती थी कि यह इसी बात का प्रमाण है कि अपने दिल की गहराई में वह उसके यहां से न जाने, यहीं घर पर रहने से ख़ुश हैं।

नन्हे प्रिंस निकोलाई के जाने के एक दिन बाद बुज़ुर्ग प्रिंस अपनी पूरी फ़ौजी वर्दी पहनकर सेनापति से मिलने के लिये जाने को तैयार हो गये। बग्घी दरवाज़े पर आ भी गयी थी। प्रिंसेस मरीया ने देखा कि कैसे वह फ़ौजी वर्दी पहने और सभी तमग़े-पदक लगाये हुए घर से बाहर निकले तथा हथियारों से लैस किसानों और घरेलू भूदास नौकरों-चाकरों का निरीक्षण करने के लिये बाग़ में गये। प्रिंसेस मरीया खिड़की के पास बैठी थी और बाग़ से आ रही पिता की आवाज़ सुन रही थी। अचानक कई लोग, जिनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं, वीथि पर भागे आते दिखाई दिये।

प्रिंसेस मरीया भागती हुई पोर्च में गयी, वहां से उस संकरे रास्ते को लांघते हुए जिसके दोनों ओर फूलों के पौधे लगे थे, वीथि पर पहुंच गयी। जन-सैनिकों और घरेलू नौकरों-चाकरों की एक बड़ी भीड़

सामने की ओर से उसकी तरफ़ आ रही थी तथा इसके मध्य में कुछ लोग वर्दी पहने और तमग़े लगाये एक छोटे-से बुड्ढे को बग़लों से सहारा देकर उसे घसीटते-से ला रहे थे। प्रिंसेस मरीया भागकर पिता के पास गयी और लिंडन वृक्षों में से छनकर आ रहे प्रकाश के छोटे-छोटे धब्बों की हल्की रोशनी में यह नहीं तय कर पायी कि उनके चेहरे में क्या परिवर्तन हुआ है। वह केवल इतना ही देख पायी कि उनके चेहरे का कठोरता और दृढ़ता का पहलेवाला भाव अब भीरुता तथा विनम्रता में बदल गया है। बेटी को देखकर उन्होंने अपने असहाय होंठ हिलाये और खरखरी-सी आवाज़ में कुछ कहा। वह क्या कहना चाहते थे, यह समझ पाना सम्भव नहीं था। लोग उन्हें उठाकर उनके कमरे में ले गये और उसी सोफ़े पर लिटा दिया जिससे वह पिछले कुछ समय से इतना अधिक घबराते थे।

उसी रात को यहां लाये गये डाक्टर ने उनके बदन से रक्त निकाला और यह कहा कि बुज़ुर्ग प्रिंस के दायें पहलू को लक़वा मार गया है।

लीसिये गोरि में रहते जाना अधिकाधिक ख़तरनाक होता जा रहा था और बुज़ुर्ग प्रिंस को फ़ालिज होने के अगले दिन उन्हें बोगुचारोवो ले जाया गया। डाक्टर भी उनके साथ गया।

बुज़ुर्ग प्रिंस जब बोगुचारोवो पहुंचे तो नन्हा प्रिंस निकोलाई और उसका शिक्षक डेसाल मास्को जा चुके थे।

लक़वे के मारे हुए बुज़ुर्ग प्रिंस, जिनका स्वास्थ्य न तो कुछ सुधर रहा था और न बिगड़ ही रहा था, तीन सप्ताह तक प्रिंस अन्द्रेई द्वारा बोगुचारोवो में बनवाये गये नये मकान में बिस्तर पर पड़े रहे। उन्हें होश नहीं था और वह विकृत शव जैसे लगते थे। भौंहों और होंठों को ऐंठते हुए वह लगातार कुछ बुदबुदाते रहते थे और यह जानना सम्भव नहीं था कि उन्हें अपने इर्द-गिर्द की दुनिया की कोई चेतना है या नहीं। केवल एक ही चीज़ बिल्कुल स्पष्ट थी कि वह कोई मानसिक यातना सह रहे हैं और कुछ कहना चाहते हैं। लेकिन वह क्या कहना चाहते हैं, इसे कोई भी नहीं समझ सकता था – यह बीमार और अर्ध-चेतना की अवस्थावाले व्यक्ति की कोई सनक थी या इसका देश की स्थिति अथवा पारिवारिक मामलों से सम्बन्ध था?

डाक्टर का कहना था कि बुज़ुर्ग प्रिंस द्वारा व्यक्त की जानेवाली

बेचैनी का कोई विशेष अर्थ नहीं था, कि शारीरिक कारणों से ही ऐसा था। किन्तु प्रिंसेस मरीया यही सोचती थी (और यह तथ्य कि उसकी उपस्थिति में प्रिंस की बेचैनी हमेशा बढ़ जाती थी, उसके अनुमान की पुष्टि करता था) कि प्रिंस उससे कुछ कहना चाहते हैं। वह सम्भवतः शारीरिक और मानसिक – दोनों प्रकार की यातना सह रहे थे।

प्रिंस के स्वस्थ हो जाने की कोई आशा नहीं थी। उन्हें यहां से ले जाना सम्भव नहीं था। अगर वह रास्ते में ही मर गये तो क्या होगा? "क्या यही ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि अनका अन्त आ जाये, पूरी तरह से अन्त आ जाये?" प्रिंसेस मरीया कभी-कभी ऐसा सोचती है। वह दिन-रात, लगभग सोये बिना ही उनपर नज़र रखती और यह कहना बहुत भयानक है कि वह अक्सर उनके स्वास्थ्य में सुधार की आशा से नहीं, बल्कि उनके अन्त के लक्षणों की **कामना करते हुए** उनकी ओर देखती रहती।

प्रिंसेस मरीया के लिये इस भावना को स्वीकार करना बेशक अजीब था, मगर यह भावना उसके मन में थी। उसके लिये यह बात और भी ज़्यादा भयानक थी कि पिता की बीमारी के समय से (यदि इससे पहले ही, उस समय ही ऐसा नहीं था जब कुछ होने की सम्भावना का पूर्वानुमान लगाते हुए उसने उनके साथ लीसिये गोरि में ही रुकने का निर्णय किया था) उसके अन्तर में सो रही और भूली हुई इच्छाओं और आशाओं ने पलक खोल ली थी। पिता के प्रति डर से मुक्त होकर स्वतन्त्र जीवन बिताने, यहां तक कि प्यार और पारिवारिक सुख-सौभाग्य के जो विचार बरसों तक उसके दिमाग़ में नहीं आये थे, वे अब शैतान के प्रलोभन की भांति उसकी कल्पना में लगातार घूमते रहते थे। वह अपने दिमाग़ से ऐसे विचारों को दूर भगाने की चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करती, मगर ये विचार लगातार ही उसके सामने आते रहते कि **वैसा हो जाने के बाद** कैसे अपने जीवन को नयी करवट देगी। यह शैतान का प्रलोभन था और प्रिंसेस मरीया यह जानती थी। उसे मालूम था कि प्रार्थना ही इससे बचानेवाला हथियार है और उसने प्रार्थना करने का प्रयास किया। उसने प्रार्थना करने की मुद्रा बना ली, वह देव-प्रतिमा की ओर देख रही थी, प्रार्थना के शब्द बोल रही थी, मगर प्रार्थना कर नहीं पायी। उसने अनुभव किया कि

एक दूसरी ही दुनिया – सांसारिक, कठिन और स्वतन्त्र क्रियाशीलता की दुनिया ने उसे अपने वश में कर लिया है जो उस आत्मिक दुनिया के बिल्कुल उलट थी जिसमें वह अब तक बन्द रही थी और जिसमें प्रार्थना ही सबसे बड़ा सन्तोष था। वह न तो प्रार्थना कर पायी और न रो ही सकी, सांसारिक चिन्तायें उसके मन पर छा गयी थीं।

बोगुचारोवो में रुके रहना ख़तरनाक होता जा रहा था। सभी ओर से फ़्रांसीसियों के निकट आते जाने के समाचार मिल रहे थे और बोगुचारोवो से कोई पन्द्रह वेर्स्ता की दूरी पर फ़्रांसीसी लुटेरों ने किसी ज़मींदार की हवेली को लूट लिया था।

डाक्टर इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि प्रिंस को यहां से ले जाना चाहिये, स्थानीय कुलीन-मुखिया ने एक कर्मचारी को यह अनुरोध करने के लिये प्रिंसेस मरीया के पास भेजा कि जितनी भी जल्दी सम्भव हो, वे लोग यहां से चले जायें। इलाक़े के थानेदार ने बोगुचारोवो आकर यह कहते हुए इसी चीज़ पर बल दिया कि फ़्रांसीसी सिर्फ़ चालीस वेर्स्ता दूर रह गये हैं, कि गांवों में फ़्रांसीसी घोषणापत्र बांटे जा रहे हैं और यदि पिता जी को अपने साथ लेकर प्रिंसेस पन्द्रह तारीख़ तक नहीं चली जायेगी तो इसके नतीजे की सारी ज़िम्मेदारी ख़ुद प्रिंसेस पर ही होगी।

प्रिंसेस ने पन्द्रह तारीख़ को जाने का फ़ैसला कर लिया। दिन भर वह जाने की तैयारी की चिन्तायें करने और हिदायतें देने में व्यस्त रही जिनके लिये सब लोग उसी के पास आते थे। पिछली रातों की तरह चौदह तारीख़ की रात भी उसने कपड़े बदले बिना उस कमरे के बग़लवाले कमरे में बितायी जिसमें बीमार प्रिंस थे। कई बार आंख खुलने पर उसे पिता की आह-कराह, बुदबुदाहट, पलंग की चरमराहट और उनको करवट बदलवाने के लिये आनेवाले तीख़ोन और डाक्टर के क़दमों की आवाज़ सुनायी दी। कई बार उसने दरवाज़े के क़रीब जाकर आहट ली और उसे लगा कि दूसरी रातों की तुलना में इस रात वह सामान्य से अधिक ऊंचे बुदबुदा रहे हैं और बेचैनी से कहीं ज़्यादा करवटें ले रहे हैं। वह सो नहीं पायी, कई बार दरवाज़े के पास जाकर आहट लेती रही, उसने भीतर जाना चाहा, मगर ऐसा करते हुए झिझक गयी। यद्यपि वह बोल नहीं सकते थे, तथापि प्रिंसेस मरीया ने यह देखा था, वह यह जानती थी कि प्रिंस को अपने बारे में

चिन्ता का हर भाव कितना खटकता था। उसने इस बात की तरफ़ ध्यान दिया था कि कभी-कभी अनजाने ही उनके चेहरे पर जम जाने-वाली उसकी दृष्टि से वह बुरा मानते हुए अपनी दृष्टि दूसरी ओर कर लेते थे। वह जानती थी कि रात के इस अटपटे वक़्त में उनके कमरे में जाने से उन्हें झल्लाहट होगी।

किन्तु इस विचार के कारण कि वह इस दुनिया में नहीं रहेंगे, उसे पहले कभी इतना अधिक दुख, इतना भय अनुभव नहीं हुआ था। उसने पिता के साथ रहते हुए बितायी गयी अपनी सारी ज़िन्दगी पर नज़र दौड़ायी और उसे उनके हर शब्द और हर गति-विधि में अपने प्रति प्यार की अभिव्यक्ति की अनुभूति हुई। इन स्मृतियों के बीच में कभी-कभी शैतान के प्रलोभन भी उसकी कल्पना में उभर आते, ये विचार भी उसके दिमाग़ में आने लगते कि पिता की मौत के बाद वह अपने नये और स्वतन्त्र जीवन को क्या रूप देगी। किन्तु वह घिनाते हुए ऐसे विचारों को दूर भगा देती। सुबह होते-होते प्रिंस शांत हो गये और प्रिंसेस मरीया भी सो गयी।

वह देर से जागी। आंख खुलने पर लोगों में जो निश्छलता होती है, उसी ने बिल्कुल अच्छी तरह से उसे यह स्पष्ट कर दिया कि पिता की बीमारी में उसे किस चीज़ में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है। वह जागी, उसने पिता के कमरे की तरफ़ कान लगा दिये और उन्हें कराहते सुनकर आह भरते हुए अपने आपसे कहा कि स्थिति वैसी ही है, जैसी थी।

"किन्तु परिवर्तन हो ही क्या सकता था? मैं क्या चाहती थी? मैं उनकी मौत चाहती हूं!" खुद अपने से घृणा करते हुए वह चिल्ला उठी।

उसने कपड़े पहने, हाथ-मुंह धोया, प्रार्थना की और बाहर आयी। दरवाज़े पर घोड़ों के बिना बग्घियां खड़ी थीं जिनमें सामान लादा जा रहा था।

सुबह कुनकुनी और भूरी-भूरी थी। प्रिंसेस मरीया अपनी मानसिक तुच्छता पर लगातार संत्रस्त होती और पिता के कमरे में जाने से पहले अपने विचारों को व्यवस्थित करने का प्रयास करती हुई बाहर ही खड़ी रही।

डाक्टर ज़ीने से उतरकर उसके पास आया।

"आज वह कुछ अच्छे हैं," डाक्टर ने कहा। "मैं आप ही को

ढूंढ़ रहा था। वह जो कुछ कहते हैं, उसे थोड़ा-बहुत समझा जा सकता है, उनका मस्तिष्क कुछ साफ़ है। चलिये, वह आपको बुला रहे हैं..."

यह समाचार सुनकर प्रिंसेस मरीया का दिल इतने ज़ोर से धड़क उठा कि उसके चेहरे का रंग उड़ गया और इस डर से कि कहीं वह गिर न पड़े, उसने दरवाज़े का सहारा ले लिया। वह इस वक़्त उनके सामने जाये, उनसे बातचीत करे, उनकी दृष्टि को अपने चेहरे पर अनुभव करे, जबकि उसका दिल ऐसे भयानक और अपराधपूर्ण विचारों से भरा हुआ था – उसके लिये प्रसन्नतापूर्ण और भयानक यातना था।

"आइये चलें," डाक्टर ने कहा।

प्रिंसेस मरीया पिता के कमरे में दाख़िल हुई और उनके पास गयी। वह तकिये के सहारे ऊपर को उठे हुए चित लेटे थे और बैंगनी, गंठीली नसोंवाले उनके छोटे-छोटे और हड़ीले हाथ रज़ाई पर टिके हुए थे। उनकी बायीं आंख सीधी अपने सामने देख रही थी, दायीं आंख की दृष्टि तिरछी थी और उनकी भौंहें तथा होंठ गतिहीन थे। वह बहुत ही दुबले-पतले, छोटे-से और दयनीय प्रतीत हो रहे थे। ऐसा लगता था कि उनका चेहरा सूख या पिघल गया है, उनके नक़्श छोटे हो गये हैं। प्रिंसेस मरीया ने उनके पास जाकर उनका हाथ चूमा। प्रिंस के बायें हाथ ने उसके हाथ को ऐसे दबाया जो यह ज़ाहिर करता था कि वह बहुत देर से उसकी राह देख रहे हैं। उन्होंने प्रिंसेस के हाथ को झटका दिया और उनकी भौंहें तथा होंठ झल्लाहट से हिले-डुले।

प्रिंसेस मरीया यह समझने की कोशिश करते हुए कि वह क्या चाहते हैं, सहमी-सहमी दृष्टि से उनकी तरफ़ देख रही थी। प्रिंसेस ने जब इस तरह से अपनी जगह बदल ली कि प्रिंस की बायीं आंख के लिये उसका चेहरा देखना सम्भव हो गया तो वह कुछ क्षण तक उसके चेहरे पर दृष्टि जमाये रहकर शान्त हो गये। इसके बाद उनकी ज़बान और होंठ हिले-डुले, अस्पष्ट-सी ध्वनि सुनायी दी और वह सम्भवतः इस चीज़ से डरते हुए कि प्रिंसेस उनकी बात नहीं समझ पायेगी, सहमी-सहमी और मिन्नत करती-सी नज़र से उसे देखते हुए बोलने लगे।

प्रिंसेस पूरी तरह से अपना ध्यान उनपर केन्द्रित किये हुए उन्हें देख रही थी। वह जिस बहुत ही अटपटे ढंग से अपनी ज़बान को हिला-

डुला रहे थे, उसे देखकर प्रिंसेस अपनी नज़रें झुकाने को मजबूर हो गयी और उसने बड़ी मुश्किल से गले से बाहर आने को छटपटाती सिसकियों को दबाया। उन्होंने अपने शब्दों को कई बार दोहराते हुए कुछ कहा। प्रिंसेस मरीया उन्हें समझ नहीं पायी, किन्तु उसने यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि वह क्या कह रहे हैं और उसने प्रिंस द्वारा उच्चारित ध्वनियों को प्रश्नात्मक ढंग से दोहराया।

"आ-आ ... तड़ ... तड़ ..." उन्होंने कई बार यही कुछ कहा।

इन शब्दों को किसी तरह भी समझना सम्भव नहीं था। डाक्टर को लगा कि उसने उनके शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा लिया है और इसलिये उनके शब्दों को दोहराकर पूछा – **प्रिंसेस डर रही है?** प्रिंस ने इन्कार करते हुए सिर हिलाया और फिर से अपने उन्हीं शब्दों को दोहराया ...

"**आत्मा, आत्मा तड़पती है,**" प्रिंसेस ने इन शब्दों को बूझते हुए कहा। उन्होंने एक अजीब-सी ऊंची आवाज़ निकालते हुए इस बात की पुष्टि की कि वह यही कहना चाहते थे और प्रिंसेस का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे अपनी छाती के भिन्न भागों पर ऐसे टिकाने लगे मानो यह ढूंढ़ रहे हों कि उसके लिये सही जगह कौन-सी है।

"मेरे सारे विचार! तुम्हारे बारे में ही हैं ... मेरे सारे विचार," यह विश्वास हो जाने पर कि उनकी बात समझी जा रही है, उन्होंने अधिक अच्छे और समझ में आनेवाले ढंग से कहा। प्रिंसेस मरीया ने सिसकियों और आंसुओं को छिपाने के लिये अपना सिर उनके हाथ के साथ सटा दिया।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने उसके बालों पर धीरे-धीरे हाथ फेरा।

"मैं रात भर तुम्हें बुलाता रहा ..." प्रिंस ने कहा।

"काश मुझे मालूम होता ..." उसने रोते हुए जवाब दिया। "मेरी आपके कमरे में आने की हिम्मत नहीं हुई।"

पिता ने प्यार से बेटी का हाथ दबाया।

"तुम सो नहीं रही थीं?"

"नहीं, मैं सो नहीं रही थी," प्रिंसेस मरीया ने इन्कार करते हुए सिर हिलाया। अनजाने ही पिता के बोलने के ढंग का अनुकरण करते हुए वह भी अधिकतर संकेतों से ही अपनी बात कहने का प्रयास

कर रही थी और उन्हीं की भांति मानो कठिनाई से अपनी ज़बान को हिला पा रही थी।

"बहुत प्यारी... या बड़ी प्यारी..." प्रिंसेस मरीया स्पष्ट रूप से यह समझ नहीं पायी; किन्तु उनकी आंखों के भाव से ऐसा लगता था कि सम्भवतः बहुत ही अधिक प्यार को अभिव्यक्ति देनेवाला कोई शब्द कहा गया है, जैसाकि उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। "तुम आईं क्यों नहीं?"

"और मैं इनकी मौत, इनकी मौत चाह रही थी!" प्रिंसेस मरीया सोच रही थी। प्रिंस कुछ देर चुप रहे।

"धन्यवाद तुम्हें... प्यारी बिटिया... सभी कुछ के लिये, सभी कुछ के लिये... क्षमा कर देना... धन्यवाद!.." और उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। "मेरे प्यारे अन्द्रेई को बुलवाइये," उन्होंने अचानक कहा और यह कहने के बाद उनके चेहरे पर बच्चे जैसी भीरुता और अविश्वास का भाव झलक उठा। वह तो मानो खुद भी जानते थे कि उनका यह अनुरोध बेमानी है। प्रिंसेस मरीया को तो कम से कम ऐसा ही प्रतीत हुआ।

"मेरे पास उसका ख़त आया है," प्रिंसेस मरीया ने उत्तर दिया।

उन्होंने आश्चर्य और भीरुता से बेटी की तरफ़ देखा।

"वह कहां है?"

"वह फ़ौज में है, प्यारे पिता जी, वह स्मोलेन्स्क में है।"

बुज़ुर्ग प्रिंस आंखें मूंदे हुए देर तक चुप रहे। इसके बाद मानो अपने सन्देह का उत्तर देते और इस बात की पुष्टि करते हुए कि वह सब कुछ समझ गये हैं और उन्हें सब कुछ याद आ गया है, उन्होंने सिर झुकाकर आंखें खोल लीं।

"हां," उन्होंने स्पष्ट और धीमी आवाज़ में कहा। "रूस बरबाद हो गया! उन्होंने उसे बरबाद कर डाला!" इतना कहकर वह फिर से सिसकने लगे और उनकी आंखों से आंसू बह चले। प्रिंसेस मरीया भी अपने को वश में न रख सकी और पिता के चेहरे की ओर देखते हुए रोने लगी।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने फिर से आंखें मूंद लीं। उनकी सिसकियां बन्द हो गयीं। उन्होंने हाथ से आंखों की तरफ़ इशारा किया। तीख़ोन ने उनका आशय समझते हुए उनके आंसू पोंछ दिये।

इसके बाद उन्होंने फिर से आंखें खोलीं और कुछ कहा जिसे बहुत देर तक कोई भी नहीं समझ पाया। आख़िर तीख़ोन ने ही इन शब्दों को समझा और बताया कि प्रिंस ने क्या कहा है। प्रिंसेस मरीया ने समझ में न आनेवाले पिता के इन शब्दों को उनके उन्हीं शब्दों के साथ जोड़ने की कोशिश की, जो उन्होंने एक ही क्षण पहले कहे थे। वह सोच रही थी कि वह रूस की या फिर प्रिंस अन्द्रेई की या फिर ख़ुद उसकी, अपने पोते या अपनी मौत की चर्चा कर रहे हैं। इसीलिये वह इन शब्दों का अनुमान नहीं लगा पायी।

"अपनी सफ़ेद पोशाक पहन लो, मुझे वह बहुत अच्छी लगती है," उन्होंने कहा।

इन शब्दों को समझने के बाद प्रिंसेस मरीया और भी ज़ोर से सिसकने लगी और डाक्टर उससे यह अनुरोध करते हुए कि वह शान्त हो जाये तथा यहां से रवाना होने की तैयारी करे, प्रिंसेस का हाथ थामकर उसे बरामदे में ले गया। प्रिंसेस जब बुज़ुर्ग प्रिंस के कमरे से बाहर चली गयी तो वह पुनः क्रोध से त्योरी चढ़ाते हुए बेटे, युद्ध और सम्राट की चर्चा करने लगे, अपनी खरखरी आवाज़ को ऊंचा उठाने लगे और उन्हें दूसरी और आख़िरी बार लक़वा मार गया।

प्रिंसेस मरीया बरामदे में रुक गयी। दिन निखर गया था, धूप खिल गयी थी और गर्मी हो गयी थी। वह पिता के प्रति अपने अत्य-धिक प्रेम, तीव्रानुराग के अतिरिक्त, जिसकी, उसे लगता था, उसे अब तक चेतना नहीं हुई थी, वह और कुछ भी न तो समझ सकती थी, न सोच सकती थी और न हीं अनुभव कर सकती थी। वह लपक-कर बाग़ में चली गयी और रोते-सुबकते हुए प्रिंस अन्द्रेई द्वारा रोपे गये लिंडन नौउम्र वृक्षों की वीथियों से गुज़रकर नीचे तालाब की तरफ़ भाग गयी।

"हां... **मैं... मैं... मैं... मैं** उनकी मृत्यु चाहती थी। हां, मैं चाहती थी कि सब जल्दी से ख़त्म हो जाये... **मैं** शान्त होना चाहती थी... लेकिन मेरा क्या होगा? जब वही नहीं रहेंगे तो किस काम आयेगी मेरी शान्ति।" प्रिंसेस मरीया तेज़ क़दमों से बाग़ में इधर-उधर आती-जाती और बहुत ज़ोर की सिसकियों के कारण कसकती छाती को हाथों से दबाते हुए ऊंचे-ऊंचे बुदबुदा रही थी। बाग़ का चक्कर लगाने और इस तरह फिर से घर के पास पहुंचने पर उसने कुमारी बुर्येन

(जो बोगुचारोवो में ही रह रही थी तथा वहां से जाना नहीं चाहती थी) और एक अपरिचित पुरुष को अपनी ओर आते देखा। यह इस इलाक़े का कुलीन-मुखिया था जो ख़ुद इस उद्देश्य से प्रिंसेस के पास आया था कि उसे यहां से बहुत जल्द ही चले जाने की आवश्यकता को स्पष्ट कर दे। प्रिंसेस मरीया उसकी बात सुन रही थी, मगर कुछ भी समझ नहीं पा रही थी ; वह उसे घर में ले गयी, उसके लिये नाश्ते की व्यवस्था की और उसके पास बैठ गयी। कुछ देर बाद कुलीन-मुखिया से क्षमा मांगकर वह पिता के कमरे के क़रीब गयी। चेहरे पर चिन्ता का गहरा भाव लिये डाक्टर कमरे से बाहर आया और उससे बोला :

"यहां से हट जाइये, प्रिंसेस, झटपट हट जाइये, चली जाइये!"

प्रिंसेस मरीया फिर से बाग़ में चली गयी और टीले के दामन में तालाब के निकट घास पर जा बैठी, जहां उसे कोई भी नहीं देख सकता था। वह कितनी देर तक वहां बैठी रही, यह नहीं जानती थी। वीथि पर भागी आ रही किसी औरत के पांवों की आहट से वह चौंकी। वह उठी और उसने देखा कि उसकी नौकरानी दुन्याशा, जो सम्भवतः उसी को बुलाने आयी थी, अपनी मालकिन को देखकर मानो सहमी हुई जहां की तहां ठिठक गयी थी।

"प्रिंसेस, कृपया ... प्रिंस ..." दुन्याशा ने टूटती आवाज़ में कहा।

"अभी, अभी चल रही हूं," प्रिंसेस ने दुन्याशा को अपनी बात पूरी करने का समय न देते और उसकी तरफ़ न देखते हुए जल्दी से जवाब दिया और घर की तरफ़ भाग चली।

"प्रिंसेस, भगवान की ऐसी ही इच्छा थी। आप हिम्मत से काम लें," घर के दरवाज़े पर उसके इन्तज़ार में खड़े कुलीन-मुखिया ने कहा।

"मुझसे कुछ नहीं कहिये! यह झूठ है!" वह ग़ुस्से से कुलीन-मुखिया पर चिल्लायी। डाक्टर ने उसे रोकना चाहा। वह उसे एक तरफ़ हटाते हुए पिता के कमरे की तरफ़ भाग गयी। "सहमे चेहरोंवाले ये लोग मुझे किसलिये रोक रहे हैं? मुझे किसी की ज़रूरत नहीं! ये सब यहां क्या कर रहे हैं?" उसने दरवाज़ा खोला और कुछ देर पहले तक के इस अध-अंधेरे कमरे में सूरज के प्रखर प्रकाश से स्तम्भित रह गयी। कमरे में उसकी आया और दूसरी औरतें जमा थीं। प्रिंसेस को रास्ता देने के लिये वे सभी पलंग के पास से हट गयीं। प्रिंस पहले की तरह ही पलंग पर लेटे हुए थे ; किन्तु उनके शान्त चेहरे पर कठोरता

के भाव के कारण प्रिंसेस कमरे की दहलीज़ पर ही रुक गयी।

"नहीं, उनका देहान्त नहीं हुआ, ऐसा नहीं हो सकता!" प्रिंसेस मरीया ने अपने आपसे कहा, उनके पास गयी और अपने पर हावी हो गये डर को दबाते हुए उसने उनके गाल पर होंठ रख दिये। किन्तु उसी क्षण वह उनसे दूर हट गयी। एक क्षण में ही प्यार का वह आवेग, जो वह अपने भीतर अनुभव कर रही थी, लुप्त हो गया और उसके सामने अब जो कुछ था, उसके प्रति संत्रास की भावना ने उसकी जगह ले ली। "नहीं, नहीं, वह नहीं रहे! वह नहीं रहे, लेकिन वहीं, उसी जगह पर जहां वह थे, अब कोई पराया और शत्रुतापूर्ण, दिल दहलाने तथा घृणा पैदा करनेवाला कोई भयानक रहस्य है..." और हाथों से चेहरे को ढंककर प्रिंसेस डाक्टर की बांहों में गिर पड़ी, जो उसे सम्भाले था।

तीख़ोन और डाक्टर की उपस्थिति में औरतों ने उस शव को नहलाया, जो कभी प्रिंस बोल्कोन्स्की थे, सिर पर रूमाल बांध दिया ताकि खुला हुआ मुंह अकड़ न जाये और एक अन्य रूमाल से उनकी टांगों को एकसाथ बांध दिया। इसके बाद पदकों-तमग़ों के साथ फ़ौजी वर्दी पहनाकर उन्होंने छोटे-से, मुरझाये हुए शरीर को मेज़ पर लिटा दिया। भगवान ही जानते हैं कि कब और किसने इस सब की चिन्ता की, किन्तु सब कुछ मानो अपने आप ही हो गया। रात होते ही ताबूत के गिर्द मोमबत्तियां जल रही थीं, ताबूत आवरण से ढक दिया गया था, फ़र्श पर जूनिपर की टहनियां बिखरी हुई थीं, मृत के सिकुड़े-से सिर के नीचे छपा हुआ प्रार्थना-पत्र रख दिया गया था और कोने में बैठा हुआ भजनीक भजन-संहिता का पाठ कर रहा था।

जिस प्रकार मृत घोड़े के इर्द-गिर्द घोड़े पैर पटकते हैं, रेल-पेल करते हैं, नथुने फरफराते हैं, उसी प्रकार ताबूत के इर्द-गिर्द अपने और पराये लोगों की भीड़ जमा थी। इनमें कुलीन-मुखिया था, ग्राम-मुखिया भी था और किसान औरतें भी थीं। सभी की दृष्टि सहमी-सहमी और डरी-डरी-सी थी, सभी अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते थे, सिर झुकाते थे और बुज़ुर्ग प्रिंस का ठण्डा और अकड़ा हुआ हाथ चूमते थे।

प्रिंस अन्द्रेई के बोगुचारोवो में जाकर बसने के पहले यह गांव किसी ऐसे जागीरदार या बड़े ज़मींदार के स्वामित्व में रहा था जो खुद वहां नहीं रहता था। इसलिये बोगुचारोवो के किसान लीसिये गोरि के किसानों की तुलना में दूसरे ही ढंग के थे। उनकी बातचीत का ढंग, पोशाक और मिज़ाज भी दूसरा था। वे स्तेपी के किसान कहलाते थे। जब कभी वे फ़सल कटाई या तालाब अथवा खाइयां खोदने के काम में मदद करने के लिये लीसिये गोरि आते तो बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की उनकी काम करने की क्षमता की प्रशंसा करते, किन्तु उनके उजड्डपन या जंगलीपन के लिये वह उन्हें पसन्द नहीं करते थे।

बोगुचारोवो में अपने अन्तिम वास के समय प्रिंस अन्द्रेई ने वहां अस्पताल और स्कूल बनवाये और उनके लगान में कमी की। मगर इससे उनके स्वभाव में कुछ नर्मी आने के बजाय उनके चरित्र के वे लक्षण और अधिक उग्र हो गये जिन्हें बुज़ुर्ग प्रिंस जंगलीपन या उजड्डपन की संज्ञा देते थे। उनके बीच हमेशा ही कुछ अस्पष्ट-सी अफ़वाहें फैली रहती थीं। कभी तो वे यह कहते कि उन सबको कज़्ज़ाक बनाया जा रहा है या यह कि उन सबको किसी दूसरे धर्म में शामिल किया जा रहा है या फिर वे ज़ार के किसी घोषणापत्र की चर्चा करने लगते या सन् १७९७ में ज़ार पावेल पेत्रोविच के सिंहासन पर बैठने का ज़िक्र करते (जब उनके कहने के मुताबिक़ भूदासों को मुक्ति दे दी गयी थी, मगर ज़मींदारों ने ऐसा नहीं होने दिया) या फिर ऐसा कहते कि सात साल बाद प्योत्र फ्योदोरोविच ज़ार बन जायेंगे तथा उस वक़्त सबको आज़ादी मिल जायेगी और हर चीज़ इतनी आसान तथा सीधी-सादी होगी कि किसी तरह के क़ानून-क़ायदे की ज़रूरत नहीं रहेगी। युद्ध, बोनापार्ट और उसके हमले की अफ़वाहें भी ईसाई धर्म-विरोधी, संसार के अन्त और पूरी आज़ादी के बारे में उनकी अस्पष्ट धारणाओं के साथ जुड़ी हुई थीं।

बोगुचारोवो के आस-पास अधिकतर गांव या तो राज्य के या ऐसे थे जिनके किसान ज़मींदारों को लगान देते थे। यहां रहनेवाले ज़मींदार बहुत ही कम थे। घरेलू नौकरों-चाकरों और पढ़े-लिखे लोगों की संख्या भी बहुत कम थी। इसीलिये दूसरी जगहों की तुलना में यहां

के किसानों के जीवन में रूसी लोक-जीवन की वे रहस्यपूर्ण धारायें कहीं अधिक प्रत्यक्ष और सशक्त थीं जिनके कारण और जिनका महत्त्व समकालीनों के लिये एक पहेली ही बने रहते हैं। बीस साल पहले यहां के किसानों के किन्हीं गुनगुनी नदियों के तटों पर जा बसने की सनक या भेड़चाल भी एक ऐसी ही पहेली थी। सैकड़ों किसान, जिनमें बोगुचारोवो के किसान भी शामिल थे, अचानक अपने ढोर-डंगर बेचकर अपने परिवारों के साथ कहीं दक्षिण-पूरब को जाने लगे। सागर के पार कहीं उड़ जानेवाले पक्षियों की भांति ये लोग अपने बीवी-बच्चों के साथ दक्षिण-पूरब की तरफ़ उमड़ पड़े जहां इनमें से कोई भी पहले नहीं गया था। ये बड़े-बड़े क़ाफ़िले बनाकर, भूदासता से मुक्ति पाकर अकेले-अकेले या फिर भागकर ही छकड़ों, घोड़ा-गाड़ियों में या पैदल गुनगुनी नदियों की तरफ़ रवाना हो गये। उनमें से बहुतों को पकड़कर सज़ायें दी गयीं, साइबेरिया में निर्वासित किया गया, ठण्ड और भूख से बहुत-से रास्ते में मर गये, बहुत-से अपने आप ही वापस आ गये और यह भेड़चाल वैसे ही ख़त्म हो गयी जैसे किसी स्पष्ट कारण के बिना आरम्भ हुई थी। किन्तु इन लोगों में इस तरह की अन्तर्धाराओं का प्रवाह बना रहा और वे किसी नई घटना के लिये शक्ति जुटाती रहीं जो इसी तरह अजीब ढंग से, अचानक और साथ ही सीधे-सादे, स्वाभाविक और बड़े वेग से एक नये रूप में प्रकट हो। इस समय, सन् १८१२ में किसानों के घनिष्ठ सम्पर्क में रहनेवाला कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से यह देख सकता था कि ये अन्तर्धारायें बड़ी तीव्रता से अपना काम कर रही थीं और बहुत जल्द कोई न कोई नया गुल खिलनेवाला था।

बुज़ुर्ग प्रिंस के देहान्त के कुछ ही समय पहले बोगुचारोवो आनेवाले अल्पातिच ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि किसानों में बेचैनी फैली हुई है और लीसिये गोरि के इर्द-गिर्द के साठ वेर्स्ता के इलाक़े में जो कुछ हो रहा था यानी किसान अपने घर-बार छोड़कर जा रहे थे (अपने गांवों को कज़्ज़ाकों के हवाले करके) बोगुचारोवो के स्तेपी इलाक़े में स्थिति इससे भिन्न थी। सुनने में आया था कि यहां के किसानों ने फ़ांसीसियों के साथ सांठ-गांठ कर ली थी, फ़ांसीसियों से उन्हें कुछ परचे मिलते थे जो एक किसान से दूसरे के पास पहुंचते थे और वे अपने घरों को छोड़कर नहीं जा रहे थे। वफ़ादार भूदास नौकरों-चाकरों

से उसे यह भी मालूम हुआ था कि कार्प नाम का एक किसान, जिसका गांववालों में बड़ा असर-रसूख़ था, कुछ ही दिन पहले सरकारी घोड़ा-गाड़ी में गांव वापस लौटा था और यह ख़बर लाया था कि जिन गांवों से लोग चले जाते हैं, कज़्ज़ाक उन्हें तबाह कर डालते हैं, किन्तु फ़्रांसीसी उनके ख़िलाफ़ किसी तरह की कार्रवाई नहीं करते हैं। अल्पातिच को यह भी पता चल गया था कि एक अन्य किसान विस्लोऊख़ोवो गांव से, जहां फ़्रांसीसी पड़ाव डाले थे, फ़्रांसीसी जनरल द्वारा दिया गया एक परचा भी लाया है जिसमें गांववासियों से यह कहा गया है कि उन्हें किसी भी तरह की हानि नहीं पहुंचायी जायेगी और अगर वे अपने घर-बार छोड़कर नहीं जायेंगे तो उनसे जो कुछ भी लिया जायेगा, उन्हें उसके दाम दिये जायेंगे। इस बात के प्रमाण के रूप में यह किसान विस्लोऊख़ोवो गांव से एक सौ रूबलों के नोट लेकर आया था (उसे यह मालूम नहीं था कि ये नोट जाली थे) जो उसे सूखी घास के लिये पेशगी दिये गये थे।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो अल्पातिच को यह मालूम थी कि उसी दिन, जिस दिन उसने ग्राम-मुखिया को बोगुचारोवो से प्रिंसेस का सामान ले जाने के लिये घोड़ा-गाड़ियों की व्यवस्था करने को कहा, उसी सुबह को गांववालों की एक सभा हुई जिसमें अभी यहां से न जाने और इन्तज़ार करने का निर्णय किया गया। किन्तु वक़्त हाथ से निकलता जा रहा था। बुज़ुर्ग प्रिंस के देहान्त के दिन यानी १५ अगस्त को ही कुलीन-मुखिया ने इस बात का आग्रह किया कि प्रिंसेस मरीया इसी दिन यहां से चली जाये, क्योंकि हालत ख़तरनाक होती जा रही थी। उसने कहा कि १६ अगस्त के बाद वह अपने ऊपर किसी भी तरह की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। बुज़ुर्ग प्रिंस की मृत्यु के दिन शाम के वक़्त वह यह वायदा करके यहां से चला गया कि अगले दिन प्रिंस के दफ़नाये जाने के समय तक वापस आ जायेगा। लेकिन वह अगले दिन आ नहीं सका, क्योंकि उसे यह ख़बर मिली कि फ़्रांसीसी अचानक ही आगे बढ़ने लगे हैं और वह बड़ी मुश्किल से ही अपने परिवार तथा क़ीमती चीज़ों को अपनी जागीर से ले जा पाया।

द्रोन नाम का मुखिया, जिसे बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की प्यार से द्रोनुश्का कहते थे, तीस साल से बोगुचारोवो का प्रबन्धक था।

द्रोन शारीरिक और मानसिक दृष्टि से ऐसे मज़बूत किसानों में से एक था जो मर्द बनते ही बुज़ुर्गों की तरह लम्बी दाढ़ी बढ़ा लेते हैं और फिर किसी भी तरह के परिवर्तन के बिना साठ-सत्तर वर्ष की आयु तक इसी तरह जीते रहते हैं और इस उम्र तक न तो उनका एक भी बाल सफ़ेद होता है और न एक भी दांत टूटता है तथा वह साठ साल के हो जाने पर भी वैसे ही हृष्ट-पुष्ट और सीधे-सतर बने रहते हैं जैसे कि तीस साल की उम्र में।

गुनगुनी नदियों के तटों पर जा बसने की भेड़चाल (जिसमें दूसरों की भांति द्रोन ने भी भाग लिया था) की समाप्ति के फ़ौरन बाद उसे बोगुचारोवो का मुखिया और कार्य-निरीक्षक बना दिया गया था। तब से अब तक यानी पिछले तेईस वर्षों से वह बहुत ही ईमानदारी से अपने ये दोनों कर्त्तव्य निभाता रहा था। किसान लोग मालिक से भी ज़्यादा उससे डरते थे। बुज़ुर्ग और जवान प्रिंस बोल्कोन्स्की तथा कारिन्दा भी उसका आदर करते थे और मज़ाक़ में उसे मन्त्री कहते थे। अपने इस पूरे सेवाकाल में द्रोन एक बार भी न तो नशे में धुत्त हुआ और न बीमार पड़ा। न तो उनींदी रातों के बाद और न किसी भी तरह का कठोर श्रम करने के पश्चात ही उसने कभी ज़रा-सी थकान ज़ाहिर की थी और अनपढ़ होने पर भी वह न तो आटे से लदे ढेरों छकड़ों की बिक्री से प्राप्त पैसों या उनके वज़न का कभी हिसाब भूला था और न बोगुचारोवो के खेतों में उगनेवाली गेहूं की फ़सल की एक बाली ही उसने वहां पड़ी रहने दी थी।

उजाड़ दिये गये लीसिये गोरि गांव से यहां आनेवाले अल्पातिच ने बुज़ुर्ग प्रिंस के दफ़नाये जाने के दिन इसी द्रोन को अपने पास बुलवाया और यह आदेश दिया कि वह प्रिंसेस की बग्घियों के लिये बारह घोड़ों और उस सामान के लिये अठारह घोड़ा-गाड़ियों की व्यवस्था कर दे, जिन्हें प्रिंसेस अपने साथ ले जानेवाली थी। बेशक यह सही था कि यहां के किसान लगान देनेवाले किसान थे, फिर भी अल्पातिच के मतानुसार इस आदेश की पूर्त्ति में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये थी, क्योंकि बोगुचारोवो में दो सौ तीस ऐसे घर थे जो ख़ासे ख़ुशहाल थे। किन्तु मुखिया द्रोन ने यह आदेश सुनकर चुपचाप नज़रें झुका लीं। अल्पातिच ने उसे उन किसानों के नाम बताये जिन्हें वह जानता था और जिनसे उसने घोड़ा-

गाड़ियां लेने का आदेश दिया।

द्रोन ने जवाब दिया कि इन किसानों के घोड़े भाड़े पर गये हुए हैं। तब अल्पातिच ने दूसरे किसानों के नाम लिये। द्रोन के कहने के मुताबिक़ इनके पास भी घोड़े नहीं थे – कुछ के घोड़े सरकारी घोड़ा-गाड़ियों में जुते हुए हैं, दूसरों के घोड़े मरियल हैं और कुछ के घोड़े चारा न मिलने के कारण मर गये हैं। द्रोन के मतानुसार घोड़ा-गाड़ियों के लिये ही नहीं, बल्कि बग्घियों में जोतने के लिये भी घोड़े जुटाना सम्भव नहीं होगा।

अल्पातिच ने बहुत ध्यान से द्रोन की तरफ़ देखा और उसकी त्योरी चढ़ गयी। जैसे द्रोन किसानों का एक बढ़िया मुखिया था, वैसे ही अल्पातिच भी बढ़िया कारिन्दा था और उसने व्यर्थ ही तो बीस साल तक प्रिंस की जागीरों का प्रबन्ध नहीं किया था। वह अपने सहज ज्ञान से उन लोगों की आवश्यकताओं और मनोभावनाओं को समझ पाने की उच्चतम क्षमता रखता था और इसीलिये एक श्रेष्ठ कारिन्दा था। द्रोन को ग़ौर से देखते ही उसे यह समझने में देर न लगी कि द्रोन के उत्तर उसके अपने विचारों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि बोगुचारोवो के किसानों के उस सामान्य मूड की अभिव्यक्ति थे जो मुखिया पर भी हावी हो गया था। किन्तु इसके साथ वह यह भी जानता था कि द्रोन, जिसने ख़ासे पैसे जमा कर लिये थे और जिसे गांववाले नफ़रत करते थे, उसे एक तरफ़ मालिकों और दूसरी तरफ़ किसानों की नाव में सवार व्यक्ति की तरह डांवांडोल होना चाहिये। उसने द्रोन की दृष्टि में यही दुविधा देखी और इसलिये त्योरी चढ़ाकर वह उसके और क़रीब हो गया।

"मेरे दोस्त द्रोन, तुम ध्यान से मेरी बात सुनो!" उसने कहा। "तुम मुझसे बेसिर-पैर की बातें नहीं करो। छोटे प्रिंस, जनाब अन्द्रेई निकोलायेविच ने ख़ुद मुझे यह हुक्म दिया था कि सभी लोगों को यहां से भेज दिया जाये और वे दुश्मन के साथ न रहने पायें। ज़ार का भी यही फ़रमान है। जो यहां रुकेगा, वह ज़ार के साथ ग़द्दारी करेगा। सुन रहे हो न?"

"जी, सुन रहा हूं," द्रोन ने नज़र ऊपर उठाये बिना ही जवाब दिया।

अल्पातिच को इस जवाब से सन्तोष नहीं हुआ।

"अरे द्रोन, इसका बुरा नतीजा होगा!" अल्पातिच ने अफ़सोस से सिर हिलाते हुए कहा।

"आप मालिक हैं," द्रोन ने बुझी-सी आवाज़ में जवाब दिया।

"अरे द्रोन, यह बेसिर-पैर की बातें छोड़ो!" अल्पातिच कुरते के पीछे छाती पर से हाथ बाहर निकालते और बड़ी गम्भीरता से द्रोन के पांवों के नीचे धरती की ओर इशारा करते हुए बोला। "मैं न सिर्फ़ तुम्हें ही आर-पार देख सकता हूं, बल्कि तुम्हारे पांवों के नीचे पाताल तक मेरी नज़र पहुंचती है," द्रोन के पांवों के नीचे धरती की ओर देखते हुए उसने बात पूरी की।

द्रोन कुछ घबरा-सा गया, उसने नज़र बचाकर अल्पातिच की तरफ़ देखा और फिर से आंखें झुका लीं।

"तुम यह सब बकवास बन्द करो, लोगों से कह दो कि मास्को जाने की तैयारी करें, कल सुबह तक प्रिंसेस का सामान ले जाने के लिये घोड़ा-गाड़ियों का प्रबन्ध कर दो और तुम ख़ुद उनकी सभा-वभा में भाग लेने नहीं जाना। सुना तुमने?"

द्रोन अचानक उसके पैरों पर गिड़ पड़ा।

"याकोव अल्पातिच, मुझे नौकरी से बर्ख़ास्त कर दीजिये! मुझसे चाबियां ले लीजिये, प्रभु ईसा के नाम पर मेरी छुट्टी कर दीजिये।"

"तुम यह बकवास बन्द करो," अल्पातिच ने बड़ी कड़ाई से कहा। "मेरी तो तुम्हारे पांवों के नीचे पाताल तक नज़र पहुंचती है," उसने यह जानते हुए इन शब्दों को दोहराया कि मधुमक्खियों के पालन में उसकी दक्षता, कि जई की बुवाई के बारे में उसके ज्ञान तथा बीस वर्षों तक उसपर बुज़ुर्ग प्रिंस की कृपादृष्टि ने उसे जादूगर होने की ख्याति प्रदान कर दी है और यह कि केवल जादूगर ही पाताल तक देख पाने की क्षमता रखते हैं।

द्रोन उठकर खड़ा हो गया और उसने कुछ कहना चाहा, किन्तु अल्पातिच ने उसे बीच में ही टोक दिया।

"तुम लोगों के दिमाग़ में यह क्या पागलपन आ गया है? बताओ तो?.. क्या सोचते हो तुम लोग? बताओ तो?"

"मैं लोगों को कैसे समझाऊं?" द्रोन ने जवाब दिया। "कुछ भी सुनने को तैयार नहीं, वश में ही नहीं रहे। मैं भी उनसे यही कहता हूं..."

(द्रोन के साथ अल्पातिच की बातचीत होने के पहले ऐसा हुआ था।) प्रिंसेस मरीया उस सोफ़े पर, जिसपर लेटी हुई थी, उठकर बैठ गयी, और उसने बन्द दरवाज़े के पीछे से ही यह जवाब दे दिया कि वह कभी भी और कहीं भी नहीं जायेगी, कि उसे परेशान न किया जाये।

प्रिंसेस मरीया जिस कमरे में लेटी हुई थी, उसकी खिड़कियां पश्चिम की ओर खुलती थीं। वह दीवार की ओर मुंह किये हुए सोफ़े पर लेटी थी और चमड़े के तकिये के बटनों को छूते हुए केवल इस तकिये को ही देख रही थी और उसके उलझे-उलझाये हुए विचार एक ही विषय पर केन्द्रित थे – वह मृत्यु की अनिवार्यता और अपनी उस आत्मिक नीचता के बारे में सोच रही थी जिसका उसे अब तक आभास नहीं था और जो पिता की बीमारी के समय उसके सामने प्रकट हुई थी। वह प्रार्थना करना चाहती थी, किन्तु ऐसा करने का साहस नहीं कर पा रही थी। इस समय उसकी जो मानसिक स्थिति थी, उसमें उसे भगवान को सम्बोधित करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। वह देर तक ऐसे ही लेटी रही।

सूरज घर के दूसरी ओर चला गया था और खिड़कियों से भीतर आती हुई उसकी टेढ़ी-तिरछी किरणों ने कमरे और चमड़े के उस तकिये के एक भाग को रोशन कर दिया जिसपर प्रिंसेस मरीया की नज़र टिकी हुई थी। उसकी विचार-शृंखला एकाएक टूट गयी। वह अपने आप ही उठकर बैठ गयी, उसने अपने बाल ठीक किये, उठी, खिड़की के क़रीब गयी और अनचाहे ही निर्मल, किन्तु तेज़ हवावाली शाम की ताज़गी का आनन्द लेने लगी।

"हां, अब तुम जी भरकर शाम का आनन्द ले सकती हो! वह तो अब नहीं रहे और कोई भी तुम्हारे आड़े नहीं आ सकता," उसने अपने से कहा और धम से कुर्सी पर बैठते हुए अपना सिर दासे पर टिका दिया।

बाग़ की ओर से किसी ने धीमी और प्यार भरी आवाज़ में पुकारा तथा उसका सिर चूमा। प्रिंसेस मरीया ने मुड़कर देखा। काली मातमी पोशाक और उसपर सोग का काला रिबन बांधे हुए यह कुमारी बुर्येन थी। वह दबे पांव प्रिंसेस मरीया के क़रीब आयी, उसने आह भरकर उसे चूमा और रोने लगी। प्रिंसेस मरीया ने उसपर नज़र डाली। उसके साथ हुए झगड़े-मनमुटाव,

उसके प्रति अनुभूत ईर्ष्या-जलन – प्रिंसेस मरीया को यह सभी कुछ याद हो आया। उसे यह भी याद आ गया कि पिछले कुछ समय में **वह** कुमारी बुर्येन के प्रति कितने बदल गये थे, वह उन्हें फूटी आंखों नहीं सुहाती थी और इसका मतलब यह था कि प्रिंसेस मरीया जिन चीज़ों के लिये उसे दिल ही दिल में कोसती थी, वे भी न्यायसंगत नहीं थीं। "और मैं, और मैं, जो उनकी मृत्यु चाहती थी, मुझे किसी के बारे में भले-बुरे का फ़ैसला करने का क्या हक़ है!" वह सोच रही थी।

प्रिंसेस मरीया की आंखों के सामने कुमारी बुर्येन की स्थिति का, जिसे उसने पिछले कुछ समय में अपने से दूर कर दिया था, मगर फिर भी जो उसपर निर्भर थी और एक पराये घर में रह रही थी, स्पष्ट चित्र सामने आया। उसे उसपर दया आ गयी। उसने नम्रता और प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। कुमारी बुर्येन इसी क्षण आंसू बहाने लगी, उसका हाथ चूमने, उस गहरे सदमे, दुख-शोक की चर्चा करने लगी जो प्रिंसेस को सहना पड़ा था और अपने को इस दुख की भागीदार बनाने लगी। उसने कहा कि उसके अपने इस दुख में अगर उसे किसी चीज़ से थोड़ी तसल्ली मिलती है तो वह यही है कि प्रिंसेस ने उसे अपने साथ बांट लेने दिया। उसने यह भी कहा कि इतने बड़े सदमे को ध्यान में रखते हुए उनकी पहले की ग़लतफ़हमियां बड़ी तुच्छ प्रतीत होती हैं, कि उसकी आत्मा में किसी के प्रति भी कोई मैल नहीं और यह कि **वह** वहां से उसके प्यार तथा आभार को देख रहे हैं। प्रिंसेस उसके शब्दों को समझे बिना उसकी बात सुन रही थी, कभी-कभी उसकी ओर देख लेती थी और उसकी ध्वनियों को सुनती जाती थी।

"आपकी स्थिति तो बहुत ही भयानक है, प्यारी प्रिंसेस," कुछ देर चुप रहने के बाद कुमारी बुर्येन ने कहा। "मैं इस बात को समझती हूं कि आपके लिये अपने बारे में सोचना सम्भव नहीं था और आप अब भी ऐसा नहीं कर सकतीं। लेकिन चूंकि मैं आपको प्यार करती हूं, इसलिये ऐसा करना मेरा कर्त्तव्य है... अल्पातिच आपके पास आया था? उसने यहां से जाने के बारे में आपसे बात की थी?" उसने पूछा।

प्रिंसेस मरीया ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी समझ में नहीं

आ रहा था कि कौन और कहां जानेवाला था। "क्या अब किसी भी चीज़ के बारे में कुछ सोचा जा सकता है, किसी तरह की भी कोई योजना बनायी जा सकती है? क्या अब किसी भी चीज़ से कोई फ़र्क़ पड़ सकता है?" उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"आप जानती हैं, chère Marie,"* कुमारी बुर्येन ने कहा, "आप जानती हैं कि हम ख़तरे में हैं, फ़्रांसीसियों से घिरी हुई हैं और हमारे लिये यहां से जाना अब ख़तरनाक है। अगर हम यहां से जायेंगी तो ज़रूर बन्दी बना ली जायेंगी और तब भगवान ही जानते हैं कि..."

प्रिंसेस मरीया कुछ भी न समझते हुए अपनी सहेली की ओर देखती रही।

"ओह, काश कि कोई यह जानता होता कि मुझे अब किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," उसने कहा। "निश्चय ही मैं किसी भी हालत में **उन्हें** छोड़कर कहीं भी न जाती... अल्पातिच ने यहां से जाने के बारे में कुछ कहा था... उसके साथ बात कर लीजिये, मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं कर सकती और कुछ भी नहीं करना चाहती..."

"मैंने उसके साथ बात की है। उसे उम्मीद है कि हमारे लिये कल यहां से जाना मुमकिन हो सकेगा। किन्तु मैं समझती हूं कि अब यहीं रहना ज़्यादा अच्छा होगा," कुमारी बुर्येन ने कहा। "वह इसलिये, प्यारी मरीया, कि रास्ते में फ़ौजियों या विद्रोही किसानों के हाथों में पड़ जाना भयानक होगा। आप मेरी बात से सहमत होंगी।" इतना कहकर कुमारी बुर्येन ने अपने पर्स में से एक घोषणापत्र निकाला जो आम रूसी काग़ज़ पर नहीं छपा था। यह घोषणापत्र फ़्रांसीसी जनरल रामो द्वारा जारी किया गया था और इसमें कहा गया था कि लोग अपने घर छोड़कर न जायें, कि फ़्रांसीसी अधिकारी उनकी पूरी रक्षा करेंगे और उसने यह घोषणापत्र प्रिंसेस को दे दिया।

"मेरे ख़्याल में तो हमारे लिये इस जनरल की मदद लेना कहीं ज़्यादा अच्छा होगा," कुमारी बुर्येन ने कहा, "और मुझे विश्वास है कि आपके प्रति यथोचित सम्मान दिखाया जायेगा।"

---

* प्यारी मरीया। (फ़्रांसीसी)

प्रिंसेस मरीया ने इस काग़ज़ को पढ़ा और अश्रुहीन सिसकियों से उसका चेहरा ऐंठने-फड़कने लगा।

"आपको यह किससे मिला है?" उसने जानना चाहा।

"सम्भवतः मेरे नाम से उन्हें यह मालूम हो गया होगा कि मैं फ़्रांसीसी हूं," कुमारी बुर्येन ने झेंप के कारण लाल होते हुए उत्तर दिया।

प्रिंसेस मरीया इस काग़ज़ को हाथ में लिये हुए खिड़की के पास से उठी, पीला चेहरा लिये कमरे से बाहर निकली और उस कमरे की तरफ़ चल दी जो पहले प्रिंस अन्द्रेई का कमरा होता था।

"दुन्याशा, अल्पातिच, द्रोन या किसी और को मेरे पास बुला लाइये," प्रिंसेस मरीया ने अपनी नौकरानी से कहा, "और कुमारी बुर्येन से कह दीजिये कि यहां नहीं आयें," उसने कुमारी बुर्येन की आवाज़ सुनकर इतना और जोड़ दिया। "जल्दी से जल्दी यहां से जाना चाहिये! जल्दी से जल्दी!" प्रिंसेस मरीया इस विचार से भयभीत होकर कह उठी कि वह फ़्रांसीसियों के हाथों में यहां रह सकती है।

"ताकि प्रिंस अन्द्रेई को यह पता चले कि वह फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े में यहां रह रही है! ताकि सबको यह मालूम हो जाये कि प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की की बेटी ने श्रीमान जनरल रामो से अपनी सरपरस्ती करने की प्रार्थना की और अब वह उसकी मेहरबानी के सहारे जी रही है!" इस विचार से वह संत्रस्त हो उठी, कांप उठी, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसे क्रोध और गर्व की ऐसी अनुभूति हुई, जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। वह अपनी स्थिति की कटुता और इससे भी बढ़कर, अपनी अपमानजनक दशा को बहुत स्पष्ट रूप से अनुभव कर रही थी। "वे यानी फ़्रांसीसी, इस घर में अपना डेरा डालेंगे, श्रीमान जनरल रामो प्रिंस अन्द्रेई के कमरे में रहेगा और अपने मनोरंजन के लिये उसके पत्रों और दूसरे काग़ज़ों को पढ़ेगा। कुमारी बुर्येन बोगुचारोवो में उस जनरल का ख़ूब आदर-सत्कार करेगी। मुझपर दया करते हुए मुझे एक कमरा दे दिया जायेगा, सोने की सलीब और तमग़े हथियाने के लिये सैनिक पिता जी की अभी-अभी बनायी गयी क़ब्र की मिट्टी पलीद करेंगे। वे मुझे रूसियों पर फ़्रांसीसियों की जीतों के क़िस्से सुनायेंगे

और मेरे दुख के प्रति सहानुभूति प्रकट करने का ढोंग करेंगे ... " प्रिंसेस मरीया अपने विचारों के अनुसार नहीं, बल्कि पिता और भाई के विचारों के अनुरूप सोचने की आवश्यकता अनुभव करते हुए यह सब कुछ सोच रही थी। ख़ुद उसके लिये तो इसका कोई महत्त्व नहीं था कि वह कहां रहेगी और उसके साथ क्या बीतेगी। किन्तु उसके साथ-साथ ही वह अपने को दिवंगत पिता और भाई प्रिंस अन्द्रेई की प्रतिनिधि अनुभव कर रही थी। वह अनजाने ही उनके विचारों के अनुरूप सोच और उनकी भावनाओं के अनुरूप अनुभव कर रही थी। ऐसी हालत में वे दोनों क्या कहते और क्या करते, उसने वही कुछ करने की आवश्यकता अनुभव की। वह प्रिंस अन्द्रेई के कमरे में गयी और उसके विचारों को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थिति को समझने की कोशिश करने लगी।

जीवन की अपेक्षायें या मांगें, जिन्हें वह पिता के देहान्त के बाद बेमानी समझने लगी थी, सहसा एक नयी और अभी तक अनजानी शक्ति के साथ प्रिंसेस मरीया के सम्मुख उभरीं और उसपर हावी हो गयीं।

अत्यधिक उत्तेजित और तमतमाये चेहरे के साथ प्रिंसेस मरीया कमरे में इधर-उधर आ-जा रही थी, कभी अल्पातिच, कभी मिख़ाईल इवानोविच, कभी तीख़ोन और कभी द्रोन को अपने पास बुलवा रही थी। प्रिंसेस की अपनी नौकरानी दुन्याशा, बूढ़ी आया और दूसरी नौकरानियों में से कोई भी यह नहीं बता सकी कि कुमारी बुर्येन ने जो कुछ कहा था, वह किस हद तक ठीक था। अल्पातिच घर पर नहीं था, वह थानेदार के पास गया हुआ था। प्रिंसेस के बुलावे पर वास्तुकार मिख़ाईल इवानोविच उनींदी-उनींदी-सी आंखें लिये हुए उसके सामने आया और वह ढंग की कोई भी बात नहीं कह सका। होंठों पर सहमति की वही मुस्कान चस्पां किये हुए, जिस मुस्कान के साथ पिछले पन्द्रह वर्षों से वह अपना मत प्रकट किये बिना बुज़ुर्ग प्रिंस के प्रश्नों के उत्तर देने का आदी हो गया था, उसने प्रिंसेस के सवालों के भी कुछ ऐसे ही जवाब दिये जिनसे कोई भी निष्कर्ष निकालना सम्भव नहीं था। बूढ़े नौकर तीख़ोन को भी बुलवाया गया। वह मुरझाये और धंसे गालों तथा गहरे दुख की अमिट छापवाले चेहरे के साथ प्रिंसेस के सामने आया, प्रिंसेस के सभी प्रश्नों के उत्तर में "जी, मालकिन" ही कहता

और उसकी ओर देखते हुए बड़ी मुश्किल से अपनी सिसकियों को दबाता रहा।

आख़िर गांव का मुखिया द्रोन कमरे में आया और बहुत झुककर प्रिंसेस को प्रणाम करने के बाद दरवाज़े के पास खड़ा हो गया।

प्रिंसेस मरीया ने कमरे में चक्कर लगाया और उसके सामने आकर रुक गयी।

"प्यारे द्रोन," प्रिंसेस मरीया ने उसे एक सच्चा मित्र मानते हुए सम्बोधित किया। यह वही प्यारा मित्र था जो हर साल व्याज़्मा के मेले से प्रिंसेस के लिये ख़ास ज़ायकेवाली मीठी रोटी लेकर आता था और मुस्कराते हुए उसे भेंट करता था। "प्यारे द्रोन, दुख का ऐसा पहाड़ टूटने पर अब ..." प्रिंसेस ने कहना शुरू किया और अपनी बात आगे बढ़ाने में असमर्थ होने के कारण चुप हो गयी।

"यह तो सब भगवान की इच्छा है," द्रोन ने आह भरकर कहा। दोनों चुप हो गये।

"प्यारे द्रोन, अल्पातिच कहीं गया हुआ है और घर में दूसरा कोई ऐसा आदमी है नहीं कि जिससे मैं सलाह ले सकूं। क्या मुझसे यह सच कहा जा रहा है कि मेरे लिये अब यहां से जाना मुमकिन नहीं?"

"क्यों मुमकिन नहीं, मालकिन, जा सकती हैं," द्रोन ने जवाब दिया।

"मुझे बताया गया है कि शत्रुओं के कारण अब ऐसा करना ख़तर-नाक होगा। प्यारे द्रोन, मैं बिल्कुल असहाय हूं, कुछ भी जानती-समझती नहीं, मैं एकदम अकेली हूं। मैं आज रात को या कल सुबह तो ज़रूर ही यहां से जाना चाहती हूं।" द्रोन चुप रहा। उसने नज़र बचाकर प्रिंसेस मरीया की तरफ़ देखा।

"घोड़े नहीं हैं," उसने कहा, "याकोव अल्पातिच को भी मैंने यह बता दिया था।"

"क्यों नहीं हैं?" प्रिंसेस ने जानना चाहा।

"भगवान ने हमारे पापों का दण्ड दिया है," द्रोन ने उत्तर दिया। "जो घोड़े थे, उन्हें फ़ौजी ले गये और बाक़ी मर गये, यह साल बहुत मुश्किल का है। घोड़ों को खिलाने की कौन सोचे, जब हम ख़ुद ही भूख से मर सकते हैं! कुछ लोग तो तीन-तीन दिन भूखे पेट रहते

हैं। हमारे पास कुछ भी नहीं है, हम पूरी तरह से तबाह हो गये हैं।"

प्रिंसेस मरीया बहुत ध्यान से उसकी बात सुन रही थी।

"किसान तबाह हो गये? उनके पास खाने को अन्न नहीं है?" उसने पूछा।

"भूखों मर रहे हैं," द्रोन ने जवाब में कहा, "घोड़ा-गाड़ियों की किसे सुध हो सकती है?"

"तो तुमने मुझे यह बताया क्यों नहीं, प्यारे द्रोन? क्या उनकी सहायता करना सम्भव नहीं? मैं अपने बस भर सब कुछ करने को तैयार हूं..." प्रिंसेस मरीया को यह सोचना बड़ा अजीब-सा लग रहा था कि इस क्षण, जब उसकी आत्मा इतने गहरे दुख, ऐसे शोक में डूबी हुई थी, ऐसे क्षण में भी अमीर और ग़रीब लोग हो सकते हैं और यह कि अमीर लोग ग़रीबों की मदद करने को तैयार नहीं हैं। उसे इस बात का हल्का-सा आभास था, उसने कभी यह सुना था कि मालिकों का अपना अनाज होता है और उसे किसानों को दिया जाता है। वह यह भी जानती थी कि किसानों के मुश्किल के वक़्त में न तो उसके पिता और न भाई ही उनकी मदद करने से इन्कार करते। उसे केवल इसी बात का भय था कि कहीं वह किसानों में अनाज बांटने की हिदायत देने के मामले में शब्दों के चुनाव में कोई ग़लती न कर बैठे। उसे यह सोचकर ख़ुशी हुई कि उसे कुछ ऐसा काम करने का मौक़ा मिल गया है जिसे करते हुए उसके लिये अपने दुख को भूल जाना लज्जाजनक नहीं होगा। वह किसानों की ज़रूरत और इस बारे में द्रोन से सविस्तार पूछ-ताछ करने लगी कि बोगुचारोवो में मालिक का अनाज है या नहीं।

"हमारे यहां मालिक का अनाज, मेरे भाई का अनाज तो है न?" प्रिंसेस ने पूछा।

"मालिक का पूरा अनाज ज्यों का त्यों क़ायम है," द्रोन ने बड़े गर्व से जवाब दिया, "हमारे प्रिंस ने उसे बेचने का हुक्म नहीं दिया था।"

"तुम उसे किसानों को दे दो, उन्हें जो कुछ भी चाहिये, सब कुछ दे दो। मैं तुम्हें अपने भाई की ओर से ऐसा करने की अनुमति देती हूं," प्रिंसेस मरीया ने कहा।

द्रोन ने कोई जवाब न देकर गहरी सांस ली।

"अगर यह अनाज उनके लिये काफ़ी हो तो तुम इसे उनमें बांट दो। पूरे का पूरा दे दो। मैं तुम्हें अपने भाई की ओर से आदेश देती हूं और उनसे यह भी कह देना – जो कुछ हमारा है, वह उनका भी है। हमें उन्हें कुछ भी देते हुए अफ़सोस नहीं होगा। तुम उनसे यही कह देना।"

प्रिंसेस जब यह सब कुछ कह रही थी तो द्रोन उसे एकटक देखता रहा था।

"भगवान के लिये आप मुझे बर्ख़ास्त कर दें, किसी से कह दें कि वह मुझसे चाबी ले ले," वह कह उठा। तेईस बरस तक आप लोगों की सेवा की, कभी किसी तरह की कोई बुराई नहीं की; भगवान के लिये मेरी छुट्टी कर दीजिये।"

प्रिंसेस मरीया समझ नहीं पा रही थी कि वह उससे क्या चाहता है और किसलिये बर्ख़ास्त कर देने का अनुरोध कर रहा है। प्रिंसेस ने जवाब दिया कि उसकी वफ़ादारी के बारे में उसे कभी कोई शक नहीं हुआ था और वह द्रोन तथा किसानों के लिये कुछ भी करने को तैयार है।

११

इस बातचीत के एक घण्टे बाद दुन्याशा यह ख़बर लेकर प्रिंसेस के पास आई कि द्रोन आया है, प्रिंसेस के आदेशानुसार सभी किसान खत्ती के पास इकट्ठे हो गये हैं और वे मालकिन के साथ बात करना चाहते हैं।

"लेकिन मैंने तो उन्हें बुलवाया नहीं था," प्रिंसेस मरीया ने जवाब दिया। "मैंने तो प्यारे द्रोन से सिर्फ़ इतना ही कहा था कि वह उनमें अनाज बांट दे।"

"प्रिंसेस, प्यारी मालकिन, भगवान के लिये आप कहलवा दें कि वे वापस चले जायें और आप उनके पास नहीं जायें। यह सब छल-कपट है," दुन्याशा ने कहा। "याकोव अल्पातिच के आते ही हम लोग यहां से रवाना हो जायेंगे... और आप वहां नहीं जाइये।"

"कैसा छल-कपट?" प्रिंसेस ने हैरान होकर पूछा।

"मैं तो यह सब कुछ बहुत अच्छी तरह से जानती हूं, भगवान के लिये आप मेरी बात मानिये। अगर चाहें तो आया से भी पूछ सकती हैं। सुनने में आया है कि आपके हुक्म के मुताबिक़ वे लोग यहां से जाने को तैयार नहीं हैं।"

"तुम ज़रूर कुछ बेतुकी बात कर रही हो। मैंने तो उन्हें यहां से जाने का कोई हुक्म दिया ही नहीं..." प्रिंसेस मरीया बोली। "द्रोन को बुलाओ।"

द्रोन ने भीतर आकर दुन्याशा के इन्हीं शब्दों की पुष्टि की कि किसान प्रिंसेस के आदेशानुसार आये हैं।

"लेकिन मैंने तो उन्हें बुलवाया ही नहीं," प्रिंसेस ने आपत्ति करते हुए जवाब दिया। "तुमने ज़रूर ग़लत ढंग से मेरी बात उनसे कही है। मैंने तो सिर्फ़ इतना ही कहा था कि तुम उन्हें अनाज दे दो।"

द्रोन ने कोई उत्तर न देकर आह भरी।

"आपका हुक्म मिलने पर वे चले जायेंगे," कुछ क्षण बाद द्रोन ने कहा।

"नहीं, नहीं, मैं उनके पास जाऊंगी," प्रिंसेस मरीया कह उठी।

दुन्याशा और बूढ़ी आया के मना करने के वावजूद प्रिंसेस मरीया बाहर चली गयी। द्रोन, दुन्याशा, आया और मिख़ाईल इवानोविच उसके पीछे-पीछे चल दिये।

"वे शायद यह सोचते हैं कि मैं इसलिये उन्हें अनाज दे रही हूं कि वे यहां से न जायें और उन्हें फ़्रांसीसियों के रहम पर छोड़कर मैं ख़ुद यहां से चली जाऊंगी," प्रिंसेस मरीया के दिमाग़ में ऐसे ख़्याल आ रहे थे। "मैं इनके लिये मास्को के निकटवाली अपनी जागीर पर रसद, कपड़ों-लत्तों और रहने का प्रबन्ध करूंगी। मुझे पूरा यक़ीन है कि मेरी जगह पर अन्द्रेई ने इनके लिये इससे भी कहीं कुछ ज़्यादा किया होता," शाम के झुटपुटे में खत्ती के क़रीब चरागाह में खड़े किसानों की भीड़ की तरफ़ बढ़ते हुए वह सोच रही थी।

किसानों का जमघट कुछ हिला-डुला और उन्होंने झटपट अपनी टोपियां उतार लीं। प्रिंसेस मरीया नज़रें झुकाये और घबराहट के कारण स्कर्ट में अपने पांवों को उलझाते हुए उनके क़रीब गयी। इतने भिन्न-भिन्न बूढ़े और जवान लोगों की आंखें उसपर जमी हुई थीं,

इतने भिन्न-भिन्न चेहरे थे कि प्रिंसेस मरीया एक भी चेहरे को नहीं देख पा रही थी तथा सभी के साथ बातचीत करने की आवश्यकता अनुभव करते हुए यह नहीं समझ पा रही थी कि अपनी बात कैसे शुरू करे। किन्तु फिर से इस बात की चेतना ने कि वह अपने पिता और भाई का प्रतिनिधित्व कर रही है, उसे शक्ति प्रदान की और वह साहसपूर्वक बोलने लगी।

"मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है कि आप लोग यहां आये हैं," प्रिंसेस मरीया ने नज़र उठाये बिना और यह महसूस करते हुए कि उसका दिल जल्दी-जल्दी और ज़ोर से धड़क रहा है, अपनी बात कहनी शुरू की। "प्यारे द्रोन ने मुझे बताया कि जंग ने आप लोगों को तबाह कर डाला है। यह हम सबका साझा दुख-दर्द है और आपकी मदद करने के लिये मैं कोई भी कसर नहीं उठा रखूंगी। मैं ख़ुद यहां से जा रही हूं, क्योंकि अब यहां रहना ख़तरनाक है... दुश्मन बहुत क़रीब है... क्योंकि... मेरे मित्रो, मैं आपको अपना सब कुछ देती हूं और अनुरोध करती हूं कि आप सब कुछ ले लें, हमारा पूरा अनाज ले लें ताकि आपको किसी तरह की कोई तंगी-कठिनाई न महसूस हो। अगर आप लोगों मे यह कहा गया है कि मैं इसलिये आपको अनाज दे रही हूं कि आप यहां से न जायें तो यह ग़लत है। इसके विपरीत, मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि अपनी सारी चीज़ें लेकर हमारी मास्को के क़रीबवाली जागीर पर चलें और मैं अपने ऊपर इस बात की ज़िम्मेदारी लेती हूं और यह वचन देती हूं कि वहां आपको किसी भी चीज़ की कमी महसूस नहीं होगी। वहां आपके खाने-पीने और रहने-सहने का पूरा प्रबन्ध किया जायेगा।" प्रिंसेस इतना कहकर चुप हो गयी। भीड़ में से सिर्फ़ आहें भरने की धीमी आवाज़ें ही सुनायी दीं।

"मैं अपनी ओर से ऐसा नहीं कर रही हूं," प्रिंसेस ने अपनी बात आगे बढ़ायी, "मैं अपने दिवंगत पिता के नाम पर, जो आपके अच्छे मालिक थे, अपने भाई और उसके बेटे के नाम पर ऐसा कर रही हूं।"

वह फिर से चुप हो गयी। किसी ने भी उसकी ख़ामोशी को भंग नहीं किया।

"यह मुसीबत हम सभी पर आयी है और हम मिल-जुलकर इसे सहन करेंगे। जो कुछ मेरा है, वह आपका है," उसने अपने सामने

8–1202

खड़े लोगों के चेहरों को ग़ौर से देखते हुए कहा।

सब की आंखें उसपर टिकी हुई थीं और सब की आंखों में एक जैसा भाव था जिसका अर्थ उसकी समझ नहीं आ रहा था। यह जिज्ञासा थी, उसके प्रति निष्ठा, कृतज्ञता, भय या अविश्वास था – उसके लिये यह समझ पाना सम्भव नहीं था, मगर सभी के चेहरों पर एक जैसा ही भाव था।

"आपकी दया-कृपा के लिये बहुत धन्यवाद, परन्तु मालिकों का अनाज हम नहीं लेंगे," भीड़ के पीछे से किसी की आवाज़ सुनायी दी।

"क्यों नहीं लेंगे?" प्रिंसेस ने जानना चाहा।

किसी ने भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और प्रिंसेस मरीया ने भीड़ पर दृष्टि डालते हुए यह देखा कि जिस किसी से अब उसकी नज़रें मिलती थीं, वे सभी नज़रें फ़ौरन झुक जाती थीं।

"लेकिन आप लोग किस कारण अनाज नहीं लेना चाहते?" उसने फिर से अपना प्रश्न दोहराया। किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया।

किसानों की यह ख़ामोशी प्रिंसेस मरीया के लिये बहुत बोझल होती जा रही थी; उसने किसी न किसी से तो नज़र मिलाने की कोशिश की।

"आप लोग कुछ कहते क्यों नहीं?" प्रिंसेस ने एक बहुत ही बूढ़े किसान को सम्बोधित किया जो छड़ी पर कोहनी टिकाये उसके सामने खड़ा था। "अगर तुम ऐसा सोचते हो कि कुछ और भी करना चाहिये तो कह दो। मैं सब कुछ करने को तैयार हूं," उससे नज़र मिलाते हुए प्रिंसेस ने कहा। किन्तु यह बूढ़ा तो प्रिंसेस के इन शब्दों से मानो झल्ला उठा, उसने अपना सिर बिल्कुल ही नीचे झुका लिया और बुदबुदाया:

"किसलिये लें हम अनाज? नहीं ज़रूरत है हमें अनाज की।"

"क्या हम अपना सब कुछ छोड़-छाड़कर चल दें? नहीं, हम ऐसा नहीं करेंगे... हम इसके लिये सहमत नहीं हैं। हमें तुमपर दया आती है, लेकिन हम जाने को तैयार नहीं। तुम ख़ुद चली जाओ, अकेली ही..." भीड़ में विभिन्न दिशाओं से ऐसी आवाज़ें सुनायी दीं। और इस भीड़ में सभी के चेहरों पर फिर से एक जैसा भाव दिखाई

दिया। यह तो निश्चय ही जिज्ञासा और कृतज्ञता का नहीं, बल्कि क्रोध-पूर्ण संकल्प का भाव था।

"आप लोग मेरी बात ठीक तरह से नहीं समझे," प्रिंसेस ने बुझी-बुझी-सी मुस्कान के साथ कहा। "किसलिये आप नहीं जाना चाहते? मैं आपके खाने-पीने और रहने-सहने का प्रबन्ध करने का वचन देती हूं। यहां तो दुश्मन आपको लूट लेंगे..."

किन्तु प्रिंसेस की आवाज़ लोगों की आवाज़ों में डूबकर रह गयी।

"हम नहीं जाना चाहते, बेशक वे हमें लूट लें! हम तुम्हारा अनाज नहीं लेंगे, हम जाने को तैयार नहीं हैं!"

प्रिंसेस मरीया ने भीड़ में से फिर किसी के साथ नज़र मिलाने की कोशिश की, लेकिन अब कोई भी उसकी तरफ़ नहीं देख रहा था, स्पष्टतः सभी उससे नज़रें चुरा रहे थे। उसे बड़ा अजीब और अटपटा-सा महसूस होने लगा।

"बड़ी चतुराई की बात सोची है, इसके साथ जाओ और दास बन जाओ! अपने घर-बार उजाड़ दो और बंधवा हो जाओ। हां, हां, क्यों नहीं करेंगे ऐसा! मैं तुमको अनाज दे दूंगी!" भीड़ में से आवाज़ें सुनायी दीं।

प्रिंसेस मरीया सिर झुकाये हुए भीड़ में से निकली और घर की तरफ़ चल दी। द्रोन को फिर से यह आदेश देकर कि अगले दिन यहां से रवाना होने के लिये घोड़े तैयार रहने चाहिये, वह अपने कमरे में चली गयी और अकेली ही अपने विचारों में डूबती-उतराती रही।

१२

इस रात को प्रिंसेस मरीया बहुत देर तक अपने कमरे की खुली खिड़की के क़रीब बैठी हुई गांव की ओर से सुनायी देनेवाली किसानों की बातचीत की आवाज़ें सुनती रही। किन्तु वह उनके बारे में नहीं सोच रही थी। वह अनुभव कर रही थी कि उनके बारे में चाहे कितना ही क्यों न सोचे, वह उन्हें समझ नहीं पायेगी। वह केवल एक ही चीज़ के बारे में, अपने उस गहरे दुख-शोक के बारे में सोच रही थी,

जो वर्तमान की चिन्ताओं के व्यवधान के कारण अब अतीत की बात बन गया था। वह अब यादों को ताज़ा कर सकती थी, रो सकती थी और प्रार्थना कर सकती थी। सूर्यास्त होने के बाद हवा का ज़ोर कम हो गया था। रात शान्त और शीतल थी। आधी रात होते न होते आवाज़ें धीमी होने लगीं, मुर्ग़े ने बांग दी, लिंडन वृक्षों के पीछे से पूनम का चांद ऊपर उठने लगा, ताज़गी लिये सफ़ेद, शबनमी कुहासे की चादर फैलने लगी और नीरवता ने गांव तथा घर को अपने आंचल में समेट लिया।

एक के बाद एक कुछ ही दिन पहले के चित्र उसके मानस-पट पर उभरने लगे – पिता की बीमारी और उनके अन्तिम क्षण। अवसाद-मिश्रित प्रसन्नता के साथ वह अब इन चित्रों का निरूपण करती थी और भयभीत होकर केवल उनकी मृत्यु के अन्तिम दृश्य को ही अपनी आंखों के सामने से दूर हटा देती थी। वह अनुभव करती थी कि रात के इन नीरव और रहस्यपूर्ण क्षणों में भी यह उसकी शक्ति के बाहर की बात थी कि इस दृश्य को अपनी कल्पना तक में निरूपित कर सके। ये चित्र इतनी स्पष्टता और इतने विस्तार से उसके सामने उभर रहे थे कि कभी तो इसी समय के, कभी अतीत और कभी भविष्य के प्रतीत होते।

वह बहुत ही स्पष्ट रूप से उस क्षण को अपने मानस-पट पर देख रही थी, जब लीसिये गोरि में उन्हें पहला पक्षाघात हुआ था और उनकी बग़लों में बांहें डालकर उन्हें घसीटते हुए बाग़ से लाया जा रहा था, वह अपनी असहाय ज़बान से कुछ बुदबुदा रहे थे, अपनी सफ़ेद भौंहों को ऐंठ रहे थे और बेचैनी तथा सहमी-सहमी नज़र से उसकी तरफ़ देख रहे थे।

"वह तो उसी वक़्त मुझसे वे शब्द कहना चाहते थे जो उन्होंने अपनी मृत्यु के दिन कहे," वह सोच रही थी। उस दिन उन्होंने मुझसे जो कुछ कहा, उनके दिल में हमेशा वही भावनायें बनी रही थीं। उसे पिता जी को पक्षाघात होने के पहले की लीसिये गोरि की वह रात बहुत ही विस्तार से याद हो आयी, जब दुर्भाग्य की पूर्वानुभूति के कारण वह उनकी इच्छा के विरुद्ध बोगुचारोवो न जाकर उनके साथ ही रह गयी थी। वह सो नहीं सकी थी, रात को दबे पांव नीचे उतरी थी और पुष्प-वाटिका के दरवाज़े के पास खड़ी होकर, जहां

उस रात को पिता जी का बिस्तर लगाया गया था, उनकी आवाज़ सुनती रही थी। वह बहुत ही क्लान्त और थकी-थकी आवाज़ में ती-ख़ोन से कुछ कह रहे थे। सम्भवतः वह किसी से बात करना चाहते थे। "किसलिये उन्होंने मुझे नहीं बुलवा भेजा? किसलिये उन्होंने तीख़ोन के बजाय मुझे अपने पास नहीं बैठने दिया?" प्रिंसेस मरीया तब भी यह सोचती रही थी और अब भी सोच रही थी। "ओह, अब तो वह किसी से कभी भी वह सब कुछ नहीं कह सकेंगे जो उनके दिल में था। उनके लिये और मेरे लिये भी अब वह क्षण कभी वापस नहीं आयेगा, जब पिता जी वह सब कुछ कह देते जो कहना चाहते थे और तीख़ोन नहीं, बल्कि मैं उसे सुनती और समझ लेती। क्यों उस वक़्त मैं कमरे में नहीं चली गयी?" वह सोच रही थी। "हो सकता है कि उसी वक़्त वह मुझसे वह कह देते जो उन्होंने अपनी मृत्यु के दिन कहा। तभी उन्होंने तीख़ोन से बातचीत करते हुए दो बार मेरे बारे में पूछा था। वह मुझे देखना चाहते थे और मैं वहीं, दरवाज़े के पीछे खड़ी थी। वह दुखी होते हुए बड़े भारी मन से तीख़ोन के साथ बातें कर रहे थे जो उनकी बातें समझ नहीं पा रहा था। मुझे याद है कि कैसे उन्होंने जीवित व्यक्ति के रूप में लीज़ा की चर्चा की थी – वह भूल गये थे कि लीज़ा मर चुकी है और तीख़ोन ने उन्हें याद दिलाया था कि वह अब इस दुनिया में नहीं है और पिता जी चिल्ला उठे थे – 'उल्लू!' उनका मन बहुत व्यथित था। मैंने दरवाज़े के पास से सुना था कि कैसे वह आह-ओह करते हुए पलंग पर लेटे थे और ज़ोर से कह उठे थे – 'हे मेरे भगवान!' क्यों मैं उस वक़्त उनके कमरे में नहीं चली गयी? वह मेरा क्या बिगाड़ सकते थे? ऐसा करने से मेरा क्या हर्ज हो जाता? हो सकता है कि तभी उनके मन को चैन मिल जाता और वह मुझसे वे शब्द कह देते।" प्रिंसेस ने ऊंची आवाज़ में प्यार के वे शब्द दोहराये जो उन्होंने अपनी मृत्यु के दिन कहे थे – "प्या-री... बिटि... या!" प्रिंसेस मरीया ने ये शब्द दोहराये और सिसक-सिसककर रोने लगी जिससे उसके दिल को कुछ राहत मिली। उनका चेहरा अब उसकी आंखों के सामने था। वह चेहरा नहीं, जिससे वह तब से परिचित थी, जब से उसने होश सम्भाला था और जिसे वह हमेशा दूर से ही देखती रही थी, बल्कि दुबला-दुबला और सहमा-सहमा वह चेहरा जो उसने सभी रेखाओं और

झुर्रियों के साथ पहली बार उनके जीवन के अन्तिम दिन में उस वक़्त बहुत निकट से तब देखा था, जब वह उनकी बात सुन पाने के लिये उनके मुंह के पास झुक जाती थी।

"प्या-री... बिटि... या।" उसने इन शब्दों को दोहराया।

"पिता जी ने जब ये शब्द कहे थे तो वे क्या सोच रहे थे? वह अब क्या सोचते हैं?" अचानक यह सवाल उसके दिमाग़ में आया और इसके जवाब में उसने उन्हें चेहरे के उसी भाव के साथ अपनी आंखों के सामने देखा, जो भाव सफ़ेद रूमाल से बंधे उनके चेहरे पर तब था, जब वह ताबूत में लेटे हुए थे। और वह भय, जो उस वक़्त उसपर हावी हो गया था जब उसने उन्हें छुआ था और उसे विश्वास हो गया था कि वह वही नहीं हैं, बल्कि उनकी जगह रहस्य-पूर्ण और भयानक कुछ दूसरा ही है, तो उसी भय ने उसे फिर से अपनी गिरफ़्त में ले लिया। उसने किसी अन्य चीज़ के बारे में सोचने की कोशिश की, प्रार्थना करनी चाही, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं कर पायी। वह आंखें फाड़े हुए चांदनी और परछाइयों को देख रही थी, किसी भी क्षण उनके निर्जीव चेहरे को देखने की आशा और यह अनुभव कर रही थी कि घर के ऊपर और घर में छायी हुई ख़ामोशी उसे दबोचती चली जा रही है।

"दुन्याशा!" वह फुसफुसायी। "दुन्याशा!" वह बहुत ज़ोर से चिल्ला उठी और अपने को ख़ामोशी की इस जकड़ से मुक्त करते हुए नौकरानियों के कमरे की तरफ़ तेज़ी से भाग चली। इसी क्षण नौक-रानियां और आया उसकी ओर भागी आ रही थीं।

१३

१७ अगस्त को रोस्तोव और इल्यीन फ़्रांसीसियों की क़ैद से अभी-अभी मुक्ति पाकर आनेवाले लाव्रूश्का तथा ड्यूटी-अर्दली को अपने साथ लेकर यानकोवो के अपने पड़ाव से, जो बोगुचारोवो से पन्द्रह वेर्स्ता दूर था, घुड़सवारी करने – इल्यीन द्वारा कुछ ही समय पहले ख़रीदे गये घोड़े को आज़माने और यह जानने के लिये कि गांवों में

कहीं सूखी घास है या नहीं, रवाना हुए।

पिछले तीन दिनों से बोगुचारोवो दोनों विरोधी सेनाओं के बीच में था और इस तरह रूसी चंडावल और फ़्रांसीसी हरावल के लिये भी वहां पहुंचना बिल्कुल आसान था। इसीलिये अपने स्क्वाड्रन की चिन्ता करनेवाले कमांडर के नाते रोस्तोव ने फ़्रांसीसियों के पहुंचने के पहले ही उस रसद को हासिल कर लेना चाहा जो बोगुचारोवो में अब तक बची हुई थी।

रोस्तोव और इल्यीन – दोनों ही ख़ूब रंग में थे। बोगुचारोवो की ओर जाते हुए, जहां किसी प्रिंस की जागीर और हवेली थी तथा जहां उन्हें बहुत-से नौकरों-चाकरों में कुछ सुन्दर भूदास नौकरानियों से भेंट होने की भी आशा थी, वे कभी तो लाव्रूश्का से नेपोलियन के बारे में पूछ-ताछ करते और उसके क़िस्सों पर ख़ूब हंसते और कभी इल्यीन के घोड़े की आज़माइश करने के लिये अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते।

रोस्तोव को न तो यह मालूम था और न उसने यह सोचा ही था कि जिस गांव की तरफ़ वह जा रहा था, वहां उसी बोल्कोन्स्की की जागीर थी जिसकी कभी उसकी बहन नताशा के साथ सगाई हुई थी।

बोगुचारोवो पहुंचने के कुछ पहले रोस्तोव और इल्यीन ने एक टीले पर जाते हुए अपने घोड़ों को अन्तिम बार सरपट दौड़ाया और इल्यीन से बाज़ी मारकर रोस्तोव बोगुचारोवो की गली में उससे पहले पहुंच गया।

"तुम जीत गये," इल्यीन ने कहा जिसका चेहरा घोड़े को सरपट दौड़ाने के कारण लाल हो गया था।

"हां, मैं चरागाह में भी तुमसे आगे रहा और यहां भी," रोस्तोव ने अपने घोड़े को सहलाते हुए, जिसके बदन पर पसीने का फेन नज़र आ रहा था, जवाब दिया।

"हुज़ूर, मैं अपने इस फ़्रांसीसी घोड़े पर आपसे आगे निकल गया होता," लाव्रूश्का ने अपने मरियल घोड़े को फ़्रांसीसी घोड़ा बताते हुए पीछे से कहा, "लेकिन मैं यह नहीं चाहता था कि आपकी हेठी हो जाये।"

ये चारों घुड़सवार अपने घोड़ों को क़दम-क़दम चलाते हुए खत्ती

के पास पहुंचे जहां किसानों की बड़ी भीड़ जमा थी।

कुछ किसनों ने अपनी टोपियां उतार लीं और कुछ टोपियां उतारे बिना ही बहुत ग़ौर से इन घुड़सवारों को देखने लगे। झुर्रीदार चेहरों और विरली दाढ़ियोंवाले दो बूढ़े तथा लम्बे-तड़ंगे किसान शराबख़ाने से बाहर निकले और मुस्कराते, नशे में झूमते तथा कोई बेतुका-सा गाना गाते हुए अफ़सरों के क़रीब आये।

"बहुत बढ़िया!" रोस्तोव ने हंसते हुए कहा। "यह बताओ, सूखी घास है?"

"और एक ही सांचे में ढले-से..." इल्यीन ने टिप्पणी की।

"मौ... ज कर... ो... ओ..." दोनों किसान ख़ुशी से मुस्कराते हुए गा रहे थे।

एक किसान भीड़ में से निकलकर रोस्तोव के पास आया।

"आप किस फ़ौज के हैं?" उसने पूछा।

"हम फ़्रांसीसी हैं," इल्यीन ने हंसते हुए जवाब दिया। "और यह रहा ख़ुद नेपोलियन," उसने लाव्रूश्का की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"मतलब यह कि रूसी हैं?" किसान ने फिर से प्रश्न किया।

"बहुत हैं क्या आपकी फ़ौजें यहां?" एक नाटे-से अन्य किसान ने उसके पास आकर पूछा।

"बहुत हैं, बहुत हैं," रोस्तोव ने जवाब दिया। "तुम लोग यहां किसलिये जमा हो?" उसने जानना चाहा। "कोई पर्व-त्योहार है क्या?"

"एक किसानी मामले पर विचार करने के लिये बुड्ढे यहां जमा हुए हैं," किसान ने उससे दूर हटते हुए उत्तर दिया।

इसी समय हवेली की ओर से दो औरतें और सफ़ेद टोप पहने एक मर्द अफ़सरों की तरफ़ आते दिखाई दिये।

"गुलाबी पोशाकवाली मेरी है, सो तुम उससे दूर रहना!" किसी दृढ़संकल्प से अपनी ओर भागी आ रही दुन्याशा को देखकर इल्यीन ने कहा।

"यह हमारी होगी!" लाव्रूश्का ने आंख मारते हुए इल्यीन से कहा।

"कहो सुन्दरी, क्या बात है?" इल्यीन ने मुस्कराते हुए पूछा।

"प्रिंसेस ने मुझे यह पूछने के लिये भेजा है कि आप किस रेजिमेंट के हैं और आपका कुलनाम क्या है?"

"यह स्क्वाड्रन-कमांडर काउंट रोस्तोव है और मैं हूं आपका आज्ञाकारी सेवक।"

"मौ... ज कर... ो... ओ!" नशे में धुत्त किसान ख़ुशी से मुस्कराते और दुन्याशा के साथ बात करते इल्यीन की तरफ़ देखते हुए गा रहे थे। दुन्याशा के पीछे-पीछे अल्पातिच भी, जिसने दूर से ही अपना टोप उतार लिया था, रोस्तोव के पास आया।

"आप हुज़ूर को कुछ तक़लीफ़ देने की जुर्रत कर रहा हूं," उसने आदरपूर्वक, किन्तु रोस्तोव के बहुत जवान होने के कारण कुछ उपेक्षा भाव दिखाते और छाती पर हाथ रखते हुए कहा। "मेरी मालकिन, इसी १५ तारीख़ को दिवंगत हुए बड़े जनरल निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की की बेटी, इन लोगों के उजड्डपन के कारण बड़ी मुश्किल में पड़ गयी हैं," उसने किसानों की तरफ़ इशारा किया, "वह आपसे अपने पास आने का अनुरोध करती हैं... मेहरबानी करके," अल्पातिच ने उदासी भरी मुस्कान के साथ कहा, "अपने घोड़े को ज़रा बढ़ा लीजिये, क्योंकि इनके सामने बात करना अच्छा नहीं लगता..." अल्पातिच ने दो किसानों की तरफ़ इशारा किया जो घोड़े के इर्द-गिर्द मंडरानेवाली घुड़मक्खी की तरह उसके आस-पास चक्कर काट रहे थे।

"ऐ... अल्पातिच!.. ऐ! याकोव अल्पातिच!.. बड़ी शान है तुम्हारी! ईसा मसीह के नाम पर माफ़ कर दो। बड़ी शान है तुम्हारी! है न?.." किसान ख़ुशी से मुस्कराते हुए कह रहे थे। रोस्तोव ने नशे में धुत्त किसानों की तरफ़ देखा और मुस्करा दिया।

"या शायद हुज़ूर को इनसे ख़ुशी हासिल हो रही है?" याकोव अल्पातिच ने गम्भीर मुद्रा बनाकर और अपने उस हाथ से, जिसे अब उसने छाती पर से हटा लिया था, बूढ़े किसानों की तरफ़ इशारा करते हुए प्रश्न किया।

"नहीं, यहां ख़ुशी की क्या बात हो सकती है," रोस्तोव ने कहा और अपने घोड़े को थोड़ा आगे ले आया। "क्या बात है?" उसने अल्पातिच से पूछा।

"हुज़ूर, आपकी ख़िदमत में यह अर्ज़ करने की जुर्रत कर रहा

हूं कि यहां के उजड्ड किसान मालकिन को अपनी जागीर से जाने नहीं दे रहे और यह धमकी देते हैं कि वे घोड़ों की जोत खोल देंगे। सुबह से सारा सामान बंधा रखा है, मगर मालकिन यहां से जा नहीं पा रहीं।"

"यह कैसे हो सकता है!" रोस्तोव चिल्ला उठा।

"हुज़ूर, आपसे सोलह आने सच बात कह रहा हूं," अल्पातिच ने अपने शब्दों को दोहराया।

रोस्तोव घोड़े से नीचे उतरा और ड्यूटी-अर्दली को उसकी लगाम पकड़ाकर अल्पातिच के साथ हवेली की तरफ़ चल दिया तथा चलते-चलते ही मामले की सारी तफ़सीलें पूछने लगा। एक दिन पहले प्रिंसेस द्वारा किसानों में अनाज बांटने के प्रस्ताव और द्रोन तथा किसानों की भीड़ के साथ उसकी बातचीत ने मामले को सचमुच इतना बिगाड़ दिया था कि द्रोन ने आख़िर चाबियां दे दीं, किसानों के साथ जा मिला और अल्पातिच के बुलवा भेजने पर नहीं आया। सुबह को प्रिंसेस ने जब घोड़े जोतने का आदेश दिया तो किसान बड़ी संख्या में खत्ती के क़रीब जमा हो गये और उन्होंने यह सन्देश भिजवा दिया कि वे प्रिंसेस को यहां से नहीं जाने देंगे, कि लोगों को अपने घर न छोड़ने का हुक्म जारी हो चुका है और वे घोड़ों की जोत खोल देंगे। अल्पातिच उनके पास गया, उसने उन्हें समझाया-बुझाया, किन्तु उसे वह जवाब दिया गया (कार्प नाम का किसान ही सबसे बढ़-चढ़कर बोल रहा था, द्रोन भीड़ में पीछे ही रहा) कि प्रिंसेस को जाने नहीं दिया जा सकता, कि ऐसा हुक्म मिला है, कि प्रिंसेस यहीं रहें और प्रिंसेस के यहीं रहने पर वे पहले की भांति उनकी सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।

उस वक़्त जब रोस्तोव और इल्यीन रास्ते पर सरपट घोड़े दौड़ाते आ रहे थे, प्रिंसेस मरीया ने अल्पातिच, आया और नौकरानियों के मना करने के बावजूद घोड़े जोतने का आदेश दे दिया और जाना चाहा। किन्तु सरपट घोड़े दौड़ाते आ रहे फ़ौजी घुड़सवारों को देखकर सब ने उन्हें फ़्रांसीसी मान लिया, कोचवान भाग गये और घर में औरतें रोने-धोने लगीं।

"हमारे प्यारे! हमारे दयालु रक्षक! भगवान ने ही तुम्हें हमारी रक्षा को भेजा है," रोस्तोव जब ड्योढ़ी लांघ रहा था तो उसे इस

तरह की मर्मस्पर्शी आवाज़ें सुनायी दीं।

रोस्तोव को जब प्रिंसेस मरीया के पास लाया गया तो वह बेहद परेशान और असहाय-सी हॉल में बैठी थी। वह यह नहीं समझ पा रही थी कि वह कौन है, किसलिये यहां आया है और उसके साथ क्या बीतनेवाली है। रोस्तोव का रूसी चेहरा देखकर, उसके कमरे में दाखिल होने के ढंग और उसके द्वारा कहे जानेवाले पहले ही शब्दों से उसने उसे अपनी ऊंची सोसाइटी के व्यक्ति के रूप में पहचान लिया, अपनी गहरी-गहरी और चमकती आंखों से उसकी तरफ़ देखा और विह्वलता के कारण टूटती तथा कांपती आवाज़ में उसके साथ बात करने लगी। रोस्तोव को इस भेंट में फ़ौरन ही किसी रोमानी-सी चीज़ की अनुभूति हुई। "एक निस्सहाय, दुख की मारी अकेली लड़की जिसे इन विद्रोही किसानों की दया पर छोड़ दिया गया है! और कोई अजीब भाग्य-चक्र मुझे यहां ले आया है!" रोस्तोव प्रिंसेस मरीया की ओर देखते और उसकी बात सुनते हुए सोच रहा था। "और कितनी नम्रता-मधुरता और कुलीनता है इसके नाक-नक़्शे और भावाभिव्यक्ति में!" प्रिंसेस की भय से परिपूर्ण कहानी सुनते हुए वह सोच रहा था।

प्रिंसेस मरीया ने जब यह कहा कि यह सारा क़िस्सा उसके पिता जी के दफ़नाये जाने के अगले दिन हुआ तो उसकी आवाज़ कांप उठी। उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया और कुछ क्षण बाद इस शंका से कि रोस्तोव उसके शब्दों का यह अर्थ न लगा ले कि वह उसमें दया की भावना पैदा करना चाहती है, उसने प्रश्नात्मक और सहमी-सी दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा। रोस्तोव की आंखों में आंसू थे। प्रिंसेस मरीया की नज़र से उसके आंसू छिपे न रहे और उसने अपनी उन चमकीली आंखों से रोस्तोव को देखा जो उसके चेहरे की असुन्दरता को भूल जाने को विवश करती थीं।

"प्रिंसेस, मैं आपको बता नहीं सकता कि संयोग से ही यहां आ जाने के लिये अपने को कितना सौभाग्यशाली मानता हूं और अब आपकी कुछ सेवा कर सकूंगा," रोस्तोव ने उठते हुए कहा। "आप इसी वक़्त यहां से रवाना हो सकती हैं और मैं क़सम खाकर आपसे यह कहता हूं कि अगर आप मुझे अपने साथ जाने की अनुमति देंगी तो कोई भी आपको किसी तरह की तकलीफ़ देने की हिम्मत नहीं

कर सकेगा।" और बड़े आदर से उसी तरह सिर झुकाकर, जैसे कि राजवंश की महिलाओं के सम्मुख सिर झुकाया जाता है, वह दरवाज़े की तरफ़ चल दिया।

अपने आदरपूर्ण लहजे से रोस्तोव ने मानो यह प्रकट किया कि यद्यपि उसके साथ अपने परिचय को वह अपना परम सौभाग्य मानता है, तथापि उसकी इस कठिन परिस्थिति का वह उसके साथ घनिष्ठता बढ़ाने के लिये उपयोग नहीं करना चाहता।

प्रिंसेस मरीया उसके इस लहजे को समझ गयी और उसने इसका ऊंचा मूल्यांकन किया।

"मैं आपकी बहुत ही, बहुत ही कृतज्ञ हूं," प्रिंसेस ने उससे फ़्रांसीसी में कहा, "किन्तु आशा करती हूं कि यह केवल कोई ग़लत-फ़हमी ही थी और इसके लिये कोई भी क़ुसूरवार नहीं है।" प्रिंसेस अचानक रो पड़ी। "मैं क्षमा चाहती हूं," उसने कहा।

माथे पर बल डाले हुए रोस्तोव ने एक बार फिर बहुत सिर झुकाकर अपना आदर प्रकट किया और कमरे से बाहर चला गया।

१४

"तो कहो, प्यारी है वह? नहीं, मेरे भाई, मेरी उस गुलाबी पोशाकवाली का कोई जवाब नहीं और उसका नाम दुन्याशा है..." किन्तु रोस्तोव के चेहरे की ओर देखकर इल्यीन ख़ामोश हो गया। उसने देखा कि उसका हीरो और कमांडर कुछ दूसरी ही मनःस्थिति में वापस आया है।

रोस्तोव ने ग़ुस्से से इल्यीन की तरफ़ देखा और उसे कोई जवाब न देकर तेज़ क़दमों से गांव की तरफ़ चल दिया।

"मैं इन्हें मज़ा चखाऊंगा, मैं इनकी अक़्ल ठिकाने करूंगा, इन बदमाशों की!" वह मन ही मन कह रहा था।

अल्पातिच तेज़ क़दमों से, मानो दुलकी चाल से लगभग भागता हुआ बड़ी मुश्किल से रोस्तोव के क़रीब पहुंचा।

"हुज़ूर ने क्या निर्णय किया है?" उसके क़रीब पहुंचकर उसने पूछा।

रोस्तोव रुक गया और घूंसे तानकर अचानक बड़ी भयानक सूरत बनाये हुए अल्पातिच की ओर लपका।

"निर्णय? क्या निर्णय किया है? बूढ़े खूसट!" वह उसपर चिल्लाया। "तुम क्या भक मार रहे थे? बोलो? किसान विद्रोह करते हैं और तुम उनसे निपट नहीं सकते? तुम खुद ग़द्दार हो। जानता हूं मैं तुम सबको, तुम सबकी चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा..." और मानो इस शंका से कि वह अपने संचित क्रोध की शक्ति को व्यर्थ ही नष्ट न कर दे, वह अल्पातिच को और अधिक कुछ न कहकर तेज़ी से आगे बढ़ चला। अल्पातिच अपमान की भावना को दबाकर पहले की तरह ही रोस्तोव के पीछे-पीछे लगभग भागता हुआ उसे अपने विचार बताता रहा। उसने कहा कि किसान इस वक़्त बहुत बिगड़े हुए हैं और फ़ौजी दस्ते के बिना इस वक़्त उनसे उलझना ठीक नहीं होगा और इसलिये पहले फ़ौजी दस्ते को ही बुलवा लेना ठीक होगा।

"बड़ी ज़रूरत पड़ी है मुझे फ़ौजी दस्ता बुलवाने की... मैं खुद ही इनकी अक़्ल ठिकाने कर दूंगा," निकोलाई कुछ भी सोचे-समझे बिना विवेकहीन पाशविक क्रोध के कारण हांफता और इस ग़ुस्से को बाहर निकालने की आवश्यकता अनुभव करता हुआ कह उठा। यह न समझ पाते हुए कि क्या करने जा रहा है, वह अपने आप ही तेज़ और दृढ़ क़दमों से किसानों की भीड़ की तरफ़ बढ़ता जा रहा था। रोस्तोव भीड़ के जितना अधिक नज़दीक होता जा रहा था, अल्पातिच उतना ही अधिक यह अनुभव कर रहा था कि ग़ुस्से में की जानेवाली उसकी बेसमझी की इस हरकत के अच्छे नतीजे भी हो सकते हैं। रोस्तोव की तेज़ और दृढ़ चाल तथा उसकी चढ़ी हुई त्योरियां तथा चेहरे पर संकल्प का भाव देखकर किसानों के दिलों पर भी कुछ ऐसा ही प्रभाव पड़ रहा था।

हुस्सारों के गांव में आने और रोस्तोव के प्रिंसेस मरीया के पास जाने के बाद किसानों में कुछ बेचैनी फैल गयी और मतभेद हो गये। कुछ किसानों ने कहा कि आगन्तुक रूसी हैं और वे कहीं इस बात से नाराज़ न हो जायें कि उन्होंने मालकिन को जाने नहीं दिया। द्रोन का भी यही मत था, किन्तु जैसे ही उसने इसे व्यक्त किया, वैसे ही कार्प

और दूसरे किसान अपने इस भूतपूर्व मुखिया पर बरस पड़े।

"कितने सालों से तुम किसानों के माल पर चर्बी चढ़ाते रहे हो?" कार्प उसपर चिल्लाया। "तुम्हें भला क्या फ़र्क़ पड़ता है! तुम तो अपना गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकालकर यहां से चलते बनोगे। तुम्हें इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि हमारे घरों को बरबाद किया जाता है या नहीं?"

"हमसे कहा तो जा चुका है कि किसी तरह की कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिये, कोई भी अपना घर छोड़कर न जाये और यहां से कोई भी चीज़ लेकर न जाये, बस! इतनी ही बात है!" दूसरा किसान चिल्लाया।

"फ़ौज में जाने की बारी तो तुम्हारे बेटे की थी, मगर तुम्हें अपने मोटू पर दया आ गयी," एक नाटा-सा बूढ़ा द्रोन पर बिगड़ते हुए चिल्ला उठा, "और तुम मेरे वान्का को फ़ौज में ले गये। लेकिन कोई बात नहीं, एक दिन मरना तो हम सभी को होगा!"

"सो तो है ही, एक दिन मरना तो सभी को होगा!"

"लेकिन मैं किसान भाइयों से अलग थोड़े ही हूं।"

"हां, हां, तुम किसानों से अलग कैसे हो सकते हो, तुमने अपनी तोंद जो ख़ूब बढ़ा ली है!.."

दो लम्बे-तड़ंगे किसान अपना अलग ही राग अलाप रहे थे। इल्यीन, लाव्रूश्का और अल्पातिच को साथ लिये हुए रोस्तोव ज्योंही भीड़ के क़रीब पहुंचा, कार्प अपने कमरबन्द में उंगलियां खोंसे और ज़रा मुस्क-राते हुए भीड़ में से आगे आ गया। इसके विपरीत, द्रोन पीछे चला गया और लोग एक-दूसरे के साथ सट गये।

"ऐ! तुम्हारा मुखिया कौन है यहां?" रोस्तोव तेज़ क़दमों से भीड़ के क़रीब जाते हुए चिल्लाया।

"मुखिया? क्या ज़रूरत है आपको मुखिया की?.." कार्प ने पूछा।

वह इतना कह भी नहीं पाया था कि उसकी टोपी उड़कर दूर जा गिरी और ज़ोरदार घूंसा लगने के कारण उसका सिर एक तरफ़ को थोड़ा झुक गया।

"अपनी टोपियां उतारो, ग़द्दारो!" रोस्तोव ने गरजते हुए कहा। "कहां है मुखिया?" वह प्रचंडता से चिल्लाया।

"मुखिया, मुखिया को बुलाया जा रहा है... द्रोन ज़ाख़ारोविच, आपको," कुछ लोगों की घबरायी-घबरायी और विनम्र आवाज़ें सुनायी दीं तथा सभी किसान अपनी टोपियां उतारने लगे।

"हम विद्रोह नहीं कर रहे हैं, हम हुक्म बजा रहे हैं," कार्प ने कहा और इसी क्षण कुछ लोगों की अचानक पीछे से आवाज़ें सुनायी दीं:

"बड़े-बूढ़ों ने ही ऐसा फ़ैसला किया था, यहां हुक्म चलानेवाले भी तो बहुत हैं..."

"बहस करते हो?.. विद्रोह करते हो!.. बदमाश कहीं के! ग़द्दार!" कार्प को गरेबान से पकड़ते हुए रोस्तोव कुछ सोचे-समझे बिना ही परायी-सी आवाज़ में चिल्लाया। "इसकी मुश्कें बांध दो, मुश्कें बांध दो!" उसने चीख़कर कहा, यद्यपि लाव्रूश्का और अल्पातिच के अलावा उसे बांधनेवाला अन्य कोई भी वहां नहीं था।

ख़ैर, लाव्रूश्का भागकर कार्प के पास गया और उसने पीछे से उसके हाथ पकड़ लिये।

"हुज़ूर का हुक्म हो तो मैं टीले के पास से अपने लोगों को पुकार लूं?" लाव्रूश्का ने ऊंची आवाज़ में पूछा।

अल्पातिच ने किसानों को सम्बोधित किया, दो के नाम लेकर पुकारा और उनसे कहा कि वे कार्प को बांध दें। आज्ञा का पालन करते हुए दो किसान भीड़ में से आगे आ गये और कार्प को बांधने के लिये अपने कमरबन्द खोलने लगे।

"मुखिया कहां है?" रोस्तोव चिल्लाया।

नाक-भौंह सिकोड़े हुए द्रोन, जिसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं, भीड़ में से निकलकर सामने आया।

"तुम हो मुखिया? लाव्रूश्का, इसकी भी मुश्कें बांध दो!" रोस्तोव ने ऐसे चीख़कर कहा जैसे कि जानता हो कि उसके इस आदेश का भी विरोध नहीं किया जायेगा। और सचमुच ऐसा ही हुआ। दो अन्य किसान द्रोन को बांधने के लिये उसके क़रीब आ गये और द्रोन ने मानो उनकी मदद करते हुए अपना कमरबन्द खोलकर उन्हें दे दिया।

"और अब तुम लोग कान खोलकर मेरी बात सुनो," रोस्तोव ने किसानों को सम्बोधित किया – "सभी अपने-अपने घरों को चलते बनो, ख़बरदार जो मुझे किसी की भी आवाज़ सुनायी दी।"

"हमने किसी के साथ कोई बुराई तो नहीं की। बस, थोड़ी बेवक़ूफ़ी, कुछ बेअक़्ली ही की है... मैंने तो कहा था न कि यह सब ठीक नहीं है," एक-दूसरे की भर्त्सना करनेवाली आवाज़ें सुनायी दीं।

"मैंने तो तुमसे कहा था न," अल्पातिच ने फिर से अपना रोब जमाते हुए कहा। "तुम यह ग़लत काम कर रहे हो, भाइयो!"

"हमारी बेवक़ूफ़ी है, याकोव अल्पातिच," लोगों ने जवाब दिया और भीड़ इसी क्षण बिखरने तथा अपने-अपने रास्ते जाने लगी।

दो किसानों को, जिनके हाथ बंधे हुए थे, हवेली की ओर ले जाया जाने लगा। नशे में धुत्त दो किसान उनके पीछे-पीछे हो लिये।

"अरे, अब तो तुम देखने लायक़ हो!" कार्प को सम्बोधित करते हुए एक ने कहा।

"क्या कोई अपने मालिकों से भी ऐसे बात करता है? आख़िर तुमने सोचा क्या था?"

"उल्लू," दूसरे ने पुष्टि की, "सचमुच बिल्कुल उल्लू है!"

दो घण्टे बाद बोगुचारोवो की हवेली के अहाते में घोड़ा-गाड़ियां खड़ी थीं। किसान बड़ी फ़ुर्ती से मालिकों की चीज़ें ला लाकर इनपर लाद रहे थे और द्रोन, जिसे प्रिंसेस मरीया की इच्छानुसार उस बड़े बक्स से बाहर निकाल दिया गया था जिसमें उसे बन्द किया गया था, अहाते में खड़ा हुआ इस काम का सारा प्रबन्ध कर रहा था।

"तुम इसे ऐसे बुरे ढंग से नहीं रखो," एक लम्बे-तड़ंगे, गोल और मुस्कराते चेहरेवाले किसान ने नौकरानी के हाथ से मंजूषा लेते हुए कहा। "क़ीमती चीज़ है। तुम इसे ऐसे क्यों फेंक रही हो या फिर रस्सी से बांध रही हो, इसपर खरोंच आ जायेगी। मुझे यह पसन्द नहीं। सब कुछ क़ायदे और ढंग से होना चाहिये। इस तरह, इसपर चटाई लपेट दो और इसके ऊपर फूस रख दो, अब ठीक है, बहुत बढ़िया है!"

"अरे वाह, कितनी किताबें हैं, कितनी अधिक," प्रिंस अन्द्रेई की पुस्तकों की अलमारियां बाहर लानेवाले दूसरे किसान ने कहा। "देखो, ज़रा सम्भालकर! अरे, यारो, बहुत भारी हैं ये तो, बड़ी मोटी-मोटी किताबें हैं!"

"वे लिखते रहे हैं, मटरगश्ती नहीं करते रहे हैं!" लम्बे-तड़ंगे

और गोल चेहरेवाले किसान ने सबसे ऊपर रखे शब्दकोशों की ओर संकेत करते हुए कहा।

रोस्तोव प्रिंसेस मरीया के साथ अपनी जान-पहचान को ज़बर्दस्ती और आगे नहीं बढ़ाना चाहता था और इसलिये वह उसके पास न जाकर गांव में ही रुककर उसकी बग्घी के बाहर आने का इन्तज़ार करता रहा। प्रिंसेस मरीया की बग्घियां जब हवेली के अहाते से बाहर आ गयीं तो वह घोड़े पर सवार हो गया और बोगुचारोवो से बारह वेर्स्ता दूर उस रास्ते तक उसके साथ ही रहा जहां हमारी सेनायें पड़ाव डाले थीं। यानकोवो की सराय में उसने बहुत आदरपूर्वक उससे विदा ली और पहली बार प्रिंसेस का हाथ चूमा।

"आप मुझे ऐसे शर्मिन्दा क्यों कर रही हैं," रोस्तोव ने प्रिंसेस के इस आभार-प्रदर्शन के कारण कि उसने उसकी जान बचायी है (प्रिंसेस ने रोस्तोव की सहायता को इन्हीं शब्दों में व्यक्त किया था) लज्जारुण होते हुए कहा। "मेरी जगह किसी पुलिस-अफ़सर ने भी यही किया होता। अगर हमें सिर्फ़ किसानों से ही लड़ना होता तो हम दुश्मन को इतनी दूर तक न आने देते," किसी कारण लजाते और बातचीत का विषय बदलने की कोशिश करते हुए उसने कहा। "मुझे तो केवल इसी बात की प्रसन्नता है कि आपके साथ परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तो अब मैं आपसे विदा लेता हूं, प्रिंसेस, आपके सुख-सौभाग्य और चैन की कामना करता हूं। मुझे आशा है कि हम किन्हीं अधिक मधुर परिस्थितियों में फिर कभी मिलेंगे। अगर आप मुझे लज्जित नहीं करना चाहतीं तो कृपया मेरे प्रति आभार प्रकट नहीं कीजिये।"

किन्तु प्रिंसेस ने यदि शब्दों में उसके प्रति और अधिक आभार व्यक्त नहीं किया, तो कृतज्ञता तथा स्नेह से चमकते हुए उसके चेहरे के भाव ने इसे अभिव्यक्ति दे दी। वह रोस्तोव की इस बात पर विश्वास करने को तैयार नहीं थी कि उसके प्रति आभार-प्रदर्शन का कोई कारण नहीं है। इसके विपरीत, उसे तो इस चीज़ के बारे में ज़रा भी सन्देह नहीं था कि अगर वह न आता तो वह विद्रोही किसानों और फ़्रांसीसियों की मनमानी का शिकार बन जाती, कि **उसने** उसे बचाने के लिये ख़ुद को स्पष्ट और भयानक ख़तरे की परिस्थिति में

डाला। इसके अलावा यह बात भी निश्चित रूप से सही थी कि वह उच्च और उदात्त आत्मावाला व्यक्ति है जो उसकी स्थिति और गहरे शोक को समझ पाया। जब उसने रोते हुए उससे अपने दुख-शोक की चर्चा की थी तो कैसे उसकी दयालु और निष्कपट आंखें छलछला आयी थीं – यह चीज़ उसके मानस-पट पर अंकित होकर रह गयी थी।

रोस्तोव से विदा लेने के बाद प्रिंसेस जब अकेली रह गयी तो उसने अचानक यह अनुभव किया कि उसकी आंखें गीली हो गयी हैं और इसी समय एक बार फिर से उसके सामने यह अजीब-सा सवाल उभरा कि वह उसे प्यार तो नहीं करने लगी?

इस चीज़ के बावजूद कि इस समय प्रिंसेस की स्थिति कुछ विशेष सुखद नहीं थी, फिर भी मास्को की तरफ़ आगे जाते हुए दुन्याशा ने, जो प्रिंसेस के साथ इसी बग्घी में जा रही थी, इस बात की ओर ध्यान दिया कि प्रिंसेस खिड़की से बाहर देखते हुए किसी कारणवश कभी-कभी ख़ुशी और उदासी से मुस्कराने लगती थी।

"अगर मैं उसे प्यार करने लगी हूं तो भी क्या हुआ?" प्रिंसेस मरीया सोचती थी।

प्रिंसेस को यह स्वीकार करते हुए चाहे कितनी ही लज्जा क्यों नहीं अनुभव होती थी कि ख़ुद ही उस व्यक्ति को पहले प्यार करने लगी है जो शायद उसे कभी भी प्यार न करे, वह अपने को इस विचार से तसल्ली देती थी कि कोई, कभी भी यह नहीं जान पायेगा और अगर किसी से इसकी चर्चा किये बिना उसी को जीवन भर प्यार करती रहेगी, जिसे उसने पहली और अन्तिम बार प्यार किया है, तो इसमें भी उसका कोई दोष नहीं होगा।

कभी-कभी जब उसे उसकी नज़र, उसकी हमदर्दी और उसके शब्दों की याद आती तो उसे ऐसा लगता कि उसकी ख़ुशी असम्भव नहीं, बल्कि सम्भव है। ऐसे क्षणों में ही तो दुन्याशा ने प्रिंसेस को बग्घी की खिड़की से बाहर झांकते और मुस्कराते देखा।

"यह भी कैसी अजीब बात है कि वह ठीक मौक़े पर ही बोगुचारोवो आया!" प्रिंसेस मरीया सोच रही थी। "और यह भी कैसी अजीब बात है कि इसी की बहन ने प्रिंस अन्द्रेई से शादी करने से इन्कार किया!" इन सभी संयोगों को प्रिंसेस ने भगवान की इच्छा ही माना।

प्रिंसेस मरीया ने रोस्तोव के दिल पर अपनी जो छाप छोड़ी, वह बहुत ही मधुर थी। प्रिंसेस का ध्यान आने पर उसका मन खिल उठता और जब उसके साथी बोगुचारोवो में उसके साथ हुए इस दिलचस्प क़िस्से के बारे में जानने के बाद मज़ाक़ में उससे यह कहते कि वह गया तो था सूखी घास की तलाश में और उसने ढूंढ़ ली रूस की एक सबसे धनी वधू, तो वह झल्ला उठता। वह इसलिये झल्लाता था कि उसकी इच्छा के विरुद्ध अपार धन-दौलत की स्वामिनी, उसके मन को अच्छी लगनेवाली और विनम्र-विनीत प्रिंसेस के साथ शादी करने का विचार कई बार उसके दिमाग़ में आ चुका था। जहां तक ख़ुद निकोलाई का सवाल था तो वह अपने लिये तो प्रिंसेस से बेहतर किसी दूसरी बीवी की कल्पना ही नहीं कर सकता था – उससे शादी करने से काउंटेस यानी उसकी मां को भी ख़ुशी होती, उसके पिता की माली हालत भी सुधर जाती और इसके अलावा – निकोलाई ऐसा अनुभव करता था – प्रिंसेस मरीया भी सुखी हो सकती थी।

मगर सोन्या? उसे दिया हुआ वचन? यही तो वजह थी कि जब यार-दोस्त प्रिंसेस मरीया के बारे में उससे मज़ाक़ करते थे तो वह झल्ला उठता था।

१५

सेनाओं की कमान अपने हाथ में लेने के बाद कुतूज़ोव को प्रिंस अन्द्रेई का ध्यान आया और उन्होंने उसे मुख्य सैनिक कार्यालय में आने का आदेश भिजवाया।

प्रिंस अन्द्रेई दिन के उसी समय त्सारेवो-ज़ाइमिश्चे गांव पहुंचा, जब कुतूज़ोव सेनाओं का पहला निरीक्षण कर रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई उस गांव के पादरी के घर के पास रुक गया जिसके सामने सेनापति की बग्घी खड़ी थी और फाटक के क़रीब बेंच पर बैठकर "महामान्य" का, जैसे कि अब सभी कुतूज़ोव को सम्बोधित करते थे, इन्तज़ार करने लगा। गांव के बाहर खुले मैदान से कभी तो फ़ौजी बैंड की ध्वनियां सुनायी देतीं और कभी नये सेनापति के सम्मान में "हुर्रा!" चिल्लानेवाले अनेकानेक सैनिकों की बहुत ही ऊंची आवाज़ गूंज उठती।

सेनापति की अनुपस्थिति और अच्छे मौसम का आनन्द लेते हुए दो अर्दली, एक सन्देशवाहक और बटलर भी यहीं, प्रिंस अन्द्रेई से कोई दस क़दम की दूरी पर खड़े थे। घोड़े पर सवार काले बालों, बड़ी-बड़ी मूंछों और गलमुच्छोंवाला नाटा-सा हुस्सार लेफ़्टिनेंट-कर्नल फाटक के पास आया और प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखकर उससे यह पूछा – महामान्य जी क्या यहीं रहते हैं और वह जल्दी ही आ जायेंगे या नहीं?

प्रिंस अन्द्रेई ने उसे जवाब दिया कि वह महामान्य के मुख्य सैनिक कार्यालय का आदमी नहीं है और ख़ुद भी कुछ ही समय पहले यहां पहुंचा है। हुस्सारों के लेफ़्टिनेंट-कर्नल ने सेनापति के बने-ठने अर्दली से उपरोक्त प्रश्न किया और अर्दली ने उसी विशेष तिरस्कारपूर्ण अन्दाज़ में जवाब दिया जिस अन्दाज़ में सेनापति के अर्दली फ़ौजी अफ़सरों से बात करते हैं।

"क्या पूछा आपने, महामान्य कहां हैं? मैं समझता हूं कि अभी आ जायेंगे। आपको क्या ज़रूरत है उनकी?"

हुस्सारों का लेफ़्टिनेंट-कर्नल सेनापति के अर्दली का जवाब सुनकर अपनी बड़ी-बड़ी मूंछों के बीच ही मुस्कराया, घोड़े से नीचे उतरा, उसे अपने अर्दली के हवाले किया, बोल्कोन्स्की के पास गया और ज़रा सिर झुकाकर उसने उसका अभिवादन किया। बोल्कोन्स्की ने बेंच पर थोड़ा खिसककर उसके बैठने की जगह बना दी। हुस्सारों का लेफ़्टि-नेंट-कर्नल उसकी बग़ल में बैठ गया।

"आप भी सेनापति की राह देख रहे हैं?" हुस्सारों के लेफ़्टिनेंट-कर्नल ने बात शुरू की। "सुनने में आया है कि कोई भी उनसे मिल सकता है, शुक्र है भगवान का। वरना इन सासेज बनानेवालों के साथ तो बड़ी मुसीबत थी! येर्मोलोव ने व्यर्थ ही तो जर्मन बना लिये जाने की प्रार्थना नहीं की थी। कम से कम अब रूसियों की बातों पर कान तो दिया जायेगा। नहीं तो शैतान ही जाने कि क्या क़िस्सा हो रहा था। पीछे ही हटते जा रहे थे, लगातार पीछे ही हटते जा रहे थे। आपने इस अभियान में भाग लिया है?" उसने प्रश्न किया।

"हां, मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया, "मैंने पीछे हटने के अभियान में ही भाग नहीं लिया, बल्कि मुझे जो कुछ सबसे ज़्यादा प्यारा था, मैंने तो उसे भी खो दिया है। अपनी जागीरों और उस घर को, जहां मेरा जन्म हुआ था, खोने

की तो चर्चा ही क्या की जाये... अपने पिता जी को भी खो बैठा हूं जिनका गहरे दुख के कारण देहान्त हो गया। मैं स्मोलेन्स्कवासी हूं।"

"सच?.. आप प्रिंस बोल्कोन्स्की हैं? बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर! मैं लेफ़्टिनेंट-कर्नल देनीसोव हूं जिसे अधिकतर लोग वास्का के नाम से जानते हैं," देनीसोव ने प्रिंस अन्द्रेई का तपाक से हाथ दबाते और विशेष दयालुता से बोल्कोन्स्की के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा। "हां, मैंने इसके बारे में सुना है," उसने सहानुभूतिपूर्वक कहा और कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोला – "तो यह है सीथियायी लड़ाई। यह सब तो ठीक है, लेकिन उनके लिये नहीं जिन्हें इसका नतीजा भुगतना पड़ता है। तो आप प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की हैं?" उसने अपना सिर हिलाया। "बहुत खुशी हुई, बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर," उसने प्रिंस अन्द्रेई का हाथ दबाते हुए उदासी भरी मुस्कान से एक बार फिर कहा।

प्रिंस अन्द्रेई देनीसोव को जानता था, क्योंकि नताशा के मुंह से अपने पहले विवाह-प्रस्तावकर्त्ता के रूप में उसका क़िस्सा सुन चुका था। इस मधुर और कटु स्मृति ने उन टीसती अनुभूतियों को फिर से सजीव कर दिया जिनके सम्बन्ध में उसने पिछले काफ़ी समय से अब कभी नहीं सोचा था, मगर जो उसकी आत्मा में कहीं सांस अवश्य ले रही थीं। कुछ ही समय पहले स्मोलेन्स्क को छोड़ने, लीसिये गोरि में जाने और पिता की मृत्यु का समाचार पाने जैसी बहुत ही गम्भीर घटनाओं ने उसके मन पर इतने गहरे चिह्न अंकित किये थे, उसे इतनी अधिक अनुभूतियां हुई थीं कि अतीत की ये स्मृतियां बहुत कम ही उसके सामने आती थीं और जब आती थीं तो वे उसके मन पर पहले जैसा गहरा असर भी पैदा नहीं करती थीं। बोल्कोन्स्की के नाम से देनीसोव के अन्तर में भी जो स्मृतियां सजीव हो उठीं, वे बहुत पहले के उस काव्यमय अतीत का अंग थीं, जब उसने शाम के भोजन और नताशा के गाने के बाद स्वयं भी कुछ न जानते-समझते हुए पन्द्रह साल की नताशा के सामने विवाह का प्रस्ताव कर दिया था। वह उस वक़्त की यादों और नताशा के प्रति अपने प्रेम का स्मरण करते हुए मुस्कराया और फ़ौरन उस बात की चर्चा करने लगा जो उसके दिल-दिमाग़ पर पूरी तरह से छाई हुई थी और जिसके कारण उसे किसी दूसरी चीज़ की सुध ही नहीं थी। यह सैनिक-अभियान की वह योजना

थी, जो उसने हरावल का अंग होते हुए पीछे हटने के समय सोची थी। वह बार्कले डे टोल्ली के सामने यह योजना पेश कर चुका था और अब इसे कुतूज़ोव के सम्मुख प्रस्तुत करने का इरादा रखता था। इस योजना का आधार यह था कि फ़्रांसीसियों की सैनिक गति-विधियों का कार्य-क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है और इसके बजाय या फ़्रांसीसियों को आगे बढ़ने से रोकने के लिये उनका मुक़ाबला करने के साथ-साथ उनकी सम्पर्क-रेखा या पिछवाड़े पर भी फ़ौजी कार्रवाई की जाये। वह प्रिंस अन्द्रेई को अपनी योजना स्पष्ट करने लगा।

"फ़्रांसीसी इतने बड़े क्षेत्र में फैले हुए मोरचे को नहीं सम्भाल सकते। यह असम्भव है। मैं इसे तोड़ने की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार हूं। मुझे पांच सौ सैनिक दे दीजिये और मैं यक़ीन दिलाता हूं कि इस रेखा को भंग कर दूंगा! सिर्फ़ एक ही रास्ता है – छापेमारों की लड़ाई का रास्ता।"

देनीसोव उठकर खड़ा हो गया था और हाथों को हिलाते हुए बोल्कोन्स्की को अपनी योजना स्पष्ट कर रहा था। उसके इस स्पष्टी-करण के दौरान परेड के मैदान से अधिकाधिक दूर होती और फैल-ती तथा बीच-बीच में संगीत तथा गानों से घुलती-मिलती हुई जयजयकार ध्वनियां सुनायी दीं। घोड़ों की टापें और जयजयकार का शोर गांव में सुनायी देने लगा।

"वह आ रहे हैं," फाटक के पास खड़े कज़्ज़ाक ने चिल्लाकर कहा, "आ रहे हैं!"

बोल्कोन्स्की और देनीसोव उस फाटक की तरफ़ बढ़ गये जिसके क़रीब सेनापति के सम्मान में सलामी देनेवाले कुछ सैनिक खड़े थे और इन्होंने एक नाटे-से कुम्मैती घोड़े पर कुतूज़ोव को आते देखा। बहुत बड़ी संख्या में घोड़ों पर सवार जनरल उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। बार्कले तो लगभग उनके साथ-साथ ही अपना घोड़ा बढ़ा रहा था। फ़ौजी अफ़सरों की एक बड़ी भीड़ इनके पीछे-पीछे और इर्द-गिर्द दौड़ती हुई "हुर्रा!" चिल्ला रही थी।

घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए कुछ एडजुटेंट पहले ही अहाते में पहुंच गये। कुतूज़ोव बड़ी बेसब्री से अपने घोड़े की बग़लों में एड़ मारते हुए, जो उनके बोझ तले दबता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था, लगा-तार सिर झुकाते और लाल फ़ीते से सजी तथा छज्जे के बिना घुड़सेना

की अपनी सफ़ेद टोपी के साथ हाथ छुआकर सलामी लेते जा रहे थे। सलामी दे रहे हट्टे-कट्टे ग्रेनेडियरों के क़रीब पहुंचकर, जिनमें से अधिकांश तमगे और पदक लगाये थे, कुतूज़ोव ने एक मिनट तक सेनापति की पैनी नज़र से उन्हें एकटक चुपचाप देखा और फिर अपने गिर्द खड़े जनरल तथा फ़ौजी अफ़सरों की ओर मुंह किया। उनका चेहरा गम्भीर हो गया। उन्होंने हैरानी प्रकट करते हुए कंधे झटके।

"ऐसे-ऐसे जवानों के होते हुए हम पीछे हटते जायें, पीछे हटते जायें!" कुतूज़ोव ने कहा। "तो नमस्ते, जनरल," उन्होंने इतना और कह दिया तथा प्रिंस अन्द्रेई और देनीसोव के क़रीब से गुज़रते हुए अपने घोड़े को अहाते की तरफ़ बढ़ा ले चले।

"हुर्रा! हुर्रा! हुर्रा!" उनके पीछे से लोगों की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

कुतूज़ोव के साथ प्रिंस अन्द्रेई की अन्तिम भेंट के बाद के अरसे में वह और भी मोटे, थलथल और भारी-भरकम हो गये थे। किन्तु उनकी आंख की सफ़ेदी, घाव का निशान और उनके चेहरे तथा पूरे व्यक्तित्व में थकान का भाव – यह सब कुछ, जिससे प्रिंस अन्द्रेई चिर-परिचित था, ज्यों का त्यों था। वह घुड़सेना की सफ़ेद टोपी और फ़ौजी फ़ॉक-कोट पहने थे (उनके कंधे पर पतली-सी पेटी के सहारे कोड़ा लटका हुआ था)। वह नीचे को धंसे तथा हिलते-डुलते हुए अपने फुर्तीले घोड़े पर बैठे थे।

"सी ... सी ... सी ..." उन्होंने अहाते में घोड़ा बढ़ाते हुए मुश्किल से सुनायी देनेवाली सीटी बजायी। उनके चेहरे पर उस व्यक्ति के समान राहत की ख़ुशी झलक रही थी, जो अपना कोई कर्त्तव्य पूरा करने के बाद आराम करने का इरादा रखता हो। उन्होंने अपने सारे शरीर को आगे की ओर झुकाते और ज़ोर लगाने के कारण माथे पर बल डालते हुए अपना बायां पांव रकाब में से बाहर निकाला, बड़ी मुश्किल से उसे ज़ीन तक पीछे लाये, घुटने को उसपर टिकाया और आह-ओह करते हुए अपने को उन कज़्ज़ाकों तथा एडजुटेंटों के हाथों में सौंप दिया जो उन्हें सहारा देकर सम्भाले हुए थे।

उन्होंने अपने को ठीक-ठाक किया, फिर आंखें सिकोड़कर इधर-उधर देखा और प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ नज़र डालकर और सम्भवतः उसे न पहचानकर अपनी ढीली-ढाली चाल से पोर्च की ओर चल दिये।

"सी ... सी ... सी," उन्होंने एक और बार सीटी बजायी और फिर से प्रिंस अन्द्रेई पर नज़र डाली। जैसाकि बूढ़े लोगों के साथ अक्सर होता है, कुछ क्षणों के बाद ही वह अपनी याददाश्त को प्रिंस अन्द्रेई के व्यक्तित्व के साथ जोड़ पाये।

"अरे, नमस्ते प्रिंस, नमस्ते, मेरे प्यारे, आओ मेरे साथ ..." उन्होंने थकी-थकी-सी आवाज़ में कहा और इधर-उधर देखते तथा अपने बोझ के कारण चरमराते तख़्तों पर बोझल-से क़दम रखते हुए पोर्च में चले गये। उन्होंने फ़ौजी फ़ॉक-कोट के बटन खोल दिये और पोर्च में रखी हुई बेंच पर बैठ गये।

"तुम्हारे पिता जी का क्या हालचाल है?"

"कल उनके देहान्त का समाचार मिला है," प्रिंस अन्द्रेई ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

कुतूज़ोव ने भय-विस्फारित आंखों से प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखा, इसके बाद टोपी उतारकर अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया – "भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें। प्रभु की इच्छा के सामने किसी का वश नहीं!" उन्होंने बहुत गहरी सांस ली और चुप हो गये। "मैं उनको प्यार और उनका आदर करता था और सच्चे दिल से तुम्हारे प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं।" उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई को बांहों में भर लिया, अपनी चर्बी चढ़ी छाती के साथ चिपका लिया और देर तक अपने से अलग नहीं किया। जब उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई को अपनी बांहों से मुक्त किया तो उसने देखा कि कुतूज़ोव के मोटे-मोटे होंठ कांप रहे हैं और उनकी आंखों में आंसू हैं। उन्होंने उसांस ली और दोनों हाथों से बेंच को पकड़ लिया ताकि उसका सहारा लेकर उठ सकें।

"चलो, मेरे कमरे में चलो, हम वहां और बातचीत करेंगे," उन्होंने कहा। किन्तु इसी समय देनीसोव, जो अपने बड़े अफ़सरों से भी उतना ही कम डरता था जितना कि दुश्मन से, और जिसे पोर्च के पास खड़े एडजुटेंटों ने खीझते हुए फुसफुसाकर रोकने की कोशिश की थी, बड़े साहस से पोर्च की पैड़ियों पर अपनी ऐड़ें बजाता हुआ पोर्च में आ गया। कुतूज़ोव ने अपने हाथों को बेंच पर पहले की तरह टिकाये हुए ही नाराज़गी से देनीसोव की तरफ़ देखा। देनीसोव ने अपना नाम बताया और यह कहा कि वह महामान्य से मातृभूमि की भलाई के लिये एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मामले की चर्चा करना चाहता

है। कुतूज़ोव थकी-थकी नज़र से देनीसोव को देखने लगे और झल्लाहट व्यक्त करते हुए उन्होंने बेंच से हाथ हटाकर उन्हें पेट पर रख लिया और देनीसोव के शब्दों को प्रश्नात्मक ढंग से दोहराया – "मातृ-भूमि की भलाई के लिये? ऐसा क्या मामला है वह? बताओ।" देनीसोव किसी लड़की की भांति शर्म से लाल हो गया (इस गलमुच्छों, ख़ासी उम्र और पियक्कड़पन की छापवाले चेहरे पर शर्म की लाली देखना बड़ा अजीब लग रहा था) और वह बड़ी दिलेरी से स्मोलेन्स्क तथा व्याज़्मा के बीच शत्रु की सम्पर्क-रेखा को भंग करने की अपनी योजना स्पष्ट करने लगा। देनीसोव इन्हीं क्षेत्रों का रहनेवा-ला और यहां की चप्पा-चप्पा ज़मीन से भली-भांति परिचित था। निस्सन्देह उसकी योजना बहुत अच्छी प्रतीत हुई, ख़ास तौर पर उस विश्वास-शक्ति के कारण जो उसके शब्दों में थी। कुतूज़ोव अपने पांवों पर नज़र टिकाये थे और जब-तब बग़ल के छोटे-से मकान के अहाते की ओर देख लेते थे मानो उन्हें वहां से किसी अप्रिय चीज़ के प्रकट होने की शंका हो। उस छोटे-से घर में से, जिसकी तरफ़ वह जब-तब देख लेते थे, देनीसोव की चर्चा के दौरान वास्तव में ही बग़ल में थैला दबाये हुए एक जनरल दिखाई दिया।

"क्या सब कुछ तैयार हो गया?" देनीसोव के विवरण के बीच में ही कुतूज़ोव ने उससे पूछा।

"सब कुछ तैयार हो गया, महामान्य जी," जनरल ने कहा। कुतूज़ोव ने ऐसे अपना सिर हिलाया मानो कह रहे हों – "भला एक आदमी इतने अधिक मामलों की ओर कैसे ध्यान दे सकता है" और देनीसोव की बात सुनते रहे।

"एक रूसी अफ़सर के नाते क़सम खाकर आपसे यह कहता हूं कि मैं नेपोलियन की सम्पर्क-रेखा तोड़ डालूंगा," देनीसोव ने कहा।

"रसद विभाग के बड़े अफ़सर किरील्ल अन्द्रेयेविच देनीसोव से तुम्हारा क्या रिश्ता है?" कुतूज़ोव ने अचानक पूछ लिया।

"वह मेरे सगे चाचा थे, महामान्य जी।"

"अच्छा! बड़े अच्छे दोस्त थे हम," कुतूज़ोव ने ख़ुश होते हुए कहा। "तो ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे, तुम यहीं, मुख्य सैनिक कार्यालय के लोगों के साथ ही ठहर जाओ, हम कल बातचीत करेंगे।" इतना कहकर उन्होंने देनीसोव की ओर सिर झुकाया, दूसरी तरफ़

मुंह कर लिया और उन काग़ज़ात को लेने के लिये हाथ बढ़ा दिया जो कोनोव्नीत्सिन लेकर आया था।

"हुज़ूर, क्या आपके लिये कमरे में चलना ज़्यादा आरामदेह नहीं रहेगा?" इस वक़्त ड्यूटी बजा रहे जनरल ने कुछ खीझी-सी आवाज़ में कहा। "आपको कुछ योजनायें देखनी हैं और कुछ काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करने हैं।" इसी क्षण दरवाज़े से बाहर आनेवाले एडजुटेंट ने यह सूचित किया कि घर के अन्दर सब कुछ तैयार हो गया है। किन्तु कुतूज़ोव सम्भवतः सभी काम-काज से मुक्त होकर ही भीतर जाना चाहते थे। उन्होंने नाक-भौंह सिकोड़ी।

"नहीं, भैया, ज़रा यहीं कोई छोटी-सी मेज़ लाने को कह दीजिये, मैं सब काग़ज़ यहीं पर देख लूंगा," उन्होंने जवाब दिया। "तुम जाना नहीं," उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई को सम्बोधित करते हुए इतना और कह दिया। प्रिंस अन्द्रेई पोर्च में ही रुका रहकर ड्यूटी-जनरल की रिपोर्ट सुनने लगा।

इस रिपोर्ट के दौरान प्रिंस अन्द्रेई को घर के भीतर जाने के दरवाज़े के पीछे किसी नारी की खुसर-फुसर और रेशमी पोशाक की सरसराहट सुनायी दी। उस दिशा में कई बार नज़र डालने पर उसे दरवाज़े के पीछे गुलाबी पोशाक पहने और सिर पर बैंगनी रंग का रेशमी रूमाल बांधे और हाथ में तश्तरी लिये गदराये बदन तथा लाल-लाल गालोंवाली एक सुन्दर महिला खड़ी दिखाई दी। वह सम्भवतः सेनापति के अन्दर आने का इन्तज़ार कर रही थी। कुतूज़ोव के एडजुटेंट ने फुसफुसाते हुए प्रिंस अन्द्रेई को स्पष्ट किया कि वह पादरी की बीवी और गृह-स्वामिनी है जो रूसी परम्परा के अनुसार नमक-रोटी से महामान्य जी का स्वागत करना चाहती है। उसके पति ने सलीब हाथ में लिये हुए गिरजाघर में महामान्य जी का स्वागत किया था और वह घर पर ऐसा ही करनेवाली है... "बड़ी प्यारी है," एडजुटेंट ने मुस्कराते हुए इतना और जोड़ दिया। इन शब्दों की भनक मिलने पर कुतूज़ोव ने मुड़कर देखा। कुतूज़ोव ड्यूटी-जनरल की रिपोर्ट को (जिसमें मुख्यतः त्सारेवो-ज़ाइमिश्चे की सैनिक-स्थिति की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही थी) उसी तरह से सुन रहे थे जैसे उन्होंने देनीसोव की बातें सुनी थीं, उसी तरह से, जैसे सात साल पहले उन्होंने आउस्टेरलिट्ज़ की युद्ध-परिषद का वाद-विवाद सुना था। वह इसे

सम्भवतः इसीलिये सुन रहे थे कि उनके कान थे और इस चीज़ के बावजूद कि दर्द से राहत पाने के लिये उन्होंने एक कान में सन का टुकड़ा ठूंस रखा था, वह सुने बिना नहीं रह सकते थे। किन्तु यह स्पष्ट था कि ड्यूटी-जनरल उनसे जो कुछ भी कह सकता था, उससे न केवल उन्हें कोई हैरानी हो सकती थी या उसमें उनकी कोई दिलचस्पी हो सकती थी, बल्कि यह कि उन्हें पहले से ही वह सब मालूम था जो उनसे कहा जानेवाला था और वह इसे सुन इसलिये रहे थे कि सुनना ही चाहिये, ठीक वैसे ही, जैसे गिरजे में प्रार्थना सुनी ही जानी चाहिये। देनीसोव ने जो कुछ कहा था, वह बड़े काम और समझदारी की बात थी। ड्यूटी-जनरल जो कुछ कह रहा था, वह और भी ज़्यादा काम तथा समझदारी की बात थी, मगर स्पष्ट था कि कुतूज़ोव ज्ञान और बुद्धिमत्ता को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं तथा कोई ऐसी दूसरी चीज़ जानते हैं जिसे मामले को तय करना था,–कोई ऐसी दूसरी चीज़, जो बुद्धि और ज्ञान पर निर्भर नहीं थी। प्रिंस अन्द्रेई बहुत ध्यान से सेनापति के चेहरे के भाव को देख रहा था और उसे उसपर ऊब, दरवाज़े के पीछे नारी की खुसर-फुसर का क्या मतलब हो सकता है, इस बात की जिज्ञासा तथा शिष्टता बनाये रखने का ही भाव दिखाई दे रहा था। साफ़ नज़र आ रहा था कि कुतूज़ोव बुद्धिमत्ता, ज्ञान, देनीसोव द्वारा व्यक्त की गयी देशभक्तिपूर्ण भावनाओं को भी तिरस्कार की दृष्टि से देख रहे थे, किन्तु वह बुद्धि, भावना और ज्ञान से इनके प्रति तिरस्कार नहीं व्यक्त कर रहे थे (क्योंकि वह इनका प्रदर्शन करने का ज़रा भी प्रयास नहीं करते थे), बल्कि किसी दूसरी ही चीज़ के आधार पर ऐसा कर रहे थे। वह इनके प्रति तिरस्कार व्यक्त कर रहे थे अपने बुढ़ापे, जीवन के अपने लम्बे अनुभव के आधार पर। इस रिपोर्ट में कुतूज़ोव ने जिस एक ही बात की वृद्धि की, वह रूसी सेनाओं की लूट-मार से सम्बन्धित थी। रिपोर्ट के अन्त में ड्यूटी-जनरल ने महामान्य के सम्मुख हस्ताक्षर के लिये एक काग़ज़ पेश किया। इसमें यह कहा गया था कि उस ज़मींदार के मुआवज़े को ध्यान में रखते हुए, जिसकी जई की हरी फ़सल सेना ने काट ली थी, सेना-कमांडरों से उसकी क़ीमत हासिल की जाये।

यह मामला सुनने पर कुतूज़ोव ने चटखारा भरा और सिर हिलाया।

"इस काग़ज़ को चूल्हे में... आग में फेंक दो! मैं हमेशा के

लिये एक बार ही तुमसे यह कहे देता हूं, मेरे प्यारे," वह बोले, "ऐसे सभी काग़ज़ आग में फेंक देना। सैनिकों का जितना भी मन चाहे, वे फ़सलें और लकड़ियां काटते रहें। मैं न तो इसका हुक्म दे रहा हूं और न इजाज़त, लेकिन न ही वसूली कर सकता हूं। ऐसा तो होगा ही। आटे के साथ घुन तो पिसेगा ही।" उन्होंने इस काग़ज़ पर एक बार फिर नज़र डाली। "ओह, यह जर्मन ढंग की औपचारिकता, जर्मन तौर-तरीक़ा!" उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा।

१६

"तो अब सारा काम ख़त्म हो गया," कुतूज़ोव ने आख़िरी काग़ज़ पर हस्ताक्षर करते, बोझिल ढंग से उठते, अपनी गोरी, गुदगुदी गर्दन के बल ठीक करते हुए बोले और कुछ खिले हुए चेहरे के साथ दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गये।

पादरिन, जिसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी थी, तश्तरी उठाने के लिये लपकी, जिसे बहुत देर तक तैयारी करने के बावजूद वह ठीक वक़्त पर नहीं दे पायी। उसने बहुत झुककर अभिवादन करते हुए उसे कुतूज़ोव को भेंट कर दिया।

कुतूज़ोव ने आंखें सिकोड़ लीं, वह मुस्कराये, उन्होंने उसकी ठोड़ी को हाथ से ऊपर उठाया और बोले:

"कितनी सुन्दर हो तुम! धन्यवाद, मेरी प्यारी!"

उन्होंने अपनी शलवार की जेब से सोने के कुछ सिक्के निकाले और उसकी तश्तरी में रख दिये।

"तो कैसा हालचाल है?" कुतूज़ोव अपने रहने के लिये तैयार किये गये कमरे की तरफ़ चल दिये। पादरिन, जिसके लाल-लाल गालों पर गुल पड़ रहे थे, मुस्कराती हुई उनके पीछे-पीछे कमरे में चली गयी। कुतूज़ोव का एडजुटेंट प्रिंस अन्द्रेई के पास पोर्च में आया और उसे नाश्ता करने के लिये अन्दर बुला ले गया; आध घण्टे बाद प्रिंस अन्द्रेई को फिर से कुतूज़ोव के पास बुलाया गया। कुतूज़ोव पहले की तरह फ़ौजी फ़्रॉक-कोट के बटन खोले हुए आरामकुर्सी पर लेटे हुए थे। वह फ़्रांसीसी

भाषा की एक पुस्तक पढ़ रहे थे, जिसे प्रिंस अन्द्रेई के भीतर आने पर उन्होंने काग़ज़ काटनेवाले चाकू को पृष्ठ-चिह्न के रूप में रखकर बन्द कर दिया। यह फ़्रांसीसी लेखिका मदाम दे जानलीस का उपन्यास 'हंस के सूरमा' था, जैसाकि प्रिंस अन्द्रेई को मुखावरण पर नज़र डालने से पता चला।

"आओ, बैठो, बैठो, अब कुछ बातचीत कर लेंगे," कुतूज़ोव ने कहा, "दुख की बात है, बहुत दुख की बात है। लेकिन यह याद रखना, मेरे प्यारे, कि मैं भी तुम्हारा बाप हूं, तुम्हारा दूसरा बाप हूं ..." प्रिंस अन्द्रेई ने कुतूज़ोव को वह सब कह सुनाया जो वह पिता के देहान्त के बारे में जानता था और वह भी जो उसने लीसिये गोरि के पास से गुज़रते हुए वहां देखा था।

"कैसी दुर्गति... कैसी दुर्गति करवा दी है उन्होंने हमारी," प्रिंस अन्द्रेई द्वारा बतायी गयी बातों से सम्भवतः रूस की वास्तविक स्थिति की स्पष्ट कल्पना करते हुए कुतूज़ोव विह्वल आवाज़ में कह उठे। "मुझे वक़्त दो, वक़्त दो," उन्होंने भड़कते हुए इतना और कह दिया और स्पष्टतः अपने को परेशान कर देनेवाली इस बातचीत को और आगे जारी न रखना चाहते हुए बोले – "मैंने तुम्हें अपने साथ रखने के लिये ही बुलवा भेजा है।"

"बहुत, बहुत शुक्रिया, हुज़ूर," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया, "लेकिन मुझे लगता है कि मैं अब आपके मुख्य सैनिक कार्यालय में काम करने के लायक़ नहीं रहा," उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया। कुतूज़ोव से उसकी यह मुस्कान छिपी न रही और उन्होंने प्रश्नात्मक दृष्टि से प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखा। "सच बात तो यह है," प्रिंस अन्द्रेई ने आगे कहा, "कि मैं अपनी रेजिमेंट का आदी हो गया हूं, अपने अफ़सरों को प्यार करने लगा हूं और मुझे लगता है कि वे लोग भी मुझे चाहते हैं। रेजिमेंट से अलग होते हुए मुझे दुख होगा। अगर मैं आपके साथ रहने के सम्मान से इन्कार करता हूं तो यक़ीन मानिये कि ..."

कुतूज़ोव के थलथल चेहरे पर बुद्धिमत्तापूर्ण दयालुता और साथ ही हल्के व्यंग्य का भाव झलक उठा। उन्होंने बोल्कोन्स्की को टोक दिया :

"मुझे अफ़सोस है, तुम मेरे लिये उपयोगी हो सकते थे, मगर तुम ठीक कह रहे हो, ठीक कह रहे हो। असली मर्दों की यहां ज़रूरत

नहीं है। सलाहकार तो हमेशा ही बहुत होते हैं, मगर असली मर्द नहीं। अगर ये सलाहकार तुम्हारी तरह ही अपनी रेजिमेंटों में काम करते तो रेजिमेंटों का रंग-ढंग ही दूसरा होता। मुझे तो तुम उस रूप में याद हो जिस रूप में मैंने आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के वक़्त तुम्हें देखा था ... हां, याद हो, याद हो, हाथ में झण्डा लिये," कुतूज़ोव ने कहा और इस स्मृति से प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे पर ख़ुशी की लाली दौड़ गयी। कुतूज़ोव ने प्रिंस अन्द्रेई का हाथ पकड़कर उसे अपने क़रीब खींच लिया और चुम्बन देने के लिये अपना गाल उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। प्रिंस अन्द्रेई को बुज़ुर्ग की आंखों में फिर से आंसू दिखाई दिये। प्रिंस अन्द्रेई बेशक यह जानता था कि कुतूज़ोव की आंखें बहुत जल्दी नम हो जाती हैं और यह कि वह उसकी क्षति के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिये विशेष रूप से इतना स्नेह और अपनत्व दिखा रहे हैं, फिर भी आउस्टेरलिट्ज़ के उल्लेख से उसे ख़ुशी हुई, उसका मन खिल उठा।

"तुम अपने रास्ते जाओ, भगवान तुम्हारा भला करें। मैं जानता हूं कि तुम्हारा रास्ता – मान-सम्मान का रास्ता है।" वह चुप हो गये। "मुझे तो बुख़ारेस्ट में भी तुम्हारी कमी महसूस हुई – मैंने तुम्हें बुलवा लेना चाहा था।" कुतूज़ोव बातचीत का विषय बदलकर तुर्कों के साथ लड़ाई और शान्ति-सन्धि की चर्चा करने लगे। "हां, इस लड़ाई और शान्ति-सन्धि – इन दोनों के लिये ही मुझे ख़ूब भला-बुरा कहा गया है ..." उन्होंने कहा, "लेकिन सभी कुछ ठीक वक़्त पर हुआ है। उसी के लिये सब कुछ ठीक वक़्त पर होता है जो इन्तज़ार करना जानता है," उन्होंने यह वाक्य फ़्रांसीसी में जोड़ दिया। "यहां की तरह वहां भी सलाहकारों की कुछ कमी नहीं थी," फिर से सलाह-कारों की तरफ़ लौटते हुए, जो सम्भवतः उनके मन पर बोझ बने हुए थे, वह कहते गये। "ओह, ये सलाहकार, ये सलाहकार! अगर सभी की सलाहों पर कान दिया जाता तो वहां तुर्की में हम न तो शान्ति-सन्धि कर पाते और न लड़ाई ही ख़त्म हुई होती। सब कुछ जल्दी-जल्दी करने का शोर मचाया जाता है, लेकिन जल्दी का नतीजा देर की शक्ल में सामने आता है। अगर कामेन्स्की की मृत्यु न हो जाती तो उसका बुरा अंजाम होता। वह तीस हज़ार सैनिकों को लेकर क़िलों पर धावे बोलता रहा। क़िलों पर क़ब्ज़ा करना तो मुश्किल नहीं,

युद्ध जीतना मुश्किल है। इसके लिये धावे बोलने और हमले करने की नहीं, बल्कि **सब्र तथा समय** की ज़रूरत होती है। कामेन्स्की ने रूश्चुक क़िले पर क़ब्ज़ा करने के लिये सैनिक भेजे, लेकिन मैंने सिर्फ़ इन दो चीज़ों – सब्र तथा समय – पर ही भरोसा किया और कामेन्स्की से अधिक दुर्गों को अपने अधिकार में लिया तथा तुर्कों को घोड़े का मांस खाने को मजबूर किया।" उन्होंने सिर हिलाया। "और फ़्रांसीसियों का भी यही हाल होगा! मेरे ये शब्द याद रखना," कुतूज़ोव ने जोश में आते और अपनी छाती पर घूंसा मारते हुए कहा, "वे भी घोड़ों का मांस खायेंगे!" और फिर से उनकी आंखें छलछला आयीं।

"फिर भी हमें लड़ाई तो लड़नी ही होगी?" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"अगर सभी ऐसा चाहते हैं तो लड़नी ही होगी, दूसरा कोई चारा नहीं... लेकिन यक़ीन मानो मेरे अज़ीज़, इन दो सूरमाओं – **सब्र तथा समय** – से ज़्यादा शक्तिशाली और कोई सूरमा नहीं है। ये दोनों ही सब कुछ कर देंगे। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि हमारे सलाहकार इस बात को सुनना नहीं चाहते। कुछ चाहते हैं, मगर दूसरे नहीं चाहते। तो ऐसी हालत में कोई क्या करे?" उन्होंने सम्भवतः उत्तर की आशा करते हुए पूछा। "तुम क्या करने की सलाह देते हो?" उन्होंने दोहराया और उनकी आंखें गहन तथा बुद्धिमत्तापूर्ण भाव से चमक उठीं। "मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या करना चाहिये," प्रिंस अन्द्रेई से कोई जवाब न मिलने पर उन्होंने कहा। "मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या करना चाहिये और मैं क्या करता हूं। जब मन में सन्देह हो," वह ज़रा रुके, "तो कुछ भी नहीं करो, मेरे प्यारे," उन्होंने शब्दों पर ज़ोर देते हुए फ़्रांसीसी में अपनी बात समाप्त की।

"तो अब विदा, मेरे प्यारे; याद रखना कि तुम्हारी इस क्षति का मुझे सच्चे दिल से अफ़सोस है, कि तुम्हारे लिये मैं न तो महामान्य, न प्रिंस और न सेनापति, बल्कि पिता हूं। अगर कभी कोई ज़रूरत महसूस हो तो सीधे मेरे पास चले आना। तो अब विदा, मेरे प्यारे।" उन्होंने फिर से प्रिंस अन्द्रेई को गले लगाया और चूमा। प्रिंस अन्द्रेई अभी दरवाज़े से बाहर भी नहीं गया था कि कुतूज़ोव ने शान्त होते हुए गहरी सांस ली और फिर से मदाम जानलीस का 'हंस के सूरमा' उपन्यास पढ़ने लगे जिसे उन्होंने बीच में ही छोड़ दिया था।

प्रिंस अन्द्रेई किसी तरह भी यह स्पष्ट न कर पाता कि कैसे और किस कारण ऐसा हुआ, मगर कुतूज़ोव के साथ मुलाक़ात होने के बाद वह सामान्य घटनाक्रम तथा जिस व्यक्ति को रूस के भाग्य का कर्ण-धार बनाया गया था, इन दोनों के बारे में आश्वस्त होकर अपनी रेजिमेंट में लौटा। बुजुर्ग कुतूज़ोव में उसे व्यक्तिगत रुचि के अभाव का जितना अधिक एहसास हुआ, जिनके हृदय में भावावेशों की आग मानो बुझ चुकी थी और सिर्फ़ उनकी आदत ही बाक़ी रह गयी थी तथा बुद्धि की जगह (जो घटनाओं का समन्वयन करती है और निष्कर्ष निकालती है) घटनाक्रम पर शान्त मन से चिन्तन करने की क्षमता ही रह गयी थी, उसे इस चीज़ का उतना ही अधिक विश्वास हो रहा था कि सब कुछ वैसे ही होगा जैसे होना चाहिये। "वह अपनी ओर से कुछ नहीं करेंगे। वह अपने दिमाग़ से कोई योजना नहीं बनायेंगे, कोई क़दम नहीं उठायेंगे," प्रिंस अन्द्रेई सोच रहा था, "लेकिन वह सब कुछ सुनेंगे, सब कुछ याद रखेंगे, हर चीज़ का सही मूल्यांकन करेंगे, जो कुछ लाभदायक है, उसमें बाधा नहीं डालेंगे और जो कुछ हानिकारक है, उसकी अनुमति नहीं देंगे। वह इस बात को समझते हैं कि उनकी इच्छा से अधिक शक्तिशाली और अधिक महत्त्वपूर्ण भी कुछ है – यह अनिवार्य घटनाक्रम है, और वह इस घटनाक्रम को देख सकते हैं, उसके महत्त्व को समझ सकते हैं, और इस महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इसमें भाग लेने से इन्कार करने की क्षमता भी रखते हैं, किसी दूसरे लक्ष्य की ओर निर्देशित अपनी इच्छा की अवहेलना कर सकते हैं। उनपर क्यों दिल जमता है, इसका मुख्य कारण तो यह है," प्रिंस अन्द्रेई सोच रहा था, "कि जानलीस का उपन्यास पढ़ने और फ़्रांसीसी मुहावरों-लोकोक्तियों का उपयोग करने के बावजूद वह रूसी हैं, क्योंकि 'कैसी दुर्गति करवा दी है उन्होंने हमारी!' कहते हुए उनकी आवाज़ कांप गयी थी और यह कहते हुए कि 'मैं उन्हें घोड़ों का मांस खाने को मजबूर करूंगा' उनका गला रुंध गया था।" यही भावना, जिसे अस्पष्ट रूप से कमोबेश सभी लोग अनुभव करते थे, राजदरबार की धारणाओं से भिन्न उस सामान्य सहमति और राष्ट्रीय अनुमोदन का आधार बनी थी जिसको ध्यान में रखते हुए कुतूज़ोव को सेनापति चुना गया था।

१७

सम्राट के मास्को से जाने के बाद मास्को का जीवन अपने आम, पहले जैसे रंग-ढंग से चलने लगा और उसका यह ढर्रा इतना सामान्य था कि देशभक्ति के उत्साह और जोश के उन दिनों को याद और यह विश्वास तक करना कठिन था कि रूस वास्तव में ही ख़तरे में है, कि अंग्रेज़ी क्लब के सदस्य अपनी मातृभूमि के सपूत भी हैं और उसके लिये हर तरह की क़ुर्बानी करने को तैयार हैं। सिर्फ़ एक ही चीज़ सम्राट के मास्को आने के वक़्त की देशभक्ति की व्यापक भावना तथा जोश की याद दिलाती थी, वह थी – सेना के लिये लोगों और धन की क़ुर्बानी की मांग और इस मांग को पूरा करते ही उसने क़ानूनी और अधिकृत रूप धारण कर लिया और वह सामान्य-सी बात हो गयी।

दुश्मन के मास्को के नज़दीक आने पर अपनी स्थिति के बारे में मास्कोवासियों के दृष्टिकोण में गम्भीरता आने के बजाय उन लोगों की तरह और भी अधिक चंचलता आ गयी जो किसी बड़े ख़तरे को अपने नज़दीक आते देखते हैं। किसी ख़तरे की निकटता पर मानव की आत्मा में एक जैसे ज़ोरवाली दो आवाज़ें सुनायी देती हैं: एक आवाज़ तो बड़ी समझदारी से यह कहती है कि मानव उस ख़तरे के स्वरूप को समझे और उससे बचने का उपाय ढूंढ़े; दूसरी आवाज़ और भी अधिक समझदारी से यह कहती है कि ख़तरे के बारे में सोचना बहुत ही कष्टकर और यातनाप्रद काम है, कि सभी कुछ का पूर्वानुमान लगाना तथा सामान्य घटनाक्रम से बचना आदमी के बस की बात नहीं। इस-लिये यही ज़्यादा अच्छा होगा कि इस भयानक चीज़ के सामने आने तक उसकी ओर से आंखें मूंद ली जायें और केवल अच्छी बातों के बारे में ही सोचा जाये। अकेला होने पर आदमी अक्सर पहली आवाज़ को ही सुनता है और लोगों की संगत में इसके विपरीत – दूसरी आवाज़ पर कान देता है। मास्कोवासियों की भी इस समय यही स्थिति थी। एक ज़माने से मास्को में इस साल जैसी मौज नहीं की गयी थी।

मास्को के गवर्नर-जनरल रस्तोपचिन के परचे, जिनके ऊपरी भाग में शराबख़ाने, सुरा-विक्रेता तथा मास्को के एक टुटपुंजिया कार्पूश्का चिगीरिन का भी चित्र बना रहता था, **जो कभी लड़ाई में हिस्सा ले चुका था और जिसने शराब का एक फ़ालतू गिलास पीने के बाद**

यह सुनकर कि बोनापार्ट मानो मास्को पर चढ़ाई करना चाहता है, ग़ुस्से से लाल-पीला होकर सभी फ़्रांसीसियों को गन्दी-मन्दी गालियां दीं, शराबख़ाने से बाहर आया तथा रूसी राज्य-चिह्न उक़ाब* के नीचे एकत्रित लोगों के सामने भाषण दिया – इस तरह के परचों को भी वैसे ही उत्साह से पढ़ा जाता था तथा उनकी बड़ी चर्चा की जाती थी जैसे वसीली ल्वोविच पुश्किन** की समस्यापूर्तिवाली नवीनतम कविताओं की।

इस क्लब के सदस्य कोनेवाले कमरे में जमा होकर ऐसे परचों को पढ़ते और कुछ को कार्पूश्का के मुंह से फ़्रांसीसियों की इस तरह से खिल्ली उड़वाना अच्छा लगता कि **रूसी करमकल्ले उन्हें ग़ुब्बारों की तरह उड़ा देंगे, कि दलिये से उनके पेट फट जायेंगे, कि पत्तागोभी के शोरबे से उनका दम निकल जायेगा, कि वे सभी बौने हैं, कि एक रूसी किसान औरत घास समेटने के पांचे से ही तीन-तीन फ़्रांसीसियों का काम तमाम कर देगी।** कुछ सदस्यों को यह अन्दाज़ अच्छा न लगता और वे इसे मूर्खतापूर्ण और घटिया बताते। इस बात की भी चर्चा की जाती कि गवर्नर रस्तोपचिन ने सभी फ़्रांसीसियों, यहां तक कि सभी विदेशियों को मास्को से निकाल दिया है, क्योंकि उनमें नेपोलियन के जासूस और एजेंट थे। किन्तु इस मामले का मुख्यतः तो रस्तोपचिन के उन चटपटे शब्दों को उद्धृत करने के लिये उल्लेख किया जाता था जो उसने विदेशियों को मास्को से रवाना करते वक़्त कहे थे। विदेशियों को नीज्नी नोव्गोरोद को जानेवाले बजरे में भेजा गया था और रस्तोपचिन ने उनसे फ़्रांसीसी में कहा था – "अपने में ही सिमटकर इस बजरे पर सवार हो जाइये और इस बात की कोशिश कीजिये कि आपका यह जहाज़ हारूं का जहाज़ न बन जाये।"*** यह भी बताया जाता कि सभी दफ़्तरों को मास्को से दूसरी जगहों पर भेज दिया गया

---

* यहां इस बात की ओर संकेत है कि उस समय के रूस में शराब की बिक्री पर रूसी सरकार का एकाधिकार था और इसलिये ऐसी दुकानों पर राज्य-चिह्न 'उक़ाब' लगा रहता था। – सं०

** वसीली ल्वोविच पुश्किन (१७७०–१८३०) – महाकवि पुश्किन के चाचा जो समस्यापूर्तिवाली कवितायें रचने के लिये प्रसिद्ध थे। – सं०

*** यूनानी पौराणिक कथा के अनुसार हारूं पाताल-राज्य की स्टीक्स नदी के ज़रिये मृतकों की आत्मायें ले जाता था। – सं०

है और इसके साथ शिनशिन का यह मज़ाक़ भी जोड़ दिया जाता कि यदि और कुछ नहीं तो केवल इसी चीज़ के लिये नेपोलियन को धन्यवाद देना चाहिये। यह ज़िक्र भी किया जाता कि मामोनोव जो जन-सेना तैयार कर रहा है, उसपर उसका अस्सी हज़ार रूबल से अधिक ख़र्च होगा, कि प्येर बेज़ूख़ोव अपने जन-सैनिकों पर इससे ज़्यादा ख़र्च कर चुका है। किन्तु बेज़ूख़ोव के मामले में सबसे बढ़िया बात तो यह थी कि वह ख़ुद भी वर्दी पहनकर तथा घोड़े पर सवार होकर रेजिमेंट के आगे-आगे जायेगा और इस तमाशे के लिये दर्शकों से एक पैसा भी नहीं लेगा।

"आप लोग तो किसी को भी नहीं बख़्शते," यूलिया द्रुबेत्स्काया ने फाहों को अपनी पतली-पतली उंगलियों से, जिनमें अंगूठियां शोभा दे रही थीं, समेटते और दबाते हुए कहा।

यूलिया अगले दिन मास्को से जा रही थी और उसने अपने यहां एक विदाई पार्टी का आयोजन किया था।

"बेज़ूख़ोव est ridicule*, किन्तु वह इतना दयालु, इतना प्यारा है। ऐसे caustique** चलाने से क्या ख़ुशी हासिल होती है?"

"जुर्माना!" जन-सेना की वर्दी पहने नौजवान ने कहा जिसे यूलिया "अपना सूरमा" कहती थी और जो उसके साथ नीज़्नी नोव्गोरोद जानेवाला था।

यूलिया की मित्र-मण्डली तथा मास्को की अनेक अन्य मित्र-मण्डलियों में भी यह तय किया गया था कि ये लोग सिर्फ़ रूसी भाषा में ही बातचीत करेंगे और इस नियम का उल्लंघन करते हुए जो फ़्रांसीसी के शब्द बोलते थे, उन्हें जुर्माना देना पड़ता था जिसे युद्ध-सहायता कोश में भेज दिया जाता था।

"गालित्सीज़्म*** के लिये दूसरा जुर्माना देना होगा," यूलिया के ड्राइंगरूम में उपस्थित एक रूसी लेखक ने कहा। 'ख़ुशी हासिल होना' ऐसे कहना रूसी भाषा की प्रकृति के अनुरूप नहीं है।"

"आप लोग तो किसी को भी नहीं बख़्शते," लेखक की टिप्पणी

---

* हास्यास्पद है। (फ़्रांसीसी)

** व्यंग्य-बाण। (फ़्रांसीसी)

*** गालित्सीज़्म – फ़्रांसीसी ढंग से रूसी भाषा में वाक्यों की रचना। – सं०

की ओर ध्यान दिये बिना यूलिया ने अपनी बात जारी रखी। "caustique शब्द के लिये कुसूरवार हूं और जुर्माना दे दूंगी, मगर आपसे सचाई कहने से हासिल होनेवाली ख़ुशी के लिये और पैसे देने को भी तैयार हूं। हां, गालित्सीज़्म के लिये उत्तरदायी होने से इन्कार करती हूं," उसने लेखक को सम्बोधित करते हुए जवाब दिया। "प्रिंस गोलीत्सिन की तरह मेरे पास न तो इतने अधिक पैसे हैं और न समय ही कि मैं रूसी भाषा का अध्यापक रखकर उससे रूसी सीखूं। लीजिये, वह भी आ गया," यूलिया ने कहा। "Quand on... * नहीं, नहीं," उसने जन-सैनिक को सम्बोधित किया, "आप और जुर्माना लेने के लिये मुझे पकड़ नहीं पायेंगे। जब हम सूरज की चर्चा करते हैं तो उसी क्षण उसकी रश्मियों के दर्शन हो जाते हैं," यूलिया प्येर की ओर मधुरता से मुस्कराते हुए बोली। "हम लोग अभी-अभी आपकी ही चर्चा कर रहे थे," यूलिया ने ख़ूबसूरती से झूठ बोलने की ऊंची सोसाइटी की महिला जैसी अपनी कुशलता से काम लेते हुए कहा। "हम कह रहे थे कि आपकी रेजिमेंट तो निश्चय ही मामोनोव की रेजिमेंट से बेहतर होगी।"

"ओह, मुझसे मेरी रेजिमेंट की चर्चा नहीं कीजिये," प्येर ने यूलिया का हाथ चूमते और उसके क़रीब बैठते हुए उत्तर दिया। "उसके कारण मेरा तो नाक में दम आ गया है!"

"सम्भवतः आप तो ख़ुद ही उसकी कमान सम्भालेंगे?" यूलिया ने धूर्त्तता तथा उपहासजनक ढंग से जन-सैनिक की आंखों में झांकते हुए राय ज़ाहिर की।

प्येर की उपस्थिति में जन-सैनिक पहले की तरह व्यंग्य-बाण चलाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था और यूलिया की मुस्कान का क्या अर्थ है, इसके बारे में उसके चेहरे का भाव हैरानी ज़ाहिर कर रहा था। प्येर के खोये-खोयेपन और ख़ुशमिज़ाजी के बावजूद उसकी उपस्थिति में उसका मज़ाक़ उड़ाने के सभी प्रयास बन्द हो जाते थे।

"नहीं," प्येर ने अपने लम्बे-तड़ंगे और मोटे शरीर पर नज़र डालते तथा हंसते हुए जवाब दिया। "मैं बड़ी आसानी से फ़्रांसीसियों की गोली का निशाना बन सकता हूं और मुझे तो इस बात का भी

---

* जब ... (फ़्रांसीसी)

सन्देह है कि मैं घोड़े पर सवार हो सकूंगा।"

यूलिया की मित्र-मण्डली ने अपनी गपशप के लिये जिन्हें चुना, उनमें रोस्तोव-परिवारवाले भी आ गये।

"सुनने में आया है कि उनका बहुत बुरा हाल है," यूलिया ने कहा। "उनमें – स्वयं काउंट में – समझदारी की काफ़ी कमी है। राजुमोव्स्की-परिवारवाले उनका मकान और मास्को के क़रीबवाली जागीर ख़रीदना चाहते थे, लेकिन मामला लटकता ही चला जा रहा है। वह बहुत ज़्यादा क़ीमत मांग रहे हैं।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। लगता है कि अगले कुछ दिनों में सौदा तय हो जायेगा," किसी ने कहा। "बेशक यह सही है कि मास्को में अब कुछ ख़रीदना पागलपन है।"

"भला यह क्यों?" यूलिया ने प्रश्न किया। "क्या आप ऐसा समझते हैं कि मास्को ख़तरे में है?"

"आप क्यों यहां से जा रही हैं?"

"मैं? यह भी बड़ा अजीब-सा सवाल पूछा है आपने। मैं इसलिये जा रही हूं... इसलिये जा रही हूं कि सभी जा रहे हैं और इसके अलावा मैं न तो जॉन आफ़ आर्क हूं और न अमाज़ोन्का।"*

"हां, हां, यह तो ठीक है। मुझे थोड़ा कपड़ा और दीजिये।"

"अगर वह काम-काज के मामले में होशियारी दिखायें तो अपने सारे क़र्ज़ उतार सकते हैं," जन-सैनिक ने फिर से काउंट रोस्तोव की चर्चा करते हुए कहा।

"वह बहुत भले बुज़ुर्ग हैं, लेकिन काम-काज के मामले में एकदम चौपट हैं। वे लोग मास्को में अब तक कर ही क्या रहे हैं? वे तो बहुत पहले ही गांव चले जाना चाहते थे। लगता है कि नताशा तो अब फिर से ठीक-ठाक हो गयी है?" यूलिया ने मक्कारी से मुस्कराते हुए प्येर से पूछा।

"वे अपने छोटे बेटे के आने का इन्तज़ार कर रहे हैं," प्येर ने कहा। "वह ओबोलेन्स्की के कज़्ज़ाकों में भर्ती होकर बेलाया त्सेर्कोव

---

* जॉन आफ़ आर्क (लगभग १४१२–१४३१) – फ़्रांसीसी किसान औरत जिसने एक सौ वर्षीय युद्ध के समय अंग्रेज़ों के विरुद्ध देशभक्तिपूर्ण संघर्ष का नेतृत्व किया। उसे काफ़िर के रूप में ज़िन्दा जला दिया गया था। अमाज़ोन्का – यूनानी पौराणिक कथाओं के अनुसार युद्ध-दीवानी औरत। – सं०

नगर चला गया है। वहां रेजिमेंट बनायी जा रही है। लेकिन अब उन्होंने मेरी रेजिमेंट में उसका तबादला करवा लिया है और हर दिन ही उसके आने की राह देखते हैं। काउंट तो बहुत पहले ही जाना चाहते थे, मगर काउंटेस बेटे के न आने तक किसी भी हालत में जाने को तैयार नहीं हैं।"

"दो दिन पहले अरख़ारोव-परिवार में मेरी उनसे भेंट हुई थी। नताशा के चेहरे पर फिर से रौनक़ आ गयी है और वह ख़ुश भी रहने लगी है। वहां उसने एक प्रेम-गीत भी गाया था। कुछ लोग कितनी आसानी से सब कुछ भूल-भाल जाते हैं!"

"क्या भूल-भाल जाते हैं?" प्येर ने ज़रा बिगड़ते हुए पूछा। यूलिया मुस्करायी।

"आप जानते हैं, काउंट, कि आप जैसे सूरमा तो केवल मदाम सूज़ा * के उपन्यासों में ही होते हैं।"

"सूरमा? आप कहना क्या चाहती हैं?" प्येर ने तुनकते हुए जानना चाहा।

"बस, अब रहने भी दीजिये, प्यारे काउंट। सारा मास्को यह जानता है। सच, मुझे तो आपकी बातें सुनकर हैरानी हो रही है," यूलिया ने अन्तिम दो वाक्य फिर से फ़्रांसीसी में कहे।

"जुर्माना! जुर्माना!" जन-सैनिक कह उठा।

"ठीक है, दे दूंगी जुर्माना। बात करना हराम हो गया है, कैसी मुसीबत है!"

"क्या जानता है सारा मास्को?" प्येर ने उठते हुए ग़ुस्से से फ़्रांसीसी में पूछा।

"बस, रहने दीजिये, काउंट। आप तो सब जानते ही हैं!"

"मैं तो कुछ भी नहीं जानता," प्येर ने जवाब दिया।

"मुझे मालूम है कि नताशा और आप अच्छे मित्र हैं और इसलिये... लेकिन मेरी तो वेरा के साथ हमेशा ज़्यादा दोस्ती रही है। ओह, वह प्यारी वेरा!"

"नहीं मदाम," प्येर नाराज़गी के लहजे में ही कहता गया।

---

* फ़्रांसीसी लेखिका, पत्रों के रूप में लिखे गये 'अमेलिया मेन्सफ़ील्ड' उपन्यास की रचयिता। – सं०

"मैंने नताशा रोस्तोवा का सूरमा होने की भूमिका बिल्कुल अपने ज़िम्मे नहीं ली है और लगभग एक महीने से मैं उनके यहां नहीं गया हूं। लेकिन क्रूरता को मैं नहीं समझ सकता ..."

"जो अपनी सफ़ाई पेश करता है, अपने क़ुसूर को मानता है," यूलिया ने मुस्कराते और फाहे को हिलाते हुए फ़्रांसीसी में कहा तथा इस उद्देश्य से कि बातचीत की डोर उसी के हाथ में रहे, उसने फ़ौरन उसका विषय बदलते हुए कहा – "बेचारी मरीया बोल्कोन्स्काया कल मास्को पहुंच गयी है। आपको मालूम है या नहीं कि उसके पिता का देहान्त हो गया?"

"सच! वह कहां है? मैं तो उससे अवश्य ही मिलना चाहता हूं," प्येर ने कहा।

"मैंने पिछली शाम उसके साथ बितायी थी। वह आज या कल सुबह अपने भतीजे को साथ लेकर मास्को के क़रीबवाली जागीर पर चली जायेगी।"

"वह कैसी है, क्या हाल है उसका?" प्येर ने जानना चाहा।

"ठीक ही है, उदास है। किन्तु आप जानते हैं कि किसने उसे मुसीबत से बचाया? यह तो अच्छा ख़ासा रोमानी क़िस्सा है। निकोलाई रोस्तोव ने। मरीया को तो घेर लिया गया था, वे लोग उसकी हत्या करना चाहते थे, उन्होंने उसके नौकरों-चाकरों को घायल कर दिया। तभी वह वहां पहुंच गया और उसने उसकी जान बचा ली ..."

"एक और रोमानी क़िस्सा," जन-सैनिक ने कहा। "यह तो सचमुच हमारी अब तक कुंवारी बैठी सारी लड़कियों की शादी के लिये भगदड़ ही मच गयी है। कतीश – एक है, प्रिंसेस बोल्कोन्स्काया – दूसरी है।"

"जानते हैं कि मैं तो वास्तव में ही ऐसा समझती हूं कि वह un petit peu amoureuse du jeune homme."*

"जुर्माना! जुर्माना! जुर्माना!"

"लेकिन इसे रूसी में कैसे कहा जा सकता है? .."

---

* उस नौजवान को कुछ-कुछ प्यार भी करने लगी है। (फ़्रांसीसी)

१८

घर लौटने पर प्येर को उसी दिन लाये गये रस्तोपचिन के दो परचे दिये गये।

पहले परचे में कहा गया था कि यह अफ़वाह कि काउंट रस्तोपचिन लोगों को मास्को से जाने से मानो रोक रहा है, ग़लत है। इसके विपरीत, काउंट रस्तोपचिन को इस बात की ख़ुशी है कि कुलीन-महिलायें और व्यापारियों-सेठों की पत्नियां मास्को से जा रही हैं। "कम भय होगा, कम अफ़वाहें फैलेंगी," परचे में कहा गया था, "लेकिन मैं अपनी जान की क़सम खाकर कहता हूं कि वह शैतान मास्को में नहीं आ सकेगा।" इन शब्दों ने पहली बार प्येर को यह स्पष्ट किया कि फ़्रांसीसी मास्को में आ ही धमकेंगे। दूसरे परचे में यह कहा गया था कि हमारा मुख्य सैनिक कार्यालय व्याज़्मा में है, कि काउंट विटगेन्श्टेन* ने फ़्रांसीसियों पर जीत हासिल की है। किन्तु चूंकि बहुत-से मास्कोवासी शस्त्रास्त्रों से लैस होना चाहते हैं, इसलिये उनकी ख़ातिर शस्त्रागार में बहुत-से हथियार उपलब्ध हैं – तलवारें, पिस्तौलें, बन्दूक़ें, जिन्हें मास्कोवासी सस्ते दामों पर ख़रीद सकते हैं। इस परचे का लहजा चिगीरिन के वार्तालापवाले पहले परचों के समान मज़ाक़िया नहीं था। इन परचों को पढ़ने के बाद प्येर सोच में डूब गया। सम्भवतः वह भयानक तूफ़ानी बादल, जिसका वह जी-जान से आह्वान कर रहा था और जो अनजाने ही उसके मन में भय भी पैदा करता था – वह बादल सम्भवतः नज़दीक आ रहा था।

"सैन्य-सेवा करने के लिये सेना में चला जाऊं या अभी इन्तज़ार करूं?" प्येर ने सौवीं बार अपने से यह प्रश्न किया। उसने मेज़ पर पड़ी हुई ताश की गड्डी उठा ली और ताश के पेशेंस खेल के सहारे इस प्रश्न का उत्तर पाने का प्रयास करने लगा।

"अगर अनुकूल पत्ते निकले," पत्तों को मिलाते, उन्हें हाथ में लेकर ऊपर की तरफ़ देखते हुए उसने अपने आपसे कहा, "अगर

---

* जनरल विटगेन्श्टेन के संचालन में पच्चीस हज़ार रूसी सैनिक पीटर्सबर्ग की ओर जानेवाले मार्ग की रक्षा कर रहे थे। १८१२ के जुलाई महीने के मध्य में हुई लड़ाई में रूसी सेना फ़्रांसीसियों के हमले को रोकने में कामयाब रही थी। – सं०

अनुकूल पत्ते निकले तो इसका मतलब होगा ... क्या मतलब होगा?" वह अभी यह तय नहीं कर पाया था कि दरवाज़े के पीछे से बड़ी प्रिंसेस की आवाज़ सुनायी दी, जो यह पूछ रही थी कि वह भीतर आ सकती है या नहीं।

"तो इसका मतलब होगा कि मुझे सेना में जाना चाहिये," प्येर ने अपने आपसे कहा। "आ जाइये, आ जाइये," उसने प्रिंसेस को उत्तर देते हुए इतना और कह दिया।

(लम्बी कमर और भावशून्य चेहरेवाली सबसे बड़ी प्रिंसेस ही प्येर के घर में रह रही थी। उसकी दोनों छोटी बहनों की शादियां हो चुकी थीं।)

"माफ़ी चाहती हूं, भाई जान, कि मैं आपको परेशान कर रही हूं," उसने भर्त्सनापूर्ण और विह्वल आवाज़ में कहा। "आख़िर तो हमें कोई फ़ैसला करना चाहिये! यह सब क्या है? सभी लोग मास्को मे जा चुके हैं और नौकर-चाकर विद्रोह कर रहे हैं। हम किसलिये यहां रुके हुए हैं?"

"मामला तो इसके बिल्कुल उलट है, सब कुछ ठीक-ठाक है, मेरी बहन," प्येर ने उसी अभ्यस्त विनोदपूर्ण लहजे में जवाब दिया जो प्रिंसेस के उपकारी की भूमिका निभाने के कारण झेंप अनुभव करते हुए वह हमेशा अपना लेता था।

"हां, सब कुछ ठीक-ठाक है ... सब कुछ बहुत ठीक-ठाक है! आज ही वर्वारा इवानोव्ना ने मुझे यह बताया कि हमारी फ़ौजें कैसे अपनी बहादुरी दिखा रही हैं। उनके लिये तो यह सम्मान की बात है। नौकर-चाकर मनमर्ज़ी करने लगे हैं, किसी की बात ही नहीं मानते; मेरी नौकरानी तक गुस्ताख़ी से पेश आने लगी है। ऐसे तो वे जल्द ही हमपर हाथ भी उठाने लगेंगे। सड़कों पर आना-जाना मुश्किल हो गया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज नहीं तो कल फ़्रांसीसी यहां आ धमकेंगे। किस चीज़ का इन्तज़ार कर रहे हैं हम? भाई जान, मैं आपसे एक प्रार्थना करती हूं," प्रिंसेस ने कहा, "मुझे तो पीटर्सबर्ग भिजवाने की व्यवस्था कर दीजिये। मैं कैसी भी क्यों न होऊं, लेकिन बोनापार्ट के अधीन होकर नहीं रह सकती।"

"आप यह सब क्या कह रही हैं, मेरी बहन! कहां से आपको ऐसी ख़बरें मिलती हैं? इसके विपरीत ..."

"मैं आपके नेपोलियन की अधीनता स्वीकार नहीं करूंगी। दूसरे जैसा चाहें, करें... अगर आप मेरे जाने की व्यवस्था नहीं करना चाहते..."

"मैं यह व्यवस्था कर दूंगा, अभी इसका हुक्म दे दूंगा।"

प्रिंसेस को सम्भवतः इस बात का अफ़सोस हुआ कि कोई भी ऐसा नहीं था, जिसपर वह बिगड़ सकती थी। वह कुछ बुदबुदाती हुई कुर्सी के सिरे पर बैठ गयी।

"लेकिन आपको सही ख़बरें नहीं दी जा रही हैं," प्येर ने कहा। "शहर में बिल्कुल शान्ति है, किसी तरह का कोई ख़तरा नहीं है। यह देखिये, मैंने अभी-अभी इन्हें पढ़ा है..." प्येर ने प्रिंसेस को परचे दिखाये। "काउंट रस्तोपचिन ने लिखा है कि वह अपनी जान की क़सम खाकर कहता है कि दुश्मन मास्को में नहीं आ सकेगा।"

"ओह, आपका यह काउंट," प्रिंसेस ने ग़ुस्से से कहा, "वह ढोंगी है, बदमाश है, उसी ने लोगों को विद्रोह करने के लिये उकसाया है। क्या उसी ने इन बेहूदा परचों में नहीं लिखा था कि चाहे कोई भी क्यों न हो, उसे झोंटों से पकड़कर कोतवाली में घसीट ले जाओ (कैसी बेवक़ूफ़ी की बात है यह)! जो भी ऐसा करेगा, ख्याति और सम्मान पायेगा। लोगों को इस तरह उकसाने का ही यह नतीजा सामने आ रहा है। वर्वारा इवानोव्ना बता रही थी कि उसके फ़्रांसीसी में कुछ कह देने पर लोग उसकी जान लेने पर उतारू हो गये..."

"हां, यह सब तो है... आप हर चीज़ को बहुत ज़्यादा दिल से लगा लेती हैं," प्येर ने राय ज़ाहिर की और ताश के पेशेंस खेल के पत्ते चलने लगा।

इस चीज़ के बावजूद कि पत्ते अनुकूल निकले थे, प्येर सेना में नहीं गया और बहुत काफ़ी हद तक ख़ाली हो गये मास्को में पहले जैसी चिन्ता-बेचैनी, ढुलमुलपन तथा भय के वातावरण में और साथ ही किसी भयानक चीज़ की प्रतीक्षा करते हुए यहीं बना रहा।

अगले दिन की शाम को प्रिंसेस पीटर्सबर्ग रवाना हो गयी और प्येर के बड़े कारिन्दे ने उसे सूचित किया कि सेना की एक रेजिमेंट को लैस करने के लिये जितनी रक़म चाहिये, वह एक जागीर बेचे बिना हासिल नहीं की जा सकती। कुल मिलाकर बड़े कारिन्दे ने प्येर

को यह समझाने की कोशिश की कि रेजिमेंट को लैस करने का ख़्याल इतना महंगा पड़ेगा कि उसका दिवाला निकल जायेगा। बड़े कारिन्दे की बात सुनते हुए प्येर ने बड़ी मुश्किल से अपनी मुस्कान को छिपाया।

"तो बेच दो," उसने जवाब दिया। "मजबूरी है, मैं अब इन्कार तो नहीं कर सकता!"

सारे हालात, ख़ास तौर पर ख़ुद प्येर के मामले जितने अधिक बिगड़ते जा रहे थे, प्येर उतनी ही अधिक ख़ुशी महसूस कर रहा था और उतना ही ज़्यादा यह स्पष्ट होता जा रहा था कि जिस बड़ी मुसीबत का उसे इन्तज़ार था, वह नज़दीक आती जा रही है। प्येर की जान-पहचान के लोगों में से लगभग कोई भी अब मास्को में नहीं रहा था। यूलिया जा चुकी थी, प्रिंसेस मरीया भी चली गयी थी। उसके घनिष्ठ परिचितों में सिर्फ़ रोस्तोव-परिवार ही रह गया था, मगर प्येर वहां नहीं जाता था।

इस दिन प्येर अपना मन बहलाने के लिये उस बहुत बड़े ग़ुब्बारे को देखने के लिये वोरोन्त्सोवो गांव चला गया जिसे दुश्मन को नष्ट करने के उद्देश्य से लेपिख़ बना रहा था और इस तरह का आज़माइशी ग़ुब्बारा अगले दिन उड़ाया जानेवाला था।* यह ग़ुब्बारा अभी तक बनकर तैयार नहीं हुआ था, मगर प्येर को यह मालूम हो गया कि उसे सम्राट की इच्छा के अनुसार बनाया जा रहा है। सम्राट ने काउंट रस्तोपचिन को इस सम्बन्ध में यह लिखा था:

"लेपिख़ जैसे ही तैयार हो जाये, उसकी यात्रा के लिये बहुत ही वफ़ादार और समझदार लोगों का प्रबन्ध कर दीजिये और जनरल कुतूज़ोव को इसकी पूर्वसूचना देने के लिये सन्देशवाहक भेज दीजिये। मैं जनरल को इसकी ख़बर दे चुका हूं। कृपया लेपिख़ को यह बात बहुत अच्छी तरह से समझा दीजिये कि वह उस जगह के बारे में बहुत सावधानी से काम ले जहां उसे पहली बार उतरना है,

---

* फ़्रांत्स लेपिख़ – हॉलैंड में जन्म लेनेवाला एक किसान था। १८१२ में वह जर्मनी से मास्को आया और उसने यह यक़ीन दिलाया कि ऐसा ग़ुब्बारा बना सकता है जिसमें बैठकर वह फ़्रांसीसी सेना के ऊपर उड़ सकता है और इस तरह नेपोलियन को मार सकता है। बहुत देर तक और बहुत ख़र्च से इसे बनाया गया, मगर यह उड़ न सका। – सं०

किसी तरह की कोई भूल न करे और दुश्मन के हाथों में न पड़ जाये। यह भी ज़रूरी है कि वह अपनी गति-विधि का सेनापति की गति-विधि के साथ ताल-मेल बैठाये।"

वोरोन्त्सोवो गांव से लौटते और बोलोत्नी चौक को पार करते हुए प्येर को लाल मैदान में अपराधियों को दण्ड देने के स्थान पर लोगों की भारी भीड़ दिखाई दी। उसने अपनी टमटम रोकने का हुक्म दिया और नीचे उतरा। जासूसी करने के अपराध में एक फ़्रांसीसी बावर्ची को सज़ा दी जा रही थी। उसे कोड़े लगाने का काम अभी-अभी ख़त्म हुआ था और जल्लाद नीली लम्बी जुराबें तथा हरे रंग की जाकेट पहने लाल गलमुच्छोंवाले बहुत ही दयनीय ढंग से कराहते हुए एक मोटे-से आदमी को उस बेंच से खोल रहा था जिसपर रस्सी से बांधकर तथा लिटाकर उसे कोड़े लगाये गये थे। दूसरा अपराधी, जो दुबला-पतला था तथा जिसके चेहरे का रंग फक था, क़रीब ही खड़ा था। चेहरे-मोहरे से दोनों फ़्रांसीसी लगते थे। दुबले-पतले फ़्रांसीसी जैसा सहमा-सा और यातनापूर्ण चेहरा लिये हुए प्येर भीड़ को कोहनियाता हुआ आगे बढ़ गया।

"यह क्या हो रहा है? कौन है यह? किसलिये?" उसने पूछा। किन्तु कर्मचारियों, टुटपुंजिया लोगों, व्यापारियों, किसानों, चौड़े-चौड़े कोट और फ़र-कोट पहने औरतों, आदि की भीड़ का ध्यान दण्ड-स्थान पर हो रही कार्रवाई पर इतना अधिक संकेंद्रित था कि किसी ने भी उसे कोई उत्तर नहीं दिया। मोटा आदमी नाक-भौंह सिकोड़े हुए उठा, उसने कंधे झटके और सम्भवतः अपने मन की दृढ़ता ज़ाहिर करने की इच्छा से अपने इर्द-गिर्द देखे बिना जाकेट पहनने लगा। किन्तु उसके होंठ अचानक कांपे और वह अपने पर खीझता हुआ ऐसे रोने लगा जैसे ज़िन्दादिल बालिग़ लोग रोते हैं। एकत्रित लोग ऊंचे-ऊंचे बोलने-बतियाने लगे और जैसाकि प्येर को लगा, इस तरह अपने दिल में उमड़ती दया की भावना को दबाने लगे।

"किसी प्रिंस का बावर्ची है..."

"ऐ, फ़्रांसीसी महानुभाव, लगता है कि रूसी चटनी फ़्रांसीसी के लिये कुछ ज़्यादा ही तेज़ है... नानी याद आ गयी," प्येर के निकट खड़े झुर्रीदार चेहरेवाले एक किरानी ने उस वक़्त यह ज़हर बुझा तीर छोड़ा, जब फ़्रांसीसी रो पड़ा। किरानी ने स्पष्टतः अपने इस मज़ाक़

की दाद पाने के लिये अपने इर्द-गिर्द देखा। कुछ लोग हंस पड़े और कुछ भयभीत दृष्टि से जल्लाद को देखते रहे जो दूसरे फ़ांसीसी को कोड़े लगाने के लिये उसके कपड़े उतार रहा था।

प्येर ने अपनी विह्वलता को दबाने के लिये नाक से सुड़सुड़ की, नाक-भौंह सिकोड़ी, तेज़ी से घूमा, अपनी टमटम की तरफ़ वापस चल दिया और उधर जाते तथा उसमें बैठते वक़्त कुछ बुदबुदाता रहा। रास्ते में वह कई बार सिहरा और इतने ज़ोर से चिल्लाया कि कोचवान पूछे बिना न रह सका:

"क्या हुक्म है, हुज़ूर?"

"गाड़ी को किधर लिये जा रहे हो?" प्येर ने कोचवान पर बिगड़ते हुए पूछा जो गाड़ी को लुब्यान्का की तरफ़ ले जा रहा था।

"आपने सेनापति के यहां चलने का हुक्म दिया था," कोचवान ने जवाब दिया।

"उल्लू! गधा कहीं का!" प्येर चिल्ला पड़ा जैसाकि उसके साथ बहुत कम ही होता था। "मैंने घर चलने को कहा था और जल्दी कर मूर्ख। आज ही मुझे चले जाना चाहिये," प्येर ने अपने आपसे कहा।

फ़्रांसीसी बावर्ची और दण्ड-स्थान को घेरे हुए भीड़ को देखने के बाद प्येर ने ऐसा पक्का फ़ैसला कर लिया कि वह अब मास्को में और नहीं रुक सकता तथा आज ही फ़ौज में चला जायेगा कि उसे लगा कि या तो उसने कोचवान से यह कह दिया है या फिर कोचवान को खुद ही यह मालूम हो जाना चाहिये था।

घर लौटने पर प्येर ने अपने सब कुछ जानने और सब कुछ कर सकनेवाले, सारे मास्को में विख्यात बड़े कोचवान येव्स्ताफ़्येविच को यह हुक्म दे दिया कि वह आज ही रात को सेना में जाने के लिये मोजाइस्क की तरफ़ रवाना हो रहा है और उसके सवारी के घोड़े वहां भेज दिये जायें। यह सब उसी दिन तो करना सम्भव नहीं था और इसलिये येव्स्ताफ़्येविच के कहने पर प्येर को अपनी रवानगी अगले दिन तक स्थगित करनी पड़ी ताकि बदली के घोड़ों को उसके रवाना होने के पहले आगे भेजा जा सके।

बुरे मौसम के बाद २४ तारीख़ को मौसम ठीक हुआ और इसी दिन प्येर दोपहर के भोजन के बाद मास्को से रवाना हो गया। रात

को, पेर्ख़ूश्कोवो में घोड़ा-बदली के समय प्येर को यह पता चला कि इसी शाम को बड़ी लड़ाई हुई है। लोगों ने उसे बताया कि यहां, पेर्ख़ूश्कोवो की ज़मीन गोलाबारी से बुरी तरह कांप रही थी। प्येर के यह पूछने पर कि किसकी जीत हुई, कोई भी उसे इसका उत्तर नहीं दे सका। (यह शेवार्दिनो के क़रीब २४ तारीख़ को हुई लड़ाई थी।) पौ फटने के वक़्त प्येर मोजाइस्क के क़रीब पहुंच गया।

मोजाइस्क के सभी घरों में सैनिक ठहरे हुए थे और मामूली-से होटल में, जहां प्येर का सईस और कोचवान उसकी राह देख रहे थे, कोई भी कमरा ख़ाली नहीं था। सभी कमरे फ़ौजी अफ़सरों से भरे हुए थे।

मोजाइस्क में और मोजाइस्क से आगे – सभी जगह सेनायें पड़ाव डाले थीं या कूच कर रही थीं। चारों ओर कज़्ज़ाक, प्यादा और घुड़-सवार फ़ौजें, घोड़ा-गाड़ियां, गोला-बारूद के बक्से और तोपें नज़र आ रही थीं। प्येर ने जल्दी से जल्दी आगे जाने की कोशिश की और वह मास्को से जितना अधिक आगे बढ़ता जाता था, इस सेना-सागर में जितना अधिक डूबता जाता था, उसपर बेचैनी तथा ख़ुशी की एक ऐसी भावना उतनी ही अधिक हावी होती जाती थी, जैसी उसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी। यह भावना कुछ-कुछ वैसी ही थी जैसी उसने सम्राट के मास्को आने पर स्लोबोदस्कोई महल में महसूस की थी – कुछ करके दिखाने और किसी तरह का बलिदान करने की आवश्यकता की भावना। उसे अब इस भावना की चेतना की मधुर अनुभूति हो रही थी कि वह सभी कुछ जिसे आदमी अपना सुख-सौभाग्य मानता है – जीवन के सभी तरह के आराम-सुविधायें, धन-दौलत, यहां तक कि स्वयं जीवन भी बकवास है जिसे किसी ध्येय के लिये क़ुर्बान कर देना कहीं अधिक सुखकर है... किस ध्येय के लिये – प्येर अपने को इस बात का कोई जवाब नहीं दे सका और उसने अपने लिये यह स्पष्ट करने की भी कोशिश नहीं की कि किसके लिये तथा किस चीज़ की ख़ातिर उसे सब कुछ क़ुर्बान करते हुए यह ख़ास क़िस्म की ख़ुशी महसूस हो रही है। उसकी इस बात में दिलचस्पी नहीं थी कि किस चीज़ के लिये वह यह क़ुर्बानी करना चाहता है, बल्कि ख़ुद क़ुर्बानी ही उसे एक नयी ख़ुशी प्रदान कर रही थी।

१६

२४ अगस्त को शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी के क़रीब लड़ाई हुई, २५ तारीख़ को दोनों ओर से एक भी गोली नहीं चलायी गयी और २६ अगस्त को बोरोदिनो की लड़ाई लड़ी गयी।

शेवार्दिनो और बोरोदिनो के क़रीब कैसे और किसलिये लड़ाई लड़ी गयी? किस उद्देश्य से बोरोदिनो की लड़ाई लड़ी गयी? न तो फ़्रांसीसियों और न रूसियों के लिये ही यह लड़ाई लड़ने में कोई तुक थी। रूसियों के लिये इसका फ़ौरी नतीजा यह हुआ और ऐसा होना लाज़िमी भी था कि हम मास्को की तबाही के और ज़्यादा नज़दीक पहुंच गये (जिस चीज़ से हम दुनिया में सबसे ज़्यादा डरते थे) और फ़्रांसीसियों के लिये यह परिणाम हुआ कि वे पूरी सेना की तबाही की दिशा में और आगे बढ़ गये (जिस चीज़ से वे भी दुनिया में सबसे ज़्यादा डरते थे)। इसका यही नतीजा होगा, यह तो उसी समय बिल्कुल स्पष्ट था, फिर भी नेपोलियन ने लड़ाई शुरू की और कुतूज़ोव ने उसका मुक़ाबला किया।

यदि सेनापति सूझ-बूझ से काम लेते, तो नेपोलियन को यह बात बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिये थी कि दो हज़ार किलोमीटर से अधिक दूर जाकर लड़ाई लड़ने और एक-चौथाई सेना के नष्ट होने की सम्भावना होने पर वह अपने निश्चित नाश की ओर बढ़ रहा है। ठीक इसी तरह कुतूज़ोव को भी यह स्पष्ट होना चाहिये था कि दुश्मन का मुक़ाबला करने और एक-चौथाई सेना के नष्ट होने की जोखिस उठाने पर वह निश्चय ही मास्को से हाथ धो बैठेंगे। कुतूज़ोव के लिये तो यह गणितीय ढंग से वैसे ही स्पष्ट था जैसे ड्राफ़्ट के खेल में यह स्पष्ट होता है कि अगर मेरे पास एक ड्राफ़्ट कम है और मैं लगातार अपने विरोधी के ड्राफ़्ट पीटकर अपने ड्राफ़्ट पिटवाता रहूंगा तो मैं निश्चित रूप से बाज़ी हार जाऊंगा। और इसलिये मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये।

जब मेरे विरोधी के पास सोलह ड्राफ़्ट हैं और मेरे पास चौदह तो उसकी तुलना में मैं केवल आठवें अंश तक ही कमज़ोर हूं। किन्तु जब मैं उसके तेरह ड्राफ़्टों को पीटकर अपने तेरह ड्राफ़्ट पिटवा लेता हूं तो वह मेरी तुलना में तिगुना शक्तिशाली हो जायेगा।

बोरोदिनो की लड़ाई होने के पहले फ़्रांसीसियों के मुक़ाबले में

हमारा लगभग पांच (रूसी) और छः (फ़्रांसीसी) का शक्ति-अनुपात था, किन्तु इस लड़ाई के बाद एक (रूसी) और दो (फ़्रांसीसी) का। दूसरे शब्दों में लड़ाई के पहले एक लाख बीस हज़ार फ़्रांसीसियों के मुक़ाबले में एक लाख रूसी थे और लड़ाई के बाद एक लाख फ़्रांसीसियों के मुक़ाबले में पचास हज़ार रूसी रह गये। फिर भी बुद्धिमान और अनुभवी कुतूज़ोव ने शत्रु की चुनौती स्वीकार की। इसी तरह नेपोलियन ने, जिसे प्रतिभाशाली सेनापति कहा जाता है, लड़ाई लड़ने की चुनौती दी, अपनी एक-चौथाई सेना नष्ट करवा ली और आधार-स्थल तथा मोर्चे के बीच का फ़ासला और अधिक बढ़ा लिया। अगर हमसे यह कहा जाता है कि नेपोलियन ने सोचा था कि मास्को पर क़ब्ज़ा करने के बाद उसी तरह से युद्ध समाप्त हो जायेगा जैसे वियाना पर क़ब्ज़ा करने के बाद, तो ऐसे अनेक प्रमाण हैं जो इस बात का खण्डन करते हैं। ख़ुद नेपोलियन के इतिहासकार ही हमें यह बताते हैं कि वह तो स्मोलेन्स्क से ही आगे नहीं बढ़ना चाहता था, आधार-स्थल और मोर्चे के बीच के बड़े फ़ासले के ख़तरे के बारे में सजग था और यह जानता था कि मास्को पर क़ब्ज़ा कर लेने से युद्ध का अन्त नहीं हो जायेगा, क्योंकि स्मोलेन्स्क में ही उसने यह देख लिया था कि रूसी नगरों को कैसी हालत में छोड़ा जाता था और उसके द्वारा अनेक बार व्यक्त की गयी बातचीत शुरू करने की इच्छा का उसे एक भी जवाब नहीं मिला था।

बोरोदिनो की लड़ाई की चुनौती देते और उस चुनौती को स्वीकार करते हुए कुतूज़ोव तथा नेपोलियन ने अपनी इच्छा और सूझ-बूझ के विरुद्ध काम किया। किन्तु इतिहासकारों ने सामने आ चुके तथ्यों के आधार पर बड़ी चतुराई से सेनापतियों की दूरदर्शिता और प्रतिभा के प्रमाणों का ताना-बाना बुन दिया। किन्तु वे इतिहास के सभी अनिच्छापूर्ण साधनों में सबसे अधिक विवश और अनिच्छापूर्ण साधन थे।

हमारे पुरखों ने हमारे लिये वीरतापूर्ण महाकाव्यों के ऐसे उदाहरण छोड़े हैं जिनमें इतिहास की सारी दिलचस्पी वीर-नायकों पर ही केन्द्रित होकर रह जाती है और हम अभी तक इस बात के आदी नहीं हो पा रहे हैं कि हमारे युग के लिये इस प्रकार का इतिहास बेमानी है।

बोरोदिनो तथा इसके पहले शेवार्दिनो की लड़ाई कैसे हुई, इस दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में भी इसी तरह एक निश्चित तथा सभी को

ज्ञात, किन्तु बिल्कुल ग़लत धारणा विद्यमान है। सभी इतिहासकार इस मामले को इस तरह पेश करते हैं:

स्मोलेन्स्क से पीछे हटती हुई रूसी सेना मानो एक बड़ी लड़ाई लड़ने के लिये अनुकूलतम स्थान की तलाश में थी और बोरोदिनो के रूप में उसे मानो यह स्थान मिल गया।

रूसियों ने मानो राजमार्ग के बायीं ओर (मास्को से स्मोलेन्स्क की दिशा में) तथा बोरोदिनो से उतीत्सा की तरफ़ लगभग समकोण पर पहले से ही ठीक उस जगह अपनी मोरचाबन्दी कर ली थी जहां वास्तव में लड़ाई हुई।

इस स्थान से आगे मानो दुश्मन की गति-विधि पर नज़र रखने के लिये शेवार्दिनो के टीले पर अग्रिम मोरचाबन्दी की गयी। २४ अगस्त को नेपोलियन ने मानो इस अग्रिम मोरचेबन्दी पर हमला करके इसे अपने क़ब्ज़े में ले लिया। २६ अगस्त को उसने बोरोदिनो के मैदान में तैनात सारी रूसी सेना पर हमला कर दिया।

इतिहास की पुस्तकों में ऐसा लिखा हुआ है और यह सब ग़लत है तथा इसके बारे में किसी को भी, जो इसकी गहराई में जाना चाहता है, बड़ी आसानी से विश्वास हो सकता है।

रूसियों ने अनुकूलतम स्थान की खोज नहीं की, बल्कि इसके विपरीत, पीछे हटते वक़्त वे बहुत-से ऐसे स्थानों से गुज़रे जो लड़ाई लड़ने की दृष्टि से बोरोदिनो की तुलना में कहीं अधिक अच्छे थे। वे इनमें से किसी भी स्थान पर नहीं रुके, क्योंकि कुतूज़ोव कोई ऐसा स्थान स्वीकार नहीं करना चाहते थे जिसे उन्होंने ख़ुद नहीं चुना था, क्योंकि एक बड़ी लड़ाई लड़ने की लोकप्रिय मांग ने अभी अपने को इतने ज़ोर से व्यक्त नहीं किया था, क्योंकि मीलोरादोविच जन-सेना को लेकर अभी तक नहीं पहुंचा था तथा इसके असंख्य दूसरे कारण भी थे। हक़ीक़त यही है कि बोरोदिनो से पहले के स्थान कहीं अधिक अनुकूल थे और बोरोदिनो का वह स्थान (जहां लड़ाई लड़ी गयी) न केवल अनुकूलतम ही नहीं था, बल्कि रूसी साम्राज्य के किसी भी ऐसे दूसरे स्थान से किसी तरह भी बेहतर नहीं था जिसकी ओर आंख मूंदकर नक़्शे पर इशारा कर दिया जाये।

रूसियों ने न केवल बोरोदिनो मैदान के बायें तथा राजमार्ग के समकोण पर (यानी जहां लड़ाई लड़ी गयी) मोरचाबन्दी ही नहीं

की थी, बल्कि २५ अगस्त, १८१२ तक उन्हें इस बात का ख़्याल तक नहीं आया था कि इस स्थान पर लड़ाई हो भी सकती है। इसका पहला प्रमाण तो यह है कि २५ तारीख़ को यहां न केवल कोई मोरचाबन्दी ही नहीं थी, बल्कि २५ तारीख़ को शुरू किया गया मोरचेबन्दी का काम २६ तारीख़ तक ख़त्म नहीं हुआ था; शेवार्दिनो की मोरचाबन्दी इसका दूसरा सबूत पेश करती है – उस स्थान के आगे, जहां लड़ाई लड़ी गयी, शेवार्दिनो की मोरचाबन्दी करने में कोई तुक नहीं थी। अन्य सभी स्थानों की तुलना में इस स्थान की सबसे ज़्यादा मज़बूत मोरचा-बन्दी किसलिये की गयी थी? किसलिये २४ तारीख़ को बहुत रात गये तक इसकी रक्षा के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया गया और छः हज़ार सैनिकों की बलि दी गयी? दुश्मन की गति-विधि पर नज़र रखने के लिये घुड़सवार कज़्ज़ाकों की एक टुकड़ी ही काफ़ी थी। इस बात का कि जिस स्थान पर लड़ाई हुई, उसका पहले से अनुमान नहीं लगाया गया था और शेवार्दिनो में इस स्थान की अग्रिम मोरचाबन्दी नहीं की गयी थी, तीसरा प्रमाण यह है कि बार्कले डे टोल्ली तथा बग्रातिओन २५ तारीख़ तक यही मानते थे कि शेवार्दिनो की मोरचा-बन्दी युद्ध-स्थल का **बायां पहलू** है और लड़ाई के बाद हड़बड़ी में लिखी गयी अपनी रिपोर्ट में ख़ुद कुतूज़ोव ने भी शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी को युद्ध-स्थल का **बायां पहलू** कहा था। बहुत बाद में, जब बड़े इतमीनान से बोरोदिनो की लड़ाई की रिपोर्ट लिखी गयी, तभी यह झूठी और अजीब-सी कहानी गढ़ ली गयी थी (सम्भवतः सेनापति की ग़लतियों की सफ़ाई देने और यह दिखाने के लिये कि उनसे भूल हो ही नहीं सकती) मानो शेवार्दिनो में **अग्रिम** मोरचाबन्दी की गयी थी (जबकि यह सिर्फ़ बायें पहलू की मोरचाबन्दी थी) और मानो हमने बोरोदिनो की लड़ाई मोरचाबन्द तथा पहले से चुनी हुई जगह पर लड़ी, जबकि यह लड़ाई सर्वथा अप्रत्याशित तथा ऐसे स्थान पर लड़ी गयी जहां मोरचाबन्दी लगभग नहीं थी।

इस मामले ने सम्भवतः इस तरह रूप धारण किया – कोलोचा नदी के तट पर, जो राजमार्ग को समकोण पर नहीं, बल्कि नुकीले कोण पर काटती है, लड़ाई के लिये स्थान चुना गया था और इस तरह शेवार्दिनो उसका बायां पहलू था, दायां पहलू नोवोये गांव के क़रीब था और मध्य भाग कोलोचा तथा वोइना नदी के संगम पर

बोरोदिनो में था। वास्तव में लड़ाई कैसे लड़ी गयी थी, यह सोचे बिना इस मैदान पर नज़र डालनेवाले किसी भी व्यक्ति को यह स्पष्ट हो जायेगा कि स्मोलेन्स्क सड़क पर मास्को की तरफ़ बढ़ रही सेना को रोकने के लिये कोलोचा नदी की ओट में स्थित यह स्थान सबसे ज़्यादा उपयुक्त है।

२४ अगस्त को वालूयेवो पहुंचने पर नेपोलियन (जैसाकि इतिहास की पुस्तकों में कहा गया है) उतीत्सा और बोरोदिनो के बीच रूसी सेनाओं को कहीं नहीं देख पाया (वह उन्हें देख भी नहीं सकता था, क्योंकि वे वहां थीं ही नहीं) और रूसी सेना की अग्रिम मोरचाबन्दी उसे नज़र नहीं आई। रूसी सेना के चंडावल का पीछा करते हुए वह अचानक रूसी सेना के बायें पहलू यानी शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी पर जा पहुंचा और रूसियों को हैरानी में डालते हुए उसने कोलोचा नदी को पार कर लिया। रूसियों ने, जिनके लिये अब एक बड़ी लड़ाई लड़ना सम्भव नहीं था, अपने को बायें पहलूवाले उस स्थान से पीछे हटा लिया जहां वे डटना चाहते थे और उस नये स्थान पर जा डटे, जिसकी उन्होंने पूर्वकल्पना नहीं की थी और जहां मोरचाबन्दी नहीं की गयी थी। सड़क के बायीं ओर कोलोचा नदी को पार करके नेपोलियन ने भावी लड़ाई का स्थान दायें से बायें कर दिया (रूसियों की ओर से) और उतीत्सा, सेम्योनोव्स्कोये तथा बोरोदिनो के बीच के मैदान को (और लड़ाई के लिये यह मैदान रूस के किसी भी अन्य मैदान की तुलना में बेहतर नहीं था) युद्ध-क्षेत्र बना दिया और यहीं २६ अगस्त की लड़ाई लड़ी गयी।

अगर नेपोलियन २४ अगस्त की शाम को कोलोचा नदी पर न पहुंच जाता और उसी शाम को मोरचेबन्दी पर हमले का हुक्म न देकर अगली सुबह को हमला शुरू करता तो किसी को इस बात का कोई सन्देह न रहता कि शेवार्दिनो की मोरचाबन्दी हमारी सेना-स्थिति का बायां पहलू है और लड़ाई उसी तरह से होती जैसे हमने उसकी आशा की थी। ऐसा होने पर हमने अपने बायें पहलू यानी शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी की और ज़्यादा डटकर रक्षा की होती, हमने मध्य में या दायीं ओर से नेपोलियन की सेना पर हमला किया होता और २४ तारीख़ को उसी स्थान पर बड़ी लड़ाई लड़ी गयी होती जहां मोरचाबन्दी की गयी थी और जिसकी हमने पूर्वकल्पना की थी। लेकिन चूंकि हमारे

चंडावल के पीछे हटते ही यानी ग्रिदनेवा के नज़दीक हुई लड़ाई के फ़ौरन बाद ही हमारे बायें पहलू पर हमला कर दिया गया और चूंकि रूसी सेना-संचालकों ने तभी, २४ अगस्त की शाम को बड़ी लड़ाई नहीं लड़नी चाही अथवा वे ऐसा कर नहीं पाये, इसलिये बोरोदिनो की लड़ाई की पहली और मुख्य सैनिक कार्रवाई में २४ अगस्त की शाम को ही हमारी हार हो गयी थी और सम्भवतः इसी कारण हमें उस बड़ी लड़ाई में भी मुंह की खानी पड़ी जो २६ अगस्त को लड़ी गयी।

२५ तारीख़ की सुबह को शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी से हाथ धो लेने के बाद हमारे बायें पहलू की स्थिति अच्छी नहीं थी और हमारे लिये यह ज़रूरी हो गया कि अपने बायें पहलू को जल्दी से पीछे हटा लें और जहां कहीं भी सम्भव हो, जल्दी से मोरचाबन्दी कर लें।

बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं थी कि २६ अगस्त को रूसी सेनायें कमज़ोर और अधूरी मोरचेबन्दी की मदद से अपनी रक्षा कर रही थीं, बल्कि यह प्रतिकूल स्थिति इस कारण और भी अधिक विकट हो गयी थी कि रूसी सेना-संचालक इस तथ्य को पूरी तरह न समझ पाते हुए (कि बायां पहलू हाथ से निकल गया है और आगे की सारी लड़ाई का क्षेत्र दायें से बायें की ओर परिवर्तित हो गया है) नोवोये गांव से उतीत्सा तक फैली अपनी सेना की स्थिति को ज्यों की त्यों बनाये रहे और इसके परिणामस्वरूप उन्हें लड़ाई के दौरान ही अपनी सेना को दायें से बायें ले जाना पड़ा। इस तरह सारी लड़ाई के समय हमारे बायें पहलू पर हमला करनेवाली पूरी फ़्रांसीसी सेना का हमें उससे आधी संख्यावाली रूसी सेना से मुक़ाबला करना पड़ा। (फ़्रांसीसियों के दायें पहलू पर उतीत्सा तथा उवारोव के विरुद्ध पोन्यातोव्स्की* द्वारा की गयी फ़ौजी कार्रवाई मुख्य लड़ाई से बिल्कुल अलग थी।)

सो बोरोदिनो की लड़ाई बिल्कुल वैसे नहीं हुई थी जैसे कि (हमारे सेना-संचालकों की ग़लतियों पर पर्दा डालने के लिये और इस प्रकार रूसी सेनाओं तथा जनता की कीर्ति को क्षति पहुंचाते हुए) इसका वर्णन

---

* फ्योदोर उवारोव (१७७३–१८२४) – रूसी जनरल। यूज़ेफ़ पोन्यातोव्स्की (१७६३–१८१३) – पोलैण्ड के बादशाह स्तानिस्लाव अगस्त का भतीजा; १८१२ में फ़्रांस के पक्ष में पोलैण्डी कोर का कमांडर। – सं०

किया जाता है। बोरोदिनो की लड़ाई पहले से चुनी गयी तथा मोरचे-बन्दी से मज़बूत की गयी जगह पर तथा फ़्रांसीसियों की तुलना में कुछ कमज़ोर सैनिक-शक्ति से नहीं, बल्कि शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी के हाथ से निकल जाने के फलस्वरूप सर्वथा अरक्षित, लगभग मोरचेबन्दी के बिना तथा फ़्रांसीसियों की तुलना में आधी रूसी सैनिक-शक्ति से लड़ी गयी। यों कहना चाहिये कि यह लड़ाई ऐसी परिस्थितियों में लड़ी गयी जिनमें न केवल दस घण्टों तक लड़ते रहने और फिर भी हार-जीत का फ़ैसला न होने की स्थिति बनाये रखने की ही कल्पना नहीं की जा सकती थी, बल्कि ऐसा सोचना भी सम्भव नहीं था कि हमारी सेना को तीन घण्टों से अधिक समय तक पूरी तरह पराजित होने और मैदान छोड़कर भागने से रोका जा सकता था।

२०

२५ अगस्त की सुबह को प्येर की बग्घी मोजाइस्क नगर से बाहर जा रही थी। नगर से बाहर ले जानेवाली बहुत ही खड़ी और टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी-ढाल पर तथा पहाड़ी के दायीं ओर स्थित बड़े गिरजे के पास से गुज़रते हुए, जहां प्रार्थना हो रही थी और ज़ोर से घण्टियां बज रही थीं, प्येर बग्घी से उतरकर पैदल चल पड़ा। उसके पीछे-पीछे कोई घुड़सवार रेजिमेंट पहाड़ी से नीचे आ रही थी जिसके आगे-आगे फ़ौजी गवैये चल रहे थे। उसके सामने की ओर से घोड़ा-गाड़ियों की एक क़तार ऊपर जा रही थी। इन घोड़ा-गाड़ियों में पिछले दिन की लड़ाई में घायल होनेवाले सैनिक थे। इन घोड़ा-गाड़ियों को हांकने-वाले किसान अपने घोड़ों पर चीख़ते-चिल्लाते तथा चाबुक बरसाते हुए गाड़ी के एक पहलू से दूसरे पहलू की तरफ़ भागते रहते थे। घोड़ा-गाड़ियां, जिनमें तीन या चार घायल सैनिक बैठे अथवा लेटे हुए थे, उन पत्थरों पर उछलती थीं, जो बहुत ही खड़ी चढ़ाई पर बिछा दिये गये थे। चिथड़ों की पट्टियां बांधे, पीले चेहरों तथा भिंचे होंठों-वाले, नाक-भौंह सिकोड़े और गाड़ियों के सिरों को थामे हुए घायल सैनिक धचके-झटके लगने पर गाड़ियों में उछलते तथा एक-दूसरे से

टकराते थे। लगभग ये सभी के सभी प्येर के सफ़ेद टोप और हरे फ़्रॉक-कोट को बाल-सुलभ जिज्ञासा से घूर रहे थे।

प्येर का कोचवान गाड़ीवानों पर ग़ुस्से से चिल्लाता हुआ कह रहा था कि वे अपनी गाड़ियों को सड़क के एक सिरे पर रखें। गाने गाती हुई पहाड़ी से नीचे उतर रही घुड़सवार रेजिमेंट प्येर की टमटम के क़रीब पहुंच गयी और उसने सारी सड़क घेर ली। प्येर रुक गया तथा पहाड़ी पर बनाये गये रास्ते के सिरे पर सिमट-सिकुड़ गया। पहाड़ी की ढाल के कारण सूरज की किरणें रास्ते के निचले भाग तक नहीं पहुंचती थीं, इसलिये वहां ठण्ड और नमी थी। प्येर के सिर के ऊपर अगस्त महीने की सुबह का तेज़ सूरज चमक रहा था तथा गिरजे की सुखद घण्टियां गूंज रही थीं। घायलों को ले जानेवाली एक घोड़ा-गाड़ी रास्ते के सिरे पर प्येर के नज़दीक ही रुक गयी। छाल के जूते पहने हुए इसका गाड़ीवान हांफता हुआ अपनी गाड़ी के पास पहुंचा, उसने टायर के बिना गाड़ी के एक पिछले पहिये के नीचे एक बड़ा-सा पत्थर घुसेड़ दिया और रुक जानेवाले घोड़े की जोत ठीक करने लगा।

घोड़ा-गाड़ी के पीछे-पीछे आ रहे एक बूढ़े सैनिक ने, जिसका एक हाथ गले में बंधी पट्टी में लटक रहा था, अपने दूसरे भले-चंगे हाथ से गाड़ी का सहारा ले लिया और प्येर को सम्बोधित करते हुए पूछा:

"कहो भाई, क्या हमें यहीं उतार दिया जायेगा या मास्को तक ले जाया जायेगा?"

प्येर अपने ख़्यालों में इतना डूबा हुआ था कि उसने यह प्रश्न सुना ही नहीं। वह कभी तो घुड़सेना की रेजिमेंट की तरफ़ देखता था, जो अब घायलों की घोड़ा-गाड़ियों के बराबर पहुंच गयी थी, और कभी उस घोड़ा-गाड़ी की तरफ़ जिसके क़रीब वह खड़ा था तथा जिसपर दो घायल बैठे थे और एक लेटा हुआ था। उसे लगा कि उस समस्या का, जिसपर वह सोच-विचार कर रहा था, समाधान इनके पास है। गाड़ी में बैठे एक सैनिक का सम्भवतः गाल घायल हो गया था। उसके पूरे सिर पर चिथड़े बंधे हुए थे और उसका एक गाल सूजकर किसी बच्चे के सिर के बराबर हो गया था। उसका मुंह और नाक मानो एक तरफ़ को मुड़ गये थे। यह सैनिक बड़े गिरजे की ओर देखते हुए अपने ऊपर सलीब का निशान बना रहा था। दूसरा, सुनहरे

बालोंवाला जवान रंगरूट छोकरा, जिसका पतला-सा चेहरा ऐसे सफ़ेद था मानो सर्वथा रक्तहीन हो, ठिठकी हुई मधुर मुस्कान से प्येर को एकटक देख रहा था। तीसरा सैनिक औंधे मुंह लेटा हुआ था और इस-लिये उसका चेहरा नज़र नहीं आ रहा था। घुड़सेना के गवैये अब इस घोड़ा-गाड़ी के पास आ गये थे।

"अरे, परायी धरती पर... सिर मेरा चकराये..."

वे सैनिकों का यह नृत्य-गान गा रहे थे। इसी गाने को मानो दुहराते हुए, किन्तु दूसरी तरह की ख़ुशी भरी धुन में धातु की घण्टियों की आवाज़ ऊंचाई पर गूंज रही थी और सामनेवाली ढाल की चोटी को सूरज की प्रखर किरणें दूसरे ही ढंग की ख़ुशी प्रदान कर रही थीं। मगर उस ढाल के नीचे, घायल सैनिकों और बुरी तरह हांफते हुए मरियल घोड़ेवाली गाड़ी के क़रीब, जहां प्येर खड़ा था, नमी, धुंधलका और उदासी थी।

सूजे हुए गालवाला फ़ौजी घुड़सैनिकों के गवैयों को बड़ी झल्लाहट से देख रहा था।

"ओह, ये घमण्डी छैले!" उसने भर्त्सना से कहा।

"आज तो सैनिकों को ही नहीं, मैंने किसानों को भी देखा है! किसानों को भी लड़ाई में भेजा जा रहा है," घोड़ा-गाड़ी के क़रीब खड़े सैनिक ने उदास मुस्कान से प्येर को सम्बोधित करते हुए कहा। "आजकल सबको एक जैसा समझा जा रहा है... वे तो सारी क़ौम को ही उनके मुक़ाबले के लिये खड़ा कर देना चाहते हैं। मास्को तो मास्को है। क़िस्सा ख़त्म करना चाहते हैं।" फ़ौजी के शब्दों की अस्पष्टता के बाव-जूद प्येर वह सब समझ गया जो वह कहना चाहता था और उसने सिर झुकाकर उसकी बात का अनुमोदन किया।

रास्ता साफ़ हो गया था, प्येर पहाड़ी से नीचे उतरा और फिर से टमटम में सवार होकर आगे चल दिया।

प्येर किन्हीं जाने-पहचाने चेहरों को ढूंढ़ते हुए रास्ते के दोनों ओर नज़र दौड़ाता जा रहा था और हर जगह तरह-तरह की सेनाओं के सैनिकों के केवल अपरिचित चेहरे ही सामने आते थे और वे सभी एक जैसी हैरानी से उसके सफ़ेद टोप और हरे फ़्रॉक-कोट को देखते थे।

चार से अधिक किलोमीटर का फ़ासला तय करने पर प्येर को

एक पहला परिचित व्यक्ति मिला और उसने ख़ुशी से उसको सम्बोधित किया। जान-पहचान का यह आदमी सेना की चिकित्सा-सेवा का एक संचालक था। एक जवान डाक्टर की बग़ल में टमटम में बैठा हुआ वह सामने की ओर से आ रहा था और प्येर को पहचानने पर उसने कोचवान की ड्यूटी बजा रहे कज़्ज़ाक को टमटम रोकने को कहा।

"काउंट! हुज़ूर, आपका यहां कैसे आना हुआ?" डाक्टर ने पूछा।

"मैं ज़रा देखना चाहता था..."

"हां, हां, देखने को तो यहां बहुत कुछ होगा..."

प्येर टमटम से उतरा और डाक्टर से अपने मन की बात कहने लगा। उसने उसे बताया कि वह लड़ाई में हिस्सा लेने का इरादा रखता है।

डाक्टर ने प्येर बेज़ूख़ोव को यह सलाह दी कि वह सीधे सेनापति, महामान्य कुतूज़ोव के पास चला जाये।

"भगवान ही जान सकते हैं कि लड़ाई के वक़्त आप कहां-कहां भटकते रहें और कुछ भी न देख पायें," डाक्टर ने अपने सहयोगी, जवान डाक्टर से नज़रें मिलाते हुए कहा, "महामान्य आपको जानते हैं और वह ख़ुशी से आपसे मिलेंगे। तो जनाब, आप ऐसा ही कीजिये," डाक्टर बोला।

डाक्टर थका-हारा और उतावली में था।

"तो आपके ख़्याल में मुझे ऐसा ही करना चाहिये... मैं आपसे इतना और पूछना चाहता था कि हमारी सेनायें किस जगह तैनात हैं?" प्येर ने कहा।

"किस जगह तैनात हैं?" डाक्टर ने प्येर का प्रश्न दोहराया। "यह मेरी जानकारी के बाहर की बात है। आप तातारिनोवा से होते हुए जाइये – वहां बहुत-सी खुदाई हो रही है। वहां आप टीले पर चले जाइये – वहां से आप सब कुछ देख सकेंगे," डाक्टर ने उत्तर दिया।

"वहां से सब कुछ नज़र आ जायेगा?.. अगर आप..."

किन्तु डाक्टर ने उसे बीच में ही टोक दिया और अपनी टमटम की तरफ़ क़दम बढ़ाया।

"मैं आपको वहां पहुंचा आता, लेकिन क़सम भगवान की, ऐसी हालत है (उसने गले की तरफ़ इशारा किया जिसका मतलब था कि गले तक काम में फंसा हुआ है अथवा दम मारने की फ़ुरसत नहीं)। मुझे जल्दी से जल्दी कोर-कमांडर के पास पहुंचना है। क्या बताऊं कि हमारी कैसी हालत है?.. आप तो जानते ही हैं, काउंट, कि कल लड़ाई होगी। एक लाख की फ़ौज में कम से कम बीस हज़ार घायल तो होंगे ही। लेकिन हमारे पास छः हज़ार के लिये भी न तो स्ट्रेचर हैं, न चारपाइयां, न मरहम-पट्टी करनेवाले और न डाक्टर। दस हज़ार घोड़ा-गाड़ियां ज़रूर हैं, मगर दूसरी चीज़ें भी तो चाहिये। किसी तरह ऐसे ही काम चलाना पड़ेगा।"

इस अजीब-से विचार ने कि उन हज़ारों ज़िन्दा, स्वस्थ, जवान और बूढ़े लोगों में से, जो विनोदपूर्ण आश्चर्य से उसके टोप की तरफ़ देखते थे, सम्भवतः बीस हज़ार के भाग्य में घायल होना और मरना बदा था (शायद ये वही हों जिन्हें उसने देखा था) प्येर को विह्वल कर दिया।

"मुमकिन है कि कल वे मौत के मुंह में चले जायें, किस तरह वे मौत के सिवा किसी और चीज़ के बारे में सोच सकते हैं?" और अचानक विचारों के किसी रहस्यमय सम्पर्क-सूत्र से उसकी आंखों के सामने मोजाइस्क पहाड़ी से नीचे उतरने के समय का दृश्य – घायलों को ले जानेवाली घोड़ा-गाड़ियां, गिरजाघर की घण्टियों की टनटनाहट, सूरज की टेढ़ी-तिरछी किरणें और घुड़सवार सैनिकों के गाने – सजीव हो उठा।

"घुड़सवार सैनिक लड़ाई के मैदान में जा रहे हैं, सामने से घायलों को आते देखते हैं तथा क्षणभर को भी यह नहीं सोचते कि ख़ुद उनका क्या हाल होनेवाला है। वे घायलों के पास से गुज़रते हैं और चंचलता से उन्हें आंख मारते हैं। इन सभी में से बीस हज़ार काल-कलवित होनेवाले हैं और फिर भी वे मेरे टोप को देखकर हैरान होते हैं! बड़ी अजीब बात है!" तातारिनोवा गांव की तरफ़ आगे जाते हुए प्येर सोच रहा था।

सड़क के बायीं ओर ज़मींदार के घर के क़रीब बहुत-सी बग्घियां, चौपहिया घोड़ा-गाड़ियां तथा बहुत-से अर्दली और सन्तरी खड़े थे। महामान्य कुतूज़ोव इसी घर में ठहरे हुए थे। किन्तु जिस वक़्त प्येर

यहां पहुंचा तो वह घर पर नहीं थे, उनके स्टाफ़ का लगभग कोई भी अफ़सर यहां नहीं था। वे सभी प्रार्थना के लिये गिरजे में गये हुए थे। प्येर ने गोर्कि की तरफ़ अपनी टमटम आगे बढ़ाने को कहा।

टीले और गांव की छोटी-सी गली के पास पहुंचकर प्येर ने पहली बार जन-सेना के किसानों को देखा जो सफ़ेद कुरते पहने थे तथा जिनकी टोपियां पर क्रॉस बने हुए थे। वे सड़क के दायीं ओर, घास से ढके एक विराट टीले पर ज़िन्दादिली से ऊंचे-ऊंचे बोलते-बतियाते, ठहाके लगाते तथा पसीने से भीगे हुए कुछ काम कर रहे थे।

उनमें से कुछ फावड़ों से टीले पर ख़न्दकें बना रहे थे, कुछ दूसरे छोटे-छोटे ठेलों में मिट्टी भरकर उन्हें तख़्तों के ऊपर से ले जा रहे थे और कुछ अन्य बेकार खड़े थे।

टीले पर खड़े हुए दो अफ़सर इन्हें हिदायतें दे रहे थे। इन किसानों को देखकर, जो सैनिकों के रूप में अपनी इस नयी स्थिति से स्पष्टतः ख़ुश थे, प्येर को फिर से मोजाइस्क के घायलों की याद हो आयी और वह समझ गया कि उस सैनिक के इन शब्दों का क्या अर्थ था, जब उसने कहा था – कि **सारी क़ौम को ही उनके मुक़ाबले के लिये खड़ा कर देना चाहते हैं।** घुटनों तक के अजीब और अटपटे-से बूट पहने, पसीने से भीगी गर्दनोंवाले इन दढ़ियल किसानों को, जिनमें से कुछ के कुरतों के बटन बग़ल की ओर खुले थे तथा जिनके नीचे से उनकी सांवली हंसलियां नज़र आ रही थीं, युद्ध-क्षेत्र में काम करते देखकर प्येर के मन पर उस सबकी तुलना में, जो उसने इस क्षण की गम्भीरता तथा महत्ता के बारे में अब तक देखा-सुना था, कहीं अधिक गहरा प्रभाव पड़ा।

२१

प्येर अपनी टमटम से बाहर आ गया और काम कर रहे जन-सैनिकों के क़रीब से गुज़रते हुए उस टीले पर चढ़ गया, जहां से, जैसाकि डाक्टर ने उससे कहा था, युद्ध-क्षेत्र नज़र आता था।

सुबह के कोई ग्यारह बजे का वक़्त था। सूरज प्येर के कुछ बायें

और पीछे की ओर था तथा स्वच्छ-निर्मल हवा में से उसके सामने उभरनेवाली विराट रंगभूमि के पूरे दृश्य को प्रखर प्रकाश से आलोकित कर रहा था।

स्मोलेन्स्क राजमार्ग इस रंगभूमि को बायीं ओर से काटता हुआ तथा कोई पांच सौ क़दम की दूरी पर सामने की तरफ़ टीले के दामन में बसे सफ़ेद गिरजेवाले एक गांव के बीच से गुज़रता था। यह बोरोदिनो था। इस गांव के नीचे यह सड़क एक पुल पर से गुज़रती थी और ढालों तथा चढ़ाइयों पर बल खाती तथा अधिकाधिक ऊंची होती हुई छः से अधिक किलोमीटरों की दूरी पर नज़र आनेवाले वालूयेवो गांव की तरफ़ जाती थी, जहां अब नेपोलियन पड़ाव डाले था। वालूयेवो से आगे यह सड़क पतझड़ के कारण पीले हो गये पत्तोंवाले जंगल में जाकर क्षितिज पर ग़ायब हो जाती थी। बहुत दूरी पर, भोज और देवदारु के वृक्षोंवाले इस वन में सड़क के दायीं ओर कोलोत्स्की मठ के क्रास और घंटाघर धूप में चमक रहे थे। इस पूरे नीले विस्तार में, सड़क तथा जंगल के दायें-बायें जहां-तहां धुआं उगलते अलाव तथा हमारी और शत्रु-सेनाओं के दल, जिन्हें अलग से पहचानना सम्भव नहीं था, दिखाई दे रहे थे। कोलोचा और मास्को नदी के प्रवाह के साथ-साथ दायीं ओर का क्षेत्र खड्डों-खाइयोंवाला और पहाड़ी था। इन खड्डों-खाइयों के बीच से दूरी पर बेज़्ज़ूबोवो और ज़खार्यिनो के गांव नज़र आ रहे थे। बायीं ओर का क्षेत्र समतल था, वहां अनाज के खेत थे और सेम्योनोव्स्कोये का वह गांव दिखाई दे रहा था जिसे जला दिया गया था और जहां से धुआं उठ रहा था।

प्येर ने अपने दायें-बायें जो कुछ भी देखा, वह इतना अस्पष्ट था कि न तो मैदान के बायें और न दायें पहलू से उसकी कल्पना को पूरा सन्तोष मिला। उसकी आशा के प्रतिकूल कहीं पर भी युद्ध-क्षेत्र नहीं था, बल्कि सभी जगह खेत-मैदान, वन-प्रांगण, सेनायें, वन, अलावों का धुआं, गांव, टीले और नद-नाले थे। प्येर ने अपनी आंखों पर चाहे कितना ही ज़ोर क्यों न डाला, वह जीवन से स्पन्दित इस सारे क्षेत्र में कहीं भी मोरचा नहीं देख पाया और इतना ही नहीं, हमारी सेनाओं और शत्रु-सेनाओं के बीच अन्तर भी नहीं कर पाया।

"किसी जानकार से पूछना चाहिये," उसने सोचा और एक

फ़ौजी अफ़सर को सम्बोधित किया जो प्येर की लम्बी-चौड़ी, असैनिक आकृति को जिज्ञासा से देख रहा था।

"मैं यह पूछने की अनुमति चाहता हूं," प्येर ने फ़ौजी अफ़सर से कहा, "यह सामने कौन-सा गांव है?"

"बुर्दिनो या फिर कुछ और है?" उसने अपने साथी-अफ़सर से पूछा।

"बोरोदिनो," दूसरे अफ़सर ने अपने साथी की भूल सुधारते हुए जवाब दिया।

फ़ौजी अफ़सर किसी व्यक्ति से बातचीत करने का मौक़ा पाकर शायद खुश होता हुआ प्येर के क़रीब आ गया।

"वहां हमारे लोग हैं?" प्येर ने सवाल किया।

"हां, और कुछ दूरी पर वे फ़्रांसीसी हैं," अफ़सर ने बताया। "उधर देखिये, वे नज़र आ रहे हैं।"

"कहां? कहां?" प्येर ने जानना चाहा।

"दूरबीन के बिना ही दिखाई दे रहे हैं। वे रहे, वे रहे!" फ़ौजी अफ़सर ने नदी के पीछे बायीं ओर को उठ रहे धुएं की तरफ़ इशारा किया और उसके चेहरे पर कठोरता और गम्भीरता का वह भाव झलक उठा जो प्येर ने उन अनेक लोगों के चेहरों पर देखा था जिनसे उसकी रास्ते में मुलाक़ात हुई थी।

"अच्छा, वे फ़्रांसीसी हैं! और वहां कौन हैं?.." प्येर ने बायीं ओर को एक टीले की तरफ़ इशारा किया जिसके नज़दीक सेनायें दिखाई दे रही थीं।

"ये हमारी सेनायें हैं।"

"अच्छा, ये हमारी हैं! और वहां?.." प्येर ने दूरी पर एक खड्ड में नज़र आनेवाले किसी गांव के निकट एक अन्य टीले की ओर संकेत किया जिसपर एक बड़ा वृक्ष उगा हुआ था। वहां भी अलाव जल रहे थे और कुछ काला-सा दिखाई दे रहा था।

"वहां तो फिर **वही** है," फ़ौजी अफ़सर ने जवाब दिया। (यह शेवार्दिनो की मोरचाबन्दी थी।) "कल हमारा था, अब **उसका** है।"

"तो हमारी सेनाओं की तैनाती की क्या स्थिति है?"

"हमारी सेनाओं की?" फ़ौजी अफ़सर ने खुशी से मुस्कराते हुए

यह प्रश्न दोहराया। "मैं आपको स्पष्ट रूप से यह बता सकता हूं, क्योंकि मैंने ही हमारी सेना की लगभग सारी मोरचाबन्दी करवाई है। वहां, आप देख रहे हैं न, वहां, बोरोदिनो में हमारी सेना का मध्य भाग है, उस जगह," और उसने सफ़ेद गिरजेवाले गांव की तरफ़ इशारा किया, जो बिल्कुल उनके सामने था। "वहां कोलोचा नदी का उतारा है। वहां, उस जगह, जहां खड्ड में कटी हुई घास के कुछ ढेर दिखाई दे रहे हैं, वहां पुल है। यह हमारा मध्य भाग है। हमारी सेना का दायां पहलू उस जगह पर है (उसने दूर खड्ड में सीधे दायीं ओर संकेत किया), वहां मास्को नदी है और वहां हमने तीन बड़ी मज़बूत मोरचाबन्दियां की हैं। हमारी सेना का बायां पहलू..." यहां फ़ौजी अफ़सर रुक गया। "बात यह है कि इसे आपको स्पष्ट करना कठिन है... कल हमारी सेना का बायां पहलू शेवार्दिनो में वहां था, जहां शाहबलूत है, देख रहे हैं न? लेकिन अब हम बायें पहलू को पीछे ले आये हैं। अब वह वहां है – वह गांव और धुआं देख रहे हैं न? यह सेम्योनोव्स्कोये है, हां, उसी जगह," उसने रायेव्स्की टीले की तरफ़ इशारा किया। "लेकिन यहां तो शायद ही लड़ाई हो। **वह** अपनी फ़ौजों को यहां ले आया है, यह तो कपट-चाल है। **वह** तो सम्भवतः मास्को से दायीं ओर को घूम जायेगा। ख़ैर, किसी भी जगह लड़ाई क्यों न हो, कल बहुत-से लोग कम हो जायेंगे!" अफ़सर ने कहा।

फ़ौजी अफ़सर जिस वक़्त प्येर को यह सब कुछ बता रहा था, उसी समय एक बुज़ुर्ग छोटा अफ़सर उसके पास आकर खड़ा हो गया था और चुपचाप अपने अफ़सर की बात ख़त्म होने की प्रतीक्षा करता रहा था। किन्तु अपने अफ़सर के अन्तिम वाक्य को स्पष्टतः नापसन्द करते हुए उसने उसे टोक दिया।

"हमें टोकरियां लानी चाहिये," उसने कड़ाई से कहा।

फ़ौजी अफ़सर मानो झेंप गया, मानो यह समझ गया कि इस बारे में सोचा तो जा सकता है कि अगले दिन कितने लोग कम होंगे, मगर इस बात को मुंह पर लाना ठीक नहीं।

"तो फिर से तीसरी कम्पनी को भेज दो," फ़ौजी अफ़सर ने जल्दी से जवाब दिया।

"आप कौन हैं? डाक्टर हैं न?"

"नहीं, मैं तो योंही यह सब पूछ रहा था," प्येर ने उत्तर दिया और फिर जन-सैनिकों के पास से गुज़रते हुए टीले से नीचे चल दिया।

"ओह, बेड़ा ग़र्क़!" प्येर के पीछे-पीछे आनेवाले फ़ौजी अफ़सर ने नाक बन्द करते और काम कर रहे लोगों के पास से भागकर जाते हुए कहा।

"वे आ रहे हैं! उसे ला रहे हैं, आ रहे हैं... वह रही... अभी यहां आ जायेंगे..." अचानक ऐसी आवाज़ें सुनायी दीं और फ़ौजी अफ़सर, सैनिक और जन-सैनिक सड़क की तरफ़ भागने लगे।

बोरोदिनो से एक धार्मिक जुलूस टीले की तरफ़ आ रहा था। धूल भरी सड़क पर प्यादा फ़ौज के सैनिक अपनी टोपियां उतारे और बन्दूक़ें झुकाये हुए बड़े व्यवस्थित ढंग से आगे-आगे आ रहे थे। उनके पीछे धार्मिक गायन सुनाई दे रहा था।

टोपियां उतारे सैनिक और जन-सैनिक प्येर को पीछे छोड़ते हुए जुलूस की तरफ़ भागे जा रहे थे।

"मां मरियम की प्रतिमा ला रहे है! हमारी रक्षा करनेवाली मां की!.. ईवेर्स्काया मां मरियम की!.."

"स्मोलेन्स्क की मां मरियम की," किसी ने उसकी भूल सुधारी।

सभी जन-सैनिक, जो गांव में और जो तोपख़ाने के लिये मोरचा-बन्दी कर रहे थे, अपने फ़ावड़े फेंककर धार्मिक जुलूस की तरफ़ भाग चले। धूल भरी सड़क पर बढ़ी आ रही बटालियन के पीछे-पीछे चोग़े पहने पादरी आ रहे थे और डीकनों तथा भजनीकों से घिरा तथा हुड पहने हुए एक बूढ़ा आ रहा था। इनके पीछे सैनिक और फ़ौजी अफ़सर रुपहले चौखटे में जड़ी काले चेहरेवाली बहुत बड़ी प्रतिमा उठाये ला रहे थे। यह स्मोलेन्स्क से लायी गयी प्रतिमा थी और तभी से इसे सेना के साथ रखा जा रहा था। इस प्रतिमा के पीछे, इसके गिर्द, इसके आगे और इसके सभी ओर टोपियां उतारे हुए सैनिकों की भीड़ भाग रही थी और धरती तक झुक-झुककर प्रणाम कर रही थी।

यह जुलूस टीले पर चढ़कर रुक गया। बड़े-बड़े तौलियों के सहारे इस प्रतिमा को अब तक ऊपर उठाये हुए लोगों ने अपनी जगह बदल

ली, भजनीकों ने फिर से अपनी धूपदानियां जला लीं और प्रार्थना आरम्भ हुई। ऊपर से सूरज की सीधी गर्म किरणें आ रही थीं; हल्की-हल्की ताज़ा हवा नंगे सिरों के बालों और उन रिबनों से खिलवाड़ कर रही थी जिनसे प्रतिमा सजी हुई थी। खुले आकाश के नीचे भजन-गान धीमा-धीमा सुनायी दे रहा था। नंगे सिर फ़ौजी अफ़सरों, सैनिकों और जन-सैनिकों की बहुत बड़ी भीड़ प्रतिमा को घेरे थी। भीड़ से अलग एक जगह पर पादरी और भजनीक के पीछे बड़े फ़ौजी अफ़सर खड़े थे। गले में सेंट जार्ज का पदक लटकाये, गंजे सिरवाला एक जनरल, जो पादरी के बिल्कुल पीछे खड़ा था, अपने ऊपर सलीब नहीं बना रहा था (वह शायद जर्मन था), बहुत धीरज से प्रार्थना की समाप्ति की प्रतीक्षा कर रहा था जिसे वह रूसी लोगों में सम्भवतः देशभक्ति की भावना जागृत करने के लिये ही सुनना ज़रूरी समझता था। लड़ाकू मुद्रा में खड़ा एक अन्य जनरल लापरवाही से अपने वक्ष पर सलीब के छोटे-छोटे चिह्न बनाता हुआ अपने इर्द-गिर्द देख रहा था। किसानों की भीड़ में खड़े हुए प्येर ने इन बड़े फ़ौजी अफ़सरों में अपने कुछ परिचितों को पहचान लिया; किन्तु वह उनकी तरफ़ नहीं देख रहा था – उसका पूरा ध्यान इस भीड़ में खड़े सैनिकों और जन-सैनिकों के चेहरों के गम्भीर भाव पर केन्द्रित था जो बड़ी तन्मयता तथा एक ही ढंग से प्रतिमा की ओर देख रहे थे। थके हुए भजनीकों ने (जो बीसवीं बार यह प्रार्थना गा रहे थे) जैसे ही क्लान्त और अभ्यस्त ढंग से यह गाना शुरू किया – "प्रभु की मां मरियम अपने सेवकों को दुख-मुसीबतों से बचाओ" और पादरी तथा डीकन ने इन शब्दों मे इसे आगे बढ़ाया – "हर प्राणी अपनी रक्षा के लिये आपकी शरण में आता है" – तो सभी के चेहरों पर बहुत जल्द ही सामने आनेवाले उस क्षण की गम्भीरता की चेतना का वही भाव आ गया जो प्येर ने मोजाइस्क में पहाड़ी के दामन में तथा अनेकानेक उन भिन्न लोगों के चेहरों पर देखा था जिनसे सुबह को उसकी रास्ते में भेंट हुई थी। प्रार्थना में उपस्थित लोग अपने सिरों को कहीं ज़्यादा झुकाने तथा बालों को पीछे की ओर झटकने लगे और गहरी उसांसों तथा छाती पर ज़ोर से उंगलियां मारते हुए सलीब बनाने की आवाज़ें सुनायी देने लगीं।

मां मरियम की प्रतिमा के गिर्द जमा भीड़ अचानक दो भागों

में बंटकर प्येर से सट गयी। जिस उतावली से भीड़ रास्ता बना रही थी, इससे स्पष्ट हो रहा था कि सम्भवतः कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति प्रतिमा के पास आ रहा है।

यह कुतूज़ोव थे जो सेना की व्यूह-रचना का निरीक्षण करने के बाद तातारिनोवा गांव की ओर लौटते हुए प्रार्थना में शामिल होने के लिये यहां रुक गये थे। प्येर ने उनकी विशेष, अन्य सभी लोगों से भिन्न आकृति के आधार पर उन्हें फ़ौरन पहचान लिया।

झुकी पीठ, पके बालोंवाले नंगे सिर, थलथल चेहरे पर उस आंख की सफ़ेदी की झलक देते हुए, जो वह एक लड़ाई में खो बैठे थे, तथा मोटे और लम्बे-चौड़े शरीर पर लम्बा फ़ॉक-कोट पहने कुतूज़ोव अपनी ढीली-ढाली और झूमती-झामती चाल से भीड़ के घेरे में आये तथा पादरी के पीछे खड़े हो गये। उन्होंने सधे ढंग से अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया, हाथ से ज़मीन को छुआ और गहरी सांस लेकर सफ़ेद बालोंवाला सिर झुकाया। कुतूज़ोव के पीछे बेनिगसेन और अमले के अफ़सर थे। सेनापति की उपस्थिति के बावजूद, जिन्होंने सभी ऊंचे अफ़सरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था, जन-सैनिक तथा सैनिक उनकी तरफ़ देखे बिना ही अपनी प्रार्थना करते जा रहे थे।

प्रार्थना समाप्त होने पर कुतूज़ोव मां मरियम की प्रतिमा के पास गये, बड़ी मुश्किल से घुटनों के बल हुए, उन्होंने ज़मीन पर माथा टेका और बहुत कोशिश करने के बावजूद अपने बोझ तथा कमज़ोरी के कारण देर तक उठ नहीं पाये। उठने की कोशिश करते वक़्त सफ़ेद बालोंवाला उनका सिर हिलता रहा। आख़िर वह उठे और बालकों जैसे भोलेपन से अपने होंठों को आगे बढ़ाकर उन्होंने प्रतिमा को चूमा, फिर हाथ से ज़मीन छूकर झुके। दूसरे जनरलों ने उनका अनुकरण किया; उनके बाद फ़ौजी अफ़सरों ने तथा उनके पश्चात एक-दूसरे को धकियाते, एक-दूसरे के पांव दबाते, हांफते और रेल-पेल करते, भावना-विह्वल चेहरोंवाले सैनिक और जन-सैनिक प्रतिमा के पास आने लगे।

२२

लोंगों की रेल-पेल में फंसकर लड़खड़ाता हुआ प्येर अपने इर्द-गिर्द देख रहा था।

"काउंट, प्योत्र किरील्लिच! आप यहां कैसे आ गये?" किसी की आवाज़ सुनायी दी। प्येर ने उस तरफ़ देखा।

बोरीस द्रुबेत्स्कोई हाथ से घुटनों को साफ़ करते हुए जिनपर (सम्भवतः दूसरों की भांति प्रतिमा के सामने झुकने के कारण) मिट्टी लग गयी थी, मुस्कराता हुआ प्येर के पास आया। वह युद्ध-अभियान की हल्की-सी झलक देनेवाले, किन्तु ठाठदार कपड़े पहने था। उसने लम्बा फ़ॉक-कोट पहन रखा था और कुतूज़ोव की भांति उसके कंधे पर भी चाबुक लटक रहा था।

इसी बीच कुतूज़ोव गांव में पहुंचकर निकटतम घर की छाया में बेंच पर बैठ गये जिसे एक कज़्ज़ाक भागकर उठा लाया था और एक अन्य कज़्ज़ाक ने जिसपर छोटी-सी दरी बिछा दी थी। बहुत बड़ा और शानदार अमला सेनापति को घेरे हुए था।

मां मरियम की प्रतिमा को लोग आगे ले चले और भीड़ उसके पीछे-पीछे चल दी। बोरीस से बातचीत करते हुए प्येर कुतूज़ोव से कोई तीस क़दम की दूरी पर रुक गया।

प्येर ने बोरीस से लड़ाई के वक़्त उपस्थित रहने और सेना की व्यूह-रचना देखने के अपने इरादे की चर्चा की।

"तो आप ऐसा कीजिये," बोरीस ने कहा। "हमारे कैम्प में चलिये। उस जगह से ही, जहां काउंट बेनिगसेन होंगे, आप सब कुछ बहुत अच्छी तरह से देख सकेंगे। मैं तो उन्हीं के अधीन काम कर रहा हूं। मैं उनसे आपके बारे में ज़िक्र कर दूंगा। अगर सेना की व्यूह-रचना देखना चाहते हैं तो हमारे साथ चलिये – हम अभी बायें पहलू की तरफ़ जा रहे हैं। इसके बाद लौटेंगे और तब कृपा करके रात मेरे साथ बितायें। ताश की बाज़ियां खेलने की भी व्यवस्था कर लेंगे। द्मीत्री सेर्गेईच से तो आप परिचित ही हैं? वह वहां ठहरा हुआ है," बोरीस ने गोर्कि में तीसरे घर की तरफ़ इशारा किया।

"किन्तु मैं तो मोरचेबन्दी का दायां पहलू देखना चाहता हूं। सुनने में आया है कि वह बहुत मज़बूत है," प्येर ने कहा। "मैं तो मास्को

नदी से आरम्भ करके पूरी व्यूह-रचना का चक्कर लगाना चाहता हूं।"

"यह तो आप बाद में कर सकते हैं, मुख्य चीज़ तो बायां पहलू है..."

"हां, हां। प्रिंस बोल्कोन्स्की की रेजिमेंट कहां है? आप मुझे वह दिखा सकते हैं?" प्येर ने पूछा।

"प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की की रेजिमेंट? हम उसके पास से गुज़रेंगे, मैं आपको उसके पास पहुंचा दूंगा।"

"व्यूह-रचना के बायें पहलू में क्या ख़ास बात है?" प्येर ने जानना चाहा।

"आपसे सच-सच कहूं, लेकिन यह बात हम दोनों के बीच ही रहनी चाहिये, भगवान ही जानते हैं कि हमारा बायां पहलू किस हालत में है," बोरीस ने प्येर को मानो राज़दान बनाते और अपनी आवाज़ को धीमा करते हुए कहा, "काउंट बेनिगसेन ने तो इसकी बिल्कुल दूसरी ही कल्पना की थी। वह तो उस टीले की बिल्कुल दूसरे ही रूप में मोरचाबन्दी करना चाहते थे... लेकिन," बोरीस ने कंधे झटके। "महामान्य ने नहीं चाहा या फिर किसी ने उनको ऐसी पट्टी पढ़ा दी। बात यह है..." बोरीस ने अपनी बात पूरी नहीं की, क्योंकि इसी वक़्त कुतूज़ोव का एडजुटेंट काइसारोव प्येर के पास आ गया था। "अरे! पाईसी सेर्गेईच," बोरीस ने खुलकर मुस्कराते हुए काइसारोव को सम्बोधित किया। "मैं तो काउंट को हमारी व्यूह-रचना स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा हूं। महामान्य ने फ़्रांसीसियों के इरादों का इतनी अच्छी तरह से अनुमान लगा लिया है, यह सोचकर हैरानी होती है!"

"आपका अभिप्राय बायें पहलू से है?" काइसारोव ने पूछा।

"हां, हां, उसी से। हमारा बायां पहलू अब बहुत ही मज़बूत है।"

इस चीज़ के बावजूद कि कुतूज़ोव ने सभी फ़ालतू लोगों को मुख्य सैनिक कार्यालय से निकाल दिया था, बोरीस फिर भी मुख्य कार्यालय में बना रहा। वह काउंट बेनिगसेन का एडजुटेंट बन गया था। उन सभी लोगों की भांति, जिनके अधीन बोरीस ने काम किया, काउंट

बेनिगसेन भी जवान प्रिंस द्रुबेत्स्कोई को बहुत काम का आदमी मानता था।

रूसी सेना के उच्चतम संचालन-क्षेत्र में स्पष्ट और बिल्कुल साफ़ नज़र आनेवाले दो दल थे – एक दल सेनापति कुतूज़ोव का था और दूसरा मुख्य सैनिक कार्यालय के संचालक बेनिगसेन का। बोरीस दूसरे दल में था। शब्दों में कुतूज़ोव के प्रति चापलूसी भरा आदर प्रकट करने के साथ-साथ कोई भी उसकी तरह दूसरों को इस बात का एहसास नहीं करवा सकता था कि बुज़ुर्ग कुतूज़ोव तो किसी काम के आदमी नहीं हैं और सब कुछ बेनिगसेन ही करता है। अब लड़ाई का ऐसा निर्णायक क्षण आ गया था जो या तो कुतूज़ोव के महत्त्व को पूर्णतः समाप्त करके बेनिगसेन के हाथ में पूरी सत्ता दे सकता था या फिर कुतूज़ोव के लड़ाई जीत जाने पर भी लोगों को ऐसा महसूस करवाया जा सके कि सब कुछ बेनिगसेन ने ही किया है। कम से कम इतना तो निश्चित था कि अगले दिन के लिये बड़े पुरस्कार दिये जानेवाले थे और नये लोगों की पदोन्नति होनेवाली थी। इसीलिये बोरीस आज दिन भर खीझ भरे उत्साह की मनःस्थिति में रहा था।

काइसारोव के बाद प्येर के अन्य परिचित उससे मिलने आते रहे और वह मास्को के बारे में उनके द्वारा पूछे गये ढेरों प्रश्नों के बड़ी मुश्किल से ही उत्तर दे पाता था और जो कुछ वे ख़ुद बताना चाहते थे, उसे सुन पाता था। सभी के चेहरों पर उत्साह और चिन्ता की झलक थी। किन्तु प्येर को ऐसा प्रतीत हुआ कि इनमें से कुछ लोगों के चेहरों पर झलकनेवाली उत्तेजना का मुख्य कारण तो उनकी अपनी सफलता के प्रश्नों से सम्बन्धित था और उसके दिमाग़ से उत्तेजना की वह दूसरी अभिव्यक्ति नहीं निकल पा रही थी जो उसने कुछ अन्य चेहरों पर देखी थी तथा जो व्यक्तिगत प्रश्नों को नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के सामान्य प्रश्नों को इंगित करती थी। प्येर और उसके गिर्द जमा लोगों की तरफ़ कुतूज़ोव का ध्यान गया।

"उसे मेरे पास बुला लाइये," कुतूज़ोव ने कहा। एडजुटेंट ने प्येर के सामने महामान्य की यह इच्छा व्यक्त की और प्येर उस बेंच की तरफ़ चल दिया जहां कुतूज़ोव बैठे थे। किन्तु उसके पहुंचने से पहले ही एक साधारण जन-सैनिक कुतूज़ोव के पास पहुंच गया था। यह दोलोख़ोव था।

"यह यहां कैसे आ गया?" प्येर ने पूछा।

"यह ऐसा शैतान है कि कहीं भी पहुंच सकता है!" प्येर को उत्तर मिला। "बात यह है कि इसे पदच्युत कर दिया गया है। अब इसे किसी तरह से फिर ऊपर उठना है। इसने अपनी कुछ योजनायें पेश की हैं और यह रात के वक़्त रेंगता हुआ दुश्मन की क़तारों में जा घुसा था... हां, आदमी बड़ा दिलेर है!.."

प्येर ने टोप उतारकर कुतूज़ोव के सामने आदरपूर्वक सिर झुकाया।

"मैंने सोचा कि अगर मैं आप महामान्य के सम्मुख अपनी योजना प्रस्तुत कर देता हूं तो आप या तो मुझे खदेड़ देंगे या यह कह देंगे कि मेरी इस योजना को आप पहले ही जानते हैं। ऐसा होने पर भी मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा..." दोलोख़ोव ने कहा।

"ठीक है, ठीक है।"

"लेकिन अगर मेरी योजना सही है तो इससे मातृभूमि का भला होगा जिसके लिये मैं अपनी जान भी देने को तैयार हूं।"

"ठीक है... ठीक है..."

"अगर हुज़ूर को किसी ऐसे आदमी की ज़रूरत महसूस हो जो अपनी जान पर खेलने को तैयार हो तो आप मुझे याद फ़रमा सकते हैं... शायद मैं आप हुज़ूर के किसी काम आ सकूं।"

"ठीक है... ठीक है..." कुतूज़ोव ने मानो हंसती और सिकोड़ी हुई आंख से प्येर की ओर देखते हुए उक्त शब्दों को दोहराया।

इसी वक़्त बोरीस दरबारी व्यक्ति के अनुरूप चतुराई से प्येर और कुतूज़ोव के क़रीब आ गया तथा बहुत स्वाभाविक और धीमी आवाज़ में तथा मानो पहले से चल रही किसी बात को जारी रखते हुए प्येर से बोला:

"जन-सैनिकों ने तो अभी से साफ़-सुथरे और सफ़ेद कुरते पहन लिये हैं ताकि मरने के लिये तैयार हो जायें। कैसी मर्दानगी है यह, काउंट!"

बोरीस ने सम्भवतः इसलिये प्येर से यह कहा कि महामान्य उसकी बात सुन लें। वह जानता था कि कुतूज़ोव उसके शब्दों की ओर ध्यान देंगे और वास्तव में ही महामान्य ने उसे सम्बोधित करते हुए पूछा:

"तुम जन-सैनिकों के बारे में क्या कह रहे हो?"

"महामान्य जी, उन्होंने कल के दिन, मरने के लिये तैयार होते

हुए सफ़ेद कुरते पहन लिये हैं।"

"ओह!.. बड़े अद्भुत, बहुत कमाल के लोग हैं!" कुतूज़ोव ने कहा और आंखें मूंदकर सिर हिलाया। "कमाल के लोग हैं!" उन्होंने आह भरते हुए अपने शब्दों को दोहराया।

"तो आप बारूद सूंघना चाहते हैं?" उन्होंने प्येर से कहा। "हां, बड़ी प्यारी गन्ध है उसकी। मुझे आपकी पत्नी का प्रशंसक होने का सम्मान प्राप्त है, वह ठीक-ठाक है न? मेरा कैम्प आपकी सेवा में प्रस्तुत है।" और जैसाकि बूढ़े लोगों के साथ अक्सर होता है, कुतूज़ोव खोये-खोये से इधर-उधर देखने लगे मानो वह सब भूल गये हों जो वह कहना या करना चाहते हों।

सम्भवतः वह याद आने पर, जो वह याद करना चाहते थे, उन्होंने अपने एडजुटेंट के भाई अन्द्रेई सेर्गेईच काइसारोव को हाथ के इशारे से अपने क़रीब बुलाया।

"कैसे है, कैसे है, वह मारिन की कविता? क्या लिखा है उसने गेराकोव के बारे में – 'बनोगे कोर में अध्यापक...' ज़रा सुनाओ तो, सुनाओ तो,"* कुतूज़ोव ने स्पष्टतः हंसने के लिये तैयार होते हुए कहा। काइसारोव कविता सुनाने लगा... कुतूज़ोव मुस्कराते हुए कविता की लय के साथ सिर हिलाते रहे।

प्येर जब कुतूज़ोव से दूर हटा तो दोलोख़ोव ने उसके पास आकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"आपसे यहां मिलकर बहुत ख़ुशी हुई, काउंट," उसने पराये लोगों की उपस्थिति से किसी प्रकार की झेंप न अनुभव करते हुए विशेष दृढ़ता और समारोही ढंग से ऊंची आवाज़ में कहा। "ऐसे दिन की पूर्ववेला में, जब भगवान ही जानते हैं कि हममें से किसके भाग्य में ज़िन्दा रहना लिखा है, मुझे आपसे यह कहने का अवसर पाकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मुझे उन ग़लतफ़हमियों के लिये बहुत अफ़सोस है जो कभी हमारे बीच हो गयी थीं और मैं यह चाहता हूं कि आप अपने दिल में मेरे ख़िलाफ़ किसी तरह का कोई मैल न रखें। आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मुझे क्षमा कर दें।"

---

* अलेक्सान्द्र प्रथम का सहायक मारिन अपनी व्यंग्यात्मक कविताओं के लिये प्रसिद्ध था। उसने 'गेराकोव के बारे में' कविता रची थी। गेराकोव – कैडेट कोर में इतिहास का अध्यापक तथा मामूली लेखक था। – सं०

प्येर मुस्कराते हुए दोलोख़ोव की ओर देख रहा था और समझ नहीं पा रहा था कि जवाब में क्या कहे। दोलोख़ोव ने, जिसकी आंखें छलछला आयी थीं, प्येर को गले लगाया और चूमा।

बोरीस ने अपने जनरल से कुछ कहा और काउंट बेनिगसेन ने प्येर से प्रस्ताव किया कि वह उसके साथ मोरचेबन्दी का चक्कर लगाने चले।

"आपके लिये यह दिलचस्प होगा," काउंट बेनिगसेन बोला।

"हां, बहुत दिलचस्प होगा," प्येर ने जवाब दिया।

आध घण्टे बाद कुतूज़ोव तातारिनोवा गांव चले गये और बेनिगसेन अपने अमले और प्येर को साथ लेकर मोरचेबन्दी का चक्कर लगाने चला गया।

२३

गोर्कि से बड़े मार्ग पर बढ़ते हुए बेनिगसेन उस पुल की तरफ़ नीचे उतर चला जिसकी ओर फ़ौजी अफ़सर ने टीले पर से इशारा करके प्येर को यह बताया था कि वहां मोरचेबन्दी का मध्य भाग है तथा जहां तट के क़रीब कटी हुई और सुगन्धित घास के कुछ ढेर लगे थे। पुल लांघकर ये सब बोरोदिनो में से गुज़रे, वहां से बायें को मुड़ गये तथा बहुत बड़ी संख्या में सेना तथा तोपों के पास से अपने घोड़ों को बढ़ाते हुए उस ऊंचे टीले पर पहुंच गये जहां जन-सैनिक ज़मीन खोद रहे थे। यह वह मोरचाबन्दी थी जिसका अभी तक नामकरण नहीं हुआ था और जो बाद में रायेव्स्की की मोरचेबन्दी या टीले का तोप-ख़ाना कहलाया।

प्येर ने इस मोरचेबन्दी की तरफ़ कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया। वह यह नहीं जानता था कि बोरोदिनो मैदान की सभी जगहों में से यही उसके लिये सर्वाधिक स्मरणीय हो जायेगी। इसके बाद खड्ड के पार अपने घोड़े बढ़ाते हुए ये सभी सेम्योनोव्स्कोये की तरफ़ चले गये जहां सैनिक अलाव जलाने के लिये झोंपड़ों और खत्तियों के अन्तिम लट्ठे-शहतीर ला रहे थे। इसके बाद वे पहाड़ी से नीचे उतरते तथा

ऊपर चढ़ते बुरी तरह से रौंदे-कुचले कूटू के एक ऐसे खेत में से गुज़रकर, जिसे मानो ओलों ने तबाह कर डाला हो, जुते खेतों में तोपचियों द्वारा बनाये गये नये रास्ते पर बढ़ते हुए अधिक कोणवाली उस मोरचेबन्दी पर पहुंचे जहां अभी खुदाई हो रही थी।

बेनिगसेन ने अधिक कोणवाली इस मोरचेबन्दी पर घोड़ा रोक लिया और अपने सामने शेवार्दिनो मोरचेबन्दी (जो पिछले दिन तक हमारी थी) की तरफ़ देखने लगा जिसपर कुछ घुड़सवार नज़र आ रहे थे। फ़ौजी अफ़सरों का कहना था कि वहां नेपोलियन या म्युराट था। सभी लोग बड़ी उत्सुकता से घुड़सवारों के इस दल को देख रहे थे। प्येर भी यह अनुमान लगाने की कोशिश करते हुए कि कुछ-कुछ नज़र आनेवाले लोगों में कौन-सा नेपोलियन है, उधर ही देख रहा था। आख़िर घुड़सवार टीले से नीचे उतरकर ओझल हो गये।

बेनिगसेन अपने पास आनेवाले एक जनरल को हमारी सेनाओं की पूरी स्थिति स्पष्ट करने लगा। प्येर दिमाग़ पर पूरा ज़ोर डालते हुए अगले दिन होनेवाली लड़ाई का सार समझ पाने के लिये बेनिगसेन के शब्दों को सुन रहा था, किन्तु उसे इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि उसकी बुद्धि यह सब समझ पाने में असमर्थ थी। कुछ भी उसके पल्ले नहीं पड़ रहा था। बेनिगसेन ने अपनी बात ख़त्म की और बहुत ध्यान से अपने शब्दों को सुन रहे प्येर की ओर नज़र जाने पर अचानक उसे सम्बोधित करते हुए बोला:

"मेरे ख़्याल में आपको तो यह चर्चा दिलचस्प नहीं लग रही होगी?"

"अजी नहीं, इसके विपरीत, बहुत ही दिलचस्प लग रही है," प्येर ने झूठ बोल दिया।

अधिक कोणवाली मोरचेबन्दी से ये लोग कुछ और अधिक बायीं ओर उस रास्ते पर बढ़ चले जो घने, कम ऊंचे भोज-वृक्षोंवाले जंगल में से बल खाता हुआ जाता था। आधा जंगल पार करने के बाद सफ़ेद टांगोंवाला एक भूरा ख़रगोश फुदककर रास्ते पर आ गया और बहुत-से घोड़ों की टापों से डरकर तथा यह न समझ पाते हुए कि किधर जाये, इनके सामने देर तक फुदकता, अपनी ओर सबका ध्यान आकर्षित करता और सबको हंसाता रहा। कुछ लोगों के मिलकर शोर मचाने पर ही वह एक तरफ़ को लपका और जंगल में ग़ायब हो गया। इस

वन में कोई दो किलोमीटर से कुछ अधिक दूर जाने पर वे उस वन-प्रांगण में पहुंचे जहां तुच्कोव की अनीकिनी तैनात थी जिसे बायें पहलू की रक्षा करनी थी।

यहां, बायें पहलू के बिल्कुल सिरे पर बेनिगसेन ने बड़े जोश से तथा बहुत कुछ कहा और, जैसाकि प्येर को प्रतीत हुआ, फ़ौज की तैनाती के बारे में बहुत ही महत्त्वपूर्ण कोई आदेश भी दिया। तुच्कोव की सेना जहां तैनात थी, उसके सामने एक ऊंची जगह थी। यहां फ़ौज नहीं थी। बेनिगसेन ने बहुत ऊंची आवाज़ में यह कहते हुए इस ग़लती की आलोचना की कि इस सारे क्षेत्र की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण इस जगह पर सेना को तैनात न करके उसे उसके नीचे तैनात करना पागलपन है। कुछ अन्य जनरलों ने भी ऐसा ही मत प्रकट किया। उनमें से एक ने तो सैनिक के अनुरूप गर्ममिज़ाजी से यह तक कह दिया कि उन्हें गले कटवाने के लिये यहां तैनात किया गया है। बेनिगसेन ने अपने ऊपर सारी ज़िम्मेदारी लेते हुए इस सेना को ऊंची जगह पर तैनात करने का हुक्म दे दिया।

बायें पहलू की इस सेना-तैनाती के बारे में इस हुक्म ने प्येर के दिल में इस बारे में और भी अधिक सन्देह पैदा कर दिया कि वह फ़ौजी मामलों को समझने में समर्थ है। टीले के दामन में सेना की तैनाती के सम्बन्ध में बेनिगसेन तथा दूसरे जनरलों की टीका-टिप्पणी सुनते हुए प्येर उनके विचारों को अच्छी तरह समझ गया और उसने उन्हें स्वीकार भी कर लिया। किन्तु इसी कारण वह यह भी नहीं समझ पाया कि जिस व्यक्ति ने इस फ़ौज को टीले के दामन में तैनात किया था, उसने ऐसी स्पष्ट और भद्दी भूल कैसे की थी।

प्येर यह नहीं जानता था कि इन सेनाओं को इस स्थान की रक्षा के लिये यहां तैनात नहीं किया गया था, जैसाकि बेनिगसेन समझता था, बल्कि गुप्त जगह पर घात में रहने के लिये यानी इस उद्देश्य से तैनात किया गया था कि वे दिखाई न दें और शत्रु के नज़दीक आने पर अचानक उसपर टूट पड़ें। बेनिगसेन को यह मालूम नहीं था और सेनापति से कुछ भी कहे बिना उसने अपने निर्णय के अनुसार इन सेनाओं को आगे भेज दिया।

२५ अगस्त की इस सुहानी शाम को प्रिंस अन्द्रेई क्न्याज़्कोवो गांव में अपनी रेजिमेंट की व्यूह-रचना के छोर पर एक टूटे-फूटे सायबान में कोहनी का सहारा लिये हुए लेटा था। टूटी हुई दीवार के सूराख़ में से उसे बाड़ के साथ-साथ तीस वर्षीय ऐसे भोज-वृक्षों की एक पट्टी दिखाई दे रही थी जिनकी नीचेवाली शाखायें कटी हुई थीं, एक खेत नज़र आ रहा था जिसमें जहां-तहां जई के ढेर लगे थे और कुछ झाड़ियां दिख रही थीं जिनके पास से अलावों – सैनिकों के तथाकथित रसोईघरों – का धुआं ऊपर उठ रहा था।

प्रिंस अन्द्रेई को अपनी ज़िन्दगी अब चाहे कितनी ही संकुचित, बोझल और ऐसी प्रतीत होती थी जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं थी, फिर भी वह सात वर्ष पहले, आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई की पूर्ववेला की भांति बड़ी बेचैनी तथा चिड़चिड़ापन महसूस कर रहा था।

उसे अगले दिन की लड़ाई के आदेश मिल चुके थे और उसने वे आदेश आगे भेज दिये थे। उसके करने के लिये अब और कुछ नहीं था। किन्तु बहुत ही साधारण, स्पष्ट विचार – और इसीलिये भयानक विचार – उसे चैन नहीं लेने दे रहे थे। वह जानता था कि अगले दिन की लड़ाई उन सभी लड़ाइयों से, जिनमें उसने हिस्सा लिया था भयानक होनेवाली थी और उसके जीवन में मृत्यु की सम्भावना का विचार उसके सामान्य सांसारिक जीवन और इस बात से सम्बन्धित न होकर कि उसकी मृत्यु का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, बल्कि केवल उसी से, उसकी आत्मा से जुड़कर इतनी सरलता, विकरालता और स्पष्टता से उसके सामने आया कि वह उसे लगभग एक कठोर यथार्थ ही प्रतीत हुआ। इस दृश्य की ऊंचाई से वह सभी कुछ, जो पहले उसे व्यथित करता था, उसके मन पर छाया रहता था, अचानक छायाओं के बिना, किसी तरह की सम्भावनाओं और रूपरेखाओं की विशिष्टता के बिना उजले प्रकाश से चमक उठा। उसे अपना पूरा जीवन ही चित्र-क्षेपी लालटेन-सा लगा जिसे वह बहुत अरसे से तथा कृत्रिम प्रकाश की सहायता से एक शीशे में से देखता रहा था। अब सहसा उसने इन भद्दे ढंग से चित्रित तस्वीरों को शीशे के बिना दिन की तेज़ रोशनी में देख लिया था। "हां, हां, ये रहे वे मुझे विह्वल और मुग्ध तथा

व्यथित करनेवाले झूठे बिम्ब," उसने अपने जीवन की चित्रक्षेपी लालटेन की मुख्य तस्वीरों को अपने मानस-पट पर उभारते तथा अब उन्हें मृत्यु के बारे में स्पष्ट विचार-सम्बन्धी दिन के उजले प्रकाश में देखते हुए अपने आपसे कहा। "ये रही वे भोंडी तस्वीरें जो कभी मुझे बहुत सुन्दर और रहस्यमयी लगती थीं। यश-कीर्ति, सामाजिक कल्याण, नारी के प्रति प्रेम, स्वयं मातृभूमि – ये तस्वीरें मुझे कितनी महान प्रतीत हुई थीं, कितने गहन अर्थ से ओत-प्रोत लगी थीं! और यह सब कुछ उस सुबह के सफ़ेद प्रकाश में, जो मैं अनुभव करता हूं कि मेरे सामने आनेवाली है, कितना सरल, फीका और भद्दा लग रहा है।" उसके जीवन की तीन मुख्य वेदनाओं पर विशेष रूप से उसका ध्यान केन्द्रित होकर रह गया। नारी के प्रति उसका प्रेम, पिता की मृत्यु और फ़्रांसीसियों का आक्रमण जिन्होंने आधे रूस पर क़ब्ज़ा कर लिया था। "प्रेम! वह छोकरी, जो मुझे रहस्यपूर्ण शक्तियों से परिपूर्ण प्रतीत हुई थी। कितना प्यार करता था मैं उसे! मैंने प्रेम के, उसके साथ सौभाग्यशाली जीवन के सपने संजोये। ओह, कैसे भोले हो तुम!" उसने झल्लाते हुए अपने आपसे ऊंचे-ऊंचे कहा। "क्या ख़ूब हूं मैं भी! मैं किसी ऐसे आदर्श प्रेम में विश्वास करता था जिसे मेरी साल भर की अनुपस्थिति में उसे मेरे प्रति वफ़ादार बनाये रखना था! क़िस्से-कहानी की भावुक कबूतरी की तरह उसे मेरी जुदाई में तड़पते रहना चाहिये था। लेकिन यह सब कुछ कितना सीधा-सादा है... यह सब कुछ भयानक रूप से सरल, घिनौना है!

"और मेरे पिता जी – उन्होंने लीसिये गोरि में निर्माण किया और सोचा कि यह उनकी अपनी जगह है, उनकी धरती, उनकी हवा है, उनके अपने किसान हैं। लेकिन नेपोलियन आया और उसने उनके अस्तित्व को जानने की परवाह किये बिना उन्हें रास्ते में पड़े हुए लकड़ी के एक टुकड़े की तरह उठाकर एक तरफ़ फेंक दिया तथा उनकी लीसिये गोरि की जागीर और पूरी ज़िन्दगी ही खण्ड-खण्ड होकर रह गयी। प्रिंसेस मरीया का कहना है कि यह तो भगवान परीक्षा ले रहे हैं। जब वह इस दुनिया में रहे ही नहीं और अब कभी नहीं होंगे तो किसलिये परीक्षा ली जा रही है? वह तो अब कभी नहीं लौटेंगे! वह तो यहां रहे ही नहीं! तो फिर किसकी परीक्षा ली जा रही है? मातृभूमि, मास्को की तबाही! और कल मेरी हत्या कर दी जायेगी

सो भी कोई फ़्रांसीसी नहीं, बल्कि कोई अपना रूसी सैनिक ही ऐसा कर डाले जैसे कि कल एक सैनिक ने मेरे कान के पास से गोली छोड़ी थी। फ़्रांसीसी आयेंगे, मेरी लाश को टांगों और सिर से पकड़कर किसी गड्ढे में फेंक देंगे ताकि मैं उनके नज़दीक बदबू न फैलाता रहूं। जीवन की नयी परिस्थितियां बन जायेंगी जो दूसरों के लिये इसी प्रकार सामान्य-स्वाभाविक होंगी, किन्तु मैं उनके बारे में नहीं जान सकूंगा, मैं इस दुनिया में नहीं हूंगा।"

प्रिंस अन्द्रेई ने गतिहीन हरे-पीले पत्तों और सफ़ेद छालवाले तथा धूप में चमकते भोज-वृक्षों की पट्टी पर नज़र डाली। "शायद मैं मर जाऊं, कल मारा जाऊं, ज़िन्दा न रहूं... सब कुछ तो रहे, मगर मैं इस दुनिया में न रहूं..." उसने इस दुनिया में अपनी अनुपस्थिति की सजीव कल्पना की। प्रकाश और छाया के साथ भोज-वृक्षों, घुंघराले बादलों तथा अलावों के धुएं – इर्द-गिर्द की सभी चीज़ों ने उसके लिये भयानक और दहशत पैदा करनेवाला रूप धारण कर लिया। उसे अपनी पीठ पर झुरझुरी-सी महसूस हुई। वह झटपट उठकर खड़ा हुआ, सायबान से बाहर निकला और इधर-उधर आने-जाने लगा।

सायबान के पीछे उसे कुछ आवाज़ें सुनायी दीं।

"कौन है?" प्रिंस अन्द्रेई ने पुकारकर पूछा।

लाल नाकवाला कप्तान तिमोख़िन, जो पहले दोलोख़ोव का कम्पनी-कमांडर था और अफ़सरों की कमी के कारण अब बटालियन-कमांडर बन गया था, सहमा-सहमा-सा सायबान में दाख़िल हुआ। उसके पीछे-पीछे एडजुटेंट और रेजिमेंट का ख़ज़ांची भी आया।

प्रिंस अन्द्रेई जल्दी से उठा, फ़ौजी मामलों के बारे में अफ़सरों को उससे जो कुछ कहना था, वह सुना, उन्हें कुछ अन्य आदेश दिये और वह उनसे जाने को कहने ही वाला था, जब उसने सायबान के बाहर से एक परिचित और ज़रा तुतलाती-सी आवाज़ सुनी।

"ओह, बुरा हो शैतान का!" किसी चीज़ से ठोकर खा जानेवाले व्यक्ति ने कहा।

सायबान से बाहर देखने पर प्रिंस अन्द्रेई को प्येर अपने नज़दीक आता दिखाई दिया जो रास्ते में पड़े डंडे से ठोकर खा गया था और गिरते-गिरते बचा था। प्रिंस अन्द्रेई अपने सामाजिक हलक़े के लोगों और प्येर से तो ख़ास तौर पर नहीं मिलना चाहता था, क्योंकि वह

उसे उसके जीवन के उन दुखद क्षणों की याद दिला देता था जिनकी उसे मास्को की अपनी अन्तिम यात्रा के समय अनुभूति हुई थी।

"अरे, वाह!" उसने कहा। "तुम्हारा यहां कैसे आना हुआ? मैंने इसकी तो आशा ही नहीं की थी।"

जब वह यह कह रहा था तो उसकी आंखों में और चेहरे पर केवल रुखाई का ही नहीं, बल्कि शत्रुता का भाव था जिसकी ओर प्येर का फ़ौरन ध्यान गया। प्येर बहुत ही उत्साह-उमंग से सायबान के क़रीब आया था, किन्तु अन्द्रेई के चेहरे का भाव देखकर उसे परेशानी और अटपटापन-सा महसूस हुआ।

"मैं इसलिये आया हूं... मेरा मतलब... इसलिये आया हूं... कि मेरे लिये यह दिलचस्प है," प्येर ने इस दिन कई बार कहे गये इस बेमानी "दिलचस्प" शब्द को फिर से दोहरा दिया। "मैं लड़ाई देखना चाहता था।"

"हां, हां, लेकिन फ़्री मेसन-बन्धुओं का लड़ाई के बारे में क्या कहना है? वे इसे कैसे रोक सकते हैं?" प्रिंस अन्द्रेई ने उपहासजनक लहजे में पूछा। "मास्को का क्या हाल-चाल है? मेरे लोग कैसे हैं? आख़िर तो वे मास्को पहुंच गये?" उसने गम्भीरता से पूछा।

"हां, पहुंच गये। यूलिया द्रुबेत्स्काया ने मुझे यह बताया था। मैं उनसे मिलने गया था, मगर मिल नहीं सका। वे मास्को के क़रीब-वाली जागीर पर जा चुके थे।"

२५

अफ़सरों ने विदा लेकर जाना चाहा, किन्तु प्रिंस अन्द्रेई ने मानो अपने दोस्त के साथ अकेले न रहना चाहते हुए यह प्रस्ताव किया कि वे चाय पीने के लिये रुक जायें। बेंचों और चाय की व्यवस्था की गयी। फ़ौजी अफ़सर प्येर के लम्बे-तड़ंगे और भारी-भरकम डील-डौल को जिज्ञासा से देख तथा मास्को और हमारी सेनाओं की तैनाती की स्थिति के बारे में, जिसे वह देख आया था, उसकी बातें सुन रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई मौन साधे था और उसका चेहरा इतना अप्रीतिकर था कि प्येर

उसे सम्बोधित करने के बजाय ख़ुशमिज़ाज बटालियन-कमांडर तिमोख़िन से ही ज़्यादा बातें कर रहा था।

"तो तुम हमारी सेनाओं की तैनाती की स्थिति को समझ गये?" प्रिंस अन्द्रेई ने प्येर को टोकते हुए पूछा।

"हां, लेकिन कैसे समझा हूं?" प्येर ने कहा। "एक ग़ैरफ़ौजी होने के नाते मैं यह नहीं कह सकता कि पूरी तरह से समझ गया हूं, मगर मोटे तौर पर उसकी स्थिति मेरी समझ में आ गयी है।"

"तो तुम अन्य सभी की तुलना में कहीं ज़्यादा जानते हो," प्रिंस अन्द्रेई ने फ़्रांसीसी में कहा।

"ओह!" प्येर चकराते और चश्मे के शीशों में से प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखते हुए कह उठा। "कुतूज़ोव के सेनापति नियुक्त किये जाने के बारे में आपकी क्या राय है?" प्येर ने जानना चाहा।

"मुझे इस नियुक्ति से बहुत ख़ुशी हुई है। मैं तो बस, इतना ही कह सकता हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने उत्तर दिया।

"बार्कले डे टोल्ली के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है? मास्को में तो उसके बारे में तरह-तरह की बातें कही जा रही हैं। आप क्या सोचते हैं इस सिलसिले में?"

"इनसे पूछो," प्रिंस अन्द्रेई ने फ़ौजी अफ़सरों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

प्येर ने अपने होंठों पर कृपालुता और प्रश्नसूचक मुस्कान का वह अन्दाज़ लाते हुए, जिससे सभी अनचाहे ही तिमोख़िन को सम्बोधित करते थे, उसकी तरफ़ देखा।

"जनाब, महामान्य के नियुक्त होते ही प्रकाश के दर्शन हुए," तिमोख़िन ने अपने रेजिमेंट-कमांडर की तरफ़ लगातार देखते हुए भीरुता से उत्तर दिया।

"वह कैसे?" प्येर ने जानना चाहा।

"मैं सिर्फ़ चारे और ईंधन – इन दो चीज़ों की ही चर्चा करूंगा। जब हम स्वेन्त्स्यानी से पीछे हट रहे थे तो हमसे यह कहा गया कि ख़बरदार जो किसी ने टहनी या घास के एक तिनके को भी छुआ। हम तो वहां से पीछे हट रहे थे और इसलिये यह सब कुछ **उसी को** मिल जायेगा, ऐसी बात है न हुज़ूर?" उसने प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखते हुए कहा। "अगर हमने किसी चीज़ को छुआ भी हो तो हमारा

बुरा हो। इसी तरह के अपराध के लिये हमारी रेजिमेंट के दो अफ़सरों के ख़िलाफ़ फ़ौजी अदालत में मुक़दमा चला दिया गया। किन्तु जैसे ही महामान्य सेनापति बने, वैसे ही यह मामला बड़ा सीधा-सादा बन गया। प्रकाश के दर्शन हुए ..."

"किसलिये उसने ऐसा करने की मनाही की थी?"

यह न समझ पाते हुए कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दे, तिमोख़िन ने चकराकर इधर-उधर देखा। प्येर ने प्रिंस अन्द्रेई से भी यही सवाल किया।

"ताकि उस क्षेत्र को तबाह-बरबाद न कर डालें जो हम शत्रु के लिये छोड़ रहे थे," प्रिंस अन्द्रेई ने क्रोधपूर्ण तथा व्यंग्यात्मक ढंग से जवाब दिया। "यह बहुत बुनियादी उसूल है – किसी क्षेत्र को लूटने और सेना को लूट-मार करने का आदी नहीं होने देना चाहिये। स्मोलेन्स्क में भी उसने यह ठीक ही समझा था कि फ़्रांसीसी हमपर पीछे से हमला कर सकते हैं, क्योंकि उनकी सैनिक-संख्या हमसे अधिक है। किन्तु वह यह नहीं समझ सका," प्रिंस अन्द्रेई मानो अपनी आवाज़ को क़ाबू में न रख पाते हुए अचानक पतली-सी आवाज़ में चीख़ उठा, "किन्तु वह यह नहीं समझ सका कि वहां हमने रूसी धरती के लिये पहली बार डटकर मुक़ाबला किया था, कि हमारी फ़ौज में इतना जोश-ख़रोश था जितना मैंने पहले कभी नहीं देखा था, कि हमने लगातार दो दिन तक फ़्रांसीसियों को मुंहतोड़ जवाब दिया था और हमारी इस सफलता से हमारी शक्ति दस गुना बढ़ गयी थी। उसने पीछे हटने का आदेश दे दिया और हमारी सारी कोशिश और क़ुर्बानी बेकार चली गयी। हमारे साथ ग़द्दारी करने का उसका कोई इरादा नहीं था, उसने सब कुछ ज़्यादा से ज़्यादा अच्छी तरह करना चाहा, हर चीज़ पर पहले से सोच-विचार किया और इसीलिये वह हमारे काम का आदमी नहीं है। वह इसी कारण अब किसी काम का नहीं कि हर चीज़ के बारे में बहुत गहराई तथा ढंग से सोच-विचार करता है जैसाकि हर जर्मन को करना चाहिये। कैसे तुम्हें यह समझाऊं... मान लो कि तुम्हारे पिता का जर्मन नौकर है, बहुत ही अच्छा नौकर है तथा तुम्हारी तुलना में उनकी सभी ज़रूरतें ज़्यादा अच्छी तरह से पूरी करता है और इसलिये बेशक वही उनकी सेवा करता रहे। किन्तु यदि तुम्हारे पिता मृत्यु-शय्या पर हों तो तुम नौकर को धता बता दोगे और अपने

अनाड़ी, अकुशल हाथों से पिता की सेवा-सुश्रूषा करके दक्ष, किन्तु पराये हाथों की तुलना में उन्हें अधिक चैन दे सकोगे। बार्कले के साथ भी ऐसा ही किया गया है। रूस जब तक स्वस्थ था तो कोई विदेशी भी उसकी सेवा कर सकता था और वह अच्छा मन्त्री था, किन्तु रूस के ख़तरे में पड़ते ही किसी अपने, किसी रूसी व्यक्ति की ज़रूरत महसूस हुई और आपके क्लब में यह बात बना ली गयी कि बार्कले ग़द्दार है! वही लोग, जिन्होंने उसपर ग़द्दार होने का ठप्पा लगाया है, बाद में अपने इस झूठे आरोप से लज्जित होकर उसे अचानक हीरो या विभूति बना देंगे और यह उसके प्रति और भी ज़्यादा अन्याय होगा। वह ईमानदार और नियम तथा कर्त्तव्यनिष्ठ जर्मन है ..."

"लेकिन लोग यह भी कहते हैं कि वह बहुत योग्य जनरल है," प्येर ने कहा।

"योग्य जनरल किसे कहते हैं, यह मेरी समझ के बाहर की बात है," प्रिंस अन्द्रेई ने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया।

"योग्य जनरल," प्येर ने कहा, "वही, जो सभी सम्भावनाओं-संयोगों को पहले से देख ले ... शत्रु के विचारों का अनुमान लगा ले।"

"यह तो असम्भव है," प्रिंस अन्द्रेई ने ऐसे कहा मानो यह मामला तो बहुत पहले से तय हो चुका हो।

प्येर ने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा।

"फिर भी ऐसा कहा जाता है कि युद्ध शतरंज के खेल के समान है।"

"हां," प्रिंस अन्द्रेई ने उत्तर दिया, "किन्तु इसी छोटे से अन्तर के साथ कि शतरंज में हर चाल चलने से पहले तुम जितना भी चाहो, सोच सकते हो, उसमें तुम्हारे लिये समय की कोई बन्दिश नहीं होती। इसके अलावा यह फ़र्क़ भी होता है कि शतरंज में घोड़ा हमेशा प्यादे से ज़्यादा ताक़तवर होता है और दो प्यादे हमेशा एक से अधिक शक्तिशाली होते हैं। किन्तु युद्ध में एक बटालियन कभी-कभी डिवीज़न से ज़्यादा शक्तिशाली सिद्ध होती है और कभी कम्पनी से भी कमज़ोर। सेनाओं की सापेक्ष शक्ति कभी किसी को मालूम नहीं हो सकती। तुम मेरी बात का विश्वास करो," वह कहता गया, "कि अगर मुख्य सैनिक कार्यालय के संचालन पर कुछ भी निर्भर होता तो मैं वहीं काम करता रहता और हिदायतें देता, किन्तु इसके बजाय मुझे

यहां, रेजिमेंट में, इन महानुभावों के साथ काम करने का सम्मान प्राप्त है और मैं यह मानता हूं कि कल का दिन वास्तव में ही हमपर निर्भर करेगा, उनपर नहीं... युद्ध की सफलता न तो सेनाओं की तैनाती की स्थिति, न शस्त्रास्त्रों, यहां तक कि सैनिक-संख्या पर कभी निर्भर रही है और न आगे रहेगी और सेना की तैनाती की स्थिति पर तो सबसे कम ही।"

"तो किस चीज़ पर निर्भर करती है यह सफलता?"

"उस भावना पर जो मुझमें है, जो इसमें है," उसने तिमोख़िन की ओर संकेत किया, "जो हर सैनिक में है।"

प्रिंस अन्द्रेई ने तिमोख़िन की ओर देखा जो डरा-सहमा और हतप्रभ-सा अपने कमांडर की तरफ़ देख रहा था। अपने पहलेवाले संयत मौन की तुलना में प्रिंस अन्द्रेई अब विह्वल-सा प्रतीत हो रहा था। वह सम्भवतः उन विचारों को व्यक्त किये बिना नहीं रह सका था जो अप्रत्याशित ही उसके दिमाग़ में आ गये थे।

"लड़ाई वही जीतता है जो उसे जीतने का संकल्प कर लेता है। आउस्टेरलिट्ज़ के नज़दीक हमारी हार क्यों हुई थी? हमारी क्षति लगभग फ़्रांसीसियों के बराबर हुई थी, लेकिन हमने बहुत जल्द ही अपने से यह कह दिया कि हम लड़ाई हार गये – और सचमुच हार गये। हमने अपने आपसे इस कारण ऐसा कहा कि हमारे वहां लड़ने का कोई ध्येय नहीं था – हम जल्दी से जल्दी युद्ध-क्षेत्र से जाना चाहते थे। 'हार गये – तो आओ, भाग चलें!' और हम भाग चले। अगर हमने शाम तक ऐसा न कहा होता तो भगवान ही जानते हैं कि क्या हुआ होता। लेकिन कल हम यह नहीं कहेंगे। तुम हमारी सेना की व्यूह-रचना की बात करते हो, कहते हो कि हमारा बायां पहलू कमज़ोर है, दायां पहलू बहुत फैला हुआ है," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया, "यह सब बकवास है, ऐसा कुछ भी नहीं है। मगर वास्तव में कल क्या होने-वाला है? करोड़ों ऐसे संयोग सामने आयेंगे जिनका आन की आन में इस बात से निर्णय होगा कि वे भाग जाते हैं या हम भागने लगते हैं, कि इस या उस आदमी को मार डाला जाता है; और जो कुछ अब हो रहा है, वह तो मनबहलाव है। सचाई यह है कि जिनके साथ तुम हमारी सेना की तैनाती देखने गये थे, वे सामान्य घटना-चक्र में कोई अच्छा योग देने के बजाय उसमें बाधा डालते हैं। वे अपनी छोटी-छोटी

स्वार्थ-सिद्धियों में ही दिलचस्पी रखते हैं।"

"ऐसे क्षण में?" प्येर ने भर्त्सना के लहजे में कहा।.

"**ऐसे क्षण** में," प्रिंस अन्द्रेई ने इन शब्दों को दोहराया, "उनके लिये यह ऐसा क्षण है, जब वे अपने प्रतिद्वन्द्वी की जड़ों में पानी दे सकते हैं और एक अतिरिक्त तमग़ा या सम्मान-चिह्न हासिल कर सकते हैं। मेरे लिये कल के दिन का मतलब यह है – एक लाख रूसी और एक लाख फ़्रांसीसी सैनिक लड़ने की ख़ातिर एक-दूसरे के सामने आयेंगे और हक़ीक़त इतनी ही है कि ये दो लाख सैनिक लड़ेंगे। इनमें जो ज़्यादा बर्बरता से लड़ेंगे और अपने पर कम तरस खायेंगे – वे जीत जायेंगे। अगर तुम चाहो तो मैं तुमसे कह सकता हूं कि बेशक कुछ भी क्यों न हो, उच्चाधिकारी बेशक कैसा भी घुटाला क्यों न करें, कल की लड़ाई हम जीत लेंगे। बेशक कुछ भी क्यों न हो, कल की लड़ाई की जीत का सेहरा हमारे सिर पर बंधेगा!"

"यह बिल्कुल सही है, एकदम सच है, हुज़ूर," तिमोख़िन कह उठा। "अब अपने पर तरस खाने में क्या तुक है! आप यक़ीन करेंगे कि मेरी बटालियन के सैनिकों ने वोदका पीने से इन्कार कर दिया – कहने लगे कि यह वोदका पीने का दिन नहीं है।" सभी ख़ामोश हो गये।

फ़ौजी अफ़सर जाने के लिये उठकर खड़े हो गये। प्रिंस अन्द्रेई उनके साथ-साथ सायबान से बाहर आते हुए एडजुटेंट को आख़िरी आदेश-अनुदेश देता रहा। अफ़सरों के जाने के बाद प्येर प्रिंस अन्द्रेई के पास गया और वह बातचीत शुरू ही करनेवाला था कि सायबान से कुछ दूर तीन घोड़ों की टापें सुनायी दीं। उस दिशा में देखने पर प्रिंस अन्द्रेई ने रूसी सेना में काम करनेवाले जर्मन जनरलों – वोल्ज़ोगेन और क्लाउज़ेवित्स – को पहचान लिया जिनके साथ एक कज़्ज़ाक भी था। वे जर्मन में बातें करते हुए प्येर और अन्द्रेई के क़रीब से गुज़रे तथा इन दोनों जनरलों के ये वाक्य इन्हें बरबस सुनायी दे गये:

"लड़ाई को अधिक से अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैलाना चाहिये। इस दृष्टिकोण की जितनी अधिक प्रशंसा की जाये, कम है," एक ने कहा।

"हां, बिल्कुल ठीक है," दूसरे ने अनुमोदन किया। "चूंकि हमारा मक़सद दुश्मन को ज़्यादा से ज़्यादा थकाना और कमज़ोर करना है,

इसलिये अगर कुछ लोगों को व्यक्तिगत रूप से कुछ नुक़सान भी उठाना पड़े तो हमें उसकी तरफ़ ध्यान नहीं देना चाहिये।"

"बिल्कुल ध्यान नहीं देना चाहिये," पहली आवाज़ ने पुष्टि की।

"अधिक से अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैलाना चाहिये," इन दोनों जनरलों के आगे चले जाने पर प्रिंस अन्द्रेई ने ग़ुस्से से नाक फरफराते हुए उक्त शब्दों को दोहराया। "उसी अधिक से अधिक विस्तृत क्षेत्र में लीसिये गोरि की जागीर पर मेरे पिता जी थे, मेरा बेटा और मेरी बहन थी। उसे इसकी कोई परवाह नहीं। यही तो मैं तुमसे कह रहा था – ये महानुभाव कल लड़ाई जीतेंगे नहीं, बल्कि जहां तक सम्भव होगा, उसे गुड़-गोबर ही करेंगे। कारण कि उनके जर्मन दिमाग़ों में सिर्फ़ तर्क-वितर्क, केवल सैनिक सिद्धान्त ही भरे हैं जिनकी अंडे के छिलकों जितनी भी क़ीमत नहीं और उनके दिल में वह चीज़ नहीं हैं, जिसकी कल ज़रूरत है और जो तिमोख़िन के दिल में है। उन्होंने सारा यूरोप **उसे** दे दिया और हमें अक़्ल सिखाने यहां आ गये हैं – बेशक लाजवाब शिक्षक हैं ये!" वह फिर से चीख़ उठा।

"तो आपके मतानुसार कल की लड़ाई जीत ली जायेगी?" प्येर ने पूछा।

"हां, हां," अन्द्रेई ने बेख़्याली से जवाब दिया। "अगर मेरे लिये ऐसा करना मुमकिन होता तो एक काम मैं ज़रूर करता," वह फिर से अपने विचार प्रकट करने लगा, "मैं युद्ध-बन्दी न बनाता। जंगी क़ैदी बनाने में क्या तुक है? यह तो पुराने वक़्तों के सूरमाओं जैसी शान दिखाना है। फ़्रांसीसियों ने मेरा घर-बार नष्ट कर दिया और अब वे मास्को को मटियामेट करने जा रहे हैं, मेरा अपमान करते रहे और हर क्षण अपमान कर रहे हैं। वे मेरे शत्रु हैं और मेरी सारी धारणाओं के अनुसार अपराधी हैं। तिमोख़िन और पूरी सेना का भी यही विचार है। उन्हें मौत के घाट उतारना चाहिये। अगर वे मेरे दुश्मन हैं तो तिलज़ीत* में हुई बातों के बावजूद दोस्त नहीं हो सकते।

---

* यहां सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम और नेपोलियन के बीच जून १८०७ में तिलज़ीत में हुई बातचीत की ओर संकेत है जिसके अनुसार तिलज़ीत की शान्ति-सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये थे। – सं०

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक है," प्येर चमकती आंखों से प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखते हुए कह उठा, "मैं आपके साथ पूरी तरह, पूरी तरह सहमत हूं!"

वह प्रश्न, जो मोजाइस्काया पहाड़ी पर तथा दिन भर प्येर को परेशान करता रहा था, अब उसे सर्वथा स्पष्ट और हल हो चुका-सा प्रतीत हुआ। वह अब इस युद्ध और अगले दिन होनेवाली लड़ाई का पूरा सार और महत्त्व समझ गया था। इस पूरे दिन में उसने जो कुछ देखा था, उसे सैनिकों के चेहरों पर जिन अर्थपूर्ण तथा कठोर भावनाओं की झलक मिली थी, वे अब एक नयी ही रोशनी में उसके सामने आलोकित हो उठीं। उसने देशभक्ति की उस छिपी आग को अनुभव कर लिया था जो उन सभी लोगों के दिलों में थी जिनसे उसकी भेंट हुई थी और जो उसे यह स्पष्ट करती थी कि किस कारण ये सब लोग बड़े इतमीनान से, यहां तक कि ज़िन्दादिली से मरने को तैयार हो रहे थे।

"युद्ध-बन्दी न बनाये जायें," प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बात जारी रखी, "सिर्फ़ इतना कर देने से ही युद्ध का पूरा रूप बदल जायेगा और वह कम क्रूर हो जायेगा। नहीं तो हम युद्ध का खेल ही खेलते रहे हैं – यही बेहूदा बात है, हम दरियादिली दिखाते हैं, आदि, आदि। हमारी यह उदारता और संवेदनशीलता उस रईसज़ादी की उदारता तथा संवेदनशीलता के समान है जो बछड़े की हत्या होते देखकर बेहोश हो जाती है; वह इतने कोमल दिलवाली है कि ख़ून नहीं देख सकती, किन्तु इसी बछड़े के मांस को चटनी के साथ बड़े चटख़ारे ले लेकर खाती है। हमें युद्ध के नियमों, सूरमाओं के अनुरूप उदारता, सुलह के झण्डों और घायलों के प्रति दया दिखाने, आदि के पाठ पढ़ाये जाते हैं। यह सब बकवास है। १८०५ में मैं ऐसा सूरमापन, सुलह के झण्डे – सभी कुछ देख चुका हूं – उन्होंने हमारी आंखों में धूल झोंकी और हमने उनकी आंखों में। वे लोगों के घर लूटते हैं, जाली नोट जारी करते हैं और सबसे बुरी बात तो यह है कि हमारे बच्चों, हमारे पिताओं की हत्या करते हैं और इसके बाद युद्ध के नियमों तथा शत्रु के प्रति उदारता का राग अलापते हैं। युद्ध-बन्दी न बनाये जायें, बल्कि उन्हें मौत के घाट उतारा जाये और ख़ुद भी मौत को गले लगाने को बढ़ा जाये!

जो कोई मेरी ही तरह, मेरे जैसे दुख-दर्द सहकर ही इस नतीजे पर पहुंचा है..."

प्रिंस अन्द्रेई, जो यह सोचता था कि उसे इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा कि फ़्रांसीसी मास्को पर क़ब्ज़ा कर लेंगे या नहीं कर लेंगे, जैसे उन्होंने स्मोलेन्स्क पर क़ब्ज़ा कर लिया था, अचानक अपने गले में एक फांस-सी महसूस करते हुए चुप हो गया। उसने ख़ामोश रहते हुए इधर-उधर कुछ चक्कर लगाये, लेकिन जब वह फिर से बोलने लगा तो उसकी आंखें उत्तेजना से बेहद चमक रही थीं और होंठ कांप रहे थे।

"अगर युद्ध के मामले में दया-उदारता न होती तो हम तभी लड़ने के लिये जाते, जब इसके लिये कोई उचित कारण होता, कोई ऐसी चीज़ होती जिसके लिये मृत्यु का आलिंगन किया जाता। तब इस बात के लिये युद्ध न होता कि पावेल इवानिच ने मिख़ाईल इवानिच का अपमान कर दिया है। और अगर लड़ाई होती, जैसी कि इस समय, तो सही अर्थ में लड़ाई होती। तब सेनाओं का मनोबल और संकल्प वैसा न होता, जैसा इस वक़्त है। तब ये वेस्टफ़ाली और हेस्सेनी, जिन्हें नेपोलियन अपने पीछे घसीटे ला रहा है, कभी रूस न आते और हम भी यह न जानते हुए कि किसलिये ऐसा कर रहे हैं, आस्ट्रिया और प्रशा में कभी लड़ने न जाते। युद्ध शिष्टता-प्रदर्शन नहीं, बल्कि जीवन में सबसे घिनौनी चीज़ है, इसे समझना चाहिये और इसके साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिये। इस भयानक अनिवार्यता के प्रति कठोर और गम्भीर रवैया अपनाना चाहिये। कुल मिलाकर यह कि हमें ढोंग को एक तरफ़ हटाकर युद्ध को युद्ध के रूप में स्वीकार करना चाहिये, खिलवाड़ के रूप में नहीं। अन्यथा युद्ध – यह काहिल और चंचल प्रवृत्तिवाले लोगों का मनपसन्द मनोरंजन बन जाता है... सेना से ज़्यादा किसी का आदर-सम्मान नहीं किया जाता। किन्तु युद्ध क्या है, युद्ध के मामलों में सफलता पाने के लिये किन चीज़ों की ज़रूरत है, सेना के नैतिक नियम क्या हैं? युद्ध का लक्ष्य है – हत्या, युद्ध के उपाय और साधन हैं – जासूसी, ग़द्दारी और ग़द्दारी को बढ़ावा, लोगों की तबाही, उनकी लूट या फ़ौज की रसद के लिये उनकी चीज़ों की चोरी; छल-कपट और झूठ, जिन्हें जंगी चालाकी का नाम दिया जाता है। सेना के नैतिक नियम हैं – स्वतन्त्रता का अभाव यानी

अनुशासन, काहिली, उजड्डपन, संगदिली, लम्पटता और सुरापान। यह सब होते हुए भी सेना को समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, इसे सभी का आदर-सम्मान हासिल है। चीन के महाराजा को छोड़कर शेष सभी राजा-महाराजा फ़ौजी वर्दी पहनते हैं और जो सबसे ज़्यादा हत्यायें करता है, उसे ही सबसे ज़्यादा इनाम देते हैं... जैसे कि कल होगा, वैसे ही लाखों लोग एक-दूसरे की हत्या करने, एक-दूसरे को लुंज-पुंज बनाने के लिये आपस में भिड़ेंगे और इसके बाद भगवान को इस चीज़ के हेतु धन्यवाद देने की प्रार्थना करेंगे कि उन्होंने बहुत लोगों को मौत के घाट उतार दिया (जिनकी संख्या बढ़ाकर बतायी जायेगी) तथा यह मानते हुए विजय की घोषणा की जायेगी कि जितने अधिक लोगों की हत्या की गयी है, उतना ही बड़ा काम किया गया है। न जाने भगवान कैसे वहां से इन लोगों को देखते और सुनते रहते हैं!" प्रिंस अन्द्रेई पतली और तीखी आवाज़ में चिल्ला उठा। "ओह, मेरे प्यारे दोस्त, पिछले कुछ अरसे में मेरी ज़िन्दगी बहुत बोझिल हो गयी है। लगता है कि मैं बहुत ज्यादा ही जानने-समझने लगा हूं। भलाई और बुराई के ज्ञान का फल चखना मानव के लिये अच्छा नहीं... ख़ैर, बहुत दिनों का क़िस्सा नहीं है यह!" उसने इतना और कह दिया। "लेकिन तुम तो सो रहे हो और अब मुझे भी सोना चाहिये। तुम गोर्कि चले जाओ," प्रिंस अन्द्रेई अचानक कह उठा।

"ओह, नहीं!" प्येर ने सहमी और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखते हुए कहा।

"तुम जाओ, अब जाओ – लड़ाई से पहले अच्छी तरह से सो लेना चाहिये," प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बात दोहरायी। वह तेज़ी से प्येर के पास गया, उसने उसे गले लगाया और चूमा। "तो विदा, अब जाओ," वह चिल्ला उठा। "फिर कभी मिलेंगे या नहीं..." और वह जल्दी से मुड़कर सायबान में चला गया।

अन्धेरा हो चुका था और प्येर प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे के भाव को नहीं देख पाया – उसके चेहरे पर क्रोध था या स्नेह।

प्येर यह सोचते हुए कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा कि वह प्रिंस अन्द्रेई के पास सायबान में जाये या गोर्कि वापस लौटे। "नहीं, उसे मेरी ज़रूरत नहीं है!" प्येर ने मन ही मन निर्णय किया, "और मैं जानता हूं कि यह हमारी आख़िरी मुलाक़ात है।" उसने गहरी सांस

ली और घोड़े पर सवार होकर गोर्कि की ओर रवाना हो गया।

सायबान में लौटकर प्रिंस अन्द्रेई दरी पर लेट गया, लेकिन उसे नींद नहीं आई।

उसने आंखें मूंद लीं। एक के बाद एक चित्र उसकी आंखों के सामने उभरने लगा। एक चित्र को तो वह देर तक सहर्ष देखता रहा। पीटर्सबर्ग की एक शाम तो उसे सजीवता से याद हो आयी। चेहरे पर उत्साह और विह्वलता का भाव लिये नताशा उसे बता रही थी कि कैसे पिछली गर्मियों में खुमियां बटोरते वक़्त वह एक बड़े जंगल में भटक गयी थी। वह असम्बद्ध ढंग से घने वन, अपनी भावनाओं और मधुमक्खी-पालक के साथ अपनी बातचीत का वर्णन कर रही थी जिससे उसकी वहां भेंट हुई थी और रह-रहकर अपनी इस कहानी को बीच में ही छोड़ते हुए यह कह उठती थी – "नहीं, मैं नहीं सुना सकती, मैं ठीक तरह से नहीं सुना रही हूं; नहीं, आप मेरी बात नहीं समझ रहे हैं", यद्यपि प्रिंस अन्द्रेई यह कहकर उसे तसल्ली दे रहा था कि वह समझ रहा है और वास्तव में ही नताशा जो कुछ कहना चाहती थी, वह सब कुछ समझ रहा था। नताशा को अपने शब्दों से सन्तोष नहीं हो रहा था – वह यह महसूस कर रही थी कि भावना से ओत-प्रोत और काव्यमयी उस अनुभूति को अभिव्यक्ति नहीं दे पा रही जिसकी उसे उस दिन प्रतीति हुई थी और जिसे वह शब्दों में व्यक्त करना चाह रही थी। "बहुत ही कमाल का था वह बूढ़ा और जंगल में इतना अन्धेरा था... और उसकी इतनी दयालु ... नहीं, मुझे सुनाने का ढंग नहीं आता," उसने झेंप और घबराहट से लाल होते हुए कहा था। प्रिंस अन्द्रेई के होंठों पर इस वक़्त भी वही खुशी भरी मुस्कान खेल गयी जो उस वक़्त नताशा की ओर देखते हुए उसके होंठों पर आ गयी थी। "मैं उसे समझता था," प्रिंस अन्द्रेई सोच रहा था। "केवल समझता ही नहीं था, उसकी आत्मा की यही शक्ति, उसकी यही निष्कपटता, उसकी यही आत्मिक निश्छलता, उसकी इसी आत्मा को, जो मानो शरीर को अपने साथ जोड़े हुई थी, उसकी इसी आत्मा को तो मैं प्यार करता था... इतना अधिक प्यार करता था, इतना सुखी-सौभाग्यशाली था मैं इस प्यार से..." और अचानक उसे याद हो आया कि उसके प्यार का क्या अन्त हुआ था। "**उसे** इस सब से कोई

मतलब नहीं था। **वह** ऐसा न तो कुछ देख और न ही समझ पा रहा था। वह तो उसे एक प्यारी और **नयी-नयी खिली कली** जैसी युवती के रूप में ही देख रहा था जिसके साथ वह अपने भाग्य की डोर नहीं जोड़ पाया था। और मैं?.. और मैं अभी तक जीवित हूं, जीवन का आनन्द ले रहा हूं।"

प्रिंस अन्द्रेई ऐसे उछलकर खड़ा हो गया मानो किसी ने उसपर उबलता पानी डाल दिया हो और फिर से सायबान के सामने इधर-उधर आने-जाने लगा।

२६

२५ अगस्त को, बोरोदिनो की लड़ाई की पूर्ववेला में फ़्रांसीसी सम्राट के महल का प्रबन्धक श्री डे बोस्से और कर्नल फ़ाबव्ये सम्राट नेपोलियन के वालूयेवो के पड़ाव में पहुंचे। प्रबन्धक बोस्से पेरिस से आया था और कर्नल मड्रिड से।

दरबारी वर्दी पहनने के बाद बोस्से ने वह बक्स अपने सामने लाने का हुक्म दिया जो वह सम्राट के लिये लाया था। बक्स के आ जाने पर उसने नेपोलियन के तम्बू के पहले भाग में प्रवेश किया और उन एडजुटेंटों से बातचीत करते हुए, जिन्होंने उसे घेर लिया था, उस बक्स को खोलने के काम में जुट गया।

फ़ाबव्ये सम्राट नेपोलियन के तम्बू के द्वार पर ही रुककर अपने परिचित जनरलों से बातचीत करने लगा।

सम्राट नेपोलियन अभी अपने शयन-कक्ष से बाहर नहीं आया था और बाहर आने के लिये तैयार हो रहा था। वह नाक फरफराते और आह-ऊह करते हुए कभी तो अपनी मांसल पीठ तो कभी बालों से ढकी और चर्बी चढ़ी छाती को उस नौकर के ब्रश के सामने कर देता जिससे वह उसके बदन की मालिश कर रहा था। दूसरा नौकर शीशी के मुंह पर उंगली रखे तथा चेहरे पर ऐसा भाव लिये, जो यह कहता प्रतीत होता था कि सिर्फ़ वही जानता है कि कितना यू-डी-कोलोन छिड़कना चाहिये सम्राट के सुपोषित शरीर पर यू-डी-कोलोन छिड़क रहा था।

नेपोलियन के छोटे-छोटे बाल गीले और माथे पर अस्त-व्यस्त थे। किन्तु उसके चेहरे पर, जो बेशक थलथल और पीला था, सन्तोष झलक रहा था।

"और मलो, और ज़्यादा ज़ोर से..." वह अपने बदन को कुछ अकड़ाते और खूं-खां करते हुए मालिश करनेवाले नौकर से कह रहा था। यह सूचित करने के लिये कि पिछले दिन की लड़ाई में कितने बन्दी बनाये गये थे, यहां आनेवाला एडजुटेंट ज़रूरी सूचना देने के बाद जाने की अनुमति की प्रतीक्षा करते हुए द्वार के निकट खड़ा था। नेपोलियन ने माथे पर बल डालकर एडजुटेंट की तरफ़ देखा।

"बन्दी नहीं हैं," नेपोलियन ने एडजुटेंट के शब्दों को दोहराया। "वे हमें उनका काम तमाम करने के लिये मजबूर करते हैं। यह तो रूसी सेना के लिये ही ज़्यादा बुरा है," उसने कहा। "और मलो, और ज़ोर से," वह झुकते और मोटे-मोटे कन्धों को नौकर के सामने करते हुए कह उठा।

"तो ठीक है! बोस्से और फ़ाबव्ये को भीतर भेज दो," नेपोलियन ने सिर हिलाकर एडजुटेंट से कहा।

"जो हुक्म, हुज़ूर!" और एडजुटेंट बाहर चला गया।

दो नौकरों ने सम्राट को जल्दी से कपड़े पहनाये और गार्डों की नीली वर्दी डाटे वह दृढ़ तथा तेज़ क़दमों से स्वागत-कक्ष में आया।

इस वक़्त बोस्से अपने हाथों को जल्दी-जल्दी हिलाते-डुलाते हुए सम्राज्ञी द्वारा भेजे गये उपहार को सम्राट के बाहर आने के दरवाज़े के बिल्कुल सामने दो कुर्सियों पर टिकाने में व्यस्त था। किन्तु नेपोलियन इतनी जल्दी से कपड़े पहनकर अप्रत्याशित ही बाहर आ गया कि वह सम्राट को विस्मित करने के लिये लाये गये उपहार को ढंग से रख नहीं पाया।

नेपोलियन ने फ़ौरन देख लिया कि वे लोग क्या कर रहे हैं और यह अनुमान लगा लिया कि वे अभी पूरी तैयारी नहीं कर पाये हैं। वह इन लोगों को उसे हैरत में डालने की ख़ुशी से वंचित नहीं करना चाहता था। उसने यह ढोंग किया कि श्रीमान बोस्से की तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं गया है और फ़ाबव्ये को अपने पास बुलवा लिया। नेपोलियन त्योरी चढ़ाये और ख़ामोश रहते हुए यूरोप के दूसरे सिरे

पर सलामान्का* के नज़दीक लड़ रही अपनी फ़ौजों की बहादुरी और वफ़ादारी की फ़ाबव्ये द्वारा सुनायी जानेवाली कहानी और यह सुनता रहा कि उसकी सेना केवल यही चाहती थी कि अपने को अपने सम्राट की आशाओं के अनुरूप सिद्ध करे और उसे सिर्फ़ यही डर बना रहता था कि वह ऐसा नहीं कर पायेगी। वहां की लड़ाई का परिणाम निराशा-जनक रहा था। फ़ाबव्ये की इस चर्चा के दौरान नेपोलियन ने इस आशय की टिप्पणी की कि अपनी अनुपस्थिति में उसने मामले के कोई बेहतर करवट लेने की उम्मीद ही नहीं की थी।

"मुझे मास्को में इसकी क्षतिपूर्ति करनी होगी," नेपोलियन ने कर्नल से कहा। "आप अब जा सकते हैं," इतना और कहने के बाद उसने बोस्से को अपने पास बुलवाया जिसने इस वक़्त तक किसी चीज़ को कुर्सियों पर टिकाकर तथा उसे कपड़े से ढककर वह उपहार पूरी तरह तैयार कर लिया था जिससे नेपोलियन को आश्चर्यचकित करना चाहता था।

डे बोस्से ने फ़्रांसीसी दरबारियों के उस ढंग से बहुत झुककर अभिवादन किया जिस ढंग से बुर्बोन के पुराने सेवक ही कर सकते थे और पत्र देने के लिये आगे बढ़ा।

नेपोलियन ने प्रफुल्लता से उसे सम्बोधित किया और उसका कान खींचा।**

"मैं बहुत ख़ुश हूं कि आपने आने में देर नहीं की। तो पेरिस में किस बात की चर्चा है?" अपने चेहरे के पहलेवाले कठोर भाव को सहसा अत्यधिक मधुर बनाते हुए उसने पूछा।

"हुज़ूर, सारा पेरिस आपकी अनुपस्थिति से व्यथित है," बोस्से ने वैसा ही जवाब दिया, जैसाकि देना चाहिये था। यद्यपि नेपोलियन यह जानता था कि बोस्से यही या इसी तरह का कोई जवाब देगा, यद्यपि शान्त मन से सोचने के क्षणों में उसे इस बात की भी चेतना होती थी कि यह झूठ है, तथापि उसे बोस्से के मुंह से ऐसा सुनना अच्छा लगा। उसने फिर से उसका कान खींचकर अपना स्नेह जताया।

---

* स्पेन का एक नगर जिसके क़रीब नेपोलियन की सेना को अंग्रेज़ी-स्पेनी-पुर्तगाली सेना के मुक़ाबले में मुंह की खानी पड़ी थी। फ़्रांसीसी सेना का कमांडर मार्शल मार्मोन था। – सं०

** यह स्नेह व्यक्त करने का ढंग था। – अनु०

"मुझे बहुत अफ़सोस है कि आपको इतनी दूर आने को मजबूर किया," नेपोलियन ने कहा।

"सम्राट, मैंने तो आपको मास्को के फाटक के क़रीब पाने की आशा की थी," बोस्से ने उत्तर दिया।

नेपोलियन मुस्कराया और अन्यमनस्कता से सिर ऊपर उठाकर उसने दायीं ओर देखा। सोंने की नासदानी हाथ में लिये एडजुटेंट सधे क़दम रखता हुआ नेपोलियन के नज़दीक आया और उसने नासदानी को सम्राट की तरफ़ बढ़ा दिया। नेपोलियन ने नासदानी ले ली।

"हां, आपके लिये तो यह अच्छा ही हुआ," नेपोलियन ने खुली नासदानी को नाक के क़रीब ले जाते हुए कहा। "आपको यात्रा का शौक़ है। तीन दिन बाद आप मास्को देखेंगे। एशियाई राजधानी देखने की तो आपने सम्भवतः आशा ही नहीं की होगी। आपके लिये यह यात्रा बड़ी सुखद रहेगी।"

पर्यटन के शौक़ के प्रति ध्यान देने के लिये (जिसका उसे अभी तक ज्ञान नहीं था) बोस्से ने कृतज्ञता से सिर झुकाया।

"अरे! यह क्या है?" नेपोलियन ने यह देखकर कि उसके अमले के सभी लोग कपड़े से ढकी किसी चीज़ पर नज़र टिकाये हुए हैं, पूछा। बोस्से एक दरबारी जैसी दक्षता के अनुरूप सम्राट की ओर पीठ किये बिना आधा घूम गया और ऐसा करके उसने कपड़ा उतारते हुए कहा:

"आप हुज़ूर के लिये सम्राज्ञी का उपहार।"

यह नेपोलियन के दरबारी चित्रकार फ़ांसुआ जेरार द्वारा बहुत ही चटक रंगों से बनाया गया नेपोलियन और आस्ट्रिया के सम्राट की बेटी से पैदा होनेवाले लड़के का छविचित्र था जिसे न जाने क्यों, सभी रोम का बादशाह कहते थे।

इस छविचित्र में बहुत ही सुन्दर और घुंघराले बालोंवाला बालक, जिसकी दृष्टि इतालवी चित्रकार रफ़ायल सान्ती के चित्र में अंकित नन्हे ईसा की दृष्टि जैसी थी, छड़ी और गेंद खेलता दिखाया गया था। गेंद पृथ्वी के गोले और दूसरे हाथ में छड़ी राजदण्ड का प्रतीक था।

यद्यपि यह चीज़ पूरी तरह से स्पष्ट नहीं थी कि तथाकथित रोम के बादशाह को छड़ी से पृथ्वी के गोले को बेधते हुए दिखाकर चित्रकार

ने क्या व्यक्त करना चाहा था, तथापि इस चित्र को पेरिस में देखनेवाले सभी लोगों की भांति नेपोलियन को भी यह रूपक सम्भवतः स्पष्ट प्रतीत हुआ और बहुत अच्छा लगा।

"रोम का बादशाह," उसने हाथ के एक शानदार अन्दाज़ से चित्र की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "लाजवाब!" इच्छानुसार अपने चेहरे का भाव बदल लेने की इतालवी लोगों की क्षमता के अनुरूप नेपोलियन ने चित्र के निकट जाकर विचारों में खोये तथा स्नेह से परिपूर्ण व्यक्ति की मुद्रा बना ली। वह अनुभव कर रहा था कि इस वक़्त वह जो कुछ कहेगा और करेगा – वह इतिहास का अंग बन जायेगा। उसे लगा कि इस वक़्त, जब उसकी अपार कीर्ति के फलस्वरूप उसका बेटा पृथ्वी से खिलवाड़ कर सकता था, उसके लिये सबसे अच्छी चीज़ तो यही होगी कि अपनी इस शान-शौक़त के मुक़ाबले में पिता की साधारण स्नेह-भावना को अभिव्यक्ति दे। उसकी आंखें प्यार से कुछ धुंधला-सी गयीं, वह आगे बढ़ा, उसने कुर्सी के लिये इधर-उधर नज़र दौड़ाई (एक कुर्सी उसके नीचे आ गयी) और वह चित्र के सामने उस कुर्सी पर बैठ गया। उसका एक इशारा पाते ही इस महान व्यक्ति को उसकी भावनाओं के साथ छोड़कर सभी बाहर चले गये।

कुछ समय तक ऐसे ही बैठे रहने तथा ख़ुद यह न जानते हुए कि किसलिये उसने इस चित्र के खुरदरे फलक के चटक रंग को हाथ से छुआ, वह उठा और उसने बोस्से तथा ड्यूटी-अफ़सर को अपने पास बुलाया। उसने हुक्म दिया कि इस चित्र को उसके तम्बू के सामने रख दिया जाये ताकि पुरानी गार्ड-सेना के अफ़सर और सैनिक, जो उसके तम्बू के आस-पास ही डेरा डाले थे, रोम के बादशाह, उनके पूज्य सम्राट के बेटे और वारिस को देखने के सौभाग्य से वंचित न रह जायें।

जैसी कि उसने आशा की थी, नाश्ता करते वक़्त, जिसके लिये उसने श्रीमान बोस्से को भी आमन्त्रित करने का सम्मान प्रदान किया था, उसे इस चित्र को देखने के लिये तम्बू के सामने भागकर आनेवाले पुरानी गार्ड-सेना के अफ़सरों तथा सैनिक के उत्साह और उल्लासपूर्ण नारे सुनायी दिये:

"सम्राट ज़िन्दाबाद! रोम का बादशाह ज़िन्दाबाद! सम्राट ज़िन्दाबाद!"

नाश्ते के बाद नेपोलियन ने बोस्से की उपस्थिति में ही सेना के नाम अपना सन्देश लिखवाया।

"संक्षिप्त और ज़ोरदार!" नेपोलियन ने किसी प्रकार की भूल-सुधार किये बिना एकबारगी लिखवाये गये अपने सन्देश को ख़ुद पढ़ने के बाद कहा। सन्देश में कहा गया था :

"सैनिको! वह लड़ाई, जिसके लिये आप इतने उत्सुक थे, बिल्कुल निकट है। जीत का दारोमदार आप पर है। हमारे लिये यह जीत एकदम ज़रूरी है; उससे हमें वह सभी कुछ मिल जायेगा जिसकी हमें ज़रूरत है – आरामदेह घर और जल्दी से मातृभूमि लौटने की सम्भावना। आप अपनी वैसी ही वीरता दिखायें जैसी आपने आउस्टेरलिट्ज़, फ़्रीडलैंड, वीतेब्स्क और स्मोलेन्स्क में दिखायी थी। आनेवाली पीढ़ियां सदियों तक बड़े गर्व से इस दिन की आपकी उपलब्धियों को याद करें। मेरी यही कामना है कि आपमें से हर किसी के बारे में यही कहा जाये – उसने मास्को के नज़दीक लड़ी गयी महान लड़ाई में हिस्सा लिया था!"

"मास्को के नज़दीक!" नेपोलियन ने ये शब्द दोहराये और श्रीमान बोस्से को, जो यात्रा का शौक़िन था, अपने साथ सैर के लिये आमन्त्रित करके तम्बू से बाहर उस तरफ़ चल दिया जहां ज़ीन कसे घोड़े तैयार खड़े थे।

"आप बहुत ही दयालु हैं, सम्राट!" बोस्से ने सम्राट के इस निमन्त्रण के जवाब में कहा कि वह उसके साथ घुड़सवारी करने चले। वह सोना चाहता था, अच्छा घुड़सवार नहीं था और घुड़सवारी करते हुए डरता था।

किन्तु नेपोलियन ने यात्रा-प्रेमी को सिर हिलाकर चलने का इशारा किया और बोस्से को जाना पड़ा। नेपोलियन के तम्बू से बाहर आने पर उसके बेटे के छविचित्र के सामने खड़े गार्ड-सैनिकों के हर्षोल्लास के नारे और ज़्यादा ऊंचे हो गये। नेपोलियन की त्योरी चढ़ गयी।

"इसे यहां से हटा लीजिये," उसने बड़े रोबीले और शानदार अन्दाज़ में छविचित्र की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "अभी इसकी युद्ध-क्षेत्र को देखने की उम्र नहीं हुई।"

बोस्से ने अपनी आंखें मूंदते और सिर झुकाते हुए गहरी सांस ली तथा इस तरह से यह ज़ाहिर किया कि वह अपने सम्राट के शब्दों का कितना ऊंचा मूल्यांकन करता है और उन्हें समझ सकता है।

अपने बेटे के छविचित्र के सामने नेपोलियन।

२७

जैसाकि नेपोलियन के इतिहासकारों ने लिखा है, उसने २५ अगस्त का पूरा दिन सारे क्षेत्र को देखते, उसके मार्शलों द्वारा प्रस्तुत योजनाओं पर विचार-विमर्श करते और अपने जनरलों को व्यक्तिगत रूप से आदेश देते हुए घोड़े पर ही बिताया।

कोलोचा नदी के तट पर रूसी सेना की प्रारम्भिक तैनाती-रेखा तोड़ दी गयी थी और २४ अगस्त को शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी पर शत्रु के अधिकार कर लेने के फलस्वरूप इसका एक भाग यानी बायां पहलू पीछे हटा दिया गया था। रूसी सेना की तैनाती-रेखा के इसी भाग पर मोरचाबन्दी नहीं की गयी थी, नदी भी अब इसकी रक्षा नहीं करती थी और इसी के सामने सबसे ज़्यादा खुला और समतल मैदान था। सैनिक-असैनिक, हर किसी को यह स्पष्ट था कि फ़्रांसीसी हमारी सेना की तैनाती-रेखा के इसी भाग पर आक्रमण करेंगे। ऐसा प्रतीत हो सकता था कि इसके लिये बहुत ज़्यादा सोच-विचार करने, सम्राट नेपोलियन और उसके मार्शलों के लिये इतनी अधिक चिन्ता तथा दौड़-धूप करने तथा उस विशेष उच्च योग्यता, तथाकथित प्रतिभा की बिल्कुल ज़रूरत नहीं थी, जिसे लोगों को उसके नाम के साथ जोड़ना बहुत पसन्द है। किन्तु इस घटना का बाद में वर्णन करनेवाले इतिहासकारों, उस समय नेपोलियन के आस-पास उपस्थित लोगों और खुद नेपोलियन का इसके बारे में दूसरा ही मत था।

घोड़े पर सवार और विचारमग्न नेपोलियन सारे क्षेत्र का निरीक्षण करता, अपने आप ही अनुमोदन या सन्देह से सिर हिलाता रहा और अपने इर्द-गिर्द उपस्थित जनरलों के सम्मुख उस गहन चिन्तन-धारा को व्यक्त न करते हुए, जिसके आधार पर उसने निर्णय किये, केवल आदेशों के रूप में ही उन्हें फ़ैसले बता दिये। एकम्यूल का ड्यूक कहलानेवाले दावू का यह सुझाव सुनकर कि रूसियों के बायें पहलू पर पीछे से हमला करना चाहिये, नेपोलियन ने यह स्पष्ट किये बिना कि ऐसा क्यों नहीं करना चाहिये, यह कह दिया कि इसकी ज़रूरत नहीं है। जनरल कोम्पान (जिसे अधिक कोणवाली रूसी मोरचेबन्दी पर हमला करना था) के इस सुझाव के प्रति नेपोलियन ने सहमति प्रकट की कि उसे अपने डिवीज़न को जंगल में से ले जाना चाहिये,

यद्यपि तथाकथित एल्खीनगेन्स्क के ड्यूक यानी मार्शल नेय ने यह आपत्ति की थी कि डिवीज़न को जंगल में से ले जाना ख़तरनाक है और उसकी विरचना बिगड़ सकती है।

शेवार्दिनो मोरचेबन्दी के सामनेवाले क्षेत्र को बहुत ध्यान से देखने के बाद नेपोलियन कुछ देर तक चुपचाप सोचता रहा और फिर उसने उन स्थानों की ओर संकेत किया जहां रूसी ख़न्दकों पर गोलाबारी करने के लिये अगले दिन तक दो तोपख़ाने तैनात कर दिये जाने चाहिये थे और वह जगह भी बता दी, जहां इनके नज़दीक ही मैदानी तोपख़ाना भी अवस्थित हो जाना चाहिये था।

ये तथा अन्य आदेश देकर वह अपने तम्बू में लौटा और उसने लड़ाई के लिये सैनिक कार्रवाई की योजना लिखवायी।

यह सैनिक-योजना, जिसकी फ़ांसीसी इतिहासकार बड़े उल्लास से तथा अन्य इतिहासकार अत्यधिक आदर से चर्चा करते हैं, इस प्रकार थी –

"रात के वक़्त उस मैदान में, जहां एकम्यूल के ड्यूक का आधिपत्य है, तैनात किये गये दो तोपख़ाने पौ फटते ही शत्रु के उन दो तोपख़ानों पर गोलाबारी शुरू कर देंगे जो इनके सामने थे।

"इसी समय पहली फ़ौजी कोर के तोपख़ाने का कमांडर जनरल पेर्नेट्टी कोम्पान के फ़ौजी डिवीज़न की तीस तोपें और देस्से तथा फ़्रिआन के डिवीज़न की सभी तोपें लेकर आगे बढ़ जायेगा, गोलाबारी शुरू कर देगा तथा शत्रु के तोपख़ाने पर विस्फोट-गोले बरसायेगा जिसके विरुद्ध

गार्ड-सेना की २४ तोपें
कोम्पान के डिवीज़न की ३० तोपें
देस्से और फ़्रिआन के डिवीज़न की ८ तोपें

कुल – ६२ तोपें

क्रियाशील होंगी।

"तीसरी फ़ौजी कोर के तोपख़ाने का कमांडर जनरल फ़ुशे, तीसरी और आठवीं फ़ौजी कोरों की सभी तोपों को, जिनकी संख्या १६ है, उस तोपख़ाने के पहलुओं पर तैनात कर देगा जिसे बायीं

मोरचेबन्दी पर गोलाबारी करनी है और इस तरह इसके विरुद्ध कुल ४० तोपें हो जायेंगी।

"जनरल सोर्ब्ये को पहला आदेश मिलते ही गार्ड-सेना की सारी तोपें लेकर एक या दूसरी मोरचेबन्दी के विरुद्ध बढ़ने के लिये तैयार रहना चाहिये।

"गोलाबारी के दौरान प्रिंस पोन्यातोव्स्की जंगल से होते हुए गांव की तरफ़ जायेगा और शत्रु की सेना के पीछे घूम जायेगा।

"जनरल कोम्पान जंगल में से आगे बढ़ेगा ताकि पहली मोरचेबन्दी पर क़ब्ज़ा कर ले।

"इस तरह लड़ाई शुरू करने पर आगे के आदेश शत्रु की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए दिये जायेंगे।

"दायें पहलू की तोपों की गरज सुनायी देते ही बायें पहलू की तोपें गोलाबारी शुरू कर देंगी। मोरान के डिवीज़न और वाइसराय* के डिवीज़न के निशानेबाज़ दायें पहलू के आक्रमण का आरम्भ देखते ही ख़ूब ज़ोर से गोलियां चलानी शुरू कर देंगे।

"वाइसराय गांव** पर क़ब्ज़ा करेगा और मोरान तथा जेरार के डिवीज़नों की ऊंचाई के स्तर पर रहते हुए अपने तीन पुलों को पार करेगा। उसकी कमान में ये दोनों डिवीज़न मोरचेबन्दी की तरफ़ बढ़ेंगे तथा बाक़ी सेना की पांत में आ जायेंगे।

"यह सब कुछ व्यवस्थित ढंग से और यथासम्भव सेना को रिज़र्व में रखते हुए होना चाहिये।

"सम्राट का शिविर, मोजाइस्क, ६ सितम्बर,*** १८१२।"

सैनिक कार्रवाई की इस योजना में, जो काफ़ी अस्पष्ट और उलझी-उलझायी थी, (अगर हम नेपोलियन के अनुदेशों का उसकी प्रतिभा के अन्धविश्वासपूर्ण भय से मुक्त होकर विश्लेषण करें) चार बातें शामिल हैं, इसमें चार आदेश हैं। इनमें से एक भी आदेश को न तो अमली शक्ल दी जा सकती थी और न ही दी गयी।

सैनिक कार्रवाई की योजना में सबसे पहले तो यह कहा गया है

---

* वाइसराय–येव्गेनी बोगारने (१७८१–१८२४)–नेपोलियन का सौतेला बेटा।–सं०

** बोरोदिनो। –सं०

*** नये कैलेंडर के अनुसार; पुराने कैलेंडर के अनुसार २५ अगस्त। –अनु०

कि **नेपोलियन द्वारा चुने गये स्थान पर तैनात तोपख़ाने, जिनके साथ पेर्नेट्टी और फ़ुशे की तोपों को भी शामिल हो जाना था, यानी कुल १०२ तोपों को अधिक कोणवाली रूसी मोरचेबन्दियों और अन्य मोरचे-बन्दियों पर गोलाबारी करनी थी।** ऐसा करना सम्भव नहीं था, क्योंकि नेपोलियन द्वारा चुनी गयी जगह से रूसियों की ख़न्दकों तक गोले नहीं पहुंच सकते थे। ये १०२ तोपें तब तक व्यर्थ ही गोलाबारी करती रहतीं, जब तक कि उनके निकट उपस्थित कोई सेना-संचालक नेपोलियन के आदेश की अवहेलना करते हुए उन्हें आगे बढ़ाने का हुक्म न दे देता।

दूसरा आदेश यह था कि **पोन्यातोव्स्की जंगल से होता हुआ गांव की तरफ़ बढ़े और रूसियों के बायें पहलू के पीछे घूम जाये।** यह नहीं हो सकता था और नहीं हुआ, क्योंकि जंगल से होकर गांव की तरफ़ बढ़ने पर उसे अपना रास्ता रोकनेवाले तुच्कोव का सामना करना पड़ा और इसलिये वह रूसी सेना के पीछे नहीं जा सकता था और नहीं गया।

तीसरा आदेश यह था कि **जनरल कोम्पान जंगल में से आगे बढ़े ताकि रूसियों की पहली मोरचेबन्दी पर क़ब्ज़ा कर ले।** जनरल कोम्पान पहली रूसी मोरचेबन्दी पर क़ब्ज़ा नहीं कर पाया, बल्कि पीछे धकेल दिया गया, क्योंकि जंगल से बाहर निकलने पर उसकी सेना को रूसियों के छर्रों की बौछार का सामना करते हुए अपने को व्यवस्थित करना पड़ा जिसका नेपोलियन को ज्ञान नहीं था।

चौथा आदेश यह था कि **वाइसराय बोरोदिनो गांव पर क़ब्ज़ा कर लेगा और मोरान तथा फ़्रिआन के डिवीज़नों** (जिनके बारे में यह नहीं कहा गया था कि वे कब और किधर बढ़ेंगे) **की ऊंचाई के स्तर पर रहते हुए अपने तीन पुलों को पार करेगा और उसकी कमान में ये दोनों डिवीज़न मोरचेबन्दी की तरफ़ बढ़ेंगे तथा बाक़ी सेना की पांत में आ जायेंगे।**

यदि समय की अस्पष्टता की ओर ध्यान न दिया जाये तो वाइसराय द्वारा किये गये प्रयासों के आधार पर यह समझा जा सकता है कि उसे मिले आदेश को पूरा करने के लिये उसे बायीं ओर से बोरोदिनो को लांघकर मोरचेबन्दी की तरफ़ बढ़ना चाहिये था, जबकि मोरान और फ़्रिआन के डिवीज़नों को एक ही समय पर मोरचे से चलना चाहिये था।

यह सब, जैसे कि उसके आदेश की अन्य बातें भी न तो पूरी की गयीं और न पूरी की ही जा सकती थीं। बोरोदिनो को लांघने के बाद वाइसराय को कोलोचा नदी की ओर पीछे धकेल दिया गया और वह आगे नहीं जा सका। मोरान तथा फ़िआन के डिवीज़न मोरचे-बन्दी पर क़ब्ज़ा नहीं कर पाये तथा पीछे खदेड़ दिये गये तथा लड़ाई के अन्त में घुड़सेना ने ही उसपर क़ब्ज़ा किया (शायद नेपोलियन के लिये यह अजीब तथा अप्रत्याशित था)। उसकी सैनिक कार्रवाई की योजना का एक भी आदेश न तो पूरा किया गया था और न ही किया जा सकता था। किन्तु इस आदेश में यह भी कहा गया था कि इस ढंग से लड़ाई शुरू करने के बाद दुश्मन की कार्रवाई को ध्यान में रखते हुए आवश्यक अनुदेश दिये जायेंगे और इसलिये ऐसा प्रतीत हो सकता है कि लड़ाई के वक़्त नेपोलियन ज़रूरी हिदायतें दे देगा, मगर ऐसा नहीं हुआ और हो भी नहीं सकता था, क्योंकि पूरी लड़ाई के दौरान नेपोलियन उससे इतना दूर था कि (जैसाकि बाद में स्पष्ट हुआ) लड़ाई की गति-विधि उसे ज्ञात ही नहीं हो सकती थी और लड़ाई के समय दिया गया उसका एक भी आदेश-अनुदेश पूरा नहीं किया जा सकता था।

२८

अनेक इतिहासकारों का यह मत है कि बोरोदिनो की लड़ाई में फ़्रांसीसियों की इस कारण जीत नहीं हो सकी कि नेपोलियन को सख़्त ज़ुकाम था और यदि उसे ज़ुकाम न होता तो लड़ाई के पहले तथा लड़ाई के समय उसके द्वारा दिये गये आदेश-अनुदेश और भी अधिक प्रतिभापूर्ण होते, रूस नष्ट हो जाता और दुनिया का रंग-रूप बदल गया होता। ऐसे इतिहासकारों के लिये जो यह मानते हैं कि एक ही व्यक्ति यानी पीटर महान की इच्छा से रूसी राज्य ने अस्तित्व ग्रहण किया, कि एक ही व्यक्ति यानी नेपोलियन की इच्छा के फलस्वरूप फ़्रांस जनतन्त्र से साम्राज्य बन गया तथा फ़्रांसीसी सेनायें रूस पर हमला करने चल दीं, ऐसे इतिहासकारों के लिये इस तरह का तर्क-वितर्क कि रूस इसी कारण शक्तिशाली बना रहा कि २६ अगस्त को नेपोलियन को सख़्त

ज़ुकाम था, अवश्य ही उचित तथा तर्कसंगत हो सकता है।

यदि यह चीज़ नेपोलियन की इच्छा पर ही निर्भर होती कि बोरोदिनो की लड़ाई लड़ी जाये या न लड़ी जाये, यदि उसकी इच्छा पर ही यह निर्भर होता कि वह एक अथवा दूसरा आदेश दे अथवा न दे तो स्पष्ट है कि उसका ज़ुकाम, जिसने उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति को प्रभावित किया, रूस के बच जाने का कारण हो सकता था और इसीलिये नेपोलियन का वह नौकर, जो २४ अगस्त को उसे वाटरप्रूफ़ बूट देना भूल गया था, रूस का रक्षक था। इस तरीक़े से तर्क-वितर्क करने पर तो ऐसा निष्कर्ष ठीक उसी तरह से निर्विवाद हो सकता है जिस तरह वालटेर का वह निष्कर्ष, जब उसने मज़ाक़ में (ख़ुद यह न जानते हुए कि उसका मज़ाक़ किसकी ओर लक्षित था) यह कहा था कि बार्थोलोमियो की रात की घटना* इसलिये घटी कि चार्ल्स नौवें के पेट में गड़बड़ थी। किन्तु ऐसे लोगों के लिये, जो यह मानने को तैयार नहीं हैं कि एक व्यक्ति यानी पीटर महान की इच्छा के फलस्वरूप रूसी राज्य बना या यह कि एक व्यक्ति अर्थात् नेपोलियन की इच्छा के कारण फ़्रांसीसी साम्राज्य ने रूप धारण किया और रूस के साथ युद्ध आरम्भ हुआ, ऐसे लोगों के लिये इस तरह का तर्क-वितर्क न केवल भ्रान्तिपूर्ण और विवेकसंगत ही नहीं है, बल्कि मानवीय यथार्थ के सर्वथा प्रतिकूल भी है। ऐतिहासिक घटनाओं का कारण क्या होता है, इस प्रश्न का एक दूसरा ही उत्तर सामने आता है। वह यह कि विश्व-घटनाचक्र ऊपर से ही सुनिश्चित होता है, इन घटनाओं में भाग लेनेवाले सभी लोगों की संयुक्त इच्छा पर निर्भर करता है और इस घटनाचक्र पर नेपोलियन का प्रभाव केवल सतही तथा काल्पनिक है।

पहली नज़र में यह प्रस्थापना बेशक कितनी ही अजीब क्यों न लगे कि बार्थोलोमियो की रात की घटना चार्ल्स नौवें की इच्छा के अनुसार नहीं हुई, जिसने इसके लिये आदेश दिया था, कि उसे केवल ऐसा प्रतीत ही हुआ था कि उसने इसका हुक्म जारी किया था और बोरोदिनो की लड़ाई में अस्सी हज़ार लोगों की हत्या नेपोलियन की

---

* यहां १५७२, २३–२४ अगस्त की रात को पेरिस में कैथोलिकों द्वारा प्रोटेस्टेंटों के कत्लेआम की ओर संकेत है। – सं०

इच्छा से नहीं हुई (यद्यपि उसने उसे आरम्भ करने के तथा लड़ाई की गति-विधियों के आदेश दिये) और उसे केवल ऐसा प्रतीत ही हुआ कि उसने ये आदेश दिये थे – यह प्रस्थापना बेशक कितनी ही अजीब क्यों न लगे, किन्तु मानवीय गरिमा, जो मुझसे यह कहती है कि हममें से प्रत्येक यदि महान नेपोलियन से बढ़कर नहीं तो उतना ही मानव अवश्य है, इस प्रश्न का यही उत्तर स्वीकार करने की मांग करती है और ऐतिहासिक अनुसन्धान इस धारणा की पर्याप्त रूप से पुष्टि करते हैं।

बोरोदिनो की लड़ाई में नेपोलियन ने न तो किसी पर गोली चलायी और न किसी की हत्या की। यह सब कुछ सैनिकों ने ही किया। तो यही निष्कर्ष निकलता है कि उसने लोगों को मौत के घाट नहीं उतारा।

फ़्रांसीसी सेना के सैनिक नेपोलियन के आदेश पर नहीं, बल्कि अपनी इच्छा से रूसी सैनिकों को मारने के लिये बोरोदिनो के मैदान में गये। सारी फ़्रांसीसी सेना, जिसमें फ़्रांसीसी, इतालवी, जर्मन और पोलैंडी शामिल थे और जो युद्ध-अभियान के कारण भूखे, फटेहाल और थके-हारे थे – इस फ़्रांसीसी सेना ने जब मास्को की ओर बढ़ने का रास्ता रोकनेवाली एक अन्य सेना को अपने सामने पाया तो उसने महसूस किया कि शराब तैयार हो गयी है और अब उसे पीना चाहिये। अगर नेपोलियन अब अपने सैनिकों को रूसियों के विरुद्ध लड़ने को मना करता तो उन्होंने नेपोलियन को मार डाला होता और वे रूसियों से लड़ने जाते, क्योंकि उनके लिये ऐसा करना ज़रूरी था।

जब उन्होंने नेपोलियन की घोषणा में अपने लुंज-पुंज होने और मौत के मुंह में जाने के लिये अपने को सान्त्वना देनेवाले भावी पीढ़ियों से सम्बन्धित ये शब्द सुने कि उन्होंने मास्को के नज़दीक लड़ी गयी लड़ाई में हिस्सा लिया था तो वे उसी तरह से "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्लाये थे जैसे पृथ्वी के गोले को छड़ी से बींधनेवाले बालक का छविचित्र देखकर चिल्लाये थे या किसी भी अन्य बेतुकी बात के कहे जाने पर "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्ला उठते। उनके लिये "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्लाने और लड़ाई के मैदान में जाने के अलावा कोई चारा नहीं था ताकि विजेता के रूप में मास्को में जाकर खुराक और आराम हासिल कर सकें। तो नतीजा यही निकलता है कि नेपोलियन के आदेश के परिणामस्वरूप उन्होंने अपने जैसों की हत्या नहीं की थी।

लड़ाई की गति-विधि का भी नेपोलियन ने संचालन नहीं किया, क्योंकि उसके आदेशों में से एक को भी अमली शक्ल नहीं दी गयी थी और लड़ाई के वक़्त उसे यह मालूम नहीं था कि उसके सामने क्या हो रहा था। तो कहा जा सकता है कि इन लोगों ने एक-दूसरे की कैसे हत्या की, इसका निर्णय नेपोलियन की इच्छा ने नहीं, बल्कि उसकी इच्छा से स्वतन्त्र रूप में, इस सामान्य घटना में भाग लेनेवाले लाखों लोगों की इच्छा ने किया। नेपोलियन को तो **केवल ऐसा प्रतीत ही हुआ** कि सब कुछ उसकी इच्छा का ही फल था। इसलिये यह प्रश्न कि नेपोलियन को जुकाम था या नहीं था, इतिहास के लिये इससे ज़्यादा दिलचस्पी नहीं रखता कि फ़ौजी घोड़ा-गाड़ी के साथ जानेवाले मामूली से मामूली सैनिक को जुकाम था या नहीं।

२६ अगस्त को नेपोलियन के जुकाम का इस कारण और भी कम महत्त्व रह जाता है कि कुछ लेखकों के ये दावे कि इसी जुकाम के परिणामस्वरूप इस लड़ाई के दौरान उसके आदेश उतने प्रभावपूर्ण नहीं थे जितने पहली लड़ाइयों के वक़्त – बिल्कुल निराधार हैं।

बोरोदिनो की सैनिक कार्रवाई के लिये नेपोलियन द्वारा लिखायी गयी योजना उन योजनाओं से किसी तरह भी बुरी नहीं, बल्कि अच्छी थी जिनके आधार पर बहुत-सी लड़ाइयां जीती गयी थीं। लड़ाई के वक़्त उसके द्वारा दिये गये तथाकथित आदेश भी इससे पहले के अवसरों से कुछ बुरे नहीं, बल्कि ठीक वैसे ही थे जैसे हमेशा होते थे। किन्तु उसकी सैनिक कार्रवाई की योजना और आदेश पहले की तुलना में केवल इसलिये ही अधिक बुरे लगते हैं कि बोरोदिनो की लड़ाई ही वह पहली लड़ाई थी जो नेपोलियन जीत नहीं पाया था। अच्छी से अच्छी और गहनतम युद्ध-योजनायें तथा आदेश उस समय बहुत ही बुरे प्रतीत होते हैं, जब उनके अनुसार लड़ाई जीती नहीं जाती और हर सेना-विशेषज्ञ महत्त्वपूर्ण ढंग से उनकी आलोचना कर सकता है। किन्तु जब बुरी से बुरी युद्ध-योजना और आदेशों के आधार पर लड़ाई जीत ली जाती है तो वही सबसे अच्छे प्रतीत होने लगते हैं और गम्भीर अध्येता उनके गुणों को सिद्ध करने के लिये बड़े-बड़े पोथे लिख डालते हैं।

आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के वक़्त वैरोटेर द्वारा तैयार की गयी युद्ध-योजना इस ढंग की एक सर्वोत्तम योजना थी, फिर भी उसकी आलोचना

की गयी, इसलिये आलोचना की गयी कि वह त्रुटिहीन थी, कि उसमें हर चीज़ बहुत तफ़सील से स्पष्ट की गयी थी।

सत्ता के प्रतिनिधि के रूप में नेपोलियन ने दूसरी लड़ाइयों की भांति ही और उनसे ज़्यादा अच्छी तरह अपना काम पूरा किया। उसने कुछ भी ऐसा नहीं किया जो लड़ाई के घटनाचक्र पर बुरा प्रभाव डालता। उसने अधिक समझदारी के विचारों पर कान दिया, कहीं कोई घुटाला नहीं किया, अपनी किसी बात के विरुद्ध कार्रवाई नहीं की, डरा नहीं, युद्ध-क्षेत्र से पीठ दिखाकर भागा नहीं और युद्ध के अपने बड़े अनुभव तथा व्यवहारकुशलता से काम लेते हुए बड़ी शान्ति तथा योग्यता से मुख्य संचालक प्रतीत होने की अपनी भूमिका निभाई।

२६

अपनी सेनाओं का दूसरी बार निरीक्षण करके लौटने पर नेपोलियन ने कहा:

"शतरंज की बिसात बिछा दी गयी है, कल खेल शुरू होगा।"

अपने लिये पंचमेला पेय लाने का हुक्म देकर उसने बोस्से को अपने पास बुलवा भेजा और दरबार-सम्बन्धी छोटी से छोटी तफ़सीलों को याद रखने के लिये प्रासाद-प्रबन्धक को आश्चर्यचकित करते हुए उसके साथ पेरिस तथा उन कुछ परिवर्तनों की चर्चा करने लगा जो वह सम्राज्ञी की सेवा से सम्बन्धित लोगों के मामले में करने का इरादा रखता था।

नेपोलियन इधर-उधर की बातों में दिलचस्पी लेता, बोस्से के पर्यटन-प्रेम का मज़ाक़ उड़ाता और ऐसे लापरवाही से बातें करता रहा जैसे कि कोई विख्यात, आत्मविश्वासपूर्ण तथा अपने फ़न का बड़ा माहिर सर्जन आपरेशन शुरू करने से पहले उस समय करता है, जब अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाता है, पेशबन्द बांधता है और रोगी को आपरेशन की मेज़ पर बांधा जाता है – "सब कुछ मेरे हाथ में है और मेरे दिमाग़ में हर चीज़ साफ़ और तय है। जब काम शुरू करना ज़रूरी होगा तो मैं उसे ऐसे पूरा करूंगा जैसे और कोई नहीं कर सकता

और अब मैं हंसी-मज़ाक़ कर सकता हूं तथा जितना ज़्यादा मैं हंसी-मज़ाक़ करता हूं और शान्त हूं, उतना ज़्यादा ही आपको शान्त तथा विश्वास और मेरी प्रतिभा से चकित होना चाहिये।"

पंचमेले पेय का दूसरा गिलास ख़त्म करने के बाद नेपोलियन उस संजीदा काम से पहले, जो जैसाकि उसे प्रतीत हुआ अगले दिन उसके सामने आनेवाला था, आराम करने के लिये बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन के इस काम में उसकी इतनी अधिक दिलचस्पी थी कि उसे नींद नहीं आई और इस चीज़ के बावजूद कि शाम की नमी के कारण उसका ज़ुकाम और बढ़ गया था, रात के तीन बजे वह बहुत ज़ोर से नाक सिनकते हुए तम्बू के बड़े भाग में आ गया। उसने यह पूछा कि रूसी पीछे हट गये या नहीं? उसे बताया गया कि दुश्मन अपनी जगह से पीछे नहीं हटा है। उसने अनुमोदन में सिर हिलाया।

ड्यूटी बजानेवाला एडजुटेंट तम्बू में आया।

"कहो, राप्प, तुम्हारा क्या ख़्याल है – आज हमारा मामला अच्छा रहेगा?" नेपोलियन ने पूछा।

"यक़ीनी तौर पर, हुज़ूर," राप्प ने जवाब दिया।

नेपोलियन ने उसकी तरफ़ देखा।

"हुज़ूर, आपको अपने वे शब्द याद हैं जो आपने स्मोलेन्स्क में मुझसे कहने की कृपा की थी – शराब तैयार हो गयी है, अब उसे पीना चाहिये।"

नेपोलियन के माथे पर बल पड़ गये और वह हाथ पर सिर टिकाकर देर तक चुपचाप बैठा रहा।

"बेचारी फ़ौज," वह अचानक कह उठा, "स्मोलेन्स्क के बाद से वह काफ़ी कम हो गयी है। क़िस्मत तो धूप-छांव का खेल है, राप्प। मैं हमेशा यह कहता रहा हूं और उसे अनुभव करने लगा हूं। लेकिन गार्ड-सेना, वह तो ज्यों की त्यों क़ायम है न?" उसने प्रश्नसूचक ढंग से पूछा।

"हां, हुज़ूर," राप्प ने उत्तर दिया।

नेपोलियन ने चूसनेवाली एक गोली लेकर मुंह में डाली और घड़ी की तरफ़ देखा। उसका सोने को मन नहीं हुआ, सुबह होने में अभी काफ़ी देर थी। किसी तरह की हिदायतें या हुक्म देकर वक़्त

बिताना भी मुमकिन नहीं था, क्योंकि यह सब किया जा चुका था और अब उन्हें व्यावहारिक रूप दिया जा रहा था।

"गार्ड-सेना को रस्क और चावल दे दिये गये?"

"दे दिये गये, हुजूर।"

"चावल भी?"

राप्प ने जवाब दिया कि उसने चावलों के बारे में सम्राट का हुक्म पहुंचा दिया था, लेकिन नेपोलियन ने ऐसे सिर हिलाया मानो उसे विश्वास न हो कि उसके हुक्म की तामील की गयी है। नौकर पंचमेला पेय लेकर आया। नेपोलियन ने राप्प के लिये भी इस पंचमेले पेय का एक गिलास लाने का हुक्म दिया और अपने गिलास से चुपचाप कुछ घूंट पिये।

"मुझे न तो कोई ज़ायक़ा और न गन्ध ही महसूस हो रही है," नेपोलियन ने गिलास को सूंघते हुए कहा। "इस ज़ुकाम ने मुझे बहुत दुखी कर दिया है। लोग इलाज और दवाइयों की लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं। किस काम की है डाक्टरी अगर डाक्टर ज़ुकाम का ही इलाज नहीं कर सकते? कोर्वीज़ार ने मुझे चूसने की ये गोलियां दी हैं, लेकिन इनसे ज़रा भी फ़ायदा नहीं होता। डाक्टर इलाज ही किस बीमारी का कर सकते हैं? इलाज किया ही नहीं जा सकता। हमारा जिस्म ज़िन्दगी की एक मशीन है। वह इसीलिये बनाया गया है। ज़िन्दगी को चैन से जिस्म में रहने दो, ख़ुद उसे ही अपनी रक्षा करने दो। दवाइयों से उसकी शक्ति को कुण्ठित नहीं करो, उनके बिना वह ख़ुद ही कहीं ज़्यादा अपनी रक्षा कर लेगी। हमारा जिस्म एक घड़ी की तरह है जिसे एक नियत काल तक काम करते जाना है। घड़ीसाज़ उन्हें खोल नहीं सकता और आंखों पर पट्टी बांधकर और टटोलते हुए उसे कुछ ठीक-ठाक कर सकता है। हमारा जिस्म ज़िन्दगी की एक मशीन है और बस।" और मानो परिभाषाओं के फेर में पड़ते हुए, जिसका नेपोलियन को बेहद शौक़ था, उसने सहसा एक नयी परिभाषा प्रस्तुत कर दी – "आपको मालूम है राप्प, कि युद्ध-कला किसे कहते हैं?" उसने प्रश्न किया। "किसी एक विशेष क्षण में शत्रु से अधिक शक्तिशाली होने की कला। इससे अधिक कुछ नहीं।"

राप्प ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"कल हमारा कुतूज़ोव से वास्ता पड़ेगा!" नेपोलियन ने कहा।

"देखेंगे कि क्या गुल खिलता है! आपको याद है, ब्राउनाऊ में वह तीन सप्ताह तक एक सेना का कमांडर था और इस अवधि में एक बार भी घोड़े पर सवार होकर मोरचेबन्दी को देखने नहीं गया था। देखेंगे कि क्या गुल खिलता है! "

नेपोलियन ने घड़ी पर नज़र डाली। सुबह के सिर्फ़ चार ही बजे थे। उसने सोना नहीं चाहा, पंचमेला पेय ख़त्म हो चुका था और उसके करने को कुछ नहीं था। वह उठा, उसने इधर-उधर चक्कर लगाया, गर्म फ़ॉक-कोट और टोप पहनकर तम्बू से बाहर चला गया। रात अन्धेरी और नम थी; हल्की बूंदाबांदी की धीमी-सी आवाज़ सुनायी दे रही थी। नज़दीक ही फ़्रांसीसी गार्ड-सेना के बुझते-से अलाव जल रहे थे और दूरी पर धुएं में से रूसी सेना के अलाव जलते दिखाई दे रहे थे। हर तरफ़ ख़ामोशी छायी थी और अपनी जगहों पर डटने के लिये इधर-उधर हिलने-डुलनेवाली फ़्रांसीसी सेना की सरसराहट तथा पैरों की धमक सुनायी दे रही थी।

नेपोलियन ने तम्बू के सामने चक्कर लगाया, अलावों की तरफ़ देखा, फ़ौजियों के पांवों की धमक सुनी और झबरीली टोपी पहने लम्बे-तड़ंगे गार्ड-सैनिक के पास से गुज़रते हुए, जो उसके तम्बू पर पहरा दे रहा था और सम्राट को देखकर एक काले खम्भे की तरह सीधा खड़ा हो गया था, उसके सामने रुक गया।

"कब से सेना में हो?" उसने फ़ौजी जैसी रुखाई, किन्तु साथ ही स्नेह का पुट लिये अपने उसी कृत्रिम तथा अभ्यस्त लहजे में पूछा जिस लहजे में वह हमेशा सैनिकों से बात करता था। सैनिक ने उसे उत्तर दिया।

"अरे! तो तुम पुराने सैनिकों में से हो! रेजिमेंट को चावल मिले?"

"मिल गये, हुज़ूर।"

नेपोलियन ने सन्तोषपूर्वक सिर हिलाया और उसके पास से हट गया।

सुबह के साढ़े पांच बजे नेपोलियन घोड़े पर सवार होकर शेवार्दिनो गांव की ओर चल दिया।

उजाला होने लगा, आसमान साफ़ हो गया और सिर्फ़ पूरब में

ही एक बादल रह गया। सैनिकों द्वारा परित्यक्त अलाव सुबह के धुंधले प्रकाश में धीरे-धीरे बुझते जा रहे थे।

दायीं ओर एक तोप गरज उठी, उसकी गरज हवा में गूंजी और सभी ओर छाई निस्तब्धता में खो गयी। कुछ मिनट बीते। इसके बाद दूसरा, फिर तीसरा धमाका हुआ, हवा कांप उठी। दायीं ओर कहीं निकट ही बहुत ज़ोरदार चौथा तथा पांचवां धमाका हुआ।

प्रारम्भिक धमाकों की गूंज अभी समाप्त नहीं हुई थी कि एक-दूसरे में खोते तथा एक-दूसरे को काटते हुए अधिकाधिक धमाके होते चले गये।

अपने अमले के साथ नेपोलियन शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी पर पहुंचकर घोड़े से नीचे उतरा। खेल शुरू हो गया।

३०

गोर्कि में प्रिंस अन्द्रेई से मिलकर लौटने और अपने सईस को यह आदेश देने के बाद कि वह घोड़े तैयार रखे और उसे तड़के ही जगा दे, प्येर परदे के पीछे फ़ौरन ही वहां गहरी नींद सो गया जहां बोरीस ने उसके लिये व्यवस्था कर दी थी।

अगली सुबह को प्येर के पूरी तरह जागने पर झोंपड़े में कोई नहीं रहा था। छोटी-छोटी खिड़कियों के शीशे झनझना रहे थे। प्येर का सईस उसके नज़दीक खड़ा हुआ उसे झकझोर रहा था।

"हुज़ूर, हुज़ूर, हुज़ूर," प्येर की ओर देखे बिना और सम्भवतः उसे जगा पाने की बिल्कुल आशा छोड़कर तथा उसके कंधे को ज़ोर से हिलाते हुए सईस कहता जा रहा था।

"क्या बात है? क्या लड़ाई शुरू हो गयी? उठने का वक़्त हो गया?" प्येर ने जागते हुए पूछा।

"गोलाबारी तो सुनिये, हुज़ूर," सईस ने, जो अवकाशप्राप्त सैनिक था, जवाब दिया। "सभी महानुभाव जा चुके हैं, स्वयं महामान्य जी भी कभी के यहां से गुज़र चुके हैं।"

प्येर ने जल्दी से कपड़े पहने और पोर्च में भाग ग़या। बाहर अहाते

में रोशनी और ताज़गी थी, ओस पड़ी हुई थी तथा प्रफुल्लता का वातावरण था। उस बादल में से अभी-अभी बाहर निकले सूरज ने, जिसने उसे ढक रखा था, बादल की दरारों के बीच से सामनेवाली गली की छतों पर, सड़क की ओस भीगी धूल, घरों की दीवारों, बाड़ की उन जगहों पर, जहां से उसके तख़्ते निकले हुए थे तथा झोंपड़े के क़रीब खड़े प्येर के घोड़ों पर अपनी किरणें बिखरा दी थीं। बाहर अहाते में तोपों की गरज अधिक साफ़ तौर पर सुनायी दे रही थी। कज़्ज़ाक अर्दली के साथ तेज़ दुलकी चाल से घोड़ा दौड़ाता हुआ एक एडजुटेंट सड़क पर से गुज़रा।

"वक़्त हो गया, काउंट, वक़्त हो गया!" एडजुटेंट ने पुकारकर कहा।

सईस को अपने पीछे-पीछे घोड़ा लाने का हुक्म देकर प्येर सड़क से उस टीले की तरफ़ बढ़ चला जहां से पिछले दिन उसने युद्ध-क्षेत्र को देखा था। इस टीले पर फ़ौजियों की भीड़ थी, मुख्य सैनिक कार्यालय के अफ़सरों की फ़्रांसीसी में बातचीत सुनायी दे रही थी, लाल पट्टीवाली सफ़ेद टोपी से ढका हुआ कुतूज़ोव का पके बालोंवाला सिर तथा कंधों के बीच धंसी सफ़ेद बालोंवाली गुद्दी भी नज़र आ रही थी। कुतूज़ोव दूरबीन से बड़ी सड़क की तरफ़ देख रहे थे।

टीले की सीढ़ियां चढ़ने पर प्येर ने सामने नज़र दौड़ाई और अपने सम्मुख उभरनेवाले दृश्य को देखकर मुग्ध रह गया। यह वही दृश्य था जो उसने इसी टीले से पिछले दिन देखा था, किन्तु अब इस सारे क्षेत्र में सेनायें फैली थीं, तोपों का धुआं छाया हुआ था और प्येर के पीछे, ज़रा बायीं ओर से ऊपर उठ रहे तेज़ सूरज की टेढ़ी किरणें सुबह की साफ़ हवा में से इसपर सुनहरी-गुलाबी आभा तथा काली, लम्बी परछाइयां फैला रही थीं। इस दृश्य को पूरा करनेवाले दूरस्थ वन, जो मानो किसी हरे-पीले क़ीमती पत्थर को काटकर बनाये गये थे, क्षितिज पर लहरिया-सा बना रहे थे और वालूयेवो गांव के परे इनके बीच से बड़ी स्मोलेन्स्क सड़क गुज़र आ रही थी जिसपर फ़ौजें ही फ़ौजें थीं। टीले के क़रीब सुनहरे खेत और छोटे-छोटे जंगल चमक रहे थे। सामने, दायें, बायें – सभी तरफ़ फ़ौजें ही फ़ौजें दिखाई दे रही थीं। यह पूरा दृश्य सजीव, भव्य और अप्रत्याशित था, किन्तु प्येर को युद्ध-क्षेत्र ने, बोरोदिनो और कोलोचा नदी के दोनों ओर की

घाटियों के दृश्य ने सबसे ज़्यादा चकित किया।

कोलोचा नदी के ऊपर, बोरोदिनो के दोनों ओर, ख़ास तौर पर बायीं ओर जहां दलदली तटों से वोइना नदी कोलोचा में गिरती है, धुंध छाई थी जो सूरज के प्रखर प्रकाश में मानो पिघलती थी, छंट जाती थी और चमकते सूरज के निकलने पर पारदर्शी हो जाती थी तथा उसके बीच से नज़र आनेवाली हर चीज़ जादुई रंग तथा स्पष्ट रूप धारण कर लेती थी। तोपों से निकलनेवाला धुआं इस धुंध के साथ मिल गया था और इस धुंध तथा धुएं के बीच से कभी पानी, कभी ओस, कभी नदी के तटों और बोरोदिनो में बड़ी संख्या में एकत्रित सैनिकों की संगीनों पर प्रातःकालीन प्रकाश की तेज़ चमक झलक उठती थी। इसी धुंध के बीच से सफ़ेद गिरजाघर दिखाई देता, कहीं-कहीं बोरोदिनो के झोपड़ों की छतें, कहीं-कहीं ढेरों-ढेर सैनिक, कहीं-कहीं गोलों के हरे बक्से और तोपें नज़र आतीं। यह सभी कुछ हिल-डुल रहा था या हिलता-डुलता प्रतीत होता था, क्योंकि इस सारे विस्तार पर धुंध और धुआं छाया था। जैसे बोरोदिनो के आस-पास की घाटियों पर धुंध छायी थी, वैसे ही उनसे दूर, उनसे अधिक ऊंचाई पर और विशेषतः बायीं ओर की पूरी मोरचा-रेखा के साथ-साथ, जंगलों, खेतों-मैदानों, घाटियों, टीलों की चोटियों के ऊपर, कभी इक्के-दुक्के, कभी दल के दल, कभी रुक-रुककर और कभी लगातार मानो शून्य में से लगातार तोपों के धुएं के बादल बनते जाते थे जो फूलते-फैलते, एक-दूसरे से घुलते-मिलते और घने होते हुए इस पूरे विस्तार पर छा जाते थे।

तोपों के चलने से पैदा होनेवाला यह धुआं और, यह कहना बड़ा अजीब-सा लगता है, इनके धमाके ही इस सारे दृश्य का सबसे बड़ा सौन्दर्य थे।

"धम!" अचानक एक गोल, घना और बैंगनी से भूरा तथा दूधिया-सफ़ेद होता धुएं का बादल नज़र आया और एक क्षण बाद इस धुएं की आवाज़ गूंज उठी – धांय!

"धम-धम!" धुएं के दो बादल ऊपर उठे, एक-दूसरे को धकेलते और एक-दूसरे से एकाकार होते हुए तथा "धांय-धांय" की आवाज़ों ने उस चीज़ की पुष्टि की जो आंखें देख रही थीं।

प्येर उस पहले धुएं की ओर देख रहा था जो एक क्षण पूर्व बहुत

बड़ा तथा ठोस गोला था और जिसकी जगह अब एक ओर को जाते हुए धुएं के छोटे-छोटे गुब्बारे रह गये थे। धम ... (कुछ रुक-रुककर) धम-धम – धुएं से तीन, चार बादल और उठे और हर धम-धम के बाद इतने ही विराम के साथ बड़ी आकर्षक, दृढ़ और सुस्पष्ट धांय-धांय ने इनका उत्तर दिया। धुएं के ये बादल कभी-कभी भागते-से लगते, कभी एक ही जगह पर ठहरे हुए और जंगल, खेत-मैदान तथा चमकती संगीनें इनके पास से भागती दिखाई देतीं। बायीं ओर, मैदानों और झाड़ियों के ऊपर अपनी ऊंची तथा गम्भीर गरज के साथ धुएं के ये बड़े-बड़े बादल उठ रहे थे, जबकि निकट ही, उथले क्षेत्रों तथा जंगलों में बन्दूक़ों के चलाये जाने से धुएं के छोटे-छोटे बादल ऊपर उठते जो गोलाकार न बन पाते और इसी प्रकार इनकी ध्वनि-गूंज भी छोटी-छोटी होती। बन्दूक़ें बेशक अक्सर ठांय-ठांय करतीं, लेकिन किसी क्रम के बिना और तोपों की गरज की तुलना में धीमी आवाज़ में।

प्येर ने वहीं जाना चाहा जहां धुआं था, चमकती संगीनें थीं, गति-विधि और ध्वनियां थीं। उसने अपनी अनुभूतियों की दूसरों की अनुभूतियों से तुलना करने के लिये कुतूज़ोव और उनके अमले की तरफ़ मुड़कर देखा। उसी की भांति वे सभी और, जैसाकि उसे प्रतीत हुआ, उसी के समान भावना से युद्ध-क्षेत्र की ओर देख रहे थे। सभी के चेहरों पर अब **भावना की वह गुप्त गर्माहट** चमक रही थी जो प्येर ने पिछले दिन देखी थी और जिसे वह प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपनी बात-चीत के बाद पूरी तरह से समझ गया था।

"जाओ, मेरे प्यारे, जाओ, प्रभु ईसा की तुमपर कृपादृष्टि रहे!" कुतूज़ोव ने युद्ध-क्षेत्र से नज़र हटाये बिना अपने नज़दीक खड़े जनरल से कहा।

यह आदेश पाकर जनरल टीले से नीचे उतरता हुआ प्येर के पास से गुज़रा।

"उतारे की तरफ़!" किसी स्टाफ़-अफ़सर के यह पूछने पर कि वह कहां जा रहा है, जनरल ने रुखाई और कड़ाई से उत्तर दिया।

"और मैं भी, और मैं भी उधर ही जाऊंगा," प्येर ने सोचा और जनरल की दिशा में चल दिया।

जनरल उसके कज़्ज़ाक अर्दली द्वारा लाये गये घोड़े पर सवार हो

गया। प्येर अपने सईस के पास गया जो उसके घोड़े थामे खड़ा था। यह पूछकर कि कौन-सा घोड़ा अधिक शान्त स्वभाव का है, वह उसपर सवार हो गया, उसने उसके अयाल को पकड़ लिया, घोड़े के पेट से एड़ियां सटा दीं और यह महसूस करते हुए कि उसका चश्मा नीचे खिसक रहा है, मगर वह अयाल तथा लगाम से हाथ हटाने में असमर्थ है, अपने घोड़े को जनरल के पीछे-पीछे सरपट दौड़ाने लगा। टीले पर से उसे देखनेवाले स्टाफ़-अफ़सर मुस्कराये बिना न रह सके।

३१

प्येर जिस जनरल के पीछे-पीछे अपने घोड़े को सरपट दौड़ा रहा था, वह टीले से नीचे जाकर तेज़ी से बायीं ओर मुड़ गया और उसके आंखों से ओझल हो जाने पर प्येर अपने सामने जा रहे प्यादा सैनिकों की क़तारों में पहुंच गया। उसने कभी बायीं तथा कभी दायीं ओर से उनसे आगे निकलने की कोशिश की, मगर सभी जगह समान रूप से खोये-खोये चेहरोंवाले, किसी अदृश्य, किन्तु स्पष्टतः महत्त्वपूर्ण काम में व्यस्त सैनिक थे। वे सभी एक जैसी क्रुद्ध और प्रश्नसूचक दृष्टि से सफ़ेद टोप पहने इस मोटे आदमी की तरफ़ देख रहे थे जो, न जाने किसलिये, अपने घोड़े को उनके ऊपर चढ़ाये ला रहा था।

"किसलिये बटालियन के बीच अपना घोड़ा बढ़ाते जा रहे हो!" एक सैनिक ने पुकारकर कहा। दूसरे सैनिक ने उसके घोड़े पर अपनी बन्दूक़ का दस्ता मारा और प्येर ज़ीन के सिरे पर चिपककर तथा बड़ी मुश्किल से झपटते-कूदते घोड़े को वश में करते हुए फ़ौजियों से आगे, खुले विस्तार में निकल गया।

प्येर के सामने पुल था और पुल के क़रीब गोलियां चलाते हुए अन्य सैनिक खड़े थे। प्येर अपने घोड़े को उनके नज़दीक ले गया। स्वयं यह न जानते हुए प्येर कोलोचा नदी के उस पुल के पास पहुंच गया था जो गोर्कि और बोरोदिनो के बीच था और जिसपर फ़्रांसीसियों ने (बोरोदिनो पर क़ब्ज़ा करने के बाद) लड़ाई के पहले दौर

में हमला कर दिया था। प्येर ने देखा कि उसके सामने पुल था और पुल के दोनों ओर तथा चरागाह में ताज़ा कटी घास की उन टालों की क़तारों के बीच, जो उसने एक दिन पहले देखी थीं, सैनिक धुएं में कुछ कर रहे थे। इस जगह लगातार हो रही गोलाबारी के बावजूद प्येर के दिमाग़ में किसी तरह भी यह ख़्याल नहीं आया कि यही युद्ध-क्षेत्र है। वह सभी ओर से सनसनाती गोलियों और उसके ऊपर से गुज़र रहे गोलों की आवाज़ नहीं सुन रहा था, नदी के उस पार शत्रु-सैनिकों को नहीं देख रहा था तथा बहुत देर तक तो मारे गये तथा घायल सैनिकों को भी नहीं देख पाया, यद्यपि बहुत-से उसके निकट ही गिर रहे थे। होंठों पर लगातार मुस्कान लिये हुए वह तो अपने इर्द-गिर्द ही देख रहा था।

"मोरचे के अग्रभाग में यह किसलिये घोड़ा बढ़ाता जा रहा है?" फिर से किसी ने चिल्लाकर कहा।

"बायें हो जाओ, दायीं तरफ़ मुड़ जाओ," सैनिक चिल्लाये।

प्येर ने अपने घोड़े को दायें मोड़ दिया और अप्रत्याशित ही अपने परिचित, जनरल रायेव्स्की के एडजुटेंट के सामने जा निकला। एडजुटेंट ने गुस्से से प्येर की तरफ़ देखा, सम्भवतः वह भी उसे डांटना चाहता था, किन्तु उसे पहचानकर उसने सिर झुकाते हुए उसका अभिवादन किया।

"आप यहां कैसे आ गये?" उसने पूछा और अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ आगे चला गया।

अपने को ग़लत जगह पर तथा बेकार अनुभव करते तथा इस बात से डरते हुए कि वह फिर से किसी के आड़े न आ जाये, प्येर अपने घोड़े को एडजुटेंट के पीछे-पीछे सरपट दौड़ाने लगा।

"क्या यहीं, इसी जगह लड़ाई हो रही है? मैं आपके साथ आ सकता हूं?" उसने पूछा।

"ज़रा रुकिये, ज़रा रुकिये," एडजुटेंट ने जवाब दिया। वह चरागाह में खड़े एक मोटे-से कर्नल की तरफ़ अपने घोड़े को सरपट दौड़ा ले गया, उससे कुछ कहा और इसके बाद उसने प्येर को सम्बोधित किया।

"आप यहां कैसे आ गये, काउंट?" उसने मुस्कराते हुए प्येर से पूछा। "हमेशा की तरह जिज्ञासा के फेर में पड़े हुए हैं?"

"हां, हां," प्येर ने उत्तर दिया। किन्तु एडजुटेंट अपने घोड़े को मोड़कर उसे आगे बढ़ा ले चला।

"यहां तो फिर भी ख़ैरियत है," एडजुटेंट ने कहा, "लेकिन बग्रातिओनवाले बायें पहलू पर तो मामला बहुत ही गर्म होता जा रहा है।"

"सच?" प्येर ने पूछा। "यह कहां है?"

"मेरे साथ टीले पर चलिये, वहां से यह नज़र आता है। इसके अलावा हमारे तोपख़ाने का अभी कुछ ऐसा बुरा हाल भी नहीं है," एडजुटेंट ने कहा। "तो चलते हैं?"

"हां, मैं आपके साथ चलता हूं," प्येर ने अपने इर्द-गिर्द देखते और नज़रों से अपने सईस को ढूंढ़ते हुए जवाब दिया। लड़खड़ाकर चलते और स्ट्रेचरों पर ले जाये जाते घायलों की तरफ़ प्येर का इसी वक़्त पहली बार ध्यान गया। सुगन्धित घास की टालोंवाले उसी चरा-गाह में, जहां से प्येर पिछले दिन गुज़रा था, एक सैनिक, जिसका सिर अटपटे ढंग से मुड़ा हुआ था तथा जिसकी टोपी नीचे गिर गयी थी, निश्चेष्ट और आड़ा-तिरछा पड़ा था। "इसे क्यों नहीं उठाया गया?" प्येर ने कहना शुरू किया, किन्तु उसी दिशा में देख रहे एड-जुटेंट के चेहरे पर कड़ाई का भाव देखकर चुप्पी लगा गया।

प्येर को अपना सईस नहीं मिला और वह एडजुटेंट के साथ-साथ घाटी में से रायेव्स्की टीले की तरफ़ अपना घोड़ा बढ़ा ले चला। प्येर का घोड़ा एडजुटेंट के घोड़े से पीछे रह जाता था और हर क़दम पर उसे झटका देता था।

"काउंट, ऐसा लगता है कि आपको घुड़सवारी की आदत नहीं है?" एडजुटेंट ने पूछा।

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं, लेकिन यह कुछ ज़्यादा ही उछलता है," प्येर ने ज़रा चकराते हुए जवाब दिया।

"अरे!.. आपका यह घोड़ा तो घायल है," एडजुटेंट कह उठा, "घुटने के ऊपर इसकी अगली दायीं टांग घायल हो गयी है। ज़रूर गोली लगी है। अग्नि-दीक्षा के लिये बधाई देता हूं, काउंट," एडजुटेंट ने फ़्रांसीसी में कहा।

छठी फ़ौजी कोर और तोपख़ाने के पीछे से गुज़रकर, जिसे आगे बढ़ा दिया गया था और जो लगातार तोपों की गरज से कानों को

बहरा कर रहा था, ये दोनों एक छोटे-से जंगल के क़रीब पहुंच गये। जंगल में हल्की ठण्डक और शान्ति थी तथा उसमें पतझर की महक बसी हुई थी। प्येर और एडजुटेंट घोड़ों से उतरकर पैदल ही टीले की तरफ़ चल दिये।

"जनरल यहीं हैं?" टीले के नज़दीक पहुंचकर एडजुटेंट ने पूछा।

"अभी तो यहीं थे, अब उधर गये हैं," दायीं तरफ़ को इशारा करते हुए किसी ने जवाब दिया।

एडजुटेंट ने प्येर की ओर ऐसे देखा मानो यह न समझ पा रहा हो कि अब इसका क्या करे।

"आप मेरी कुछ फ़िक्र न करें," प्येर ने कहा। "मैं टीले पर चला जाता हूं, जा सकता हूं?"

"हां, चले जाइये। वहां से सब कुछ नज़र आता है और इतना ज़्यादा ख़तरा भी नहीं है। मैं बाद में आकर आपको अपने साथ ले जाऊंगा।"

प्येर तोपख़ाने की तरफ़ चल दिया और एडजुटेंट अपने घोड़े को आगे बढ़ा ले गया। इन दोनों की फिर मुलाक़ात नहीं हुई और प्येर को बहुत बाद में ही यह पता चला कि यह एडजुटेंट इसी दिन अपना एक हाथ खो बैठा था।

प्येर जिस टीले पर गया, यह वही प्रसिद्ध टीला था (जो बाद में रूसियों में टीले के तोपख़ाने या रायेव्स्की के तोपख़ाने के नाम से तथा फ़्रांसीसियों में बड़ी मोरचेबन्दी, भयानक मोरचेबन्दी और केन्द्रीय मोरचेबन्दी के नाम से विख्यात हुआ) जिसके इर्द-गिर्द दसियों हज़ार लोगों की जानें गयीं और जिसे फ़्रांसीसी सैनिक स्थिति का सबसे महत्त्व-पूर्ण बिन्दु मानते थे।

इस मोरचेबन्दी पर टीले के तीन ओर ख़न्दकें-खाइयां खोदी गयी थीं। ख़न्दकों में दस तोपें एकसाथ तैनात की गयी थीं जो ख़न्दकों की ओट में बनाये गये बड़े-बड़े सूराख़ों में से गोलाबारी करती थीं।

टीले की सीध में भी दोनों ओर तोपें तैनात थीं और वे भी लगातार गोले बरसा रही थीं। तोपों के कुछ पीछे प्यादा सेना खड़ी थी। इस टीले पर चढ़ते हुए प्येर के दिमाग़ में यह ख़्याल तक नहीं आया था कि छोटी-छोटी ख़न्दकोंवाली यह जगह, जहां कुछ तोपें तैनात थीं

और गोलाबारी कर रही थीं, यही इस लड़ाई की सबसे महत्त्वपूर्ण जगह थी।

इसके विपरीत, प्येर को ऐसे प्रतीत हुआ (इसी कारण कि वह यहां था) कि यह इस लड़ाई की एक सबसे कम महत्त्व की जगह है।

टीले पर पहुंचकर प्येर तोपख़ाने के पासवाली एक ख़न्दक के सिरे पर बैठ गया और अचेतन रूप से होंठों पर ख़ुशी भरी मुस्कान लिये हुए उसे देखने लगा जो कुछ उसके इर्द-गिर्द हो रहा था। इसी मुस्कान को होंठों पर चस्पां किये तथा इस बात की कोशिश करते हुए कि तोपों में गोले भरने तथा लगातार थैले और गोले लेकर अपने क़रीब से भागते हुए सैनिकों के रास्ते में बाधा न बने, वह उठकर खड़ा हो जाता और तोपख़ाने के आस-पास इधर-उधर आता-जाता। इस तोपख़ाने की तोपें अपने धमाकों से कानों के परदे फाड़ती और अपने इर्द-गिर्द के सारे क्षेत्र को बारूद के धुएं से ढकती हुई एक के बाद एक लगातार गोले उगलती जाती थीं।

इस तोपख़ाने की रक्षा करनेवाली प्यादा सेना के सैनिकों में अनुभव होनेवाली भयानक दौड़-धूप और परेशानी की तुलना में यहां, जहां थोड़े से लोग अपने काम में व्यस्त थे और जो एक ख़न्दक द्वारा दूसरों से अलग कर दिये गये थे, यहां सभी साझी, एक जैसी, मानो पारि-वारिक विह्वलता-उत्तेजना महसूस कर रहे थे।

सफ़ेद टोप पहने प्येर की असैनिक आकृति के यहां प्रकट होने से शुरू में तो इन लोगों को कुछ अप्रिय आश्चर्य हुआ। उसके क़रीब से गुज़रनेवाले तोपची हैरानी से, यहां तक कि घबराकर भी उसकी तरफ़ कनखियों से देखते। तोपख़ाने का ऊंचे क़द और लम्बी-लम्बी टांगोंवाला चेचकरू वरिष्ठ अफ़सर मानो यह देखने का बहाना करते हुए कि सिरे पर रखी तोप ढंग से काम कर रही है या नहीं, प्येर के नज़दीक गया और उसने जिज्ञासा से उसकी तरफ़ देखा।

गोल चेहरेवाले एक छोटे नौजवान अफ़सर ने, जो अभी बच्चा-सा लगता था और सम्भवतः हाल ही में फ़ौजी कालेज से निकला था तथा बड़ी मुस्तैदी से अपने को सौंपी गयी दो तोपों का संचालन कर रहा था, प्येर को बड़ी कड़ाई से सम्बोधित करते हुए कहा :

"महानुभाव, आपसे एक तरफ़ को हट जाने का अनुरोध करता हूं। आपका यहां रहना ठीक नहीं।"

रायेव्स्की के तोपख़ाने के निकट प्येर।

सैनिक प्येर को देखते हुए नापसन्दगी से अपने सिर हिलाते थे। किन्तु जब इन सबको विश्वास हो गया कि सफ़ेद टोप पहने यह व्यक्ति न केवल कोई अवांछित हरकत ही नहीं करता था, बल्कि या तो ख़न्दक की ढाल पर ख़ामोश बैठा रहता था या सहमी-सी मुस्कान लिये बड़ी शिष्टता से सैनिकों के रास्ते से हटता हुआ तोपख़ाने के आस-पास ऐसे चैन से घूमता रहता था मानो किसी छायादार सड़क पर सैर कर रहा हो, तब उसके प्रति नापसन्दगी और खीझ का भाव उसी तरह के स्नेह और मज़ाक़ भरी दिलचस्पी में बदलने लगा जैसा भाव वे सामान्यतः अपनी सेना में आ जानेवाले जानवरों – कुत्तों, मुर्ग़ों, बकरियों और अन्य जानवरों के प्रति रखते हैं। इन सैनिकों ने मन ही मन प्येर को अपने परिवार का एक सदस्य मान लिया, उसे अपना लिया, उसे "हमारा रईस" की संज्ञा दे दी तथा उसके बारे में वे प्यार से आपस में हंसी-मज़ाक़ करते थे।

तोप के एक गोले ने प्येर से दो क़दमों की दूरी पर धरती में एक गहरा गढ़ा बना दिया था। गोले द्वारा उछाली गयी और कपड़ों पर गिर जानेवाली मिट्टी को झाड़ते तथा मुस्कराते हुए प्येर ने अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई।

"साहब, आप डरते कैसे नहीं!" लाल चेहरे और चौड़े-चकले कंधोंवाले एक फ़ौजी ने अपने मज़बूत, सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए प्येर से पूछा।

"क्या, तुम डरते हो?" प्येर ने जानना चाहा।

"डरता कैसे नहीं हूं?" सैनिक ने उत्तर दिया। "वह तो रहम नहीं करेगा। वह फटेगा और अन्तड़ियां निकलकर बाहर जा गिरेंगी। डरना तो पड़ता ही है," उसने हंसते हुए कहा।

खिले हुए और स्नेहपूर्ण चेहरों के साथ कुछ फ़ौजी प्येर के पास आकर खड़े हो गये। उन्होंने तो मानो यह आशा नहीं की थी कि वह बाक़ी सभी की तरह बात कर सकता है और उसके ऐसा करने पर उन्हें ख़ुशी हुई।

"हम तो फ़ौजी हैं, यह हमारा धंधा है। लेकिन एक रईस ऐसा करे, यह हैरानी की बात है। बड़ा अजीब रईस है!"

"सब अपनी-अपनी जगह पर!" जवान अफ़सर ने प्येर के गिर्द जमा फ़ौजियों को पुकारकर कहा। यह जवान अफ़सर सम्भवतः पहली

या दूसरी बार अपनी ड्यूटी पूरी कर रहा था और इसलिये सैनिकों तथा अपने से बड़े अफ़सर के साथ बहुत ही नपे-तुले और औपचारिक ढंग से पेश आता था।

तोपों और बन्दूक़ों की गोलाबारी सारे युद्ध-क्षेत्र में, ख़ास तौर पर बायीं ओर, जहां बग्रातिओन की मोरचेबन्दियां थीं, अधिकाधिक तेज़ होती जा रही थी, किन्तु गोलों-गोलियों के चलने से पैदा होने-वाले धुएं के कारण उस जगह से, जहां प्येर था, लगभग कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। इसके अलावा तोपख़ाने के आस-पास उपस्थित, दूसरों से अलग और मानो इस परिवार के लोगों पर ही उसका सारा ध्यान केन्द्रित होकर रह गया था। रण-क्षेत्र के दृश्य और धमाकों से उसके मन में शुरू में अचेतन रूप से पैदा होनेवाली उत्तेजना का एक दूसरी ही भावना ने (ख़ास तौर पर एक सैनिक को चरागाह में अकेले पड़े देखकर) स्थान ले लिया था। ख़न्दक की ढाल पर बैठा हुआ अब वह अपने इर्द-गिर्द के लोगों के चेहरों को ग़ौर से देख रहा था।

दस बजते न बजते तोपख़ाने के कोई बीस घायल आदमी ले जाये जा चुके थे; दो तोपें नाकारा हो गयी थीं, तोपख़ाने पर अधिकाधिक गोले गिरते थे और भनभनाती तथा सनसनाती गोलियां दूर से गुज़र रही थीं। किन्तु तोपख़ाने पर काम करनेवाले मानो इसकी तरफ़ ध्यान ही नहीं दे रहे थे और सभी ओर से ख़ुशी भरी आवाज़ें तथा हंसी-मज़ाक़ सुनायी दे रहे थे।

"क्या शान है इसकी!" एक फ़ौजी ने हवा में उड़ते, ज़ोर से सनसनाते और तोपख़ाने के क़रीब आते गोले को देखकर चिल्लाते हुए कहा। "यहां नहीं! प्यादा फ़ौजियों की तरफ़!" दूसरे फ़ौजी ने यह देखकर कि गोला उनके ऊपर से गुज़रकर रक्षा करनेवाली सेना में जा गिरा है, ठहाका लगाते हुए चुटकी ली।

"क्यों, क्या जान-पहचान है, प्रणाम कर रहे हो?" एक अन्य सैनिक ने उस किसान पर फबती कसी जो उड़े आ रहे गोले को देखकर झुक गया था।

कुछ सैनिक यह देखने को ख़न्दक की ओट के क़रीब जमा हो गये थे कि उनके सामने क्या हो रहा है।

"उन्होंने अगली क़तार हटा ली है, वे पीछे हट गये हैं," ओट के पार संकेत करते हुए उन्होंने कहा।

"अपने काम की तरफ़ ध्यान दो," एक बूढ़ा सार्जेंट इनपर चिल्लाया। "अगर वे पीछे हट गये हैं तो इसका मतलब है कि उनकी वहां ज़रूरत है।" और सार्जेंट ने एक फ़ौजी को कंधों से पकड़कर घुटना मारते हुए उसे ज़रा धकेल दिया। लोगों का ठहाका गूंज उठा।

"पांचवीं तोप में गोले भरने के लिये उसे आगे बढ़ाइये!" एक तरफ़ से आवाज़ें सुनायी दीं।

"एकबार, मिलकर, बजरे खींचनेवालों की तरह," तोप बदलनेवालों की ख़ुशी भरी आवाज़ें गूंज उठीं।

"अरे, उसने तो हमारे साहब का टोप ही नहीं उड़ा दिया," लाल चेहरेवाले विनोदप्रिय सैनिक ने दांत निपोरते हुए कहा। "अरे, बड़े बेढंगे हो," उसने भर्त्सना के लहजे में उस गोले की तरफ़ इशारा करते हुए इतना और कह दिया जो तोप के पहिये और एक फ़ौजी की टांग पर आ गिरा था।

"अरे ओ लोमड़ी के भाइयो!" दूसरे ने घायल को ले जाने के लिये झुककर तोपख़ाने की तरफ़ बढ़ते जन-सैनिकों पर फबती कसी।

"क्यों, यह अच्छा नहीं लगता न? अरे, कौवो, देर क्यों कर रहे हो!" फ़ौजी उन जन-सैनिकों पर चिल्लाये जो उस सैनिक को उठाते हुए झिझक रहे थे जिसकी टांग कट गयी थी।

"अरे, ओ मिट्टी के माधो," सैनिकों ने जन-सेना के किसानों को चिढ़ाते हुए कहा। "इन्हें यह सब पसन्द नहीं!"

प्येर ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि हर गोले के गिरने, हर सैनिक-क्षति के बाद सामान्य सजीवता बढ़ जाती थी।

उमड़ते-घुमड़ते बादल में छिपी बिजली की भांति इन लोगों के भीतर छिपी बढ़ती हुई अग्नि भी (मानो जो कुछ हो रहा था, उसका मुंह चिढ़ाती हुई) उनके चेहरों पर अधिकाधिक ज़ोर से चमक उठती थी।

प्येर अपने सामने युद्ध-क्षेत्र की ओर नहीं देख रहा था और वहां क्या हो रहा था, इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा था। वह तो अधिकाधिक ज़ोर से भड़कनेवाली इस आग को देखने में निमग्न था जो (उसे ऐसा महसूस होता था) उसकी आत्मा में भी धधक रही थी।

सुबह के दस बजे वह पैदल सेना, जो तोपख़ाने के आगे झाड़ियों में तथा छोटी-सी कामेन्का नदी के तट पर तैनात थी, पीछे हट गयी।

बोरोदिनो के मैदान में तोपची।

तोपख़ाने से इन सैनिकों को अपने घायल साथियों को बन्दूक़ों पर उठाये हुए उसके क़रीब से पीछे भागते देखा जा सकता था। अपने अमले के साथ कोई जनरल टीले पर आया, कर्नल से बात करने के बाद उसने झल्लाहट से प्येर की तरफ़ नज़र डाली और तोपख़ाने के पीछे खड़ी पैदल रक्षा-सेना को लेट जाने का आदेश देकर, ताकि गोलाबारी से उसकी कम क्षति हो, टीले से नीचे चला गया। इसके फ़ौरन बाद तोपख़ाने के दायीं ओर, पैदल सेना की क़तारों में ढोल और सैनिक आदेशों की आवाज़ें सुनायी दीं। तोपख़ाने के टीले से यह देखा जा सकता था कि प्यादा सेना की क़तारें कैसे आगे बढ़ रही हैं।

प्येर ख़न्दक की ओट के पीछे से देख रहा था। एक चेहरे की ओर तो उसका विशेष रूप से ध्यान गया। यह एक जवान और पीले चेहरेवाला अफ़सर था जो अपनी तलवार को नीचे लटकाये और बेचैनी से इधर-उधर देखते हुए पीछे हट रहा था।

पैदल सेना की क़तारें धुएं में लुप्त हो गयीं, उनकी लम्बी-लम्बी चीख़ें और बन्दूक़ों से जल्दी-जल्दी गोलियां चलने की आवाज़ें सुनायी दीं। कुछ मिनट बाद ढेरों घायल और स्ट्रेचर उठाकर लानेवाले उधर से वापस लौटे। तोपख़ाने पर अधिकाधिक तेज़ी से गोले गिरने लगे। कुछ घायल और मृत जहां के तहां पड़े रहे। तोपों के आस-पास तोप-ची पहले से कहीं ज़्यादा दौड़-धूप और जल्दी-जल्दी काम करने लगे थे। प्येर की तरफ़ अब कोई भी ध्यान नहीं देता था। एक-दो बार उसे इसलिये डांट दिया गया कि वह रास्ते में आ रहा था। त्योरियां चढ़ाये हुए बड़ा फ़ौजी अफ़सर बड़े-बड़े तथा तेज़ क़दमों से एक तोप से दूसरी तोप की तरफ़ जाता था। छोकरा-सा अफ़सर, जिसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा लाल हो गया था, और भी ज़्यादा दृढ़ता से सैनिकों को आदेश देता था। सैनिक तनावपूर्ण बांकपन से अपना काम करते थे – गोले देते थे, इधर-उधर भागते थे और तोपों में गोले भरते थे। वे आते-जाते हुए ऐसे उछलते थे मानो स्प्रिंगों पर चल रहे हों।

उमड़ता-घुमड़ता बादल नज़दीक आ गया था और सभी चेहरों पर अब वह आग चमक रही थी जिस चमक पर प्येर ने अपना ध्यान केन्द्रित कर रखा था। वह बड़े अफ़सर के क़रीब खड़ा था। छोटा जवान अफ़सर अपनी टोपी पर हाथ टिकाकर सलामी देता हुआ भागकर बड़े अफ़सर के पास गया।

"कर्नल साहब, आपकी सेवा में निवेदन करना चाहता हूं कि सिर्फ़ आठ गोले बाक़ी रह गये हैं। क्या गोलाबारी जारी रखने का हुक्म देते हैं?" उसने जानना चाहा।

"छर्रोंवाला गोला!" बड़े अफ़सर ख़न्दक की ओट के पार देखते और कोई जवाब दिये बिना चिल्लाया।

अचानक कुछ हो गया: जवान अफ़सर ने ज़ोर से हाय की और उस पक्षी की भांति, जिसे उड़ान के समय गोली लग जाये, गुड़ी-मुड़ी-सा होता हुआ ज़मीन पर बैठ गया। प्येर की आंखों के सामने सब कुछ बड़ा अजीब, अस्पष्ट और धुंधला-सा हो गया।

एक के बाद एक सनसनाता हुआ गोला आता और ख़न्दक के सामने मिट्टी की ओट, सैनिकों और तोपों पर गिरता। पहले इन ध्वनियों को न सुननेवाला प्येर अब सिर्फ़ यही ध्वनियां सुन रहा था। तोपख़ाने की बग़ल से उसके दायीं ओर से "हुर्रा!" चिल्लाते हुए सैनिक आगे की तरफ़ नहीं, बल्कि, जैसाकि प्येर को लगा, पीछे की ओर भाग रहे थे।

एक गोला ख़न्दक की उस ओट पर आकर गिरा जिसके सामने प्येर खड़ा था। मिट्टी ज़ोर से ऊपर उछली, उसकी आंखों के सामने काला गोला झलक उठा और उसी क्षण किसी चीज़ में जा धंसा। तोपख़ाने की ओर बढ़ रहे जन-सैनिक वापस भाग गये।

"छर्रोंवाले गोले ही!" अफ़सर चिल्लाया।

सार्जेंट भागता हुआ बड़े अफ़सर के पास आया और सहमी-सी फुसफुसाहट में (जैसे खाने की मेज़ पर बटलर अपने मालिक को यह सूचना देता है कि उसने जो शराब लाने को कहा है, वह और नहीं है) यह बताया कि गोले चुक गये हैं।

"बदमाश कहीं के! ये क्या कर रहे हैं!" प्येर की ओर मुड़ते हुए अफ़सर चिल्ला उठा। बड़े अफ़सर का चेहरा लाल और पसीने से तर था, उसकी त्योरियां चढ़ी हुई थीं और आंखें चमक रही थीं। "भागकर रिज़र्व से गोलों के बक्से लाओ!" प्येर को नाराज़गी से देखते और अपने सैनिक को सम्बोधित करते हुए वह ज़ोर से चिल्लाया।

"मैं जाता हूं," प्येर ने कहा। बड़ा फ़ौजी अफ़सर उसे कोई जवाब दिये बिना बड़े-बड़े डग भरता हुआ दूसरी ओर चला गया।

"गोले नहीं चलाओ... इन्तज़ार करो!" वह चिल्लाया।

वह सैनिक, जिसे गोले लाने का हुक्म दिया गया था, प्येर से टकरा गया।

"साहब, यह जगह आपके लिये नहीं है," सैनिक इतना कहकर नीचे भाग गया। प्येर उस जगह से बचते हुए, जहां जवान अफ़सर बैठा था, सैनिक के पीछे-पीछे भाग चला।

प्येर के ऊपर से एक, दूसरा और तीसरा गोला उड़ता हुआ गुज़रा और उसके आगे, उसके दायें-बायें तथा पीछे ज़मीन से जा टकराया। प्येर टीले से नीचे भाग गया। "मैं कहां जा रहा हूं?" हरे बक्सों के क़रीब पहुंचकर वह सोचने लगा। वह इस दुविधा में कि आगे जाये या पीछे, यहीं खड़ा रहा। सहसा एक भयानक झटके ने उसे पीछे, ज़मीन पर गिरा दिया। इसी क्षण वह बहुत तेज़ कौंध से चौंधिया गया तथा अगले ही क्षण ज़ोरदार आवाज़, सनसनाहट तथा धमाके से मानो उसके कान बहरे हो गये।

होश आने पर प्येर ने अपने को ज़मीन पर हाथ टिकाये हुए बैठा पाया। गोलों का बक्सा, जिसके क़रीब वह धमाके से पहले खड़ा था, अब वहां नहीं था। उसकी जगह झुलसी घास पर जले हुए हरे तख़्ते तथा चिथड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। घोड़ा-गाड़ी का एक घोड़ा बम के टुकड़ों को घसीटता हुआ उसके क़रीब से दूर भाग गया तथा दूसरा घोड़ा ख़ुद प्येर की भांति ज़मीन पर पड़ा हुआ बहुत दर्दनाक ढंग तथा ज़ोर से हिनहिना रहा था।

३२

भय से अपनी सुध-बुध खोये हुए प्येर उछलकर खड़ा हुआ और अपने इर्द-गिर्द मण्डरानेवाले सभी ख़तरों से पनाह पाने के एकमात्र उपाय के रूप में तोपख़ाने की तरफ़ वापस भाग चला।

ख़न्दक में प्रवेश करते समय प्येर ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिया कि तोपख़ाने से गोलाबारी की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन कुछ लोग वहां कुछ कर रहे थे। प्येर यह नहीं समझ पाया

कि ये कौन लोग थे। उसने बड़े कर्नल को अपनी ओर पीठ किये ख़न्दक की ओट पर ऐसे झुका हुआ पाया मानो नीचे कुछ देख रहा हो। उसने एक सैनिक को भी, जिसकी ओर उसका पहले ध्यान जा चुका था, उन लोगों से अपने को मुक्त करने की कोशिश करते देखा। उन्होंने उसका हाथ पकड़ रखा था और वह "भाइयो मदद करो!" चिल्ला रहा था। प्येर ने ऐसी ही कुछ अन्य अजीब-सी बातें भी देखीं।

किन्तु वह अभी यह नहीं समझ पाया था कि कर्नल मारा जा चुका है, कि "भाइयो मदद करो!" चिल्लानेवाला सैनिक बन्दी बना लिया गया है और उसकी आंखों के सामने ही एक अन्य सैनिक की पीठ में संगीन भोंककर उसे मार डाला गया है। प्येर भागता हुआ ख़न्दक में पहुंचा ही था कि एक दुबला-पतला, पसीने से तर और पीले चेहरेवाला व्यक्ति, जो नीली वर्दी पहने था और हाथ में तलवार लिये था, कुछ चिल्लाता हुआ उसपर झपटा। प्येर ने सहजवृत्ति से इस टकराव से अपने को बचाते हुए, क्योंकि वे एक-दूसरे को देखे बिना एक-दूसरे की तरफ़ तेज़ी से झपटे थे, अपने हाथ आगे बढ़ा दिये और एक हाथ से इस व्यक्ति (यह फ़्रांसीसी अफ़सर था) का कंधा तथा दूसरे से गला दबोच लिया। फ़्रांसीसी अफ़सर ने अपनी तलवार फेंककर प्येर का गरेबान पकड़ लिया।

ये दोनों कुछ क्षण तक सहमी-सहमी नज़रों से एक-दूसरे के अपरिचित चेहरे को देखते रहे और दोनों ही यह नहीं समझ पा रहे थे कि उन्होंने क्या किया है और उन्हें क्या करना चाहिये। "मैं बन्दी बना लिया गया हूं या मैंने उसे बन्दी बना लिया है?" दोनों में से हर कोई यही सोच रहा था। किन्तु सम्भवतः फ़्रांसीसी अफ़सर इस बात को ज़्यादा मानने को तैयार लग रहा था कि उसे बन्दी बना लिया गया है, क्योंकि नैसर्गिक भय से गतिशील होता हुआ प्येर का मज़बूत हाथ उसके गले को अधिकाधिक मज़बूती से दबाता जाता था। फ़्रांसीसी ने कुछ कहना चाहा, किन्तु अचानक इसी वक़्त इनके सिरों के ऊपर, बहुत कम ऊंचाई पर और इतनी ज़ोर से तोप का गोला सनसनाया तथा फ़्रांसीसी अफ़सर ने इतनी तेज़ी से अपना सिर नीचे झुकाया कि प्येर को प्रतीत हुआ कि फ़्रांसीसी का सिर धड़ से अलग हो गया है।

प्येर ने भी सिर झुका लिया और हाथ नीचे कर लिये। इस बारे

में अब और अधिक सोचे बिना कि किसने किसको बन्दी बनाया है, फ़्रांसीसी तोपख़ाने की तरफ़ वापस भाग गया और प्येर रास्ते में पड़े मुर्दों तथा घायलों के साथ ठोकर खाता हुआ, जो उसे अपनी टांगें पकड़ते प्रतीत होते थे, टीले से नीचे भाग चला। किन्तु उसके टीले से नीचे पहुंचने के पहले ही उसे रूसी सैनिकों की बड़ी भीड़ सामने से आती दिखाई दी। ये सैनिक गिरते, ठोकरें खाते, ख़ुशी से चिल्लाते हुए बड़ी तेज़ी से तोपख़ाने की तरफ़ दौड़ रहे थे। (यह वह हमला था जिसका अपने को श्रेय देते हुए येर्मोलोव ने यह कहा था कि केवल उसी की बहादुरी तथा ख़ुशक़िस्मती से ऐसा कारनामा मुमकिन हुआ था। यह वही आक्रमण था जिसमें उसने मानो सेंट जार्ज के कुछ तमग़े, जो उसकी जेब में थे, इसलिये टीले पर फेंक दिये थे कि जो सैनिक सबसे पहले वहां पहुंचेंगे, वही उन्हें ले लेंगे।)

तोपख़ाने पर क़ब्ज़ा कर लेनेवाले फ़्रांसीसी भाग खड़े हुए। "हुर्रा!" चिल्लाते हुए हमारे सैनिक फ़्रांसीसियों को तोपख़ाने से इतनी अधिक दूर तक खदेड़ते चले गये कि उन्हें रोकना मुश्किल हो गया।

तोपख़ाने से बन्दियों को नीचे लाया गया जिनमें एक फ़्रांसीसी जनरल भी था और जिसे रूसी अफ़सरों ने घेर लिया। पीड़ा के कारण विकृत चेहरोंवाले ढेरों परिचित-अपरिचित रूसी-फ़्रांसीसी घायल चलते या रेंगते हुए तोपख़ाने से नीचे आ रहे थे या उन्हें स्ट्रेचरों पर नीचे लाया जा रहा था। प्येर फिर से टीले पर चला गया जहां उसने एक घण्टे से अधिक समय बिताया था और उस पारिवारिक मण्डली में से, जिसने उसे अपना सदस्य मान लिया था, एक भी व्यक्ति वहां नहीं मिला। यहां अनेक अपरिचित मृतक थे। किन्तु कुछ को उसने पहचान लिया। जवान अफ़सर ख़न्दक की ओट के क़रीब ख़ून के डबरे में पहले की तरह ही गुड़ी-मुड़ी बना बैठा था। लाल चेहरेवाले सैनिक का शरीर अभी भी ऐंठ रहा था, मगर उसे उठाकर नहीं ले जाया गया था।

प्येर टीले से नीचे भाग गया।

"नहीं, अब तो ये लोग यह सब बन्द कर देंगे, उन्होंने जो कुछ किया है, उससे त्रस्त हो उठेंगे!" प्येर लक्ष्यहीन ढंग से युद्ध-क्षेत्र की ओर से आ रहे अनेकानेक स्ट्रेचर ले जानेवालों के पीछे-पीछे चलता हुआ सोच रहा था।

किन्तु धुएं की चादर से ढका सूरज अभी आकाश में ऊंचा था

और सामने तथा ख़ास तौर पर बायीं तरफ़ से सेम्योनोव्स्कोये के क़रीब धुएं के बादल में अभी भी घमासान लड़ाई चल रही थी तथा गोलियों की ठांय-ठांय और तोपों की धांय-धांय कम होने के बजाय ऐसे तेज़ होती जा रही थी जैसे कि कोई व्यक्ति अपनी बची-बचायी सारी शक्ति बटोरकर आख़िरी बार पूरे ज़ोर से चिल्ला उठता है।

३३

बोरोदिनो की लड़ाई मुख्य रूप से तो बोरोदिनो और बग्रातिओन की मोरचेबन्दियों के बीच के एक हज़ार साजेन * के क्षेत्र में हुई। (इस क्षेत्र के बाहर एक ओर तो रूसियों ने उवारोव की घुड़सेना के रूप में मध्याह्न के समय कुछ शक्ति-प्रदर्शन किया था और दूसरी ओर उतीत्सा से कुछ दूर पोन्यातोव्स्की तथा तुच्कोव की सेनाओं के बीच कुछ झड़पें हुई थीं। किन्तु युद्ध-क्षेत्र के बीचवाले भाग में जो कुछ हुआ, उसकी तुलना में तो ये अलग-थलग और मामूली-सी फ़ौजी कार्रवाइयां थीं।) बोरोदिनो और मोरचेबन्दियों के बीच, जंगल के क़रीब, दोनों ओर से खुले और नज़र आनेवाले विस्तार में किसी तरह की चतुराई के बिना बहुत ही सीधे-सादे ढंग से युद्ध की मुख्य कार्रवाई हुई।

दोनों ओर से कई सौ तोपों की दनदनाहट और गोलाबारी से लड़ाई शुरू हुई।

बाद में जब धुएं ने सारे मैदान को ढक दिया तो देस्से तथा कोम्पान के दो फ़्रांसीसी डिवीज़न दायीं ओर से मोरचेबन्दियों की तरफ़ और बायीं तरफ़ से वाइसराय की रेजिमेंटें बोरोदिनो की तरफ़ बढ़ीं।

शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी से, जहां नेपोलियन खड़ा था, बग्रातिओन की मोरचेबन्दियां एक वेर्स्ता दूर थीं और बोरोदिनो दो वेर्स्ता से कुछ ज़्यादा फ़ासले पर बिल्कुल सीध में था। इसलिये वहां जो कुछ हो रहा था, नेपोलियन उसे नहीं देख सकता था, ख़ास तौर पर इस

---

* साजेन – पुरानी रूसी माप जो २ मीटर १३ सेंटीमीटर के बराबर है। – अनु०

कारण कि धुएं ने धुंध के साथ मिलकर इस सारे क्षेत्र को ढक दिया था। मोरचेबन्दियों की तरफ़ भेजे जानेवाले देस्से के डिवीज़न के सैनिक केवल उसी वक़्त तक नज़र आते रहे, जब तक वे उस खड्ड से नीचे उतरते रहे जो उन्हें मोरचेबन्दियों से अलग करता था। किन्तु जैसे ही वे खड्ड में उतर गये, वैसे ही मोरचेबन्दियों पर तोपों तथा बन्दूक़ों का धुआं इतना घना हो गया कि उसने खड्ड के दूसरी ओर की पूरी चढ़ाई को अपनी चादर में लपेट लिया। धुएं के बीच से कभी-कभी किसी चीज़ की झलक मिलती – सम्भवतः लोगों की और कभी-कभी संगीनें चमक उठतीं। किन्तु ये लोग हिल-डुल रहे थे या एक ही जगह पर खड़े थे, वे फ़्रांसीसी थे या रूसी – शेवार्दिनो की मोरचेबन्दी से यह देख पाना सम्भव नहीं था।

सूरज ज़ोर से चमकता हुआ और ऊपर चला गया। उसकी टेढ़ी-तिरछी किरणें अब सीधी नेपोलियन के चेहरे पर पड़ रही थीं जो हाथ की ओट किये हुए मोरचेबन्दियों की तरफ़ देख रहा था। धुआं मोरचे-बन्दियों के सामने हवा में मानो लटका हुआ था और कभी तो ऐसे लगता कि धुआं हिल-डुल रहा है तथा कभी यह प्रतीत होता कि सेनायें हिल-डुल रही हैं। गोलाबारी के बीच से कभी-कभी लोगों की चीख़-चिल्लाहट सुनायी देती, मगर यह जानना सम्भव नहीं था कि वे वहां क्या कर रहे हैं।

टीले पर खड़ा हुआ नेपोलियन दूरबीन में से देख रहा था और दूरबीन के शीशे के छोटे-से घेरे में से उसे धुआं तथा लोग दिखाई देते थे, कभी अपने और कभी रूसी; किन्तु जब वह दूरबीन के बिना सिर्फ़ आंखों से ही देखता तो उसे वह नज़र न आता जो उसने देखा होता।

वह टीले से नीचे उतरकर उसके सामने इधर-उधर आने-जाने लगा।

नेपोलियन जब-तब रुक जाता, कान लगाकर गोलाबारी को सुनता और बहुत ग़ौर से युद्ध-क्षेत्र की तरफ़ देखता।

टीले के दामन से, जहां अब नेपोलियन खड़ा था, न केवल वहीं से, न केवल टीले से, जहां उसके कुछ जनरल खड़े थे, बल्कि मोरचे-बन्दियों से भी, जहां कभी तो रूसी और कभी फ़्रांसीसी सैनिक एकसाथ तो कभी बारी-बारी से और कभी मृत, घायल, जीवित, भयभीत

और डर से बौखलाये हुए दिखाई देते, यह समझना कठिन था कि वहां क्या हो रहा है। बन्दूक़ों और तोपों की अविराम गोलाबारी के बीच कई घण्टों तक जारी रहनेवाली लड़ाई की इस जगह पर कभी तो सिर्फ़ रूसी, कभी सिर्फ़ फ़्रांसीसी, कभी प्यादा तो कभी घुड़सैनिक दिखाई देते। वे प्रकट होते, गिरते, गोलियां चलाते, हाथापाई करते और यह न समझ पाते हुए कि एक दूसरे के साथ क्या करें, चीख़ते-चिल्लाते और वापस भाग जाते।

नेपोलियन द्वारा भेजे जानेवाले एडजुटेंट और उसके मार्शलों के अर्दली लड़ाई की स्थिति के बारे में रिपोर्टें लेकर लगातार उसके पास आते रहते। किन्तु ये सभी रिपोर्टें झूठी होतीं। ये इसलिये झूठी होतीं कि लड़ाई की गर्मागर्मी में यह कहना मुमकिन नहीं था कि फ़लां वक़्त वहां क्या हो रहा है, इसलिये भी झूठी थीं कि बहुत-से एडजुटेंट वास्तविक युद्ध-स्थल तक नहीं जाते थे और दूसरों के मुंह से सुनी-सुनायी बातें ही बताते थे और ये सूचनायें इस कारण भी सही नहीं होती थीं कि जब तक एडजुटेंट दो-तीन वेर्स्ता का वह फ़ासला तय करते, जो युद्ध-क्षेत्र और नेपोलियन के बीच था, हालात बदल जाते तथा वह जो समाचार लेकर आता, ग़लत हो जाता। मिसाल के तौर पर एक एडजुटेंट सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ वाइसराय से यह ख़बर लेकर आया कि बोरोदिनो पर क़ब्ज़ा कर लिया गया है और कोलोचा नदी का पुल फ़्रांसीसियों के हाथ में आ गया है। एडजुटेंट ने नेपोलियन से यह जानना चाहा कि क्या वह सेना को पुल पार करने का आदेश देता है या नहीं? नेपोलियन ने इस सेना के लिये पुल पार किये बिना वहीं पर क़तारों में खड़े होकर इन्तज़ार करने का हुक्म दिया। लेकिन न सिर्फ़ उस वक़्त जब नेपोलियन ने यह हुक्म दिया, बल्कि उसी वक़्त, जब एडजुटेंट बोरोदिनो से रवाना ही हुआ था, रूसियों ने उस लड़ाई के दौरान, जिसमें प्येर भी किसी हद तक शामिल हो गया था, पुल पर फिर से क़ब्ज़ा करके उसे जला दिया था।

मोरचेबन्दियों से सरपट घोड़ा दौड़ाकर आनेवाले डरे-सहमे और पीले चेहरेवाले एक एडजुटेंट ने नेपोलियन को यह सूचना दी कि फ़्रांसीसियों का हमला नाकाम बना दिया गया है, कोम्पान घायल हो गया है और दावू मारा गया है। किन्तु वास्तव में उसी वक़्त, जब एडजुटेंट से यह कहा जा रहा था कि फ़्रांसीसियों का हमला नाकाम बना दिया

गया है, फ़्रांसीसी सेना के एक दूसरे भाग ने मोरचेबन्दियों पर क़ब्ज़ा कर लिया था तथा दावू ज़िन्दा था और उसे मामूली-सी चोट ही लगी थी। अनिवार्य रूप से इस तरह की झूठी सूचनाओं के आधार पर नेपोलियन अपने आदेश देता था जो या तो उसके आदेश देने के पहले ही पूरे हो चुके होते थे या फिर जिन्हें पूरा करना सम्भव नहीं था और जो पूरे नहीं किये जाते थे।

वे मार्शल और जनरल, जो युद्ध-क्षेत्र के अधिक निकट थे, किन्तु नेपोलियन की भांति ख़ुद लड़ाई में हिस्सा नहीं ले रहे थे तथा कभी-कभार ही गोलाबारी की सीमा में जाते थे, नेपोलियन से पूछे बिना अपनी हिदायतें और ये आदेश देते थे कि किधर तथा कहां से गोलियां चलायी जायें, घुड़सेना किस तरफ़ घोड़े दौड़ाये और पैदल सेना दौड़ती हुई किधर आगे बढ़े। मगर नेपोलियन की भांति उनके आदेश भी बहुत कम और कभी-कभी ही पूरे किये जाते थे। अधिकतर तो उनके आदेशों के विपरीत ही परिणाम सामने आते थे। जिन सैनिकों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया जाता था, वे छर्रों की गोलाबारी का सामना होने पर पीछे भागने लगते थे; जिन सैनिकों को एक ही जगह पर खड़े रहने का हुक्म दिया जाता था, वे अप्रत्याशित ही रूसियों को अपने सम्मुख देखकर कभी तो आगे और कभी पीछे भागने लगते थे तथा घुड़सेना आदेश के बिना ही भागते हुए रूसी सैनिकों का पीछा करने लगती थी। इसी तरह दो घुड़सेना रेजिमेंटें सरपट घोड़े दौड़ाती हुई सेम्योनोव्स्कोये गांव के खड्ड के पार गयीं और जैसे ही टीले पर पहुंचीं, वैसे ही घोड़ों को ताबड़तोड़ दौड़ाती हुई वापस लौट गयीं। इसी ढंग से प्यादा फ़ौज भी कभी-कभी उस दिशा के बजाय, जिधर उसे जाने का आदेश दिया जाता था, बिल्कुल दूसरी ही दिशा में दौड़ने लगती थी। तोपों को कब और किधर भेजा जाये, प्यादा फ़ौजों को गोलियां चलाने तथा रूसी प्यादा फ़ौजों को कुचलने के लिये घुड़सेना को कब रवाना किया जाये – ये सभी आदेश सेनाओं के निकट उपस्थित रहनेवाले अफ़सर न केवल नेपोलियन, बल्कि नेय, दावू और म्युराट तक से पूछे बिना ही देते थे। वे आदेश पूरे न करने और अपनी ही इच्छा से कोई क़दम उठाने के कारण किसी तरह की मुसीबत में फंसने से नहीं डरते थे, क्योंकि लड़ाई में मनुष्य की सबसे क़ीमती चीज़ यानी उसकी ज़िन्दगी का सवाल होता है और इसलिये कभी तो ऐसा लगता

है कि पीछे भागने, कभी आगे भागने से जान बच सकती है और इसलिये लड़ाई की आग के बिल्कुल निकट होनेवाले लोग उस क्षण के मूड के मुताबिक़ कार्रवाई करते थे। वास्तव में सेनाओं की आगे-पीछे की ऐसी गति-विधियों से उनकी स्थिति न तो बेहतर होती थी और न उसमें कोई विशेष परिवर्तन ही होता था। इनके एक-दूसरी पर झपटने, एक-दूसरी पर चढ़ दौड़ने से लगभग उन्हें कोई हानि नहीं होती थी, मगर उस विस्तार में, जहां सैनिक दौड़ते-भागते थे, गोलों-गोलियों की बौछारों से ही इन्हें हानि पहुंचती थी, ये मौत के शिकार होते थे तथा लुंज-पुंज हो जाते थे। जैसे ही ये लोग गोले-गोलियों की बौछारोंवाले क्षेत्र से बाहर जाते, वैसे ही उनके पीछे खड़े हुए अफ़सर उन्हें फिर से व्यवस्थित कर देते, उन्हें अनुशासन के अधीन ले आते, इस अनुशासन के बल पर उन्हें पुनः गोलाबारी के क्षेत्र में ले जाते और जहां वे (मृत्यु के भय के कारण) अनुशासन को ताक़ पर रखकर भीड़ की आकस्मिक मनःस्थिति का अनुकरण करते हुए फिर से इधर-उधर भागने लगते।

३४

दावू, नेय और म्युराट—नेपोलियन के ये जनरल गोलाबारी के क्षेत्र के निकट थे। वे इस आग में कभी-कभी ख़ुद भी जाते थे और बड़ी-बड़ी व्यवस्थित-अनुशासित सेनाओं को कई बार अग्नि-क्षेत्र में ले जा चुके थे। किन्तु पहले की सभी लड़ाइयों में अनिवार्य रूप से जो कुछ होता रहा था, उसके प्रतिकूल, शत्रु के भागने का प्रत्याशित समाचार पाने के बजाय ये अनुशासित सेनायें अस्त-व्यस्त तथा डरी-घबरायी भीड़ के रूप में **वहां से** लौटतीं। ये इन्हें फिर से व्यवस्थित करते, किन्तु लोगों की संख्या लगातार कम होती जा रही थी। दोपहर को यह अनुरोध करने के लिये म्युराट ने नेपोलियन के पास अपना एडजुटेंट भेजा कि वह कुछ और कुमक भेज दे।

नेपोलियन टीले के दामन में बैठा हुआ पंचमेला पेय पी रहा था, जब म्युराट का एडजुटेंट सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास आया

और उसने यह विश्वास दिलाया कि अगर नेपोलियन एक डिवीज़न और भेज दे तो रूसी कुचल दिये जायेंगे।

"कुमक?" नेपोलियन ने ऐसे कठोरतापूर्ण आश्चर्य से, मानो वह इस शब्द को समझता ही न हो तथा म्युराट के समान लम्बे-लम्बे घुंघराले काले बालोंवाले छोकरे जैसे इस सुन्दर एडजुटेंट को ग़ौर से देखते हुए पूछा। "कुमक!" नेपोलियन ने कुछ सोचा। "कुमक मांगने का सवाल ही कहां पैदा होता है जब मैंने आधी सेना रूसियों के एक कमज़ोर और मोरचेबन्दी के बिना पहलू के विरुद्ध उन्हें दे रखी है!"

"नेपल्ज़ के बादशाह से कह दीजिये कि अभी दोपहर नहीं हुई और मैं शतरंज की स्थिति को अभी साफ़ तौर पर नहीं देख पा रहा हूं। जाइये ..."

सलामी के अन्दाज़ में अपने हाथ को टोपी पर ही टिकाये हुए लम्बे बालोंवाले सुन्दर और छोकरे जैसे एडजुटेंट ने गहरी सांस ली तथा अपने घोड़े को फिर से उस तरफ़ ही सरपट दौड़ा ले चला जहां लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा था।

नेपोलियन उठा और कोलेनकूर तथा बेरथियर को अपने पास बुलवाकर लड़ाई से सम्बन्ध न रखनेवाले मामलों पर बातचीत करने लगा।

इस बातचीत के दौरान, जिसमें नेपोलियन रुचि लेने लगा था, बेरथियर का ध्यान उस जनरल की ओर खिंच गया जो अपने अमले के साथ पसीने से तर घोड़े को टीले की तरफ़ सरपट दौड़ाता आ रहा था। यह जनरल बेल्यार था। वह घोड़े से नीचे उतरा, तेज़ क़दमों से सम्राट के पास आया और बड़े साहस से तथा ऊंची आवाज़ में कुमक की बेहद ज़रूरत को साबित करने लगा। उसने क़सम खाकर कहा कि अगर नेपोलियन एक डिवीज़न और दे दे तो रूसियों का खेल ख़त्म हो जायेगा।

नेपोलियन ने कंधे झटके और कोई जवाब दिये बिना इधर-उधर चहलक़दमी करता रहा। बेल्यार अमले के जनरलों के साथ, जिन्होंने उसे घेर लिया था, ऊंचे-ऊंचे और बड़े उत्साह से बातें करने लगा।

"आप बहुत उत्तेजित हैं, बेल्यार," नेपोलियन ने जनरल के पास जाकर कहा। "उत्तेजना के क्षणों में आदमी से ग़लती हो सकती है। वहां जाकर फिर से स्थिति को देखिये और मेरे पास आइये।"

बेल्यार अभी गया ही था कि रण-क्षेत्र की दूसरी दिशा से एक नया सन्देशवाहक आ गया।

"अब यह और क्या नयी मुसीबत है?" नेपोलियन ने लगातार ख़लल पड़ने के कारण खीझ उठनेवाले आदमी के लहजे में पूछा।

"हुज़ूर, ड्यूक ने..." एडजुटेंट ने कहना शुरू किया।

"कुमक मांगी है?" नेपोलियन ग़ुस्सा ज़ाहिर करते हुए कह उठा। एडजुटेंट ने हामी भरते हुए सिर झुकाया और अपनी बात कहने लगा। किन्तु नेपोलियन ने मुंह फेर लिया, दो क़दम बढ़ाये, रुका, लौटा और बेरथियर को अपने क़रीब बुलाया। "रिज़र्व फ़ौज भेजनी होगी," हाथों को ज़रा फैलाते हुए उसने कहा। "आपके ख़्याल में किसे भेजना चाहिये?" उसने बेरथियर से, उस कलहंस से पूछा जिसे, जैसाकि वह बाद में उसके बारे में कहता रहा, उसने उक़ाब बना दिया था।

"हुज़ूर, क्लापारेड के डिवीज़न को भेज दिया जाये?" बेरथियर ने पूछा जिसे सभी फ़ौजी डिवीज़नों, रेजिमेंटों और बटालियनों के नाम ज़बानी याद थे।

नेपोलियन ने सहमति प्रकट करते हुए सिर झुकाया।

एडजुटेंट अपने घोड़े को क्लापारेड के डिवीज़न की तरफ़ सरपट दौड़ा ले गया। कुछ मिनट के बाद टीले के पीछे खड़ी हुई तरुण गार्ड-सेना अपनी जगह से चल पड़ी। नेपोलियन चुपचाप इस तरफ़ देखता रहा।

"नहीं," उसने अचानक बेरथियर को सम्बोधित किया। "मैं क्लापारेड को नहीं भेज सकता। फ़्रिआन के डिवीज़न को भेज दीजिये," उसने कहा।

यद्यपि क्लापारेड के डिवीज़न की जगह फ़्रिआन के डिवीज़न को भेजने में किसी तरह का कोई फ़ायदा नहीं था और क्लापारेड के डिवीज़न को वापस बुलाने तथा फ़्रिआन के डिवीज़न को भेजने में स्पष्ट असुविधा और देर भी हो रही थी, फिर भी नेपोलियन का आदेश अक्षरशः पूरा किया गया। नेपोलियन ने इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि अपनी सेना के मामले में वह उसी डाक्टर जैसी भूमिका अदा कर रहा है जो अपनी दवाइयों से बाधा डालता है तथा जिस

भूमिका को वह इतनी अच्छी तरह से समझता था और जिसकी आलोचना करता था।

अन्य सेनाओं की भांति फ़िआन का डिवीज़न भी युद्ध-क्षेत्र के धुएं में ओझल हो गया। विभिन्न दिशाओं से एडजुटेंट सरपट घोड़े दौड़ाते आते रहे और सभी, मानो उन्होंने आपस में साज़िश कर ली हो, एक ही बात कहते थे। सभी कुमक मांगते थे, सभी यही कहते थे कि रूसी अपने मोरचों पर डटे हुए हैं और ऐसी भयानक गोलाबारी कर रहे हैं, जिससे फ़्रांसीसी सेनायें नष्ट होती जा रही हैं।

नेपोलियन सोच में डूबा हुआ सफ़री कुर्सी पर बैठा था।

यात्रा-प्रेमी श्रीमान बोस्से, जिसने सुबह से कुछ नहीं खाया था, सम्राट के पास आया और उसने आदरपूर्वक यह कहने का साहस किया कि वह भोजन कर ले।

"मैं आशा करता हूं कि अब तो आप महामहिम को विजय की बधाई दे सकता हूं," उसने कहा।

नेपोलियन ने चुप रहते हुए सिर हिलाकर इन्कार किया। यह मानते हुए कि नेपोलियन के इन्कार का भोजन से नहीं, बल्कि विजय से सम्बन्ध है, श्रीमान बोस्से ने आदरयुक्त मज़ाक़िया अन्दाज़ में यह कहा कि दुनिया में ऐसे कोई भी कारण नहीं हैं जो भोजन के उपलब्ध होने पर उसे खाने में बाधा डाल सकें।

"जाइये यहां से..." नेपोलियन ने अचानक रुखाई से कहा और मुंह फेर लिया। खेद, पश्चाताप और उल्लास की मधुर मुस्कान से श्रीमान बोस्से का चेहरा चमक उठा और वह मानो तैरता-सा दूसरे जनरलों के पास चला गया।

नेपोलियन को इस वक़्त अपने मन में उस जुआरी जैसी बोझल और कष्टप्रद अनुभूति हो रही थी जो सोचे-समझे बिना अपने पैसे दांव पर लगाते हुए भी हमेशा जीतता रहा हो और अचानक उसी समय, जब उसने खेल के अच्छे-बुरे सभी पहलुओं पर ख़ूब विचार कर लिया हो, यह अनुभव करे कि वह जितना ज़्यादा सोच-समझकर अपनी चाल चलता है, उतने ही अधिक निश्चित रूप से उसकी हार हो रही है।

उसकी फ़ौजें वही थीं, जनरल वही थे, तैयारियां भी वही थीं, व्यूह-रचना भी वही थी, उसने सेना से पहले की तरह ही संक्षिप्त

और जोशीली अपील की थी, वह ख़ुद भी वही था, यह जानता था कि पहले की तुलना में अधिक अनुभवी और दक्ष हो गया था, दुश्मन भी वही था जिसे आउस्टेरलिट्ज़ और फ़्रीडलैंड की लड़ाइयों में मात दी गयी थी, मगर अब उसके प्रबल प्रहार ऐसे असफल हो रहे थे मानो किसी ने जादू-टोना कर दिया हो।

अनिवार्य रूप से सफल होनेवाले पहले के सभी उपायों का उपयोग किया जा चुका था – तोपख़ानों को एक ही स्थान पर संकेंद्रित किया गया था, दुश्मन की क़तारों को तोड़ने के लिये रिज़र्व फ़ौज को हमले के लिये भेजा गया था, घुड़सेना के "लौह पुरुषों" का आक्रमण भी करवाया जा चुका था, किन्तु न केवल विजय ही नहीं हुई थी, बल्कि सभी ओर से जनरलों के मारे जाने और घायल होने, कुमक भेजने की आवश्यकता तथा इसी बात की ख़बर आ रही थी कि रूसियों को पछाड़ना सम्भव नहीं, कि उसकी अपनी सेनायें अस्त-व्यस्त हो रही हैं।

पहले तो उसके दो-तीन आदेश देने, दो-तीन वाक्य कहने के बाद ही मार्शल और एडजुटेंट ख़ुशी से चमकते चेहरों के साथ अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए उसे बधाई देने आते थे, यह बताते थे कि पूरी फ़ौजी कोरों को ही बन्दी बना लिया गया है, दुश्मन के उक़ाब-वाले ढेरों राज्य-चिह्नों और झण्डों, तोपों तथा रसद की घोड़ा-गाड़ियों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया है और म्युराट ने केवल रसद-सामान की गाड़ियों को लाने के लिये ही घुड़सेना को भेजने की अनुमति मांगी है। लोदी, मारेंगो, अर्कोला, जेना, आउस्टेरलिट्ज़, वाग्राम, आदि, आदि की लड़ाइयों के वक़्त ऐसा ही हुआ था। किन्तु उसकी सेनाओं के साथ अब तो कुछ अजीब-सी बात हो रही थी।

मोरचेबन्दियों पर क़ब्ज़ा हो जाने की ख़बर मिलने के बावजूद नेपोलियन को यह स्पष्ट था कि स्थिति वैसी नहीं थी, बिल्कुल वैसी नहीं थी जैसी उसकी पहलेवाली सभी लड़ाइयों में रही थी। वह देख रहा था कि लड़ाई के मामले में उसके निकटवर्ती सभी अनुभवी लोग भी वही कुछ अनुभव कर रहे थे जो वह ख़ुद अनुभव कर रहा था। सभी के चेहरों पर निराशा छायी थी, सभी एक-दूसरे से नज़रें मिलाते हुए कतराते थे। सिर्फ़ बोस्से ही उसका महत्त्व समझने में असमर्थ था जो हो रहा था। युद्ध-सम्बन्धी अपने लम्बे अनुभव से नेपोलियन तो बहुत अच्छी तरह यह जानता था कि आक्रमण करनेवाली सेना

के आठ घण्टे तक एड़ी-चोटी का पूरा ज़ोर लगाने पर भी जीत हासिल न करने का क्या अर्थ है। वह जानता था कि यह तो हार ही थी और लड़ाई जिस नाज़ुक हालत में पहुंच चुकी थी, उसमें कोई छोटी-सी गड़बड़ हो जाने पर भी वह ख़ुद और उसकी सारी फ़ौज तबाह हो सकती थी।

जब वह इस पूरे, अजीब रूसी युद्ध-अभियान पर विचार करता, जिसमें एक भी लड़ाई नहीं जीती गयी थी, दो महीनों के दौरान एक भी झण्डे, एक भी तोप, एक भी फ़ौजी कोर पर अधिकार नहीं किया गया था, जब वह अपने निकटवर्ती सभी लोगों के चेहरों पर छिपी-छिपी निराशा का भाव देखता और यह रिपोर्ट सुनता कि रूसी अभी भी मैदान में डटे हुए हैं तो कोई बहुत भयानक सपना देखने जैसी भावना उसपर हावी हो जाती और उसके मन में सभी तरह के उन बुरे-बुरे संयोगों के ख़्याल आते जो उसे तबाह कर सकते थे। रूसी उसकी सेना के बायें पहलू पर हमला कर सकते थे, उसके केन्द्रीय भाग में घुस सकते थे, तोप का कोई गोला अचानक ख़ुद उसकी ही जान ले सकता था। यह सभी कुछ सम्भव था। अपनी पहले की लड़ाइयों में वह केवल सफलता की सम्भावनाओं पर ही विचार करता था, किन्तु अब असंख्य बुरे-बुरे संयोग उसकी आंखों के सामने उभरते थे और वह इन सभी के वास्तविक रूप लेने की शंका अनुभव करता था। हां, यह उस सपने जैसा था, जब आदमी यह देखता है कि कोई हत्यारा उसकी हत्या करने को उसकी तरफ़ बढ़ रहा है और यह व्यक्ति इतने ज़ोर से उसपर प्रहार करता है जिससे, जैसाकि वह समझता है, इस हत्यारे का काम तमाम हो जाना चाहिये। किन्तु वह अनुभव करता है कि उसका शक्तिहीन और बेजान-सा हाथ चिथड़े की तरह नीचे लटक जाता है और अपने अनिवार्य नाश का भय इस असहाय व्यक्ति को दबोच लेता है।

इस समाचार ने कि रूसी सेना फ़्रांसीसी सेना के बायें पहलू पर आक्रमण कर रही है, नेपोलियन को इस तरह से संत्रस्त कर दिया था। वह टीले के दामन में सिर झुकाये और घुटनों पर कोहनियां टिकाये चुपचाप बैठा था। बेरथियर उसके पास आया और उसने यह सुझाव दिया कि वे घोड़ों पर सवार होकर मोरचे का चक्कर लगायें ताकि अपनी आंखों से वास्तविक स्थिति को देख सकें।

"क्या? क्या कहा आपने?" नेपोलियन ने पूछा। "हां, मेरा घोड़ा लाने को कह दीजिये।"

वह घोड़े पर सवार होकर सेम्योनोव्स्कोये की ओर चल दिया।

बारूद के धीरे-धीरे कम होते हुए धुएं में से उस सारे क्षेत्र में, जहां से नेपोलियन अपने घोड़े पर गुज़रा, अकेले-अकेले और ढेरों के ढेर लोग तथा घोड़े ख़ून के डबरों में पड़े दिखाई दे रहे थे। न तो नेपोलियन और न उसके किसी जनरल ने ही कभी ऐसा भयानक दृश्य, इतनी थोड़ी-सी जगह में इतने अधिक मरे हुए लोग देखे थे। लगातार दस घण्टों से जारी रहनेवाली तोपों की गरज, जिसे सुनते-सुनते कान पक गये थे, इस दृश्य को एक विशेष अर्थ प्रदान कर रही थी (जैसे संगीत सजीव झांकियों को)। नेपोलियन अपने घोड़े को सेम्योनोव्स्कोये के ऊंचे स्थल पर ले गया और वहां धुएं में से उसे ऐसे रंगों की वर्दियां पहने सैनिकों की क़तारें दिखाई दीं जिन रंगों को देखने की उसकी आंखें अभ्यस्त नहीं थीं। ये रूसी थे।

सेम्योनोव्स्कोये और टीले के पीछे रूसी एक-दूसरे से बेहद सटी हुई क़तारों में खड़े थे, उनकी तोपें लगातार दनदना रही थीं तथा सारे मोरचे पर धुआं फैला रही थीं। अब लड़ाई नहीं, बल्कि वास्तविक हत्या-काण्ड हो रहा था जिससे न तो रूसियों और न फ़्रांसीसियों को ही कोई लाभ हो सकता था। नेपोलियन ने घोड़ा रोक लिया और फिर से उसी तरह के विचारों में डूब गया जिनसे बेरथियर ने उसे उबारा था। उसके सामने और उसके इर्द-गिर्द जो कुछ हो रहा था, जिसे उसपर निर्भर तथा जिसका उसे संचालक माना जाता था, उसे वह अब रोक नहीं सकता था और अपनी असफलता के फलस्वरूप उसे पहली बार यह सब कुछ अनावश्यक और भयानक प्रतीत हुआ।

नेपोलियन के पास आनेवाले एक जनरल ने यह प्रस्ताव करने का साहस किया कि वह अपनी पुरानी गार्ड-सेना को लड़ाई में भेज दे। नेपोलियन के क़रीब खड़े नेय और बेरथियर ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा और वे इस जनरल के ऐसे बेतुके सुझाव पर तिरस्कारपूर्वक मुस्करा दिये।

नेपोलियन सिर झुकाकर देर तक चुप रहा।

"फ़्रांस से ३२०० वेर्स्ता की दूरी पर मैं अपनी गार्ड-सेना को नष्ट नहीं होने दूंगा," उसने कहा और अपने घोड़े को शेवार्दिनो की ओर वापस ले चला।

३५

पके बालोंवाला सिर झुकाये और अपने भारी-भरकम शरीर को नीचे की ओर ढीला-ढाला छोड़े हुए कुतूज़ोव क़ालीन से ढकी उसी बेंच पर बैठे थे जिसपर प्येर ने उन्हें सुबह के वक़्त बैठे देखा था। वह किसी तरह के कोई आदेश नहीं देते थे और उनके सामने जो सुझाव पेश किये जाते थे, उनके साथ केवल अपनी सहमति या असहमति ही प्रकट करते थे।

"हां, हां, ऐसा ही कीजिये," वह विभिन्न सुझावों के उत्तर देते। "हां, हां, मेरे प्यारे, ज़रा वहां जाकर देख लो," वह अपने अमले के लोगों में से किसी को सम्बोधित करते या फिर यह कहते – "नहीं, ऐसा नहीं करो, थोड़ा इन्तज़ार कर लेना ही बेहतर होगा।" वह अपने सामने पेश की जानेवाली रिपोर्ट सुनते और ज़रूरत होने पर अपने मातहतों को कोई हुक्म देते। किन्तु रिपोर्ट सुनते हुए वह उनसे कहे जानेवाले शब्दों के अर्थों में नहीं, बल्कि दूसरी ही चीज़ में यानी रिपोर्ट पेश करनेवालों के चेहरे के भाव और उनके लहजे में दिलचस्पी लेते। अनेक वर्षों के फ़ौजी अनुभव से वह यह जानते थे और बुढ़ापे की परिपक्व बुद्धि से इस बात को समझते थे कि एक व्यक्ति मृत्यु से जूझनेवाले लाखों लोगों का संचालन नहीं कर सकता और उन्हें यह भी मालूम था कि न तो सेनापति द्वारा दिये गये आदेश, न वह जगह जहां सेनायें तैनात होती हैं, न तोपों और हताहत लोगों की संख्या, बल्कि वह अति सूक्ष्म शक्ति, जिसे सेना का उत्साह या जोश कहते हैं, लड़ाई के भाग्य का निर्णय करती है और वह इसी शक्ति की ओर ध्यान देते थे तथा यथाशक्ति इसका संचालन करते थे।

कुतूज़ोव के चेहरे का सामान्य भाव–एकाग्रता, शान्तिपूर्ण सावधानी और ऐसे तनाव का भाव था जो बड़ी मुश्किल से अपने दुर्बल और वृद्ध शरीर की थकान पर क़ाबू पा रहा हो।

सुबह के ग्यारह बजे उन्हें यह सूचना दी गयी कि फ़्रांसीसियों द्वारा अधिकार में ली गयी मोरचेबन्दियां फिर से वापस ले ली गयी हैं, लेकिन प्रिंस बग्रातिओन घायल हो गया है। कुतूज़ोव ने आह भरी और अफ़सोस से सिर हिलाया।

"प्रिंस बग्रातिओन के पास जाकर सारी तफ़सीलें मालूम करके

आओ," उन्होंने एक एडजुटेंट से कहा और इसके फ़ौरन बाद उसके पीछे खड़े विर्टेमबर्ग के प्रिंस* को सम्बोधित करते हुए बोले:

"क्या आप हुजूर पहली सेना की कमान अपने हाथ में लेने की कृपा नहीं करेंगे?"

प्रिंस के जाने के थोड़ी देर बाद, इतनी देर बाद कि वह मुश्किल से सेम्योनोव्स्कोये पहुंचा होगा कि उसके एडजुटेंट ने वापस आकर महामान्य कुतूज़ोव से कहा कि प्रिंस और सेना भेजने का अनुरोध कर रहे हैं।

कुतूज़ोव के माथे पर बल पड़ गये। उन्होंने जनरल दोख़्तुरोव को यह आदेश भिजवाया कि वह पहली सेना की कमान सम्भाल ले और प्रिंस से यह कहकर कि इस महत्त्वपूर्ण क्षण में उसके बिना उनका काम नहीं चल सकता, उसे अपने पास वापस बुलवा लिया। जब यह ख़बर लायी गयी कि म्युराट को बन्दी बना लिया गया है और स्टाफ़-अफ़सरों ने उन्हें बधाई दी तो वह मुस्करा दिये।

"महानुभावो, थोड़ा सब्र से काम लीजिये," कुतूज़ोव ने कहा। "लड़ाई में जीत हमारे हाथ है और म्युराट के बन्दी बना लिये जाने में कोई ख़ास बात नहीं। लेकिन फिर भी ख़ुशी मनाने के मामले में जल्दी नहीं करनी चाहिये।" मगर इसके बावजूद उन्होंने अपने एडजुटेंट को सारी सेना में यह समाचार पहुंचाने के लिये भेज दिया।

जब बायें पहलू से श्चेरबीनिन यह ख़बर लेकर आया कि फ़्रांसीसियों ने मोरचेबन्दियों और सेम्योनोव्स्कोये गांव पर क़ब्ज़ा कर लिया है तो कुतूज़ोव युद्ध-क्षेत्र की ध्वनियों और श्चेरबीनिन के चेहरे से यह अनुमान लगाकर कि ख़बर अच्छी नहीं है, मानो टांगों को ज़रा सीधी करने के लिये उठकर खड़े हो गये और श्चेरबीनिन की बांह में बांह डालकर उसे एक तरफ़ को ले गये।

"मेरे प्यारे, ज़रा घोड़े पर सवार होकर जाओ," उन्होंने येर्मोलोव से कहा, "और यह देखकर आओ कि वहां कुछ किया जा सकता है या नहीं।"

कुतूज़ोव गोर्कि गांव में, रूसी सेनाओं की व्यूह-रचना के मध्य

---

* ड्यूक विर्टेमबर्ग (१७७१–१८८३) – रूसी सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना (ज़ार अलेक्सान्द्र प्रथम की मां) का भाई, कुतूज़ोव के अमले में था। – सं०

में थे। हमारे बायें पहलू पर नेपोलियन द्वारा करवाये गये कई आक्रमण असफल बना दिये गये थे। मध्य भाग में फ़्रांसीसी बोरोदिनो से आगे नहीं बढ़ पाये थे। बायें पहलू से उवारोव की घुड़सेना ने फ़्रांसीसियों को भागने के लिये मजबूर कर दिया था।

तीन बजते न बजते फ़्रांसीसियों के हमले बन्द हो गये थे। युद्ध-क्षेत्र से आनेवाले तथा उन लोगों के चेहरों पर भी, जो उनके आस-पास थे, उन्होंने चरम सीमा तक पहुंचा हुआ तनाव देखा। वह आज की सफलता से प्रसन्न थे जो उनकी आशा से कहीं बढ़-चढ़कर थी। किन्तु बुज़ुर्ग सेनापति की शारीरिक शक्ति उनका साथ नहीं दे रही थी। उनका सिर कई बार ऐसे नीचे झुक गया मानो गिर रहा हो और वह ऊंघ गये। इनके लिये भोजन लाया गया।

सम्राट का एडजुटेंट वोल्ज़ोगेन, वही, जिसको प्रिंस अन्द्रेई ने अपने क़रीब से घोड़े पर जाते हुए यह कहते सुना था कि युद्ध को अधिक से अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैलाना चाहिये और जिससे बग्रातिओन बेहद नफ़रत करता था, कुतूज़ोव के भोजन करने के समय उनके पास आया। वह बार्कले डे टोल्ली की ओर से बायें पहलू पर लड़ाई की स्थिति के बारे में रिपोर्ट पेश करने आया था। बहुत ही सतर्कता और विवेक से काम लेनेवाले बार्कले डे टोल्ली घायलों की भीड़ को पीछे भागते और सेना के चंडावल में अस्त-व्यस्तता देखकर तथा सारी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा था कि लड़ाई हारी जा चुकी है और उसने अपने प्रिय अफ़सर को यही सूचना देने के लिये सेनापति के पास भेजा था।

कुतूज़ोव तली हुई मुर्ग़ी को बड़ी मुश्किल से चबा रहे थे और उन्होंने ख़ुशी से ज़रा चमकती हुई अपनी आंखें सिकोड़कर वोल्ज़ोगेन की तरफ़ देखा।

वोल्ज़ोगेन लापरवाही से अपनी टांगें सीधी करते, होंठों पर ज़रा तिरस्कारपूर्ण मुस्कान लिये और फ़ौजी सलामी के रूप में अपनी टोपी को ज़रा छूते हुए कुतूज़ोव के पास आया।

वोल्ज़ोगेन ने इस उद्देश्य से कुतूज़ोव के प्रति कुछ उपेक्षा भाव दिखाने का यत्न किया कि बहुत ही उच्च शिक्षा प्राप्त फ़ौजी अफ़सर के नाते वह यह जानता है कि रूसी इस नाकारा खूसट को चाहे कितने ही ऊंचे सिंहासन पर क्यों न बैठा दें, मगर उससे उसकी हक़ीक़त

छिपी नहीं है। "वृद्ध महानुभाव (जैसाकि जर्मन फ़ौजी अफ़सर अपने हलक़े में कुतूज़ोव को कहते थे) बड़े मज़े में नज़र आ रहे हैं," वोल्ज़ोगेन ने मन ही मन सोचा और कुतूज़ोव के सामने रखी तश्तरी पर कड़ी-सी नज़र डालकर बायें पहलू की स्थिति के बारे में वह वृद्ध महानुभाव के सामने उस तरह से रिपोर्ट पेश करने लगा जैसे बार्कले ने उसे आदेश दिया था तथा जिस तरह से उसने उसे ख़ुद देखा और समझा था।

"हमारे मोरचे के सभी महत्त्वपूर्ण स्थान शत्रु के अधिकार में हैं और उन्हें वहां से खदेड़ना मुमकिन नहीं, क्योंकि हमारे पास सेना नहीं है। सैनिक भाग रहे हैं और उन्हें रोका नहीं जा सकता," उसने सूचना दी।

कुतूज़ोव ने मुर्ग़ी चबाना बन्द कर दिया और ऐसे हैरान होकर, मानो यह न समझ रहे हों कि उनसे क्या कहा जा रहा है, वोल्ज़ोगेन पर अपनी दृष्टि जमा दी। वोल्ज़ोगेन ने वृद्ध महानुभाव की विह्वलता देखकर मुस्कराते हुए कहा:

"मैंने जो कुछ देखा है, उसे आपसे छिपाना उचित नहीं समझा... हमारी सेना बेहद अस्त-व्यस्त है..."

"आपने यह देखा है? यह देखा है?.." कुतूज़ोव त्योरी चढ़ाकर जल्दी से उठते और वोल्ज़ोगेन की तरफ़ बढ़ते हुए चिल्ला उठे। "आप यह कहने की हिम्मत कैसे कर रहे हैं?.." वह कांपते हाथों से धमकी देने का संकेत करते और रुंधते गले से चीख़ उठे। "आप, जनाब **मुझसे** यह कहने की हिम्मत कैसे कर रहे हैं। आपको कुछ भी मालूम नहीं। जनरल बार्कले को मेरी तरफ़ से कह दीजिये कि उनकी सूचना ग़लत है और लड़ाई की वास्तविक स्थिति मुझे, सेनापति को उनसे कहीं ज़्यादा अच्छी तरह से मालूम है।"

वोल्ज़ोगेन ने कुछ आपत्ति करनी चाही, लेकिन कुतूज़ोव ने उसे टोक दिया।

"दुश्मन बायें पहलू पर पीछे धकेल दिया गया है और दायें पहलू पर उसे मुंह की खानी पड़ी है। अगर आप जनाब ने ठीक तरह से नहीं देखा तो वह नहीं कहिये जो आपको मालूम नहीं। कृपया जनरल बार्कले के पास लौटकर उन्हें कल दुश्मन पर हमला करने के मेरे इरादे के बारे में बता दीजिये," कुतूज़ोव ने कड़ाई से कहा। सब ख़ामोश

रहे और केवल हांफते हुए बुज़ूर्ग जनरल की बोझिल सांस की आवाज़ ही सुनायी देती रही। "हर जगह पर ही उसके हमले नाकाम बना दिये गये हैं और इसके लिये मैं भगवान और हमारी बहादुर सेना को धन्यवाद देता हूं। शत्रु पराजित हो गया है और कल हम उसे पावन रूसी धरती से खदेड़ देंगे," कुतूज़ोव ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते हुए कहा और अचानक आंखें डबडबा आने के कारण उनका गला रुंध गया। वोल्ज़ोगेन कंधे झटककर तथा होंठों पर बल डालकर इस वृद्ध महानुभाव के अक्खड़पन पर आश्चर्यचकित होता हुआ चुपचाप एक तरफ़ को हट गया।

"यह है मेरा सूरमा," कुतूज़ोव ने तगड़े, काले बालोंवाले सुन्दर जनरल के बारे में कहा जो इसी वक़्त टीले की तरफ़ आ रहा था। यह रायेव्स्की था जिसने बोरोदिनो के सबसे महत्त्वपूर्ण स्थल पर सारा दिन बिताया था।

रायेव्स्की ने यह रिपोर्ट पेश की कि फ़ौजें अपनी जगहों पर ख़ूब डटी हुई हैं और फ़्रांसीसी अब और अधिक आक्रमण करने का साहस नहीं कर रहे हैं।

उसकी रिपोर्ट सुनने के बाद कुतूज़ोव ने फ़्रांसीसी में कहा :

"तो **दूसरों की तरह** आप यह नहीं सोचते हैं कि हमें पीछे हट जाना चाहिये?"

"महामान्य जी, इसके बिल्कुल विपरीत, जब मामला किसी नतीजे पर न पहुंच रहा हो तो उसमें जीत उसी की होती है जो ज़्यादा हठी होता है। और मेरे ख़्याल में..."

"काइसारोव!" कुतूज़ोव ने अपने एडजुटेंट को पुकारा। "यहां बैठकर कल के लिये मेरा आदेश लिखो। और तुम," उन्होंने दूसरे एडजुटेंट को सम्बोधित किया, "घोड़े पर सवार होकर सारे मोरचे का चक्कर लगाओ और यह घोषणा कर दो कि कल हम हमला करेंगे।"

जब तक रायेव्स्की से बातचीत होती रही और आदेश लिखवाया गया, वोल्ज़ोगेन बार्कले के पास होकर वापस आ गया और उसने यह कहा कि जनरल बार्कले डे टोल्ली फ़ील्ड-मार्शल द्वारा दिये गये आदेश की लिखित रूप में पुष्टि चाहते हैं।

कुतूज़ोव ने वोल्ज़ोगेन की तरफ़ देखे बिना वह आदेश लिख देने को कह दिया जो अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी से मुक्त होने के लिये

भूतपूर्व सेनापति बड़ी समझदारी से काम लेते हुए पाना चाहता था।

किसी अस्पष्ट और रहस्यपूर्ण सम्बन्ध-सूत्र की बदौलत, जिससे सारी सेना में एक जैसी मनःस्थिति बनी रहती है, जिसे सेना के उत्साह की संज्ञा दी जाती है और जो युद्ध की सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ होती है, कुतूज़ोव के शब्द, अगले दिन की लड़ाई के बारे में उनका आदेश एक-साथ ही सेना के हर कोने में पहुंच गया।

इस सम्बन्ध-सूत्र की अन्तिम कड़ी तक पहुंचनेवाले न तो शब्द ही ज्यों के त्यों रहे और न आदेश ही। यहां तक कि एक-दूसरे के मुंह से होती हुई जो बातें सेना की अन्तिम कड़ियां तक पहुंचीं, उनमें कुतूज़ोव के शब्दों का ज़रा-सा अंश भी बाक़ी नहीं रहा था; किन्तु उनके शब्दों का सार सब जगह पहुंच गया, क्योंकि कुतूज़ोव ने जो कुछ कहा था, वह चतुराई से सोची-समझी गयी कोई तिकड़म नहीं, बल्कि सेनापति के दिल की गहराई से निकली वही भावना थी जो हर रूसी अपनी आत्मा में अनुभव कर रहा था।

यह मालूम होने पर कि अगले दिन हम दुश्मन पर हमला करने-वाले हैं, उच्च सैनिक क्षेत्रों से उस बात की पुष्टि पाकर, जिसपर वे विश्वास करना चाहते थे, बेहद थके-हारे और डांवांडोल सैनिकों को सन्तोष मिला और उनमें साहस का संचार हुआ।

३६

प्रिंस अन्द्रेई की रेजिमेंट उन रिज़र्व सेनाओं में शामिल थी जो दिन का एक बजने के बाद तक तोपों की ज़ोरदार गोलाबारी का शिकार होती हुई सेम्योनोव्स्कोये के पीछे निष्क्रिय खड़ी थीं। लगभग दो बजे इस रेजिमेंट को, जिसके दो सौ से अधिक सैनिक मारे जा चुके थे, सेम्योनोव्स्कोये और टीले के तोपख़ाने के मध्यवाले जई के रौंदे हुए खेत में उस स्थान की तरफ़ बढ़ाया गया जहां उस दिन हज़ारों लोग खेत रहे थे और जिस जगह पर एक और दो बजे के बीच दुश्मन की कई सौ तोपों की बहुत ज़बर्दस्त गोलाबारी केन्द्रित रही थी।

इस जगह से हिले-डुले और एक भी गोली चलाये बिना यह रेजिमेंट

यहां अपने सैनिकों का एक तिहाई भाग और खो चुकी थी। सामने की तरफ़ से और ख़ास तौर पर दायीं ओर से लगातार छाये रहनेवाले धुएं में तोपें दनदनातीं और सामने के सारे क्षेत्र पर छायी हुई धुएं की रहस्यपूर्ण चादर में से तेज़ी से उड़ते और सनसनाते गोले तथा धीमी आवाज़ पैदा करनेवाले विस्फोटक गोले निरन्तर गिरते रहते। कभी-कभी मानो थोड़ा-सा आराम देने के लिये ऐसे पन्द्रह मिनट बीतते, जब सभी गोले और विस्फोटक गोले ऊपर से गुज़र जाते, किन्तु कभी-कभी एक मिनट के दौरान ही रेजिमेंट के कई लोग इनके शिकार बन जाते तथा मृतकों को लगातार एक तरफ़ हटाना और घायलों को उठाकर ले जाना पड़ता था।

तोप-गोले के प्रत्येक विस्फोट के साथ अभी तक जीवित सैनिकों के ज़िन्दा रहने की सम्भावना अधिकाधिक कम होती जाती थी। बटालियनों के रूप में तीन-तीन सौ क़दमों की दूरी पर पूरी रेजिमेंट खड़ी थी, किन्तु इस फ़ासले के बावजूद रेजिमेंट के सभी सैनिकों की मनःस्थिति एक जैसी थी। सभी सैनिक गुमसुम और मुरझाये-मुरझाये से थे। सैनिकों की क़तारों में बहुत कम ही कोई बातचीत करता था और जैसे ही गोले का धमाका और "स्ट्रेचर!" लाने की पुकार सुनायी देती, वैसे ही यह बातचीत बन्द हो जाती। अफ़सरों के आदेशानुसार रेजिमेंट के सैनिक अधिकतर तो ज़मीन पर बैठे रहते थे। कोई अपनी टोपी उतारकर बड़े यत्न से उसके अस्तर की चुन्नटों को ढीला करता और पुनः समेटता था, कोई सूखी मिट्टी को हथेलियों पर मसलकर उससे अपनी संगीन को साफ़ करता था, कोई अपनी कारतूस की पेटी को ढीला करके उसके बकसुए को कसता था, कोई बड़ी सावधानी से अपनी टांगों की पट्टियों को ठीक करता था या उन्हें दूसरे ढंग से लपेटकर फिर से अपने बूट पहनता था। कुछ मिट्टी के ढेलों से घरौंदे बनाते थे या सूखे डण्ठलों से कुछ बुनते थे। सभी सैनिक इस तरह के कामों में पूरी तरह खोये प्रतीत होते थे। जब लोग घायल होते और मरते थे, जब स्ट्रेचर लाये जाते थे, जब हमारे लोग पीछे धकेल दिये जाते थे, जब धुएं में से शत्रु के दल-बादल नज़र आते थे तो इन बातों की तरफ़ कोई भी ध्यान नहीं देता था। किन्तु जब हमारा तोपख़ाना आगे बढ़ता, हमारी घुड़सेना या प्यादा फ़ौज आगे जाती दिखाई देती तो सभी ओर से अनुमोदन के शब्द सुनायी देते। किन्तु लड़ाई से किसी

तरह का कोई सम्बन्ध न रखनेवाली बिल्कुल दूसरी बातें ही सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करती थीं। ऐसे लगता था मानो बुरी तरह से थके-हारे लोगों को हर दिन के जीवन की इन छोटी-मोटी बातों से ही कुछ आराम-चैन मिलता था। एक तोपख़ाना रेजिमेंट के सामने से गुज़रा। तोप के गोले ले जानेवाली एक घोड़ा-गाड़ी के घोड़े की टांग जोत में उलझ गयी। "अरे, जोत की तरफ़ ध्यान दो! .. रस्सी को टांग में से निकाल लो! घोड़ा गिर जायेगा ... ओह, उनकी आंखें फूटी हुई हैं! .." रेजिमेंट की सैनिक-पांतों से इसी तरह की आवाज़ें सुनायी देती रहीं। एक अन्य क्षण में कत्थई रंग के एक छोटे-से कुत्ते ने सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। ख़ुदा जाने कहां से यहां आ जानेवाला यह कुत्ता अपनी पूंछ ऊपर उठाये और अपने में खोया और दायें-बायें डोलता हुआ सैनिक-पांतों के सामने से भागा जा रहा था। अचानक एक गोला उसके क़रीब ही गिरकर फटा और तब वह ज़ोर से चीं-चीं करता हुआ दुम दबाकर एक तरफ़ को भाग गया। सारी रेजिमेंट में ख़ुशी भरी चीख़ें और ठहाके गूंज उठे। किन्तु इस प्रकार का मनोरंजन एकाध क्षण तक ही चलता और आठ घण्टों से भूखे तथा काम के बिना और हर क्षण मौत के भय से आतंकित लोगों के उदास और पीले चेहरे और भी ज़्यादा उदास तथा पीले होते जाते थे।

रेजिमेंट के अन्य सैनिकों की भांति मुरझाये और पीले चेहरे के साथ प्रिंस अन्द्रेई भी पीठ-पीछे हाथ बांधे और सिर झुकाये जई के खेत के पासवाले चरागाह में एक हदबन्दी से दूसरी हदबन्दी तक इधर-उधर आ-जा रहा था। उसके करने-कराने और आदेश देने के लिये कुछ नहीं था। सब कुछ अपने आप ही होता जाता था। मरनेवालों की लाशों को मोरचे से पीछे हट दिया जाता था, घायलों को ले जाया जाता और सैनिकों की क़तारें सिमट जाती थीं। सैनिक अगर भाग जाते थे तो उसी वक़्त जल्दी से लौट आते थे। शुरू में तो प्रिंस अन्द्रेई सैनिकों में जोश की भावना जगाने और उनके सामने मिसाल पेश करने को अपना कर्त्तव्य मानते हुए सैनिक-पांतों के बीच चक्कर लगाता रहा। लेकिन बाद में उसे यक़ीन हो गया कि वह उन्हें कुछ भी नहीं सिखा सकता। हर सैनिक की भांति उसकी आत्मा की सारी शक्ति भी अचेतन रूप से इसी बात पर केन्द्रित थी कि किसी तरह

उस स्थिति की भयानकता से अपने को दूर रखे जिस स्थिति में वे सब लोग थे। वह पांवों को घसीटता, घास को सरसराता और अपने जूतो पर जमी धूल को देखता हुआ चरागाह में इधर-उधर आ-जा रहा था। कभी-कभी वह घास काटनेवालों द्वारा छोड़े गये पद-चिह्नों पर अपने पांव रखने के लिये लम्बे-लम्बे डग भरता, कभी अपने डगों को गिनता हुआ यह हिसाब लगाता कि एक वेर्स्ता का फ़ासला तय करने के लिये उसे एक हदबन्दी से दूसरी हदबन्दी तक कितनी बार इधर-उधर आना-जाना पड़ेगा, कभी वह हदबन्दी के साथ-साथ उगे नागदौने के फूल तोड़कर उन्हें हथेली पर मसलता और उनकी तेज़, तिक्त गन्ध को सूंघता। पिछले दिन के चिन्तन और विचारों का कोई भी चिह्न शेष नहीं रह गया था। वह किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था। वह थके हुए कानों से बार-बार उन्हीं ध्वनियों को सुन रहा था, गोलों की सनसनाहट और तोपों की गरज के अन्तर की तरफ़ ध्यान देता था, प्रथम बटालियन के लोगों के चेहरों को ग़ौर से देखता था जिन्हें बार-बार देख चुका था और इन्तज़ार करता था। "वह आ रहा है... वह फिर से हमारी ओर आ रहा है!" प्रिंस अन्द्रेई धुएं से ढके विस्तार के बीच से निकट आती सनसनाहट पर कान देते हुए सोचता। "एक, दूसरा आ रहा है! एक और! गिर गया..." वह रुककर सैनिक-पांतों पर नज़र डालता। "नहीं, आगे निकल गया। लेकिन यह गिर गया।" और वह बड़े-बड़े डग भरता हुआ, ताकि सोलह क़दमों में हदबन्दी तक पहुंच सके, फिर से इधर-उधर आने-जाने लगता।

ज़ोर की सनसनाहट और धमाका! प्रिंस अन्द्रेई से पांच क़दम की दूरी पर तोप का गोला सूखी ज़मीन को चीरता हुआ उसमें धंस गया। हठात् उसे अपनी पीठ पर झुरझुरी-सी महसूस हुई। उसने फिर से सैनिक-पांतों पर दृष्टि डाली। सम्भवतः बहुत-से लोगों को इस गोले से क्षति पहुंची थी; द्वितीय बटालियन के क़रीब लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो गयी थी।

"श्रीमान एडजुटेंट," प्रिंस अन्द्रेई ने पुकारकर कहा, "लोगों को हुक्म दीजिये कि एक ही जगह पर भीड़ न लगायें।" प्रिंस अन्द्रेई का आदेश पूरा करके एडजुटेंट उसके पास आया। दूसरी ओर से घोड़े पर सवार एक बटालियन-कमांडर उसके क़रीब आ रहा था।

अपनी रिज़र्व रेजिमेंट के साथ अन्द्रेई बोल्कोन्स्की सेम्योनोव्स्कोये गांव के नज़दीक।

"सावधान!" एक सैनिक की डरी हुई आवाज़ सुनायी दी और बहुत तेज़ी से उड़ते तथा ऊंची सनसनाहट से ज़मीन पर बैठनेवाले परिन्दे जैसी ध्वनि के साथ प्रिंस अन्द्रेई से दो क़दम की दूरी तथा बटालियन-कमांडर के घोड़े के निकट धीरे से विस्फोटक गोला गिरा। घोड़े ने इस बात की चिन्ता किये बिना कि उसके लिये अपना डर ज़ाहिर करना उचित है या अनुचित, नथुने फरफराये, पिछली टांगों पर खड़ा हुआ और मेजर को लगभग नीचे गिराते हुए एक तरफ़ को सरपट दौड़ गया। घोड़े के डर ने लोगों को भी भयभीत कर दिया।

"लेट जाओ!" जल्दी से ज़मीन पर लेटता हुआ एडजुटेंट चिल्लाया। प्रिंस अन्द्रेई दुविधा की स्थिति में खड़ा रहा। विस्फोटक गोला जुती ज़मीन और चरागाह की सीमा पर, नागदौने की झाड़ी के क़रीब उसके तथा ज़मीन पर लेटे एडजुटेंट के बीच धुआं उगलता हुआ लट्टू की तरह घूम रहा था।

"क्या वह मौत है?" प्रिंस अन्द्रेई ने घूमते हुए काले गोले से निकलते तथा बल खाते धुएं, घास और नागदौने की झाड़ी को सर्वथा नई, ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हुए सोचा। "मैं मर नहीं सकता, मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीवन को प्यार करता हूं, इस घास, धरती और हवा को प्यार करता हूं..." वह यह सोच रहा था तथा साथ ही उसे इस बात का भी ध्यान था कि लोग उसकी तरफ़ देख रहे हैं।

"शर्म की बात है, श्रीमान अफ़सर!" उसने एडजुटेंट से कहा। "आप दूसरों के सामने..." वह वाक्य पूरा न कर पाया। एकसाथ ही विस्फोट का धमाका, खिड़की के चौखटे के टूटने जैसी आवाज़ हुई और बारूद की दमघोट गन्ध फैल गयी – प्रिंस अन्द्रेई को एक तरफ़ को झटका-सा लगा और वह अपना एक हाथ ऊपर उठाये ज़मीन पर औंधे मुंह गिर गया।

कई अफ़सर भागकर उसके पास आये। उसके पेट के दायीं ओर से निकलते हुए ख़ून ने घास पर एक बड़ा-सा धब्बा बना दिया था।

स्ट्रेचर लेकर आनेवाले जन-सैनिक अफ़सरों के पीछे खड़े हो गये। औंधे पड़े हुए प्रिंस अन्द्रेई का मुंह घास में था और वह बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रहा था।

"खड़े-खड़े क्या मुंह ताक रहे हो, उठाओ!"

किसान जन-सैनिक प्रिंस अन्द्रेई के क़रीब गये और उसे कंधों तथा टांगों से पकड़कर उठाने लगे। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई ऐसे दयनीय ढंग से कराह उठा कि किसानों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखकर उसे फिर से वहीं लिटा दिया।

"उठाओ, डालो स्ट्रेचर पर, ले जाना तो है ही!" किसी ने चिल्लाकर कहा। जन-सैनिकों ने दूसरी बार प्रिंस अन्द्रेई को कंधों से पकड़ा और स्ट्रेचर पर लिटा दिया।

"हे भगवान! हे भगवान! कहां घाव हुआ है?.. पेट में! तो क़िस्सा ख़त्म समझो! हे भगवान!" अफ़सरों की बातचीत सुनायी दी। "मेरे तो बिल्कुल कान के पास से गुज़रा," एडजुटेंट ने कहा। किसान स्ट्रेचर को कंधों पर टिकाकर तेज़ी से उस संकरे रास्ते पर, जिसे उनके क़दमों ने रौंद डाला था, चिकित्सा-केन्द्र की तरफ़ बढ़ चले।

"क़दम मिलाकर चलो!.. अरे... बदमाशो!" एक अफ़सर ने उनके कंधों पर हाथ रखकर उन्हें रोकते हुए बिगड़कर कहा, क्योंकि वे स्ट्रेचर को झटके देते हुए ले जा रहे थे।

"अरे फ़्योदोर, क़दम मिलाओ, अरे फ़्योदोर," स्ट्रेचर के आगे-वाले जन-सैनिक ने कहा।

"हां, अब ठीक है, क़दम मिल गया," पीछेवाले जन-सैनिक ने क़दम मिल जाने पर ख़ुश होकर कहा।

"आप हुज़ूर? आप? प्रिंस?" भागकर आनेवाला तिमोख़िन स्ट्रेचर की तरफ़ देखते हुए कांपती आवाज़ में कह उठा।

प्रिंस अन्द्रेई ने आंखें खोलीं और स्ट्रेचर के झोल में से, जिसमें उसका सिर धंसा हुआ था, उसने उपर्युक्त शब्द कहनेवाले की ओर देखा तथा फिर से आंखें मूंद लीं।

जन-सैनिक प्रिंस अन्द्रेई को उस जंगल की ओर ले चले जहां घोड़ा-गाड़ियां खड़ी थीं और जहां चिकित्सा-केन्द्र था। भोज-वृक्षों के जंगल के छोर पर तीन तम्बू गाड़कर, जिनके सिरे ऊपर उठा दिये गये थे, यह चिकित्सा-केन्द्र बनाया गया था। भोज-वृक्षों के वन में घोड़ा-गाड़ियां और घोड़े खड़े थे। घोड़े सफ़री नांदों में से जई चर रहे थे, चिड़ियां इन नांदों के इर्द-गिर्द मंडरा रही थीं और घोड़ों द्वारा गिरा दिये जानेवाले जई के दाने चुग रही थीं।

कौवे ख़ून की गन्ध महसूस करते और बेचैनी से कांय-कांय करते हुए भोज-वृक्षों के आस-पास उड़ रहे थे। इन तम्बुओं के इर्द-गिर्द दो हेक्टर से कुछ अधिक क्षेत्र में तरह-तरह की वर्दियों में घायल लोग लेटे, बैठे और खड़े थे। उदास और चिन्तित चेहरोंवाले स्ट्रेचर-वाहक जन-सैनिकों की भीड़ इन घायलों को घेरे थी। चिकित्सा-केन्द्र के प्रबन्धक-अफ़सर व्यर्थ ही इन्हें यहां से भगाने की कोशिश करते थे। अफ़सरों के आदेश पर कान न देते हुए ये जन-सैनिक अपने स्ट्रेचरों का सहारा लिये खड़े थे, टकटकी बांधकर यह सब देख रहे थे मानो इस भयानक दृश्य का अर्थ समझने का प्रयास कर रहे हों। तम्बुओं में से कभी तो ऊंची, क्रोधपूर्ण चीख़ें और कभी दर्द भरी आहें-कराहें सुनायी देतीं। कभी-कभी चिकित्सा-सहायक पानी लेने और उन घायलों की ओर संकेत करने के लिये, जिन्हें तम्बू में ले जाया जाये, भागते हुए बाहर आते। तम्बुओं के क़रीब अपनी बारी का इन्तज़ार करते हुए घायल भर्रायी आवाज़ में आहें भरते, कराहते, रोते, चिल्लाते, कोसते और वोदका मांगते। उनमें से कुछ सरसाम की हालत में थे। स्ट्रेचर-वाहक उन घायलों को लांघते हुए, जिनकी अभी तक मरहम-पट्टी नहीं हुई थी, रेजिमेंट-कमांडर के नाते प्रिंस अन्द्रेई को एक तम्बू के क़रीब ले जाकर आदेश की प्रतीक्षा करते हुए रुक गये। प्रिंस अन्द्रेई ने आंखें खोलीं और उसके इर्द-गिर्द जो कुछ हो रहा था, वह देर तक उसे समझ नहीं पाया। चरागाह, नागदौने की झाड़ी, जुता हुआ खेत, घूमता हुआ काला गोला और जीवन के प्रति तीव्रानुराग की अनुभूति – उसे यह सब कुछ याद हो आया। उससे दो क़दम की दूरी पर वृक्ष की एक शाखा का सहारा लिये लम्बे क़द का एक सुन्दर और काले बालोंवाला सार्जेंट खड़ा था जिसके सिर पर पट्टी बंधी थी और जो ऊंचे-ऊंचे बोलते हुए अपनी ओर सबका ध्यान आकर्षित कर रहा था। उसके सिर और टांगों पर गोलियां लगी थीं। बड़ी उत्सुकता से उसकी बातें सुननेवाले घायलों और स्ट्रेचर-वाहकों की भीड़ उसके गिर्द जमा हो गयी थी।

"हमने उसपर ऐसा हल्ला बोला कि वह सब कुछ छोड़-छाड़कर भाग निकला और हमने ख़ुद बादशाह (म्युराट) तक को बन्दी बना लिया।" जोश से चमकती काली आंखों से अपने इर्द-गिर्द देखता हुआ यह सार्जेंट चिल्ला रहा था। "अगर इसी वक़्त हमारी रिज़र्व आ जाती

तो हमारे दुश्मन का नाम-निशान भी बाक़ी न बचता, मेरे भाई! मैं तुमसे बिल्कुल सच कह रहा हूं..."

सार्जेंट के इर्द-गिर्द खड़े सभी लोगों की तरह प्रिंस अन्द्रेई भी उत्साह से चमकती आंखों से उसकी तरफ़ देख रहा था और उसे सन्तोष की अनुभूति हो रही थी। "किन्तु इस सब से अब मुझे फ़र्क़ ही क्या पड़ सकता है," वह सोच रहा था। "वहां क्या होगा और यहां क्या था? किसलिये जीवन से विदा लेते हुए मुझे दुख हो रहा था? इस जीवन में कुछ तो ऐसा था जिसे मैं समझ नहीं पाया और समझ नहीं रहा हूं।"

३७

ख़ून से तर पेशबन्द और ख़ून से सने छोटे-छोटे हाथोंवाला एक डाक्टर अपने एक हाथ के अंगूठे और कानी उंगली के बीच सिगार थामे हुए (ताकि उसपर ख़ून न लग जाये) तम्बू से बाहर आया। इस डाक्टर ने सिर ऊंचा किया और दायें-बायें, किन्तु घायलों से ऊपर, कहीं दूर नज़र दौड़ाने लगा। सम्भवतः वह कुछ सुस्ताने के लिये बाहर आया था। कुछ समय तक सिर को दायें-बायें घुमाने के बाद उसने गहरी सांस ली और नज़र नीचे कर ली।

"अभी, एक मिनट में," उसने प्रिंस अन्द्रेई की ओर संकेत करनेवाले चिकित्सा-सहायक के शब्दों के उत्तर में जवाब दिया और उसे तम्बू में लाने को कहा।

प्रतीक्षा कर रहे घायलों की भीड़ में बड़बड़ाहट सुनायी दी।

"लगता है कि दूसरी दुनिया में भी सिर्फ़ रईस लोग ही रहेंगे," किसी ने कहा।

प्रिंस अन्द्रेई को तम्बू में लाकर अभी-अभी साफ़ की गयी मेज़ पर, जिसे चिकित्सा-सहायक धो रहा था, लिटा दिया गया। तम्बू में क्या कुछ था, प्रिंस अन्द्रेई स्पष्ट रूप से यह नहीं समझ पाया। विभिन्न दिशाओं से सुनायी देनेवाली दर्द भरी आहें-कराहें तथा अपनी जांघ, पेट और कमर की यातनापूर्ण टीसें उसका ध्यान भंग कर रही थीं।

अपने इर्द-गिर्द उसे जो कुछ दिखाई दे रहा था, उसने नंगे और रक्त-रंजित मानव-शरीरों की एक सामान्य अनुभूति का रूप धारण कर लिया था जो इस कम ऊंचे तम्बू में मानो उसी प्रकार भरे हुए थे जैसे कुछ हफ़्ते पहले अगस्त के एक गर्म दिन स्मोलेन्स्क मार्ग के गन्दे पानी के एक तालाब में इसी तरह मानव-शरीर भरे हुए थे। हां, ये वही शरीर थे, तोपों का वही चारा थे जिन्होंने मानो इस समय की ओर भविष्यवाणी करते हुए उस वक़्त ही उसे आतंकित कर डाला था।

इस तम्बू में आपरेशन की तीन मेज़ें थीं। दो मेज़ों पर घायल थे और तीसरी पर प्रिंस अन्द्रेई को लिटा दिया गया था। कुछ समय के लिये उसे अकेला छोड़ दिया गया और न चाहते हुए भी वह उसे देखे बिना न रह सका जो दूसरी मेज़ों पर हो रहा था। उसके निकट-वाली मेज़ पर एक तातार बैठा था जो क़रीब पड़ी हुई वर्दी के अनुसार सम्भवतः कज़्ज़ाक था। चार फ़ौजी उसे पकड़े हुए थे। चश्माधारी डाक्टर उसकी सांवली, मज़बूत पीठ से कुछ काट रहा था।

"ऊह, ऊह, ऊह! .." तातार मानो घुरघुरा रहा था और अचानक गालों की उभरी हड्डियोंवाला तथा अपना नकचप्पा सांवला चेहरा ऊपर उठाकर और सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए अपने शरीर को ज़ोर से हिलाने-डुलाने, छूटने की कोशिश करने और बहुत ऊंची, लम्बी तथा मर्मभेदी आवाज़ में चीख़ने-चिल्लाने लगा। दूसरी मेज़ पर, जिसे बहुत-से लोग घेरे हुए थे, लम्बे क़द और गदराये बदनवाला एक व्यक्ति चित लेटा था, उसका सिर पीछे की तरफ़ लटका हुआ था (उसके घुंघराले बाल, उनका रंग और सिर की बनावट प्रिंस अन्द्रेई को अजीब ढंग से जानी-पहचानी लगी)। कई चिकित्सा-सहायक इस व्यक्ति की छाती पर ज़ोर डालकर उसे दबाये हुए थे ताकि वह उठे नहीं। एक गोरी, बड़ी और गदरायी टांग लगातार ऐंठती, जल्दी-जल्दी तथा ज़ोर से हिलती जाती थी। यह व्यक्ति छटपटाता हुआ सिसकता था तथा उसका गला रुंध जाता था। दो डाक्टर – उनमें से एक का चेहरा पीला था और वह कांप रहा था – चुपचाप इस व्यक्ति की दूसरी, लाल टांग पर कुछ कर रहे थे। तातार से निपटकर, जिसपर फ़ौजी ओवरकोट डाल दिया गया था, चश्माधारी डाक्टर हाथ पोंछता हुआ प्रिंस अन्द्रेई के पास आया।

उसने प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे पर नज़र डाली और जल्दी से मुंह फेर लिया।

"इसके कपड़े उतारिये! खड़े किसलिये हैं?" वह गुस्से से चिकित्सा-सहायकों पर चिल्लाया।

आस्तीनें ऊपर चढ़ाये हुए चिकित्सा-सहायक जब जल्दी-जल्दी बटन खोलकर उसके कपड़े उतारने लगे तो प्रिंस अन्द्रेई को अपने बचपन के भूले-बिसरे दिन याद हो आये। डाक्टर ने उसके घाव पर काफ़ी नीचे झुककर उसे छुआ तथा गहरी सांस ली। इसके बाद उसने किसी की तरफ़ इशारा किया। पेट के भीतर की अत्यधिक यातनापूर्ण पीड़ा के कारण प्रिंस अन्द्रेई बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसकी जांघ की टूटी हुई हड्डियां निकाल दी गयी थीं, फटा हुआ मांस काट दिया गया था और घाव पर पट्टी बांध दी गयी थी। उसके मुंह पर पानी छिड़का जा रहा था। प्रिंस अन्द्रेई के आंखें खोलते ही डाक्टर उसपर झुका, उसने चुपचाप उसके होंठों को चूमा और जल्दी-से दूर हट गया।

यह यातना सहन करने के बाद प्रिंस अन्द्रेई ने कुछ ऐसा आनन्द अनुभव किया, जैसा बहुत अरसे से अनुभव नहीं किया था। उसके जीवन के सबसे अच्छे, सबसे सुखद क्षण, विशेषतः दूर अतीत में खोये बचपन के वे क्षण उसकी कल्पना में सजीव हो उठे, जब उसके कपड़े उतारकर उसे बिस्तर पर लिटाया जाता था, जब आया उसके ऊपर झुककर लोरी गाया करती थी, जब तकिये में अपना सिर धंसाकर वह जीवन की चेतना मात्र से अपने को सौभाग्यशाली अनुभव किया करता था और उसे यह सब कुछ अतीत नहीं, बल्कि वर्त्तमान-सा प्रतीत हुआ।

प्रिंस अन्द्रेई को जिस घायल के सिर की बनावट जानी-पहचानी-सी लगी थी, उसके क़रीब डाक्टर जमा थे – वे उसे उठा रहे थे, उसे तसल्ली दे रहे थे।

"मुझे दिखाइये... हाय! हाय! हाय!" उसकी सिसकियों से टूटती, भयभीत और अत्यधिक व्यथा से परिपूर्ण आहें-कराहें सुनायी दे रही थीं। इन आहों-कराहों को सुनते हुए प्रिंस अन्द्रेई का रोने को मन होने लगा। वह इसलिये रोना चाहता था कि यश-कीर्ति के बिना मर रहा था, इसलिये कि जीवन से विदा लेते हुए उसे दुख हो रहा

था, या फिर बचपन की उन स्मृतियों के कारण जो अब कभी नहीं लौट सकती थीं या इसलिये कि यातना सह रहा था, कि दूसरे यातना सह रहे थे और उसके सामने यह व्यक्ति ऐसे हाय-वाय कर रहा था – किन्तु उसने बच्चे की तरह, दयालुता से और लगभग ख़ुशी भरे आंसू बहाते हुए रोना चाहा।

घायल को ख़ून से लथपथ कटी हुई वह टांग दिखायी गयी जिससे अभी तक बूट नहीं उतारा गया था।

"हाय! हाय!" वह औरत की तरह सुबकने लगा। घायल के सामने खड़ा डाक्टर, जो उसके चेहरे के लिये ओट बना हुआ था, एक तरफ़ को हट गया।

"हे भगवान! यह क्या क़िस्सा है? यह किसलिये यहां है?" प्रिंस अन्द्रेई ने अपने आपसे कहा।

अत्यधिक दुखी, सिसकते और बेहाल व्यक्ति के रूप में, जिसकी अभी-अभी टांग काटी गयी थी, प्रिंस अन्द्रेई ने अनातोल कुरागिन को पहचान लिया। वे लोग अनातोल को हाथों से सहारा देकर थामे हुए थे और उसकी तरफ़ पानी का गिलास बढ़ा रहे थे, मगर अनातोल के कांपते और सूजे हुए होंठ पानी पीने के लिये गिलास के सिरे पर टिक नहीं पा रहे थे। उसने बहुत ही व्यथित होते हुए गहरी सिसकी ली। "हां, यह वही है। हां, यह व्यक्ति मेरे साथ किसी प्रकार घनिष्ठ तथा कष्टप्रद ढंग से जुड़ा हुआ है," प्रिंस अन्द्रेई अभी तक उसे स्पष्ट रूप से न समझ पाते हुए, जो उसके सामने था, सोच रहा था। "इस व्यक्ति का मेरे बचपन, मेरे जीवन से क्या नाता है?" वह अपने आपसे पूछ रहा था और उसे कोई उत्तर नहीं मिल रहा था। अचानक निर्मल और प्यार भरे बचपन की एक नयी और अप्रत्याशित स्मृति प्रिंस अन्द्रेई के सामने उभरी। उसे नताशा, जिस रूप में उसने १८१० में पहली बार उसे बॉल-नृत्य में देखा था, याद हो आयी। पतली-सी गर्दन और पतली-पतली बांहें, सहमा और खिला हुआ, उल्लास से ओत-प्रोत होने को तत्पर चेहरा। पहले किसी भी समय की तुलना में उसे उसके प्रति कहीं अधिक धधकते और धड़कते प्यार तथा कोमल भावनाओं की अनुभूति हुई। उसे अब वह सम्बन्ध याद हो आया जो अश्रुपूरित सूजी हुई आंखों तथा धुंधली दृष्टि से उसकी तरफ़ देख रहे इस व्यक्ति और ख़ुद उसके बीच था। प्रिंस अन्द्रेई को सब कुछ याद हो आया

और उसके सुखी हृदय में उस आदमी के प्रति उल्लासपूर्ण दया तथा प्यार का भाव उमड़ पड़ा।

प्रिंस अन्द्रेई अब अपने को और अधिक वश में न रख सका और लोगों के लिये तथा अपने लिये, उनकी तथा अपनी भूलों के लिये कोमल भावनाओं और प्रेम से द्रवित होकर रो पड़ा।

"सहानुभूति, बन्धु-मानवों, प्यार करनेवालों, हमसे घृणा करनेवालों, अपने शत्रुओं के प्रति प्रेम – हां, वह प्रेम जिसकी भगवान ने इस पृथ्वी पर शिक्षा दी, जिसकी प्रिंसेस मरीया मुझे सीख देती थी और जिसे मैंने समझा नहीं। यही कारण था जीवन से विदा लेते हुए मेरे दुखी होने का और अगर मैं ज़िन्दा रहता तो इसी तरह से प्यार करता। लेकिन अब तो देर हो चुकी है, मुझे यह मालूम है!"

३८

लाशों और घायलों से अटे पड़े युद्ध-क्षेत्र के भयानक दृश्य के साथ-साथ सिर के भारीपन, परिचित बीस जनरलों की मृत्यु या घायल होने की ख़बर, सदा ही विजय पानेवाले हाथ की अशक्तता ने नेपोलियन के मन पर अप्रत्याशित प्रभाव छोड़ा। सामान्यतः उसे मृतकों और घायलों पर दृष्टि डालना अच्छा लगता था। इस तरह वह अपनी आत्मिक शक्ति की (जैसाकि वह सोचता था) परीक्षा लेता था। इस दिन युद्ध-क्षेत्र के इस भयानक दृश्य ने उसकी उस आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर ली जिसे वह अपनी योग्यता और महानता का स्रोत समझता था। वह जल्दी से युद्ध-क्षेत्र से शेवार्दिनो टीले पर लौट आया। पीला, सूजा-सूजा और उदास चेहरा, धुंधली-धुंधली आंखें, लाल नाक और खरखरी-सी आवाज़ के साथ सफ़री कुर्सी पर बैठा हुआ नेपोलियन नज़रें उठाये बिना अनचाहे ही तोपों की गरज को कान लगाकर सुन रहा था। बहुत ही क्षुब्ध और निराश मन से वह इस मामले का अन्त चाहता था जिसे अपने को आरम्भ करनेवाला मानता था, मगर जिसे रोकना उसके बस का रोग नहीं था। कुछ देर को उस स्वाभाविक मानवीय भावना ने उस अस्वाभाविक मृग-

मरीचिका पर विजय प्राप्त कर ली जिसकी वह इतने अधिक समय से सेवा करता आया था। यातनाओं और मृत्यु का जो भयानक रूप उसने युद्ध-क्षेत्र में देखा था, उसे अपने साथ जोड़कर अनुभव करने का प्रयास किया। उसके दिल-दिमाग़ की बोझिल भावना ने उसे यह चेतना करवाई कि वह ख़ुद भी ऐसी यातना और मौत का शिकार हो सकता है। इस क्षण वह न तो मास्को, न विजय और न कीर्ति ही चाहता था। (उसे और अधिक कीर्ति की आवश्यकता ही क्या थी?) इस क्षण तो वह केवल विश्राम, चैन और सारे झंझटों से निजात चाहता था। किन्तु जब वह सेम्योनोव्स्कोये की ऊंचाई पर गया था तो तोपख़ाने के संचालक ने क्न्याज़्कोवो के सामने एकत्रित रूसी सेनाओं की भीड़ पर गोलाबारी बढ़ाने के लिये इस ऊंचाई पर बहुत-सी तोपें लाने का सुझाव पेश किया था। नेपोलियन ने उसे स्वीकार कर लिया था और यह हुक्म दिया था कि उसे इन तोपों द्वारा पैदा किये जानेवाले असर की सूचना दी जाये।

एडजुटेंट ने आकर सूचना दी कि सम्राट के आदेशानुसार दो सौ तोपें रूसियों पर गोलाबारी कर रही हैं, मगर रूसी फिर भी डटे हुए हैं।

"हमारी गोलाबारी उनकी क़तारों की क़तारें साफ़ कर देती है, लेकिन वे फिर भी डटे हुए हैं," एडजुटेंट ने कहा।

"वे और चाहते हैं!.." नेपोलियन खरखरी आवाज़ में कह उठा।

"क्या कहा हुज़ूर?" एडजुटेंट ने पूछा जो नेपोलियन के शब्द सुन नहीं पाया था।

"वे और चाहते हैं," नेपोलियन ने त्योरी चढ़ाकर फटी-सी आवाज़ में कहा, "उन्हें और दो।"

नेपोलियन के आदेश के बिना ही वह सब हो रहा था जो वह चाहता था और केवल इसीलिये आदेश देता था कि ऐसा सोचता था कि उससे आदेश देने की आशा की जा रही है। वह फिर से अपनी भव्यता की अस्वाभाविक मृग-मरीचिका की दुनिया में लौटकर पुनः (उस घोड़े की भांति जो चक्की के गिर्द घूमता हुआ यह कल्पना करता है कि अपने लिये कुछ कर रहा है) आज्ञाकारी ढंग से वह क्रूर, दुखद, कठिन और अमानवीय भूमिका पूरी करने लगा जो उसके भाग्य में बदी थी।

इस व्यक्ति की बुद्धि और आत्मा पर, जिसे इस मामले में भाग लेनेवालों की तुलना में सभी चीज़ों का, इन सारी घटनाओं का सबसे ज़्यादा बोझ सहन करना पड़ता था, केवल इस समय और इस दिन ही परदा नहीं पड़ा था, बल्कि अपने जीवन के अन्त तक वह न तो भलाई, न सौन्दर्य, न सचाई और न अपने कार्य-कलापों का आशय समझ सका जो सचाई और भलाई के सर्वथा प्रतिकूल थे, मानवोचित कार्य-कलापों से इतने अधिक दूर थे कि वह उनका आशय समझ पाता। आधी दुनिया उसके जिन कार्य-कलापों की प्रशंसा कर रही थी, वह उनसे इन्कार नहीं कर सकता था और इसलिये उसे सचाई और भलाई तथा उस सब से इन्कार करना पड़ा जो मानवोचित था।

लाशों और यातना सहते लुंज-पुंज लोगों से अटे पड़े रणक्षेत्र (जिसे वह अपनी इच्छा का परिणाम समझता था) के गिर्द घोड़े पर चक्कर लगाते और इन लोगों को देखते हुए केवल आज ही उसने यह हिसाब नहीं लगाया था कि एक फ़्रांसीसी के मुक़ाबले में कितने रूसी मरे हैं और अपने को धोखा देते हुए उसने ख़ुश होने का यह आधार ढूंढ़ लिया था कि एक फ़्रांसीसी के मुक़ाबले में पांच रूसी मरे हैं। केवल आज ही उसने पेरिस में किसी को भेजे गये पत्र में यह नहीं लिखा था कि "रणक्षेत्र भव्य था" क्योंकि उसमें पचास हज़ार लाशें पड़ी थीं। नहीं, उसने तो सेंट हेलेन के शान्तिपूर्ण एकान्त में भी, जहां, उसके ही शब्दों में, वह अपना फ़ुरसत का वक़्त अपने द्वारा किये गये महान कार्यों को लिखित रूप देने को ही अर्पित करना चाहता था, उसने यह लिखा था:

"रूसी युद्ध को हमारे नूतन समय का एक सबसे लोकप्रिय युद्ध होना चाहिये था; यह सूझ-बूझ और वास्तविक कल्याण का, शान्ति और सुरक्षा का युद्ध था; यह शान्तिपूर्ण और परिमित था।

"यह महान उद्देश्य, अनिश्चितता के अन्त और सुरक्षा के आरम्भ का युद्ध था। सभी की भलाई और समृद्धि के नये क्षितिज उभरते, नयी श्रम-सम्भावनायें सामने आतीं। यूरोपीय प्रणाली की नींव पड़ जाती, उसे संगठित करना ही बाक़ी रह जाता।

"इन महान प्रश्नों से सन्तुष्ट होकर तथा सभी जगह शान्ति

हो जाने पर मेरी भी अपनी **कांग्रेस** तथा अपना **पावन संघ*** होता। ये मेरे विचार हैं जिन्हें चुरा लिया गया है। महान राज्यों के इस संघ में हम एक परिवार की तरह अपने हितों पर विचार-विमर्श करते और आम जनता के सामने उसी प्रकार अपनी गति-विधियों की रिपोर्ट पेश करते जैसे मुंशी अपने मालिक के सामने।

"इस तरह यूरोप वास्तव में बहुत जल्द ही एक जनगण बन जाता और इसके किसी भी भाग में यात्रा करनेवाला कोई भी व्यक्ति अपने को हमेशा एक साझी मातृभूमि में पाता।

"मैंने इस बात पर ज़ोर दिया होता कि सभी नदियां सभी जहाज़ों के लिये खुली हों, कि सागर सबके लिये साझे हों, कि स्थायी और बड़ी सेनायें ख़त्म करके उन्हें सम्राटों के रक्षकों तक ही सीमित कर दिया जाये, आदि।

"अपनी महान, शक्तिशाली, अद्भुत, शान्त, यशस्वी मातृभूमि, यानी फ़्रांस में लौटकर मैंने उसकी सीमाओं को अपरिवर्तनीय, भविष्य की सभी लड़ाइयों को **रक्षात्मक**, सभी प्रकार के विवर्धन को **राष्ट्र-विरोधी** घोषित कर दिया होता; मैंने अपने बेटे को साम्राज्य के संचालन में सहभागी बना लिया होता, मेरा **अधिनायकत्व** समाप्त हो जाता और उसका संवैधानिक शासन आरम्भ होता...

"पेरिस सारी दुनिया की राजधानी होता और फ़्रांसीसी से संसार की हर जाति को ईर्ष्या होती!..

"इसके बाद सम्राज्ञी को अपने साथ लेकर मैं फ़ुरसत का सारा वक़्त और जीवन के अन्तिम दिन तथा अपने बेटे के शासन-शिक्षण के पूरे समय को वास्तविक ग्रामीण दम्पति की भांति बग्घी में बैठकर धीरे-धीरे राज्य के हर कोने तक जाने, लोगों के दुख-दर्द सुनने, अन्याय को दूर करने तथा हर जगह ज्ञान-प्रचार तथा भलाई के कामों में बिताता।"

वह, जिसके लिये भाग्य ने राष्ट्र-जातियों के प्रति हत्यारे की दुखद और ऐसी भयानक भूमिका निर्धारित की थी, अपने आपको यह विश्वास

---

* १८१४–१८१५ में हुई रूस, आस्ट्रिया, इंगलैंड तथा प्रशा की वियाना कांग्रेस से अभिप्राय है, जिसने नेपोलियन प्रथम के साथ इन देशों की लड़ाइयों को समाप्त किया। १८१५ में आस्ट्रिया, प्रशा तथा रूस के पावन संघ का निर्माण हुआ। – सं०

दिलाता था कि उसके सारे कार्य-कलापों का उद्देश्य लोगों का कल्याण करना था, कि वह लाखों-करोड़ों लोगों का भाग्य-संचालन कर सकता था तथा सत्ता के बल पर लोगों की भलाई करने में समर्थ था!

"विस्चुला नदी को पार करनेवाली चार लाख की फ़्रांसीसी सेना में आधे आस्ट्रियायी, प्रशावाले, सैक्सोनी, पोलैंडी, बावारी, वीर्टेमबर्गी, मेकलेनबर्गी, स्पेनी, इतालवी और नेपल्ज़ के लोग थे। सही तौर पर कहा जाये तो शाही फ़ौज का एक-तिहाई भाग डचों, बेल्जियनों, राइनलैंडियों, प्येमोन्त तथा स्विटज़रलैंडियों, जेनेवावालों, तोस्कानों, रोमवासियों, ब्रेमन और हमबर्ग के रहनेवालों आदि का था। इस सेना में बमुश्किल १ लाख ४० हज़ार लोग फ़्रांसीसी बोलनेवाले थे।

"रूसी अभियान में फ़्रांस का ५० हज़ार से कम लोगों का जानी नुक़सान हुआ। वील्ना से मास्को की ओर पीछे हटते हुए विभिन्न लड़ाइयों में रूसी सेना की फ़्रांसीसी सेना की तुलना में चार गुना अधिक क्षति हुई। मास्को के जलने से ठण्ड और जंगलों में भुखमरी के कारण १ लाख रूसियों की जानें गयीं। इसके अलावा मास्को से ओडर की तरफ़ जाते हुए भी रूसी सेना को ठण्ड के कारण क्षति उठानी पड़ी। वील्ना तक पहुंचते हुए इसकी संख्या केवल ५० हज़ार थी और कालीश पहुंचने पर १८ हज़ार से कम ही रह गयी थी।"

नेपोलियन यह समझता था कि उसकी इच्छा से ही रूस के साथ युद्ध हुआ और जो भयानक काण्ड हुए, उनका उसके मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने बड़ी दबंगता से उस सबकी, जो कुछ हुआ, ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली और उसकी भटकी हुई बुद्धि ने इसी बात में अपनी सफ़ाई महसूस की कि काल-कलवित होनेवाले लाखों लोगों में हेस्सेनियों और बावारियों की तुलना में फ़्रांसीसियों की संख्या कम थी।

३९

दवीदोव-परिवार और सम्राट के भूदासों के उन खेतों-मैदानों तथा चरागाहों में, जहां बोरोदिनो, गोर्कि, शेवार्दिनो और सेम्यो-नोव्स्कोये गांवों के किसान सैकड़ों सालों से फ़सल काटते और

ढोर-डंगर चराते रहे थे, तरह-तरह की वर्दियोंवाली तथा विभिन्न स्थितियों में दसियों हज़ार लाशें पड़ी थीं। एक हेक्टर से कुछ अधिक क्षेत्र में फैले चिकित्सा-केन्द्र के सभी ओर घास तथा धरती ख़ून से लथपथ थी। विभिन्न सेनाओं के घायल-अघायल सैनिक, जिनके चेहरों पर भय व्याप्त था, एक ओर से मोजाइस्क तथा दूसरी ओर से वालूयेवो की तरफ़ पीछे हट रहे थे। भूखे तथा थके-हारे अन्य सैनिक-समूह अपने अफ़सरों के निर्देशन में आगे बढ़ रहे थे। कुछ अन्य अपनी जगहों पर डटे रहकर गोलियां चलाते जाते थे।

सारे मैदान के ऊपर, जो सुबह की धूप में चमकती संगीनों और हल्के धुएं में पहले इतना सुखद-सुन्दर लग रहा था, अब नमी की धुंध तथा धुआं छाया था और हवा में शोरे तथा रक्त की अजीब-सी गंध फैली थी। बादल घिर आये और मुर्दों, घायलों, भयग्रस्तों, थके-हारों तथा संशय-दुविधा में फंसे लोगों पर बारिश की बूंदें गिरने लगीं। वे तो मानो यह कहती लगती थीं – "बस काफ़ी हो चुका लोगो! अब आप यह बन्द करें... होश में आयें। आप यह क्या कर रहे हैं?"

भूखे और विश्राम के बिना बुरी तरह से थके-हारे दोनों पक्षों के लोगों के दिलों में समान रूप से यह शंका सिर उठाने लगी कि उनके एक-दूसरे को इस तरह मारते जाने में क्या कोई तुक भी है। सभी के चेहरों पर दुविधा का यह भाव देखा जा सकता था और हर किसी की आत्मा में समान रूप से यह प्रश्न उठ रहा था – "किसलिये और किसकी ख़ातिर मैं किसी को मारूं और ख़ुद मारा जाऊं? जिसकी भी चाहें हत्या करें, जो भी उनका मन माने करें, लेकिन मैं तो यह और नहीं चाहता।" शाम होते न होते हर किसी की आत्मा में यह विचार समान रूप से परिपक्व हो चुका था। ये लोग किसी भी क्षण अपने इस काम से, जो इन्होंने किया था, संत्रस्त हो सकते थे और सब कुछ छोड़-छाड़कर कहीं भी भाग सकते थे।

यद्यपि लड़ाई के अन्त में सभी लोग अपने कार्य-कलापों की पूरी भयानकता को अनुभव कर रहे थे, यद्यपि वे यह सब बन्द करने को उत्सुक थे, तथापि कोई अनबूझ, कोई रहस्यमयी शक्ति उनका संचालन करती जाती थी और तीन में से एक के अनुपात में ज़िन्दा बच रहनेवाले पसीने से तर-ब-तर, बारूद और रक्त से सने, ठोकरें खाते तथा थकान

से बेतरह हांफते तोपची गोले लाते जाते थे, उन्हें तोपों में भरते और निशाने साधते थे तथा पलीतों को आग लगाते थे। पहले की तरह ही दोनों ओर से बड़ी तेज़ी से गोले उड़ते थे, लोगों के शरीरों को छलनी करते थे तथा वह भयानक काण्ड होता जा रहा था जो लोगों की इच्छा से नहीं, बल्कि लोगों तथा संसार का संचालन करनेवाले की इच्छा से होता है।

रूसी सेना के चंडावल की अस्त-व्यस्तता को देखनेवाले किसी भी व्यक्ति ने यह कहा होता कि फ़्रांसीसियों के थोड़ा-सा और ज़ोर लगा देने पर रूसी सेना का नाम-निशान बाक़ी नहीं रहेगा। इसी प्रकार फ़्रांसीसी सेना के चंडावल की गड़बड़ देखनेवाले ने भी यह निष्कर्ष निकाला होता कि रूसी अगर थोड़ा-सा और ज़ोर लगा दें तो फ़्रांसीसी तबाह हो जायेंगे। किन्तु न तो फ़्रांसीसियों और न रूसियों ने ही यह थोड़ा-सा ज़ोर लगाया और युद्ध की ज्वाला धीरे-धीरे बुझती चली गयी।

रूसियों ने यह कोशिश इसलिये नहीं की कि वे फ़्रांसीसियों पर हमला नहीं कर रहे थे। लड़ाई के आरम्भ में वे मास्को की ओर जाने-वाले रास्ते पर दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकने के लिये खड़े रहे थे और लड़ाई के अन्त में भी वे वहां पर उसी तरह से खड़े थे, जैसे लड़ाई के शुरू में। किन्तु यदि रूसियों का ध्येय फ़्रांसीसियों को मार भगाना भी होता तो भी वे यह आख़िरी कोशिश न कर सकते, क्योंकि रूसियों की सारी सेनायें कुचल डाली गयी थीं, उनकी सेनाओं का एक भी ऐसा भाग नहीं था जिसको लड़ाई में बहुत अधिक क्षति न पहुंची हो और अपनी जगहों पर डटे रहते हुए ही रूसियों की **आधी** सेना नष्ट हो गयी थी।

पिछले पन्द्रह वर्षों की सभी लड़ाइयों में अपनी विजयों की स्मृ-तियां संजोने, नेपोलियन की अजेयता में विश्वास करने तथा यह चेतना रखनेवाले फ़्रांसीसी कि उन्होंने रणक्षेत्र के एक भाग पर अधिकार कर लिया है, कि उनके केवल एक-चौथाई सैनिक मरे हैं, कि उनकी बीस हज़ार की गार्ड-सेना ज्यों की त्यों क़ायम है, आसानी से यह कोशिश कर सकते थे। रूसियों को उनकी जगहों से हटाने के लिये उनपर आक्रमण करनेवाले फ़्रांसीसियों को यह कोशिश करनी चाहिये थी, क्योंकि जब तक लड़ाई के आरम्भकाल की भांति रूसी उनका मास्को की तरफ़ बढ़ने का मार्ग रोके हुए थे, तब तक उनकी लक्ष्यसिद्धि नहीं

हुई थी और उनकी सारी कोशिशें तथा सारी क्षतियां व्यर्थ रही थीं। किन्तु फ़्रांसीसियों ने यह प्रयास नहीं किया। कुछ इतिहासकारों का यह कहना है कि नेपोलियन को अपनी पुरानी गार्ड-सेना, जो युद्ध-क्षेत्र से अलग खड़ी रही थी, लड़ाई जीतने के लिये जंग के मैदान में भेज देनी चाहिये थी। इस बात की चर्चा करना कि अगर नेपोलियन अपनी गार्ड-सेना को भेज देता तो क्या होता, बिल्कुल वैसी ही बात है कि अगर पतझर में वसन्त आ जाता तो क्या होता! ऐसा हो ही नहीं सकता था। नेपोलियन ने अपनी गार्ड-सेना इसलिये नहीं भेजी कि वह ऐसा करना नहीं चाहता था, बल्कि इसलिये कि ऐसा किया नहीं जा सकता था। फ़्रांसीसी सेना के सभी जनरल, सभी अफ़सर और सैनिक यह जानते थे कि सेना की टूटती हुई हिम्मत के कारण ऐसा करना सम्भव नहीं था।

केवल नेपोलियन को ही भयानक स्वप्न जैसी यह अनुभूति नहीं हो रही थी कि उसके बहुत ही शक्तिशाली हाथ का प्रहार असफल हो रहा था, बल्कि सारे जनरल और सभी फ़्रांसीसी सैनिक भी, जो लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे या नहीं ले रहे थे, अपनी पहले की लड़ाइयों के सारे अनुभवों के बाद (जहां दस गुना कम कोशिश करने पर ही शत्रु के क़दम उखड़ जाते थे) उस दुश्मन के सामने समान रूप से डर महसूस कर रहे थे जो अपनी **आधी** सेना के नष्ट हो जाने के बावजूद लड़ाई के अन्त में भी विकराल रूप धारण किये वैसे ही डटा हुआ था जैसे लड़ाई के आरम्भ में। आक्रमण करनेवाली फ़्रांसीसी सेना का नैतिक बल समाप्त हो चुका था। बोरोदिनो के पास रूसियों ने डंडों के सिरों पर लगे कपड़े के टुकड़ों को, जिन्हें झण्डे कहा जाता है, क़ब्ज़े में करने या उस क्षेत्र द्वारा निर्धारित होनेवाली विजय प्राप्त नहीं की थी जिसपर सेनायें खड़ी रही थीं या खड़ी थीं, बल्कि वह नैतिक विजय हासिल की थी जो शत्रु को प्रतिद्वन्द्वी की नैतिक श्रेष्ठता और अपनी असमर्थता मानने के लिये विवश कर देती है। फ़्रांसीसी आक्रमणकारी उस उन्मादी दरिन्दे की भांति थे जिसे अपने आक्रमण के दौरान घातक चोट लगती है और जो यह महसूस करता है कि उसका अन्त निकट आ गया है, फिर भी आक्रमण करने से अपने को रोक नहीं सकता और ठीक इसी तरह से आधी रह जानेवाली रूसी सेनायें भी अपनी जगह से पीछे हटे बिना नहीं रह सकती थीं। इतने

ज़ोरदार झटके के बाद फ़्रांसीसी सेनायें मास्को तक बढ़ती चली जा सकती थीं, किन्तु वहां, रूसियों की ओर से किसी प्रकार के नये प्रयासों के बिना बोरोदिनो के निकट हुए घातक घाव के रक्त-स्राव के कारण उसका नष्ट हो जाना निश्चित था। नेपोलियन का मास्को से अकारण पलायन, स्मोलेन्स्क की उसी सड़क से वापसी, जहां से वह मास्को की तरफ़ बढ़ा था, आक्रमणकारी पांच लाख की सेना का नाश और नेपोलियन के फ़्रांस का पतन जिसपर बहुत ही सशक्त आत्मावाले प्रतिद्वन्द्वी ने अपनी चोट की थी – यह सब कुछ बोरोदिनो की लड़ाई का प्रत्यक्ष परिणाम था।

भाग ३

१

सतत निरपेक्ष गति मानव-बुद्धि की समझ के बाहर की बात है। किसी भी गति के नियम तभी मानव की समझ में आते हैं, जब वह इस गति की अपनी इच्छानुसार चुनी गयी इकाइयों का निरीक्षण करता है। किन्तु इसके साथ ही सतत गति को मनमाने ढंग से असतत इकाइयों में विभाजित करने के कारण बहुत-सी मानवीय भूलें भी होती हैं।

पुराने ज़माने की यह उलटबांसी सर्वविदित है कि अख़ीलस* अपने से आगे जा रहे कछुए के कभी बराबर नहीं पहुंच पायेगा, बेशक वह उससे दस गुना अधिक तेज़ चाल से ही चलता था। जब तक अख़ी-लस अपने को कछुए से अलग करनेवाला फ़ासला तय करेगा, कछुआ उसका दसवां भाग और आगे बढ़ जायेगा। जब तक अख़ीलस यह दसवां भाग तय करेगा, कछुआ सौवां भाग और आगे निकल जायेगा और यह क्रम इसी तरह से चलता रहेगा। प्राचीन लोगों को यह समस्या ऐसी प्रतीत हुई जिसका समाधान ढूंढ़ना सम्भव नहीं। ऐसे निष्कर्ष का (कि अख़ीलस कभी भी कछुए के बराबर नहीं पहुंच पायेगा) बेतुकापन इस बात में निहित है कि गति को मनमाने ढंग से असतत इकाइयों में बांट दिया गया था, जबकि अख़ीलस और कछुए की गति-शीलता सतत बनी रही थी।

गति की अधिकाधिक छोटी इकाइयों को लेते हुए हम केवल इस प्रश्न के हल के नज़दीक पहुंच जाते हैं, मगर उसे हासिल कभी नहीं कर पाते। केवल निरंतर कम होती अत्यल्प इकाइयों को स्वीकारने और ज्यामितिक वृद्धि और इस ज्यामितिक वृद्धि के योग को लेते हुए ही हम इस प्रश्न का हल पा सकते हैं। निरंतर कम होती अत्यल्प

---

* एक यूनानी वीर-नायक जिसे "तेज़ क़दमोंवाले" की संज्ञा दी गयी थी। – सं०

इकाइयों की गणना करने में समर्थ गणित की एक नई शाखा अब गति के ऐसे अन्य जटिल प्रश्नों के उत्तर दे सकती है जो पहले असम्भव प्रतीत होते थे।

गणित की यह नई शाखा, जिससे पुराने ज़माने के लोग अपरिचित थे, गति की समस्याओं पर विचार करते समय निरंतर कम होती अत्यल्प इकाइयों अर्थात् ऐसी इकाइयों को स्वीकारते हुए जो गति की मुख्य शर्त (निरपेक्ष गति) के अनुरूप होती हैं, उस अनिवार्य भूल को सुधार देती है जो मानवीय बुद्धि उस समय अवश्य करती है, जब वह सतत गति पर विचार करने के बजाय गति की अलग-अलग इकाइयों पर विचार करती है।

ऐतिहासिक गतिशीलता के नियमों की खोज में बिल्कुल ऐसा ही होता है।

असंख्य लोगों की इच्छाओं से जन्म लेनेवाली मानवजाति की गतिशीलता सतत रूप से चलती जाती है।

इस सतत गतिशीलता के नियमों को समझना ही इतिहास का उद्देश्य है। किन्तु सभी मानवीय इच्छाओं के योग की सतत गतिशीलता के नियमों को समझने के लिये मानवीय बुद्धि मनमाने ढंग से अलग-अलग इकाइयों को स्वीकार कर लेती है। इतिहास की पहली विधि यह है कि वह मनमाने ढंग से कुछ सतत घटनायें चुनकर उन्हें दूसरी घटनाओं से अलग करते हुए उनपर विचार करे, यद्यपि किसी घटना का न तो कोई आरम्भ होता है और न हो ही सकता है, क्योंकि एक घटना हमेशा दूसरी घटना से सम्बन्ध बनाये रखते हुए ही घटती है। दूसरी विधि यह है कि एक व्यक्ति, किसी ज़ार या सेनापति की गति-विधियों को लोगों की इच्छाओं का योग मानते हुए उनपर विचार किया जाये, जबकि लोगों की इच्छाओं के योग को किसी एक ऐतिहासिक हस्ती की गति-विधियों में कभी अभिव्यक्ति नहीं मिलती।

सचाई के निकट पहुंचने के लिये इतिहासशास्त्र अपने निरीक्षण के हेतु निरन्तर अधिकाधिक अत्यल्प इकाइयों को लेता जाता है। किन्तु इतिहास द्वारा ली गयी इकाइयां चाहे कितनी ही अत्यल्प क्यों न हों, हम यह अनुभव करते हैं कि किसी एक इकाई को दूसरी से अलग रूप में स्वीकार करना, किसी घटना के **आरम्भ को** मानना और यह स्वीकार कर लेना कि सभी लोगों की इच्छायें किसी एक ऐतिहासिक

हस्ती के कार्य-कलापों में व्यक्त होती हैं, अपने आपमें ही ग़लत बात है।

आलोचक द्वारा किसी प्रकार के प्रयास के बिना इतिहास का कोई भी निष्कर्ष केवल इसी कारण पूरी तरह से धूल में मिल जाता है कि आलोचक अपने निरीक्षण के लिये कोई भी छोटी या बड़ी असम्बद्ध-असतत इकाई चुनता है जिसका उसे पूरा अधिकार है, क्योंकि चुनी जानेवाली ऐतिहासिक इकाई हमेशा स्वैच्छिक होती है।

केवल निरंतर कम होती इकाइयों – इतिहास के विभेदक (यानी लोगों की साझी प्रवृत्तियों) को निरीक्षण के लिये स्वीकारने तथा समाकलन की कला (यानी इन निरंतर कम होती इकाइयों के योग) को आधार बनाने पर ही हम इतिहास के नियमों को समझ पाने की आशा कर सकते हैं।

१९वीं शताब्दी के पहले पन्द्रह वर्षों में यूरोप में लाखों-लाख लोग असाधारण रूप से गतिशील रहे। उन्होंने अपने सामान्य काम-धन्धे छोड़ दिये, यूरोप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाते रहे, एक-दूसरे को लूटते और मारते-काटते रहे, विजयी और निराश होते रहे। कुछ वर्षों के लिये जीवन का सारा क्रम ही बदल गया, उसने एक प्रबल धारा का रूप ले लिया जो पहले अधिकाधिक सशक्त होती गयी और फिर क्षीण होने लगी। इस गतिशीलता या सक्रियता का क्या कारण था और किन नियमों के अनुसार ऐसा हुआ? – मानवीय बुद्धि यह प्रश्न प्रस्तुत करती है।

इतिहासकार इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हमारे सामने पेरिस की एक इमारत में एकत्रित कोई एक दर्जन लोगों के भाषण और कार्य-कलाप पेश करते हैं, इन भाषणों तथा कार्य-कलापों को क्रान्ति शब्द की संज्ञा देते हैं; इसके बाद नेपोलियन और उसके हमदर्दों तथा दुश्मनों की सविस्तार जीवनी प्रस्तुत करते हैं, इनमें से कुछ लोगों के दूसरों पर पड़नेवाले असर का उल्लेख करते हैं और फिर यह कहते हैं – इस कारण यह सारी हलचल हुई और इसके ये नियम हैं।

किन्तु मानवीय बुद्धि इस स्पष्टीकरण को न केवल मानने से इन्कार करती है, बल्कि दो टूक यह कहती है कि स्पष्टीकरण की यह विधि ठीक नहीं है, क्योंकि इसके अनुसार लघुतम घटना को सबसे बड़ी

घटना का कारण मान लिया जाता है। लोगों की इच्छाओं के योग ने ही क्रान्ति और नेपोलियन को जन्म दिया और केवल इन्हीं इच्छाओं के योग ने उन्हें सहन किया और फिर नष्ट कर डाला।

"किन्तु जब कभी विजयें हुई हैं, विजेता भी हुए हैं; जब कभी राज्य का तख़्ता पलटा गया है, महान लोग भी हुए हैं," इतिहास ऐसा कहता है। हां, वास्तव में ही जब कभी विजेता सामने आये हैं तो युद्ध भी हुए हैं, मानवीय बुद्धि यह उत्तर देती है, मगर इससे यह तो सिद्ध नहीं हो जाता कि विजेता युद्धों के कारण थे और यह कि एक व्यक्ति के कार्य-कलापों में युद्ध के नियम खोजना सम्भव है। जब कभी अपनी घड़ी पर नज़र डालने पर मैं यह देखता हूं कि उसकी सूई दस के क़रीब पहुंच गयी है और पड़ोस के गिरजाघर में घण्टे बजने लगते हैं, लेकिन चूंकि घड़ी की सूई उसी वक़्त दस पर आती है जब घण्टे बजने लगते हैं, मुझे यह निष्कर्ष निकालने का अधिकार नहीं है कि सूई की स्थिति घण्टों के बजने का कारण है।

जब कभी मैं रेलवे-इंजन को चलते देखता हूं तो सीटी सुनता हूं, कपाटों को खुलते तथा पहियों को गतिशील होते पाता हूं। किन्तु इससे मुझे यह निष्कर्ष निकालने का अधिकार नहीं मिलता कि सीटी की आवाज़ और पहियों की गतिशीलता इंजन के चलने के कारण हैं।

किसान लोग कहते हैं कि वसन्त के आख़िरी दिनों में इसलिये ठण्डी हवा चलती है कि शाहबलूत मुकुलित होने लगते हैं। वास्तव में ही हर वसन्त में शाहबलूतों के मुकुलित होने के समय ठण्डी हवा चलती है। किन्तु यद्यपि शाहबलूतों के मुकुलित होने के समय ठण्डी हवा के चलने का कारण मुझे ज्ञात नहीं, तथापि मैं किसानों के इस कथन से सहमत नहीं हो सकता कि शाहबलूतों का मुकुलित होना ठण्डी हवा चलने का कारण है, क्योंकि हवा की गति शाहबलूतों के मुकुलित होने के प्रभाव-क्षेत्र से बाहर है। मैं तो इसमें परिस्थितियों के उस संयोग को ही देखता हूं जो जीवन की सभी घटनाओं में घट जाता है। मैं तो यह भी देखता हूं कि मैं चाहे कितनी देर तक और कितने ही ध्यान से घड़ी की सूई, रेलवे-इंजन के कपाटों और पट्टियों तथा शाहबलूत के मुकुलों को क्यों न देखता रहूं, मैं गिरजाघर के घण्टों के बजने, इंजन के चलने और वसन्तकालीन हवाओं के चलने का कारण नहीं जान सकूंगा। इसके लिये मुझे अपना निरीक्षण-बिन्दु पूरी तरह से

बदलना होगा और भाप, घण्टे और हवा की गति के नियमों का अध्ययन करना होगा। इतिहास को भी ऐसा ही करना चाहिये। इस प्रकार के प्रयास किये भी जा चुके हैं।

इतिहास के नियमों के अध्ययन के लिये हमें अपने निरीक्षण के विषय को पूरी तरह बदलना चाहिये, ज़ारों-बादशाहों, मन्त्रियों और जनरलों को एक तरफ़ हटाकर उन समान तथा अन्तहीन सूक्ष्मतम तत्त्वों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये जो जनसाधारण के कार्य-कलापों का संचालन करते हैं। किसी के लिये भी यह कहना सम्भव नहीं कि इस विधि का अनुकरण करते हुए मानव किस हद तक इतिहास के नियमों को समझ पायेगा; लेकिन इतना स्पष्ट है कि इसी पथ पर चलते हुए ही इतिहास के नियमों को समझ पाना सम्भव है और मानवीय बुद्धि ने अपनी उस शक्ति का दस लाखवां भाग भी अभी तक इस विधि को अर्पित नहीं किया है जो वह विभिन्न ज़ारों, सेनापतियों और मन्त्रियों के कार्य-कलापों के वर्णन तथा इन कार्य-कलापों से सम्बन्धित अपने विचारों की अभिव्यक्ति में ख़र्च कर चुकी है।

२

यूरोप की बारह भाषाओं में बोलनेवाले अथवा बारह जातियों की नेपोलियन की सेनायें रूस में घुस आयीं। रूसी सेनायें और रूसी लोग उनसे मुठभेड़ न करते हुए स्मोलेन्स्क तक और स्मोलेन्स्क से बोरोदिनो तक पीछे हटते चले गये। फ़्रांसीसी सेनायें निरन्तर बढ़ते आवेग से अपने लक्ष्य यानी मास्को की तरफ़ बढ़ती चली गयीं। अपने लक्ष्य के अधिकाधिक निकट होते जाने पर उनका आवेग वैसे ही बढ़ता चला गया जैसे आकाश से पृथ्वी की ओर गिरनेवाली वस्तु का वेग उतना ही अधिक होता जाता है, जितनी वह पृथ्वी के अधिक निकट पहुंचती जाती है। उनके पीछे हज़ारों किलोमीटरों तक तबाहहाल, भूखा और शत्रुतापूर्ण देश था और लक्ष्य तक पहुंचने के लिये उनके सामने कुछ दर्जन किलोमीटर ही बाक़ी थे। नेपोलियन की सेना का हर सैनिक यह बात अनुभव कर रहा था और यह अभियान

स्वयं अपने ही वेग से बढ़ता चला जा रहा था।

रूसी सेनायें जितनी अधिक पीछे हटती जाती थीं, शत्रु के विरुद्ध उनका क्रोध उतना ही अधिक बढ़ता जाता था; पीछे हटते हुए हर क़दम मानो आग में तेल डालने का काम कर रहा था। बोरोदिनो के क़रीब लड़ाई हुई। दोनों में से एक भी सेना नष्ट नहीं हुई, किन्तु रूसी सेना फ़ौरन वैसे ही अनिवार्य रूप से पीछे हट गयी जैसे कहीं अधिक तेज़ी से आ रहे गेंद के साथ टकराकर दूसरा गेंद पीछे हट जाता है। तेज़ी से बढ़ा आ रहा आक्रमणकारी गेंद (बेशक वह टकराव के कारण अपनी सारी शक्ति खो देता है) अपने आवेग के बल पर ही कुछ फ़ासले तक अनिवार्य रूप से और आगे बढ़ता चला जाता है।

रूसी सेना मास्को से एक सौ बीस वेर्स्ता और पीछे हट गयी। फ़्रांसीसी मास्को पहुंचकर वहां रुक गये। इसके पांच सप्ताह बाद तक एक भी लड़ाई नहीं हुई। फ़्रांसीसी अपनी जगह से हिलते-डुलते ही नहीं। बहुत ही बुरी तरह घायल जानवर की भांति, जिसके घावों से ख़ून बहता होता है और वह उन्हें चाटता रहता है, वे पांच हफ़्तों तक कुछ भी किये बिना मास्को में रुके रहे और फिर किसी नये कारण के बिना कालूगा मार्ग की तरफ़ पीछे की ओर दौड़ पड़े और (विजय के बाद, क्योंकि मालोयारोस्लावेत्स के क़रीब भी मैदान इन्हीं के हाथ रहा) एक भी गम्भीर लड़ाई लड़े बिना और भी ज़्यादा तेज़ी से स्मोलेन्स्क, स्मोलेन्स्क से पीछे, वील्ना से पीछे, बेरेज़िना से पीछे तथा इसी तरह और अधिक पीछे ही पीछे भागते चले गये।*

२६ अगस्त को कुतूज़ोव और सारी रूसी सेना को इस बात का विश्वास था कि बोरोदिनो की लड़ाई जीत ली गयी है। कुतूज़ोव ने सम्राट को यही लिखा भी था। कुतूज़ोव ने दुश्मन को ख़त्म करने के लिये नयी लड़ाई की तैयारी का इस कारण आदेश नहीं दिया था कि वह किसी की आंखों में धूल झोंकना चाहते थे, बल्कि लड़ाई में भाग लेनेवाले हर व्यक्ति की भांति उन्हें भी यह ज्ञान था कि शत्रु पर विजय प्राप्त की जा चुकी है।

* यहां इस बात का उल्लेख है कि १८१२ के अक्तूबर महीने में जाड़े के निकट आने पर तथा रूसी सेना और छापेमार दस्तों द्वारा जल चुके मास्को में फ़्रांसीसियों तक रसद, गोला-बारूद तथा अन्य सामग्री का पहुंचना असम्भव बना देने के कारण उन्हें रूस से भागना पड़ा था। – सं०

किन्तु इसी शाम को और अगले दिन भयानक जानी नुक़सान, आधी सेना के नष्ट हो जाने तक की ख़बरें आने लगीं और नयी लड़ाई लड़ना बिल्कुल असम्भव हो गया।

सारी सूचनायें एकत्रित किये बिना, घायलों को रणक्षेत्र से हटाये बिना, गोला-बारूद की पूर्ति, मृतकों की गिनती, मारे गये अफ़सरों की जगह नये अफ़सरों की नियुक्ति तथा सैनिकों के भरपेट खाने तथा सो लेने की व्यवस्था किये बिना लड़ाई लड़ना **सम्भव नहीं था।**

इसके साथ-साथ लड़ाई के फ़ौरन बाद अगली सुबह को फ़्रांसीसी सेना (फ़ासला कम हो जाने पर आक्रमणकारी आवेग के फलस्वरूप) अपने आप ही रूसी सेना की तरफ़ बढ़ चली। कुतूज़ोव अगले दिन फ़्रांसीसियों पर हमला करना चाहते थे और पूरी रूसी सेना भी यही चाहती थी। किन्तु आक्रमण करने के लिये केवल इच्छा ही काफ़ी नहीं थी; ऐसा करने की सम्भावना का होना भी ज़रूरी था, मगर ऐसी सम्भावना नहीं थी। एक फ़ासले तक, इसी तरह दूसरे और फिर तीसरे फ़ासले तक पीछे हटे बिना काम नहीं चल सकता था। आख़िर १ सितम्बर को रूसी सेना जब मास्को के क़रीब पहुंच गयी तो भी सेना के सभी भागों में भावनाओं के तीव्र आवेग के बावजूद परिस्थितियों ने उसे मास्को से पीछे हटने के लिये विवश कर दिया। रूसी सेना कुछ फ़ासले तक और पीछे हट गयी और उसने मास्को दुश्मन के हवाले कर दिया।

जो लोग इस तरह से सोचने के आदी हैं कि युद्धों और लड़ाइयों की योजनायें उसी तरह से तैयार की जाती हैं जैसे हम अपने अध्ययन-कक्ष में नक़्शे के सामने बैठे हुए कल्पना करते हैं कि फ़लां-फ़लां लड़ाई को हमने किस ढंग से लड़ा होता, उनके सामने ये प्रश्न आ सकते हैं – पीछे हटते वक़्त कुतूज़ोव ने ऐसा या वैसा क्यों नहीं किया, फ़िली पहुंचने से पहले ही उन्होंने दुश्मन से टक्कर क्यों नहीं ली, वह फ़ौरन ही कालूगा मार्ग की ओर क्यों नहीं हट गये और उन्होंने मास्को को दुश्मन के हवाले कर दिया, आदि, आदि। इस तरह सोचनेवाले लोग या तो यह भूल जाते हैं या उन्हें यह मालूम नहीं होता कि हर सेनापति को हमेशा और अनिवार्य रूप से किस तरह की परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। अपने अध्ययन-कक्ष में नक़्शे के सामने बैठे हम दोनों पक्षों के सैनिकों की निश्चित संख्या और युद्ध-क्षेत्र की निश्चित जगह

को ध्यान में रखते तथा किसी निश्चित क्षण से किसी युद्ध-अभियान के बारे में सोच-विचार आरम्भ करते हुए जिस कार्य-कलाप की कल्पना करते हैं, सेनापति के कार्य-कलाप में इसके समान कुछ नहीं होता। सेनापति **आरम्भ** की उस स्थिति में कभी भी नहीं होता जिसकी हम हमेशा कल्पना करते हैं। सेनापति सदैव गतिशील-परिवर्तनशील घटनाओं के मध्य में होता है और इसलिये उसे घट रही घटनाओं के पूरे महत्त्व पर विचार करने की कभी सम्भावना नहीं मिलती। एक-एक पल में घटनायें अनजाने-अगोचर ढंग से रूप ग्रहण करती जाती हैं और इस अबाध-अविराम घटनाक्रम में सेनापति षड्यन्त्रों, चिन्ताओं, विवशताओं, सत्तास्वामियों, सुझावों, परियोजनाओं, परामर्शों, धमकियों, छल-कपटों के जटिलतम खिलवाड़ के वातावरण में होता है, उसे निरन्तर उसके सामने पेश किये जानेवाले असंख्य तथा अक्सर एक-दूसरे के विरोधी प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं।

युद्धशास्त्र के विद्वान बहुत गम्भीरता से ऐसा विचार प्रकट करते हैं कि कुतूज़ोव को फ़िली पहुंचने से बहुत पहले ही अपनी सेना को कालूगा मार्ग की ओर बढ़ा देना चाहिये था, कि किसी ने उनके सामने ऐसा सुझाव पेश भी किया था। किन्तु सेनापति के सामने, विशेष रूप से कठिन समय में, एक ही नहीं, बल्कि हमेशा दसियों ऐसी परियोजनायें एकसाथ ही पेश की जाती हैं। रणनीति और पैंतरेबाज़ी पर आधारित प्रत्येक ऐसा सुझाव या परियोजना एक-दूसरी के उलट होती है। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि सेनापति का काम इनमें से किसी एक परियोजना को केवल चुन लेना होता है। किन्तु वह तो यह भी नहीं कर सकता। घटनायें और समय प्रतीक्षा नहीं करते। उदाहरण के लिये कुतूज़ोव के सामने यह सुझाव पेश किया जाता है कि वह २८ तारीख़ को कालूगा मार्ग की ओर चले जायें, किन्तु इसी समय मीलोरादोविच का एडजुटेंट सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ आता है और यह पूछता है कि वह अब फ़्रांसीसियों से मोरचा ले या पीछे हट जाये। सेनापति को अभी, इसी क्षण इस बारे में आदेश देना चाहिये। पीछे हटने का आदेश कालूगा मार्ग की ओर हमारे मुड़ने की योजना गड़बड़ कर देता है। एडजुटेंट के फ़ौरन बाद रसद का अफ़सर यह पूछने आ जाता है कि रसद कहां ले जायी जाये, अस्पताल का संचालक यह जानना चाहता है कि घायलों को कहां ले जाया जाये ; पीटर्सबर्ग से आनेवाला सन्देशवाहक सम्राट

का यह पत्र लेकर आता है कि वह मास्को को छोड़ देने की सम्भावना को स्वीकार करने को तैयार नहीं, जबकि सेनापति का विरोधी, जो उसकी जड़ों में पानी दे रहा है (ऐसे लोग हमेशा होते हैं और सो भी एक नहीं, अनेक) कालूगा मार्ग की ओर बढ़ने की एक नयी, बिल्कुल प्रतिकूल योजना पेश करता है; स्वयं सेनापति की शक्ति यह मांग करती है कि वह सो लें और खा-पीकर अपने को कुछ मज़बूत कर लें; एक प्रतिष्ठित जनरल, जिसको पुरस्कार नहीं दिया गया, शिकायत करने आ जाता है, नगरवासी रक्षा का अनुरोध करते हैं; रणक्षेत्र की उपयुक्तता की जांच करने के लिये भेजा गया अफ़सर उससे पहले भेजे गये अफ़सर द्वारा पेश की गयी रिपोर्ट के बिल्कुल उलट रिपोर्ट पेश करता है; भेदिया, बन्दी और टोह लेकर लौटनेवाला जनरल – सभी शत्रु-सेना की स्थिति का भिन्न-भिन्न ढंग से वर्णन करते हैं। जो लोग इन अनिवार्य परिस्थितियों को, जिनमें हर सेनापति को काम करना पड़ता है, न समझने या भूल जाने के आदी हैं, वे, उदाहरण के लिये, हमारे सामने फ़िली में सेनाओं की स्थिति प्रस्तुत करते हैं और साथ ही यह भी मान लेते हैं कि १ सितम्बर को कुतूज़ोव किसी भी तरह की दुविधा के बिना यह निर्णय कर सकते थे कि मास्को को दुश्मन के हवाले कर दिया जाये या उसकी रक्षा की जाये, जबकि रूसी सेना के मास्को से पांच वेर्स्ता दूर रह जाने पर इस प्रश्न के निर्णय का कोई विकल्प ही नहीं रह जाता था। तो यह निर्णय कब किया गया? ड्रीस्सा के पास, स्मोलेन्स्क के पास और अधिक स्पष्ट रूप से २४ अगस्त को शेवार्दिनो तथा २६ अगस्त को बोरोदिनो के निकट और बोरोदिनो से फ़िली की तरफ़ पीछे हटते हुए हर दिन, हर घण्टे और हर मिनट।

३

बोरोदिनो से पीछे हटकर रूसी सेनायें फ़िली के क़रीब रुकी हुई थीं। स्थान का निरीक्षण करने के लिये जानेवाला येर्मोलोव लौटकर फ़ील्ड-मार्शल कुतूज़ोव के पास आया।

"इस स्थान पर लड़ाई लड़ना सम्भव नहीं," उसने कहा। कुतूज़ोव ने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा और उसे अपने शब्द दोहराने के लिये विवश किया। उसके शब्द दोहराने के बाद कुतूज़ोव ने उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा:

"अपना हाथ मुझे दो," और उसे इस तरह से उलटकर कि उसकी नब्ज़ को महसूस कर सकें, उन्होंने कहा—"तुम स्वस्थ नहीं हो, मेरे प्यारे। तुम जो कुछ कह रहे हो, उसपर विचार करो।"

मास्को के दोरोगोमीलोव्स्की फाटक से कोई ६ वेर्स्ता इधर पोक्लोन्नाया पहाड़ पर कुतूज़ोव अपनी बग्घी से निकलकर सड़क-किनारे की एक बेंच पर बैठ गये। जनरलों की एक बड़ी भीड़ उनके गिर्द जमा हो गयी। मास्को से आनेवाला काउंट रस्तोपचिन भी इसमें शामिल हो गया। महत्त्वपूर्ण लोगों का यह सारा जमघट कुछ दलों में बंटकर इस स्थान के लाभ-हानियों, सेना की स्थिति, सम्भव योजनाओं, मास्को की हालत, कुल मिलाकर युद्ध के प्रश्नों पर विचार कर रहा था। सभी यह अनुभव करते थे कि यद्यपि सबको इसी उद्देश्य से यहां नहीं बुलाया गया है, यद्यपि इसे ऐसा नाम नहीं दिया गया है, तथापि यह युद्ध-परिषद ही थी। बातचीत सार्वजनिक हित के प्रश्नों पर ही केन्द्रित थी। यदि किसी को कोई निजी समाचार मिलता या वह उसकी चर्चा करता तो केवल फुसफुसाकर और तत्काल फिर से साझे प्रश्नों की ओर लौट आता। इन सब लोगों के बीच हंसी-मज़ाक़ और मुस्कान तक भी नज़र नहीं आती थी। सभी के सभी स्पष्टत: अपने को स्थिति के उच्च स्तर पर बनाये रखने का प्रयास कर रहे थे। आपस में बातचीत करते हुए ये सभी दल सेनापति के निकट बने रहने का प्रयास करते थे (जिनकी बेंच इन सभी दलों का केन्द्र-बिन्दु थी) और इस तरह से बातें करते थे कि वह सुन सकें। सेनापति सुनते और अपने इर्द-गिर्द हो रही बातचीत में कुछ को दोहराने के लिये भी कहते; मगर ख़ुद उसमें हिस्सा न लेते और अपना मत को अभिव्यक्त न करते। किसी दल की बातें सुनने के बाद अधिकतर तो वह ऐसे निराशा प्रकट करते हुए मुंह फेर लेते मानो वे लोग वह न कह रहे हों जो वह जानना-सुनना चाहते थे। कुछ लड़ाई के लिये चुने गये स्थान की चर्चा कर रहे थे और इस स्थान के बजाय उन लोगों की अधिक आलोचना कर रहे थे जिन्होंने इसे चुना था। दूसरे यह प्रमाणित कर रहे थे कि भूल

पहले की गयी थी, कि दो दिन पहले ही लड़ाई लड़ी जानी चाहिये थी। तीसरे दल में सलामान्का के क़रीब हुई लड़ाई की चर्चा चल रही थी जिसके बारे में स्पेनी वर्दी पहने हुए कुछ ही समय पहले यहां आनेवाला क्रोसार नाम का फ़्रांसीसी बता रहा था। (यह फ़्रांसीसी और एक जर्मन प्रिंस, जो दोनों रूसी सेना में काम करते थे, सारागोस्सा* के घेरे का इस दृष्टि से विश्लेषण कर रहे थे कि मास्को की भी इसी तरह से रक्षा की जाये।) चौथे दल में काउंट रस्तोपचिन यह कह रहा था कि वह जन-सेना के साथ मास्को की दीवारों के क़रीब अपनी जान देने को तैयार है, लेकिन फिर भी उसे इस बात का अफ़सोस है कि उसे वास्तविक स्थिति के बारे में अन्धेरे में रखा गया है और अगर उसे पहले से ही मालूम होता तो बात दूसरी होती... पांचवें दल के लोग समरनीति की अपनी गहरी जानकारी का प्रदर्शन करते हुए यह बता रहे थे कि सेनाओं को किस दिशा में जाना होगा। छठे दलवाले बिल्कुल बेसिर-पैर की बातें कर रहे थे। कुतूज़ोव के चेहरे पर अधिकाधिक चिन्ता और उदासी का भाव आता गया। इन सभी लोगों की बातों से कुतूज़ोव एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे थे – मास्को की रक्षा करना बिल्कुल असम्भव था – इन शब्दों के वास्तविक अर्थ में ऐसा करना सम्भव नहीं था। यह तो इस हद तक असम्भव था कि अगर कोई सिरफिरा सेनापति लड़ाई लड़ने का आदेश दे भी दे तो भी सिर्फ़ गड़बड़ ही होगी, लड़ाई नहीं लड़ी जा सकेगी। लड़ाई इसलिये नहीं लड़ी जा सकेगी कि सभी ऊंचे फ़ौजी अफ़सर न केवल इस स्थान पर लड़ाई लड़ना असम्भव मानते थे, बल्कि अपनी बातचीत में इसी चीज़ पर विचार करते रहे थे कि इस स्थान से अनिवार्य रूप से पीछे हटने पर क्या स्थिति होगी। जनरल उस युद्ध-क्षेत्र में अपनी सेनाओं का संचालन कैसे करेंगे जहां लड़ाई लड़ना वे असम्भव मानते हैं? छोटे फ़ौजी अफ़सर, यहां तक कि सैनिक भी (वे भी अपने ढंग से निष्कर्ष निकालते हैं) ऐसा ही सोचते थे कि यहां डटे रहना सम्भव नहीं होगा और इसलिये वे भी जोश से नहीं लड़ सकते, जब नैतिक रूप से उन्हें यह विश्वास हो कि उनकी हार हो जायेगी। अगर बेनिगसेन इस स्थान पर लड़ाई

* सन् १८०८ में स्पेनी सारागोस्सा दुर्ग की सेना ने बड़ी वीरता से दो महीनों से अधिक समय तक फ़्रांसीसियों का मुक़ाबला किया था और फ़्रांसीसी एक-एक घर पर धावा बोलकर ही उसे क़ब्ज़े में कर पाये थे। – सं०

लड़ने के लिये ज़ोर दे रहा था और दूसरे लोग टीका-टिप्पणियां कर रहे थे तो यह प्रश्न अपने आपमें महत्त्वपूर्ण न रहकर केवल बहस और षड्यन्त्र के रूप में ही महत्त्वपूर्ण रह गया था। कुतूज़ोव यह समझ रहे थे।

लड़ाई के लिये इस स्थान का चुनाव करनेवाला बेनिगसेन ख़ूब ज़ोर-शोर से अपनी रूसी देशभक्ति का प्रदर्शन करते हुए (कुतूज़ोव माथे पर बल डाले बिना यह सब नहीं सुन सकते थे) मास्को की रक्षा करने पर ज़ोर दे रहा था। कुतूज़ोव दिन के उजाले की तरह बेनिगसेन के लक्ष्य को समझ रहे थे – अगर असफलता हाथ लगे तो सारा दोष कुतूज़ोव के मत्थे मढ़ दे जो लड़ाई लड़े बिना वोरोब्योव पहाड़ी तक सेनाओं को पीछे ले आये थे, अगर कामयाबी मिल जाये तो उसका सेहरा अपने सिर पर बांध ले और लड़ाई से इन्कार करने पर अपने को मास्को की रक्षा न करने के अपराध से मुक्त कर ले। किन्तु यह षड्यन्त्रकारी प्रश्न अब बुज़ुर्ग कुतूज़ोव के मन को परेशान नहीं कर रहा था। एक भयानक प्रश्न ही अब उनके मन पर छाया था। इस प्रश्न का किसी से भी उत्तर सुनने को नहीं मिला था। उनके सामने प्रश्न केवल यह था – "क्या मैंने ही नेपोलियन को मास्को तक आने दिया और कब मैंने ऐसा किया? कब यह हुआ? क्या कल, जब मैंने प्लातोव को पीछे हटने का हुक्म भेजा या दो दिन पहले ही शाम को जब मुझे झपकी आ गयी थी और मैंने बेनिगसेन को संचालन-भार सौंप दिया था? या इससे भी पहले?.. लेकिन कब, कब यह भयानक बात हुई थी? मास्को को तो दुश्मन के हवाले करना ही होगा। सेनाओं को पीछे हटना ही होगा और यह हुक्म देना ही पड़ेगा।" यह भयानक आदेश देना उन्हें सेनापति के पद से इन्कार करने के बराबर प्रतीत हुआ। बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं थी कि वह सत्ता को प्यार करते थे, उसके आदी हो गये थे (तुर्की में प्रिंस प्रोज़ोरोव्स्की को मिलनेवाले सम्मान से, जिसके अधीन वह वहां काम कर रहे थे, उन्हें बड़ी झल्लाहट हुई थी), उन्हें इस बात का पूरा यक़ीन था कि रूस का भाग्य उन्हीं के हाथ में है और केवल इसीलिये सम्राट की इच्छा के विरुद्ध और जनता की इच्छा के अनुसार उन्हें सेनापति चुना गया था। उन्हें विश्वास था कि इन कठिन परिस्थितियों में अकेले वही सेना-संचालक बने रह सकते हैं, कि इस दुनिया में अकेले वही ऐसे थे जो आतंकित हुए बिना

अजेय नेपोलियन का सामना कर सकते थे और वह उस आदेश के बारे में सोचकर, जिसे देने को वह विवश थे, संत्रस्त हो उठते थे। किन्तु कोई निर्णय करना ज़रूरी था, अपने इर्द-गिर्द हो रही उन बातों को समाप्त करना ज़रूरी था जो कुछ ज़्यादा ही बेतकल्लूफ़ी का रूप लेने लगी थीं।

उन्होंने वरिष्ठ जनरलों को अपने पास बुलाया।

"मेरी बुद्धि अच्छी है या बुरी, किन्तु मुझे उसी पर भरोसा करना होगा," उन्होंने बेंच से उठते हुए फ़्रांसीसी में कहा और फ़िली की ओर चले गये जहां उनकी बग्घियां खड़ी थीं।

४

अन्द्रेई सेवोस्त्यानोव नाम के एक किसान के सबसे अच्छे घर के बड़े कमरे में दिन के दो बजे युद्ध-परिषद की बैठक हुई। इस बड़े किसान-परिवार के सभी मर्द, औरतें और बच्चे ड्योढ़ी में से होकर जानेवाले घर के दूसरे कमरे में सिमट-सिमटाकर जा बैठे थे। केवल अन्द्रेई की पोती, छः वर्षीया मालाशा ही, जिसे महामान्य ने सहलाया-दुलराया था और चाय पीते वक़्त चीनी की एक डली भी दी थी, बड़े कमरे के ऊंचे, छतवाले तन्दूर के ऊपर बैठी रह गयी थी। वहां बैठी हुई मालाशा एक के बाद एक कमरे में आने और देव-प्रतिमाओं के नीचे एक कोने में रखी चौड़ी-चौड़ी बेंचों पर बैठनेवाले जनरलों के चेहरों, वर्दियों और पदकों को भीरुता तथा प्रसन्नता से देख रही थी। ख़ुद दादा, जैसे कि मालाशा सेनापति कुतूज़ोव को मन ही मन कहती थी, तन्दूर के पीछेवाली अन्धेरी जगह पर दूसरों से अलग बैठे थे। वह तह होनेवाली एक आरामकुर्सी में धंसे हुए थे, लगातार खूं-खां कर रहे थे और अपने फ़्रॉक-कोट के कालर को, जिसका बटन बेशक खुला हुआ था, ऐसे ठीक कर रहे थे मानो वह उनकी गर्दन दबा रहा हो। एक के बाद एक कमरे में आनेवाले लोग फ़ील्ड-मार्शल कुतूज़ोव के पास जाते; कुछ के साथ वह हाथ मिलाते, कुछ की ओर सिर झुका देते। एडजुटेंट काइसारोव ने कुतूज़ोव के सामनेवाली खिड़की का परदा

हटा देना चाहा, किन्तु कुतूज़ोव ने झल्लाते हुए ऐसे हाथ हिलाया कि काइसारोव समझ गया कि महामान्य यह नहीं चाहते कि उनका चेहरा दिखाई दे।

किसानों के घरों जैसी देवदारु की लकड़ी की मेज़ के गिर्द, जिसपर नक़्शे, ख़ाके, पेंसिलें और काग़ज़ रखे हुए थे, इतने अधिक लोग जमा हो गये कि अर्दलियों ने एक और बेंच लाकर मेज़ के क़रीब रख दी। येर्मोलोव, काइसारोव और टोल, जो अभी-अभी भीतर आये थे, इस बेंच पर बैठ गये। देव-प्रतिमाओं के बिल्कुल नीचे, सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर सेंट जार्ज का पदक लगाये हुए बार्कले डे टोल्ली बैठा था जिसका चौड़ा माथा मानो उसके गंजे सिर का ही भाग था तथा चेहरा पीला और बीमार-सा लग रहा था। पिछले दो दिन से वह शीत-ज्वर से पीड़ित था और इस वक़्त भी वह बुख़ार से कांप रहा था। उसकी बग़ल में बैठा हुआ उवारोव धीमी-धीमी आवाज़ में (सभी इसी तरह बातचीत कर रहे थे) तेज़ी से कुछ इशारे करता हुआ बार्कले को कुछ बता रहा था। नाटा, गोल-मटोल दोख़्तुरोव अपनी भौंहें ऊपर चढ़ाये तथा पेट पर हाथ टिकाये हुए बहुत ध्यान से ये बातें सुन रहा था। दूसरी ओर, साहसपूर्ण नाक-नक़्शे तथा चमकती आंखोंवाला चौड़ा सिर हाथ पर टिकाये हुए काउंट ओस्टरमन-तोलस्तोय बैठा था और अपने विचारों में डूबा हुआ प्रतीत होता था। सदा की भांति कनपटियों पर अपने काले बालों के छल्ले-से बनाता हुआ रायेव्स्की कभी कुतूज़ोव और कभी प्रवेश-द्वार की ओर बेचैनी से देख रहा था। कोनोव्नीत्सिन के दृढ़, सुन्दर और दयालु चेहरे पर कोमल तथा चालाकी भरी मुस्कान खिली हुई थी। उसकी नज़रें मालाशा की नज़रों से मिलीं और उसने कुछ ऐसे इशारे किये कि मालाशा मुस्कराये बिना न रह सकी।

सभी बेनिगसेन की राह देख रहे थे जो युद्ध-स्थल को फिर से देखने के बहाने बड़े इतमीनान से अपना मज़ेदार लंच खा रहा था। दिन के चार बजे से छः बजे तक उसका इन्तज़ार होता रहा और इस सारे वक़्त के दौरान विचार-विमर्श शुरू न करके सभी लोग धीमी आवाज़ में इधर-उधर की बातें करते रहे।

बेनिगसेन के भीतर आने पर ही कुतूज़ोव अपने कोने से उठे और मेज़ के क़रीब आ गये, लेकिन सिर्फ़ इतना ही क़रीब आये कि उनके

चेहरे पर उन मोमबत्तियों की रोशनी न पड़े जो मेज़ पर रख दी गयी थीं।

बेनिगसेन ने इस प्रश्न के साथ परिषद की कार्यवाही आरम्भ की – "रूस की पावन और प्राचीन राजधानी को लड़ाई के बिना दुश्मन के हवाले कर दिया जाये या उसकी रक्षा की जाये?" सभी लोग देर तक ख़ामोश रहे। सभी चेहरों पर उदासी-सी छा गयी और इस ख़ामोशी में कुतूज़ोव की खीझ भरी घुरघुराहट और खांसी ही सुनायी देती रही। सभी की नज़रें उनपर टिकी हुई थीं। मालाशा भी दादा की ओर देख रही थी। वह उनके सबसे अधिक निकट थी और यह देख रही थी कि कैसे उनका चेहरा विकृत हो गया था – वह तो मानो रोने जा रहे थे। लेकिन यह स्थिति देर तक नहीं बनी रही।

"**रूस की पावन, प्राचीन राजधानी!**" उन्होंने अचानक झल्लायी आवाज़ में बेनिगसेन के शब्दों को दोहराया और इस तरह इन शब्दों की कृत्रिमता को स्पष्ट कर दिया। "हुज़ूर, आपसे यह कहने की अनुमति चाहता हूं कि रूसी व्यक्ति के लिये इस प्रश्न में कोई तुक नहीं है। (उन्होंने अपने भारी-भरकम शरीर को आगे की ओर झुका दिया।) इस तरह का सवाल पेश करना ठीक नहीं और इस तरह के सवाल में कोई तुक नहीं। जिस प्रश्न पर विचार करने के लिये मैंने इन महानुभावों को यहां एकत्रित किया है, वह फ़ौजी प्रश्न है। सवाल यह है – रूस की रक्षा सेना पर निर्भर है और यहां लड़ाई लड़कर सेना और मास्को को खोने की जोखिम उठाना ज़्यादा अच्छा है या लड़ाई के बिना मास्को दे देना बेहतर होगा? मैं इस प्रश्न के बारे में आपके विचार जानना चाहता हूं।" (वह आरामकुर्सी पर पीछे हट गये।)

बहस शुरू हो गयी। बेनिगसेन अभी यह नहीं मानता था कि बाज़ी हार चुका है। बार्कले और दूसरे जनरलों के इस मत को स्वीकार करते हुए कि फ़िली के क़रीब रक्षात्मक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती, उसने रूसी देशभक्ति और मास्को के प्रति प्यार से ओतप्रोत होकर यह सुझाव पेश किया कि रूसी सेनाओं को रात के वक़्त दायें से बायें पहलू पर लाया जाये और अगले दिन फ़्रांसीसियों के दायें पहलू पर हमला किया जाये। विचारों का मतभेद हो गया, इस सुझाव के पक्ष और विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किये गये। येर्मोलोव, दोख़्तुरोव और रायेव्स्की ने बेनिग-

सेन के मत के साथ सहमति प्रकट की। राजधानी को दुश्मन के हवाले करने के पहले कुछ क़ुर्बानी की भावना या कुछ अन्य व्यक्तिगत विचारों से प्रेरित ये जनरल मानो इस बात को नहीं समझ पा रहे थे कि इस परिषद का विचार-विमर्श अनिवार्य घटनाक्रम को नहीं बदल सकता था और यह कि मास्को तो अब छोड़ा जा चुका है। बाक़ी जनरल इस बात को समझते थे और मास्को के प्रश्न को एक तरफ़ हटाकर यह चर्चा कर रहे थे किं रूसी सेनायें किस दिशा में पीछे हटें। मालाशा, जो अपने सामने हो रही सभी चीज़ों को टकटकी बांधकर देख रही थी, इस विचार-विमर्श का दूसरा ही अर्थ लगा रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि यह केवल "दादा" और "लम्बे कोटवाले" (उसने बेनिगसेन को यही संज्ञा दी थी) के बीच व्यक्तिगत संघर्ष था। वह देख रही थी कि एक-दूसरे से बात करते हुए दोनों खीझते-झल्लाते थे और वह मन ही मन दादा का पक्ष ले रही थी। बातचीत के दौरान उसने देखा कि दादा ने बेनिगसेन पर उड़ती-सी और चालाकी भरी नज़र डाली और इसके बाद उसे यह देखकर ख़ुशी हुई कि दादा ने "लम्बे कोटवाले" से कुछ कहकर उसका जोश ठण्डा कर दिया — बेनिगसेन के चेहरे पर अचानक लाली छा गयी और उसने खीझते हुए कमरे में चक्कर लगाया। जिन शब्दों ने बेनिगसेन पर इतना अधिक प्रभाव डाला था, उनमें कुतूज़ोव ने शान्त और धीमी आवाज़ में बेनिगसेन के सुझाव, यानी फ़्रांसीसियों के दायें पहलू पर आक्रमण करने के लिये रूसी सेनाओं को रात के वक़्त दायें से बायें पहलू की ओर ले जाने के औचित्य और अनौचित्य के बारे में अपना मत प्रकट किया था।

"महानुभावो," कुतूज़ोव ने कहा, "मैं काउंट की योजना का अनुमोदन नहीं कर सकता। दुश्मन की सेना के बहुत निकट होने पर अपनी सेना को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना हमेशा ही ख़तरनाक होता है और युद्ध-इतिहास इसकी पुष्टि करता है। मिसाल के तौर पर..." (कुतूज़ोव मानो उदाहरण ढूंढ़ते और चमकती तथा मासूम नज़र से बेनिगसेन की तरफ़ देखते हुए सोचने लगे।) "हां, मिसाल के तौर पर फ़्रीडलैंड की लड़ाई को ही लिया जा सकता है, जिसकी, मेरे ख़्याल में काउंट को बहुत अच्छी तरह से याद होगी, सिर्फ़ इसीलिये पूरी तरह से सफल नहीं रही थी कि हमारी सेनाओं को उस समय पुनर्व्यवस्थित किया गया था जब वे दुश्मन के बहुत नज़दीक थीं..."

इन शब्दों के बाद एक मिनट की, किन्तु सभी को बहुत लम्बी प्रतीत होनेवाली ख़ामोशी छायी रही।

बहस फिर से शुरू हो गयी, किन्तु बीच-बीच में अक्सर विराम आ जाते थे और ऐसे महसूस होता था कि अब बात करने को कुछ भी बाक़ी नहीं रह गया है।

ऐसे ही एक विराम के समय कुतूज़ोव ने गहरी सांस ली मानो बोलने के लिये तैयार हो रहे हों। सभी ने उनकी तरफ़ देखा।

"तो महानुभावो, नतीजा यही निकलता है कि यह सारी ज़िम्मेदारी मुझे अपने ऊपर ही लेनी होगी," उन्होंने फ़्रांसीसी में कहा। वह धीरे से उठकर मेज़ के पास गये। "महानुभावो, मैंने आपके विचार सुन लिये। आपमें से कुछ मेरे साथ सहमत नहीं होंगे। किन्तु मैं (वह रुके) सम्राट और मेरे देश द्वारा मुझे सौंपे गये अधिकार के आधार पर पीछे हटने का आदेश देता हूं।"

इसके बाद जनरल वैसे ही गम्भीरतापूर्वक और मौन धारण किये हुए सावधानी से बाहर जाने लगे, जैसे लोग किसी को दफ़नाने के बाद जाते हैं।

कुछ जनरलों ने धीमी आवाज़ और उससे बिल्कुल दूसरे ही अन्दाज़ में, जिसमें वे परिषद की बैठक में बोलते रहे थे, सेनापति से कुछ कहा।

मालाशा, जिसकी बहुत देर से रात के भोजन के लिये प्रतीक्षा हो रही थी, तन्दूर की ओर मुंह करके तथा उसके आगे को बढ़े भागों पर अपने छोटे-छोटे नंगे पांव रखकर नीचे उतरी और जनरलों के बीच से रास्ता बनाती हुई बाहर भाग गयी।

जनरलों के जाने के बाद कुतूज़ोव देर तक मेज़ पर कोहनियां टिकाये हुए बैठे और इसी भयानक प्रश्न पर विचार करते रहे – "कब, आख़िर कब यह हुआ कि मास्को को छोड़ दिया गया? कब ऐसा किया गया जिससे यह प्रश्न तय हुआ और इसके लिये कौन दोषी है?"

"मैंने ऐसी, ऐसी उम्मीद नहीं की थी," देर गये रात को उन्होंने अपने पास आनेवाले श्नेदर नाम के एडजुटेंट से कहा, "मैंने ऐसी उम्मीद नहीं की थी! मैंने ऐसा नहीं सोचा था!"

"हुज़ूर, आपको आराम करना चाहिये," श्नेदर ने कहा।

ली में युद्ध-परिषद की बैठक के बाद कुतूज़ोव।

"नहीं, यह क़िस्सा अभी ख़त्म नहीं हुआ! तुर्कों की तरह ये भी घोड़ों का मांस खायेंगे," एडजुटेंट की बात का जवाब न देते और अपनी मांसल मुट्ठी को मेज़ पर मारते हुए कुतूज़ोव चिल्ला उठे, "ये भी घोड़ों का मांस खायेंगे, सिर्फ़ अगर..."

५

लड़ाई के बिना सेना के पीछे हटने की घटना के समय ही इससे भी कहीं अधिक महत्त्व की घटना यानी मास्को को छोड़ने, उसे जलाने की घटना के मामले में, जिसका रस्तोपचिन ने निर्देशन किया, उसने कुतूज़ोव से बिल्कुल भिन्न रवैया अपनाया।

यह घटना यानी मास्को को छोड़ने और उसे जलाने की घटना उसी तरह अनिवार्य थी, जैसे बोरोदिनो की लड़ाई के बाद रूसी सेना के लड़ाई के बिना मास्को से पीछे हटने की घटना।

हर रूसी व्यक्ति तर्क-वितर्क द्वारा नहीं, बल्कि उस भावना के आधार पर जो हममें है और जो हमारे बाप-दादों में थी, उसकी भविष्यवाणी कर सकता था जो वास्तव में हुआ।

स्मोलेन्स्क से आरम्भ करके रूस के सभी नगरों और गांवों में काउंट रस्तोपचिन और उसके परचों की सहायता के बिना वही कुछ हुआ जो मास्को में हुआ था। लोग दुश्मन के आने की लापरवाही से राह देखते रहे, उन्होंने किसी तरह का विद्रोह नहीं किया, उत्तेजित नहीं हुए, किसी के साथ लड़े-झगड़े नहीं और कठिनतम घड़ी में वह करने की शक्ति अनुभव करते हुए जो उन्हें करना चाहिये था, बड़े इतमीनान से अपने भाग्य-निर्णय की प्रतीक्षा करते रहे। जैसे ही दुश्मन नज़दीक आ जाता, धनी लोग अपनी सम्पत्ति छोड़कर चले जाते; ग़रीब-ग़ुरबा रुके रहते और जो कुछ पीछे रह जाता था, उसे जलाते तथा बरबाद कर देते थे।

इस बात की चेतना कि ऐसा होगा और हमेशा ऐसा ही होगा, रूसी व्यक्ति की आत्मा में बसी हुई है। यह चेतना और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि इस बात की पूर्वानुभूति भी कि मास्को पर क़ब्ज़ा हो

जायेगा, सन् १८१२ की रूसी सोसाइटी में विद्यमान थी। जिन लोगों ने जुलाई और अगस्त के शुरू में मास्को से जाना शुरू कर दिया था, उन्होंने यह दिखा दिया कि वे ऐसी ही आशा करते थे। जो लोग अपने घरों और आधी सम्पत्ति को यहीं छोड़कर तथा जितना कुछ सम्भव हुआ, उसे अपने साथ लेकर चले गये, उन्होंने दिल में छिपी देशभक्ति की उस आग के अनुरूप ऐसा किया जो न तो वाक्यों की शक्ल में, न मातृभूमि की रक्षा के लिये बच्चों के बलिदान, आदि अस्वाभाविक कार्रवाइयों के रूप में, बल्कि प्रच्छन्न, सरल, सहज-स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त होती है और इसलिये हमेशा बहुत ही ज़ोरदार प्रभाव पैदा करती है।

"ख़तरे से डरकर भागना शर्म की बात है; सिर्फ़ बुज़दिल ही मास्को से भागते हैं," उनसे ऐसा कहा गया। रस्तोपचिन ने अपने परचों में उनपर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न किया कि मास्को से जाना लज्जा की बात है। उन्हें अपने को कायर कहलवाते हुए शर्म आई, मास्को छोड़ते समय लज्जा अनुभव हुई, फिर भी वे यह जानते हुए यहां से गये कि ऐसा करना चाहिये। किसलिये वे गये? यह मान लेना ठीक नहीं होगा कि रस्तोपचिन ने उन्हें उन भयानक बातों का हौआ दिखाकर डरा दिया था जो नेपोलियन ने उन स्थानों पर की थीं जहां उसने क़ब्ज़ा कर लिया था। वे गये, और सबसे पहले तो धनी तथा पढ़े-लिखे लोग ही मास्को से गये जो बहुत अच्छी तरह से यह जानते थे कि नेपोलियन के क़ब्ज़े के वक़्त वियाना और बर्लिन बिल्कुल सही-सलामत रहे थे तथा वहां के निवासियों ने मनमोहक फ़्रांसीसियों के साथ, जिन्हें उस समय रूसी मर्द और ख़ास तौर पर रूसी महिलायें इतना अधिक चाहती थीं, बहुत ही मज़े का वक़्त बिताया था।

वे इसलिये गये कि रूसी लोगों के सामने यह प्रश्न ही नहीं उठता था कि फ़्रांसीसियों के शासन में मास्को में उनका जीवन अच्छा या बुरा होगा। फ़्रांसीसियों के अधीन रहा ही नहीं जा सकता था – ऐसा करना ही सबसे बुरा होगा। वे राजधानी की रक्षा के आह्वानों, मास्को के राज्यपाल के इस इरादे की घोषणा के बावजूद कि वह ईवेर्स्काया चमत्कारी देव-प्रतिमा को लेकर लड़ने के लिये जाना चाहता है, उन गुब्बारों के बावजूद जो फ़्रांसीसियों को नष्ट करनेवाले थे और उस सारी बकवास के बावजूद जो रस्तोपचिन अपने परचों में लिखता था,

वे बोरोदिनो की लड़ाई के पहले और बोरोदिनो की लड़ाई के बाद तो पहले से भी ज़्यादा जल्दी से मास्को छोड़कर जा रहे थे। वे जानते थे कि सेनाओं को लड़ना चाहिये और अगर वे नहीं लड़ सकतीं तो महिलाओं तथा भूदासों को साथ लेकर त्री गोरी* पर नेपोलियन के साथ लड़ने के लिये जाना सम्भव नहीं, कि अपनी सम्पत्ति को नष्ट होने के लिये छोड़ते हुए बेशक कितना ही दुख क्यों न हो, फिर भी उसे छोड़कर जाना ही चाहिये। वे उसे छोड़कर जा रहे थे और उनके दिमाग़ में इसके निवासियों द्वारा छोड़ी जा रही इस विराट, समृद्ध और शायद जलायी गयी राजधानी (नगरवासियों द्वारा छोड़े गये लकड़ी की इमारतोंवाले बड़े नगर का जलना अनिवार्य था) के अपार महत्त्व का तो ख़्याल तक नहीं आया था; हर कोई अपने लिये ही जा रहा था, किन्तु इसके साथ तथा इसके परिणामस्वरूप ही वह महानतम घटना घटी जो सदा के लिये रूसी जनता की श्रेष्ठतम कीर्ति बनी रहेगी। उस कुलीना ने भी, जो इस धुंधली-सी चेतना के साथ कि वह नेपोलियन की दासी नहीं है तथा इस बात से डरते हुए कि कहीं उसे काउंट रस्तोपचिन के आदेशानुसार रोक न लिया जाये, अपने नीग्रो नौकरों तथा विदूषकों को लेकर जून के महीने में ही सारातोव की अपनी जागीर पर चली गयी थी, वास्तव में तथा बड़े सीधे-सादे ढंग से वही महान कार्य किया था जिसने रूस को बचा लिया। काउंट रस्तोपचिन भी, जो कभी तो मास्को को छोड़नेवाले लोगों को लज्जित करता था तो कभी मास्को के दफ़्तरों को दूसरी जगहों पर भेजता था, कभी पियक्कड़ों की भीड़ को बिल्कुल नाकारा हथियार बांटता था, कभी देव-प्रतिमा उठाकर चलता था तो कभी पादरी अगस्तिन को सन्तों के पावन अवशेष और देव-प्रतिमायें बाहर निकालने से मना कर देता था, कभी मास्को की किराये की सभी बग्घियों को अपने क़ब्ज़े में ले लेता था, तो कभी एक सौ छत्तीस बग्घियों पर लेपिख़ द्वारा बनाये जानेवाले ग़ुब्बारे को रखकर ले जाता था, कभी यह संकेत करता था कि वह मास्को को जला डालेगा, तो कभी यह बताता था कि कैसे उसने अपना घर जला डाला है और फ़्रांसीसियों को घोषणापत्र लिख भेजा है जिसमें उसने बड़ी गम्भीरता से उन्हें इस बात के लिये

---

* त्री गोरी – त्रेख़गोर्नाया फाटक (मास्को का दक्षिणी इलाक़ा)। – अनु०

भला-बुरा कहा है कि उन्होंने उसके बचपन के घर को नष्ट कर डाला है, कभी मास्को को जलाने का यश प्राप्त करना चाहता तो कभी इससे इन्कार करता था, कभी लोगों को यह हुक्म देता था कि वे सभी जासूसों को पकड़कर उसके पास लायें तो कभी ऐसा करने के लिये उनकी भर्त्सना करता था, कभी सारे फ़्रांसीसियों को मास्को से निकाल देता था तो कभी मदाम ओबेर-शेल्मा को, जो मास्को की सारी फ़्रांसीसी आबादी का केन्द्र-बिन्दु थी, मास्को में ही रहने देता था, किन्तु किसी विशेष अपराध के बिना डाकख़ाने के बूढ़े और सम्मानित पोस्ट-मास्टर क्ल्युचारेव को गिरफ़्तार करके मास्को से निष्कासित करने का आदेश देता था, कभी लोगों को फ़्रांसीसियों के विरुद्ध लड़ने को त्री गोरी पर जमा करता था और फिर इन लोगों से अपना पिंड छुड़ाने के लिये किसी आदमी को बलि का बकरा बनाकर उन्हें सौंप देता था और ख़ुद पिछले फाटक से खिसक जाता था, कभी यह कहता था कि वह मास्को के इस दुर्भाग्य को सहन नहीं कर पायेगा तो कभी इस मामले में अपने हिस्सा लेने के बारे में एलबमों में फ़्रांसीसी भाषा में कवितायें लिखता था * – यह आदमी उस महत्त्वपूर्ण घटना का, जो घट रही थी, बिल्कुल महत्त्व नहीं समझता था, लेकिन ख़ुद कुछ करना चाहता था, किसी को हैरत में डालना चाहता था, देशभक्ति और वीरतापूर्ण कोई काम करने को उत्सुक था और मास्को के छोड़े और जलाये जाने की महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य घटना के सम्मुख होने पर एक छोकरे की तरह कूद-फांद कर रहा था, और अपने छोटे-से हाथ से उसे अपने साथ बहा ले जानेवाली जन-भावना की विराट धारा को कभी तो आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित करने और कभी रोकने का प्रयास करता था।

---

* पैदा तातार हुआ था
बनना चाहा रोमन,
बर्बर कहें मुझे फ़्रांसीसी
रूसी – जार्ज दनदेन।

६

राज-दरबार के साथ वील्ना से पीटर्सबर्ग लौटने पर एलेन ने अपने को कठिन परिस्थिति में पाया।

पीटर्सबर्ग में एलेन को राज्य के एक बहुत ही ऊंचे पदवाले एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का संरक्षण प्राप्त था। वील्ना में उसकी एक युवा, विदेशी प्रिंस से घनिष्ठता हो गयी। जब वह पीटर्सबर्ग लौटी तो यह प्रिंस और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, दोनों ही यहां थे, दोनों ने ही उसपर अपना अधिकार जताया और एलेन के लिये उसके जीवन की एक नयी, अभी तक अनजानी समस्या सामने आयी – किस तरह वह किसी एक को भी नाराज़ किये बिना दोनों के साथ अपनी घनिष्ठता बनाये रखे।

किसी दूसरी औरत को जो चीज़ कठिन और असम्भव तक प्रतीत होती, उसने काउंटेस बेज़ूख़ोवा को, जो व्यर्थ ही तो अत्यधिक बुद्धिमती महिला के रूप में प्रसिद्ध नहीं थी, एक क्षण के लिये भी चिन्तित नहीं किया। अगर वह अपनी गति-विधियों पर परदा डालती, छल-कपट से इस अटपटी स्थिति में से निकलने की कोशिश करती तो स्वयं को दोषी स्वीकार करके इस तरह ख़ुद ही अपने मामले को बिगाड़ लेती। किन्तु इसके विपरीत, एलेन ने एक ऐसे वास्तविक महान व्यक्ति की भांति जो जैसा चाहता है, वैसा ही कर सकता है, फ़ौरन अपने को सही होने की स्थिति में प्रस्तुत किया, जिसपर वह सच्चे दिल से विश्वास भी करती थी और बाक़ी सबको अपराधियों की स्थिति में डाल दिया।

जवान विदेशी प्रिंस ने जैसे ही उसपर टीका-टिप्पणी करने की हिम्मत की, वैसे ही उसने बड़े गर्व से अपना सुन्दर सिर ऊपर उठाया और उसे थोड़ा-सा उसकी ओर घुमाते हुए दृढ़ता से कहा :

"यह है मर्दों की स्वार्थपरता और संगदिली! मैं इससे बेहतर किसी चीज़ की उम्मीद ही नहीं करती थी। औरत आपके लिये क़ुर्बानी करती है, यातना सहती है और यह पुरस्कार मिलता है उसे इसका। आप हुज़ूर को मेरे अनुरागों और मैत्री-भावनाओं की जवाबदेही मांगने का क्या अधिकार है? यह व्यक्ति मेरे लिये पिता से भी बढ़कर है।"

विदेशी प्रिंस ने कुछ कहना चाहा, लेकिन एलेन ने उसे टोक दिया :

"हां, यह हो सकता है कि इस आदमी के दिल में मेरे प्रति एक पिता जैसी नहीं, बल्कि कुछ भिन्न भावनायें हों, लेकिन इस कारण मैं उसके लिये अपने घर के दरवाज़े बन्द नहीं कर सकती। मैं पुरुष नहीं हूं कि कृतघ्नता से बदला चुकाऊं। आप हुज़ूर यह जान लें कि अपनी आन्तरिक भावनाओं के मामले में मैं भगवान और अपनी आत्मा के सामने ही जवाबदेह हूं," उसने अपने सुन्दर, पूरी तरह उभरे हुए वक्ष पर हाथ रखकर आकाश की ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त की।

"भगवान के लिये मेरी बात तो सुनिये।"

"मेरे साथ शादी कर लीजिये और मैं आपकी दासी बन जाऊंगी।"

"लेकिन यह तो सम्भव नहीं।"

"आप मुझसे शादी करने के स्तर तक नीचे नहीं आना चाहते, आप..." एलेन ने रोना शुरू करते हुए कहा।

प्रिंस उसे तसल्ली देने लगा। एलेन ने आंसू बहाते हुए (मानो सुधबुध खोकर) कहा कि कुछ भी तो उसके दूसरी बार शादी करने के आड़े नहीं आ सकता, कि ऐसे उदाहरण हैं (तब बहुत कम ऐसे उदाहरण थे, किन्तु उसने नेपोलियन और अन्य ऐसे बड़े लोगों के नाम लिये), कि वह कभी भी अपने पति की पत्नी नहीं थी, कि उसे बलि का बकरा बनाया गया था।

"किन्तु क़ानून, धर्म..." प्रिंस ने उसकी बात को कुछ हद तक स्वीकार करते हुए कहा।

"क़ानून, धर्म... अगर वे यह नहीं कर सकते तो इनकी ज़रूरत ही क्या थी!" एलेन ने कहा।

प्रिंस को इस बात की हैरानी हुई कि ऐसी सीधी-सादी बात भी उसके दिमाग़ में नहीं आई और वह 'ईसा मसीह सोसाइटी' के पावन-बन्धुओं के पास, जिनके साथ उसके अच्छे मैत्री-सम्बन्ध थे, सलाह लेने के लिये गया।

इसके कुछ दिन बाद एक शानदार पार्टी में, जो एलेन ने कामेन्नी ओस्त्रोव में स्थित अपने बंगले पर आयोजित की थी, उसका एक ढलती उम्र के, बर्फ़ जैसे सफ़ेद बालों और चमकती काली आंखोंवाले मनमोहक व्यक्ति से परिचय करवाया गया। कम लम्बा फ़ॉक-कोट पहने जोबेर नाम का यह महानुभाव, जो उक्त सोसाइटी का साधारण सदस्य

था, दीपमाला के प्रकाश और संगीत की ध्वनियों के वातावरण में देर तक बाग़ में एलेन के साथ प्रभु-प्रेम, ईसा मसीह तथा मां मरियम के प्रति प्रेम और एकमात्र सच्चे कैथोलिक धर्म द्वारा इस जीवन तथा अगले जीवन में दी जानेवाली शान्ति की चर्चा करता रहा। इन बातों ने एलेन के मन को छू लिया, अनेक बार एलेन तथा जोबेर की आंखें भर आयीं और उसकी आवाज़ कांप उठी। एक नाच के वक़्त एलेन का नृत्य-साथी उसे नाचने के लिये बुलाने आ गया, जिससे इस भावी आत्मिक निदेशक के साथ उसकी इस बातचीत में ख़लल पड़ गया, किन्तु अगले दिन की शाम को श्रीमान जोबेर फिर से एलेन के पास आया और इसके बाद अक्सर उसके यहां आने लगा।

यह महानुभाव एक दिन काउंटेस को कैथोलिक गिरजाघर में ले गया और वह वेदी के सामने, जहां उसे ले जाया गया, घुटनों के बल हो गयी। ढलती उम्र के मनमोहक फ़्रांसीसी ने उसके सिर पर अपना हाथ रख दिया और, जैसाकि बाद में ख़ुद एलेन ने ही बताया, उसने अपनी आत्मा में ताज़ा हवा का एक झोंका-सा अनुभव किया। उसे बताया गया कि यह तो भगवान ने उसपर अपनी कृपा की है।

इसके बाद लम्बे चोग़ेवाले एक पादरी को एलेन के पास लाया गया, एलेन ने उसके सामने अपने पापों को स्वीकार किया और पादरी ने उसे पाप-मुक्त कर दिया। अगले दिन एलेन के यहां एक बक्सा लाया गया जिसमें पावन पेय था और उसे घर पर उसके उपयोग के लिये छोड़ दिया गया। कुछ दिनों के बाद एलेन को यह जानकर ख़ुशी हुई कि वह अब वास्तविक कैथोलिक धर्म की अनुयायी बन गयी है, कि कुछ दिनों में ख़ुद पोप को इस बात का पता चल जायेगा और वह उसे कोई दस्तावेज़ भेजेगा।

इस सारे वक़्त में जो कुछ भी एलेन के इर्द-गिर्द और उसके साथ हुआ, इतने बुद्धिमान लोगों द्वारा इतने मधुर तथा सुसंस्कृत ढंग से उसकी ओर दिये गये ध्यान तथा कबूतरी जैसी निर्मलता (इस पूरे वक़्त में वह सफ़ेद रिबनों सहित सफ़ेद पोशाक पहनती रही) – इस सब से उसे सुख-सन्तोष मिलता रहा। किन्तु इस सुख-सन्तोष के कारण उसने अपने लक्ष्य को एक मिनट के लिये भी आंखों से ओझल नहीं होने दिया। जैसाकि हमेशा होता है, चालाकी-होशियारी के मामले में बुद्धू व्यक्ति अपने से कहीं अधिक बुद्धिमानों से बाज़ी मार ले जाता

है, एलेन यह समझकर कि उससे कहे गये सभी मधुर शब्दों और गति-विधियों का मुख्य उद्देश्य उसे कैथोलिक बनाने के बाद उससे कैथोलिक धर्म की संस्थाओं के लिये पैसा बटोरना है (जिसकी तरफ़ संकेत भी किये गये थे) उसने ऐसा करने के पहले इस बात की मांग की कि उन सारी औपचारिकताओं को पूरा किया जाये जो उसे उसके पति से मुक्ति दिला दें। उसकी समझ के मुताबिक़ हर धर्म का महत्त्व इसी चीज़ में निहित है कि वह मानवीय इच्छाओं की पूर्ति के लिये उचित आधार प्रस्तुत करे। इसी उद्देश्य से उसने अपने आत्मिक गुरु के साथ एक बातचीत के दौरान इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये ज़ोर दिया कि उसकी शादी का बन्धन किस हद तक कठोर है।

ये दोनों खिड़की के क़रीब ड्राइंगरूम में बैठे थे। खिड़की से फूलों की महक आ रही थी। एलेन सफ़ेद पोशाक पहने थी जिसमें से उसके वक्ष और कन्धों की झलक मिल रही थी। हृष्ट-पुष्ट, गदरायी और बहुत अच्छी तरह से साफ़ की गयी ठोड़ी, सुंदर मज़बूत मुंह और गोरे-गोरे हाथोंवाला पादरी, जिन्हें वह नम्रता से घुटनों पर टिकाये था, एलेन के नज़दीक बैठा था और होंठों पर हल्की-सी मुस्कान तथा आंखों में एलेन के सौन्दर्य के प्रति शान्त-प्रशंसापूर्ण दृष्टि लिये हुए कभी-कभी उसके चेहरे की ओर देखता और उस प्रश्न के बारे में, जो उनके सामने था, अपना दृष्टिकोण व्यक्त करता। बेचैनी से मुस्कराती हुई एलेन उसके घुंघराले बालों, बहुत अच्छी तरह से हजामत बने, कुछ संवलाये और भरे-भरे गालों को देखती और हर क्षण यह उम्मीद करती कि बातचीत कोई नया मोड़ ले लेगी। किन्तु पादरी बेशक स्पष्टतः एलेन के सौन्दर्य और निकटता का सुख-पान कर रहा था, अपनी बात को चतुराई से पेश करने के फेर में पड़ा हुआ था।

आत्मिक गुरु इस प्रकार से तर्क-वितर्क कर रहा था। उस चीज़ के महत्त्व से अनभिज्ञ होते हुए, जो आपने की, आपने उस व्यक्ति को वैवाहिक निष्ठा का वचन दिया जिसने विवाह के धार्मिक महत्त्व में विश्वास न करते हुए विवाह के बन्धन में बंधकर धर्म-विरोधी काम किया। इस विवाह को वह द्विपक्षीय महत्त्व नहीं प्राप्त हुआ जो उसे प्राप्त होना चाहिये था। किन्तु इसके बावजूद आपके वचन ने आपको बांध दिया। आप अपने पथ से विचलित हो गयीं। ऐसा करके आपने क्या अपराध किया? कोई लघुपाप या महापाप? लघुपाप, क्योंकि

आपने किसी दुर्भावना से ऐसा नहीं किया। अगर आप बच्चों को जन्म देने के विचार से अब नया विवाह करतीं तो आपका पाप क्षम्य हो जाता। किन्तु यह प्रश्न फिर से दो रूप ले लेता है। पहला तो यह ...

"मगर मैं सोचती हूं," ऊब अनुभव कर रही एलेन ने अचानक अपनी मुग्धकारी मुस्कान के साथ कहा, "कि एक सच्चे धर्म की अनुयायी बनने पर मेरा उस बन्धन में बंधे रहना आवश्यक नहीं जिसमें झूठे धर्म ने मुझे बांधा था।

कोलम्बस के अण्डे की तरह* इस मामले के इतनी सादगी से पेश किये जाने पर आत्मिक गुरु चकित रह गया। अपनी शिष्या की अप्रत्याशित रूप से इतनी तेज़ प्रगति की वह प्रशंसा किये बिना न रह सका, किन्तु अपनी बौद्धिक और बड़ी कठिनाई से खड़ी की गयी दलीलों की इमारत से भी इन्कार नहीं कर सका।

"आइये, इस मामले को समझने की कोशिश करें," उसने मुस्कराकर कहा और अपनी धर्म-पुत्री के तर्कों का खण्डन करने लगा।

७

एलेन अच्छी तरह से समझती थी कि धार्मिक दृष्टि से यह मामला बड़ा सीधा-सादा और आसान था, किन्तु उसके धार्मिक गुरु केवल इसी डर से बाधायें खड़ी कर रहे थे कि इस मामले में सांसारिक सत्ता का क्या रवैया होगा।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए एलेन ने यह निर्णय किया कि सोसाइटी को इस मामले के लिये तैयार करना चाहिये। उसने महत्त्वपूर्ण बुज़ुर्ग की ईर्ष्या की आग को हवा दी और उससे भी वही कुछ कहा जो अपने पहले प्रेमी-दावेदार से, यानी प्रश्न को इस तरह पेश

---

* एक कथा के अनुसार कोलम्बस ने इस समस्या को हल करते हुए कि अण्डे को कैसे खड़ा किया जा सकता है, उसके एक सिरे को तोड़कर उसे मेज़ पर रख दिया था। – सं०

कर दिया कि उसपर अधिकार पाने का एक ही उपाय है – उससे शादी की जाये। पति के ज़िन्दा रहते हुए एलेन के साथ शादी के प्रस्ताव से महत्त्वपूर्ण बुज़ुर्ग भी शुरू में तो उसी तरह से चकित रह गया जैसे जवान प्रेमी। किन्तु एलेन के इस दृढ़ विश्वास ने कि यह तो किसी युवती के शादी करने के समान ही सीधा-सादा और स्वाभाविक मामला है, उसपर भी प्रभाव डाल दिया। अगर एलेन में ही कहीं ढुलमुलपन, लज्जा-संकोच या दुराव-छिपाव का मामूली-सा लक्षण भी नज़र आ जाता तो निश्चय ही उसका मामला गड़बड़ हो जाता। किन्तु न केवल उसमें दुराव-छिपाव और लज्जा-संकोच का ऐसा कोई लक्षण ही नहीं दिखाई दिया, बल्कि, इसके विपरीत, उसने भोली-भाली सरलता और ख़ुशमिज़ाजी से अपने अंतरंग मित्रों को (जिनमें सारा पीटर्सबर्ग ही शामिल था) यह बताया कि प्रिंस और महत्त्वपूर्ण बुज़ुर्ग – दोनों ने ही उसके साथ शादी करने का प्रस्ताव किया है, कि वह दोनों को ही प्यार करती है और दोनों में से किसी के दिल को भी ठेस नहीं लगाना चाहती।

सारे पीटर्सबर्ग में आन की आन में यह ख़बर तो नहीं फैली कि एलेन अपने पति से तलाक़ लेना चाहती है (ऐसी अफ़वाह फैलने पर बहुतों ने ऐसे ग़ैरक़ानूनी इरादे का विरोध किया होता), मगर यह ख़बर ज़रूर फैल गयी कि बदक़िस्मत और प्यारी एलेन इस उलझन में पड़ी हुई है कि अपने साथ विवाह के दो इच्छुकों में से किसके साथ शादी करे। प्रश्न अब यह नहीं था कि किस हद तक यह सम्भव है, बल्कि सिर्फ़ यह कि किसके साथ शादी करना उसके लिये ज़्यादा अच्छा होगा और राज-दरबार का इसके प्रति क्या रवैया होगा। हां, सचमुच कुछ ऐसे रूढ़िवादी लोग भी थे जो इस मामले की ऊंचाई तक उठने में असमर्थ थे और इस चीज़ में विवाह की पवित्रता को दूषित करने की भावना देखते थे। किन्तु इनकी संख्या बहुत कम थी और ये चुप थे। अधिकतर लोग तो उस सुख की ही चर्चा करते थे जो एलेन के जीवन में आ रहा था और यह कि उसके लिये किसके साथ शादी करना बेहतर होगा। पति के ज़िन्दा होते हुए किसी औरत का शादी करना अच्छा है या बुरा, इसकी चर्चा ही नहीं की जाती थी, क्योंकि सम्भवतः (जैसाकि कहा जाता था) हमसे अधिक बुद्धिमान लोगों के लिये यह प्रश्न हल हो चुका था और इस समाधान के औचित्य के

सम्बन्ध में सन्देह प्रकट करने का अर्थ अपने को बुद्धू बनाने और सोसाइटी में जीने का ढंग न जानने की जोखिम उठाना था।

केवल मरीया द्मीत्रियेव्ना अख़्रोसिमोवा ने ही, जो गर्मी में अपने एक बेटे से मिलने पीटर्सबर्ग आयी थी, लोगों की आम राय के प्रतिकूल साफ़-साफ़ ही अपना मत प्रकट कर दिया। एक बॉल-नृत्य में एलेन से मुलाक़ात होने पर उसने हॉल के बीचोंबीच ही उसे रोक लिया और सामान्य ख़ामोशी के वातावरण में अपनी रूखी-सी आवाज़ में उससे कहा:

"यहां तो पतियों के जीवित होते हुए ही पत्नियां दूसरी शादियां करने लगी हैं। तुम क्या यह सोचती हो कि तुम्हें कोई नयी बात सूझी है? नहीं, देवी जी, तुमसे बाज़ी मार ली गयी है। बहुत पहले ही ऐसा सोचा जा चुका है। सभी ... में* ऐसा ही होता है।" इतना कहकर मरीया द्मीत्रियेव्ना अपने अभ्यस्त ढंग से धमकी-सी देते और अपनी चौड़ी-चौड़ी आस्तीनों को ऊपर चढ़ाते तथा कड़ाई से इधर-उधर देखते हुए हॉल को लांघती चली गयी।

सभी लोग मरीया द्मीत्रियेव्ना से बेशक डरते थे, फिर भी पीटर्सबर्ग में उसे विदूषिका माना जाता था और इसलिये उसके कथन में से केवल भोंडे शब्द की तरफ़ ध्यान दिया गया और यह मानते हुए कि इसी शब्द में उसके कथन का सार निहित है, वे फुसफुसाकर उसे एक-दूसरे के सामने दोहराते थे।

प्रिंस वसीली, जो पिछले कुछ अरसे में अक्सर अपनी कही हुई बातों को भूल जाता था और एक ही बात को सैकड़ों बार दोहराता था, जब कभी अपनी बेटी से मिलता, तो फ़्रांसीसी में यही कहता:

"एलेन, मुझे तुमसे कुछ कहना है," वह उसे एक तरफ़ ले जाता और उसके हाथ को नीचे की ओर झटकते हुए कहता, "मुझे उस बारे में कुछ अफ़वाह सुनने को मिली हैं, किस बारे में ... तुम जानती ही हो। तो प्यारी बिटिया, पिता के नाते इस बात से मेरे दिल को ख़ुशी होती है कि तुम ... तुम्हें इतना कुछ सहन करना पड़ा है ... किन्तु मेरी प्यारी बिटिया ... वही करो जो तुम्हारा दिल चाहता है। मैं तो बस, यही सलाह देता हूं।" और हमेशा एक जैसी मानसिक

---

* चकलों में। – अनु०

विह्वलता पर क़ाबू पाते हुए वह अपने गाल को बेटी के गाल पर ज़ोर से दबाता और उससे दूर हट जाता।

बिलीबिन ने, जिसकी अभी तक सर्वाधिक बुद्धिमान लोगों में गिनती की जाती थी और जो एलेन का स्वार्थहीन और ऐसे पुरुष-मित्रों में से एक था जो हमेशा ही रूपवती औरतों के इर्द-गिर्द होते हैं और जिनकी मित्र से प्रेमी में बदलने की कभी सम्भावना नहीं होती, एक दिन एक छोटी-सी और अंतरंग महफ़िल में इस सारे मामले पर एलेन के सामने अपना मत प्रकट किया।

"सुनिये, बिलीबिन" (बिलीबिन जैसे दोस्तों को एलेन कुलनाम से ही सम्बोधित करती थी), और उसने अपनी गोरी-गोरी और अंगूठियों की लौ देती उंगलियों से उसकी आस्तीन छू ली, "अपनी बहन की तरह मुझे यह बताइये कि मैं क्या करूं? दोनों में से किसे चुनूं?" एलेन ने फ़्रांसीसी में पूछा।

बिलीबिन ने भौंहों के ऊपर बल डाल लिये और मुस्कराते हुए सोचने लगा।

"आप जानती हैं कि अचानक इस तरह का सवाल पूछकर आप मुझे हैरानी में नहीं डाल सकतीं," उसने भी फ़्रांसीसी में ही उत्तर देते हुए कहा। "एक सच्चे दोस्त के नाते मैंने आपके मामले पर बहुत सोच-विचार किया है। बात यह है कि अगर आप प्रिंस से शादी कर लेती हैं तो दूसरे से शादी करने की सम्भावना से हमेशा के लिये वंचित हो जाती हैं और इसके अलावा राज-दरबार भी आपसे नाराज़ हो जायेगा। (आप तो जानती ही हैं कि वहां रिश्तेदारी का मामला है।) लेकिन अगर आप बुज़ुर्ग काउंट से शादी कर लेती हैं तो उसके जीवन के अन्तिम दिनों को सुखी बना देंगी और बाद में ... एक महत्त्व-पूर्ण व्यक्ति की विधवा के रूप में प्रिंस आपसे विवाह करते हुए किसी प्रकार का अपमान अनुभव नहीं करेगा।" और उसकी भौंहों के ऊपर पड़े हुए बल ग़ायब हो गये।

"आप हैं सच्चे दोस्त!" एलेन ने ख़ुशी से चमकते और फिर से बिलीबिन की आस्तीन छूते हुए फ़्रांसीसी में कहा। "लेकिन मैं तो दोनों को प्यार करती हूं और दोनों में से किसी के दिल को भी ठेस नहीं लगाना चाहती। उन दोनों की ख़ुशी के लिये मैं तो अपनी ज़िन्द-गी क़ुर्बान करने को तैयार हूं।"

बिलीबिन ने यह ज़ाहिर करते हुए अपने कंधे झटक दिये कि इस उलझन का तो उसके पास भी कोई हल नहीं है।

"यह है कमाल की औरत! इसे कहते हैं मामले को दृढ़ता से पेश करना। यह एकसाथ ही तीनों की बीवी बनना चाहती है," बिलीबिन ने मन में सोचा।

"किन्तु मुझे यह बताइये कि आपके पति का इस मामले में क्या रवैया होगा?" उसने अपने बुद्धिमान होने की दृढ़ ख्याति के आधार पर ऐसा भोला-भाला प्रश्न पूछकर उस ख्याति को हानि पहुंचाने के बारे में चिन्तित हुए बिना पूछा। "वह राज़ी हो जायेगा?"

"ओह! वह मुझे इतना अधिक चाहता है!" एलेन ने जवाब दिया जिसे, न जाने क्यों, ऐसे लगता था कि प्येर भी उसे बहुत प्यार करता है। "वह तो मेरी ख़ातिर कुछ भी करने को तैयार है।"

बिलीबिन ने भौंहों के ऊपर बल डाल लिये जो मानो यह ज़ाहिर करते थे कि अब वह कोई फड़कता हुआ वाक्य कहने जा रहा है।

"तलाक़ देने को भी," उसने कहा।

एलेन हंस पड़ी।

भावी विवाह के औचित्य के बारे में सन्देह प्रकट करनेवाले लोगों में एलेन की मां, प्रिंसेस कुरागिना भी शामिल थी। वह अपनी बेटी के प्रति निरन्तर ईर्ष्या की भावना से संतप्त रहती थी और अब, जब बेटी के सौभाग्यशाली होने की सम्भावना बहुत निकट थी तो वह इस विचार को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। उसने एक रूसी पादरी से इस बारे में सलाह ली कि पति के ज़िन्दा रहते हुए किसी औरत के लिये तलाक़ लेना और दूसरा विवाह करना किस हद तक सम्भव है। पादरी ने कहा कि ऐसा करना असम्भव है और प्रिंसेस को तब तो बहुत ही ख़ुशी हुई, जब उसने बाइबल के उस स्थल का उल्लेख किया जिसमें (जैसाकि पादरी को लगा) दो टूक ही यह कहा गया है कि पति के जीवित होने पर औरत शादी नहीं कर सकती।

इन तर्कों से लैस होकर, जिनका, उसके मतानुसार खण्डन नहीं किया जा सकता था, प्रिंसेस एक दिन बहुत सुबह ही बेटी के यहां चली गयी ताकि उसे घर पर अकेली पा सके।

मां की आपत्तियां सुनने के बाद एलेन नम्र और उपहासजनक ढंग से मुस्करा दी।

"साफ़-साफ़ ही तो कहा गया है कि तलाक़शुदा औरत के साथ शादी करना ..." बूढ़ी प्रिंसेस बोली।

"ओह अम्मां, बेसिरपैर की बातें नहीं करें। आप कुछ भी तो नहीं समझतीं। मेरी स्थिति में मेरे कुछ कर्त्तव्य भी हैं," रूसी के बजाय एलेन ने फ़्रांसीसी में जवाब दिया, क्योंकि अपने मामले में रूसी भाषा का इस्तेमाल करते हुए उसे हमेशा कुछ अस्पष्टता की अनुभूति होती थी।

"किन्तु मेरी प्यारी ..."

"ओह अम्मां, आप यह समझतीं क्यों नहीं कि हमारे पापों को क्षमा करवाने का अधिकार रखनेवाला पावन पादरी ..."

इसी क्षण एलेन के साथ रहनेवाली उसकी सेविका-संगिनी ने उसके कमरे में आकर सूचित किया कि महामहिम ड्राइंगरूम में हैं और उससे मिलना चाहते हैं।

"नहीं, उनसे कह दीजिये कि मैं उनसे मिलना नहीं चाहती, उनसे बेहद नाराज़ हूं कि उन्होंने अपना वचन पूरा नहीं किया।"

"काउंटेस, हर गुनाह के लिये कोई माफ़ी भी होती है," सुनहरे बालों, लम्बोतरे चेहरे और लम्बी नाकवाले एक नौजवान ने कमरे में दाख़िल होते हुए कहा।

बुज़ुर्ग प्रिंसेस आदरपूर्वक उठकर खड़ी हो गयी और उसने झुककर विदेशी प्रिंस को प्रणाम किया। आगन्तुक नौजवान ने उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। बूढ़ी प्रिंसेस ने बेटी की तरफ़ सिर झुकाकर विदा ली और दबे क़दमों से दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गयी।

"नहीं, वह ठीक ही कहती हैं," बूढ़ी प्रिंसेस सोच रही थी जिसकी सारी दृढ़ धारणायें महामान्य के आते ही खण्ड-खण्ड हो गयी थीं। "उसकी बात ठीक है। लेकिन अपनी जवानी के अब कभी न लौटनेवाले दिनों में हमें यह सब कुछ क्यों मालूम नहीं था? और बात कितनी सीधी-सादी है," बूढ़ी प्रिंसेस ने बग्घी में बैठकर सोचा।

अगस्त के आरम्भ में एलेन का मामला पूरी तरह से तय हो गया और उसने अपने पति को (जो, जैसाकि वह सोचती थी, उसे बेहद प्यार करता था) एक पत्र लिखकर यह सूचित किया कि वह NN से शादी करना चाहती है, कि उसने एकमात्र सच्चे धर्म को अपना

लिया है। एलेन ने अपने पत्र में प्येर से यह अनुरोध किया कि वह तलाक़ की सभी ज़रूरी औपचारिकतायें पूरी कर दे जिनके बारे में पत्र-वाहक उसे सब कुछ बता देगा।

"इसके बाद मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि **वह** आप पर अपनी पावन और शक्तिशाली छत्रछाया बनाये रहें। आपकी मित्र येलेना।"

यह पत्र उस समय प्येर के घर लाया गया, जब वह बोरोदिनो के रणक्षेत्र में था।

८

बोरोदिनो की लड़ाई के अन्त में दूसरी बार रायेव्स्की के तोपख़ाने से भागकर प्येर सैनिकों की भीड़ के साथ खड्ड में से होते हुए क्न्याज़्कोवो की तरफ़ बढ़ चला, चिकित्सा-केन्द्र तक पहुंचा और ख़ून देखकर तथा चीख़ें और आहें-कराहें सुनकर सैनिक की भीड़ में शामिल होकर तेज़ी से आगे बढ़ चला।

प्येर जी-जान से अब यही चाहता था कि जल्दी से जल्दी उन भयानक अनुभूतियों से मुक्ति पा ले जिनमें उसने यह दिन बिताया था, जीवन की सामान्य परिस्थितियों में लौटे और अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर गहरी नींद सो जाये। वह अनुभव कर रहा था कि केवल जीवन की सामान्य परिस्थितियों में ही वह अपने को और उस सबको समझ पायेगा जो उसने देखा तथा अनुभव किया था। किन्तु जीवन की ये सामान्य परिस्थितियां कहीं नहीं थीं।

वह जिस मार्ग पर जा रहा था, उसपर बेशक गोलों और गोलियों की सनसनाहट नहीं थी, फिर भी सभी जगह वही कुछ था जो उसने युद्धक्षेत्र में देखा था। वही पीड़ित, यातना सहते हुए और कभी-कभी अजीब तरह की उदासीनतावाले चेहरे थे, वही ख़ून था, गोलाबारी की वही आवाज़ें थीं जो बेशक अब दूर से सुनायी देती थीं, मगर अभी भी दिल में दहशत पैदा करती थीं ; इन सबके अलावा उमस और धूल थी।

बड़ी मोजाइस्क सड़क पर तीन वेर्स्ता का फ़ासला तय करने के बाद प्येर उसके किनारे बैठ गया।

शाम का झुटपुटा छा गया था और तोपों की गरज-गूंज शान्त हो गयी थी। प्येर कोहनी टिकाकर लेट गया और अन्धेरे में अपने क़रीब से गुज़रती परछाइयों को देखते हुए देर तक ऐसे ही लेटा रहा। उसे लगातार यही लगता था कि भयानक आवाज़ के साथ कोई गोला उसकी तरफ़ उड़ता आ रहा है; वह कांपता और उठकर बैठ जाता। उसे इस बात की सुध ही नहीं थी कि वह कितनी देर से यहां था। आधी रात के वक़्त तीन सैनिक सूखी टहनियों को अपने पीछे घसीटते हुए उसके क़रीब ही आ बैठे और आग जलाने लगे।

प्येर को कनखियों से देखकर सैनिकों ने आग जलाई, उसपर पतीली रखी, रस्क तोड़कर उसमें डाले और इसके बाद कुछ चर्बी डाल दी। धुएं की गन्ध पकते हुए भोजन की प्यारी गन्ध के साथ मिल रही थी। प्येर उठकर बैठ गया और उसने आह भरी। सैनिक (जो तीन थे) प्येर की तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना यह भोजन खा रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे।

"तुम कौन हो?" एक सैनिक ने अचानक प्येर से पूछा। स्पष्टतः इस प्रश्न से उसका वही आशय था जैसाकि प्येर ने सोचा था, अर्थात् यही कि अगर तुम खाना चाहते हो तो हम तुम्हें दे देंगे, लेकिन यह बता दो कि तुम ईमानदार आदमी हो या नहीं?

"मैं? मैं?.." प्येर ने अपनी सामाजिक स्थिति को ज़्यादा से ज़्यादा मामूली ज़ाहिर करने की ज़रूरत महसूस करते और यह सोचते हुए कि वह सैनिकों के अधिक निकट हो सके और उसकी बात आसानी से उनकी समझ में आ जाये, जवाब दिया। "वास्तव में तो मैं जन-सेना का अफ़सर हूं, लेकिन मेरे जन-सैनिक यहां नहीं हैं; मैं लड़ाई में गया था और उन्हें कहीं खो बैठा।"

"अच्छा!" एक सैनिक कह उठा।

दूसरे सैनिक ने अफ़सोस से सिर हिलाया।

"अगर चाहते हो तो हमारा यह दलिया खा सकते हो!" पहले सैनिक ने कहा और लकड़ी के एक चम्मच को चाटकर साफ़ करने के बाद उसे प्येर की तरफ़ बढ़ा दिया।

प्येर आग के क़रीब बैठ गया और चर्बी तथा रस्कों के उस घोल या दलिये को खाने लगा जो पतीली में था और जो उसे उन सभी पकवानों से ज़्यादा ज़ायकेदार प्रतीत हो रहा था जिन्हें उसने आज

तक खाया था। जब वह पतीली के ऊपर झुककर तथा बड़े-बड़े चम्मच भरकर उन्हें बेसब्री से निगलता जा रहा था, तब आग की रोशनी में उसके चेहरे की झलक मिल रही थी और सैनिक चुपचाप उसे देख रहे थे।

"तुम्हें कहां जाना है? बताओ तो!" सैनिकों में से एक ने फिर से पूछा।

"मोजाइस्क।"

"मतलब यह है कि तुम कोई कुलीन हो?"

"हां।"

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"प्योत्र किरील्लोविच।"

"तो आओ चलें, प्योत्र किरील्लोविच, हम तुम्हें वहां पहुंचा देंगे।"

घुप अन्धेरे में सैनिक प्येर को साथ लेकर मोजाइस्क की तरफ़ चल दिये।

जब ये मोजाइस्क तक पहुंचे और नगर की तरफ़ ले जानेवाली खड़ी पहाड़ी पर चढ़ने लगे तो मुर्गों ने बांग देना शुरू कर दिया था। प्येर एकदम यह भूल गया कि जिस सराय में वह ठहरा हुआ था, वह नीचे, पहाड़ी के दामन में थी और पीछे रह गयी थी। उसे इस बात का ध्यान ही न आया होता (वह ऐसी बेख़्याली की हालत में था) अगर आधी पहाड़ी चढ़ जाने पर अचानक उसका सईस उसके सामने न आ जाता जो उसे खोजने के लिये शहर गया था और अब सराय को वापस लौट रहा था। सईस ने प्येर के सफ़ेद टोप की बदौलत उसे अन्धेरे में ही पहचान लिया।

"हुज़ूर, यह आप हैं," सईस कह उठा। "हम तो निराश हो गये थे। आप पैदल क्यों चले आ रहे हैं? किधर जा रहे हैं? मेरे साथ आइये!"

"अरे हां," प्येर ने कहा।

सैनिक रुक गये।

"तो तुम्हें अपने जन-सैनिक मिल गये न?" उनमें से एक ने पूछा।

"अच्छा, नमस्ते! प्योत्र किरील्लोविच ही नाम है न तुम्हारा? नमस्ते प्योत्र किरील्लोविच!" अन्य सैनिकों ने भी कहा।

"नमस्ते," प्येर ने उत्तर दिया और अपने सईस के साथ सराय की तरफ़ चल दिया।

"इन्हें कुछ देना चाहिये!" प्येर ने जेब में हाथ डालते हुए सोचा। "नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिये," किसी दूसरी आवाज़ ने उसे मना किया।

सराय में एक भी कमरा ख़ाली नहीं था – सभी में लोग ठहरे हुए थे। प्येर अहाते में चला गया और मुंह-सिर ढककर अपनी बग्घी में ही लेट गया।

६

तकिये पर सिर टिकाते ही प्येर ने अनुभव किया कि उसे नींद आ रही है। किन्तु अचानक उसे लगभग वास्तविकता जैसी स्पष्टता से तोपों की धांय-धांय, आहें-कराहें, गोलों के धमाके सुनायी दिये, ख़ून और बारूद की गंध की अनुभूति हुई तथा मौत की भयानक दहशत पैदा करनेवाले डर ने उसे दबोच लिया। उसने डरकर आंखें खोलीं और ओवरकोट के नीचे से सिर ऊपर उठाया। अहाते में शान्ति थी। केवल फाटक के क़रीब चौकीदार से बातें करता और कीचड़ में से अपने बूट छपछपाता एक अर्दली जा रहा था। उसके उठने और हिलने-डुलने से बग्घी की काली छत पर बैठे हुए कुछ कबूतर डरकर उड़ गये। सारे अहाते में प्येर को इस क्षण बहुत अच्छी लगनेवाली सूखी घास, लीद और तारकोल की शान्तिदायक तेज़ गंध फैली हुई थी। दो बग्घियों की काली छतों के बीच से सितारों-जड़ा निर्मल आकाश दिखायी दे रहा था।

"शुक्र है भगवान का कि अब वह सब कुछ नहीं है," प्येर ने फिर से मुंह-सिर ढकते हुए सोचा। "ओह, कितनी भयानक चीज़ है डर और कितनी शर्म की बात है कि मैं ऐसे भयभीत हो गया! लेकिन वे... **वे** लगातार और आख़िरी दम तक दृढ़ और शान्त थे..." उसने सोचा। **वे** से प्येर का अभिप्राय सैनिकों से था – वे, जो तोपख़ाने पर थे, वे, जिन्होंने उसे दलिया खिलाया था और वे, जिन्होंने देव-प्रतिमा के सामने पूजा की थी। **वे** – वे अजीब और ऐसे लोग, जिनसे

वह अब तक अपरिचित रहा था, उसके विचारों में अन्य सभी लोगों से एकदम अलग और स्पष्ट रूप धारण किये हुए थे।

"सैनिक बनना चाहिये, मामूली सैनिक!" प्येर नींद की गोद में जाते हुए सोच रहा था। "पूरे तन-मन से इस आम ज़िन्दगी की गहराई में उतरना चाहिये, उस सब कुछ को समझना चाहिये जो उन्हें ऐसा बनाता है। लेकिन बाहरी व्यक्ति के इस सारे फालतू, इस बेहूदा बोध से कैसे निजात हासिल की जाये? एक वक़्त था, जब मैं ऐसा बन सकता था। मैं पिता जी को छोड़कर भाग जा सकता था, जैसाकि मैंने चाहा था। दोलोख़ोव के साथ द्वन्द्व-युद्ध के बाद भी मुझे सैनिक बनाकर भेजा जा सकता था।" और उसे अपनी कल्पना में अंग्रेज़ी क्लब के उस डिनर की झलक मिली जिसमें उसने दोलोख़ोव को चुनौती दी थी और तोर्जोक में अपना उपकारी, अपना धार्मिक पथ-प्रदर्शक भी दिखायी दिया। अचानक उसके सामने अंग्रेज़ी क्लब में फ़्री मेसनों की डिनरवाली एक सभा का चित्र उभर आया। मेज़ के सिरे पर कोई परिचित, घनिष्ठ और प्रिय व्यक्ति बैठा था। अरे, यह तो वही था! यह तो उसका उपकारी था। "लेकिन वह तो मर गया था?" प्येर ने सोचा। "हां, मर गया था, मगर मुझे यह नहीं मालूम था कि वह ज़िन्दा है। उसके मरने का मुझे कितना अफ़सोस हुआ था और मैं कितना ख़ुश हूं कि वह फिर से ज़िन्दा हो गया है!" मेज़ के एक ओर अनातोल, दोलोख़ोव, नेस्वीत्स्की, देनीसोव तथा इसी तरह के दूसरे लोग बैठे थे (स्वप्न में प्येर की आत्मा में इन लोगों की श्रेणी उतनी ही स्पष्ट थी जितनी उन लोगों की जिन्हें वह **वे** की संज्ञा देता था)। अनातोल, दोलोख़ोव, आदि बहुत ज़ोर से चीख़-चिल्ला और कुछ गा रहे थे; किन्तु इनके शोर-गुल के बीच से लगातार बोलते जा रहे उसके उपकारी की आवाज़ सुनायी दे रही थी। उसके शब्दों की गूंज उतनी ही ज़ोरदार तथा सतत थी जितनी लड़ाई की गूंज, मगर यह सुखद और सांत्वना देनेवाली थी। उपकारी जो कुछ कह रहा था, प्येर उसे समझ नहीं पा रहा था, लेकिन वह जानता था (स्वप्न में विचारों की श्रेणी भी बिल्कुल स्पष्ट थी) कि उपकारी दयालुता-उदारता की, वैसे ही बनने की सम्भावना की चर्चा कर रहा है जैसे **वे** थे। और सीधे-सादे, दयालु और दृढ़ चेहरोंवाले **वे लोग** सभी ओर से उपकारी को घेरे हुए थे। बेशक वे दयालु थे,

फिर भी प्येर की तरफ़ नहीं देख रहे थे, उसे नहीं जानते थे। प्येर ने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना और उनसे कुछ कहना चाहा। वह उठकर बैठ गया, किन्तु इसी क्षण उसने यह अनुभव किया कि उसके पांवों पर से ओवरकोट उतर गया है और वे ठिठुरे हुए हैं।

उसे शर्म आई और उसने अपने पांवों को, जिनपर से सचमुच ओवरकोट उतर गया था, अपने हाथ से ढक लिया। ओवरकोट को ठीक करते हुए प्येर ने क्षण भर को आंखें खोलीं और उसे बग्घियों की वही छतें और खम्भे नज़र आये तथा अहाता दिखाई दिया, लेकिन अब यह सभी कुछ उजला, हल्की नीली झलक लिये था, शबनम या पाले के सफ़ेद कणों से चमक रहा था।

"पौ फट रही है," प्येर ने सोचा। "लेकिन बात यह नहीं है। मुझे अपने उपकारी के शब्द सुनने और समझने चाहिये।" उसने फिर से अपने को ओवरकोट से ढक लिया, मगर अब न तो फ़्री मेसनों के डिनर का दृश्य और न उपकारी ही उसके सामने उभरा। अब तो केवल विचार थे, शब्दों में स्पष्ट रूप से व्यक्त होनेवाले विचार, जिन्हें कोई व्यक्त कर रहा था या जिनकी प्येर स्वयं कल्पना कर रहा था।

प्येर ने बाद में जब इन विचारों को मन ही मन दोहराया तो इस चीज़ के बावजूद कि वे इस दिन के प्रभावों के परिणाम थे, उसे पूरा यक़ीन था कि किसी अन्य, बाहरी व्यक्ति ने उन्हें उसके सामने व्यक्त किया था। उसे लगा कि जागृत अवस्था में वह कभी भी ऐसे सोच और अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता था।

"युद्ध – यह भगवान के नियमों के सम्मुख मानवीय इच्छा की दुखदतम विवशता है," उस आवाज़ ने कहा था। "सरलता – यह भगवान की इच्छा के सामने नतमस्तक होना है – उसकी इच्छा से बचा नहीं जा सकता। **वे** सीधे-सरल हैं। **वे** कहते नहीं, करते हैं। कहा गया शब्द चांदी है, अनकहा शब्द – सोना है। इन्सान जब तक मौत से डरता है, तब तक किसी भी चीज़ पर अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता। जो मौत से नहीं डरता, हर चीज़ का स्वामी बन सकता है। यदि दुख-दर्द न होते तो इन्सान को अपनी सीमाओं का आभास न होता, उसे आत्मबोध हो पाता। सबसे कठिन तो यह है (प्येर सपने में सोचता या सुनता रहा) कि मानव अपनी आत्मा में सब कुछ के महत्त्व को एकरूपता दे सके। सब कुछ को एकरूपता दे सके?"

प्येर ने अपने आपसे पूछा। "नहीं, एकरूप नहीं। विचारों को एकरूपता नहीं दी जा सकती, बल्कि इन सबको **सूत्रबद्ध करना** चाहिये – हां, ऐसा करने की ज़रूरत है! हां, **सूत्रबद्ध करना चाहिये, सूत्रबद्ध करना चाहिये!**" प्येर ने यह अनुभव करते हुए आन्तरिक उल्लास से इन शब्दों को दोहराया कि केवल यही, मात्र यही शब्द वह व्यक्त करते हैं जो वह व्यक्त करना चाहता है और उसे व्यथित करनेवाला प्रश्न हल हो जाता है।

"हां, सूत्रबद्ध करना चाहिये, ऐसा करने का वक़्त हो गया है।"

"घोड़े जोतने चाहिये, घोड़े जोतने का वक़्त हो गया, हुज़ूर! हुज़ूर," किसी ने दोहराया, "घोड़े जोतने चाहिये, घोड़े जोतने का वक़्त हो गया..."

यह प्येर के सईस की आवाज़ थी जो उसे जगा रहा था। प्येर के पूरे चेहरे पर धूप आई हुई थी। उसने सराय के गन्दे अहाते पर नज़र डाली जिसके मध्य में सैनिक अपने दुबले-पतले घोड़ों को कुएं पर पानी पिला रहे थे और जिसके फाटक से कुछ घोड़ा-गाड़ियां बाहर जा रही थीं। प्येर ने घृणा से मुंह फेर लिया और आंखें मूंदकर फिर झटपट बग्घी की सीट पर ढह पड़ा। "नहीं, मैं यह नहीं चाहता, यह देखना और समझना नहीं चाहता। मैं वह समझना चाहता हूं जो सपने में मेरे सामने आया था। एक क्षण और मिल जाता तो मैंने यह सब कुछ समझ लिया होता। तो मैं क्या करूं? सूत्रबद्ध तो करना चाहिये, लेकिन सब कुछ को कैसे सूत्रबद्ध किया जाये?" और प्येर ने अत्यधिक निराश होते हुए यह अनुभव किया कि उसने सपने में जो कुछ देखा और सोचा था, उस सबका अर्थ उसके दिमाग़ से लुप्त हो गया है।

सईस, कोचवान और सराय के चौकीदार ने प्येर को बताया कि एक फ़ौजी अफ़सर यह ख़बर लेकर आया था कि फ़्रांसीसी सेनायें मोजाइस्क के निकट आ गयी हैं और हमारी सेनायें पीछे हट रही हैं।

प्येर उठा और बग्घी में घोड़े जोतने तथा उसे अपने पास लाने का आदेश देकर पैदल ही शहर की तरफ़ चल दिया।

रूसी सेनायें लगभग दस हज़ार घायलों को छोड़कर यहां से जा रही थीं। ये घायल अहातों में, खिड़कियों में नज़र आ रहे थे, सड़कों पर भीड़ लगाये थे। सड़कों पर उन घोड़ा-गाड़ियों के क़रीब, जो

घायलों को ले जानेवाली थीं, चीख़-चिल्लाहट, गाली-गलौज और मार-पीट की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। प्येर ने अपनी बग्घी में, जो उसके पास आ गयी थी, एक परिचित घायल जनरल को अपने साथ बिठा लिया और मास्को की ओर रवाना हो गया। रास्ते में उसे अपने साले अनातोल और प्रिंस अन्द्रेई की मौत की ख़बर मिली।

१०

प्येर ३० अगस्त को मास्को लौटा। लगभग नगर-द्वार के पास ही मास्को के गवर्नर-जनरल काउंट रस्तोपचिन के एडजुटेंट से उसकी मुलाक़ात हो गयी।

"हम तो आपको सभी जगह ढूंढ़ रहे हैं," एडजुटेंट ने कहा। "काउंट आपसे अवश्य ही मिलना चाहते हैं। उन्होंने अनुरोध किया है कि एक बहुत ही ज़रूरी मामले के सिलसिले में आप इसी वक़्त उनके पास चले आयें।"

घर न जाकर प्येर किराये की एक बग्घी में सवार होकर गवर्नर-जनरल के यहां चला गया।

काउंट रस्तोपचिन इसी सुबह को मास्को के बाहरवाले अपने ग्रीष्मकालीन बंगले से लौटा था। काउंट के घर का प्रवेश-कक्ष और स्वागत-कक्ष सरकारी अधिकारियों से भरे हुए थे जिन्हें या तो उसने बुलवाया था या जो हिदायतें लेने के लिये ख़ुद उसके पास आये थे। वसील्चिकोव और प्लातोव काउंट से मिल भी चुके थे, उन्होंने काउंट को यह बता भी दिया था कि मास्को की रक्षा करना असम्भव है और उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा। इस समाचार को नगर-वासियों से तो बेशक छिपाया जा रहा था, लेकिन सरकारी अधिकारी, विभिन्न सरकारी दफ़्तरों के संचालक इस बात को वैसे ही जानते थे, जैसे काउंट रस्तोपचिन कि मास्को शत्रु के हाथ में चला जायेगा। वे सभी अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त होने और यह पूछने के लिये गवर्नर-जनरल के पास आये थे कि अपने-अपने विभागों के मामले में क्या करें।

प्येर जब स्वागत-कक्ष में प्रवेश कर रहा था, उसी वक़्त सेना से आनेवाले एक सन्देशवाहक काउंट के कमरे से बाहर आ रहा था।

लोगों ने सन्देशवाहक से जो सवाल पूछे, उनके जवाब में उसने निराशा से हाथ झटक दिया और हॉल से बाहर चला गया।

स्वागत-कक्ष में बैठकर प्रतीक्षा करते हुए प्येर थकी-थकी नज़रों से यहां उपस्थित तरह-तरह के लोगों, बूढ़ों-जवानों, फ़ौजियों-ग़ैरफ़ौजियों, महत्त्वपूर्ण और महत्त्वहीन सरकारी अधिकारियों को ग़ौर से देखने लगा। सभी खिन्न और चिन्तित दिखाई दे रहे थे। प्येर कर्मचारियों के उस दल के क़रीब चला गया जिसमें उसका एक परिचित था। प्येर का अभिवादन करने के बाद उन्होंने अपनी बातचीत जारी रखी।

"दफ़्तरों को यहां से भेजना और फिर वापस लाना – यह तो कोई बड़ी मुसीबत नहीं। किन्तु ऐसी परिस्थितियों में कोई भी किसी तरह की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता।"

"और देखिये, उसने क्या लिखा है," दूसरे ने वह परचा दिखाते हुए कहा जिसे वह अपने हाथ में थामे था।

"यह दूसरा मामला है। शहर के आम लोगों के लिये इसकी ज़रूरत है," पहले व्यक्ति ने जवाब दिया।

"यह क्या है?" प्येर ने पूछा।

"नया परचा।"

प्येर उसे लेकर पढ़ने लगा:

"जल्दी से जल्दी उन सेनाओं के साथ मिलने की ख़ातिर, जो महामान्य प्रिंस कुतूज़ोव की तरफ़ आ रही हैं, उन्होंने मोजाइस्क को लांघकर ऐसी मज़बूत जगह पर अपनी फ़ौज को तैनात किया है जहां दुश्मन के लिये उनपर हमला करना आसान नहीं होगा। गोलों के साथ अड़तालीस तोपें यहां से उनके पास भेजी गयी हैं और महामान्य का कहना है कि ख़ून की आख़िरी बूंद बाक़ी रहने तक वह मास्को की रक्षा करेंगे और सड़कों-गलियों तक में लोहा लेने को तैयार हैं। भाइयो, आप इस कारण परेशान न हों कि सरकारी दफ़्तर बन्द कर दिये गये हैं – ऐसा करना ज़रूरी था। लेकिन हम उस दुष्ट-कमीने को ज़रूर मज़ा चखायेंगे! वक़्त आने पर मुझे शहर और गांव के नौजवानों की ज़रूरत होगी। तब मैं दो दिन पहले इसका आह्वान करूंगा, किन्तु अभी इसकी ज़रूरत नहीं और इसलिये मैं ख़ामोश हूं। कुल्हाड़ा और बर्छी-भाला लेकर आना भी कुछ बुरा नहीं होगा, मगर घास समेटने-

वाले पांचे के साथ आना सबसे ज़्यादा अच्छा रहेगा। फ़्रांसीसियों में तो कूटू की एक पूली से ज़्यादा वज़न नहीं होता। कल लंच के बाद मैं मां मरियम की ईवेर्स्कीया देव-प्रतिमा लेकर सेंट येकतेरीना अस्पताल में घायलों के पास जाऊंगा। वहां हम चरणामृत तैयार करवायेंगे जिससे वे जल्द ही भले-चंगे हो जायेंगे। मैं अब स्वस्थ हूं। मेरी एक आंख दुखती थी, लेकिन अब मैं दोनों आंखों से देख सकता हूं।"

"लेकिन मुझसे तो फ़ौजी लोगों ने ही यह कहा था," प्येर ने बताया, "कि शहर में लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती और यह कि युद्ध-स्थल ..."

"बिल्कुल ठीक है, हम भी तो यही कह रहे हैं," पहले सरकारी कर्मचारी ने जवाब दिया।

"इन शब्दों का क्या मतलब है – मेरी आंख दुखती थी, लेकिन अब मैं दोनों आंखों से देख सकता हूं?" प्येर ने जानना चाहा।

"काउंट की एक आंख पर गुहांजनी निकल आयी थी," एडजुटेंट ने मुस्कराते हुए कहा, "और जब मैंने काउट का यह बताया कि लोग-बाग यह जानने को आये थे कि उन्हें क्या तकलीफ़ है तो वह बहुत परेशान हो उठे थे। लेकिन काउंट," एडजुटेंट ने मुस्कराते हुए अचानक प्येर को सम्बोधित किया, "हमने सुना है कि आपके परिवार में कुछ गड़बड़, कोई परेशानी पैदा हो रही है? मानो काउंटेस, आपकी पत्नी ..."

"मैंने तो कुछ नहीं सुना," प्येर ने अन्यमनस्कता से जवाब दिया। "आपने क्या सुना है?"

"बात यह है कि लोग तो अक्सर अपने मन से ही कुछ न कुछ गढ़ते रहते हैं। मैं तो वही कह रहा हूं जो मैंने सुना है।"

"आख़िर क्या सुना है आपने?"

"लोगों का कहना है," एडजुटेंट ने पहले की तरह ही मुस्कराते हुए जवाब दिया, "कि काउंटेस, आपकी पत्नी विदेश जा रही है। शायद यह बकवास है ..."

"हो सकता है," प्येर ने बेख़्याली से अपने इर्द-गिर्द देखते हुए कहा। "यह कौन है?" प्येर ने नीले रंग का साफ़-सुथरा कोट पहने, बर्फ़ जैसी सफ़ेद दाढ़ी, वैसी ही सफ़ेद भौंहों और लाल चेहरेवाले एक नाटे बुज़ुर्ग की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा।

"यह? यह तो व्यापारी, मेरा मतलब मदिरालय का मालिक वेरेश्चागिन है। आपने घोषणापत्रवाला वह क़िस्सा तो शायद सुना ही होगा?"*

"ओह, तो यह है वेरेश्चागिन!" प्येर बुज़ुर्ग व्यापारी के दृढ़ और शान्त चेहरे को बहुत ग़ौर से देखते तथा उसपर देश-द्रोही के लक्षण ढूंढ़ने का प्रयास करते हुए कह उठा।

"वास्तव में तो यह वही आदमी नहीं है। यह तो उसका बाप है जिसने घोषणापत्र लिखा था," एडजुटेंट ने कहा। "इसका वह नौजवान बेटा तो जेल में है और मेरा ख़्याल है कि उसकी तो अच्छी शामत आयेगी।"

पदक लगाये एक बूढ़ा और गले में सलीब लटकाये एक जर्मन सरकारी अधिकारी इन लोगों के पास आ बैठे।

"बात यह है," एडजुटेंट बताता जा रहा था, "यह सारा क़िस्सा बहुत उलझा-उलझाया है। कोई दो महीने पहले वह घोषणापत्र प्रकट हुआ था। काउंट रस्तोपचिन को इसकी सूचना दी गयी। उन्होंने जांच करने का हुक्म दिया। चुनांचे गव्रीलो इवानिच ने इसकी जांच शुरू की। पता चला कि यह घोषणापत्र तिरसठ हाथों में से गुज़र चुका है। वह एक के पास जाकर पूछता कि उक्त घोषणापत्र उसे किससे मिला? जवाब मिलता कि फ़लां से। वह उसके पास जाकर भी यही पूछता और जवाब मिलता कि फ़लां से। तो यह सिलसिला चलता रहा और आख़िर वह वेरेश्चागिन तक जा पहुंचा... दो-चार अक्षर पढ़े, अक़्ल के कच्चे, व्यापारी के उस बच्चे तक," एडजुटेंट ने मुस्कराते हुए कहा। "उससे पूछा गया कि तुम्हें यह घोषणापत्र कहां से मिला? और मज़े की बात यह है कि हमें मालूम था कि उसे किस आदमी से यह घोषणापत्र मिला है। पोस्ट-मास्टर के सिवा और किसी से नहीं। किन्तु स्पष्ट था कि उनके बीच कोई सांठ-गांठ हो चुकी थी। उसने जवाब दिया कि किसी से नहीं मिला, ख़ुद लिखा है। उसे डराया-धमकाया गया, समझाया-बुझाया गया, उसकी मिन्नत-समाजत

---

* म० वेरेश्चागिन – मास्को के एक व्यापारी का बेटा था। उसपर इस बात का आरोप लगाया गया था कि उसने फ़्रांसीसी अख़बारों में छपी नेपोलियन की कुछ दस्तावेज़ों का रूसी में अनुवाद किया है। – सं०

की गयी, मगर वह अपनी इसी बात पर अड़ा रहा – ख़ुद लिखा है। काउंट को यही बता दिया गया। काउंट ने उसे अपने पास बुलवाया – 'किससे तुम्हें यह घोषणापत्र मिला है?' – 'मैंने ख़ुद लिखा है।' आप तो काउंट को जानते ही हैं!" एडजुटेंट ने गर्वीली और ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ कहा। "काउंट ग़ुस्से से आग-बबूला हो उठे। आप ज़रा सोचें तो – कितनी बेहयाई, कितना झूठ और कैसी ढिठाई है उस नौजवान में!.."

"और काउंट को इस चीज़ की ज़रूरत थी कि नौजवान किसी तरह से क्ल्युचारेव को इस मामले में घसीट ले। मैं इस चीज़ को समझता हूं!" प्येर ने कहा।

"नहीं, इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं थी," एडजुटेंट ने घबराकर जवाब दिया। "क्ल्युचारेव के तो इसके बिना ही काफ़ी अपराध थे और उन्हीं के लिये उसे मास्को से निकाल दिया गया है। मगर बात यह है कि काउंट के ग़ुस्से की तो कोई हद ही नहीं रही थी। 'तुमने इसे लिखा है, यह कैसे हो सकता है?' काउंट ने कहा। मेज़ पर से 'हामबर्ग समाचारपत्र' उठाकर बोले – 'यह देखो, यह रहा। तुमने इसे लिखा नहीं, बल्कि इसका अनुवाद किया है और वह भी बेहूदा, क्योंकि तुम उल्लू तो फ़्रांसीसी भी नहीं जानते।' आपका क्या ख़्याल है कि उसने क्या जवाब दिया? 'नहीं,' वह बोला, 'मैंने कोई अख़बार-वख़बार नहीं पढ़े, ख़ुद लिखा है।' – 'अगर ऐसी बात है तो तुम ग़द्दार हो, मैं तुम्हें अदालत के हवाले कर दूंगा और तुम्हें फांसी के तख़्ते पर लटका दिया जायेगा। बोलो, किससे मिला है यह घोषणापत्र?' – 'मैंने कोई अख़बार-वख़बार नहीं पढ़े, ख़ुद लिखा है।' मामला यहीं अटककर रह गया। काउंट ने उसके बाप को बुलवाया – मगर लड़का अपनी ही रट लगाये रहा। आख़िर उसपर मुक़दमा चलाया गया और लगता है कि उसे कठोर श्रम के साथ कारावास का दण्ड दिया गया है। अब उसका बाप उसे माफ़ कर देने के लिये मिन्नत-समाजत करने आया है। निरा कूड़ा-करकट है वह छोकरा! वह तो व्यापारियों के ऐसे छोकरों में से है जो बांके-छैले बने घूमते हैं, छोकरियों को फुसलाते हैं, कहीं कुछ थोड़ा-सा पढ़-लिख जाते हैं और यह समझते हैं कि उनसे बढ़कर दुनिया में कोई दूसरा है ही नहीं। ऐसा बदमाश छोकरा है वह! मास्को के कामेन्नी पुल पर उसके पिता का मदिरालय है और उसमें

सर्वशक्तिमान प्रभु की बहुत बड़ी प्रतिमा लगी हुई थी जिसके एक हाथ में राजदण्ड था और दूसरे में सुनहरे गोले और उसके ऊपर ज़ार-शाही का सलीबवाला राज्यचिह्न था। वह इस प्रतिमा को कुछ दिनों के लिये घर ले गया और जानते हैं कि उसने क्या किया! किसी बदमाश चित्रकार को ढूंढ़ लाया और..."

११

इस नये क़िस्से के बीच में ही प्येर को गवर्नर-जनरल के कमरे में बुला लिया गया।

प्येर जब काउंट रस्तोपचिन के कमरे में दाख़िल हुआ तो वह नाक-भौंह सिकोड़े हुए माथे और आंखों को हाथ से मल रहा था। एक नाटा-सा आदमी कुछ कह रहा था, प्येर के अन्दर आते ही वह चुप हो गया तथा बाहर चला गया।

"ओह, नमस्ते, महान सूरमा," नाटे-से आदमी के बाहर जाते ही रस्तोपचिन ने प्येर से कहा। "आपके बहादुरी के कारनामों के बारे में सुन चुका हूं! लेकिन मामला यह नहीं है। मेरे प्यारे, यह हमारी-आपकी ही बात है, क्या आप फ़्री मेसन हैं?" काउंट ने ऐसे कड़े अन्दाज़ में पूछा मानो इसमें कोई बुरी बात हो, मगर जिसे वह माफ़ कर देना चाहता हो। प्येर ख़ामोश रहा। "मेरे प्यारे, मुझे तो बहुत अच्छी तरह से सब कुछ मालूम है और जानता हूं कि फ़्री मेसन भी तरह-तरह के हैं। मैं यह आशा करता हूं कि आप उनमें से नहीं हैं जो मानवजाति की रक्षा की आड़ में रूस को नष्ट करना चाहते हैं।"

"हां, मैं फ़्री मेसन हूं," प्येर ने जवाब दिया।

"यही तो बात है, मेरे प्यारे। मैं समझता हूं कि आपको मालूम है कि श्रीमान स्पेरान्स्की और माग्नीत्स्की को वहां भेज दिया गया है जहां उन्हें भेजा जाना चाहिये था। श्रीमान क्ल्युचारेव और बाक़ी उन सबके साथ भी ऐसा ही किया गया है जो सोलोमोन का मन्दिर बनाने की ओट में अपनी मातृभूमि का मन्दिर तबाह करने की कोशिश कर रहे थे। आप यह समझ सकते हैं कि ऐसा करने के कुछ कारण हैं और

अगर पोस्ट-मस्टर ख़तरनाक आदमी न होता तो मैंने उसे यहां से निकाला भी न होता। अब मुझे पता चला है कि आपने उसे मास्को से ले जाने के लिये अपनी बग्घी भेजी थी और सुरक्षा के लिये उसकी कुछ दस्तावेज़ें-काग़ज़ भी अपने पास रख लिये हैं। आप मुझे अच्छे लगते हैं, मैं किसी तरह से आपका बुरा नहीं चाहता और चूंकि आप मुझसे आधी उम्र के हैं, इसलिये पिता की तरह आपको यह सलाह देता हूं कि इस क़िस्म के लोगों से अपना नाता तोड़ लें और जितनी जल्दी हो सके, ख़ुद भी यहां से चले जायें।"

"लेकिन काउंट, पोस्ट-मस्टर क्ल्युचारेव का क़ुसूर क्या है?" प्येर ने पूछा।

"यह जानना मेरा काम है और यह पूछना आपका काम नहीं," रस्तोपचिन चिल्ला उठा।

"अगर उसपर यह जुर्म लगाया जाता है कि वह नेपोलियन के घोषणापत्रों का प्रचार करता था तो यह प्रमाणित तो नहीं किया गया," प्येर ने (रस्तोपचिन की तरफ़ देखे बिना) कहा, "और वेरेश्चागिन ..."

"तो बात सामने आ गयी," अचानक नाक-भौंह सिकोड़ते और प्येर को टोकते हुए रस्तोपचिन पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला उठा। "वेरेश्चागिन देशद्रोही और ग़द्दार है जिसे वही सज़ा मिलेगी जिसके वह लायक़ है," उसने उसी तरह से बौखलाते हुए कहा, जैसे लोग अपने किसी तरह के अपमान के याद आने पर बेहद ग़ुस्से में आकर कहते हैं। "लेकिन मैंने आपको अपने कार्य-कलापों पर टीका-टिप्पणी करने के लिये नहीं, बल्कि इसलिये बुलाया है कि आपको सलाह या, अगर आप ऐसा ही चाहते हैं, तो हुक्म दूं। आपसे अनुरोध करता हूं कि क्ल्युचारेव जैसे महानुभावों से अपना सम्बन्ध तोड़ लें और मास्को से चले जायें। चाहे कोई भी क्यों न हो, मैं सबकी अक़्ल ठिकाने कर दूंगा," और सम्भवतः यह महसूस करते हुए कि वह मानो प्येर बेज़ूख़ोव पर चीख़ा-चिल्लाया है जो अभी तक तो किसी भी बात के लिये क़ुसूरवार नहीं था, उसने मैत्रीपूर्ण ढंग से उसका हाथ अपने हाथ में लेकर इतना और कह दिया – "इस वक़्त हम सभी के सिर पर एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य मण्डरा है और जिनसे भी मेरा वास्ता पड़ता है, उनसे मीठी-मीठी बातें कहने का मेरे पास वक़्त नहीं होता। कभी-

कभी दिमाग़ बिल्कुल चकरा जाता है। तो, मेरे प्यारे, आप ख़ुद क्या करने का इरादा रखते हैं?"

"कुछ भी नहीं," प्येर ने नज़रें ऊपर उठाये बिना और चेहरे पर सोच के भाव को बदले बिना जवाब दिया।

काउंट रस्तोपचिन के माथे पर बल पड़ गये।

"एक दोस्त की तरह आपको सलाह देता हूं। जितनी भी जल्दी हो सके, यहां से चले जाइये, इतना ही कह सकता हूं। वह ख़ुशक़िस्मत है जिसके पास सुनने को कान हैं। तो नमस्ते, मेरे प्यारे। अरे हां," प्येर जब दरवाज़े से बाहर जा रहा था तो उसने पुकारकर कहा, "क्या यह सच है कि काउंटेस 'ईसा मसीह सोसाइटी' के पादरियों के फेर में पड़ गयी है?"

प्येर ने कोई जवाब नहीं दिया और वह रस्तोपचिन के कमरे से ऐसे त्योरी चढ़ाये और झल्लाया हुआ बाहर निकला, जैसे उसे कभी किसी ने पहले नहीं देखा था।

प्येर जब घर लौटा तो अन्धेरा होने लगा था। इस शाम को तरह-तरह के कोई आठ लोग उसके पास आये: किसी कमेटी का सेक्रेटरी, उसकी जन-सेना की बटालियन का कर्नल, कारिन्दा, गृह-प्रबन्धक और विभिन्न प्रार्थी। इन सभी को प्येर से कुछ काम था तथा उसे उनके कुछ मसले हल करने थे। प्येर कुछ भी समझ नहीं रहा था, इन मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा था और सभी प्रश्नों के कुछ ऐसे उत्तर दे रहा था जो उसे इन लोगों से निजात दिला दें। आख़िर अकेला रह जाने पर उसने पत्नी का पत्र खोलकर पढ़ा।

"**वे** – तोपख़ाने के तोपची, प्रिंस अन्द्रेई मारा गया... बूढ़ा... सरलता – भगवान की इच्छा के सम्मुख नतमस्तक होना है। दुख-दर्द सहने चाहिये... सब कुछ का महत्त्व... सूत्रबद्ध करना चाहिये... पत्नी शादी करने जा रही है... भूलना और समझना चाहिये..." और वह पलंग के पास जाकर कपड़े उतारे बिना ही उसपर ढह पड़ा तथा उसी क्षण सो गया।

अगली सुबह को जब उसकी आंख खुली तो गृह-प्रबन्धक ने उसके कमरे में आकर यह सूचना दी कि काउंट रस्तोपचिन का भेजा हुआ एक विशेष पुलिस-अफ़सर यह जानने को आया था कि काउंट बेज़ूख़ोव मास्को से चला गया अथवा जा रहा है या नहीं।

कोई दसेक आदमी, जिन्हें प्येर से कोई काम था, ड्राइंगरूम में उसका इन्तज़ार कर रहे थे। प्येर ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और ड्राइंगरूम के इन्तज़ार करनेवालों के पास जाने के बजाय पिछले पोर्च की ओर बढ़ गया और वहां से फाटक लांघकर घर से बाहर चला गया।

इस क्षण से मास्को के तबाह होने तक बेज़ूख़ोव के घरवालों के बहुत ढूंढ़ने पर भी कोई उसे नहीं देख पाया और किसी को भी यह मालूम नहीं हो सका कि वह कहां है।

१२

रोस्तोव-परिवार १ सितम्बर यानी दुश्मन के मास्को में दाख़िल होने के एक दिन पहले तक मास्को में ही रहा।

ओबोलेन्स्की की कज़्ज़ाक-रेजिमेंट में शामिल होकर पेत्या के बेलाया त्सेर्कोव जाने के बाद, जहां यह रेजिमेंट बन रही थी, काउंटेस पर डर हावी हो गया। यह विचार कि उसके दोनों बेटे सेना में हैं, कि दोनों उसकी छत्रछाया से दूर चले गये हैं, कि आज या कल उनमें से कोई भी या फिर दोनों एकसाथ ही मारे जा सकते हैं, जैसे कि उसकी एक परिचिता के तीनों बेटे मारे गये थे, इस गर्मी में पहली बार एक क्रूर स्पष्टता के साथ उनके सामने आया। उन्होंने निकोलाई को अपने पास वापस बुलवाने की कोशिश की, पेत्या के पास ख़ुद जाना चाहा, पीटर्सबर्ग में ही कहीं उसकी नियुक्ति करवानी चाही, किन्तु ऐसा कुछ भी करना सम्भव नहीं था। पेत्या जिस रेजिमेंट में था, उसके लौटने पर ही वह भी लौट सकता था या फिर अगर उसका किसी क्रियाशील रेजिमेंट में तबादला हो जाता। निकोलाई कहीं फ़ौज में था और अपने अन्तिम पत्र के बाद, जिसमें उसने प्रिंसेस मरीया के साथ अपनी भेंट की सविस्तार चर्चा की थी, उसने अपनी कोई ख़बर ही नहीं भेजी थी। काउंटेस रात-रात भर न सोतीं और जब उनकी आंख लगती तो उन्हें सपने में यही नज़र आता कि उनके दोनों बेटे खेत रहे हैं। बहुत सलाह-मशविरा और विचार-विनिमय के बाद काउंट ने आख़िर अपनी पत्नी को शान्त करने का एक उपाय सोच निकाला।

उन्होंने ओबोलेन्स्की की रेजिमेंट से बेज़ूख़ोव की रेजिमेंट में पेत्या का तबादला करवा दिया जो मास्को के निकट संगठित हो रही थी। यद्यपि पेत्या अभी भी सेना में ही रहा, तथापि इस तबादले से काउंटेस को यह सान्त्वना अवश्य मिली कि कम से कम उनका एक बेटा तो फिर से उनकी छत्रछाया में आ गया है और उनके मन में यह आशा बंधी कि अब अपने पेत्या का मामला कुछ इस तरह से ठीक करेंगी कि उसे फिर से न जाने दें और ऐसी जगहों पर उसकी नियुक्ति करवा लेंगी जहां उसे लड़ाई में हिस्सा न लेना पड़े। जब तक सिर्फ़ निकोलाई ही ख़तरे में था, तब तक काउंटेस को ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपने सबसे बड़े बेटे को बाक़ी सभी बच्चों से अधिक प्यार करती हैं (और इसके लिये वह पश्चाताप भी करती थीं), किन्तु जब छोटा बेटा, शरारती, पढ़ने-लिखने में ढीला, घर की चीज़ों को तोड़ने-फोड़ने और सभी के नाक में दम कर देनेवाला पेत्या, यह नकचप्पा पेत्या, ख़ुशी भरी काली आंखों, लाल-लाल गालों और उनपर दाढ़ी के हल्के-हल्के रोयोंवाला पेत्या उन वयस्क, भयानक और क्रूर पुरुषों के बीच चला गया जो वहां **किसी चीज़ के लिये** लड़ते-मरते हैं और जिन्हें इसमें मज़ा भी आता है तो काउंटेस को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसी को वह अपने दूसरे बच्चों से ज़्यादा, कहीं ज़्यादा प्यार करती हैं। पेत्या के मास्को आने का समय ज्यों-ज्यों अधिक निकट आता गया, त्यों-त्यों काउंटेस की बेचैनी बढ़ती चली गयी। वह सोचने लगी थीं कि इस ख़ुशी का मुंह देखने तक वह कभी ज़िन्दा नहीं रह पायेंगी। न केवल सोन्या, बल्कि अपनी लाड़ली नताशा, यहां तक कि पति की उपस्थिति से भी उन्हें झल्लाहट होती। "मुझे इनसे क्या लेना-देना है, पेत्या के सिवा मुझे किसी की ज़रूरत नहीं," वह सोचतीं।

अगस्त के अन्तिम दिनों में रोस्तोवों को निकोलाई का एक और पत्र मिला। यह पत्र उसने वोरोनेज गुबेर्निया से लिखा था जहां उसे घोड़े ख़रीदने के लिये भेजा गया था। इस पत्र के आने से काउंटेस को चैन नहीं मिला। यह जानकर कि एक बेटा ख़तरे से बाहर है, वह पेत्या की और भी ज़्यादा चिन्ता करने लगीं।

बेशक २० अगस्त से रोस्तोवों की जान-पहचान के सभी लोग मास्को से जा चुके थे, बेशक काउंटेस से सभी यह आग्रह करते थे कि जितनी भी जल्दी हो सके, ये लोग यहां से चले जायें, वह तो उस वक़्त

तक मास्को छोड़ने की बात ही सुनने को तैयार नहीं थीं, जब तक कि उनका हीरा बेटा, उनकी आंखों का तारा पेत्या वापस नहीं आ जाता। २८ अगस्त को पेत्या मास्को आया। काउंटेस ने रोग की सीमा तक जानेवाले जिस भावावेश और लाड़-प्यार से बेटे का स्वागत किया, वह सोलह वर्षीय फ़ौजी अफ़सर को अच्छा नहीं लगा। इस चीज़ के बावजूद कि काउंटेस ने उससे अपने इस इरादे को छिपाया कि अब वह उसे अपनी छत्रछाया से दूर नहीं जाने देंगी, पेत्या उनकी इस भावना को भांप गया और सहजज्ञान से यह भय अनुभव करते हुए कि मां की अधिक संगत में रहने पर वह पिघल जायेगा, मोम हो जायेगा (वह अपने मन में ऐसा ही सोचता था) काउंटेस के साथ रुखाई से पेश आया, अपने मास्कोवास के दौरान उनसे कन्नी काटता और मात्र नताशा के साथ ही वक़्त बिताता रहा जिसे वह हमेशा विशेष रूप से, प्रेम-दीवाने भाई की तरह चाहता रहा था।

काउंट रोस्तोव की लापरवाही की आम आदत के नतीजे के तौर पर २८ अगस्त तक मास्को से जाने की कुछ भी तैयारी नहीं हुई थी और घर का सारा सामान ले जाने के लिये र्याज़ान और मास्को की जागीरों से आनेवाली घोड़ा-गाड़ियां ३० अगस्त को ही यहां पहुंचीं।

२८ अगस्त से ३१ अगस्त तक मास्को में बड़ी दौड़-धूप और हलचल रही। हर दिन ही दोरोगोमीलोव्स्की फाटक से बोरोदिनो की लड़ाई में घायल हुए हज़ारों लोगों को लाया और मास्को के विभिन्न भागों में ठहराया जाता तथा हज़ारों घोड़ा-गाड़ियां मास्कोवासियों और उनके सामान को लेकर दूसरे फाटकों से बाहर जातीं। रस्तोपचिन के परचों के बावजूद अथवा उनके बिना या उनके परिणामस्वरूप शहर में बड़ी अजीब और एक-दूसरी के बिल्कुल विपरीत ख़बरें फैल रही थीं। कोई तो यह कहता कि किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं है; कोई इसके उलट यह बताता कि गिरजाघरों से सारी देव-प्रतिमायें हटायी जा चुकी हैं और सभी को ज़बरदस्ती यहां से भेजा जा रहा है; कोई कहता कि बोरोदिनो के बाद भी एक लड़ाई हुई है जिसमें फ़्रांसीसियों को कुचल डाला गया है; कोई इसके उलट यह राग अलापता कि सभी रूसी सेनायें नष्ट हो गयी हैं; कोई मास्को की जन-सेना की चर्चा करता जो पादरियों के नेतृत्व में त्री गोरी पर जायेगी; कोई धीरे-धीरे कानाफूसी करता कि बड़े पादरी अगस्तिन के लिये मास्को से जाने की मनाही

कर दी गयी है, कि ग़द्दारों को पकड़ लिया गया है, कि किसान दंगा-फसाद कर रहे हैं और जो मास्को से जाते हैं, उन्हें रास्ते में लूट लेते हैं, आदि, आदि। लेकिन ये सब तो बातें ही बातें थीं, और वास्तव में जो मास्को से जा रहे थे और जो नहीं जा रहे थे, सभी यह महसूस करते थे (बेशक अभी तक फ़िली में युद्ध-परिषद की वह बैठक नहीं हुई थी जिसमें मास्को को दुश्मन के हवाले करने का फ़ैसला किया गया था), यद्यपि साफ़ तौर पर ऐसा कहा नहीं जाता था कि मास्को को अवश्य ही दुश्मन को सौंप दिया जायेगा और इसलिये जितनी भी जल्दी हो सके, यहां से भाग जाना चाहिये और अपने माल-मते को बचाना चाहिये। लोग अनुभव करते थे कि अचानक सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा, बदल जायेगा, लेकिन १ सितम्बर तक कुछ भी नहीं बदला। उस अपराधी की भांति जो यह जानता है कि उसे फांसी के तख़्ते पर लटकाने के लिये ले जाया जा रहा है और कुछ ही देर बाद वह मौत के मुंह में चला जायेगा, लेकिन फिर भी अपने इर्द-गिर्द देखता है और अपने सिर पर बुरे ढंग से रखी हुई टोपी को ठीक करता है, उसी प्रकार मास्को भी अनचाहे ही अपना सामान्य जीवन जीता जा रहा था, यद्यपि मास्कोवासी अच्छी तरह से यह जानते थे कि तबाही का वह वक़्त नज़दीक आ रहा है, जब सामान्य जीवन की वे सभी परिस्थितियां नष्ट हो जायेंगी जिनके वे अब तक अभ्यस्त रहे थे।

मास्को पर फ़्रांसीसियों का अधिकार होने से पहले के तीन दिन रोस्तोव-परिवार तरह-तरह के घरेलू काम-काज में अत्यधिक व्यस्त रहा। परिवार के मुखिया, काउंट रोस्तोव अपनी बग्घी में बैठकर लगातार शहर के चक्कर लगाते, सभी जगहों पर फैली हुई अफ़वाहें-ख़बरें इकट्ठी करते और घर लौटकर जाने की तैयारी के बारे में ख़ास सोच-विचार किये बिना आम, सतही-सी हिदायतें देते रहते।

काउंटेस सामान के समेटने-बांधने के काम की देख-भाल करतीं, सभी चीज़ों से अप्रसन्न-असन्तुष्ट रहतीं, अपने से लगातार दूर भागनेवाले पेत्या के पीछे-पीछे घूमतीं और नताशा से ईर्ष्या करतीं जिसके साथ वह अपना सारा वक़्त बिताता था। सिर्फ़ सोन्या ही सामान को बांधने के व्यावहारिक मामले की तरफ़ ध्यान देती। किन्तु पिछले कुछ समय से सोन्या विशेष रूप से उदास और गुमसुम रहती थी। निकोलाई के उस पत्र के बाद, जिसमें उसने प्रिंसेस मरीया का उल्लेख किया था, काउंटेस

ने सोन्या की उपस्थिति में ही अपनी बेहद ख़ुशी ज़ाहिर की थी और यह कहा था कि प्रिंसेस मरीया के साथ निकोलाई की मुलाक़ात में प्रभु की ही इच्छा छिपी हुई है।

"नताशा के साथ बोल्कोन्स्की की सगाई से तो मुझे कभी ख़ुशी नहीं हुई थी," काउंटेस ने कहा था, "लेकिन मेरी हमेशा यह इच्छा रही है और मेरा मन कहता है कि निकोलाई प्रिंसेस मरीया से शादी करेगा। और अगर ऐसा हो जाये तो कितना अच्छा हो!"

सोन्या महसूस करती थी कि निस्सन्देह रोस्तोव-परिवार की माली हालत को सुधारने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है कि निकोलाई किसी अमीर लड़की से शादी कर ले और इस दृष्टि से प्रिंसेस बहुत ही उपयुक्त थी। लेकिन उसके लिये यह ज़हर का घूंट पीने के बराबर था। अपने इस ग़म के बावजूद या शायद इस ग़म के नतीजे के तौर पर उसने घर की चीज़ें-सामान समेटने-बांधने के प्रबन्ध की सबसे कठिन चिन्तायें अपने ऊपर ले लीं और सुबह से शाम तक इसी में व्यस्त रहती। काउंट और काउंटेस को जब कभी कोई आदेश-अनुदेश देना होता तो वे सोन्या को ही सम्बोधित करते। पेत्या और नताशा न केवल माता-पिता की कोई मदद ही न करते, बल्कि अधिकतर तो घर के सभी लोगों को परेशान करते और काम में ख़लल डालते रहते। लगभग दिन भर पूरे घर में उनका इधर-उधर दौड़ना, ख़ुशी से चीख़ना-चिल्लाना और ठहाके लगाना ही सुनाई देता रहता। वे इसलिये हंसते और ख़ुश नहीं होते थे कि इसका कोई विशेष कारण था, बल्कि इसलिये कि उनका मन खिला हुआ और ख़ुश था और इसी वजह से जो कुछ भी होता था, उससे उन्हें प्रसन्नता होती थी, हंसी आती थी। पेत्या इस-लिये ख़ुश था कि जब घर से गया था तो छोकरा था और अब जवांमर्द बनकर लौटा था (जैसाकि सभी उससे कहते थे); इसलिये ख़ुश था कि घर पर था, इसलिये भी कि बेलाया त्सेर्कोव से आ गया था, जहां निकट भविष्य में लड़ाई में हिस्सा लेने की कोई उम्मीद नहीं थी और अब मास्को में था, जहां कुछ ही दिनों में दुश्मन से लोहा लिया जायेगा और सबसे बड़ी बात तो यह कि नताशा, जिसके मूड से वह हमेशा प्रभावित होता था, ख़ूब रंग में थी। नताशा इसलिये ख़ुशी के रंग में थी कि बहुत अधिक समय तक उदास रही थी और अब कोई भी चीज़ उसे उसकी उदासी का कारण याद नहीं दिलाती थी और वह

स्वस्थ भी थी। वह इसलिये भी ख़ुश थी कि उसकी अराधना-पूजा करने-वाला एक व्यक्ति उसके पास था (इसके लिये दूसरों की प्रशंसा-अराधना उस तेल के समान थी जो मशीन के पहिये को अच्छी तरह से चलाने के लिये आवश्यक था) और पेत्या उसका दीवाना, उसका पुजारी था। मुख्यतः तो वे इसलिये ख़ुश थे कि लड़ाई मास्को के नज़दीक आ गयी थी, शहर के फाटकों पर भी लड़ाई होनेवाली थी, कि हथि-यार बांटे जा रहे थे, कि सभी भाग-दौड़ कर रहे थे, कहीं जा रहे थे, कि कुछ असाधारण हो रहा था जिससे सभी लोगों को, ख़ास तौर पर नौजवानों को ख़ुशी होती है।

१३

३१ अगस्त, शनिवार को रोस्तोवों का पूरा घर उलट-पुलट हुआ लगता था। सारे दरवाज़े खुले हुए थे, सारा फ़र्नीचर बाहर ले जाया जा चुका था या दूसरी जगहों पर रख दिया गया था, दीवारों पर से दर्पण और चित्र उतार लिये गये थे। कमरों में सन्दूक़ रखे थे, फ़र्श पर फूस और सामान लपेटने के काग़ज़ और रस्सियां-रस्से पड़े थे। सामान बाहर ले जानेवाले किसान और घरेलू भूदास-नौकर तख़्तों के फ़र्श पर अपने भारी क़दमों से आ-जा रहे थे। अहाते में किसानों की घोड़ा-गाड़ियां की घिचपिच थी जिनमें से कुछ पर ऊपर तक सामान लादकर उन्हें रस्सों से कस दिया गया था, और कुछ अभी तक ख़ाली थीं।

अहाते और घर में भूदास-नौकरों और घोड़ा-गाड़ियां लेकर आने-वाले किसानों के क़दमों और उनकी आवाज़ों का शोर गूंज रहा था। काउंट सुबह से ही कहीं बाहर चले गये थे। घर में हो रही इस दौड़-धूप और शोर-शराबे से काउंटेस के सिर में दर्द हो गया था और वह अपने सिर पर सिरके से तर पट्टी बांधे हुए नये दीवानख़ाने में लेटी हुई थीं। पेत्या घर पर नहीं था (वह अपने एक साथी के यहां गया हुआ था जिसके साथ जन-सेना से युद्धरत सेना में अपना तबादला करवाने का इरादा रखता था)। सोन्या हॉल में थी और बिल्लौरी

तथा चीनी मिट्टी के बर्तनों और चीज़ों की पैकिंग पर नज़र रख रही थी। चारों ओर बिखरे फ़्रॉकों, रिबनों तथा रूमालों-दुपट्टों के बीच नताशा अपने अस्त-व्यस्त कमरे के फ़र्श पर बैठी थी और फ़र्श को एकटक देखते हुए बॉल-नृत्य की एक पुरानी पोशाक को (जिसका अब फ़ैशन नहीं रहा था), उसी पोशाक को हाथों में थामे थी जिसे पहनकर वह पहली बार पीटर्सबर्ग के बॉल-नृत्य में गयी थी।

घर के सभी लोग जब इतने व्यस्त थे तो नताशा को हाथ पर हाथ धरे निठल्ली बैठे रहना बहुत अखर रहा था। वह सुबह से ही कई बार किसी काम में जुटने की कोशिश कर चुकी थी, मगर उसका मन इस काम में नहीं लग रहा था और वह कभी ऐसा कोई काम नहीं कर पाती थी जिसमें उसका मन पूरी तरह से न लगे, जिसमें वह अपनी पूरी शक्ति न लगा सके। चीनी मिट्टी के बर्तनों की पैकिंग के वक़्त वह सोन्या के क़रीब खड़ी रही, उसने उसकी मदद करनी चाही, मगर उसी वक़्त इरादा बदल लिया और अपनी चीज़ें समेटने-बांधने के लिये अपने कमरे में चली गयी। अपनी नौकरानियों में पोशाकें और रिबन बांटते हुए शुरू में तो उसे यह काम अच्छा लगा, लेकिन जब बाक़ी चीज़ों को पैक करने का सवाल सामने आया तो उसे ऊब महसूस हुई।

"दुन्याशा, मेरी प्यारी, तुम इन्हें पैक कर दोगी न? कर दोगी न?"

जब दुन्याशा ख़ुशी से यह सब कुछ करने को राज़ी हो गयी तो नताशा बॉल-नृत्य की पुरानी पोशाक हाथों में लिये हुए फ़र्श पर बैठ गयी और उन चीज़ों के बारे में न सोचते हुए, जिनके बारे में उसे इस समय सोचना चाहिये था, अतीत की दुनिया में खो गयी। नौकरानियों के बग़लवाले कमरे से सुनायी देनेवाली बातचीत और उनके तेज़ी से पिछले पोर्च की तरफ़ जाने की आवाज़ों ने उसके इस दिवास्वप्न को भंग किया। नताशा उठी और उसने खिड़की से बाहर झांककर देखा। सड़क पर घायलों को लानेवाली घोड़ा-गाड़ियों की एक लम्बी क़तार रुक गयी थी।

नौकरानियां, नौकर, भंडारिन, आया, बावर्ची, कोचवान, बग्घी के अग्रिम घोड़ों पर बैठनेवाले सवार, बावर्चियों के सहायक फाटक के क़रीब खड़े हुए घायलों को देख रहे थे।

नताशा सफ़ेद, जेबी रूमाल से बालों को ढककर और उसके सिरों को हाथों से पकड़े हुए बाहर सड़क पर चली गयी।

भूतपूर्व भंडारिन, बूढ़ी मात्रा कुज़्मीनिश्ना फाटक के क़रीब खड़ी भीड़ से आगे निकलकर चटाई की छतवाली एक घोड़ा-गाड़ी के पास जाकर उसमें लेटे हुए पीले चेहरेवाले एक जवान फ़ौजी अफ़सर से बात-चीत कर रही थी। नताशा कुछ क़दम आगे बढ़ गयी और अभी भी रूमाल के सिरों को पकड़े हुए कुछ झेंपती-सी रुक गयी तथा बातचीत सुनने लगी।

"तो इसका मतलब है कि मास्को में आपका कोई नहीं है?" मात्रा कुज़्मीनिश्ना कह रही थी। "आपको किसी घर में ज़्यादा आराम मिल सकता है... जैसे कि हमारे घर में। मालिक लोग तो जा ही रहे हैं।"

"मालूम नहीं कि इसकी इजाज़त मिलेगी या नहीं," फ़ौजी अफ़सर ने कमज़ोर-सी आवाज़ में कहा। "वह रहा हमारा बड़ा अफ़सर... उससे पूछ लीजिये," और उसने एक मोटे-से मेजर की तरफ़ इशारा किया जो घोड़ा-गाड़ियों की क़तार के साथ-साथ सड़क पर वापस लौट रहा था।

नताशा ने डरी-सहमी नज़रों से घायल अफ़सर के चेहरे की तरफ़ देखा और उसी क्षण मेजर की तरफ़ बढ़ गयी।

"क्या कुछ घायल हमारे घर में ठहर सकते हैं?" उसने पूछा।

मेजर ने मुस्कराते तथा हाथ उठाकर अपनी फ़ौजी टोपी को छूते हुए मानो सलूट मारी।

"आप किसे ठहराना चाहती हैं, कुमारी जी?" मेजर ने आंखें सिकोड़ते और मुस्कराते हुए पूछा।

नताशा ने शान्त भाव से अपना सवाल दोहराया और इस चीज़ के बावजूद कि वह अभी भी रूमाल के सिरों को पकड़े थी, उसका चेहरा और पूरा अन्दाज़ इतना संजीदा था कि मेजर ने मुस्कराना बन्द कर दिया और कुछ क्षण सोचने के बाद मानो अपने आपसे यह पूछ रहा हो कि किस हद तक ऐसा करना सम्भव था, हां करते हुए बोला:

"हां, हां, ठहर सकते हैं।"

नताशा ने उसकी ओर ज़रा सिर झुका दिया और तेज़ी से मात्रा कुज़्मीनिश्ना की तरफ़ लौटी जो अभी तक दया और सहानुभूति से

ायलों को अपने घर के अहाते में आमन्त्रित करती हुई नताशा।

ओत-प्रोत होकर घायल अफ़सर के साथ बातें कर रही थी।

"उसने कहा है कि ठहर सकते हैं!" नताशा ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

वह घोड़ा-गाड़ी, जिसमें घायल अफ़सर लेटा हुआ था, रोस्तोवों के अहाते की तरफ़ आ गयी और नगरवासियों के निमन्त्रण पर दसियों घोड़ा-गाड़ियां पोवर्स्काया सड़क के अहातों और घरों के दरवाज़ों की तरफ़ बढ़ने लगीं। नताशा को नये लोगों के सम्पर्क में आने की यह सम्भावना और जीवन की ये असाधारण परिस्थितियां सम्भवतः पसन्द आयीं। माव्रा कुज़्मीनिश्ना और नताशा ने अधिक से अधिक घायलों को अपने अहाते में लाने का प्रयत्न किया।

"फिर भी आपके पापा को तो ज़रूर बताना चाहिये," माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने कहा।

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है! हम एक दिन के लिये ड्राइंगरूम में चली जायेंगी। हमारा आधा हिस्सा पूरी तरह से उन्हें दिया जा सकता है।"

"यह भी क्या अच्छी बात सूझी है आपको, छोटी मालकिन! हां, उन्हें उप-भवन, अविवाहित नौकरों का कमरा और आया का कमरा भी दिया जा सकता है, फिर भी पूछना तो चाहिये।"

"तो मैं पूछ आती हूं।"

नताशा घर में भाग गयी और पंजों के बल अध-खुले दरवाज़े से दीवानख़ाने में दाख़िल हुई, जहां से सिरके और दवाई की गन्ध आ रही थी।

"अम्मां, आप सो रही हैं?"

"अरे, मुझे नींद ही कहां आती है!" काउंटेस ने, जो अभी-अभी ऊंघने लगी थीं, जागते हुए जवाब दिया।

"अम्मां, प्यारी अम्मां," नताशा ने मां के सामने घुटनों के बल होते और अपने चेहरे को काउंटेस के चेहरे के साथ सटाते हुए कहा। "मैं क़ुसूरवार हूं, माफ़ी चाहती हूं, फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी, मैंने आपको जगा दिया। मुझे माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने भेजा है। यहां घायलों को लाया गया है, अफ़सरों को, आप उन्हें यहां रहने देंगी? उनके लिये और कोई ठिकाना नहीं है; मैं जानती हूं कि आप मना नहीं करेंगी..." उसने जल्दी-जल्दी, एक ही सांस में कह डाला।

"कैसे अफ़सर? किसे लाया गया है? कुछ भी तो नहीं समझ पा रही हूं मैं।"

नताशा खिलखिलाकर हंस दी, काउंटेस भी ज़रा मुस्करा दीं।

"मैं जानती थी कि आप इजाज़त दे देंगी... मैं यही, यही कह दूंगी।" और नताशा मां को चूमकर उठी और दरवाज़े की तरफ़ चल दी।

हॉल में उसकी अपने पापा से भेंट हो गयी जो शहर से बुरी ख़बर लेकर घर आये थे।

"बहुत देर कर दी हमने यहां से जाने में!" काउंट ने हठात् खीझते हुए कहा। "क्लब बन्द हो गया और पुलिस भी यहां से जा रही है।"

"पापा, मैंने कुछ बुरा तो नहीं किया कि घायलों को अपने घर में ठहरने के लिये बुला लिया?" नताशा ने काउंट से पूछा।

"बेशक कुछ बुरा नहीं किया," काउंट ने बेख़्याली से जवाब दिया। "मगर बात दूसरी है। मैं तुमसे यह अनुरोध करता हूं कि अब तुम उलटे-सीधे कामों में वक़्त बरबाद नहीं करो, बल्कि सामान बांधने में हाथ बंटाओ ताकि यहां से रवाना हो जायें, कल ज़रूर चल दें..." और काउंट ने गृह-प्रबन्धक और नौकरों को भी यही हुक्म दिया। पेत्या लंच के वक़्त घर लौटा और उसने वह ख़बरें बतायीं जो सुनी थीं।

उसने बताया कि आज लोग क्रेमलिन में जाकर हथियार ले रहे थे, कि रस्तोपचिन के परचे में बेशक यह कहा गया था कि वह दो दिन पहले ख़तरे की सूचना देकर लोगों का आह्वान करेगा, किन्तु वास्तव में इस बात का आदेश दिया जा चुका है कि कल सभी लोग हथियारों से लैस होकर त्री गोरी पर जायें और यह कि वहां बहुत बड़ी लड़ाई होगी।

पेत्या जब यह बता रहा था तो काउंटेस अपने बेटे के खिले और उत्साहपूर्ण चेहरे को घबराहट की सहमी-सहमी नज़र से देख रही थीं। वह जानती थीं कि अगर वह पेत्या से इस अनुरोध का एक भी शब्द कहेंगी कि वह इस लड़ाई में न जाये (काउंटेस जानती थीं कि उसे ऐसी सम्भावना से ख़ुशी हो रही है) तो वह मर्दों की मर्दानगी, मान-मर्यादा और मातृभूमि के नाम की दुहाई देगा – कुछ बेतुकी और वीरता की ऐसी हठपूर्ण बातें करेगा कि जिनका खण्डन करना सम्भव नहीं होगा

और सारा मामला बिगड़ जायेगा। इसलिये यह आशा करते हुए कि वह कुछ ऐसी व्यवस्था करेंगी कि इस वक़्त से पहले ही पेत्या को अपने रक्षक-संरक्षक के रूप में यहां से अपने साथ ले जायें, उन्होंने पेत्या से कुछ भी नहीं कहा, मगर लंच के बाद काउंट को अपने पास बुलवाया और आंसू बहाते हुए उनसे अनुरोध किया कि जल्दी से जल्दी, यदि सम्भव हो, तो इसी रात को उन्हें मास्को से ले जायें। काउंटेस, जिन्होंने अभी तक बड़ी निडरता का परिचय दिया था, प्यार-ममता के मामले में नारी की स्वाभाविक चालाकी के अनुरूप अब यह कहने लगीं कि अगर ये लोग इसी रात को यहां से नहीं चले जायेंगे तो डर के मारे उनकी जान निकल जायेगी। काउंटेस ढोंग नहीं कर रही थीं, उन्हें अब हर चीज़ से डर लगता था।

१४

मदाम शोस्स ने, जो अपनी बेटी से मिलने गयी थी, म्यास्नीत्स्काया सड़क पर शराब की दुकान के सामने अपनी आंखों से देखे दृश्यों के क़िस्से सुनाकर काउंटेस का डर और भी बढ़ा दिया। वह इसी सड़क से घर लौटना चाहती थी, मगर दुकान के सामने हुड़दंग मचा रहे लोगों की बड़ी भीड़ के कारण ऐसा नहीं कर पायी। तब उसने किराये की बग्घी ली और गली-कूचों का चक्कर लगाते हुए यहां लौटी तथा कोचवान ने उसे बताया कि लोगों ने दुकान में शराब के पीपे तोड़ डाले, क्योंकि उन्हें ऐसा ही हुक्म मिला था।

लंच के बाद रोस्तोवों के घर के सभी लोग बड़े जोश से और उतावली करते हुए सामान की पैकिंग तथा यहां से जाने की तैयारी में जुट गये। बुज़ुर्ग काउंट, जो अचानक ही इस काम में गहरी दिलचस्पी लेने लगे थे, लंच के बाद लगातार अहाते से घर और घर से अहाते की तरफ़ आ-जा रहे थे, उतावली कर रहे लोगों को चीख़-चिल्लाकर बेतुकी हिदायतें देते हुए और भी ज़्यादा जल्दी करने को कह रहे थे। अहाते में पेत्या इस काम का निर्देशन कर रहा था। काउंट की परस्पर विरोधी हिदायतों के कारण सोन्या घबरा गयी थी और उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और क्या न करे। नौकर-चाकर

चीख़ते-चिल्लाते, बहस करते और शोर मचाते हुए कमरों और अहाते में भाग-दौड़ कर रहे थे। सभी चीज़ों के बारे में अपने लाक्षणिक उत्साह के अनुरूप नताशा भी इस काम में अचानक हाथ बंटाने लगी। शुरू में पैकिंग के काम में उसके योग को अविश्वास की दृष्टि से देखा गया। उससे तो सभी सिर्फ़ खिलवाड़ की आशा करते थे और उसकी बातों पर कान देने को तैयार नहीं थे; मगर उसने बड़ी दृढ़ता और जोश से यह मांग की कि उसकी बातें मानी जायें, वह बिगड़ने लगी, लगभग रुआंसी हो गयी कि उसकी हिदायतों पर अमल नहीं किया जाता और आख़िर उसने अपनी धाक जमा ही ली। उसकी पहली उपलब्धि, जिसके लिये उसे बहुत यत्न करना पड़ा और जिससे उसने अपना सिक्का मनवा लिया, वह क़ालीनों की पैकिंग थी। काउंट के घर में अनेक दीवारी और ईरानी क़ालीन थे। जब नताशा इस काम में जुटी तो हॉल में दो खुले हुए बड़े बक्से रखे थे। एक बक्सा चीनी मिट्टी के बर्तनों और दूसरा क़ालीनों से लगभग ऊपर तक भरा हुआ था। चीनी मिट्टी के बहुत से बर्तन अभी मेज़ों पर रखे हुए थे और स्टोररूम से और भी लाये जा रहे थे। नये, तीसरे बक्से में पैकिंग शुरू करने की ज़रूरत थी और लोग उसे लाने चले गये थे।

"सोन्या, ज़रा रुक जाओ, हम इन दो बक्सों में ही इन्हें पैक कर देंगे," नताशा ने कहा।

"ऐसा नहीं हो सकता, छोटी मालकिन, हम कोशिश करके देख चुके हैं," गृह-प्रबन्धक ने कहा।

"नहीं, कृपया, तुम ज़रा रुक जाओ।" और नताशा काग़ज़ों में लिपटी हुई छोटी-बड़ी तश्तरियों को बक्से में से निकालने लगी।

"बड़ी प्लेटों को यहां, क़ालीनों में रखना चाहिये," नताशा ने कहा।

"क़ालीन ही तीन बक्सों में समा जायें तो भी भगवान का शुक्र मानिये," गृह-प्रबन्धक ने राय ज़ाहिर की।

"कृपया, तुम ज़रा रुक जाओ।" और नताशा जल्दी-जल्दी तथा फुर्ती से चीज़ें छांटने लगी। "इनकी ज़रूरत नहीं है," उसने कीयेव में बनी बड़ी तश्तरियों के बारे में कहा। "इन्हें ले चलना चाहिये – क़ालीनों में रखना चाहिये," उसने सैक्सोनी की बड़ी प्लेटों के बारे में कहा।

"नताशा, तुम रहने दो, बस काफ़ी है, हम तुम्हारे बिना ही यह सब कर लेंगे," सोन्या ने भर्त्सना के अन्दाज़ में कहा।

"ओह, छोटी मालकिन!" गृह-प्रबन्धक कह उठा। किन्तु नताशा अपनी बात पर अड़ी रही और यह फ़ैसला करते हुए कि घटिया घरेलू क़ालीन और फ़ालतू बर्तन साथ न लिये जायें, सारी चीज़ें बाहर निकालकर उन्हें फिर से पैक करने लगी। वास्तव में ही सारी घटिया और सस्ती चीज़ें निकाल देने के बाद, जिन्हें अपने साथ ले जाने में कोई तुक नहीं थी, सभी मूल्यवान चीज़ें दो बक्सों में समा गयीं। सिर्फ़ क़ालीनोंवाले बक्से का ढक्कन ही बन्द नहीं होता था। इसके लिये उसमें से कुछ चीज़ें निकाली जा सकती थीं, मगर नताशा ने अपने मन की ही करनी चाही। उसने चीज़ों को तरह-तरह से व्यवस्थित किया, उन्हें दबाया, गृह-प्रबन्धक और पेत्या को, जिसे उसने पैकिंग के इस काम में अपने साथ खींच लिया था, ढक्कन को दबाने के लिये मजबूर किया और ख़ुद अपना भी पूरा ज़ोर लगाया।

"बस, काफ़ी हो चुका नताशा," सोन्या ने उससे कहा। "मैं देख रही हूं कि तुम ठीक हो, लेकिन अब ऊपरवाला एक क़ालीन निकाल लो।"

"मैं नहीं निकालूंगी," एक हाथ से पसीने से तर चेहरे पर लटक आनेवाले बालों को थामे और दूसरे से क़ालीनों को दबाते हुए नताशा ने चिल्लाकर जवाब दिया। "पेत्या, और दबाओ! वसीलिच, और ज़ोर लगाओ न!" वह चिल्ला रही थी। क़ालीन दब गये और बक्से का ढक्कन बन्द हो गया। नताशा तालियां बजाते हुए ख़ुशी से चीख़ उठी और उसकी आंखें डबडबा आईं। किन्तु यह स्थिति क्षण भर ही रही। वह फ़ौरन ही दूसरे काम में जुट गयी। अब सभी उसपर पूरी तरह भरोसा करते थे और जब कोई काउंट से यह कहता कि नताशा ने उनके किसी हुक्म या हिदायत को रद्द कर दिया है तो वह भी बुरा न मानते। नौकर-चाकर अब उसी से यह पूछने आते कि घोड़ा-गाड़ी पर काफ़ी सामान लाद दिया गया है या नहीं और उसे रस्सों से बांध दिया जाये अथवा नहीं? नताशा की देख-रेख में काम जल्दी-जल्दी होने लगा – मामूली, अनावश्यक वस्तुएं यहीं छोड़ दी गयीं और क़ीमती चीज़ों को ख़ूब ठूंस-ठूंसकर पैक किया गया।

किन्तु सभी लोगों की बेहद कोशिश के बावजूद देर गये रात तक

सारा सामान पैक नहीं हो पाया। काउंटेस सो गयीं और काउंट रवानगी को अगली सुबह तक स्थगित करके बिस्तर पर चले गये।

सोन्या और नताशा दिन के कपड़े पहने हुए ही दीवानख़ाने में जाकर सो गयीं।

इसी रात को एक अन्य घायल को पोवर्स्कोया सड़क पर से लाया गया और फाटक पर खड़ी हुई माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने उसे रोस्तोवों के घर में आने को आमन्त्रित किया। माव्रा कुज़्मीनिश्ना के मतानुसार यह घायल कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण आदमी था। वह ऐसी बग्घी में था जिसकी छत ऊपर उठी हुई थी और जिसके चारों ओर परदे लटके हुए थे। कोचवान की बग़ल में ख़ासा प्रतिष्ठित-सा प्रतीत होनेवाला बुज़ुर्ग सेवक बैठा था। पीछे आ रही घोड़ा-गाड़ी में एक डाक्टर और दो सैनिक थे।

"कृपया, हमारे यहां आ जाइये, हमारे यहां। हमारे मालिक लोग जा रहे हैं, पूरा घर ख़ाली है," बुढ़िया ने बूढ़े सेवक से कहा।

"शायद यही ठीक होगा," सेवक ने आह भरते हुए कहा, "अपने घर तक जीवित ले जाने की आशा तो नहीं है। मास्को में हमारा अपना घर है, मगर दूर है और फिर वहां कोई रहता भी नहीं है।"

"हमारे यहां पधारने की कृपा करें, हमारे मालिकों के पास सब कुछ है, कृपया आ जाइये," माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने कहा। "क्या आपके साहब की तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब है?" उसने इतना और पूछ लिया।

सेवक ने निराशा से हाथ झटक दिया।

"घर तक जीवित ले जाने की कोई उम्मीद नहीं है! डाक्टर से पूछना चाहिये।" और सेवक कोचवानवाली सीट से उतरकर घोड़ा-गाड़ी के क़रीब गया।

"यह अच्छा रहेगा," डाक्टर ने जवाब दिया।

सेवक फिर से बग्घी की ओर लौटा, उसमें झांककर देखा, निराशा से सिर हिलाया, कोचवान को अहाते की तरफ़ बग्घी बढ़ाने को कहा और माव्रा कुज़्मीनिश्ना के पास जाकर रुक गया।

"प्रभु ईसा मसीह!" बुढ़िया कह उठी।

माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने घायल को घर में ले चलने को कहा।

"मालिक लोग कोई आपत्ति नहीं करेंगे..." बुढ़िया ने विश्वास

दिलाया। किन्तु यह ज़रूरी था कि घायल को ज़ीने से ऊपर न ले जाया जाये, इसलिये उसे उपभवन के उस कमरे में ले जाया गया जहां पहले मदाम शोस्स रहती थी। यह घायल प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की था।

१५

मास्को को छोड़ने का अन्तिम दिन आ गया था। पतझर के मौसम का उजला, सुखद-प्यारा दिन था। यह रविवार था। सामान्य रविवारों की भांति आज भी गिरजाघरों के घण्टे गूंज रहे थे, लोगों को प्रार्थना के लिये बुला रहे थे। ऐसे लगता था कि अभी तक कोई भी यह नहीं समझ पा रहा था कि मास्को पर क्या बीतनेवाली है।

केवल दो लक्षण ही यह इंगित करते थे कि मास्को किस स्थिति में है – तलछटी लोगों, यानी ग़रीब-ग़ुरबा की बहुत बड़ी संख्या और चीज़ों की क़ीमतें। फ़ैक्टरियों के मज़दूर, घरेलू नौकर-चाकर और किसान, जिनमें मुंशी-क्लर्क, धार्मिक विद्यालयों के विद्यार्थी और कुलीन भी शामिल हो गये, बहुत बड़ी संख्या में सुबह ही त्री गोरी पर पहुंच गये। वहां उन्होंने काफ़ी देर तक रस्तोपचिन का इन्तज़ार किया, मगर जब वह नहीं आया और उन्हें यह विश्वास हो गया कि मास्को दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा तो यह बड़ी भीड़ मास्को के सभी शराबख़ानों और सस्ते ढाबों में बिखर गयी। इस दिन की क़ीमतें भी स्थिति की ओर संकेत करती थीं। हथियारों, सोने, घोड़ा-गाड़ियों और घोड़ों की क़ीमतें लगातार बढ़ती जा रही थीं, जबकि काग़ज़ी नोटों और शहरी ऐश-आराम की सभी चीज़ों की क़ीमतें नीचे गिरती जाती थीं। दोपहर तक ऐसी हालत हो गयी थी कि कपड़े जैसी क़ीमती चीज़ों को अपनी घोड़ा-गाड़ी में लादकर ले जानेवाले गाड़ीवान किराये के रूप में आधी अपने पास ही रख सकते थे, किसान का मामूली-सा घोड़ा पांच सौ रूबल में बिकता था, जबकि फ़र्नीचर, आइने और तांबे-कांसे की चीज़ें मुफ़्त ही दी जा रही थीं।

रोस्तोवों के ऊंची प्रतिष्ठावाले और पुराने घर में जीवन की

पहलेवाली परिस्थितियों का पतन-परिवर्तन बहुत ही कम दिखाई दे रहा था। लोगों के मामले में सिर्फ़ इतना ही हुआ था कि ढेर सारे नौकरों-चाकरों में से तीन रात के वक़्त ग़ायब हो गये थे, मगर चुराया कुछ नहीं गया था। जहां तक चीज़ों की क़ीमतों का सवाल था तो जागीर से आनेवाली तीस घोड़ा-गाड़ियां बहुत बड़ी दौलत थीं, जिनसे अनेक लोगों को बड़ी ईर्ष्या होती थी और जिनके लिये लोग बहुत धन देने को तैयार थे। केवल इतना ही नहीं कि इन घोड़ा-गाड़ियों के लिये बहुत बड़ी-बड़ी रक़में पेश की जा रही थीं, बल्कि यह भी कि पिछली रात और १ सितम्बर की सुबह से ही घायल फ़ौजी अफ़सरों के सेवक और अर्दली तथा रोस्तोवों के घर और पड़ोस के घरों में ठहरे हुए घायल ख़ुद भी रोस्तोवों के यहां आकर उनके नौकरों-चाकरों की मिन्नत-समाजत कर रहे थे कि वे किसी तरह अपने मालिकों से विनती करके उन्हें मास्को से जाने के लिये घोड़ा-गाड़ियां दिलवा दें। ऐसे अनुरोध गृह-प्रबन्धक से किये जाते थे। उसे बेशक घायलों पर दया आती थी, मगर वह यह कहते हुए दृढ़ता से इन्कार कर देता था कि काउंट से ऐसी चर्चा करने के लिये मुंह तक खोलने की हिम्मत नहीं कर सकता। पीछे छोड़े जानेवाले घायलों के लिये चाहे कितना ही दुख क्यों न अनुभव हो, इतना स्पष्ट था कि अगर एक घोड़ा-गाड़ी दे दी जाये तो फिर दूसरी क्यों न दी जाये, ऐसे सभी, यहां तक कि अपनी बग्घियां भी क्यों न दे दी जायें। तीस घोड़ा-गाड़ियां इतने घायलों को तो बचा नहीं सकतीं थीं और सभी पर आनेवाले मुसीबत के इस वक़्त में ख़ुद अपने तथा अपने परिवार के बारे में भी सोचे बिना नहीं रहा जा सकता था। गृह-प्रबन्धक अपने मालिक की ओर से इस प्रकार तर्क-वितर्क करता था।

१ सितम्बर की सुबह को आंख खुलने पर काउंट रोस्तोव अपने शयन कक्ष से दबे पांव बाहर आये ताकि काउंटेस को न जगा दें जिनकी कुछ देर पहले, भोर के समय ही आंख लगी थी। वह बैंगनी रंग का रेशमी ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए पोर्च में गये। अहाते में सामान से लदी हुई घोड़ा-गाड़ियां और पोर्च के सामने बग्घियां खड़ी थीं। घर के दरवाज़े के क़रीब खड़ा हुआ गृह-प्रबन्धक एक बूढ़े अर्दली और पीले चेहरेवाले जवान अफ़सर से, जिसका हाथ पट्टी में लटका हुआ था, बातें कर रहा था। काउंट को देखकर गृह-प्रबन्धक ने जवान फ़ौजी

अफ़सर और बूढ़े अर्दली को अर्थपूर्ण तथा कड़ाई से संकेत किया कि वे चले जायें।

"तो वसीलिच, पूरी तैयारी हो गयी?" काउंट ने अपनी चांद पर हाथ फेरते और फ़ौजी अफ़सर तथा अर्दली की तरफ़ ख़ुशमिज़ाजी से देखते और उनकी ओर सिर भुकाते हुए (काउंट को नये चेहरे अच्छे लगते थे) गृह-प्रबन्धक से पूछा।

"बेशक अभी रवाना हो सकते हैं, हुज़ूर।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है। बस, काउंटेस जाग जायें और भगवान का नाम लेकर हम यहां से चल देंगे! क्या बात है, महानुभावो?" उन्होंने जवान अफ़सर को सम्बोधित करते हुए प्रश्न किया। "आप मेरे ही घर में ठहरे हुए हैं?" जवान फ़ौजी अफ़सर काउंट के क़रीब आ गया। उसके पीले चेहरे पर अचानक गहरी लाली छा गयी।

"काउंट, मेहरबानी कीजिये, भगवान के लिये मुझे अपनी किसी एक घोड़ा-गाड़ी में थोड़ी-सी जगह दे दीजिये... यहां मेरे पास तो कुछ भी नहीं है... मैं तो सामान के बीच भी बैठ सकता हूं... मेरे लिये सब ठीक रहेगा..." जवान अफ़सर अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि बूढ़े अर्दली ने अपने मालिक की तरफ़ से काउंट से ऐसा ही अनुरोध किया।

"ओह! ज़रूर, ज़रूर," काउंट ने जल्दी से जवाब दिया। "मुझे बड़ी ख़ुशी होगी, बड़ी ख़ुशी होगी। वसीलिच, तुम इसकी व्यवस्था कर दो, एक या दो घोड़ा-गाड़ियां ख़ाली करवा दो... मेरा मतलब... कितनी ज़रूरत हो..." काउंट ने कुछ अनिश्चित शब्दों में आदेश दिया। किन्तु जवान अफ़सर के बहुत ही उत्साहपूर्ण कृतज्ञता के भाव ने उसी क्षण मानो काउंट के आदेश पर मुहर लगा दी। काउंट ने अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई। अहाते में, फाटक के पास और उपभवन की खिड़कियों में – सभी जगह घायल तथा अर्दली नज़र आ रहे थे। वे सभी काउंट की ओर देख रहे थे, पोर्च की तरफ़ बढ़ रहे थे।

"जनाब, हुज़ूर, ज़रा गैलरी में चलने की तकलीफ़ कीजिये – वहां लगी तस्वीरों के बारे में आपका क्या हुक्म होगा?" गृह-प्रबन्धक ने जानना चाहा। और काउंट अपना यह आदेश दोहराते हुए कि घोड़ा-

गाड़ियों में चलने की प्रार्थना करनेवाले घायलों को इन्कार न किया जाये, गृह-प्रबन्धक के साथ घर में चले गये।

"आख़िर तो कुछ सामान उतारा भी जा सकता है," उन्होंने धीमी, रहस्यपूर्ण आवाज़ में इतना और जोड़ दिया मानो डरते हों कि कोई उनकी बात न सुन ले।

काउंटेस दस बजे जागीं और मात्र्योना तिमोफ़ेयेव्ना ने, जो कभी उनकी नौकरानी होती थी और अब काउंटेस के लिये बड़े जेनडार्म की भूमिका निभाती थी, उनके पास आकर यह बताया कि मदाम शोस्स बहुत नाराज़ है और यह कि छोटी मालकिनों की गर्मी की पोशाकें यहां नहीं छोड़ी जा सकतीं। काउंटेस के यह पूछताछ करने पर कि मदाम शोस्स किस कारण नाराज़ है, यह पता चला कि घोड़ागाड़ी से उसका सन्दूक़ उतार दिया गया है, सामान से लदी सभी घोड़ा-गाड़ियों के रस्से खोले जा रहे हैं, सामान उतारा जा रहा है और उसकी जगह घायलों को घोड़ा-गाड़ियों पर चढ़ाया जा रहा है जिन्हें काउंट ने अपने भोलेपन के कारण साथ ले चलने का आदेश दे दिया है। काउंटेस ने पति को अपने पास बुलवा भेजा।

"मेरे प्यारे, यह क्या मामला है? मैंने सुना है कि घोड़ा-गाड़ियों से सामान उतारा जा रहा है?"

"बात यह है, मेरी प्यारी, मैं तुमसे यह कहना चाहता था... मेरी प्यारी काउंटेस... मेरे पास एक फ़ौजी अफ़सर आया, वे लोग यह अनुरोध कर रहे हैं कि कुछ घोड़ा-गाड़ियां घायलों के लिये दे दी जायें। आख़िर हमारी चीज़ें तो चीज़ें ही हैं, लेकिन सोचो तो उन्हें छोड़ देना कितना बुरा होगा!.. वे तो हमारे ही अहाते में हैं, हमने ख़ुद ही उन्हें यहां आमन्त्रित किया है, उनमें अफ़सर भी हैं... मेरा तो यही ख़्याल है, मेरी प्यारी, मेरी अच्छी काउंटेस... इन्हें ले जाने देना चाहिये... ऐसी जल्दी भी क्या है?.." काउंट ने बहुत सहमे-सहमे ऐसे ढंग से यह कहा, जैसे कि वह हमेशा पैसों का मामला सामने आने पर करते थे। काउंटेस उनके इस लहजे से परिचित थी जो काउंट हमेशा ही बच्चों के हितों के विरुद्ध जानेवाली किसी योजना – जैसे कि नयी चित्रशाला या तापघर अथवा निजी थियेटर या आर्केस्ट्रा बनाने के पहले अपनाते थे। काउंटेस ने भी ऐसे सहमे-सहमे लहजे में कही जानेवाली बात का विरोध करने की आदत बना ली थी और

ऐसा करना अपना कर्त्तव्य मानती थीं।

काउंटेस ने रुआंसी और आज्ञाकारी की सी मुद्रा बना ली और पति से बोलीं:

"सुनिये काउंट, आपने हालत इस हद तक बिगाड़ दी है कि मकान के लिये कोई कुछ भी देने को तैयार नहीं है और अब आप हमारा – **बच्चों का** – सब कुछ तबाह-बरबाद करना चाहते हैं। आप तो ख़ुद ही यह कहते हैं कि घर में एक लाख का सामान है। मेरे प्यारे, मैं आपके इस निर्णय से सहमत नहीं हूं, बिल्कुल सहमत नहीं हूं। वैसे आप जो चाहें, कर सकते हैं! घायलों की चिन्ता करने के लिये सरकार है। घायलों को यह मालूम है। ज़रा अपने सामनेवालों, लोपुख़ीनों की तरफ़ ध्यान दीजिये – दो दिन पहले वे अपने घर की हर छोटी से छोटी चीज़ भी यहां से ले गये। लोग इस तरह से काम करते हैं। सिर्फ़ हम ही मूर्ख हैं। अगर मुझपर नहीं तो बच्चों पर ही तरस खाइये।"

काउंट ने निराशा से हाथ झटक दिये और कोई भी जवाब दिये बिना कमरे से बाहर चले गये।

"पापा! क्या बात है?" नताशा ने काउंट से पूछा जो पिता के पीछे-पीछे मां के कमरे में आ गयी थी।

"कोई बात नहीं! तुम्हें क्या लेना-देना है इससे!" काउंट ने गुस्से से जवाब दिया।

"लेकिन मैंने तो सब कुछ सुन लिया है," नताशा ने कहा। "अम्मां किसलिये विरोध कर रही हैं?"

"तुम्हें क्या लेना-देना है इससे?" काउंट चिल्ला उठे। नताशा खिड़की के क़रीब चली गयी और सोच में डूब गयी।

"पापा, बेर्ग हमसे मिलने आ रहा है," खिड़की से बाहर देखते हुए उसने कहा।

१६

रोस्तोवों का दामाद बेर्ग कर्नल बन चुका था। वह सेंट व्लादीमिर और आन्ना के पदक गले में लटकाये था तथा स्टाफ़ संचालक के सहायक के पहलेवाले चैन भरे और सुखद पद पर ही काम कर रहा था।

वह १ सितम्बर को सेना से मास्को आया।

उसे मास्को में कोई काम-धन्धा नहीं था, लेकिन उसने देखा कि सभी लोग सेना में छुट्टी लेकर मास्को जा रहे हैं और वहां जाकर कुछ करते हैं। उसने भी घरेलू तथा पारिवारिक मामलों के लिये छुट्टी लेना ज़रूरी समझा।

बेर्ग अपनी ढंग की दुपहिया घोड़ा-गाड़ी में, जिसमें एक प्रिंस की गाड़ी जैसे ही लाली मायल भूरे रंग के दो तगड़े-तगड़े घोड़े जुते थे, अपने ससुर के घर आया। उसने अहाते में खड़ी घोड़ा-गाड़ियों को बहुत ग़ौर से देखा और घर में प्रवेश करते हुए एक साफ़ जेबी रूमाल निकालकर उसमें एक गांठ लगा ली।

प्रवेश-कक्ष से बेर्ग सहज-सधे, मगर तेज़ क़दमों से ड्राइंगरूम में गया, उसने काउंट को गले लगाया, नताशा और सोन्या के हाथ चूमे और अम्मां यानी काउंटेस के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की।

"आजकल तो स्वास्थ्य की बात ही क्या हो सकती है? तुम यह बताओ कि सेनाओं का क्या हाल-चाल है? वे पीछे हट रही हैं या एक और लड़ाई होगी?" काउंट ने जानना चाहा।

"केवल अनादि-अनन्त भगवान ही हमारी मातृभूमि के भाग्य के मालिक हैं," बेर्ग ने जवाब दिया। "फ़ौज के दिलों में तो बहादुरी की आग धधक रही है और ऐसे वक़्त पर हमारे बड़े अफ़सर लोग सलाह-मशविरा करने को जमा हो गये हैं। क्या होगा, कुछ भी मालूम नहीं। किन्तु कुल मिलाकर, मैं यह ज़रूर कह सकता हूं, प्यारे पापा, कि २६ अगस्त की लड़ाई में रूसियों ने, मेरा मतलब, रूसी सेना ने," उसने अपनी भूल सुधारी, "जो वीरता, प्राचीनकाल जैसी जो सच्ची वीरता दिखायी, उसके वर्णन के लिये उचित शब्द ढूंढ़ पाना सम्भव नहीं... प्यारे पापा, मैं आपसे कह सकता हूं (उसने उसी तरह से अपनी छाती ठोंकी जैसे उसने एक जनरल को इसी बात की चर्चा करते हुए अपने सामने छाती ठोंकते देखा था, यद्यपि ऐसा करने में उसने थोड़ी देर कर दी थी, क्योंकि "रूसी सेना" कहते समय उसे अपनी छाती ठोंकनी चाहिये थी), "मैं आपसे बिल्कुल ईमानदारी से यह कह सकता हूं कि हम अफ़सरों को न सिर्फ़ अपने फ़ौजियों को आगे बढ़ने के लिये मजबूर या ऐसा ही कुछ और

नहीं करना पड़ा, बल्कि हम बड़ी मुश्किल से उन्हें पुराने वक़्तों की याद दिलानेवाले बहादुरी के ऐसे... इस तरह के कारनामे करने से रोक पाये," उसने जल्दी-जल्दी ये शब्द कह डाले। "मैं आपको बताता हूं कि जनरल बार्कले डे टोल्ली ने हर जगह फ़ौज के आगे-आगे रहते हुए अपनी जान ख़तरे में डाली। हमारी फ़ौजी कोर पहाड़ी की ढाल पर तैनात थी। आप कल्पना कर सकते हैं!" और इसके पश्चात बेर्ग ने लड़ाई के बाद दूसरों के मुंह से सुनी हुई वे भिन्न बातें कह सुनायीं जो उसे याद रह गयी थीं। नताशा मानो किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ते हुए बेर्ग के चेहरे को एकटक देख रही थी जिससे बेर्ग कुछ घबराहट अनुभव कर रहा था।

"कहना चाहिये कि रूसी सेना ने जो वीरता दिखाई, उसकी कल्पना करना कठिन है और उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, कम है!" बेर्ग ने नताशा की ओर घूमते और उसकी टकटकी बांधकर देखती नज़र के उत्तर में मुस्कराकर उसे प्रसन्न करने की इच्छा से कहा... "'रूस मास्को में नहीं, उसके सपूतों के दिलों में बसता है!' मैं ठीक कह रहा हूं न पापा?" बेर्ग ने कहा।

इसी समय चेहरे पर थकावट और अप्रसन्नता का भाव लिये काउंटेस दीवानख़ाने से यहां आईं। बेर्ग झटपट उछलकर खड़ा हुआ, उसने काउंटेस का हाथ चूमा, उनकी सेहत का हाल-चाल पूछा और सिर हिलाकर अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए उनकी बग़ल में ही खड़ा हो गया।

"हां, अम्मां, मैं सच कहता हूं कि हर रूसी के लिये यह मुश्किल और दुख-मुसीबत का वक़्त है। लेकिन इस तरह से परेशान होने की क्या बात है? अभी भी यहां से जाना सम्भव है..."

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि नौकर-चाकर क्या कर रहे हैं," काउंटेस ने पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "मुझे अभी-अभी बताया गया है कि कुछ भी तैयारी नहीं हुई। आख़िर किसी को तो इस काम को अपने हाथ में लेना चाहिये। ऐसे वक़्त मीत्या की कमी महसूस होती है। यों तो काम कभी सिरे नहीं चढ़ेगा।"

काउंट ने कुछ कहना चाहा, किन्तु सम्भवतः कुछ सोचकर चुप्पी लगा गये। वह अपनी कुर्सी से उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ चले।

इसी क्षण बेर्ग ने मानो नाक सिनकने के लिये जेब से रूमाल निकाला और उसमें गांठ बंधी देखकर उदासी तथा अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए कुछ सोचने लगा।

"पापा जी, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूं," वह बोला।

"क्या अनुरोध है?" काउंट ने रुकते हुए पूछा।

"अभी-अभी मैं युसूपोव के घर के क़रीब से अपनी बग्घी में आ रहा था," बेर्ग ने हंसते हुए कहना शुरू किया। "उनका कारिन्दा मेरी जान-पहचान का आदमी है, वह भागता हुआ बाहर आया और मुझसे पूछने लगा कि क्या मैं उसके मालिकों की कोई चीज़ ख़रीदना पसन्द करूंगा। मैं, योंही जिज्ञासावश अन्दर चला गया और वहां मैंने छोटी-सी अलमारी तथा एक ड्रेसिंग-टेबल देखी। प्यारी वेरा इसके लिये कितनी बेक़रार रही थी और इसके कारण हमारे बीच बहुत बार बहसें भी हुई थीं। (अलमारी तथा ड्रेसिंग-टेबल की चर्चा करते हुए बेर्ग अनजाने ही अपने घर की सुव्यवस्था के परिचायक लहजे में प्रसन्नतापूर्वक बात करने लगा था।) कितनी प्यारी चीज़ है वह! उसकी सभी दराज़ें खुलती हैं और जानते हैं, उसमें गुप्त ढंग का अंग्रेज़ी ताला भी लगा हुआ है! प्यारी वेरा बहुत अरसे से इन्हें पाना चाहती थी। मेरा बहुत मन हो रहा है कि इस अप्रत्याशित उपहार से मैं उसे आश्चर्यचकित कर दूं। मैंने आपके अहाते में किसानों की बहुत-सी घोड़ा-गाड़ियां खड़ी देखी हैं। कृपया एक मुझे दे दीजिये, मैं किसान को ख़ूब अच्छे पैसे दे दूंगा और..."

काउंट के माथे पर बल पड़ गये और उन्होंने अपने गले में खुर-खुरी-सी महसूस करते हुए गला साफ़ किया।

"काउंटेस से पूछ लीजिये, मैं यह तय नहीं करता हूं।"

"अगर इसमें कोई मुश्किल है तो कृपया नहीं कीजिये," बेर्ग ने कहा। "मैं तो सिर्फ़ प्यारी वेरा के लिये ही ऐसा करना चाहता था।"

"ओह, जहन्नुम में जाओ तुम सब, जहन्नुम में, जहन्नुम में!.." बुजुर्ग काउंट चिल्ला उठे। "दिमाग़ चकरा रहा है।" और वह कमरे से बाहर चले गये।

काउंटेस रोने लगीं।

"हां, हां, अम्मां, बड़ा मुश्किल का वक़्त है!" बेर्ग ने कहा।

नताशा भी पिता के साथ ही बाहर चली गयी और मानो बड़ी मुश्किल से कुछ समझ पाते हुए पहले तो उनके पीछे-पीछे गयी और फिर नीचे भाग गयी।

पोर्च में खड़ा हुआ पेत्या उन लोगों को हथियारों से लैस कर रहा था जो मास्को से इनके साथ जानेवाले थे। अहाते में पहले की तरह सामान से लदी घोड़ा-गाड़ियां खड़ी थीं। उनमें से दो के रस्से खोल दिये गये थे और एक पर अर्दली की सहायता से एक अफ़सर चढ़ रहा था।

"तुम्हें मालूम है कि क्या बात हो गयी है?" पेत्या ने नताशा से पूछा (नताशा समझ गयी कि पेत्या का आशय यह है कि उनके माता-पिता के बीच किस बात के लिये झगड़ा हुआ है)। नताशा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"बात यह हो गयी है कि पापा सारी घोड़ा-गाड़ियां घायलों के लिये दे देना चाहते थे," पेत्या ने कहा। "मुझे वसीलिच ने बताया है। मेरे ख़्याल में तो..."

"मेरे ख़्याल में तो," गुस्से से तमतमाया हुआ अपना चेहरा पेत्या की ओर करके नताशा अचानक लगभग चिल्ला उठी। "मेरे ख़्याल में तो यह ऐसी नीचता, ऐसा घटियापन, ऐसा... मैं नहीं जानती कि कैसे बयान करूं! क्या हम घटिया जर्मनों जैसे हैं?.." गले के ऐंठने-रुंधने से उसकी आवाज़ कांप उठी और इस भय से कि उसके क्रोध की शक्ति क्षीण न हो जाये, व्यर्थ ही न चली जाये, वह मुड़ी और बड़ी तेज़ी से सीढ़ियां चढ़ गयी। काउंटेस के पास बैठा हुआ बेर्ग एक रिश्तेदार के नाते उन्हें बड़े आदर से सान्त्वना दे रहा था। पाइप हाथ में लिये हुए काउंट तब कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे, जब नताशा क्रोध से विकृत चेहरा लिये तूफ़ान की तरह कमरे में आई और तेज़ क़दमों से मां के क़रीब गयी।

"यह नीचता है! यह घटियापन है!" वह चिल्ला उठी। "यह असम्भव है कि आपने ऐसा आदेश दिया हो।"

बेर्ग और काउंटेस हक्के-बक्के और सहमे-से नताशा की ओर देखते रह गये। काउंट खिड़की के क़रीब रुककर सुनने लगे।

"अम्मां, ऐसा नहीं होना चाहिये। देखिये तो अहाते में क्या

हो रहा है!" वह चीख़ उठी। "वे यहीं रह जायेंगे!.."

"तुम्हें क्या हुआ है? कौन यहीं रह जायेंगे? तुम क्या चाहती हो?"

"घायल यहीं रह जायेंगे, और कौन! ऐसा नहीं किया जा सकता, प्यारी अम्मां, यह ठीक नहीं है... नहीं, प्यारी अम्मां, यह बिल्कुल अनुचित है, कृपया मुझे माफ़ कर दीजिये, मेरी प्यारी अम्मां... क्या ज़रूरत है हमें यह सब सामान अपने साथ ले जाने की? आप ज़रा अहाते में नज़र तो डालिये, देखिये तो वहां क्या हो रहा है... प्यारी अम्मां!.. हम ऐसा नहीं कर सकते!.."

काउंट खिड़की के पास खड़े थे और इधर देखे बिना नताशा के शब्द सुन रहे थे। अचानक उन्होंने नाक से सूं-सूं की और अपना चेहरा खिड़की के साथ सटा लिया।

काउंटेस ने बेटी की तरफ़ देखा, अपने कारण लज्जित उसके चेहरे पर दृष्टि डाली, उसकी विह्वलता देखी और यह समझ गयीं कि किस वजह से पति अब उनसे आंखें चुरा रहे थे। उन्होंने किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सी होकर अपने इर्द-गिर्द नज़र घुमायी।

"ओह, तुम लोग जो भी चाहो, कर सकते हो! मैं क्या किसी को मना कर रही हूं!" एकदम पूरी तरह से अपने हथियार न डालते हुए उन्होंने कहा।

"अम्मां, प्यारी अम्मां, मुझे क्षमा कर दें!"

किन्तु काउंटेस ने बेटी को परे हटा दिया और काउंट के पास गयीं।

"मेरे प्यारे, आप जैसा ठीक समझते हैं, वैसा ही कीजिये... मैं तो यह सब नहीं जानती," काउंटेस ने दोषी की तरह अपनी नज़रें झुकाते हुए कहा।

"अब बच्चे, हमारे बच्चे ही हमें अक़्ल सिखाते हैं..." काउंट ने ख़ुशी के आंसू बहाते हुए कहा और पत्नी को बांहों में भर लिया। काउंटेस को पति के वक्ष में अपना लज्जित चेहरा छिपाने का मौक़ा पाकर राहत मिली।

"पापा जी, अम्मां जी! मैं सारी व्यवस्था कर सकती हूं? कर सकती हूं न?.." नताशा ने पूछा। "जो कुछ बहुत ज़रूरी है, उसे तो हम अवश्य अपने साथ ले लेंगे..." नताशा ने कहा।

काउंट ने सिर झुकाकर अनुमोदन किया और नताशा उसी तेज़ी से दौड़ती हुई, जिससे वह छू-पकड़ खेलते हुए दौड़ा करती थी, हॉल के प्रवेश-कक्ष और सीढ़ियों से अहाते में भाग गयी।

नौकर-चाकर नताशा के गिर्द जमा हो गये और उसके द्वारा दिये जानेवाले उस अजीब-से आदेश पर तब तक विश्वास नहीं कर पाये, जब तक कि अपनी पत्नी की ओर से ख़ुद काउंट ने इस आदेश की पुष्टि नहीं कर दी कि सारी घोड़ा-गाड़ियां घायलों को दे दी जायें और सन्दूक़ों को स्टोर-रूम में ले जाकर रख दिया जाये। इस आदेश को समझने के बाद नौकर-चाकर बड़ी ख़ुशी और बड़े जोश से इस नये काम में जुट गये। नौकरों-चाकरों को न केवल यह अजीब ही नहीं लग रहा था, बल्कि ऐसे लगता था कि इससे भिन्न कुछ हो ही नहीं सकता था। ठीक उसी तरह, जैसे इसके पन्द्रह मिनट पहले किसी को यह अजीब नहीं लग रहा था कि घायलों को छोड़ा जा रहा है और चीज़ें ले जायी जा रही हैं।

घर के सभी लोग मानो इस चीज़ का हर्जाना भरते हुए कि उन्होंने कुछ पहले ही यह काम क्यों शुरू नहीं कर दिया था, अब बड़े ज़ोर-शोर से घायलों को घोड़ा-गाड़ियों में जगह देने के काम में हाथ बंटाने लगे। सभी कमरों से घायल धीरे-धीरे बाहर आये और पीले, ख़ुशी से खिले चेहरों के साथ घोड़ा-गाड़ियों के गिर्द जमा हो गये। अड़ोस-पड़ोस के घरों में भी यह ख़बर पहुंच गयी कि घायलों को घोड़ा-गाड़ियों में जगह दी जा रही है और वहां से भी रोस्तोवों के अहाते में घायल आने लगे। अनेक घायलों ने यह विनती की कि सामान न उतारा जाये और उन्हें उसके ऊपर ही बिठा दिया जाये। लेकिन सामान उतारने का शुरू किया जा चुका काम अब रुक नहीं सकता था। अब इससे क्या फ़र्क़ पड़ता था कि सारा सामान छोड़ा जाता है या आधा। चीनी के बर्तनों, कांसे-तांबे की चीज़ों, चित्रों और दर्पणों से भरे हुए बक्से, जिन्हें इतने यत्न से पिछली रात को पैक किया गया था, अब अहाते में पड़े थे और सभी लोग घायलों को अधिकाधिक घोड़ा-गाड़ियां देने की सम्भावना ढूंढ़ते थे और इसमें सफल भी हो जाते थे।

"चार घायलों को और जगह दी जा सकती है," कारिन्दे ने कहा। "मैं अपनी घोड़ा-गाड़ी देने को तैयार हूं, वरना इनका क्या होगा?"

काउंट ने सिर झुकाकर अनुमोदन किया और नताशा उसी तेज़ी से दौड़ती हुई, जिससे वह छू-पकड़ खेलते हुए दौड़ा करती थी, हॉल के प्रवेश-कक्ष और सीढ़ियों से अहाते में भाग गयी।

नौकर-चाकर नताशा के गिर्द जमा हो गये और उसके द्वारा दिये जानेवाले उस अजीब-से आदेश पर तब तक विश्वास नहीं कर पाये, जब तक कि अपनी पत्नी की ओर से ख़ुद काउंट ने इस आदेश की पुष्टि नहीं कर दी कि सारी घोड़ा-गाड़ियां घायलों को दे दी जायें और सन्दूक़ों को स्टोर-रूम में ले जाकर रख दिया जाये। इस आदेश को समझने के बाद नौकर-चाकर बड़ी ख़ुशी और बड़े जोश से इस नये काम में जुट गये। नौकरों-चाकरों को न केवल यह अजीब ही नहीं लग रहा था, बल्कि ऐसे लगता था कि इससे भिन्न कुछ हो ही नहीं सकता था। ठीक उसी तरह, जैसे इसके पन्द्रह मिनट पहले किसी को यह अजीब नहीं लग रहा था कि घायलों को छोड़ा जा रहा है और चीज़ें ले जायी जा रही हैं।

घर के सभी लोग मानो इस चीज़ का हर्जाना भरते हुए कि उन्होंने कुछ पहले ही यह काम क्यों शुरू नहीं कर दिया था, अब बड़े ज़ोर-शोर से घायलों को घोड़ा-गाड़ियों में जगह देने के काम में हाथ बंटाने लगे। सभी कमरों से घायल धीरे-धीरे बाहर आये और पीले, ख़ुशी से खिले चेहरों के साथ घोड़ा-गाड़ियों के गिर्द जमा हो गये। अड़ोस-पड़ोस के घरों में भी यह ख़बर पहुंच गयी कि घायलों को घोड़ा-गाड़ियों में जगह दी जा रही है और वहां से भी रोस्तोवों के अहाते में घायल आने लगे। अनेक घायलों ने यह विनती की कि सामान न उतारा जाये और उन्हें उसके ऊपर ही बिठा दिया जाये। लेकिन सामान उतारने का शुरू किया जा चुका काम अब रुक नहीं सकता था। अब इससे क्या फ़र्क़ पड़ता था कि सारा सामान छोड़ा जाता है या आधा। चीनी के बर्तनों, कांसे-तांबे की चीज़ों, चित्रों और दर्पणों से भरे हुए बक्से, जिन्हें इतने यत्न से पिछली रात को पैक किया गया था, अब अहाते में पड़े थे और सभी लोग घायलों को अधिकाधिक घोड़ा-गाड़ियां देने की सम्भावना ढूंढ़ते थे और इसमें सफल भी हो जाते थे।

"चार घायलों को और जगह दी जा सकती है," कारिन्दे ने कहा। "मैं अपनी घोड़ा-गाड़ी देने को तैयार हूं, वरना इनका क्या होगा?"

"मेरे कपड़ों की अलमारीवाली गाड़ी भी दे दीजिये," काउंटेस बोलीं। "दुन्याशा मेरे साथ बग्घी में बैठ जायेगी।"

कपड़ों की अलमारीवाली गाड़ी भी दे दी गयी और उसे उन घायलों को लाने के लिये भेज दिया गया जो रोस्तोवों के घर से दो घरों की दूरी पर ठहरे हुए थे। नौकरों-चाकरों समेत घर के सभी लोग बहुत ख़ुश थे। नताशा तो परमोल्लास के ऐसे रंग में थी जैसा उसने बहुत समय से अनुभव नहीं किया था।

"इसे किस चीज़ के साथ बांधा जाये?" बग्घी के पीछे संकरे पायदान पर एक सन्दूक़ को टिकाते हुए नौकर कह रहे थे, "एक घोड़ा-गाड़ी तो ख़ाली रखनी ही चाहिये।"

"इसमें क्या है?" नताशा ने पूछा।

"काउंट की किताबें।"

"इसे रहने दीजिये। वसीलिच इसे सम्भाल लेगा। इनकी ज़रूरत नहीं है।"

फ़िटन पूरी तरह लोगों से भरी हुई थीं ; यह शंका पैदा हो रही थी कि पेत्या कहां बैठेगा।

"कोचवान के साथ उसकी सीट पर। ठीक है न पेत्या?" नताशा ने पुकारकर कहा।

सोन्या भी लगातार दौड़-धूप कर रही थी। किन्तु उसकी दौड़-धूप का उद्देश्य नताशा से उलट था। वह पीछे छोड़ी जानेवाली चीज़ों को समेट रही थी, काउंटेस की इच्छा के अनुसार उनकी सूची बना रही थी और अधिक से अधिक चीज़ें अपने साथ ले जाने की कोशिश में थी।

१७

दिन के दो बजने के पहले सामान से पूरी तरह लदी-लदायी और सफ़र के लिये तैयार रोस्तोवों की चार बग्घियां घर के दरवाज़े के सामने खड़ी थीं। घायलों को ले जानेवाली घोड़ा-गाड़ियां एक-एक करके अहाते से बाहर निकलती जा रही थीं।

वह बग्घी, जिसमें प्रिंस अन्द्रेई को ले जाया जा रहा था, जब पोर्च के पास से गुज़री तो सोन्या का ध्यान उसकी तरफ़ चला गया। वह उस वक़्त नौकरानी के साथ घर के दरवाज़े के सामने खड़ी काउंटेस की ऊंची छतवाली बहुत बड़ी बग्घी में काउंटेस के बैठने के लिये सीट को ठीक-ठाक कर रही थी।

"यह किसकी बग्घी है?" सोन्या ने काउंटेस की बड़ी बग्घी की खिड़की से सिर बाहर निकालते हुए पूछा।

"क्या आपको मालूम नहीं, छोटी मालकिन?" नौकरानी ने जवाब दिया। "इसमें घायल प्रिंस है – उसने हमारे यहां रात बितायी है और हमारे साथ ही जा रहा है।"

"लेकिन यह कौन है? क्या कुलनाम है इसका?"

"वही है, जो कभी हमारा दामाद बननेवाला था, प्रिंस बोल्कोन्स्की!" नौकरानी ने आह भरते हुए जवाब दिया। "सुनने में आया है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं।"

सोन्या झटपट बग्घी से बाहर कूदी और भागती हुई काउंटेस के पास गयी। यात्रा की पोशाक में, शॉल लपेटे और टोपी पहने थकी-थकी-सी काउंटेस ड्राइंगरूम में इधर-उधर आती-जाती हुई घर के बाक़ी सभी लोगों के आने का इन्तज़ार कर रही थीं ताकि रवाना होने के पहले दरवाज़ा बन्द करके सभी बैठ जायें और प्रार्थना कर लें।* नताशा यहां नहीं थी।

"अम्मां," सोन्या ने कहा, "प्रिंस अन्द्रेई यहां है, बहुत घायल है, उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं। वह भी हम लोगों के साथ जा रहा है।"

काउंटेस ने घबराकर आंखें खोलीं और सोन्या का हाथ अपने हाथ में लेकर इधर-उधर नज़र दौड़ाई।

"नताशा?" वह धीरे से बोलीं।

पहले क्षण में इस समाचार का इन दोनों के लिये केवल एक ही महत्त्व था। ये अपनी नताशा को जानती थीं और इस ख़बर से नताशा के दिल पर क्या गुज़रेगी, इसी भय ने उस व्यक्ति के प्रति,

---

* रूसी प्रथा के अनुसार दूर जाने से पहले रूसी लोग कमरे का दरवाज़ा बन्द करके थोड़ी देर तक चुपचाप बैठे रहते हैं। – अनु०

जिसे ये दोनों चाहती थीं, उनकी सहानुभूति की हर भावना को दबा दिया।

"नताशा को अभी तक यह मालूम नहीं है, लेकिन वह हमारे साथ जा रहा है," सोन्या ने बताया।

"तुम कहती हो कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं?"

सोन्या ने सिर झुकाकर हामी भरी।

काउंटेस ने सोन्या को गले लगाया और रो पड़ीं।

"भगवान के रंग निराले हैं!" काउंटेस ने यह अनुभव करते हुए सोचा कि अब जो कुछ भी हो रहा था, उसमें भगवान के उस सर्व-शक्तिमान हाथ की अनुभूति होने लगी थी जो अभी तक लोगों की दृष्टि से अगोचर रहा था।

"तो अम्मां, सारी तैयारी हो गयी। आप दोनों क्या बात कर रही हैं?.." खिले चेहरे के साथ नताशा ने भागकर ड्राइंगरूम में आते हुए पूछा।

"कोई बात नहीं कर रहीं," काउंटेस ने जवाब दिया। "सारी तैयारी हो गयी तो चलना चाहिये।" और काउंटेस अपने परेशान चेहरे को छिपाने के लिये अपने हैंडबैग पर झुक गयीं। सोन्या ने नताशा का आलिंगन किया और उसे चूमा।

नताशा ने प्रश्नात्मक दृष्टि से सोन्या की तरफ़ देखा।

"क्या मामला है? क्या कोई ख़ास बात हो गयी?"

"नहीं तो... कोई भी बात नहीं..."

"क्या मेरे लिये कोई बहुत ही बुरी बात?.. क्या हुआ है?" अनुभूतिशील नताशा ने प्रश्न किया।

सोन्या ने उसांस ली और कोई जवाब नहीं दिया। इसी समय काउंट, पेत्या, मदाम शोस्स, मान्ना कुज़्मीनिश्ना और वसीलिच – ये सभी ड्राइंगरूम में आ गये, दरवाज़ा बन्द करके सभी चुपचाप बैठ गये और एक दूसरे की तरफ़ देखे बिना कुछ क्षणों तक ऐसे ही बैठे रहे।

सबसे पहले काउंट उठे और गहरी सांस लेकर उन्होंने देव-प्रतिमा के सामने खड़े होकर अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। बाक़ी सबने भी ऐसा ही किया। इसके बाद काउंट मान्ना कुज़्मीनिश्ना और वसीलिच को गले लगाने लगे जो मास्को में ही रुकनेवाले थे। जब ये

दोनों काउंट का हाथ अपने हाथ में लेने की कोशिश कर रहे थे, उनका कन्धा चूम रहे थे तो काउंट स्नेह तथा सान्त्वना के कुछ अस्पष्ट शब्द कहते हुए इनकी पीठें थपथपाते रहे। काउंटेस छोटे-से प्रार्थना-कक्ष में चली गयीं और सोन्या ने उन्हें दीवार पर जहां-तहां लटकी रह गयी देव-प्रतिमाओं के सामने (सबसे क़ीमती और पारिवारिक परम्परा का अभिन्न अंग मानी जानेवाली देव-प्रतिमाओं को ये लोग अपने साथ ले जा रहे थे) घुटने टेककर प्रार्थना करते पाया।

पोर्च और अहाते में वे लोग, जो रोस्तोवों के साथ जा रहे थे और जिन्हें पेत्या ने ख़ंजरों तथा तलवारों से लैस किया था, जो गम-बूटों में अपने पतलूनों के पायंचे खोंसे थे तथा कमर पर पेटियां और कमरबन्द कसे थे, मास्को में ही रह जानेवाले लोगों से विदा ले रहे थे।

जैसाकि यात्रा के लिये रवाना होने के पहले हमेशा होता है, बहुत-सी चीज़ें याद नहीं रही थीं या ढंग से पैक नहीं की गयी थीं। दो सईस काउंटेस को बग्घी में बैठाने के लिये सहारा देने को बड़ी बग्घी के दोनों ओर के दरवाज़ों के पास, जो खोल दिये गये थे, बहुत देर से खड़े थे, जबकि नौकरानियां गद्दियां और बंडल लेकर घोड़ा-गाड़ियां, बग्घी तथा फ़िटन की ओर तथा वापस दौड़ रही थीं।

"ये हमेशा ही कुछ न कुछ भूल जाती हैं!" काउंटेस ने कहा। "तुम तो जानती ही हो कि मैं ऐसे नहीं बैठ सकती।" और दुन्याशा कसकर मुंह बन्द किये तथा कोई जवाब दिये बिना, मगर चेहरे पर भर्त्सना का भाव लिये हुए काउंटेस के बैठने की जगह को दूसरे ढंग से व्यवस्थित करने के लिये लपककर बग्घी में गयी।

"ओह, ये नौकर, ये नौकर!" काउंट ने अफ़सोस से सिर हिलाते हुए कहा।

अपनी सीट पर बैठा हुआ बूढ़ा कोचवान येफ़ीम (काउंटेस सिर्फ़ उसी पर भरोसा करती थीं) पीछे मुड़कर यह तक नहीं देख रहा था कि वहां क्या हो रहा है। अपने तीस साल के अनुभव से वह जानता था कि चलने के पहले जल्द ही उससे यह नहीं कहा जायेगा – "घोड़े बढ़ाओ, भगवान भला करें!" और यह कहने के बाद भी उसे दो बार रोका जायेगा, किसी को भूली हुई चीज़ें लाने के लिये भेजा जायेगा, इसके बाद भी एक बार फिर रोका जायेगा और काउंटेस

ख़ुद खिड़की से सिर बाहर निकालकर उससे कहेंगी कि प्रभु ईसा के नाम पर ढालों से नीचे जाते वक़्त वह बहुत सावधानी से काम ले। वह यह जानता था और इसलिये अपने घोड़ों की तुलना में (ख़ास तौर पर बायीं ओर के लाखी रंगवाले 'बाज़' नाम के घोड़े की तुलना में जो पांव पटक रहा था और दहाना चबा रहा था) कहीं अधिक धीरज से इस सब का इन्तज़ार कर रहा था। आख़िर सब लोग बग्घी में बैठ गये; पायदानों को उठाकर बग्घी में रख दिया गया, दरवाज़े को फटाक से बन्द कर दिया गया, सफ़री मंजूशा लाने के लिये कह दिया गया, काउंटेस ने खिड़की से सिर बाहर निकाला और वे शब्द कहे जो उन्हें कहने थे। तब येफ़ीम ने इतमीनान से टोप उतारा और अपने ऊपर सलीब का निशान बनाने लगा। अग्रिम घोड़े पर बैठे सवार और बाक़ी लोगों ने भी ऐसा ही किया।

"भगवान भला करें!" येफ़ीम ने टोप सिर पर रखते हुए कहा। "तो घोड़ा बढ़ाओ!" अग्रिम घोड़े पर सवार व्यक्ति ने चाबुक सटकारा। दायीं ओर के घोड़े ने जोत पर ज़ोर डाला, ऊंचे स्प्रिंग झनझनाये और बग्घी का बॉडी दायें-बायें हिला-डुला। नौकर तो उछलकर चलती बग्घी के बाक्स पर चढ़ गया। अहाते से बाहर जाते वक़्त बग्घी ने ऊबड़-खाबड़ पत्थरों पर हिचकोले खाये, दूसरी घोड़ा-गाड़ियां भी ऐसे ही हिचकोले खाती हुई पीछे-पीछे बढ़ीं और ये सब एक क़तार में सड़क पर चल दीं। सामनेवाले गिरजाघर के पास से गुज़रते हुए बग्घियों, घोड़ा-गाड़ियों और फ़िटन में बैठे सभी लोगों ने अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया। मास्को में ही रह जानेवाले घर के लोग घोड़ा-गाड़ियों के दोनों ओर चलते हुए उन्हें विदा कर रहे थे।

नताशा को बहुत कम ही कभी ख़ुशी की ऐसी अनुभूति हुई थी, जैसी वह इस समय काउंटेस की बग़ल में बैठी और पीछे छूटते तथा विह्वल-चिन्तित मास्को की दीवारों के क़रीब से धीरे-धीरे आगे बढ़ते और उनपर नज़र डालते हुए अनुभव कर रही थी। वह कभी-कभी बग्घी की खिड़की से सिर बाहर निकालती, अपने पीछे और फिर आगे-आगे जा रही घायलों की घोड़ा-गाड़ियों की लम्बी क़तार पर नज़र डालती। लगभग सभी से आगे उसे प्रिंस अन्द्रेई की बग्घी की झलक मिलती जिसकी छत ऊपर उठी हुई थी। उसे यह मालूम नहीं था कि उसमें कौन है, मगर घोड़ा-गाड़ियों की इस क़तार पर

नज़र डालते हुए हर बार ही उसकी नज़रें इस बग्घी को ढूंढ़ लेतीं। वह जानती थी कि वही सबसे आगे जा रही है।

कूदरिनो में निकीत्स्काया, प्रेस्न्या और पोदनोवीन्स्की सड़कों से रोस्तोवों की घोड़ा-गाड़ियों और बग्घियों जैसी अनेक अन्य क़तारें आ मिलीं तथा सादोवाया सड़क पर तो बग्घियां और घोड़ा-गाड़ियां दो क़तारों में चलने लगीं।

सूख़ारेवा की मीनार के गिर्द घूमते हुए नताशा, जो गाड़ियों में या पैदल आते-जाते लोगों को जिज्ञासा से और जल्दी-जल्दी देख रही थी, अचानक ख़ुशी और हैरानी से चिल्ला उठी:

"हे भगवान! अम्मां, सोन्या, उधर देखिये, यह तो वही है!"

"कौन? कौन?"

"देखिये तो, क़सम भगवान की, बेज़ूखोव है!" बग्घी की खिड़की से अपना सिर बाहर निकालते और कोचवानों का लम्बा कोट पहने एक लम्बे तथा मोटे आदमी की तरफ़ देखते हुए वह कह रही थी। इस व्यक्ति की चाल-ढाल और अन्दाज़ यह ज़ाहिर कर रहा था कि वह वास्तव में कुलीन है। वह गाढ़े का ओवरकोट पहने दाढ़ी के बिना पीले चेहरेवाले एक नाटे-से बूढ़े के साथ सूख़ारेवा की मीनार की मेहराब के पास आया।

"क़सम भगवान की, कोचवानों का कोट पहने यह तो बेज़ूख़ोव ही किसी छोकरे जैसे बूढ़े के साथ है! क़सम भगवान की," नताशा कह रही थी, "देखिये, देखिये!"

"अरी नहीं, यह वह नहीं है। यह कैसे हो सकता है।"

"अम्मां," नताशा चिल्ला उठी, "अगर मेरी बात झूठ निकले तो मैं अपना सिर कटवाने को तैयार हूं, यह तो वही है! मैं आपको यक़ीन दिलाती हूं। रोको बग्घी! रोको!" उसने चिल्लाकर कोचवान से कहा; मगर कोचवान बग्घी को रोक नहीं सकता था, क्योंकि मेश्चान्स्काया सड़क से और घोड़ा-गाड़ियां तथा बग्घियां आ गयी थीं तथा उनके कोचवान चिल्लाकर रोस्तोवों से कह रहे थे कि बग्घी को आगे बढ़ाते जायें और यातायात को नहीं रोकें।

पहले की तुलना में बेशक अधिक दूरी पर रोस्तोव-परिवार के सभी लोगों ने वास्तव में ही अब प्येर को या असाधारण रूप से उससे मिलते-जुलते एक व्यक्ति को सड़क पर जाते देखा। वह कोचवानों

का लम्बा कोट पहने था, उसका सिर झुका हुआ था, उसकी मुख-मुद्रा बड़ी गम्भीर थी और दाढ़ीहीन का एक नाटा-सा बूढ़ा जो नौकर जैसा लगता था, उसके साथ था। इस अजीब से बूढ़े का बग्घी की खिड़की में से अपनी ओर देख रहे चेहरे की तरफ़ ध्यान गया और उसने आदर-पूर्वक प्येर की कोहनी छूते तथा बग्घी की ओर इशारा करते हुए उससे कुछ कहा। चूंकि प्येर शायद अपने ख़्यालों में बेहद खोया हुआ था, इसलिये देर तक अपने साथी की बात नहीं समझ पाया। आख़िर जब अपने साथी की बात समझकर उसने बग्घी की खिड़की की तरफ़ देखा और नताशा को पहचाना तो मन की प्रथम, स्वाभाविक प्रति-क्रिया का अनुसरण करते हुए वह उसी क्षण तेज़ी से बग्घी की तरफ़ बढ़ने लगा। किन्तु दसेक क़दम चलने और सम्भवतः कुछ याद आ जाने पर वह रुक गया।

बग्घी की खिड़की से बाहर निकले नताशा के चेहरे पर चंचलता और स्नेह की चमक थी।

"प्योत्र किरील्लिच! इधर आइये तो! हमने तो आपको पहचान ही लिया! यह तो कमाल ही हो गया!" प्येर की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाते हुए वह चिल्लायी। "यह सब क्या है? किसलिये आपने ऐसा हुलिया बना रखा। है?"

प्येर ने अपनी ओर बढ़ा हुआ नताशा का हाथ अपने हाथ में लेकर बग्घी के साथ-साथ चलते हुए (क्योंकि बग्घी रुक नहीं सकती थी) बड़े अटपटे ढंग से उसे चूमा।

"यह क्या हुआ है आपको, काउंट?" काउंटेस ने आश्चर्य और सहानुभूति के स्वर में पूछा।

"क्या? क्या हुआ है? ऐसा क्यों है? मुझसे नहीं पूछिये," प्येर ने जवाब दिया और मुड़कर नताशा की तरफ़ देखा जिसकी चमकती और ख़ुशी भरी नज़र (उसकी ओर देखे बिना ही वह यह अनुभव कर रहा था) उसपर अपना जादू-सा कर रही थी।

"तो क्या आपका मास्को में ही रुकने का इरादा है?"

प्येर कुछ क्षण चुप रहा।

"मास्को में?" उसने प्रश्नात्मक ढंग से कहा। "हां, मास्को में ही। नमस्ते।"

"काश, मैं पुरुष होती तो ज़रूर आपके साथ यहीं रह जाती।

ओह, कितना दिलचस्प है यह!" नताशा ने कहा। "अम्मां, मुझे यहीं रहने की इजाज़त दे दीजिये।" प्येर ने बेख़्याली से नताशा की तरफ़ देखा और कुछ कहना चाहा, लेकिन काउंटेस बीच में ही बोल पड़ीं:

"हमने सुना है कि आप युद्ध-क्षेत्र में गये थे?"

"हां, गया था," प्येर ने उत्तर दिया। "कल फिर लड़ाई होगी..." उसने कहना शुरू किया, मगर नताशा ने उसे टोक दिया:

"काउंट, आपको हुआ क्या है? आप तो बिल्कुल बदले-बदले-से लग रहे हैं..."

"ओह, नहीं पूछिये, मुझसे कुछ नहीं पूछिये, मैं तो ख़ुद भी कुछ नहीं जानता। कल... मगर नहीं! तो नमस्ते, नमस्ते," वह कह उठा, "बड़ा भयानक वक़्त है!" और बग्घी से पीछे हटते हुए वह पटरी पर चला गया।

नताशा देर तक बग्घी की खिड़की से बाहर झांकती हुई उसकी ओर स्नेहपूर्ण, कुछ-कुछ हास्यास्पद और ख़ुशी भरी मुस्कान बिखराती रही।

१८

अपने घर से ग़ायब होने के बाद पिछले दो दिनों से प्येर दिवंगत बाज़्देयेव के ख़ाली निवास-स्थान पर रह रहा था। यह इस तरह से हुआ।

अपने मास्को लौटने और काउंट रस्तोपचिन से भेंट होने के अगले दिन जब उसकी आंख खुली तो प्येर बहुत देर तक यह नहीं समझ पाया कि वह कहां है और उससे किस चीज़ की अपेक्षा की जा रही है। स्वागत-कक्ष में उससे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे अन्य लोगों के साथ जब काउंटेस एलेन का पत्र लानेवाले एक फ़्रांसीसी का भी उल्लेख किया गया तो अचानक उसपर घबराहट और निराशा का वह भाव हावी हो गया जिसका वह शिकार हो जाया करता था। सहसा उसे लगा कि अब सब कुछ समाप्त हो गया, पूरी तरह से गड़बड़-घुटाला और

सभी कुछ नष्ट हो गया, कि न कोई दोषी है और न निर्दोष, कि अब आगे किसी चीज़ की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती और इस स्थिति से मुक्ति पाने का कोई मार्ग नहीं। अस्वाभाविक ढंग से मुस्कराते और कुछ बड़बड़ाते हुए वह कभी तो एक असहाय व्यक्ति की मुद्रा में सोफ़े पर बैठ जाता, कभी उठकर दरवाज़े के पास जाता, सूराख़ में से स्वागत-कक्ष में झांकता और कभी हाथों को झटकता हुआ वापस आता तथा पुस्तक लेकर पढ़ने लगता। गृह-प्रबन्धक दूसरी बार उसे यह सूचित करने के लिये आया कि काउंटेस एलेन का पत्र लेकर आनेवाला फ़्रांसीसी उससे, बेशक एक मिनट को ही, मिलने को बहुत उत्सुक है और यह कि बाज़्देयेव की विधवा ने अनुरोध-सन्देश भिजवाया है कि वह उनके घर जाकर उसके पति की पुस्तकें ले ले, क्योंकि वह स्वयं तो गांव चली गयी है।

"हां, हां, अभी, ज़रा रुको ... या फिर नहीं ... नहीं ... जाकर कह दो कि मैं अभी आ रहा हूं," प्येर ने गृह-प्रबन्धक से कहा।

गृह-प्रबन्धक के जाते ही प्येर ने मेज़ पर रखा हुआ अपना टोप उठाया और कमरे के पिछले दरवाज़े से बाहर चला गया। दालान में कोई नहीं था। लम्बा दालान पार करके वह ज़ीने तक पहुंचा और नाक-भौंह सिकोड़ते तथा दोनों हाथों से माथे को मलते हुए उसके पहले चबूतरे तक नीचे उतर गया। मुख्य द्वार पर दरबान खड़ा था। ज़ीने के जिस चबूतरे तक प्येर उतर गया था, वहां से एक दूसरा ज़ीना पिछले द्वार की ओर जाता था। इसी ज़ीने से उतरकर प्येर अहाते में पहुंच गया। उसपर किसी की भी नज़र नहीं पड़ी थी। किन्तु जैसे ही वह फाटक पर पहुंचा, वैसे ही बग्घियों के क़रीब खड़े कोचवानों और चौकीदार ने उसे देख लिया और मालिक के सामने अपनी टोपियां उतार लीं। यह अनुभव करते हुए कि इन लोगों की नज़रें उसपर टिकी हैं, प्येर ने शुतुरमुर्ग़ जैसा व्यवहार किया जो इसलिये झाड़ियों में अपना सिर छिपा लेता है कि दिखाई न दे। प्येर ने भी इसी तरह अपना सिर झुका लिया और चाल तेज़ करके सड़क पर बढ़ गया।

इस सुबह को प्येर के सामने जितने भी काम-काज थे, उनमें बाज़्देयेव की किताबों और काग़ज़ों को छांटना उसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुआ।

वह अपने सामने जानेवाली किराये की पहली ही घोड़ा-गाड़ी

में सवार हो गया और उसने कोचवान से पत्रिआर्शिये तालाबों की ओर चलने का आदेश दिया जहां बाज़्देयेव की विधवा का घर था।

मास्को से बाहर जा रही घोड़ा-गाड़ियों की ओर लगातार घूम-घूमकर देखते और अपने भारी-भरकम शरीर को सम्भालते हुए कि कहीं वह पुरानी और टुटियल टमटम से नीचे न गिर जाये, प्येर स्कूल से भाग आनेवाले छोकरे जैसी ख़ुशी महसूस कर रहा था और इसी मूड में वह कोचवान से बातें करने लगा।

कोचवान ने उसे बताया कि आज क्रेमलिन में लोगों को हथियार बांटे जा रहे हैं, कि अगले दिन सभी को त्री गोरी के फाटक से आगे भेज दिया जायेगा और वहां बड़ी लड़ाई होगी।

पत्रिआर्शिये तालाबों पर पहुंचकर प्येर ने बाज़्देयेव का घर ढूंढ़ लिया जहां वह काफ़ी अरसे से नहीं आया था। उसने बगीचे के छोटे-से फाटक पर जाकर दस्तक दी जिसे सुनकर दाढ़ी के बिना पीले चेहरे-वाला गेरासिम नाम का वही नाटा-सा बूढ़ा सामने आया जिसे प्येर ने पांच साल पहले बाज़्देयेव के साथ तोर्जोक में देखा था।

"घर पर हैं?" प्येर न पूछा।

"हुज़ूर, इस वक़्त की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए मेरी मालकिन बच्चों को साथ लेकर तोर्जोक के क़रीब एक गांव में चली गयी हैं।"

"फिर भी मैं भीतर आऊंगा, मुझे किताबें छांटनी हैं," प्येर ने कहा।

"कृपया पधारिये। मेरे दिवंगत मालिक – भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें! – के भाई मकार अलेक्सेयेविच यहीं पर हैं, मगर जैसाकि आपको मालूम है, उनकी सेहत अच्छी नहीं है," बूढ़े नौकर ने कहा।

प्येर को मालूम था कि मकार अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव का थोड़ा पागल और पियक्कड़ भाई था।

"हां, हां, मैं जानता हूं। चलो भीतर चलें..." प्येर ने कहा और घर में दाख़िल हुआ। ड्रेसिंग-गाउन और नंगे पांवों में रबड़ के जूते पहने, लाल नाक तथा लम्बे क़द का एक गंजा आदमी प्रवेश-कक्ष में खड़ा था। प्येर को देखकर वह झल्लाते हुए कुछ बड़बड़ाया और दालान में चला गया।

"ये बड़े बुद्धिमान व्यक्ति थे, किन्तु, जैसाकि अब आप देख रहे हैं, इनकी हालत कुछ अच्छी नहीं," गेरासिम ने कहा। "अध्ययन-कक्ष में चलेंगे?" प्येर ने सिर झुकाकर हामी भरी। "मालिक के देहान्त के बाद इस कमरे को उसी तरह से रहने दिया गया है, जैसे वह उस समय था। मालकिन ने कहा था कि अगर आपका कोई आदमी आये तो उसे पुस्तकें दे दी जायें।"

प्येर उस उदास-से अध्ययन-कक्ष में दाख़िल हुआ जिसमें वह अपने उपकारी बाज़्देयेव के ज़माने में बहुत धड़कते दिल से प्रवेश किया करता था। यह अध्ययन-कक्ष, जिसमें अब धूल जमी हुई थी और बाज़्देयेव के देहान्त के बाद जो बन्द रहा था, और भी ज़्यादा उदास-सा लग रहा था।

गेरासिम ने एक शटर खोल दिया और पंजों के बल कमरे से बाहर चला गया। प्येर ने कमरे में चक्कर लगाया, उस अलमारी के क़रीब गया जिसमें पाण्डुलिपियां रखी थीं और उनमें से वह एक निकाल ली जो कभी तो इस संगठन की पावनतम पाण्डुलिपि मानी जाती थी। इसमें स्कॉटलैंड के फ़्री मेसन संगठन की कुछ मूल धारायें थीं और उनपर बाज़्देयेव की कुछ टिप्पणियां तथा टीकायें लिखी हुई थीं। प्येर धूल से ढकी मेज़ के सामने बैठ गया, उसने पाण्डुलिपियों को अपने सामने रख लिया। वह तो कभी उन्हें खोलता और कभी बन्द कर देता। आख़िर उसने उन्हें अपने से दूर हटा दिया और हाथ पर सिर टिकाकर ख़्यालों में डूब गया।

गेरासिम ने कई बार बड़ी सावधानी से अध्ययन-कक्ष में झांका और यह देखा कि प्येर उसी मुद्रा में बैठा है। दो घण्टे से अधिक समय बीत गया। गेरासिम ने प्येर का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिये दरवाज़े पर कुछ आवाज़ की, मगर प्येर ने कुछ भी नहीं सुना।

"हुज़ूर, टमटम को जाने दिया जाये?"

"अरे, हां," प्येर ने चौंकते और जल्दी से उठते हुए कहा। "सुनो," गेरासिम के कोट का बटन पकड़ते और इस बूढ़े आदमी पर ऊपर से नीचे की ओर चमकती, नम तथा उल्लासपूर्ण दृष्टि डालते हुए वह बोला। "सुनो, तुम्हें यह मालूम है कि कल लड़ाई होगी? .."

"सुनने में तो ऐसा आया है," गेरासिम ने उत्तर दिया।

"मैं तुमसे यह अनुरोध करता हूं कि तुम किसी को भी यह नहीं बताना कि मैं कौन हूं। इसके अलावा तुम वह काम करो जो मैं तुमसे करने को कहता हूं..."

"जो हुक्म," गोरासिम ने जवाब दिया। "भोजन का प्रबन्ध करूं?"

"नहीं, मुझे किसी दूसरी ही चीज़ की ज़रूरत है। मुझे किसानी पोशाक और एक पिस्तौल चाहिये," प्येर ने अचानक शर्म से लाल होते हुए कहा।

"जो हुक्म, हुज़ूर," गेरासिम ने कुछ सोचने के बाद उत्तर दिया।

प्येर ने बाक़ी सारा दिन अपने उपकारी बाज़्देयेव के अध्ययन-कक्ष में ही एक कोने से दूसरे कोने तक बेचैनी से चक्कर लगाते और जैसाकि गेरासिम को सुनायी देता रहा, अपने आपसे बातें करते ही बिताया। प्येर अपने लिये यहीं बिछाये गये बिस्तर पर रात को सोया।

एक नौकर की आदत के मुताबिक़, जिसने अपने ज़माने में बहुत-सी अजीब चीज़ें देखी-जानी थीं, गेरासिम को प्येर के इस घर में डेरा लगा लेने से ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। उसे तो मानो ख़ुशी भी हुई कि वह किसी की टहल-सेवा कर सकता है। उसने तो अपने से भी यह प्रश्न किये बिना कि प्येर को किसान या कोचवान के कोट और टोपी की किसलिये ज़रूरत हो सकती है, उन्हें ला दिया और यह वादा किया कि अगले दिन पिस्तौल भी ला देगा। मकार अलेक्सेयेविच रबड़ के जूतों को फटफटाता हुआ इस शाम को दो बार दरवाज़े के क़रीब आकर रुका और ख़ुशामद भरी नज़र से प्येर की तरफ़ देखता रहा। किन्तु जैसे ही प्येर उसकी ओर नज़र डालता, वैसे ही वह लज्जित होता तथा झल्लाता हुआ अपने ड्रेसिंग-गाउन को अपने इर्द-गिर्द लपेटता और फ़ौरन यहां से खिसक जाता। प्येर जिस वक़्त गेरासिम द्वारा लाया और साफ़ किया गया कोचवान का कोट पहने उसके साथ सूख़ारेवा मीनार के क़रीब पिस्तौल ख़रीदने गया था, उसी समय उसकी रोस्तोवों से मुलाक़ात हुई थी।

१६

सितम्बर की रात को कुतूज़ोव का यह हुक्म जारी कर दिया गया कि रूसी सेनायें मास्को से गुज़रते हुए र्याज़ान मार्ग की ओर पीछे हट जायें।

पहली सेनायें रात के वक़्त रवाना हुईं। सेनायें बड़े इतमीनान से, धीरे-धीरे और व्यवस्थित ढंग से पीछे हटने लगीं। किन्तु पौ फटने और दोरोगोमीलोव्स्की पुल पर के क़रीब पहुंचने पर उन्हें अपने आगे, पुल के दूसरी ओर, पुल तथा गलियों-कूचों में रेल-पेल करते सैनिकों की भारी भीड़ दिखाई दी। उन्हें अपने पीछे भी सैनिकों के अन्तहीन दल-बादल उमड़ते नज़र आये। अकारण ही हड़बड़ी और घबराहट ने उन्हें दबोच लिया। सभी पुल की ओर, पुल पर, उतारे और नावों की तरफ़ भागने लगे। कुतूज़ोव ने अपने को गलियों के पिछ-वाड़े से मास्को के उस ओर पहुंचाने का आदेश दिया।

२ सितम्बर को सुबह के दस बजे दोरोगोमीलोव्स्की उपनगरीय विस्तार में केवल चंडावल की सेनायें ही रह गयीं। बाक़ी सारी फ़ौज मास्को के उस ओर तथा मास्को से आगे जा चुकी थी।

२ सितम्बर को इसी वक़्त यानी सुबह के दस बजे ही नेपोलियन पोक्लोन्नाया पहाड़ी पर अपनी सेनाओं के बीच खड़ा हुआ अपने सामने उभरनेवाले दृश्य को देख रहा था। २६ अगस्त से २ सितम्बर तक, बोरोदिनो की लड़ाई से शत्रु के मास्को में प्रवेश करने तक, इस चिन्ताजनक तथा अविस्मरणीय सप्ताह के सभी दिनों में पतझर का असाधारण तथा लोगों को सदा आश्चर्यचकित करनेवाला ऐसा मौसम बना रहा था, जब कम ऊंचा सूरज वसन्त से भी अधिक गर्मी देता है, जब निर्मल और पारदर्शी हवा में सभी कुछ ऐसे चमकता है कि आंखें चौंधिया जाती हैं, जब पतझर की महकती हवा में सांस लेते हुए फेफड़े मज़-बूत होते हैं और उनमें ताज़गी आती है, जब रातें गुनगुनी तक होती हैं और जब इन गुनगुनी, अन्धेरी रातों में आकाश से हमें लगातार चौंकाने तथा प्रसन्नता प्रदान करनेवाले सुनहरे सितारे टूटते रहते हैं।

२ सितम्बर को सुबह के दस बजे ऐसा ही प्यारा मौसम था। सुबह की चमक जादुई-सी थी। पोक्लोन्नाया पहाड़ी से मास्को अपनी नदी, बाग़-बगीचों और गिरजाघरों के साथ दूर-दूर तक फैला दिखाई

दे रहा था और सूरज की किरणों में अपने गुम्बजों को सितारों की तरह झिलमिलाते हुए अपनी एक अलग ही ज़िन्दगी बिताता प्रतीत होता था।

असाधारण वास्तुशिल्प के अनदेखे-अनजाने आकारोंवाले इस अजीब नगर को देखने पर नेपोलियन को ईर्ष्या और विह्वलतापूर्ण जिज्ञासा की कुछ वैसी ही अनुभूति हुई जैसी लोग उन आकारों को देखने पर अनुभव करते हैं जिनके अस्तित्व से वे अपरिचित और अनजान होते हैं। यह नगर स्पष्टतः अपना भरपूर जीवन जी रहा था। उन अनिश्चित लक्षणों के अनुसार, जिनके आधार पर किसी तरह की भूल किये बिना बहुत देर से भी जीवित शरीर को मृत शरीर से अलग पहचाना जा सकता है, नेपोलियन ने पोक्लोन्नाया पहाड़ी से नगर में जीवन के स्पन्दन को देखा और मानो इस बड़े तथा सुन्दर शरीर की सांस को अनुभव किया।

मास्को को देखते हुए हर रूसी यह महसूस करता है कि उसके सामने उसकी मां है, जबकि इसे देखने और मां के नाते इसके महत्त्व को न जाननेवाले हर विदेशी को इस नगर की स्त्रैण प्रकृति की अनुभूति होनी चाहिये और नेपोलियन ने इसे अनुभव किया।

"असंख्य गिरजोंवाला यह एशियाई मास्को नगर, उनका पावन मास्को नगर! आख़िर तो हमारे सामने है यह प्रसिद्ध नगर! अब वक़्त आ गया," नेपोलियन ने कहा और अपने घोड़े से नीचे उतरकर उसने अपने सामने इस मास्को का ख़ाका बिछाने का हुक्म दिया और दुभाषिये लेलोर्न द' इडेवील को अपने पास बुलवाया। "शत्रु द्वारा क़ब्ज़े में लिया गया नगर उस युवती के समान होता है जिसकी आबरू लुट गयी हो," वह सोच रहा था (स्मोलेन्स्क में उसने तुच्कोव से ऐसा कहा भी था)। इसी दृष्टि से वह इस पूर्वी सुन्दरी को, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, अपने सामने देख रहा था। ख़ुद उसे भी यह बड़ा अजीब-सा लग रहा था कि आख़िर तो उसका बहुत पुराना, असम्भव प्रतीत होनेवाला सपना साकार हो गया था। उजली सुबह के प्रकाश में वह कभी तो नगर और कभी उसके ब्योरों की जांच करते हुए उसके ख़ाके पर नज़र डालता था और इस बात का विश्वास कि उसने इस नगर पर क़ब्ज़ा कर लिया है, उसे उत्तेजित और आतं-कित करता था।

"लेकिन क्या इसके अलावा कुछ दूसरा भी हो सकता था?" इसके दिमाग़ में ख़्याल आया। "तो यह रही राजधानी मेरे क़दमों पर, अपने भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा करती हुई। कहां है अब अलेक्सान्द्र और क्या सोचता होगा अब वह? अजीब, सुन्दर और भव्य नगर! और अजीब तथा भव्य है यह क्षण भी! किस रूप में अब वे देखते होंगे मुझे!" उसने अपने सैनिकों के सम्बन्ध में सोचा। "तो यह रहा पुरस्कार उन सभी कमज़ोर दिलवालों के लिये जिन्हें जीत का विश्वास नहीं था," वह अपने निकट आ चुकी और निकट आ रही तथा क़तारों में खड़ी हो रही सेनाओं पर दृष्टि डालते हुए सोच रहा था। "मेरे मुंह से एक शब्द निकलते ही, मेरे हाथ का एक इशारा होते ही ज़ारों की इस प्राचीन राजधानी का नाम-निशान मिट जायेगा। किन्तु मैं पराजित पर हमेशा ही दया करने को तैयार रहता हूं। मुझे दयालु और वास्तव में ही महान होना चाहिये ... लेकिन नहीं, यह सच नहीं है कि मैं मास्को में हूं," उसके दिमाग़ में अचानक यह ख़्याल आया। "फिर भी धूप में अपने सुनहरे गुम्बज़ों और सलीबों को झिलमिलाता और उनकी चमक दिखाता हुआ वह मेरे क़दमों पर पड़ा है। मगर मैं इसपर रहम करूंगा। बर्बरता और तानाशाही के प्राचीन स्मारकों पर न्याय और दयालुता के महान शब्द अंकित करूंगा ... मैं जानता हूं कि अलेक्सान्द्र इसी चीज़ को सबसे ज़्यादा दर्द के साथ महसूस करेगा। (नेपोलियन को ऐसे लगता था कि जो कुछ हुआ था, उसका सबसे अधिक महत्त्व तो अलेक्सान्द्र के साथ उसके व्यक्तिगत संघर्ष में निहित था।) क्रेमलिन की ऊंचाई से, हां, वह रहा क्रेमलिन – मैं इन्हें इन्साफ़ के क़ानून दूंगा, मैं इन्हें सच्ची सभ्यता का महत्त्व स्पष्ट करूंगा; मैं बोयारों* की अनेक पीढ़ियों को बड़े प्यार से अपने विजेता का नाम लेने को मजबूर कर दूंगा। मैं उनके प्रतिनिधिमण्डल से कहूंगा कि मैं न तो पहले युद्ध चाहता था और न अब चाहता हूं, कि मैंने तो केवल उनके दरबार की ग़लत नीति के विरुद्ध ही युद्ध किया, कि मैं अलेक्सान्द्र को प्यार और उसका आदर करता हूं और मास्को

* बोयार – पुराने तथा मध्ययुगीन रूस में उच्च शासक वर्ग से संबंधित बड़े ज़मींदार। – सं०

में शान्ति-संधि की ऐसी शर्तें स्वीकार कर लूंगा जो मेरी और मेरी जनता की शान के अनुरूप होंगी। मैं एक सम्मानित सम्राट का मान-मर्दन करने के लिये अपनी जीत का उपयोग नहीं करना चाहता। 'बोयारो,' मैं उनसे कहूंगा, 'मैं युद्ध नहीं, शान्ति चाहता हूं, अपने अधीन सभी लोगों की समृद्धि चाहता हूं।' कुल मिलाकर, मैं यह जानता हूं कि उनकी उपस्थिति मुझे प्रेरणा देगी और मैं उनसे वैसे ही बात करूंगा जैसे हमेशा करता हूं—स्पष्ट, प्रभावपूर्ण और महानता के अन्दाज़ में। लेकिन क्या यह सच हो सकता है कि मैं मास्को में हूं? हां, वह तो मेरे सामने है!"

"बोयारों को मेरे पास लाया जाये," उसने अपने अमले को सम्बोधित किया। ठाठदार एडजुटेंटों को अपने साथ लेकर एक जनरल फ़ौरन ही सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ बोयारों को बुलाने के लिये चला गया।

दो घण्टे बीत गये। नेपोलियन ने नाश्ता कर लिया और फिर से वह पोक्लोन्नाया पहाड़ी पर उसी जगह खड़ा हुआ बोयारों के प्रतिनिधिमण्डल की राह देख रहा था। बोयारों के सामने दिये जानेवाले भाषण ने उसके मस्तिष्क में स्पष्ट रूप धारण कर लिया था। यह भाषण उसी गरिमा और उसकी अपनी धारणा के अनुरूप महानता से ओत-प्रोत था।

मास्को में नेपोलियन दरियादिली का जो अन्दाज़ अपनाने का इरादा रखता था, वह ख़ुद उसकी तरंग में बह गया। उसने अपनी कल्पना में ज़ारों के महल में उस सभा के दिन तय कर लिये जिसमें रूसी दरबारियों की फ़्रांसीसी सम्राट के महत्त्वपूर्ण दरबारियों से भेंट होगी। उसने मन ही मन ऐसे गवर्नर का नाम भी सोच लिया जो मास्को के लोगों के दिल जीत लेगा। यह जानने पर कि मास्को में अनेक ख़ैराती संस्थायें हैं, उसने अपनी कल्पना में यह भी निर्णय कर लिया कि इन सभी संस्थाओं की वह खूब खुले दिल से मदद कर देगा। वह सोच रहा था कि जैसे अफ़्रीका में चोग़ा पहनकर मसजिद में बैठना चाहिये, वैसे ही एक सम्राट की भांति उसे मास्को में अपनी विशाल-हृदयता दिखानी चाहिये। और फिर पूरी तरह से रूसियों के दिलों को छू लेने के लिये और हर फ़्रांसीसी की भांति, जो **मेरी प्यारी, मेरी नेक, मेरी बेचारी मां** को याद किये बिना किसी भी भावुकतापूर्ण

बात की कल्पना नहीं कर सकता, उसने इन सभी ख़ैराती संस्थाओं पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'मेरी प्यारी मां को समर्पित संस्था' लिखवाने का निर्णय किया। नहीं, 'मेरी मां का घर'—इतना ही लिखवाना काफ़ी होगा, उसने दिल में ऐसा फ़ैसला कर लिया। "लेकिन क्या मैं सचमुच मास्को में हूं? हां, वह मेरे सामने है। लेकिन शहर का प्रतिनिधिमण्डल यहां आने में इतनी देर क्यों कर रहा है?" वह सोचने लगा।

इसी बीच सम्राट के अमले में उसके जनरल और मार्शल विह्वलतापूर्वक फुसफुसाते हुए आपस में सलाह-मशविरा कर रहे थे। प्रतिनिधिमण्डल को लाने के लिये भेजे गये लोग यह ख़बर लेकर लौटे कि मास्को ख़ाली पड़ा है और सभी लोग सवारी से या पैदल ही वहां से चले गये हैं। इस स्थिति पर विचार-विमर्श करनेवालों के चेहरों का रंग उड़ा हुआ था और उनपर चिन्ता झलक रही थी। उन्हें इस बात से घबराहट नहीं हो रही थी कि मास्कोवासी अपना शहर छोड़कर चले गये थे (यह घटना चाहे कितनी ही गम्भीर क्यों न प्रतीत हुई), बल्कि उन्हें इस चीज़ से घबराहट हो रही थी कि सम्राट को किस तरह से यह बताया जाये, किस ढंग से इस मामले को पेश किया जाये कि सम्राट को इस भयानक, इस हास्यास्पद स्थिति की अनुभूति न हो, कैसे यह सूचना दी जाये कि उसने व्यर्थ ही इतनी देर तक बोयारों की प्रतीक्षा की, कि मास्को में पियक्कड़ों की भीड़ के सिवा कोई नहीं है। कुछ का कहना था कि हर हालत में किसी तरह का एक प्रतिनिधिमण्डल बनाना चाहिये, दूसरे इस मत का विरोध करते हुए यह कहते थे कि बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी से सम्राट को इसके लिये तैयार करके उसे सचाई बतानी चाहिये।

"फिर भी उन्हें बताना तो होगा ही..." अमले के कुछ महानुभावों ने कहा। "किन्तु महानुभावो..." स्थिति तो इस कारण और भी विकट हो रही थी कि नेपोलियन अपनी उदारता की योजनाओं पर विचार करते हुए ख़ाके के सामने इधर-उधर आ-जा रहा था, अपनी आंखों पर हाथ से ओट करके गर्व और ख़ुशी से मुस्कराते हुए जब-तब मास्को की सड़क पर नज़र डाल लेता था।

"लेकिन यह तो असम्भव है..." अमले के महानुभाव कंधे झटकते और अपने दिमाग़ में घूमनेवाले भयानक "हास्यास्पद" शब्द को मुंह

से निकालने की हिम्मत न करते हुए आपस में कह रहे थे ...

इसी समय व्यर्थ प्रतीक्षा करते-करते थककर तथा अपनी अभिनेता-सुलभ सहज वृत्ति से यह अनुभव करके कि महान क्षण बहुत ही लम्बा होने के कारण अपनी महानता खो रहा है, नेपोलियन ने हाथ से इशारा किया। संकेत देनेवाली एक तोप का धमाका हुआ और मास्को के बाहर पहले से एकत्रित फ़ांसीसी सेनायें त्वेर्स्की, कालूज्स्की और दोरोगोमीलोव्स्की फाटकों से मास्को में प्रवेश करने लगीं। एक-दूसरी से होड़ करती, पैदल, दौड़ती या अपने घोड़ों को दुलकी चाल से दौड़ाती हुई ये सेनायें अपने द्वारा उड़ाये जानेवाले धूल के बादल में छिपती और अपने शोर से हवा को गुंजाती हुई अधिकाधिक तेज़ी से बढ़ती जा रही थीं।

सेनाओं के जोश की इस तरंग में बहकर नेपोलियन दोरोगोमीलोव्स्की फाटक तक पहुंच गया, मगर वहां फिर से रुका, घोड़े से उतरा और प्रतिनिधिमण्डल की प्रतीक्षा करते हुए देर तक कामेरकोलेज्स्की प्राचीर के नज़दीक इधर-उधर आता-जाता रहा।

२०

इसी बीच मास्को ख़ाली हो गया था। उसमें लोग तो थे, उसमें उसके भूतपूर्व निवासियों का पचासवां भाग रह गया था, लेकिन वह ख़ाली था। वह उसी तरह से ख़ाली था जैसे मधुमक्खियों के छत्ते की महारानी के बिना नष्ट होता हुआ छत्ता ख़ाली होता है।

महारानीहीन छत्ते में ज़िन्दगी नहीं होती, लेकिन सरसरी नज़र से देखने पर वह दूसरे छत्तों की तरह जीवन से धड़कता प्रतीत होता है।

दोपहर की गर्म धूप में महारानीहीन छत्ते के गिर्द भी वैसे ही मधुमक्खियां मंडराती रहती हैं जैसे जीवन से धड़कते अन्य छत्तों के गिर्द; उससे भी उसी भांति दूर से ही शहद की सुगन्ध आती है, उसमें भी उसी प्रकार मधुमक्खियां दाख़िल होती हैं और उससे बाहर निकलती हैं। किन्तु उसे ध्यान से देखते ही यह बात समझ में आ

जाती है कि छत्ते में ज़िन्दगी नहीं रही। मधुमक्खियां उसमें न तो जीवित छत्तों की भांति दाख़िल होती हैं और बाहर निकलती हैं, न ही मधुमक्खी-पालक को पहले जैसी सुगन्ध और ध्वनि की अनुभूति होती है। रुग्ण छत्ते की दीवार को धीरे से थपथपाने पर पहले की तरह मधुमक्खियों के फ़ौरन और एकसाथ जवाब देने के बजाय, दसियों हज़ार मधुमक्खियों के भिनभिनाने, रौद्र रूप धारण करते हुए डंकों को ऊपर उठाने और पंखों को ज़ोर से सरसराने और जीवन का आभास देनेवाली आवाज़ की जगह उसे ख़ाली छत्ते के विभिन्न स्थानों से अलग-अलग भिनभिनाहट सुनायी देती है। मधुमक्खियों के प्रवेश-द्वार से अब पहले की भांति शहद और विष की मदिरा-मिश्रित-सी सुगन्ध नहीं आती, छत्ते के पूरी तरह भरे होने की गर्माहट की नहीं, बल्कि शहद के साथ रिक्तता और सड़ी हुई मिट्टी की गन्ध की अनुभूति होती है। प्रवेश-द्वार के पास अब वे सन्तरी-मधुमक्खियां भी नहीं हैं जो ख़तरे की सूचना देती हैं और अपने डंक ऊपर उठाकर छत्ते की रक्षा के लिये अपने प्राण तक देने को तैयार होती हैं। पानी के उबलने की आवाज़ से मिलती-जुलती मधुमक्खियों के श्रम की समरस और धीमी ध्वनि भी नहीं रही, इसकी जगह गड़बड़, अलग-अलग और अटपटी आवाज़ों का शोर सुनायी देता है। काली, कुछ लम्बी-सी, शहद से सनी चोर-मधुमक्खियां भीरुता और धुर्त्तता से छत्ते में प्रवेश करती हैं तथा उससे बाहर निकलती हैं। वे डंक नहीं मारतीं, बल्कि ख़तरे से बच निकलती हैं। पहले वे शहद लिये हुए छत्ते में प्रवेश करती थीं और ख़ाली बाहर जाती थीं, लेकिन अब वे शहद लेकर बाहर जाती हैं। मधुमक्खी-पालक छत्ते का निचला भाग खोलता है और उसके तल में नज़र डालता है। एक-दूसरी की टांगों के सहारे छत्ते के तल तक लटकी, श्रम में जुटी काली, चमकीली और श्रम की सतत फुसफुसाहट से मोम को बाहर निकालती मधुमक्खियों की जगह अब उसे छत्ते के तल और भिन्न दीवारों पर उनींदी और क्षीण तथा खोयी-खोयी-सी मधुमक्खियां भिन्न दिशाओं में भटकती दिखाई देती हैं। अच्छे ढंग से चिपके और पंखों द्वारा बुहारे गये फ़र्श की जगह अब मोम के टुकड़े, मधुमक्खियों का मल, अधमरी, पैरों को ज़रा-ज़रा हिलाती-डुलाती तथा पूरी तरह मरी हुई मधुमक्खियां दिखाई देती हैं जिन्हें यहां से हटाया नहीं गया है।

मधुमक्खी-पालक छत्ते का ऊपरवाला भाग खोलता है और उसके

शिखर को बहुत ध्यान से देखता है। मधुमक्खियों की बहुत ही सटी हुई और हर दरार को भरकर मधुकोषों को गर्म रखनेवाली क़तारों की जगह वह छत्तों के निर्माण की कलापूर्ण और जटिल कारीगरी देखता है, किन्तु उसमें भी अब पहले जैसी कौमार्य-सुलभ निर्मलता नहीं थी। सब कुछ उपेक्षित और गन्दा हो गया था। काली चोर-मधुमक्खियां शहद की तलाश में फुर्ती से और छिपे-छिपे छत्तों में घूमती हैं, जबकि छत्ते की क्षीण और दुर्बल, मुरझायी तथा बूढ़ी-सी लगनेवाली मधुमक्खियां मानो जीवन की चाह और चेतना खोकर धीरे-धीरे हिलती-डुलती हैं और चोर-मधुमक्खियों के लिये किसी तरह की बाधा नहीं बनतीं। काहिल नर-मधुमक्खियां, भिड़, तितलियां और ततैये उड़ते हुए अटपटे ढंग से छत्ते की दीवारों से टकराते हैं। कहीं-कहीं मृत बच्चों और शहदवाले मधुकोषों के बीच विभिन्न दिशाओं से खीझी-खीझी भिनभिनाहट सुनायी देती है; कहीं पुरानी आदत और याददाश्त के मुताबिक़ दो मधुमक्खियां अपनी शक्ति से ज़्यादा ज़ोर लगाती हुई छत्ते के एक भाग को साफ़ कर रही हैं और यह न जानते हुए कि वे किसलिये ऐसा करती हैं, मृत मधुमक्खी या ततैये को बाहर निकाल रही हैं। एक अन्य कोने में दो बूढ़ी मधुमक्खियां आपस में धीरे-धीरे लड़ रही हैं या अपने को साफ़ कर रही हैं अथवा एक-दूसरी को खिला रही हैं तथा ख़ुद भी यह नहीं जानतीं कि वे मैत्री या शत्रुता से ऐसा कर रही हैं। तीसरी जगह पर मधुमक्खियों की भीड़ एक-दूसरी को कुचलती हुई किसी एक बलि पर झपट रही है, उसे पीट और उसका गला घोंट रही है। शक्तिहीन हो जानेवाली या मृत मधुमक्खी धीरे-धीरे और एक हल्के-से रोयें की भांति लाशों के ढेर पर गिर जाती है। मधुमक्खी-पालक शहद के बिना मध्य के दो मधुकोषों को हटाता है ताकि घोंसले को देख सके। हज़ारों मधुमक्खियों के काले घेरों की जगह, जो पहले एक-दूसरी के साथ पीठें सटाये बैठी रहती थीं और जन्म-प्रक्रिया के उच्चतम रहस्य की रक्षा करती थीं, अब उसे केवल सैकड़ों उदास, अर्ध-जीवित और सो रही मधुमक्खियों के अंजर-पंजर ही दिखाई देते हैं। वे स्वयं यह नहीं जानती थीं कि लगभग सभी की सभी उस पावन-स्थान पर मर चुकी हैं जिसकी वे रक्षा कर रही थीं और जिसका अब अस्तित्व नहीं रहा था। उनसे मिट्टी और क्षय की ही गन्ध आती है। उनमें से केवल कुछ ही हिलती-डुलती हैं, ऊपर उठती हैं, मुरझायी-

मुरझायी-सी उड़ती हैं, शत्रु के हाथ पर बैठती हैं, मगर उनमें डंक मारकर मरने की शक्ति बाक़ी नहीं रही है, जबकि बाक़ी सभी मृत हैं और मछली की केचुली की भांति बड़ी आसानी से नीचे झड़ जाती हैं। मधुमक्खी-पालक छत्ते पर खड़िया से निशान बना देता है और वक़्त मिलने पर इसे तोड़कर जला डालता है।

मास्को भी इसी तरह से ख़ाली था, जब थका-हारा, बेचैन और माथे पर बल डाले नेपोलियन अपनी धारणा के अनुसार बेशक औपचारिकता के लिये ही, किन्तु शिष्टता की दृष्टि से आवश्यक – प्रतिनिधि-मण्डल की प्रतीक्षा करते हुए कामेरकोलेज्स्की प्राचीर के पास इधर-उधर आ-जा रहा था।

पुरानी आदतों का अनुकरण करते और यह न समझ पाते हुए कि वे क्या कर रहे हैं, मास्को के विभिन्न भागों में अभी भी कुछ लोग निरुद्देश्य ढंग से आ-जा रहे थे।

जब उचित सावधानी से नेपोलियन को यह सूचना दी गयी कि मास्को ख़ाली है तो उसने सूचना देनेवाले को ग़ुस्से से देखा और मुंह फेरकर चुपचाप इधर-उधर आता-जाता रहा।

"बग्घी लायी जाये," उसने कहा। वह ड्यूटी बजा रहे एडजुटेंट की बग़ल में बैठ गया और उसने मास्को के उपनगर की ओर बग्घी बढ़ाने को कहा।

"मास्को ख़ाली है। कैसी अनहोनी बात है!" उसने अपने आपसे कहा।

वह शहर में न जाकर दोरोगोमीलोव्स्की उपनगर में ठहर गया।

नाटक का चरम-बिन्दु सामने नहीं आया था।

२१

रूसी सेनायें रात के दो बजे से दिन के दो बजे तक मास्को से गुज़रीं और यहां से जानेवाले अन्तिम नागरिकों और घायलों को भी अपने साथ ले गयीं।

सेनाओं के जाने के समय कामेन्नी, मोस्क्वोरेत्स्की और याउज़्स्की पुलों पर ही सबसे ज़्यादा रेल-पेल हुई।

सेनायें जब दो भागों में बंटकर और क्रेमलिन के गिर्द घूमकर मोस्क्वोरेत्स्की और कामेन्नी पुलों की ओर बढ़ रही थीं, यहां होनेवाली देर और घिचपिच का लाभ उठाते हुए ढेरों सैनिक चुपके से तथा चोरी-छिपे वसीली ब्लाजेन्नी के बड़े गिरजाघर और बोरोवीत्स्की फाटक को लांघते हुए पुलों से पहाड़ी पर और फिर लाल चौक में वापस आ गये। उनकी सहज वृत्ति ने उन्हें यह बता दिया कि यहां ये किसी भी तरह की कठिनाई के बिना पराये माल पर हाथ साफ़ कर सकते हैं। गोस्तीनी द्वोर के सभी ओनों-कोनों में वैसी ही भीड़ थी जैसी कि सस्ते मालोंवाले बाज़ार में होती है। लेकिन यहां मीठी-मीठी बातों से गाहकों को अपनी दुकान की ओर फुसलानेवालों और फेरी लगानेवालों तथा रंग-बिरंगी पोशाकों में महिला-गाहकों की भीड़ नहीं थी। यहां तो हथियारों के बिना वर्दियां और फ़ौजी ओवरकोट पहने हुए सिर्फ़ फ़ौजी ही नज़र आ रहे थे जो दुकानों की क़तारों में चुपचाप ख़ाली हाथ दाख़िल होते थे और सामान लेकर बाहर निकलते थे। व्यापारी, दुकानदार और उनके सहायक (उनकी संख्या बहुत कम थी) फ़ौजियों के बीच किंकर्त्तव्य-विमूढ़-से आ-जा रहे थे, अपनी दुकानों को खोलते और बन्द करते थे तथा युवा सहायकों के साथ अपना माल कहीं ले जाते थे। इस बाज़ार के चौक में फ़ौजियों के अपनी-अपनी सेनाओं में जाने के लिये ढोल बजाये जा रहे थे। किन्तु ढोलों की आवाज़ लुटेरे सैनिकों को पहले की भांति सेना में वापस दौड़ने के लिये नहीं, बल्कि इसके विपरीत, ढोल से दूर भागने को प्रेरित करती थी। दुकानों में और रास्तों पर फ़ौजियों के बीच भूरे कोट पहने, सिर मुंडे अपराधी भी नज़र आ रहे थे। दो फ़ौजी अफ़सर, जिनमें से एक वर्दी पर गुलूबन्द लपेटे और गहरे सलेटी रंग के दुबले-से घोड़े पर सवार था तथा दूसरा फ़ौजी ओवरकोट पहने और पैदल था, इल्यीन्का सड़क के सिरे पर खड़े बातें कर रहे थे। एक तीसरा अफ़सर सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ इनके पास आया।

"जनरल का हुक्म है कि जैसे भी हो, इन सबको फ़ौरन यहां से वापस भगाना चाहिये। यह तो बड़ी बेहूदा बात हो रही है! आधे फ़ौजी इधर-उधर भाग गये हैं।"

"तुम कहां जा रहे हो? .. और तुम लोग भी? .." वह तीन प्यादा फ़ौजियों पर चिल्लाया जो बन्दूक़ों के बिना और अपने फ़ौजी ओवरकोटों के पल्लुओं को ऊपर उठाये हुए दुकानों की क़तारों की तरफ़ खिसके जा रहे थे। "रुको, बदमाशो!"

"हां, कोशिश कर देखो इन्हें एकत्रित करने की!" दूसरे अफ़सर ने जवाब दिया। "इन्हें इकट्ठा नहीं कर पाओगे। हमें जल्दी से आगे बढ़ना चाहिये ताकि बाक़ी बचे हुए भी न भाग जायें। बस, यही किया जा सकता है!"

"लेकिन आगे बढ़ें तो कैसे? वहां पुल पर वे रुक गये हैं, जैसे किसी ने कील गाड़ दी हो और हिलते-डुलते ही नहीं। या फिर हम इनके गिर्द घेरा डाल दें ताकि आख़िरी भी न भाग जायें?"

"आप वहां जाइये! इन्हें दुकानों से बाहर निकाल दीजिये!" बड़े अफ़सर ने चिल्लाकर कहा।

गुलूबन्द लपेटे हुए अफ़सर घोड़े से नीचे उतरा, उसने ढोल-वादक को पुकारा और उसे साथ लेकर दुकानों की तरफ़ गया। कुछ फ़ौजी एकसाथ वापस भाग चले। नाक के पास गालों पर लाल-लाल फुंसियोंवाला एक दुकानदार अपने फूले-फूले चेहरे पर स्वार्थपूर्ण, शान्त-दृढ़ भाव लिये हाथों को लहराता हुआ जल्दी-जल्दी और बांकपन से इस फ़ौजी अफ़सर के पास आया।

"हुज़ूर," उसने कहा, "मेहरबानी कीजिये, हमें बचाइये। छोटी-मोटी चीज़ों के मामले में तो हम ख़ुद भी कुछ परवाह नहीं करते, ख़ुशी से देने को तैयार हैं! आप जैसे सज्जन व्यक्ति के लिये मैं अभी कपड़े का एक या दो टुकड़े भी बड़ी ख़ुशी से लाकर पेश कर सकता हूं! कारण कि हम सारी स्थिति को समझते हैं, लेकिन यह तो बिल्कुल लूट ही मची हुई है! कृपया मदद कीजिये! सन्तरी खड़े कर दीजिये, और कुछ नहीं तो हमें दुकानें ही बन्द कर लेने दीजिये ..."

अफ़सर के इर्द-गिर्द कुछ दुकानदार जमा हो गये।

"अरे, किसलिये व्यर्थ झींक रहे हो!" इनमें से एक दुबले-पतले और कठोर चेहरेवाले ने कहा। "जिसका सिर ही कट रहा हो, वह बालों के लिये नहीं रोता। जिसे जो चाहिये, ले सकता है!" और उसने ज़ोर से हाथ झटककर अफ़सर की ओर से मुंह फेर लिया।

"तुम्हारे लिये यह कहना बड़ा आसान है," पहले दुकानदार

ने झल्लाकर जवाब दिया। "आप, हुज़ूर, हमारी मदद कीजिये।"

"कहने की बात ही क्या है!" दुबले-पतले दुकानदार ने चिल्लाकर जवाब दिया। "मेरी तीन दुकानों में यहां एक लाख रूबल का माल भरा हुआ है। फ़ौजों के यहां से चले जाने पर क्या इसे बचाया जा सकता है। भगवान की इच्छा के सामने भला किसका बस चलता है!"

"हुज़ूर, जनाब, मदद कीजिये," पहले दुकानदार ने सिर झुकाते हुए फिर से मिन्नत की। फ़ौजी अफ़सर दुविधा में पड़ा हुआ खड़ा रहा और उसके चेहरे पर अनिश्चितता का भाव झलक रहा था।

"मुझे क्या लेना-देना है इससे!" वह अचानक चिल्लाकर कह उठा और तेज़ क़दमों से दुकानों की क़तार की तरफ़ बढ़ चला। एक दुकान में से, जिसका दरवाज़ा खुला हुआ था, घूंसों और गाली-गलौज की आवाज़ सुनायी दे रही थी और फ़ौजी अफ़सर जिस वक़्त इसके पास पहुंचा, तो मुंडे हुए सिरवाले एक व्यक्ति को, जो भूरा कोट पहने था, ज़ोर से बाहर फेंका गया।

यह व्यक्ति झुककर दुकानदारों और फ़ौजी अफ़सर के क़रीब से भागता हुआ निकल गया। फ़ौजी अफ़सर दुकान में घुसे हुए फ़ौजियों पर झपटा। किन्तु इसी समय मोस्क्वोरेत्स्की पुल पर एकत्रित भारी भीड़ की ज़ोरदार चीख़ें सुनायी दीं और अफ़सर चौक की तरफ़ भाग गया।

"क्या बात है? क्या बात है?" उसने पूछा, किन्तु उसका साथी अफ़सर वसीली ब्लाजेन्नी के क़रीब से गुज़रता हुआ चीख़ों की दिशा में अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता जा रहा था। यह अफ़सर भी अपने घोड़े पर सवार होकर उसके पीछे हो लिया। पुल के नज़दीक पहुंचने पर उसे तोप-गाड़ी से नीचे उतारी गयी दो तोपें, पुल पर बढ़ती प्यादा फ़ौजें, कुछ उलटी पड़ी घोड़ा-गाड़ियां, भीड़ में कुछ डरे-सहमे और फ़ौजियों के मुस्कराते चेहरे दिखाई दिये। तोपों के नज़दीक एक घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी जिसमें दो घोड़े जुते हुए थे। इस घोड़ा-गाड़ी के पहिये के पीछे पट्टोंवाले चार शिकारी कुत्ते दुबके हुए थे। घोड़ा-गाड़ी सामान से ख़ूब लदी थी और उसके ऊपर उलटी रखी बच्चों की कुर्सी पर बैठी हुई एक औरत बहुत ज़ोर से गला फाड़कर चिल्ला रही थी। फ़ौजी अफ़सर के साथियों ने उसे बताया कि लोगों की भीड़ और यह औरत इसलिये चीख़-चिल्ला रही थी कि जनरल येर्मोलोव ने यहां भीड़-भड़क्का

देखकर और यह मालूम होने पर कि फ़ौजी दुकानों की तरफ़ भाग रहे हैं तथा ग़ैरफ़ौजी लोग पुल पर जमघट लगाये हुए हैं, यह हुक्म दे दिया कि तोप-गाड़ी से दो तोपें उतार ली जायें और वह पुल पर गोले बरसाने का दिखावा करेगा। लोगों की भीड़ ने घोड़ा-गाड़ियों को उलटते, एक-दूसरे को कुचलते, ज़ोर से चीख़ते-चिल्लाते और रेल-पेल करते हुए पुल ख़ाली कर दिया और फ़ौजें आगे बढ़ चलीं।

२२

इसी बीच नगर सुनसान हो गया था। सड़कों पर लगभग कोई नहीं था। सभी फाटक, सभी दुकानें बन्द थीं। शराबख़ानों के आस-पास कहीं किसी का चिल्लाना या किसी शराबी का गाना सुनायी देता था। सड़कों पर घोड़ा-गाड़ियां नहीं थीं और पैदल चल रहे किसी व्यक्ति के पांवों की भी कभी-कभार ही आहट मिलती थी। पोवर्स्काया सड़क पर एकदम सन्नाटा और वीराना था। रोस्तोवों की हवेली के बहुत बड़े अहाते में बची-बचायी सूखी घास और घोड़ों की लीद पड़ी थी तथा एक भी व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था। पूरे सामान के साथ छोड़ दिये गये रोस्तोवों के घर के बड़े ड्राइंगरूम में इस वक़्त दो व्यक्ति थे – अहाते की देख-भाल करनेवाला चौकीदार इग्नात और वसीलिच का पोता, छोकरा नौकर मीश्का जो अपने दादा के साथ मास्को में रह गया था। मीश्का क्लावीकॉर्ड बाजा खोलकर एक उंगली से उसे बजा रहा था। चौकीदार कमर पर दोनों हाथ रखे तथा ख़ुशी से मुस्कराते हुए बड़े आईने के सामने खड़ा था।

"क्यों, बढ़िया है न, चाचा इग्नात!" मीश्का ने अचानक दोनों हाथों से क्लावीकॉर्ड के परदों को धपधपाते हुए पूछा।

"अरे, वाह!" इग्नात ने दर्पण में अपने चेहरे की अधिकाधिक फैलती मुस्कान पर हैरान होते हुए जवाब दिया।

"बेहया कहीं के! सचमुच तुम दोनों बेहया हो!" दबे पांव ड्राइंगरूम में आ जानेवाली माव्रा कुज़्मीनिश्ना की पीछे से आवाज़ सुनायी दी। "इस मोटे तोबड़ेवाले को दांत निपोरते तो देखो! तुम दोनों की इस

सबके लिये ख़बर ली जानी चाहिये! वहां नीचे, अभी तक सामान ठीक-ठाक नहीं हुआ और वसीलिच का थकान के मारे बुरा हाल है। देखना, बाद में तुम्हें कैसा मज़ा चखाया जायेगा!"

इग्नात ने मुस्कराना बन्द करके अपनी पेटी ठीक की और आज्ञाकारिता से आंखें झुकाये हुए कमरे से बाहर चला गया।

"चाची, मैं तो बहुत धीरे-धीरे ही इसे बजाऊंगा," छोकरे ने कहा।

"हां, दूंगी मैं तुझे इसे धीरे-धीरे बजाने, शैतान कहीं का!" माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने उसे घूंसा दिखाते हुए जवाब दिया। "जा, जाकर दादा के लिये समोवार गर्म कर।"

माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने धूल झाड़कर क्लावीकॉर्ड को बन्द कर दिया, गहरी सांस लेकर ड्राइंगरूम से बाहर आयी और घर के दरवाज़े पर ताला लगा दिया।

माव्रा कुज़्मीनिश्ना अहाते में आकर यह सोचने लगी कि वह अब किधर जाये – वसीलिच के साथ चाय पीने के लिये नौकरों के उपभवन में या स्टोर-रूम में जाकर उस सामान को ठीक-ठाक करे जो अभी तक ठीक नहीं किया गया था?

सुनसान सड़क पर तेज़ क़दमों की आहट मिली। यह आवाज़ छोटे फाटक के पास आकर रुक गयी। किसी का हाथ अर्गल को खोलने की कोशिश करने लगा और इस तरह अर्गल की कुछ आवाज़ होने लगी।

माव्रा कुज़्मीनिश्ना फाटक के पास आयी।

"आपको किससे मिलना है?"

"काउंट, काउंट रोस्तोव से।"

"आप कौन हैं?"

"मैं फ़ौजी अफ़सर हूं। मुझे उनसे ज़रूर मिलना है," सुखद और कुलीनों जैसे रूसी लहजे में उत्तर मिला।

माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने फाटक खोल दिया। रोस्तोवों के चेहरों से मिलते-जुलते गोल चेहरेवाला एक अठारह वर्षीय फ़ौजी अफ़सर अहाते में आया।

"भैया मेरे, वे तो चले गये। कल, शाम को यहां से चले गये," माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने प्यार से जवाब दिया।

फाटक के पास खड़े जवान अफ़सर ने मानो इस दुविधा में पड़ते

हुए कि अहाते में जाये या न जाये, चटखारा भरा।

"ओह, कितने अफ़सोस की बात है!" वह कह उठा। "मुझे कल आना चाहिये था... ओह, कितने अफ़सोस की बात है! .."

इसी बीच माव्रा कुज़्मीनिश्ना इस जवान व्यक्ति के चेहरे में रोस्तोव वंश के जाने-पहचाने नाक-नक़्श, उसके फटे हुए हल्के ओवरकोट और ख़स्ताहाल बूटों को बहुत ध्यान और बड़ी सहानुभूति से देख रही थी।

"आपको काउंट की किसलिये ज़रूरत थी?" उसने पूछा।

"ओह, ख़ैर... अब तो कुछ भी नहीं हो सकता!" फ़ौजी अफ़सर ने क्षुब्ध होते हुए कहा और मानो जाने के इरादे से फाटक को खोलना चाहा। वह डांवांडोल मन से फिर रुक गया।

"बात यह है," उसने अचानक कहा। "मैं काउंट का रिश्तेदार हूं और मुझपर उनकी हमेशा ही बड़ी कृपा रही है। बात यह है (उसने किसी तरह की झेंप के बिना तथा खुशमिज़ाजी से अपने हल्के ओवरकोट और बूटों की ओर देखा) कि मैं फटेहाल हूं और जेब भी ख़ाली है; इसलिये मैं काउंट से कुछ पैसे..."

माव्रा कुज़्मीनिश्ना ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी।

"आप, ज़रा देर को, एक मिनट को रुक जायें। बस, एक मिनट," उसने कहा। फ़ौजी अफ़सर ने फाटक पर से जैसे ही अपना हाथ हटाया, माव्रा कुज़्मीनिश्ना मुड़ी और अपनी बुढ़ापे की टांगों पर तेज़ी से पिछवाड़े के अहाते में स्थित अपने उपभवन की ओर चल दी।

माव्रा कुज़्मीनिश्ना जब अपने कमरे की तरफ़ भागी जा रही थी, उसी वक़्त फ़ौजी अफ़सर सिर झुकाकर अपने फटे बूटों को देखता और ज़रा मुस्कराता हुआ अहाते में इधर-उधर आ-जा रहा था। "कितने अफ़सोस की बात है कि मामा जी नहीं मिले। कितनी अच्छी है यह बुढ़िया! न जाने किधर भाग गयी वह? कैसे मैं यह मालूम करूं कि मेरे लिये किन सड़कों से होते हुए अपनी रेजिमेंट तक पहुंचना आसान रहेगा जो अब रोगोज्स्की चौक में पहुंच गयी होगी?" जवान अफ़सर इस वक़्त यह सोच रहा था। माव्रा कुज़्मीनिश्ना हाथों में लपेटा हुआ चौख़ानेदार रूमाल तथा चेहरे पर भीरुता तथा साथ ही दृढ़ता का भाव लिये घर के कोने से सामने आई। जवान अफ़सर से कुछ क़दम इधर रह जाने पर उसने रूमाल खोला, उसमें से पच्चीस रूबल का सफ़ेद नोट निकाला और उसे जल्दी से अफ़सर को दे दिया।

"अगर मालिक, हमारे साहब घर पर होते तो स्पष्ट है कि उन्होंने रिश्तेदार की तरह ... लेकिन आज की स्थिति में ... शायद ..." मात्र्रा कुज़्मीनिश्ना घबरा और झेंप गयी। किन्तु अफ़सर ने इन्कार नहीं किया, उतावली किये बिना नोट ले लिया और मात्र्रा कुज़्मीनिश्ना को धन्यवाद दिया। "काश, काउंट घर पर होते," मानो सफ़ाई पेश करते हुए वह कहती रही। "आप पर प्रभु ईसा की कृपादृष्टि रहे, भैया! भगवान आपकी रक्षा करें," मात्र्रा कुज़्मीनिश्ना ने सिर झुकाकर उसे विदा करते हुए कहा। जवान फ़ौजी अफ़सर मानो अपने पर हंसता, मुस्करा-ता, सिर हिलाता और सूनी सड़कों पर लगभग भागता हुआ अपनी रेजिमेंट से जा मिलने के लिये याउज़्स्की पुल की तरफ़ बढ़ चला।

और मात्र्रा कुज़्मीनिश्ना, जिसकी आंखें नम हो गयी थीं, कुछ सोचती, सिर हिलाती और इस अपरिचित जवान अफ़सर के लिये अचानक मातृवत वात्सल्य और दया की प्रबल भावना अनुभव करती हुई देर तक बन्द फाटक के सामने खड़ी रही।

२३

वारवारका सड़क के एक अर्ध-निर्मित घर के निचले भाग में, जहां एक शराबख़ाना था, नशे में धुत्त लोगों का चीख़ना-चिल्लाना और गाना सुनायी दे रहा था। एक गन्दे और छोटे-से कमरे में मेज़ के सामने रखी बेंचों पर कोई दसेक फ़ैक्टरी-मज़दूर बैठे थे। सभी नशे में गड़गच्च और पसीने से तर थे, उनकी आंखें धुंधलायी हुई थीं और वे ज़ोर से तथा ख़ूब चौड़ा मुंह खोलकर कोई गाना गा रहे थे। वे अलग-अलग आवाज़ों में, मन मारकर और उत्साहहीन ढंग से गा रहे थे, सम्भवत: इसलिये नहीं कि गाना चाहते थे, बल्कि केवल यह दिखाने के लिये कि उनपर शराब का नशा हावी हो गया है और वे मौज कर रहे हैं। उनमें से एक, लम्बे क़द का सुनहरे बालोंवाला नौजवान, जो नीले रंग का साफ़-सुथरा लम्बा कोट पहने था, उनके क़रीब खड़ा था। सीधी और पतली नाकवाला उसका चेहरा सुन्दर कहा जा सकता था, अगर उसके पतले, भिंचे, लगातार हिलते-डुलते होंठ और धुंधली,

तनी भौंहोंवाली और निश्चल आंखें उसके सौन्दर्य को न बिगा-ड़तीं। वह गानेवालों के सिरों के ऊपर खड़ा था और सम्भवतः किसी समारोही चीज़ की कल्पना करते हुए अटपटे ढंग से कोहनी तक आस्तीन चढ़ा हुआ गोरा हाथ हिला रहा था जिसकी गन्दी उंगलियों को अस्वाभाविक ढंग से फैलाने की कोशिश कर रहा था। उसके कोट की आस्तीन लगातार नीचे आ रही थी और यह नौजवान बायें हाथ से उसे फिर यत्नपूर्वक ऊपर चढ़ा लेता था मानो इसमें कोई विशेष महत्त्वपूर्ण बात थी कि उभरी नसोंवाला उसका हिलता-डुलता हाथ अवश्य उघाड़ा रहे। गाने के बीच में ही ड्योढ़ी तथा पोर्च में मार-पीट और घूंसेबाज़ी का शोर सुनायी दिया। लम्बे क़द के इस नौजवान ने ज़ोर से हाथ झटका।

"बस, काफ़ी है!" वह आदेश देते हुए चिल्लाया। "साथियो, मार-पीट हो रही है!" और वह लगातार अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए पोर्च में चला गया।

फ़ैक्टरी-मज़दूर भी उसके पीछे-पीछे चल दिये। आज सुबह से इस शराबख़ाने में शराब पीनेवाले इन मज़दूरों ने लम्बे नौजवान के नेतृत्व में शराबख़ाने के मालिक को फ़ैक्टरी से कुछ खालें ला दी थीं और इनके बदले में इन्हें शराब पिलायी गयी थी। बग़ल के लुहारख़ाने के लुहारों ने शराबख़ाने में गाने और मौज करने की आवाज़ें सुनकर तथा यह मानते हुए कि लोग उसका ताला तोड़कर उसमें घुस गये हैं, ज़बर्दस्ती उसमें जाना चाहा। इसलिये पोर्च में मार-पीट होने लगी।

शराबख़ाने का मालिक दरवाज़े पर एक लुहार के साथ हाथापाई कर रहा था और जब फ़ैक्टरी-मज़दूर दरवाज़े पर आये तो लुहार शराब-ख़ाने के मालिक की गिरफ़्त से निकलकर मुंह के बल सड़क की पटरी पर जा गिरा।

दूसरा लुहार छाती के ज़ोर से शराबख़ाने के मालिक को धकेलते हुए दरवाज़े से भीतर घुसने की कोशिश कर रहा था।

आस्तीन ऊपर चढ़ाये हुए नौजवान ने दरवाज़े में घुस रहे लुहार के मुंह पर एक घूंसा मारा और ज़ोर से चिल्लाया :

"साथियो! हमारे लोगों को पीटा जा रहा है!"

इसी वक़्त पहला लुहार पटरी पर से उठा और अपने घायल चेहरे को खरोंचकर उससे ख़ून बहाते हुए रुआंसी आवाज़ में चिल्ला उठा :

"बचाओ! हत्या! .. एक आदमी की हत्या कर डाली गयी! भाइयो! .."

"हे भगवान, आदमी की हत्या कर दी गयी, एक आदमी की जान ले ली गयी!" पड़ोस के फाटक से बाहर आनेवाली एक औरत चिल्ला उठी। लहू-लुहान लुहार के इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ जमा हो गयी।

"क्या तुमने अब तक लोगों को कम लूटा है, उनके कपड़े तक उतरवा लिये हैं," किसी ने शराबख़ाने के मालिक को सम्बोधित करते हुए कहा। "अब तुमने आदमी की हत्या कर डाली? बदमाश कहीं का!"

पोर्च में खड़ा हुआ लम्बा-तड़ंगा नौजवान अपनी धुंधली-सी आंखों को कभी तो शराबख़ाने के मालिक और कभी लुहारों की तरफ़ घुमा रहा था मानो यह तय कर रहा हो कि अब किसके साथ हाथापाई करनी चाहिये।

"हत्यारा!" वह अचानक शराबख़ाने के मालिक पर चिल्ला उठा। "साथियो, इसकी मुश्कें बांध दो!"

"तुम लोग मेरी मुश्कें बांधोगे, मुंह धो रखो!" उसने अपने पर झपटनेवाले लोगों को दूर हटाते हुए चीख़कर कहा और अपने सिर से टोपी उतारकर उसे ज़मीन पर फेंक दिया। उसकी इस हरकत का मानो कोई धमकानेवाला रहस्यपूर्ण महत्त्व था और उसे घेरनेवाले मज़दूर दुविधा की स्थिति में रुक गये।

"मेरे भाई, क़ानून-क़ायदा तो मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। मैं थानेदार के पास पहुंचूंगा। तुम सोचते हो कि नहीं जाऊंगा? आजकल तो कोई भी लूट-मार करने की हिम्मत नहीं कर सकता!" शराबख़ाने के मालिक ने टोपी उठाते हुए चिल्लाकर कहा।

"तो आओ, हम थानेदार के पास चलते हैं! हां, हां... चलते हैं!" शराबख़ाने का मालिक और लम्बा-तड़ंगा नौजवान एक-दूसरे के पीछे यह वाक्य दोहराते रहे और दोनों एकसाथ सड़क पर चल दिये। लहू-लुहान लुहार उनकी बग़ल में चल रहा था। फ़ैक्टरी-मज़दूर और दूसरे लोग बातें करते और शोर मचाते हुए इनके पीछे-पीछे जा रहे थे।

मारोसेइका सड़क के नुक्कड़ पर शटरों से बन्द एक बड़े मकान के सामने, जिसपर मोचीख़ाने का साइनबोर्ड लगा हुआ था, लबादे

और फटे कोट पहने दुबले-पतले, मुरझाये तथा उदास चेहरोंवाले कोई बीसेक मोची खड़े थे।

"वह जैसे भी चाहता है, वैसे ही लोगों का उल्लू बनाता है!" भौंहें सिकोड़े हुए विरली दाढ़ीवाला एक दुबला-पतला मोची कह रहा था। "हमारा ख़ून चूसता रहा और बस, हिसाब बराबर! हफ़्ते भर तक हमें बेवक़ूफ़ बनाता रहा और आख़िर हमारी यह हालत करके ख़ुद यहां से चला गया।"

लोगों की भीड़ और लहू-लुहान व्यक्ति को देखकर बातें करनेवाला मोची चुप हो गया और सारे मोची जिज्ञासा के वशीभूत होकर फ़ौरन भीड़ के साथ चल दिये।

"लोग-बाग कहां जा रहे हैं?"

"ज़ाहिर ही है कि कहां जा रहे हैं, थानेदार के पास।"

"क्या यह सच है कि हमारी फ़ौजें पिट गयी हैं?"

"और तुमने क्या सोचा था! सुनो तो लोग क्या कह रहे हैं।"

सवाल-जवाब सुनायी देने लगे। शराबख़ाने का मालिक भीड़ के बढ़ जाने से पीछे रह गया और अपने शराबख़ाने को वापस चला गया।

लम्बे-तड़ंगे नौजवान ने अपने शत्रु यानी शराबख़ाने के मालिक को खिसकते हुए नहीं देखा और वह अपने उस हाथ को, जिसकी आस्तीन चढ़ाये था, हिलाते हुए लगातार बोलता जा रहा था और इस तरह सभी के ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ था। अधिकतर लोग अपने मन को विह्वल करनेवाले प्रश्नों के उत्तर पाने के लिये इसी नौजवान को घेरे हुए थे।

"कोई यह कहता है कि व्यवस्था दिखाओ, क़ानून-क़ायदा दिखाओ। इसी काम के लिये तो सरकार है! मैं ठीक कह रहा हूं न, ईसाई धर्म-ईमान को माननेवाले लोगो?" लम्बे-तड़ंगे नौजवान ने ज़रा मुस्कराते हुए कहा।

"वह समझता है कि सरकार ही नहीं है? भला सरकार के बिना काम चल सकता है? वरना हमें लूटनेवालों की कोई कमी नहीं होगी।"

"लोग यों ही बेकार की बातें कर रहे हैं!" भीड़ में से किसी की आवाज़ सुनायी दी। "क्या वे ऐसे ही मास्को को छोड़ देंगे! किसी ने मज़ाक़ में ऐसा कह दिया और दूसरों ने इसे सच मान लिया। हमारी कितनी फ़ौज मौजूद है यहां। उसे ऐसे आसानी से तो नहीं घुस आने

देंगे! इसी के लिये तो सरकार है। ध्यान से सुनो कि लोग क्या कह रहे हैं," लम्बे-तड़ंगे नौजवान की ओर संकेत करते हुए कुछ लोगों ने कहा।

चीनी लोगों की बस्ती की दीवार के क़रीब लोगों का एक छोटा-सा दल गाढ़े का ओवरकोट पहने हुए एक व्यक्ति को घेरा था जिसके हाथों में एक काग़ज़ था।

"सरकारी हुक्म पढ़ा जा रहा है! सरकारी हुक्म!" भीड़ में यह शोर सुनायी दिया और लोग काग़ज़ को पढ़नेवाले की तरफ़ दौड़ पड़े।

गाढ़े का ओवरकोट पहने व्यक्ति ३१ अगस्त का परचा पढ़ रहा था। जब भीड़ ने उसे घेर लिया तो वह कुछ घबरा गया, किन्तु लम्बे-तड़ंगे नौजवान की मांग पर, जो दूसरों को धकियाता हुआ उसके क़रीब पहुंच गया था, उसने ज़रा कांपती आवाज़ में परचे को फिर से पढ़ना शुरू कर दिया।

"मैं कल तड़के ही महामान्य प्रिंस कुतूज़ोव के पास जा रहा हूं," वह पढ़ रहा था ("महामान्य!" लम्बे-तड़ंगे नौजवान ने ज़रा मुस्कराते और माथे पर बल डालते हुए गम्भीरता से दोहराया), "ताकि उनसे सारी बातचीत कर लूं, ज़रूरी क़दम उठाऊं और कमीने दुश्मन को नष्ट करने में फ़ौज की मदद करूं; हम भी उसके नाक में दम कर देंगे..." परचा पढ़नेवाला यहां रुक गया ("देखा?" लम्बा-तड़ंगा नौजवान विजेता के अन्दाज़ में चिल्ला उठा। "वह उसकी अक्ल ठिकाने कर देंगे...")... "ताकि इनकी जड़ें काटकर इन मेहमानों को जहन्नुम रसीद कर दिया जाये। मैं लंच के वक़्त तक वापस आ जाऊंगा और हम काम में जुट जायेंगे, इसे करेंगे, पूरा करेंगे और कमीने दुश्मन का काम तमाम कर देंगे।"

अन्तिम शब्द गहरी ख़ामोशी में सुने गये। लम्बे-तड़ंगे नौजवान ने उदासी से सिर झुका लिया। यह स्पष्ट था कि अन्तिम शब्द किसी की भी समझ में नहीं आये थे। "मैं कल लंच के वक़्त तक वापस आ जाऊंगा," ये शब्द तो पढ़नेवाले और श्रोताओं को सम्भवतः विशेष रूप से बुरे लगे। लोग बेहद उत्तेजित थे और इस परचे में जो कुछ कहा गया था, वह बहुत आम और मामूली था। यह तो वही कुछ था जिसे उनमें से हर आदमी कह सकता था और इसलिये उच्चतम

अधिकारी अर्थात् मास्को के गवर्नर को इसे अपने परचे में नहीं कहना चाहिये था।

सभी निराशापूर्ण मौन साधे खड़े थे। लम्बे-तड़ंगे नौजवान ने अपने होंठ हिलाये और वह थोड़ा लड़खड़ाया।

"हम इसी से क्यों न पूछें! .. यह वही तो है न? इससे पूछना कैसा रहेगा! .. इसमें कोई बुराई नहीं... वह हमें सब कुछ बता देगा..." भीड़ की पिछली क़तारों में अचानक यह सुनायी दिया और सभी का ध्यान चौक में से जा रही बड़े थानेदार की टमटम की ओर चला गया जिसके साथ दो घुड़सवार सिपाही भी थे।

काउंट रस्तोपचिन के आदेशानुसार थानेदार इस सुबह को नदी में नावों को जलाने गया था और इस सिलसिले में उसे ख़ासी बड़ी रक़म मिली थी जो इस वक़्त उसकी जेब में थी। जब उसने लोगों की भीड़ को अपनी ओर आते देखा तो कोचवान को टमटम रोकने का हुक्म दिया।

"कौन लोग हैं ये?" उसने अपनी टमटम के नज़दीक आ रहे अलग-अलग और सहमे-सहमे लोगों से चिल्लाकर पूछा। "कौन हैं ये लोग? मैं किससे पूछ रहा हूं?" कोई जवाब न मिलने पर उसने अपना सवाल दोहराया।

"हुज़ूर," गाढ़े का ओवरकोट पहने क्लर्क ने जवाब दिया। "बड़े हुज़ूर, हम कोई फ़सादी नहीं, बल्कि ये लोग, जैसाकि महामान्य काउंट ने कहा है, उनके परचे के अनुसार अपनी जान की परवाह न करते हुए सेवा करना चाहते हैं।"

"काउंट गये नहीं, यहीं पर हैं और आप लोगों के लिये भी आवश्यक प्रबन्ध किया जायेगा," थानेदार ने कहा। "गाड़ी बढ़ाओ!" उसने कोचवान को आदेश दिया। लोगों की भीड़ दूर जाती टमटम की तरफ़ देखते हुए उनके गिर्द जमा हो गयी जिन्होंने थानेदार की बातें सुनी थीं।

इसी समय थानेदार ने कुछ भयभीत होते हुए मुड़कर देखा, कोचवान से कुछ कहा और टमटम के घोड़े ज़्यादा तेज़ी से दौड़ने लगे।

"साथियो, हमें धोखा दिया गया है! आइये, सीधे काउंट के पास चलें!" लम्बे-तड़ंगे नौजवान की आवाज़ सुनायी दी। "साथियो, इसे जाने न दिया जाये! वह हमें पूरी तरह से जवाब दे! जाने न

लगे।

शोर मचाती और थानेदार का पीछा करती लोगों की भीड़ लुब्यान्का सड़क की तरफ़ बढ़ने लगी।

"कुलीन और व्यापारी तो सभी चले गये और हमें मरने-खपने के लिये छोड़ गये? हम क्या कोई कुत्ते हैं?" भीड़ में अधिकाधिक लोग ऐसा कह रहे थे।

२४

कुतूज़ोव से भेंट करने के बाद काउंट रस्तोपचिन अपने को इस कारण बहुत क्षुब्ध तथा अपमानित अनुभव करते हुए कि उसे युद्ध-परिषद की बैठक में नहीं बुलाया गया, कि राजधानी की रक्षा के काम में भाग लेने के उसके प्रस्ताव की ओर कुतूज़ोव ने कोई ध्यान नहीं दिया तथा युद्ध-शिविर में अपने सामने आनेवाले इस नये दृष्टिकोण से हैरान होता हुआ कि राजधानी में अमन-चैन और उसकी देशभक्तिपूर्ण मनःस्थिति का प्रश्न न केवल गौण, बल्कि सर्वथा अनावश्यक और तुच्छ है, १ सितम्बर की शाम को मास्को लौटा। रात का भोजन करने के बाद काउंट कपड़े पहने हुए ही सोफ़े पर लेट गया और रात के एक बजे कुतूज़ोव का पत्र लेकर आनेवाले एक सन्देशवाहक ने उसे जगा दिया। पत्र में कहा गया था कि रूसी सेना मास्को से र्याज़ान मार्ग की ओर पीछे हट रही है और काउंट कृपा करके शहर में से उसका मार्ग-दर्शन करने के लिये कुछ पुलिस-अफ़सर नियुक्त कर दे। काउंट रस्तोपचिन के लिये यह कोई नयी ख़बर नहीं थी। पोक्लोन्नाया पहाड़ी पर कुतूज़ोव के साथ पिछले दिन हुई भेंट के बाद ही नहीं, बल्कि बोरोदिनो की लड़ाई के बाद ही काउंट रस्तोपचिन यह जान गया था कि मास्को को दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा, क्योंकि मास्को आनेवाले सभी जनरल यही कहते थे कि डटकर एक और लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती तथा काउंट की अनुमति से हर रात को सरकारी सम्पत्ति यहां से ले जायी जाती थी और शहर की आधी आबादी यहां से जा चुकी

थी। इसके बावजूद आधी रात तथा पहली गहरी नींद के वक़्त कुतूज़ोव के आदेश के रूप में यह रुक़्क़ा पाकर काउंट को हैरानी और झल्लाहट भी हुई।

इस वक़्त के दौरान अपने कार्य-कलापों को स्पष्ट करते हुए काउंट रस्तोपचिन ने अपनी टिप्पणियों में कई बार यह लिखा कि उस समय उसके सामने दो महत्त्वपूर्ण लक्ष्य थे – मास्को में शान्ति बनाये रखना और मास्कोवासियों को शहर से भेजना। अगर इन दो लक्ष्यों को स्वीकार कर लिया जाता है तो रस्तोपचिन के सारे कार्य-कलाप दोषहीन हो जाते हैं। पावन अवशेष, हथियार, गोला-बारूद, अनाज-भण्डार, आदि किसलिये मास्को से नहीं ले जाये गये? किसलिये हज़ारों लोगों को यह धोखा दिया गया कि मास्को को दुश्मन के हवाले नहीं किया जायेगा और इस तरह उन्हें बरबाद कर दिया गया? – वह इसलिये कि राजधानी में शान्ति बनी रहे, काउंट रस्तोपचिन का स्पष्टीकरण हमें यह बताता है। दफ़्तरों से ढेरों अनावश्यक काग़ज़ों, लेपिख़ का ग़ुब्बारा और ऐसी ही दूसरी चीज़ों को किसलिये मास्को से ले जाया गया? – ताकि नगर को ख़ाली छोड़ दिया जाये, काउंट रस्तोपचिन का स्पष्टीकरण हमें यह उत्तर देता है। केवल इतना मान लेना ही काफ़ी है कि फ़लां चीज़ से शहर का अमन-चैन नष्ट हो सकता है और तब हर गति-विधि उचित सिद्ध हो जाती है।

अमन-चैन को बनाये रखने के आधार पर ही सभी भयानक कार्रवाइयां की गयीं।

१८१२ में मास्को में अमन-चैन के लिये ख़तरा पैदा होने के बारे में काउंट रस्तोपचिन के भय का क्या आधार था? ऐसा मानने का क्या कारण था कि नगर में विद्रोह या दंगा-फ़साद हो सकता है? मास्कोवासी शहर छोड़कर जा रहे थे और पीछे हटती हुई सेनायें मास्को में आ रही थीं। इसके परिणामस्वरूप लोग भला किसलिये विद्रोह कर सकते थे?

मास्को में ही नहीं, बल्कि पूरे रूस में दुश्मन के आने पर विद्रोह जैसी कोई चीज़ नहीं हुई। सितम्बर की १ और २ तारीख़ को मास्को में दस हज़ार से ज़्यादा लोग बाक़ी रह गये थे और गवर्नर के सामने जमा होनेवाली भीड़ के अतिरिक्त, जिसे उसी ने ऐसा करने को उकसाया था, कोई भी गड़बड़ नहीं हुई थी। बिल्कुल स्पष्ट है कि लोगों में किसी

भी तरह की बेचैनी और भी कम हुई होती, यदि बोरोदिनो की लड़ाई के बाद, जब यह ज़ाहिर हो गया था या कम से कम ऐसी सम्भावना नज़र आने लगी थी कि मास्को को दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा – यदि उस समय लोगों में हथियार और अपने परचे बांटकर उन्हें उत्तेजित करने के बजाय रस्तोपचिन सभी पावन अवशेषों, गोला-बारूद और धन को मास्को से भिजवा देता और लोगों से साफ़-साफ़ कह देता कि शहर को दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा।

आवेगपूर्ण, गर्ममिज़ाज और हमेशा प्रशासन के उच्च क्षेत्रों से सम्बन्ध रखनेवाला रस्तोपचिन बेशक देशभक्तिपूर्ण भावनाओं से परिपूर्ण था, फिर भी उस जनसाधारण को वह ज़रा भी नहीं समझता था जिसका वह संचालन करना चाहता था। शत्रु के स्मोलेन्स्क में प्रवेश करने के समय से ही रस्तोपचिन ने अपनी कल्पना में अपने लिये जन-भावना – रूस के हृदय – के संचालन की भूमिका तय कर ली थी। उसे केवल यही नहीं प्रतीत होता था (जैसे कि हर प्रशासक को प्रतीत होता है) कि वह मास्कोवासियों की बाहरी गति-विधियों का संचालन करता है, बल्कि यह भी प्रतीत होता था कि वह बाज़ारू-गंवारू भाषा, ऐसी भाषा में लिखे गये परचों और आह्वानों से, जिसे आम लोग अपने वर्ग में नफ़रत करते हैं और शासकों द्वारा उपयोग में लाये जाने पर समझ नहीं पाते, उनके मानसिक व्यवहार का भी निर्देशन करता है। जन-भावना के निर्देशक की सुन्दर भूमिका रस्तोपचिन को इतनी अधिक पसन्द आई, उसने उसके दिल में इतनी गहरी जगह बना ली कि जब इस भूमिका से वंचित होने, किसी भी प्रकार के वीरतापूर्ण प्रभाव के बिना मास्को को छोड़ने की आवश्यकता बिल्कुल अप्रत्याशित ही उसके सामने आ गयी, तो उसके पांवों के नीचे से वह ज़मीन, जिसपर वह खड़ा था, अचानक निकल गयी और वह ज़रा भी यह नहीं समझ पा रहा था कि क्या करे और क्या न करे। बेशक वह जानता था, फिर भी आख़िरी मिनट तक सच्चे दिल से इस बात पर यक़ीन नहीं कर पाया कि मास्को छोड़ना होगा और इसके लिये उसने कुछ भी नहीं किया। मास्कोवासी उसकी इच्छा के विरुद्ध मास्को से जाते रहे। अगर सरकारी दफ़्तरों को यहां से हटाया गया तो इनके संचालकों की मांग पर जिनके साथ काउंट मन मारकर ही सहमत हुआ। वह ख़ुद तो अपनी उसी भूमिका में खोया रहा जो उसने अपने लिये तैयार की

थी। कल्पना की ऊंची उड़ान भरने की क्षमता रखनेवाले लोगों के साथ जैसाकि अक्सर होता है, काउंट बहुत समय से ही यह जानता था कि मास्को दुश्मन के हवाले कर दिया जायेगा, लेकिन वह बुद्धि के आधार पर ही ऐसा जानता था, मन से इसपर विश्वास नहीं करता था और अपने को इस नयी परिस्थिति के अनुरूप ढाल नहीं पाया था।

काउंट रस्तोपचिन की अत्यधिक और उत्साहपूर्ण सारी क्रियाशीलता (वह किस हद तक उपयोगी थी और उसने जनता को कितना प्रभावित किया – यह दूसरी बात है), उसकी सारी क्रियाशीलता का सिर्फ़ यही उद्देश्य था कि मास्कोवासियों में उसी भावना का संचार करे जो वह स्वयं अनुभव करता था यानी फ़्रांसीसियों के प्रति घृणा और अपने में आत्मविश्वास।

किन्तु जब घटना ने अपना वास्तविक, ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त करना आरम्भ किया, जब केवल शब्दों में ही फ़्रांसीसियों के विरुद्ध घृणा प्रकट करना काफ़ी नहीं रहा, जब लड़ाई के रूप में भी इस घृणा को व्यक्त नहीं किया जा सकता था, जब मास्को के सिलसिले में प्रस्तुत एक प्रश्न के बारे में आत्मविश्वास प्रकट करना भी व्यर्थ प्रतीत हुआ, जब मास्को की सारी आबादी एकबारगी अपनी सारी सम्पत्ति छोड़कर मास्को से चली गयी और अपनी ऐसी नकारात्मक हरकत से उसने जन-भावना की पूरी शक्ति को व्यक्त कर दिया – तब वह भूमिका, जो रस्तोपचिन ने अपने लिये चुनी थी, अचानक बेमानी होकर रह गयी। सहसा उसने अपने को एकाकी, दुर्बल और हास्यास्पद अनुभव किया और यह कि उसके पांवों के नीचे से ज़मीन खिसक गयी थी।

नींद से जगाये जाने और कुतूज़ोव का रूखा-सा तथा आदेशात्मक रुक्क़ा मिलने पर रस्तोपचिन अपने को और भी ज़्यादा दोषी महसूस करते हुए अधिक झल्लाहट ही अनुभव करने लगा। जो कुछ उसे सौंपा गया था, वह सारी सरकारी सम्पत्ति, जो उसे यहां से भेज देनी चाहिये थी, अभी तक मास्को में ही थी। इस सबको यहां से ले जाना सम्भव नहीं था।

"इसके लिये कौन दोषी है, किसने मामले को ऐसी हालत तक पहुंचाया है?" वह सोच रहा था। "ज़ाहिर है कि मैंने तो नहीं। मेरे यहां तो सब कुछ तैयार था, मैं तो मास्को को अपनी मुट्ठी में बन्द किये था! मामले को किस हालत तक पहुंचा दिया है उन्होंने! कमीने,

ग़द्दार!" इन कमीनों और ग़द्दारों की स्पष्ट रूप से कल्पना न कर पाते, किन्तु इन ग़द्दारों से नफ़रत करने की आवश्यकता अनुभव करते हुए वह सोच रहा था, जिन्होंने उसे इस बेहूदा और हास्यास्पद स्थिति में डाल दिया था जिसमें वह इस वक़्त था।

इस पूरी रात को काउंट रस्तोपचिन आदेश देता रहा जिसके लिये मास्को के सभी भागों से उसके पास लोग आते रहे। काउंट के निकटवर्ती लोगों ने उसे कभी भी इतना उदास और झल्लाया हुआ नहीं देखा था।

"हुज़ूर, ज़ार-परिवार की सम्पत्ति की देख-भाल करनेवाले विभाग के डायरेक्टर का आदमी आया है... गिरजों के प्रशासन-विभाग, सिनेट, विश्वविद्यालय, यतीमख़ाने, अनुधर्माध्यक्ष का कर्मचारी आया है... यह जानना चाहता है... फ़ायर ब्रिगेड के बारे में आपका क्या हुक्म है? जेलर और पागलख़ाने के संचालक ने अपने आदमी भेजे हैं..." सारी रात काउंट को लगातार यही कुछ बताया जाता रहा।

काउंट ऐसे सभी प्रश्नों के बड़े संक्षिप्त और खीझे-खीझे उत्तर देता रहा जो यह ज़ाहिर करते थे कि अब उसके आदेशों-अनुदेशों की कोई ज़रूरत नहीं रही, कि उनके द्वारा की गयी सारी तैयारी को अब किसी ने गड़बड़ कर दिया है और आगे जो कुछ होगा, उसकी पूरी ज़िम्मेदारी इसी व्यक्ति पर होगी।

"तुम उस उल्लू से कह दो," काउंट ने ज़ार-परिवार की सम्पत्ति की देख-भाल करनेवाले विभाग के आदमी के प्रश्न का उत्तर दिया, "कि वह अपने लेखागार की रक्षा के लिये यहीं रहे। फ़ायर ब्रिगेड के बारे में तुम क्या बेहूदा सवाल पूछ रहे हो? उसके पास घोड़े हैं – व्लादीमिर शहर चला जाये। घोड़े फ़्रांसीसियों को नहीं मिलने चाहिये।"

"हुज़ूर, पागलख़ाने का सुपरिंटेंडेंट आया है, क्या हुक्म आपका?"

"मेरा हुक्म? सभी यहां से चले जायें, बस... और पागलों को शहर में छोड़ दिया जाये। जब हमारे यहां पागल लोग फ़ौजों के कमांडर हैं तो इन पागलों को आज़ाद करना तो मानो भगवान का ही आदेश है।"

जब क़ैदियों के बारे में पूछा गया तो काउंट जेलर पर बरस पड़ा:

"तो क्या मैं उनकी निगरानी के लिये तुम्हें दो बटालियनें दूं, जो मेरे पास हैं नहीं? उन्हें रिहा कर दो और क़िस्सा ख़त्म!"

"लेकिन हुज़ूर, कुछ राजनीतिक बन्दी भी है – मेशकोव*, वेरेश्चागिन।"

"वेरेश्चागिन! उसे अभी तक फांसी के तख़्ते पर नहीं लटकाया गया?" रस्तोपचिन चिल्ला उठा। "उसे मेरे पास लाओ।"

२५

सुबह के नौ बजते न बजते, जब रूसी सेनायें मास्को में से गुज़रने भी लगी थीं, कोई भी काउंट से किसी तरह के आदेश-अनुदेश लेने नहीं आता था। वे सभी लोग, जो मास्को से जा सकते थे, अपने आप ही जा रहे थे और जो नहीं जा रहे थे, वे सब ख़ुद ही यह तय कर रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

काउंट रस्तोपचिन ने सोकोल्निकी जाने के लिये बग्घी तैयार करने का हुक्म दिया और ख़ुद नाक-भौंह सिकोड़े, ज़र्द चेहरा लिये, गुमसुम तथा हाथ पर हाथ धरे अपने कमरे में बैठा था।

शान्त और ऐसे समय में, जब किसी तरह की कोई उथल-पुथल नहीं होती, हर प्रशासक को ऐसा लगता है कि उसके प्रयासों की बदौलत ही उसके अधीन सारी आबादी का काम-काज अच्छे ढंग से चल रहा है और इस चेतना को कि उसके बिना काम नहीं चल सकता, वह अपनी सारी मेहनत और कोशिशों का सबसे बड़ा पुरस्कार अनुभव करता है। यह समझना आसान है कि जब तक इतिहास का सागर शान्त रहता है, नाजुक-सी नाव पर सवार और बांस के सहारे जनता के जहाज़ के साथ ख़ुद भी तैरते हर प्रशासक को ऐसा लगता है कि उसी के प्रयासों के फलस्वरूप वह जहाज़ तैरता जा रहा है जो स्वयं उसके लिये भी अवलम्ब है। किन्तु जैसे ही तूफ़ान आता है, सागर बेचैन हो उठता है और जहाज़ ख़ुद ही लहरों के थपेड़ों का सामना करने लगता है, तब इस तरह के भ्रम की कोई

---

* प० मेशकोव – १८१२ में वकील था। उसने नेपोलियन से संबंधित वेरेश्चागिन की दस्तावेज़ों को नक़्ल किया था। – सं०

गुंजाइश नहीं रहती। विराटकाय जहाज़ अपनी स्वतन्त्र गति से आगे बढ़ता जाता है, प्रशासक की नाव का बांस बढ़ते जाते जहाज़ तक नहीं पहुंचता और तब वह प्रशासक शक्ति-स्रोत के बजाय तुच्छ, अनुपयोगी और दुर्बल व्यक्ति बनकर रह जाता है।

रस्तोपचिन यही महसूस कर रहा था और इससे उसे झल्लाहट हो रही थी।

थानेदार, जिसे भीड़ ने रोक लिया था और एडजुटेंट, जो यह बताने आया था कि बग्घी तैयार है, एकसाथ ही काउंट के पास आये। दोनों के चेहरे फक थे। थानेदार ने यह कहने के बाद कि उसे सौंपा गया कार्यभार पूरा कर दिया गया है, काउंट को सूचित किया कि अहाते में लोगों की बड़ी भीड़ जमा है, जो उससे मिलना चाहती है।

रस्तोपचिन कोई भी जवाब दिये बिना उठा, तेज़ क़दमों से अपने शानदार और रोशन ड्राइंगरूम में चला गया, छज्जे के दरवाज़े के पास जाकर उसने सिटकिनी पर हाथ रखा, उसपर से हाथ हटा लिया और खिड़की के पास गया जिसमें से पूरी भीड़ कहीं ज़्यादा साफ़ तौर पर दिखाई दे रही थी। लम्बा-तड़ंगा नौजवान कठोर मुख-मुद्रा बनाये अगली क़तारों में खड़ा था और हाथ हिला-हिलाकर कुछ कह रहा था। लहू-लुहान लुहार भी उसके पास उदास-सा खड़ा था। बन्द खिड़की में से भी लोगों की आवाज़ों का शोर सुनायी दे रहा था।

"बग्घी तैयार है?" रस्तोपचिन ने खिड़की से हटते हुए पूछा।

"तैयार है, हुज़ूर," एडजुटेंट ने जवाब दिया।

रस्तोपचिन फिर से छज्जे के दरवाज़े के पास गया।

"ये लोग क्या चाहते हैं?" उसने थानेदार से पूछा।

"हुज़ूर, ये लोग कहते हैं कि आपके आदेशानुसार फ़्रांसीसियों से टक्कर लेने को जमा हुए हैं, ग़द्दारी के बारे में भी कुछ शोर मचा रहे थे। लेकिन जनाब, यह उपद्रवी लोगों की भीड़ है। मैंने तो बड़ी मुश्किल से अपना पिंड छुड़ाया। हुज़ूर, मैं यह सुझाव देने की इजाज़त चाहता हूं..."

"आप जा सकते हैं, आपके बिना ही मैं यह जानता हूं कि मुझे क्या करना चाहिये," रस्तोपचिन झुंझलाकर चिल्ला उठा। वह छज्जे के दरवाज़े के क़रीब खड़ा हुआ भीड़ को देख रहा था। "तो यह हालत

कर दी है उन्होंने रूस की! तो यह हालत कर दी है उन्होंने मेरी!" रस्तोपचिन अपने अन्तर में किसी ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध उमड़ते ग़ुस्से को अनुभव करते हुए सोच रहा था जिसे इस सबके लिये, जो हुआ था, दोषी ठहराया जा सकता हो। जैसाकि गर्ममिज़ाज लोगों के साथ अक्सर होता है, उसपर ग़ुस्सा हावी हो गया था, लेकिन वह इसके लिये अभी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ रहा था जिसके मत्थे यह सारा दोष मढ़ा जा सके। "यह है घटिया लोगों की भीड़, आबादी की तलछट, वह कूड़ा-कबाड़ जिसे उन्होंने अपनी बेवक़ूफ़ी के कारण भड़का दिया है! इन लोगों को कोई बलि का बकरा चाहिये," हाथ हिला-डुला रहे लम्बे-तड़ंगे नौजवान को देखते हुए उसने सोचा। उसके दिमाग़ में यह विचार इसलिये भी आया कि ख़ुद उसे भी किसी बलि के बकरे की ज़रूरत थी, कोई ऐसा आदमी चाहिये था जिसपर वह अपना ग़ुस्सा निकाल सकता।

"बग्घी तैयार है?" उसने दूसरी बार पूछा।

"तैयार है, हुज़ूर। वेरेश्चागिन के बारे में आपका क्या हुक्म है? वह पोर्च के क़रीब खड़ा हुआ इन्तज़ार कर रहा है," एडजुटेंट ने उत्तर दिया।

"ओह!" रस्तोपचिन मानो किसी बात के अचानक याद आ जाने पर हैरान होकर कह उठा।

वह जल्दी से दरवाज़ा खोलकर दृढ़ता से क़दम बढ़ाता हुआ छज्जे में चला गया। भीड़ का शोर अचानक बन्द हो गया, लोगों ने टोप-टोपियां उतार लीं और सबकी नज़रें छज्जे में आनेवाले काउंट की तरफ़ उठ गयीं।

"नमस्ते, भाइयो!" काउंट ने जल्दी-जल्दी और ऊंची आवाज़ में कहा। "आने के लिये शुक्रिया। मैं अभी आप लोगों के पास आता हूं, लेकिन पहले तो हमें एक बदमाश से निपटना होगा। हमें उस बद-माश को सज़ा देनी है जिसके कारण मास्को तबाह हुआ है। मेरा इन्त-ज़ार कीजिये!" और काउंट उसी तरह तेज़ क़दमों से तथा दरवाज़े को फटाक से बन्द करते हुए कमरे में वापस चला गया।

भीड़ में अनुमोदनसूचक और प्रसन्नता प्रकट करती हुई खुसर-फुसर सुनायी दी। "तो वह सभी बदमाशों को ठीक करेगा! और तुम कह रहे हो कि फ़्रांसीसी... वह तो सभी की अक़्ल ठिकाने कर

देगा!" लोग मानो पूरा भरोसा न करने के लिये एक-दूसरे की भर्त्सना करते हुए कह रहे थे।

कुछ क्षण बाद मुख्य द्वार से एक फ़ौजी अफ़सर बाहर आया, उसने कोई आदेश दिया और ड्रगून पंक्तिबद्ध हो गये। छज्जे के सामने खड़ी लोगों की भीड़ जल्दी से पोर्च की तरफ़ चली गयी। क्रोध प्रकट करनेवाले तेज़ क़दमों से पोर्च में आकर रस्तोपचिन ने मानो किसी को ढूंढ़ते हुए इधर-उधर नज़र दौड़ाई।

"कहां है वह?" काउंट ने पूछा और यह पूछते ही उसने घर के कोने के पीछे से पतली और लम्बी गर्दन और अध-मुंडे सिरवाले* एक नौजवान को दो ड्रगूनों के बीच आते देखा। वह लोमड़ी की खाल के अस्तरवाला नीले रंग का फटा-फटाया कोट, जो कभी तो बड़ा शानदार रहा होगा, क़ैदियों का सूती कपड़े का सुथना पहने था जिसके पायंचे उसने गन्दे और घिसी एड़ियोंवाले पतले-पतले बूटों में खोंस रखे थे। उसकी दुर्बल और पतली-पतली टांगों में भारी बेड़ियां थीं जो उसकी डांवांडोल चाल में बाधा डालती थीं।

"ओह!" रस्तोपचिन ने लोमड़ी की खाल के अस्तरवाला कोट पहने नौजवान की ओर से झटपट अपनी नज़र हटाते और पोर्च की निचली पैड़ी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "इसे वहां खड़ा कर दो!" बेड़ियों को खनखनाते और गर्दन को दबानेवाले कोट के कालर को एक उंगली से पकड़े हुए बन्दी बड़ी मुश्किल से इंगित पैड़ी पर चढ़ा, अपनी लम्बी गर्दन को उसने दो बार इधर-उधर घुमाया, गहरी सांस ली और आज्ञाकारिता का संकेत करते हुए अपने पतले-पतले हाथों को, जो किसी मज़दूर के हाथ जैसे नहीं थे, सामने की ओर बांध लिया।

यह नौजवान जब तक पैड़ी पर खड़ा हुआ, उन कुछ क्षणों के दौरान ख़ामोशी छायी रही। केवल भीड़ के पिछले भाग में, जहां से लोग एक-दूसरे को धकियाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे, घुरघुराहट, आह-ओह, रेल-पेल और पांवों के बदले जाने की आवाज़ सुनायी दे रही थी।

---

* पुराने रूस में कठोर श्रम के साथ कारावास के लिये दण्डित अपराधियों का आधा सिर मूंड दिया जाता था। – सं०

रस्तोपचिन इस बात की प्रतीक्षा करते हुए कि अपराधी इंगित स्थान पर खड़ा हो जाये, माथे पर बल डाले हुए उसपर अपना हाथ फेर रहा था।

"भाइयो!" रस्तोपचिन ने खनकती आवाज़ में कहा, "यह आदमी, यह वेरेश्चागिन – यही वह कमीना आदमी है जिसकी वजह से हमें मास्को से हाथ धोना पड़ रहा है।"

लोमड़ी की खाल के अस्तरवाला कोट पहने नौजवान अपनी कलाइयों को पेट पर बांधे, विनीत मुद्रा में और कुछ झुका हुआ खड़ा था। उसका दुबला-पतला जवान चेहरा, जिसपर घोर निराशा का भाव छाया था और जो मुंडे हुए सिर के कारण बड़ा कुरूप लग रहा था, नीचे झुका हुआ था। काउंट के पहले ही शब्दों पर उसने धीरे से अपना सिर ऊपर उठाया तथा कनखियों से काउंट को देखा मानो उससे कुछ कहना चाहता हो या कम से कम उससे नज़रें मिलाना चाहता हो। किन्तु रस्तोपचिन उसकी ओर नहीं देख रहा था। इस नौजवान की पतली, लम्बी गर्दन पर कान के पीछे रस्सी जैसी एक नस उभरी, नीली हो गयी और अचानक उसका चेहरा लाल हो गया।

सभी की नज़रें उसी पर टिकी हुई थीं। उसने भीड़ की तरफ़ देखा और मानो उस भाव से कुछ आश्वस्त होकर, जो उसे लोगों के चेहरों पर दिखाई दिया, दयनीय तथा सहमे-सहमे ढंग से मुस्कराया, फिर से सिर झुका लिया और पांव बदले।

"उसने अपने ज़ार और मातृभूमि के साथ ग़द्दारी की है, वह बोनापार्ट के हाथों बिक गया, सिर्फ़ यही एक रूसी है जिसने सभी रूसियों के माथे पर कलंक का टीका लगा दिया है और इसी के कारण मास्को का ऐसा बुरा हाल हो रहा है," रस्तोपचिन नीरस और तीखी आवाज़ में कह रहा था। किन्तु अचानक उसने नीचे, वेरेश्चागिन की तरफ़ देखा जो अब भी पहले की तरह विनीत मुद्रा में खड़ा था। इस नज़र से वह मानो आपे से बाहर हो गया और हाथ ऊपर उठाकर लोगों को सम्बोधित करते हुए लगभग चिल्ला उठा – "आप लोग इसके साथ जैसा भी चाहें, सुलूक कर सकते हैं! मैं इसे आपके हवाले कर रहा हूं!"

लोग ख़ामोश रहे और केवल एक-दूसरे के साथ अधिकाधिक सटते चले गये। रेल-पेल को बर्दाश्त करना, इस दूषित उमस में सांस लेना,

हिलने-डुलने में भी असमर्थ होना, कुछ अस्पष्ट, अनबूझ और भयानक की प्रतीक्षा करना असह्य होता जा रहा था। अगली क़तारों में खड़े लोग, जो अपने सामने हो रही सारी घटना को डरी-डरी, फैली-फैली आंखों से और मुंह बाये देख-सुन रहे थे, अपने पीछे से पड़नेवाले भीड़ के दबाव को बर्दाश्त करने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा रहे थे।

"मार डालो इसे! .. यही अच्छा होगा कि ग़द्दार को मार डाला जाये और रूस का नाम बदनाम न हो!" रस्तोपचिन चिल्लाया। "इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालो! मैं हुक्म दे रहा हूं!" रस्तोपचिन के शब्द नहीं, बल्कि क्रोधपूर्ण ध्वनियां सुनकर भीड़ ने गहरी सांस ली और आगे बढ़ी, किन्तु फिर से रुक गयी।

"काउंट! .." क्षण भर की निस्तब्धता में वेरेश्चागिन की सहमी और साथ ही भावुक आवाज़ सुनायी दी। "काउंट, हम सबके निर्णायक केवल भगवान ही हैं..." वेरेश्चागिन ने सिर ऊपर उठाकर कहा। फिर से उसकी पतली गर्दन पर मोटी नस उभरी, उसके चेहरे पर तेज़ी से लाली आई और ग़ायब हो गयी। वह जो कुछ कहना चाहता था, कह नहीं पाया।

"इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालो! मैं हुक्म दे रहा हूं .." रस्तोपचिन चिल्ला उठा जिसका चेहरा वेरेश्चागिन के चेहरे की तरह ही अचानक फक हो गया था।

"तलवारें निकाल लो!" अफ़सर ने ख़ुद म्यान से तलवार निकालते हुए चिल्लाकर ड्रगूनों को हुक्म दिया।

भीड़ में पहले से ज़्यादा उत्तेजना की एक और लहर आई, यह लहर अगली क़तारों तक पहुंच गयी, इसने उन्हें अपनी लपेट में ले लिया और इधर-उधर हिलाती-डुलाती हुई पोर्च की पैड़ियों तक धकेल ले गयी। लम्बा-तड़ंगा नौजवान, जिसके पथराये चेहरे पर जड़ता का भाव था और जिसका ऊपर उठा हुआ हाथ जहां का तहां ही रुका रह गया था, वेरेश्चागिन के क़रीब खड़ा था।

"वार करो!" फ़ौजी अफ़सर ने लगभग फुसफुसाकर ड्रगूनों से कहा और अचानक एक सैनिक ने, जिसका चेहरा ग़ुस्से से विकृत हो गया था, तलवार के मोथरे, उलटे भाग से वेरेश्चागिन के सिर पर वार किया।

"ओह!" वेरेश्चागिन भयभीत होकर और मानो यह न समझ

पाते हुए कि उसके साथ ऐसा क्यों किया गया है, हैरानी से ज़रा चीख़ा। भीड़ भी ऐसे ही आश्चर्य और भय से कराह उठी।

"हे भगवान!" किसी की दर्द भरी आवाज़ सुनायी दी।

किन्तु आश्चर्य प्रकट करनेवाली ऊंची आवाज़ के बाद वेरेश्चागिन दर्द से चीख़ उठा और यही चीख़ उसकी मौत का कारण बन गयी। अपनी चरम सीमा तक पहुंची हुई मानवीय भावनाओं की वह दीवार, जो अभी तक भीड़ को रोके थी, आन की आन में टूट गयी। अपराध आरम्भ हो गया था और अब उसे पूरा करना ज़रूरी था। भर्त्सना की दयनीय कराह भीड़ की भयानक और क्रोधपूर्ण चीख़-चिल्लाहट में डूबकर रह गयी। किसी जहाज़ को नष्ट कर डालनेवाली सातवीं और अन्तिम बड़ी लहर की भांति भीड़ की पिछली क़तारों से यह अन्तिम तथा अदम्य और प्रबल लहर उठी, अगली क़तारों तक पहुंच गयी, उन्हें अपने साथ बहा ले गयी, सभी कुछ को उसने अपनी लपेट में ले लिया। वार करनेवाले ड्रगून ने फिर से चोट करनी चाही। वेरेश्चागिन भय से चीख़ता और अपने सिर को हाथों से ढककर बचाता हुआ भीड़ की तरफ़ लपका। वह लम्बे-तड़ंगे नौजवान से जा टकराया, जिसने वेरेश्चागिन की पतली-सी गर्दन को हाथों से दबोच लिया और उसके साथ ही भयानक ढंग से चीख़ते और ग़ुस्से से पागल हुए लोगों की उमड़ती भीड़ के पैरों तले गिर गया।

कुछ लोग वेरेश्चागिन को पीट और नोच रहे थे, दूसरे लम्बे-तड़ंगे नौजवान को। पैरों तले रौंदे जा रहे इन दोनों व्यक्तियों और उन लोगों की चीख़-पुकार, जो लम्बे-तड़ंगे नौजवान को बचाने की कोशिश कर रहे थे, भीड़ के ग़ुस्से को और भड़का रही थी। लहू-लुहान और अधमरे मज़दूर को ड्रगून बहुत देर तक भीड़ के हाथों से मुक्त नहीं करवा पाये। उस जोश और उतावली के बावजूद, जिससे भीड़ आरम्भ किये गये काम को समाप्त करना चाहती थी, वेरेश्चागिन को पीटने, उसका गला घोंटने और उसे नोचने-खसोटनेवाले लोग उसे मार नहीं सके। भीड़ इन दोनों पर सभी दिशाओं से झपट रही थी, इन्हें मध्य में रखते हुए एक पिंड की भांति दायें-बायें हिला रही थी और लोगों के लिये लम्बे नौजवान की जान लेना या उसे मुक्त करवा लेना असम्भव बना रही थी।

"क्या उसपर कुल्हाड़ा चलाना चाहिये?.. कुचल डाला... ग़द्दार,

उसने ईसा मसीह के साथ विश्वासघात किया है... ज़िन्दा है... बहुत कड़ी जान है... ऐसी ही बुरी हालत होनी चाहिये इसकी। क्या, कुल्हाड़े से वार किया जाये! .. क्या अभी तक ज़िन्दा है?"

इस शिकार ने जब अपनी जान बचाने के लिये संघर्ष बन्द कर दिया और उसकी चीख़-चिल्लाहट दम तोड़ते आदमी की लम्बी तथा लयबद्ध घरघराहट में बदल गयी, भीड़ तभी ख़ून से लथपथ इस लाश के इर्द-गिर्द जल्दी से इधर-उधर आने-जाने लगी। हर कोई उसके पास जाता, जो कुछ किया गया था, उसे देखता और संत्रस्त, भर्त्सना करता तथा हैरान होता हुआ भीड़ में वापस चला जाता।

"हे भगवान, लोग तो बिल्कुल दरिन्दे हैं, कोई ज़िन्दा ही कैसे बच सकता है!" भीड़ में सुनायी दे रहा था। "और एकदम जवान था... शायद किसी व्यापारी का बेटा था, कैसे लोग हैं! .. कहते हैं कि यह तो कोई दूसरा था... कैसे दूसरा था... हे भगवान ! .. एक और का भी पीट-पीटकर बुरा हाल कर दिया गया है, मुश्किल से ज़िन्दा है... ओह, कैसे लोग हैं... किसी भी तरह के पाप से नहीं डरते..." भीड़ में शामिल वही लोग अब मृत के ख़ून और मिट्टी से सने, नीले चेहरे तथा लगभग कटी हुई लम्बी, पतली गर्दन को दुख तथा करुणा के भाव से देखते हुए कह रहे थे।

अपनी कर्त्तव्य-परायणता दिखानेवाले एक पुलिस अफ़सर ने यह मानते हुए कि गवर्नर साहब के अहाते में लाश का पड़े रहना बुरी बात है, दो ड्रगूनों को हुक्म दिया कि वे लाश को सड़क पर घसीट ले जायें। ड्रगून क्षत-विक्षत टांगों से लाश को पकड़कर घसीट ले चले। लम्बी गर्दन के ऊपर लहू-लुहान, धूल से लथपथ, मुंडा हुआ और निर्जीव सिर दायें-बायें लुढ़कता और ज़मीन पर घिसटता जा रहा था। लोग लाश से दूर हटते जा रहे थे।

वेरेश्चागिन जिस वक़्त नीचे गिर गया और लोगों की भीड़ बहुत ज़ोर से चीख़ती-चिल्लाती हुई उसके गिर्द जमा हो गयी और उसके ऊपर हिलने-डुलने लगी तो रस्तोपचिन के चेहरे का अचानक रंग उड़ गया और पिछले पोर्च की ओर जाने के बजाय, जहां उसकी बग्घी उसका इन्तज़ार कर रही थी, वह ख़ुद यह न जानते हुए कि किधर और किसलिये जा रहा है, सिर झुकाकर तेज़ क़दमों से उस दालान को लांघने लगा जो नीचेवाली मंज़िल के कमरों की तरफ़ ले जाता

था। काउंट के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और वह जूड़ी के बुख़ार के वक़्त की भांति बुरी तरह से कांप रहे अपने निचले जबड़े को किसी भी तरह वश में नहीं कर पा रहा था।

"हुज़ूर, इधर चलिये... कहां ले चलने का हुक्म देते हैं?.. कृपया इस तरफ़," उसे अपने पीछे किसी की कांपती, भयभीत आवाज़ सुनायी दी। काउंट रस्तोपचिन जवाब देने में असमर्थ था, वह चुपचाप मुड़ा और उधर ही चल दिया जिधर उससे चलने को कहा गया। पिछले पोर्च के सामने उसकी बग्घी खड़ी थी। चीख़ती-चिल्लाती भीड़ का दूर से आनेवाला शोर यहां भी सुनायी दे रहा था। काउंट रस्तोपचिन जल्दी से बग्घी में बैठ गया और उसने सोकोल्निकी के अपने उपनगरीय बंगले की ओर ले चलने का आदेश दिया। म्यास्नीत्स्काया सड़क पर पहुंचने के बाद, जहां भीड़ का शोर सुनायी नहीं देता था, काउंट मन ही मन पछताने लगा। उसने अपने मातहतों के सामने जो घबराहट और भय प्रकट हो जाने दिया था, उसे याद करके अब उसे झल्लाहट हो रही थी। "लोगों की भीड़ भयानक और घृणित होती है। भेड़ियों की तरह वह भी सिर्फ़ मांस से ही तृप्त होती है।" उसने फ़्रांसीसी में सोचा। "काउंट, हम सबके निर्णायक केवल भगवान ही हैं!" अचानक उसे वेरेश्चागिन के ये शब्द याद हो आये और उसे अपनी पीठ पर अप्रिय भावना की झुरझुरी-सी महसूस हुई। किन्तु यह भावना क्षणिक ही थी और काउंट ख़ुद अपने आप पर ही घृणा से मुस्करा दिया। "मेरे और भी कर्त्तव्य थे," उसने फ़्रांसीसी में सोचा। "मुझे लोगों को शान्त करना था। जन-कल्याण के लिये और बहुत-से लोगों ने बलि दी है और दे रहे हैं," और वह उन सामान्य दायित्वों के बारे में सोचने लगा जो उसे अपने परिवार, अपने को सौंपी गयी राजधानी और स्वयं अपने प्रति – फ़्योदर वसीलियेविच रस्तोपचिन के नाते नहीं (वह यह मानता था कि फ़्योदर वसीलियेविच रस्तोपचिन जन-कल्याण के लिये अपना बलिदान कर रहा था), बल्कि मास्को के गवर्नर, सत्ता और ज़ार के पूर्णाधिकारी प्रतिनिधि के रूप में पूरे करने थे। "अगर मैं सिर्फ़ फ़्योदर वसीलियेविच होता तो मेरा रास्ता बिल्कुल दूसरा होता, लेकिन गवर्नर के नाते मेरे लिये अपनी ज़िन्दगी और अपने पद की प्रतिष्ठा की रक्षा करना तो ज़रूरी था।"

बग्घी के नर्म स्प्रिंगों पर धीरे-धीरे हिलता-डुलता और भीड़ की भयानक चीख़-चिल्लाहट न सुनता हुआ रस्तोपचिन शारीरिक दृष्टि से शान्त हो गया और जैसाकि हमेशा होता है, शारीरिक दृष्टि से शान्त होते ही बुद्धि ने उसके मानसिक और नैतिक रूप से शान्त होने के भी आधार प्रस्तुत कर दिये। रस्तोपचिन को शान्त करनेवाला विचार कुछ नया नहीं था। जब से यह दुनिया बनी है और लोग एक-दूसरे की हत्या करते हैं, हर व्यक्ति ने अपने को हमेशा इसी विचार से तसल्ली देते हुए दूसरे व्यक्ति की हत्या की है। यह विचार है – जन-कल्याण का विचार।

भावावेश की गिरफ़्त में न आनेवाला व्यक्ति तो कभी भी नहीं जान पाता कि यह जन-कल्याण या जन-हित क्या होता है। किन्तु अपराध करनेवाला हमेशा निश्चित रूप से जानता है कि यह कल्याण किस चीज़ में निहित है। रस्तोपचिन अब यह जानता था।

वह न केवल अपने तर्क-वितर्क में ही अपनी हरकत की भर्त्सना नहीं करता था, बल्कि आत्मसन्तोष के लिये ऐसे आधार भी खोज पा रहा था कि उसने ऐसे बढ़िया मौक़े का इतना अच्छा फ़ायदा उठाया – अपराधी को दण्ड भी दे दिया और साथ ही भीड़ को शान्त करने में भी सफल हो गया।

"वेरेश्चागिन पर मुक़दमा चल चुका था और उसे मौत की सज़ा सुनायी जा चुकी थी," रस्तोपचिन ने सोचा (यद्यपि सिनेट ने उसे कठोर श्रम के साथ कारावास का ही दण्ड दिया था)। "वह जासूस और ग़द्दार था, मैं उसे सज़ा दिये बिना नहीं रह सकता था और इस तरह मैंने एक तीर से दो शिकार कर डाले – मैंने भीड़ को शान्त करने के लिये उसे बलि का एक बकरा भी दे दिया और साथ ही एक दुष्ट को सज़ा भी दे दी।"

अपने उपनगरीय बंगले पर लौटने और घरेलू मामलों में व्यस्त हो जाने पर काउंट पूरी तरह से शान्त हो गया।

आध घण्टे बाद काउंट की बग्घी बहुत तेज़ी से सोकोल्निकी के मैदान को पार कर रही थी और जो कुछ हुआ था, काउंट उसे पूरी तरह से भूलकर अब यह सोच तथा अनुमान लगा रहा था कि आगे क्या होनेवाला है। वह अब याउज़्स्की पुल की तरफ़ जा रहा था, जहां, जैसाकि उसे बताया गया था, कुतूज़ोव थे। काउंट रस्तोपचिन

मन ही मन उन क्रोधपूर्ण और चुभते हुए ताने-बोलियों की कल्पना कर रहा था जो वह उसे धोखा देने के लिये कुतूज़ोव से कहेगा। वह लोमड़ी की तरह मक्कार इस बूढ़े दरबारी को यह महसूस करवा देगा कि राजधानी मास्को को छोड़ने और रूस की तबाही (रस्तोपचिन ऐसे ही सोचता था) के जो भी बुरे नतीजे होंगे, उन सबके लिये उसका वह दिमाग़ ही ज़िम्मेदार होगा जिसके पेच ढीले हो चुके हैं। यह कल्पना करते हुए कि वह कुतूज़ोव से क्या कुछ कहेगा, रस्तोपचिन ग़ुस्से से बग्घी में इधर-उधर हिल-डुल रहा था और झुंझ-लाते हुए दायें-बायें देख रहा था।

सोकोल्निकी का मैदान सुनसान था। केवल उसके छोर पर ख़ैरात-ख़ाने और पागलख़ाने के क़रीब ही सफ़ेद पोशाकों में लोगों के कुछ दल नज़र आ रहे थे और ऐसे ही थोड़े से अलग-अलग व्यक्ति कुछ चीख़ते-चिल्लाते तथा हाथों को लहराते हुए मैदान में घूम रहे थे।

इनमें से एक काउंट रस्तोपचिन की बग्घी के रास्ते की ओर दौड़ता आ रहा था। स्वयं काउंट रस्तोपचिन, उसका कोचवान और काउंट के रक्षक-घुड़सवार यानी ड्रगून – सभी इन आज़ाद छोड़ दिये गये पागलों, ख़ास तौर पर उसे, जो इनकी तरफ़ भागा आ रहा था, भय और जिज्ञासा की मिली-जुली अस्पष्ट भावना से देख रहे थे।

हवा में लहराता सफ़ेद चोग़ा पहने, अपनी दुबली-पतली टांगों पर लड़खड़ाता, रस्तोपचिन पर अपनी नज़रें टिकाये और घरघरी आवाज़ में कुछ चिल्लाता तथा बग्घी रोकने के लिये इशारे करता हुआ यह पागल बड़ी तेज़ी से भागता आ रहा था। इसका उदास और गम्भीर चेहरा, जिसपर दाढ़ी के छोटे-बड़े अटपटे गुच्छे उगे हुए थे, दुबला-पतला और पीला था। गेरुआ-पीली झलक लिये उसकी आंखों की सफ़ेदी में उसकी काली-काली पुतलियां बड़ी बेचैनी से हिल-डुल रही थीं।

"ठहरो! रुको! मैं तुम्हें हुक्म दे रहा हूं!" वह चीख़ती, ऊंची आवाज़ में कह रहा था और हांफते हुए, प्रभावपूर्ण लहजे में तथा इशारे करता हुआ लगातार यही कुछ चिल्लाता जा रहा था।

वह बग्घी के बराबर आ गया और उसके साथ-साथ दौड़ने लगा।

"तीन बार मेरी हत्या की गयी, तीन बार मैं मुर्दों में से ज़िन्दा

हो गया। उन्होंने मुझे पत्थर मारे, मुझे सलीब पर ठोंका गया... मैं फिर ज़िन्दा हो जाऊंगा... ज़िन्दा हो जाऊंगा... ज़िन्दा हो जाऊंगा। मेरे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। भगवान का साम्राज्य नष्ट हो जायेगा... तीन बार उसे नष्ट करूंगा और तीन बार उसे फिर से बनाऊंगा," अपनी आवाज़ को अधिकाधिक ऊंचा करते हुए वह चिल्ला रहा था। काउंट रस्तोपचिन का चेहरा अचानक वैसे ही ज़र्द हो गया जैसे उस वक़्त हुआ था, जब लोगों की भीड़ वेरेश्चागिन पर टूट पड़ी थी। उसने मुंह फेर लिया।

"ते... ज़ी से!" उसने कांपती आवाज़ में चिल्लाकर कोचवान से कहा।

घोड़े जितनी भी तेज़ी से दौड़ सकते थे, बग्घी को खींचते हुए दौड़ने लगे। किन्तु रस्तोपचिन को अपने पीछे बहुत देर तक उन्मादी और हताशा से परिपूर्ण चीख़-चिल्लाहट सुनायी देती रही तथा उसकी आंखों के सामने लोमड़ी की खाल के अस्तरवाला कोट पहने ग़द्दार का चकित, भयभीत और लहू-लुहान चेहरा ही घूमता रहा।

यह स्मृति चाहे कितनी ही ताज़ा क्यों न थी, रस्तोपचिन अब यह महसूस करता था कि वह उसके दिल पर, उसके रक्त तक गहरी अंकित हो गयी है। उसे अब इस बात की स्पष्ट अनुभूति हो रही थी कि इस याद का ख़ूनी निशान कभी नहीं मिट सकेगा। इसके विपरीत, ज्यों-ज्यों समय बीतेगा, त्यों-त्यों यह भयानक स्मृति अधिकाधिक कटु और यातनापूर्ण होती हुई उसके जीवन की अन्तिम सांस तक अमिट बनी रहेगी। उसे अब ऐसा लगता था कि वह अपने इन शब्दों की गूंज सुन रहा है – "इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालो, वरना तुम्हारा सिर क़लम करवा दूंगा!" – "किसलिये कहे थे मैंने ये शब्द! योंही मुंह से निकल गये... अगर मैं इन्हें न कहता," वह सोच रहा था, "तब **कुछ भी** न हुआ होता।" वह उस ड्रगून का भयभीत और फिर अचानक कठोर हो जानेवाला चेहरा देख रहा था जिसने वार किया था और उसे उस मूक तथा भर्त्सनापूर्ण दृष्टि की भी झलक मिली जिससे लोमड़ी की खाल के अस्तरवाला कोट पहने उस छोकरे ने उसकी तरफ़ देखा था... "किन्तु मैंने अपने लिये तो ऐसा नहीं किया था। मेरे सामने और कोई चारा नहीं था... लोगों की भीड़, ग़द्दार... जन-कल्याण," वह सोच रहा था।

याउज़्स्की पुल के क़रीब सेनायें अभी भी रेल-पेल कर रही थीं। काफ़ी गर्मी थी। नाक-भौंह सिकोड़े और उदास कुतूज़ोव पुल के क़रीब बेंच पर बैठे थे और चाबुक से बालू पर रेखायें खींचने का खिलवाड़-सा कर रहे थे, जब शोर करती हुई एक बग्घी तेज़ी से उनके पास आकर रुकी। जनरल की वर्दी पहने, टोपी पर कलगी लगाये, क्रोध या भय के कारण बेचैनी से अपनी आंखों को इधर-उधर हिलाता-डुलाता हुआ एक व्यक्ति कुतूज़ोव के पास आया और फ़्रांसीसी भाषा में उनसे कुछ कहने लगा। यह काउंट रस्तोपचिन था। उसने कुतूज़ोव से कहा कि इसलिये यहां आया है कि मास्को यानी राजधानी का अस्तित्व समाप्त हो गया है और वहां केवल सेना ही रह गयी है।

"अगर आप महामान्य मुझसे यह न कहते कि लड़ाई के बिना मास्को को दुश्मन के हवाले नहीं करेंगे तो स्थिति बिल्कुल दूसरी ही होती – तब यह सब कुछ न हुआ होता!" उसने कहा।

कुतूज़ोव बहुत ग़ौर से रस्तोपचिन की तरफ़ देख रहे थे और मानो उन शब्दों का अर्थ न समझते हुए, जो उनसे कहे गये थे, इस बात के लिये पूरा ज़ोर लगा रहे कि अपने से बात करनेवाले व्यक्ति के चेहरे पर इस समय अंकित किसी विशेष भाव का अर्थ समझ सकें। रस्तोपचिन कुछ परेशानी महसूस करता हुआ चुप हो गया। कुतूज़ोव ने धीरे से सिर हिलाया और रस्तोपचिन के चेहरे की थाह लेती हुई दृष्टि हटाये बिना धीमी आवाज़ में कह उठे:

"हां, लड़ाई के बिना मैं मास्को को दुश्मन के हवाले नहीं करूंगा।"

उक्त शब्द कहते हुए कुतूज़ोव या तो बिल्कुल किसी दूसरी ही बात के बारे में सोच रहे थे या फिर यह जानते हुए कि वे एकदम बेमानी थे, उन्होंने जान-बूझकर इन्हें कहा था। कुछ भी हो, किन्तु काउंट रस्तोपचिन कोई उत्तर दिये बिना जल्दी से कुतूज़ोव के पास से दूर चला गया। और फिर यह भी कमाल हो गया कि मास्को का गवर्नर, बड़ा गर्वीला काउंट रस्तोपचिन अपने हाथ में कोड़ा लेकर पुल के क़रीब गया और चीख़ते-चिल्लाते हुए वहां जमा घोड़ा-गाड़ियों को वहां से खदेड़ने लगा।

२६

दिन के तीन बजने के बाद म्युराट की सेनायें मास्को में दाखिल हुईं। आगे-आगे वीर्टेमबर्ग का हुस्सार दस्ता था और उसके पीछे बहुत बड़े अमले के साथ ख़ुद नेपल्ज़ का बादशाह।

अर्बात सड़क के मध्य में, सन्त निकोलाई याव्लेन्नी के गिरजे के क़रीब रुककर म्युराट अग्रिम दस्ते से इस बात की सूचना पाने की प्रतीक्षा करने लगा कि नगर-दुर्ग यानी क्रेमलिन में क्या स्थिति है।

मास्को में रह जानेवाले कुछ मास्कोवासियों का एक छोटा-सा दल म्युराट के गिर्द जमा हो गया। ये सभी कलगियों और सोने से सजे-धजे, लम्बे बालोंवाले इस अजीब कमांडर को कुछ भेंपते और हैरान होते हुए देख रहे थे।

"क्या यही है इनका ज़ार? कुछ बुरा नहीं!" धीमी-धीमी आवाज़ें सुनायी दीं।

एक दुभाषिया इन लोगों के पास आया।

"टोपी तो उतार लो... टोपी तो," भीड़ के लोग एक-दूसरे से कहने लगे। दुभाषिये ने एक बूढ़े चौकीदार को सम्बोधित करते हुए पूछा कि क्रेमलिन दूर है या नहीं? चौकीदार अपने लिये बिल्कुल पराये दुभाषिये के पोलैंडी लहजे से चकराकर और उसके शब्दों को रूसी न मानते हुए उसकी बात बिल्कुल न समझ सका और दूसरों के पीछे जा खड़ा हुआ।

म्युराट दुभाषिये के क़रीब गया और उसने उसे यह पूछने का आदेश दिया कि रूसी सेनायें कहां हैं। रूसियों में से एक यह प्रश्न समझ गया और कोई लोग अचानक एकसाथ ही दुभाषिये को उत्तर देने लगे। अग्रिम दस्ते के एक फ़ांसीसी अफ़सर ने अपने घोड़े को म्युराट के क़रीब ले जाकर उसे सूचित किया कि दुर्ग के फाटक पर मोरचेबन्दी की गयी है और शायद रूसी सेना वहां घात लगाये बैठी है।

"ठीक है," म्युराट ने जवाब दिया और अपने अमले के एक महानुभाव को सम्बोधित करते हुए यह आदेश दिया कि चार हल्की तोपों को क्रेमलिन के फाटक के सामने ले जाकर उसपर गोलाबारी की जाये।

म्युराट के पीछे-पीछे आ रहे विराट सेना-दल में से तेज़ी से दौड़ती तोप-गाड़ियां सामने आयीं और अर्बात की ओर बढ़ चलीं। व्ज़द्वीजेन्का सड़क के अन्त तक पहुंचकर ये तोप-गाड़ियां रुक गयीं और चौक में पंक्तिबद्ध हो गयीं। कुछ फ़ांसीसी अफ़सरों ने इनकी तैनाती की व्यवस्था की और वे दूरबीनों से क्रेमलिन को देखते रहे।

क्रेमलिन में शाम की प्रार्थना की सूचना देनेवाले घण्टे बज रहे थे और इस आवाज़ से फ़ांसीसियों को परेशानी हो रही थी। वे यही समझ रहे थे कि ये घण्टे हथियार सम्भालने का आह्वान कर रहे हैं। कुछ प्यादा फ़ौजी कुताफ़्येव्स्की फाटक की तरफ़ भागे। फाटक के सामने शहतीरों और तख़्तों की मोरचाबन्दी थी। जैसे ही एक फ़ांसीसी अफ़सर कुछ सैनिकों को अपने साथ लेकर फाटक की तरफ़ दौड़ने लगा, वैसे ही वहां से बन्दूक़ की दो गोलियां चलीं। तोपों के क़रीब खड़े जनरल ने चिल्लाकर अफ़सर को कुछ हुक्म दिया और अफ़सर अपने सैनिकों के साथ वापस भाग आया।

फाटक की ओर से तीन गोलियां और चलीं।

एक गोली एक फ़ांसीसी सैनिक की टांग में आ लगी और मोरचेबन्दी के पीछे से थोड़ी-सी आवाज़ों की अजीब-सी चिल्लाहट सुनायी दी। फ़ांसीसी जनरल, अफ़सरों और सैनिकों के चेहरों का पहलेवाला ख़ुशमिज़ाजी और शान्ति का भाव कड़े संघर्ष तथा दुख-मुसीबत के लिये पूरी तरह से तैयार हो जाने के दृढ़ भाव में एकबारगी ही ऐसे बदल गया मानो उन्हें इसका आदेश मिला हो। मार्शल से लेकर मामूली सैनिक तक के लिये यह जगह व्ज़द्वीजेन्का या मोख़ोवाया सड़क अथवा कुताफ़्येव्स्की या त्रोइत्स्की फाटक नहीं, बल्कि नया रणक्षेत्र, सम्भवतः बेहद ख़ूनी लड़ाई की जगह थी। ये सभी इस लड़ाई के लिये तैयार हो गये। फाटक के पीछे से आनेवाली चीख़-चिल्लाहट बन्द हो गयी। तोपों को आगे बढ़ा दिया गया। तोपचियों ने फूंक मारकर पलीतों के डंडों पर से राख झाड़ दी। एक अफ़सर ने हुक्म दिया – "फ़ायर!" और एक के बाद एक दो गोलों की सीटी बजाती-सी आवाज़ गूंज उठी। छर्रोंवाली गोलियां पत्थर के फाटक, कुन्दों और तख़्तों से टकरायीं और चौक के ऊपर धुएं के दो बादल हिलने-डुलने लगे।

क्रेमलिन पर छर्रोंवाली गोलियों के फटने की आवाज़ बन्द होने के कुछ क्षण बाद फ़्रांसीसियों को अपने सिरों के ऊपर एक अजीब-सी ध्वनि सुनायी दी। डोम कौओं का एक बहुत ही बड़ा झुण्ड क्रेमलिन की दीवारों के ऊपर उड़ा, कांय-कांय करता और हज़ारों पंखों से ज़ोरदार सरसराहट पैदा करता हुआ हवा में चक्कर काटने लगा। इस आवाज़ के साथ-साथ फाटक पर किसी एक आदमी की चीख़ गूंज उठी और धुएं के पीछे से किसानों का कोट पहने, एक नंगे सिर व्यक्ति की आकृति दिखाई दी। एक बन्दूक़ उठाकर उसने फ़्रांसीसियों की तरफ़ निशाना साधा। "फ़ायर!" तोपख़ाने के अफ़सर ने अपना हुक्म दोहराया। बन्दूक़ की गोली और दो तोपों के गोले चलने की एकसाथ ही आवाज़ सुनायी दी। धुएं ने फिर से फाटक को ढक दिया।

मोरचेबन्दी के पीछे अब किसी के भी हिलने-डूलने की आवाज़ सुनायी नहीं दी और अफ़सरों के साथ प्यादा फ़्रांसीसी सैनिक फाटक की ओर बढ़ गये। फाटक के क़रीब तीन घायल और चार मुर्दा व्यक्ति पड़े थे। किसानों के कोट पहने दो आदमी दीवारों के साथ-साथ ज़्नामेन्का सड़क की तरफ़ नीचे को भागे जा रहे थे।

"इन्हें हटाओ," लट्ठों और लाशों की ओर संकेत करते हुए अफ़सर ने कहा। फ़्रांसीसियों ने घायलों को मौत के घाट उतारकर लाशों को बाड़ के पीछे फेंक दिया। ये लोग कौन थे किसी को भी यह मालूम नहीं था। "इन्हें हटाओ," इनके बारे में सिर्फ़ इतना ही कहा गया था और इन्हें हटा दिया गया था तथा बाद में दूर ले जाकर फेंक दिया गया था ताकि इनसे बदबू न आये। केवल इतिहासकार त्येर ने ही इनकी स्मृति को वाकपटुता का परिचय देनेवाली कुछ पंक्तियां समर्पित की हैं–"ये क़िस्मत के मारे पावन दुर्ग में घुस आये थे, इन्होंने दुर्ग में से बन्दूक़ें ले ली थीं और फ़्रांसीसियों पर गोलियां चलायी थीं। इनमें से कुछ के तलवारों से टुकड़े कर दिये गये थे और क्रेमलिन को इनसे मुक्त कर दिया गया था।"

म्युराट को यह सूचना दी गयी कि मार्ग में कोई बाधा नहीं रही। फ़्रांसीसी फाटक में दाख़िल हुए और सेनात्स्काया चौक में पड़ाव डालने लगे। सैनिक अलाव जलाने के लिये सीनेट-हॉल की खिड़कियों से कुर्सियां बाहर फेंकने लगे।

फ़ौज के दूसरे दस्ते क्रेमलिन में से गुज़रते हुए मारोसेइका, लुब्यान्का और पोक्रोव्का सड़कों पर अपने शिविर बनाने लगे। अन्य फ़ौजी दस्तों ने व्ज़द्वीजेन्का, ज़्नामेन्का, निकोल्स्काया और त्वेर्स्काया सड़कों पर डेरे डाल लिये। सभी जगहों पर गृह-स्वामियों को ग़ायब पाकर फ़्रांसीसी घरों में रहने के बजाय शहर को एक पड़ाव या शिविर-सा बनाकर रहने लगे।

फ़्रांसीसी सैनिकों की वर्दियों की बेशक बुरी हालत हो गयी थीं, बेशक वे भूखे, बेहद थके-हारे थे और उनकी संख्या एक-तिहाई कम हो गयी थी, फिर भी उन्होंने बड़े व्यवस्थित ढंग से मास्को में प्रवेश किया। फ़्रांसीसी सेना बेशक संतप्त और थकी-टूटी थी, फिर भी अभी तक लड़ाकू तथा भय पैदा करनेवाली सेना थी। किन्तु यह उसी वक़्त तक सेना थी, जब तक कि सैनिक विभिन्न घरों में बिखर नहीं गये। जैसे ही विभिन्न रेजिमेंटों के सैनिक मालिकों के बिना क़ीमती चीज़ों से भरे घरों में बिखरने लगे, वैसे ही सेना का सदा के लिये अस्तित्व समाप्त हो गया और सैनिक न तो सैनिक और न नागरिक ही रहे, बल्कि लुटेरे बन गये। पांच हफ़्ते बाद इन्हीं लोगों ने जब मास्को छोड़ा तो इनका सेना जैसा रूप नहीं रहा था। यह लुटेरों की भीड़ थी जिनमें से प्रत्येक अपने साथ कुछ ऐसी चीज़ें ले जा रहा था जो उसे मूल्यवान और ज़रूरी प्रतीत होती थीं। मास्को से जाते हुए इन लोगों का उद्देश्य पहले की तरह जीतें हासिल करना नहीं, बल्कि प्राप्त की गयी चीज़ों को सुरक्षित रखना था। उस बन्दर की भांति जो तंग मुंहवाले घड़े में अपना हाथ डालकर अख़रोटों से मुट्ठी भर लेता है और इसीलिये मुट्ठी नहीं खोलता कि कहीं अख़रोट न गिर जायें और इस तरह अपने को मौत के मुंह में धकेलता है, इसी तरह मास्को से जाने पर फ़्रांसीसियों का सम्भवतः इसीलिये नष्ट होना ज़रूरी था कि वे अपने साथ लूट का माल ले जा रहे थे और उनके लिये उसे फेंकना उसी तरह से असम्भव था जैसे बन्दर के लिये मुट्ठी में बन्द अख़रोट। हर फ़्रांसीसी रेजिमेंट के मास्को के किसी भी गली-मुहल्ले में पड़ाव डालने के दस मिनट बाद उसमें वास्तव में एक भी सैनिक या अफ़सर नहीं रह जाता था। घरों की खिड़कियों में से फ़ौजी ओवरकोट और बूट पहने हंसते-हंसाते लोग घूमते नज़र आते थे। तहख़ानों और स्टोररूमों में यही लोग रसद पर हाथ साफ़ कर रहे थे। अहातों में ऐसे

ही लोग सायबानों और अस्तबलों के दरवाज़े तथा फाटक तोड़ या खोल रहे थे। वे रसोईघरों में आग जलाते थे, आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर आटा गूंधते थे, खाने-पीने की चीज़ें उबालते-पकाते थे, औरतों और बच्चों को डराते, हंसाते तथा प्यार करते थे। इस तरह के लोग सभी जगहों पर, घरों में और दुकानों पर बहुत बड़ी संख्या में थे, किन्तु सेना नहीं रही थी।

इसी दिन फ़ांसीसी फ़ौजी अफ़सरों ने एक के बाद एक यह हुक्म दिया कि सैनिकों को शहर में बिखरने से रोका जाये, नगरवासियों के साथ ज़ोर-ज़बर्दस्ती करने और उन्हें लूटने की कड़ी मनाही कर दी जाये, कि इसी शाम को सबकी हाज़िरी ली जाये। किन्तु सभी उपायों के बावजूद ये लोग, जो एक दिन पहले तक सैनिक थे, मालिकों द्वारा छोड़े गये धन-दौलत से भरपूर, सभी तरह की सुविधाओं और भण्डारोंवाले शहर की तरफ़ भागते जा रहे थे। जिस तरह भूखे पशुओं का झुण्ड बंजर मैदान में एकसाथ चलता रहता है, किन्तु हरा-भरा चरागाह सामने आते ही इधर-उधर बिखर जाता है, उसी तरह सैनिक भी समृद्ध मास्को शहर में भागते जा रहे थे और किसी तरह भी नहीं रुकते थे।

मास्कोवासी जा चुके थे और सैनिक उसमें उसी तरह से लुप्त होते जा रहे थे जैसे बालू में पानी तथा किसी प्रकार भी न रुकते हुए क्रेमलिन से, जहां उन्होंने सबसे पहले प्रवेश किया, सभी दिशाओं में फैलते जा रहे थे। घुड़सैनिक किसी व्यापारी के धन-दौलत से भरे घर में दाख़िल होते, वहां उन्हें अपने घोड़ों के लिये अस्तबल और ज़रूरत से बढ़कर चारा मिल जाने पर भी वे पड़ोस के दूसरे घर पर अधिकार कर लेते जो उन्हें बेहतर प्रतीत होता। बहुत-से सैनिक तो कई-कई घरों पर क़ब्ज़ा कर लेते, खड़िया से उनपर यह लिख देते कि वे किसके अधिकार में हैं, आपस में झगड़ते और हाथापाई तक करते। सैनिक अपना डेरा डालते ही कुछ लूटने के लिये शहर को भाग जाते और इस अफ़वाह के मुताबिक़ कि मास्कोवासी सब कुछ छोड़-छाड़कर चले गये हैं, उधर ही जाने की कोशिश करते जहां क़ीमती चीज़ें मुफ़्त ही हथियायी जा सकती थीं। अफ़सर लोग सैनिकों को रोकने के लिये जाते, मगर अनजाने ही ख़ुद भी ऐसी ही हरकतें करने लगते। कारेत्नी र्याद सड़क की बग्घियोंवाली दुकानों की क़तार में

बहुत-सी छोटी-बड़ी बग्घियां थीं और वहां अपने लिये बग्घियां चुनने के इच्छुक जनरलों की भीड़ जमा थी। मास्को में रह जानेवाले थोड़े-से नागरिक इस आशा से फ़्रांसीसी फ़ौजी अफ़सरों को अपने यहां आमन्त्रित करते कि इस तरह वे लूट-मार से बच जायेंगे। दौलत बेशुमार थी और उसका कोई अन्त नज़र नहीं आता था। उन जगहों के इर्द-गिर्द, जिनपर फ़्रांसीसियों ने क़ब्ज़ा कर लिया था, हर जगह कुछ ऐसी जगहें भी थीं जिनका अभी जायज़ा नहीं लिया गया था, जिनपर अधिकार नहीं किया गया था तथा जहां फ़्रांसीसियों को लगता था कि और भी ज़्यादा दौलत मिल सकती है। मास्को उन्हें अधिकाधिक अपने चंगुल में फांसता जाता था। सूखी धरती पर पानी गिरने से जैसे पानी और सूखी धरती – दोनों ही कीचड़ में बदलकर ग़ायब हो जाते हैं, ठीक उसी तरह भूखी सेनाओं के समृद्ध और परित्यक्त नगर में प्रवेश करने के फलस्वरूप सेना और समृद्ध नगर – दोनों ही बरबाद हो गये, गन्दगी फैल गयी और आग तथा लूट-मार का बाज़ार गर्म हो गया।

फ़्रांसीसी रस्तोपचिन की अन्धी देशभक्ति को मास्को के जलने का कारण बताते हैं और रूसी फ़्रांसीसियों के जंगलीपन को। किन्तु वास्तव में ऐसे कोई कारण नहीं थे और हो भी नहीं सकते थे जिनके आधार पर किसी एक या कुछ लोगों को मास्को के जलने के लिये ज़िम्मेदार ठहराया जा सके। मास्को इसलिये जल गया कि वहां ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गयी थीं जिनमें लकड़ी के मकानोंवाला कोई भी शहर अवश्य जल जायेगा और इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा कि वहां आग बुझाने-वाले घटिया क़िस्म के एक सौ तीस इंजन हैं या नहीं। मास्को का जलना इसलिये अनिवार्य था कि उसके निवासी चले गये थे और इसका उसी तरह जलना ज़रूरी था जैसे छीलन का वह ढेर अवश्य जल उठता है जिसपर लगातार कई दिनों तक चिंगारियां गिरती रही हों। लकड़ी के घरोंवाला मास्को, जिसमें घर के मालिकों और पुलिस के होते हुए भी गर्मियों में लगभग हर दिन आग लगने की घटनायें होती थीं, उस वक़्त तो जलने से बच ही नहीं सकता था, जब वहां गृह-स्वामी नहीं थे, वहां सैनिक रहते थे जो तम्बाकू से भरी पाइपें पीते थे, सेनात्स्काया चौक में सीनेट-हॉल की कुर्सियों से अलाव जलाते थे और

दिन में दो बार अपने लिये खाना पकाते थे। अमन-चैन के वक़्त में भी यदि किसी ज़िले के कुछ गांवों के घरों में सैनिकों को बसा दिया जाये तो फ़ौरन वहां पर भी आग लगने की घटनाओं की संख्या बढ़ जायेगी। तो लकड़ी के घरोंवाले शहर में, जहां घरों के मालिक न हों और परायी फ़ौजें ठहरी हुई हों, आग लगने की सम्भावनायें कितनी अधिक बढ़ सकती हैं? रस्तोपचिन की अन्धी देशभक्ति और फ़्रांसीसियों के जंगलीपन का इस मामले में कोई दोष नहीं। मास्को तम्बाकू की पाइपों, रसोईघरों, अलावों, इन घरों में रहनेवाले शत्रु के उन सैनिकों की लापरवाही के कारण जल गया जो इन घरों के स्वामी नहीं थे। अगर आग लगाने की घटनायें हुई भी हों (जिनके बारे में बहुत सन्देह हो सकता है, क्योंकि किसी के लिये ऐसा करने का कोई कारण नहीं था और यों भी यह काफ़ी झंझट तथा ख़तरे का काम था) तो भी इन घटनाओं को इसका कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि इनके बिना भी यही कुछ हुआ होता।

फ़्रांसीसियों का रस्तोपचिन की प्रचण्ड या अन्धी देशभक्ति और रूसियों का दुष्ट बोनापार्ट को इसके लिये दोषी ठहराना या फिर बाद में अपनी रूसी जनता के हाथ में वीरता की यह मशाल पकड़ा देना चाहे कितना ही अच्छा क्यों न लगे, इस चीज़ की ओर से आंखें मूंदना सम्भव नहीं कि मास्को के जलने का ऐसा कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं हो सकता था। वह इसलिये कि मास्को का उसी तरह से जलना ज़रूरी था जिस तरह से वह गांव, फ़ैक्टरी या घर जल जाता है जिसके मालिक उसे छोड़कर चले जाते हैं और जहां पराये लोग डेरा डाल लेते हैं तथा अपने लिये दलिया पकाते हैं। मास्कोवासियों ने ही मास्को को जलाया – यह सही है, किन्तु उन्होंने नहीं, जो मास्को में रह गये थे, बल्कि उन्होंने जो उसे छोड़कर चले गये थे। दुश्मन के क़ब्ज़े में आ जानेवाला मास्को बर्लिन, वियाना और दूसरे नगरों की भांति इसी कारण सुरक्षित नहीं रह सका कि इसके वासी फ़्रांसीसियों के स्वागत के लिये नमक-रोटी और घरों की चाबियां लेकर उनके पास नहीं गये, बल्कि उसे छोड़कर चले गये।

२७

२ सितम्बर को एक सितारे की तरह सभी दिशाओं में फैलने-वाले फ़्रांसीसियों के पड़ाव केवल शाम होने पर ही उस मकान तक पहुंचे जिसमें प्येर इस वक़्त ठहरा हुआ था।

एकान्त और ऐसी असाधारण परिस्थितियों में बिताये गये पिछले दो दिनों के बाद प्येर लगभग पागलों जैसी हालत में था। उसके दिल-दिमाग़ पर लगातार एक ही विचार छाया रहता था। वह ख़ुद यह नहीं जानता था कि कब और कैसे यह विचार उसके दिमाग़ में आया, लेकिन अब यही विचार उसपर ऐसे हावी हो गया था कि उसे बीता हुआ कुछ भी याद नहीं रहा था, वह वर्तमान से सम्बन्धित कुछ भी नहीं समझता था और जो कुछ भी देख और सुन रहा था, सभी मानो सपने में हो रहा था।

प्येर हर दिन के जीवन की मांगों की जटिल उलझन से बचने के लिये ही, जिसने उस वक़्त उसे अपनी गिरफ़्त में ले लिया था और जिसे उस समय सुलझाना उसके वश का काम नहीं था, घर से भागा था। वह पुस्तकों और काग़ज़ों को छांटने का बहाना करके सिर्फ़ इसीलिये दिवंगत बाज़्देयेव के घर गया था कि जीवन की परेशानी से निजात पा सके। कारण कि बाज़्देयेव की स्मृति के साथ उसकी आत्मा में उस चिन्ताजनक गड़बड़झाले से सर्वथा भिन्न, जिसमें वह इस समय अपने को फंसता हुआ अनुभव कर रहा था, शाश्वत, शान्त और भव्य विचारों का एक संसार जुड़ा हुआ था। वह किसी शान्त स्थान पर पनाह पाना चाहता था और बाज़्देयेव के अध्ययन-कक्ष में उसे वास्तव में वह मिल भी गयी। जब वह दिवंगत बाज़्देयेव के कमरे में, जहां क़ब्र का सा सन्नाटा छाया था, धूल से ढंकी उसकी लिखने की मेज़ पर कोहनियां टिकाकर बैठ गया तो एक के बाद एक, पिछले दिनों की सारी स्मृतियां बड़े शान्त और अर्थपूर्ण ढंग से उसके मस्तिष्क में सजीव होने लगीं, विशेष रूप से बोरोदिनो की लड़ाई और उसकी आत्मा में **वे** के रूप में अंकित होकर रह जानेवाले लोगों की सचाई, सरलता तथा शक्ति की तुलना में अपनी तुच्छता और असारता की अस्पष्ट अनुभूति की स्मृति भी। जब गेरासिम ने उसकी इस विचार-शृंखला को भंग किया तो उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि वह मास्को की रक्षा के

उस जन-कार्य में भाग लेगा जिसकी, जैसे कि वह जानता था, योजना बनायी गयी है। इसी उद्देश्य से उसने उसी वक़्त गेरासिम से यह अनुरोध किया था कि वह उसके लिये कहीं से किसानों के ढंग का कोट और पिस्तौल हासिल कर दे तथा उसे अपना यह इरादा भी बता दिया था कि वह अपना नाम प्रकट किये बिना यहां यानी बाज़्देयेव के घर में ही रहेगा। बाद में, एकांत और काहिली में बिताये गये पहले दिन (प्येर ने कई बार कोशिश की, किन्तु वह फ़्री मेसनों की पाण्डुलिपियों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाया) के दौरान कई बार उसके दिमाग़ में बोनापार्ट के सम्बन्ध में अपने रहस्यपूर्ण नाम का वह अस्पष्ट-सा विचार आया जो उसके मस्तिष्क में पहले भी कई बार आ चुका था। किन्तु यह विचार कि उसे, L'Russe Besuhof को ही **हिंसक पशु** की सत्ता का अन्त करना होगा, एक ऐसी कल्पना-तरंग के रूप में ही आया था जो अकारण दिमाग़ में आ जाती है और कोई चिह्न छोड़े बिना लुप्त हो जाती है।

जब केवल जनता द्वारा की जानेवाली मास्को की रक्षा में भाग लेने के उद्देश्य से किसानों जैसा कोट ख़रीदने के बाद प्येर की रोस्तोवों से भेंट हुई और नताशा ने उससे कहा – "आप यहीं रुक रहे हैं? ओह, कितना अच्छा है यह!" तो उसके दिमाग़ में यह ख़्याल कौंध गया कि अगर मास्को पर दुश्मन का क़ब्ज़ा हो भी जाये तो भी उसके लिये सचमुच मास्को में ही रुकना और उस कार्य को पूरा करना अच्छा होगा जो उसके लिये पूर्वनिश्चित है।

अगले दिन वह अपने दिमाग़ में मात्र यही विचार लिये हुए कि अपनी जान की कुछ भी परवाह नहीं करेगा और **उनसे** किसी भी तरह पीछे नहीं रहेगा, त्री गोरी फाटक पर गया। किन्तु इस बात का पूरा विश्वास हो जाने पर कि मास्को की रक्षा नहीं की जायेगी, जब वह घर लौटा तो उसने अचानक यह महसूस किया कि पहले उसे जो कुछ केवल सम्भव प्रतीत होता था, अब वह आवश्यक और अनिवार्य हो गया था। अपना नाम गुप्त रखते हुए उसे मास्को में रहना चाहिये, नेपोलियन से मिलना और उसकी हत्या करनी चाहिये तथा इस तरह या तो ख़ुद मर जाना चाहिये या फिर सारे यूरोप को उस दुर्भाग्य से मुक्ति दिलानी चाहिये जिसके लिये वह केवल नेपोलियन को ही ज़िम्मेदार ठहराता था।

१८०९ में वियाना में एक जर्मन विद्यार्थी ने बोनापार्ट की हत्या की जो कोशिश की थी, प्येर इस घटना के सभी ब्योरों से परिचित था और जानता था कि इस विद्यार्थी को गोली मार दी गयी थी। लेकिन अपने इरादे को पूरा करने के लिये वह अपनी जान की जो जोखिम उठाने जा रहा था, वही उसमें और अधिक जोश पैदा करती थी।

समान रूप से तीव्र दो भावनायें प्येर को उसके इस इरादे की पूर्ति की ओर आकर्षित करती थीं। पहली भावना का आधार यह चेतना थी कि सबके साझे दुर्भाग्य को ध्यान में रखते हुए उसे भी कुछ बलिदान करना चाहिये, दुख-दर्द सहने चाहिये। इसी भावना के परिणामस्वरूप वह २५ अगस्त को मोजाइस्क गया था और घमासान लड़ाई के वातावरण में रहा था, अब अपने घर से भाग आया था और ऐश-आराम की उस ज़िन्दगी के बजाय, जिसका वह आदी था, कपड़े उतारे बिना सख़्त सोफ़े पर सोता था और गेरासिम के जैसा ही खाना खाता था। दूसरी भावना उस परम्परागत, कृत्रिम और सर्वस्वीकृत के प्रति, उस सभी के प्रति जिसे अधिकतर लोग संसार का सबसे बड़ा सुख-सौभाग्य मानते हैं, तिरस्कार की अस्पष्ट और विशिष्ट रूसी भावना थी। इस अजीब और आकर्षक भावना को प्येर ने पहली बार स्लोबोदस्कोई महल में उस वक़्त अनुभव किया था, जब अचानक उसे यह महसूस हुआ था कि धन-दौलत, सत्ता और जीवन – वह सभी कुछ, जिसे लोग इतने यत्न से प्राप्त करते और सहेजते हैं, उस सबका यदि कोई महत्त्व है तो केवल वह प्रसन्नता ही है जिससे उसे त्यागा जा सकता है।

यह वही भावना थी जिसके फलस्वरूप अपनी इच्छा से फ़ौज में जानेवाला रंगरूट आख़िरी पैसा तक शराब पीने में उड़ा देता है, नशे में धुत्त व्यक्ति किसी स्पष्ट कारण के बिना और यह जानते हुए दर्पणों को तोड़ डालता है कि उसे उनकी क़ीमत चुकाने के लिये आख़िरी पैसा तक देना होगा। यह यही भावना थी जिसके परिणामस्वरूप कोई आदमी अपनी सत्ता और शक्ति को आज़माने के लिये घटिया और पागलपन की हरकतें करता है और इस तरह यह प्रमाणित करना चाहता है कि कोई उच्च शक्ति मानवीय जीवन का संचालन करती है।

उस दिन से, जब प्येर को स्लोबोदस्कोई महल में पहली बार यह अनुभूति हुई थी, वह लगातार इसके प्रभाव में रहा था, किन्तु केवल

अभी उसे इससे पूर्ण सन्तोष प्राप्त हुआ था। इसके अलावा इस पथ पर बढ़ने के लिये उसने अब तक जो कुछ किया था, वह सब भी उसके इरादे को मज़बूत बनाता था और उसे इसे छोड़ देने की सम्भावना से वंचित करता था। यदि दूसरों की भांति अब वह भी मास्को से चला जाता तो उसका घर से भागना, किसानों जैसा कोट और पिस्तौल ख़रीदना, रोस्तोवों से यह कहना कि वह मास्को में ही रुकने जा रहा है – इस सब का न केवल कोई अर्थ ही न रह जाता, बल्कि तिरस्कार और मज़ाक़ की चीज़ भी बन जाता (जिसके बारे में प्येर बहुत संवेदनशील था)।

जैसाकि हमेशा होता है, प्येर की शारीरिक स्थिति भी उसकी मानसिक स्थिति के अनुरूप हो गयी थी। घटिया क़िस्म का भोजन, जिसका वह आदी नहीं था, वोदका, जो वह इन दिनों पीता रहा था, बढ़िया शराब और सिगारों का अभाव, नीचे पहनने के गन्दे कपड़े, बिछौने के बिना तंग सोफ़े पर लगभग जागते हुए बितायी गयी दो रातें – यह सभी कुछ प्येर को उन्माद की सीमा तक पहुंचनेवाली खीझ की स्थिति में बनाये हुए था।

दिन का एक बजने के बाद का वक़्त था। फ़्रांसीसी मास्को में आ चुके थे। प्येर को यह मालूम था, लेकिन कोई कार्रवाई करने के बजाय वह अपनी योजना की छोटी से छोटी तफ़सीलों पर विचार कर रहा था। प्येर इस बात की स्पष्ट कल्पना नहीं कर पा रहा था कि कैसे वह नेपोलियन पर वार करेगा, कैसे नेपोलियन की मृत्यु होगी, किन्तु असाधारण स्पष्टता और अवसादपूर्ण प्रसन्नता से वह अपनी मौत और वीरतापूर्ण कारनामे की कल्पना ज़रूर कर लेता था।

"हां, सभी की ख़ातिर मुझे यह करना या मरना होगा!" वह सोच रहा था। "हां, मैं उसके क़रीब जाऊंगा... और फिर अचानक... पिस्तौल या खंजर से?" प्येर सोच रहा था। "ख़ैर, इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है। मैं नहीं, बल्कि स्वयं भगवान तुम्हें यह दण्ड दे रहे हैं... मैं उससे कहूंगा (प्येर वे शब्द सोच रहा था जो नेपोलियन की हत्या करते वक़्त कहेगा)। "तो अब इन्तज़ार किस बात का है, मुझे पकड़कर मौत के घाट उतार दो," प्येर ने सिर झुकाकर चेहरे पर उदासी का, किन्तु दृढ़तापूर्ण भाव लाते हुए अपने आपसे आगे कहा।

कमरे के बीचोंबीच खड़ा हुआ प्येर जब मन ही मन यह सब कुछ सोच रहा था, दरवाज़ा खुला और पहले हमेशा भीरु बने रहने-वाले मकार अलेक्सेयेविच की एकदम बदली हुई आकृति दहलीज़ पर दिखाई दी। उसका ड्रेसिंग गाउन इधर-उधर लहरा रहा था, चेहरा लाल और विकृत था। सम्भवतः वह नशे में धुत्त था। प्येर को देखकर शुरू में तो वह कुछ घबराया, किन्तु प्येर के चेहरे पर भी परेशानी देखकर उसकी हिम्मत फ़ौरन बढ़ गयी और अपनी पतली-पतली टांगों पर लड़खड़ाता हुआ वह कमरे के मध्य में चला गया।

"वे डर गये," उसने खरखरी, विश्वास दिलाती आवाज़ में कहा। "मैं कहता हूं कि घुटने नहीं टेकूंगा, मैं कहता हूं ... ऐसा ही है न, महानुभाव?" वह कुछ सोचने लगा और अचानक मेज़ पर पिस्तौल देखकर उसने अप्रत्याशित तेज़ी से उसे उठा लिया और दालान में भाग गया।

मकार अलेक्सेयेविच के पीछे-पीछे ही आनेवाले गेरासिम और द्वारपाल ने उसे ड्योढ़ी में रोक लिया तथा वे उसके हाथ से पिस्तौल छीनने लगे। प्येर दालान में आकर इस कुछ हद तक पागल बूढ़े को दया और घृणा से देख रहा था। ज़ोर लगाने के कारण माथे पर बल डाले हुए मकार अलेक्सेयेविच पिस्तौल को कसकर पकड़े था और खरखरी आवाज़ में कुछ चिल्ला रहा था जिसे वह अपनी कल्पना में बहुत ही शानदार समझ रहा था।

"हथियार सम्भालो! मुक़ाबला करो! नहीं, तुम नहीं छीन सकोगे!" वह चिल्ला रहा था।

"बस, काफ़ी हो गया, कृपया अब यह ख़त्म कीजिये। मेहरबानी करके इसे दे दीजिये ..." सावधानी से कोहनी थामकर मकार अलेक्सेये-विच को दरवाज़े की ओर ले जाने की कोशिश करते हुए गेरासिम कह रहा था।

"तू कौन है? बोनापार्ट!.." मकार अलेक्सेयेविच चिल्ला रहा था।

"यह अच्छी बात नहीं है, जनाब। कृपया कमरे में चलिये, आप थोड़ा आराम कर लीजिये। मेहरबानी करके पिस्तौल दे दीजिये।"

"दफ़ा हो जा, नीच, कमीने! ख़बरदार जो मुझे छुआ! यह

देखते हो?" पिस्तौल को लहराते हुए मकार अलेक्सेयेविच चीख़कर कह रहा था। "मुक़ाबला करो!"

"पकड़ लो," गेरासिम ने फुसफुसाकर द्वारपाल के कान में कहा।

ये दोनों मकार अलेक्सेयेविच के हाथ पकड़कर उसे दरवाज़े की तरफ़ घसीट ले चले।

ड्योढ़ी में हाथापाई का भद्दा शोर और हांफती, नशे में डूबी और खरखरी आवाज़ें सुनायी देने लगीं।

अचानक पोर्च की तरफ़ से एक नारी की ऊंची चीख़ गूंज उठी और बावर्चिन भागती हुई ड्योढ़ी में आई।

"वही हैं! हे भगवान!.. वे ही हैं!.. क़सम भगवान की, वे ही हैं। चार, घोड़ों पर!.." उसने चिल्लाकर कहा।

गेरासिम और द्वारपाल ने मकार अलेक्सेयेविच को छोड़ दिया। इस समय शान्त हो गये दालान में कुछ लोगों के प्रवेश-द्वार पर दस्तक देने की साफ़ आवाज़ सुनायी दी।

२८

प्येर मन ही मन यह तय करके कि जब तक वह अपनी योजना पूरी नहीं कर लेता, तब तक न तो किसी को अपने बारे में कुछ बतायेगा, न फ़्रांसीसी भाषा की अपनी जानकारी ही ज़ाहिर होने देगा, यह इरादा बनाकर दालान के अधखुले दरवाज़े के क़रीब खड़ा था कि जैसे ही फ़्रांसीसी भीतर आयेंगे, वैसे ही वह उनके सामने से हट जायेगा। किन्तु फ़्रांसीसी भीतर आ गये और प्येर दरवाज़े से हटा नहीं – एक अदम्य जिज्ञासा उसे रोके रही।

भीतर आनेवाले फ़्रांसीसी दो थे। एक अफ़सर था, लम्बा-तड़ंगा, हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर और दूसरा सम्भवतः कोई सैनिक या अर्दली था – नाटा, दुबला-पतला, सांवला, धंसे गालों और चेहरे पर बुद्धू जैसे भाववाला। अफ़सर छड़ी के सहारे कुछ-कुछ लंगड़ाता हुआ आगे-आगे आ रहा था। चन्द क़दम चलने और मन ही मन ऐसा निर्णय कर

लेने के बाद कि यह घर अच्छा है, वह रुक गया, दरवाज़े के पास खड़े सैनिकों की ओर मुड़ा तथा उसने ऊंची, अफ़सराना आवाज़ में आदेश दिया कि वे घोड़ों को बांधने का प्रबन्ध करें। यह काम ख़त्म करने के बाद अफ़सर ने बांकपन से अपनी एक कोहनी को काफ़ी ऊंचा उठाकर मूंछों पर हाथ फेरा और सलामी देने के ढंग से टोपी को छुआ।

"सबको नमस्ते!" उसने मुस्कराते और अपने इर्द-गिर्द देखते हुए ख़ुशमिज़ाजी से कहा।

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

"आप इस घर के मालिक हैं?" अफ़सर ने गेरासिम से पूछा।

गेरासिम ने सहमी-सहमी प्रश्नात्मक दृष्टि से अफ़सर की तरफ़ देखा।

"घर, घर, रहने की जगह," कृपालु और प्रफुल्ल मुस्कान से नाटे गेरासिम की ओर नीचे देखते हुए उसने कहा। "फ़्रांसीसी दयालु लोग हैं। बुरा हो शैतान का, हम झगड़ा नहीं करेंगे, बड़े मियां," अफ़सर ने डरे और ख़ामोश गेरासिम का कंधा थपथपाते हुए इतना और कह दिया।

"क्या यहां कोई भी फ़्रांसीसी नहीं बोलता?" उसने अपने इर्द-गिर्द देखते हुए पूछा। उसकी नज़रें प्येर की नज़रों से मिलीं। प्येर दरवाज़े से दूर हट गया।

अफ़सर ने फिर से गेरासिम को सम्बोधित किया। उसने मांग की कि गेरासिम उसे घर के कमरे दिखाये।

"साहब यहां नहीं – मैं कुछ नहीं समझता... मैं... आप..." गेरासिम ने यह कोशिश करते हुए उलटे-पुलटे ढंग से अपने रूसी भाषा के शब्द कहे कि उन्हें समझना आसान हो सके।

फ़्रांसीसी अफ़सर ने मुस्कराते हुए गेरासिम के सामने अपने हाथ फैला दिये और इस तरह उसे यह स्पष्ट कर दिया कि वह भी उसकी बात नहीं समझ पा रहा है तथा लंगड़ाता हुआ उस दरवाज़े की तरफ़ बढ़ चला जिसके क़रीब प्येर खड़ा था। प्येर ने उससे कन्नी काटने के लिये वहां से हट जाना चाहा, किन्तु इसी क्षण उसने हाथ में पिस्तौल लिये मकार अलेक्सेयेविच को रसोईघर के खुले दरवाज़े में से बाहर आते देखा। पागल आदमी की धूर्तता के अनुरूप उसने बहुत ग़ौर से

फ़्रांसीसी अफ़सर को देखा और पिस्तौल ऊंची करके निशाना साध लिया।

"मुक़ाबला करो!!!" पिस्तौल के घोड़े पर अपनी उंगली टिकाते हुए नशे में धुत्त मकार अलेक्सेयेविच चिल्लाया। यह चिल्लाहट सुनकर फ़्रांसीसी अफ़सर उधर घूमा और इसी वक़्त प्येर शराबी पर झपटा। प्येर जिस समय पिस्तौल को पकड़कर उसे थोड़ा ऊपर को खींच रहा था, उसी समय मकार अलेक्सेयेविच पिस्तौल के घोड़े को दबाने में कामयाब हो गया। कानों के परदे फाड़नेवाला धमाका हुआ और बारूद के धुएं के बादल ने सभी को ढंक लिया। फ़्रांसीसी के चेहरे का रंग उड़ गया और वह दरवाज़े की तरफ़ वापस भागा।

फ़्रांसीसी भाषा की जानकारी को ज़ाहिर न करने के अपने इरादे को भूलकर प्येर पिस्तौल छीनकर तथा उसे एक तरफ़ फेंककर भागता हुआ अफ़सर के पास गया और उससे फ़्रांसीसी में बातचीत करने लगा।

"आप घायल तो नहीं हो गये?" उसने पूछा।

"लगता है कि नहीं," अफ़सर ने अपने को जहां-तहां छूकर देखते हुए जवाब दिया। "लेकिन मैं बाल-बाल ही बच गया," उसने दीवार के टूटे प्लस्तर की तरफ़ इशारा करते हुए इतना और जोड़ दिया। "यह आदमी कौन है?" प्येर को कड़ाई से देखते हुए अफ़सर ने जानना चाहा।

"ओह, मुझे इस घटना के लिये सचमुच बड़ा अफ़सोस है," प्येर अपनी भूमिका को बिल्कुल ही भूलकर जल्दी-जल्दी कह उठा। "यह अभागा पागल आदमी है और नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है।"

अफ़सर ने मकार अलेक्सेयेविच के पास जाकर उसे गरेबान से पकड़ लिया।

मकार अलेक्सेयेविच अपने होंठ फुलाकर, दीवार का सहारा लेते हुए ऐसे लड़खड़ा रहा था मानो उसे नींद आ रही हो।

"बदमाश, तुम्हें इसका मज़ा चखाया जायेगा," फ़्रांसीसी अफ़सर ने उसका गरेबान छोड़ते हुए कहा।

"विजय के बाद हम फ़्रांसीसी बहुत दयालु हैं, लेकिन हम ग़द्दारों को माफ़ नहीं करते," उसने चेहरे पर उदास-सी भव्यता लाते हुए

सुन्दर तथा प्रभावपूर्ण संकेत के साथ इतना और कह दिया।

प्येर फ़ांसीसी भाषा में ही अफ़सर की इस बात के लिये मिन्नत-समाजत करता रहा कि वह इस शराबी और पागल आदमी के साथ बहुत कड़ाई से न पेश आये। फ़ांसीसी अफ़सर चेहरे पर उदासी का भाव बनाये हुए चुपचाप सुनता रहा और अचानक मुस्कराते हुए प्येर की ओर मुड़ा। वह कुछ क्षण तक उसे चुपचाप देखता रहा। उसके सुन्दर चेहरे पर दुख-मिश्रित कोमल भावुकता का भाव आ गया और उसने प्येर की तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया।

"आपने मेरी जान बचायी है! आप फ़ांसीसी हैं," उसने कहा। एक फ़ांसीसी के लिये ऐसा निष्कर्ष बिल्कुल स्वाभाविक था। कोई फ़ांसीसी ही कोई महान कार्य कर सकता था और १३वीं हल्की घुड़सेना रेजिमेंट के कप्तान मोस्ये रामबाल की जान बचाना निश्चय ही एक महान कार्य था।

किन्तु ऐसा निष्कर्ष चाहे कितना ही स्वाभाविक और इसपर आधारित फ़ांसीसी अफ़सर का विश्वास बेशक कितना ही असंदिग्ध क्यों न हो, प्येर ने उसे सचाई बताकर उसका भ्रम दूर करना ज़रूरी समझा।

"मैं रूसी हूं," उसने जल्दी से कहा।

"किसी दूसरे को उल्लू बनाइये," फ़ांसीसी ने अपनी नाक के सामने उंगली हिलाते और मुस्कराते हुए जवाब दिया। "आप तो अभी मुझे सारी हक़ीक़त बतायेंगे," वह कहता गया। "अपने हमवतन से मिलकर बेहद ख़ुशी हुई। अच्छा! यह बताइये कि इस आदमी का हम क्या करें?" उसने प्येर को अपने भाई की तरह सम्बोधित करते हुए पूछा। अफ़सर के चेहरे का भाव और उसका लहजा यह ज़ाहिर कर रहा था कि प्येर अगर फ़ांसीसी नहीं भी है तो भी दुनिया की यह सबसे ऊंची, फ़ांसीसी होने की उपाधि पाकर वह उससे इन्कार नहीं कर सकता था। अन्तिम प्रश्न के उत्तर में प्येर ने एक बार फिर से उसे यह बताया कि मकार अलेक्सेयेविच कौन था, कि उनके आने के कुछ ही क्षण पहले यह शराबी और पागल आदमी भरी हुई पिस्तौल उठा ले गया था जो वे उससे छीन नहीं पाये थे। प्येर ने अफ़सर से अनुरोध किया कि उसकी इस हरकत के लिये उसे सज़ा न दी जाये।

फ़्रांसीसी अफ़सर ने शान से छाती तान ली और शाही अन्दाज़ में अपना हाथ लहराया।

"आपने मेरी जान बचायी है। आप फ़्रांसीसी हैं। आप चाहते हैं कि मैं इसे माफ़ कर दूं? तो मैं इसे माफ़ करता हूं। ले जाइये इस आदमी को यहां से," उसने जल्दी-जल्दी और ज़ोरदार आवाज़ में यह कहा और प्येर की बांह में बांह डालकर, जिसे उसने अपनी जान बचाने के लिये फ़्रांसीसी बना दिया था, घर के भीतर चल दिया।

अहाते में खड़े हुए सैनिक गोली चलने की आवाज़ सुनकर यह पूछते हुए ड्योढ़ी में आये कि क्या बात हो गयी है और उन्होंने अपराधी को दण्ड देने की तत्परता प्रकट की। किन्तु अफ़सर ने उन्हें कड़ाई से रोक दिया।

"जब ज़रूरत होगी, तब आपको बुला लिया जायेगा," उसने कहा। सैनिक बाहर चले गये। इसी बीच रसोईघर में हो आनेवाला अर्दली अफ़सर के पास आया।

"कप्तान साहब, इनके रसोईघर में शोरबा और भेड़ का तला हुआ मांस भी है," उसने बताया। "हुक्म हो तो लाऊं?"

"हां, और शराब भी," कप्तान ने जवाब दिया।

२६

फ़्रांसीसी अफ़सर जब प्येर को साथ लिये हुए घर के अन्दर गया तो प्येर ने उसे फिर से यह विश्वास दिलाना अपना कर्त्तव्य समझा कि वह फ़्रांसीसी नहीं है और उसके पास से जाना चाहा। किन्तु फ़्रांसीसी अफ़सर तो यह सुनने को ही तैयार नहीं था। वह इस हद तक शिष्टता, कृपालुता, सौम्यता और अपनी जान बचाने के लिये सच्ची कृतज्ञता प्रकट कर रहा था कि प्येर उसे इन्कार करने की हिम्मत नहीं कर पाया और वह बैठक में, जहां ये सबसे पहले दाख़िल हुए, उसके साथ बैठ गया। प्येर के यह ज़ोर देने पर कि वह फ़्रांसीसी नहीं है, कप्तान ने स्पष्टतः इस बात को न समझते हुए कि कैसे कोई ऐसी प्रशंसापूर्ण उपाधि से इन्कार कर सकता है, कंधे झटक दिये और बोला कि अगर

वह अपने को रूसी ही कहलवाना चाहता है तो उसे इसमें भी कोई आपत्ति नहीं है और इसके बावजूद भी वह अपनी जान बचाने के लिये उसके प्रति जीवन भर कृतज्ञता अनुभव करता रहेगा।

यदि इस व्यक्ति में दूसरों की भावनाओं को समझ पाने की ज़रा-सी भी क्षमता होती और वह प्येर के मनोभावों का थोड़ा-सा भी अनुमान लगा सकता तो प्येर सम्भवतः उसके पास से हट गया होता। किन्तु अपने को छोड़कर अन्य सभी चीज़ों के प्रति इस व्यक्ति की सजीव उदासीनता ने प्येर को पराजित कर दिया।

"फ़्रांसीसी या अज्ञात रूसी प्रिंस," अफ़सर ने प्येर की मैली, किन्तु बढ़िया क़मीज़ और उसकी उंगली में अंगूठी को ग़ौर से देखते हुए कहा। "आपने मेरी जान बचायी है और मैं आपकी तरफ़ अपना दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं। फ़्रांसीसी अपने अपमान और किसी के द्वारा की गयी अपनी सेवा को कभी नहीं भूलता। मैं आपसे अपना मित्र बनने का अनुरोध करता हूं। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहना चाहता।"

फ़्रांसीसी अफ़सर की आवाज़, उसके चेहरे के भाव और संकेतों में इतनी ख़ुशमिज़ाजी और उदात्तता (फ़्रांसीसी अर्थ में) थी कि प्येर उसकी मुस्कान के जवाब में अनजाने ही मुस्करा दिया और उसने अपनी ओर बढ़े हुए उसके हाथ से अपना हाथ मिलाया।

"१३वीं हल्की घुड़सेना रेजिमेंट का कप्तान रामबाल, ७ सितम्बर की लड़ाई में वीरता दिखाने के लिये सम्मान-लीजन से पुरस्कृत," उसने आत्मसन्तोष अनुभव करते हुए अपना परिचय दिया और उसके होंठों पर बरबस मुस्कान आ गयी जिससे मूंछों के नीचे उसके होंठ ज़रा टेढ़े-से हो गये। "क्या अब आप मुझे यह बताने की मेहरबानी करेंगे कि उस पागल की गोली से घायल होकर चिकित्सा-केन्द्र में पड़े होने के बजाय मुझे किसके साथ ऐसे मधुरता से बातें करने का सम्मान प्राप्त हो रहा है?"

प्येर ने जवाब दिया कि वह अपना नाम नहीं बता सकता और झेंप से लाल होते हुए अपना कोई नक़ली नाम और परिचय न देने की विवशता की सफ़ाई पेश करने के कुछ उचित कारण सोचने लगा। किन्तु फ़्रांसीसी ने उसे झटपट टोकते हुए कहा:

"कृपया बताने का कष्ट नहीं करें। मैं आपको समझता हूं, आप अफ़सर हैं... शायद स्टॉफ़-अफ़सर। आप हमारे विरुद्ध लड़े हैं। लेकिन

मुझे इससे कोई मतलब नहीं। आपने मेरी जान बचायी है। मेरे लिये इतना ही काफ़ी है और मैं पूरी तरह से आपका सेवक हूं। आप कुलीन हैं?" उसने ज़रा प्रश्न के अन्दाज़ में पूछा। प्येर ने सिर झुका लिया। "आपका जन्म-नाम क्या है? मैं इससे ज़्यादा और कुछ नहीं पूछना चाहता। श्रीमान प्येर, यही कहा न आपने? बहुत ख़ूब। मैं सिर्फ़ इतना ही जानना चाहता था।"

जब भेड़ का मांस, तले हुए अंडे, समोवार, वोदका और वह शराब लायी गयी, जो फ़्रांसीसियों ने किसी रूसी घर के तहख़ाने से ले ली थी, तो रामबाल ने प्येर से अपने साथ भोजन करने का अनुरोध किया और ख़ुद एक स्वस्थ तथा भूखे व्यक्ति की तरह उसी क्षण बड़ी बेसब्री और जल्दी से खाने पर टूट पड़ा, मज़बूत दांतों से मांस को चबाने, लगातार चटख़ारे भरने और यह कहने लगा – वाह, मज़ा आ गया! बहुत बढ़िया है! उसके चेहरे पर लाली आ गयी और पसीना झलकने लगा। प्येर भूखा था और वह ख़ुशी से उसके साथ भोजन करने लगा। फ़्रांसीसी कप्तान का अर्दली, मोरेल, गुनगुने पानी का एक पतीला लाया और उसने लाल शराब की एक बोतल उसमें रख दी। वह क्वास* की एक बोतल भी, ताकि उसका फ़्रांसीसी अफ़सर उसे चख ले, रसोईघर से लेता आया था। फ़्रांसीसी इस पेय से परिचित हो चुके थे और उन्होंने इसे limonade de cochon (सूअर का लेमोनेड) का नाम दिया था। मोरेल ने रसोईघर में मिल जानेवाले इस पेय की तारीफ़ की। लेकिन चूंकि कप्तान के पास मास्को से गुज़रते हुए लूटी गयी शराब थी, इसलिये उसने क्वास की बोतल मोरेल को दे दी और अपने लिये 'बोर्डो' नामक शराब की बोतल ले ली। उसने बोतल की गर्दन पर नेपकिन लपेटा और अपने तथा प्येर के लिये जाम भरे। भूख दूर हो जाने और शराब के असर से कप्तान और भी ज़्यादा रंग में आ गया तथा भोजन के वक़्त लगातार बोलता-बतियाता रहा।

"हां, मेरे प्यारे श्रीमान प्येर, मुझे गिरजे में जाकर इसलिये आपके नाम की एक मोमबत्ती रखनी होगी कि आपने उस पागल से मुझे बचा लिया। मेरे बदन में अभी तक जितनी गोलियां जा चुकी हैं, वही बहुत काफ़ी हैं। एक गोली वाग्राम की लड़ाई में (उसने बग़ल

---

* क्वास – एक विशेष रूसी पेय जो कूटू की रोटी से बनाया जाता है। – अनु०

की तरफ़ इशारा किया) और दूसरी स्मोलेन्स्क (उसने गाल पर घाव के निशान की ओर संकेत किया) के नज़दीक लगी थी। यह टांग, जो, जैसाकि आप देख रहे हैं, चलना नहीं चाहती, ७ तारीख़ को मास्को के क़रीब हुई बड़ी लड़ाई में लगी गोली का नतीजा है। ओह! तब तो कमाल ही हो गया था! देखने लायक़ नज़ारा था, गोलाबारी का तूफ़ान ही आ गया था। आप इस बात की डींग हांक सकते हैं कि आपके लोगों ने हमारे लिये ख़ासी मुश्किल पैदा कर दी थी। घाव के इस भद्दे निशान के बावजूद मैं ऐसी लड़ाई में फिर से हिस्सा लेने को तैयार हूं। मुझे उनके लिये अफ़सोस होता है जिन्होंने उसे नहीं देखा।"

"मैं वहां था," प्येर ने कहा।

"अरे, सच? यह तो और भी अच्छी बात है," फ़ांसीसी कप्तान ने कहा। "आप लोग बहादुर दुश्मन हैं, यह तो मानना ही पड़ेगा। बुरा हो शैतान का, बड़ी मोरचेबन्दी पर आपकी सेनायें ख़ूब डटी रहीं। आपने हमें ख़ासी बड़ी क़ीमत चुकाने को मजबूर किया। मैं तीन बार वहां था। तीन बार हम तोपों तक पहुंचे और तीनों बार ही हमें गत्ते के सैनिकों की तरह पीछे खदेड़ दिया गया। क़सम ख़ुदा की, आपके ग्रेनेडियरों ने तो ग़ज़ब ही कर दिया। कोई छः बार मैंने उन्हें एक-दूसरे के साथ सटकर ऐसे मार्च करते देखा मानो परेड कर रहे हों। ग़ज़ब के लोग हैं! हमारे नेपल्ज़ के बादशाह, जो ऐसे मामलों के बहुत ही अच्छे पारखी हैं, इन्हें देखकर 'शाबाश! शाबाश!' चिल्लाते थे। तो आप हमारे फ़ौजी भाई है!" कुछ क्षण तक ख़ामोश रहने के बाद उसने मुस्कराते हुए कहा। "यह तो और भी अच्छी बात है, और भी अच्छी बात है, श्रीमान प्येर। लड़ाई में भयानक और सुन्द-रियों के मामले में नाज़बरदार," उसने मुस्कराते हुए प्येर को आंख मारी, "यह है फ़ांसीसी आदमी। क्यों, ठीक है न, श्रीमान प्येर?"

कप्तान इस हद तक भोला-भाला, ख़ुशमिज़ाज, प्रसन्न, निश्छल और आत्मतुष्ट था कि प्येर ख़ुशी से उसकी तरफ़ देखते हुए ख़ुद भी उसे आंख मारते-मारते रह गया। सम्भवतः "नाज़बरदार" शब्द ने मास्को की इस समय की स्थिति की याद दिला दी।

"अरे हां, यह तो बताइये कि क्या यह सच है कि मास्को की सभी औरतें यहां से चली गयी हैं? बड़ी अजीब-सी बात है यह। उन्हें किस बात का डर हो सकता था?"

"अगर रूसी पेरिस में पहुंच जाते तो क्या फ़्रांसीसी महिलायें वहां से न चली गयी होतीं?" प्येर ने पूछा।

"हा... हा... हा!" फ़्रांसीसी ने प्येर का कंधा थपथपाते हुए ख़ुशी तथा ज़िन्दादिली से ठहाका लगाया। "यह भी ख़ूब सवाल किया आपने," वह कह उठा। "पेरिस?.. लेकिन पेरिस... पेरिस..."

"पेरिस दुनिया की राजधानी है..." प्येर ने उसका वाक्य पूरा करते हुए कहा।

कप्तान ने प्येर की तरफ़ देखा। उसे बातचीत के दौरान चुप हो जाने और अपने सहभाषी को हंसती तथा स्नेहपूर्ण आंखों से टकटकी बांधकर देखने की आदत थी।

"अगर आपने मुझसे यह न कहा होता कि आप रूसी हैं तो मैं शर्त लगाकर यह कहने को तैयार हो जाता कि आप पेरिसवासी हैं। आपमें कुछ ऐसा है..." और ऐसे प्रशंसा करने के बाद वह फिर से चुप हो गया और टकटकी बांधकर देखने लगा।

"मैं पेरिस गया था, मैं कई साल तक पेरिस में रह चुका हूं," प्येर ने कहा।

"ओह, यह तो साफ़ नज़र आ रहा है। पेरिस!.. जो आदमी पेरिस से परिचित नहीं, वह जंगली है। पेरिसवाले को तो दो मील की दूरी से पहचाना जा सकता है। पेरिस – यह ताल्मा है, द्युशेनुआ, पोत्ये, सोरबोन्ना*, बुलवार है..." और यह देखकर कि उसका अन्तिम शब्द उसके द्वारा पहले कहे गये शब्दों की तुलना में अटपटा है, उसने जल्दी से यह और कह दिया – "सारी दुनिया में एक ही पेरिस है। आप पेरिस में रहने के बाद भी रूसी ही बने रहे। ख़ैर, कोई बात नहीं, इस कारण मेरी नज़र में आपकी इज़्ज़त कम नहीं हुई।"

शराब के प्रभाव और विषादपूर्ण विचारों में डूबे रहकर एकान्त में बिताये गये दिनों के बाद प्येर को इस हंसमुख और ज़िन्दादिल आदमी से बातचीत करके बरबस ख़ुशी महसूस हो रही थी।

---

* फ़्रांसुआ ताल्मा – दुखान्त नाटक का अभिनेता; क० द्युशेनुआ – अभिनेत्री; पोत्ये – फ़्रांसीसी हास्य-नाटक का अभिनेता; सोरबोन्ना – पेरिस के विश्वविद्यालय का नाम। – सं०

"लेकिन आइये, फिर से आपकी महिलाओं की चर्चा करें। सुनने में आया है कि वे बहुत ही सुन्दर हैं। मगर उन्हें ऐसे वक़्त, जब फ़्रांसीसी सेना यहां है, स्तेपियों में जाकर छिपने की क्या बेतुकी बात सूझी! उन्होंने एक सुनहरा मौक़ा हाथ से गंवा दिया। आपके देहातियों की बात मैं समझता हूं, लेकिन आप तो पढ़े-लिखे लोग हैं – आपको तो हमें इससे ज़्यादा अच्छी तरह जानना चाहिये था। हमने वियाना, बर्लिन, मड्रिड, नेपल्ज़, रोम, वार्सा – दुनिया की सभी राजधानियों पर क़ब्ज़ा किया। लोग हमसे डरते हैं, लेकिन हमें प्यार भी करते हैं। हमें अधिक घनिष्ठ रूप से जानना कुछ बुरा नहीं। और फिर सम्राट..." उसने कहना शुरू किया, मगर प्येर ने उसे टोक दिया।

"सम्राट?" प्येर ने चेहरे पर अचानक उदासी और घबराहट के भाव के साथ इस शब्द को दोहराया। "सम्राट के बारे में क्या कह रहे थे आप?.."

"सम्राट? वह उदारता, दया, न्याय, व्यवस्था और प्रतिभा का साकार रूप है – ऐसा है सम्राट! यह तो मैं, रामबाल आपसे कह रहा हूं। मैं, जो जीता-जागता हुआ आपके सामने हूं, वही मैं, आठ साल पहले उसका दुश्मन था। मेरे पिता प्रवासी काउंट थे। किन्तु इसने, इस आदमी ने मेरा मन जीत लिया। उसने मुझे अपने वश में कर लिया। वह फ़्रांस को जो महिमा और गौरव-प्रतिष्ठा प्रदान कर रहा था, मैं उसकी ऐसी शान की ताब नहीं ला सका। जब मैं यह समझ गया कि वह क्या चाहता है, जब मैंने देखा कि वह हमारे लिये जयमालायें तैयार कर रहा है तो मैंने अपने आपसे कहा – यह है सम्राट और मैंने उसके सामने सिर झुका दिया। तो ऐसी बात है! ओह, मेरे प्यारे, वह अतीत और भविष्य का महानतम व्यक्ति है।"

"क्या वह मास्को में है?" प्येर ने चेहरे पर अपराधी जैसे भाव के साथ झिझकते हुए पूछा।

फ़्रांसीसी ने प्येर के अपराधी जैसे चेहरे की तरफ़ देखा और मुस्करा दिया।

"नहीं, वह कल यहां पधार रहा है," उसने जवाब दिया और फिर से अपनी बातें करने लगा।

फाटक पर कुछ लोगों की आवाज़ों और मोरेल के भीतर आने से

इनकी बातचीत में बाधा पड़ गयी। मोरेल ने बताया कि विर्टेमबर्ग के कुछ हुस्सार आये हैं और उसी अहाते में अपने घोड़े बांधना चाहते हैं जहां उसके घोड़े बंधे हुए हैं। सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि हुस्सारों से जो कुछ कहा जा रहा था, वे उसे समझते नहीं थे।

कप्तान ने हुस्सारों के बड़े सार्जेंट को अपने पास बुलाने का हुक्म दिया और उससे कड़ाई से पूछा कि वह किस रेजिमेंट से सम्बन्ध रखता है, कौन उनका रेजिमेंट-कमांडर है और किस आधार पर वह उस घर पर अधिकार करना चाहता है जिसे क़ब्ज़े में लिया जा चुका है। बहुत बुरे ढंग से फ़्रांसीसी भाषा को समझनेवाले जर्मन सार्जेंट ने पहले दो प्रश्नों के उत्तर में अपनी रेजिमेंट और अपने रेजिमेंट-कमांडर का नाम बताया। किन्तु तीसरे प्रश्न के उत्तर में, जिसे वह समझा नहीं था, उसने जर्मन भाषा में फ़्रांसीसी के टूटे-फूटे शब्द जोड़ते हुए यह कहा कि वह रेजिमेंट का क्वार्टर-मास्टर है और रेजिमेंट-कमांडर ने सभी मकानों पर क़ब्ज़ा कर लेने का हुक्म दिया है। जर्मन भाषा जाननेवाले प्येर ने जर्मन के शब्दों का कप्तान के लिये फ़्रांसीसी में और कप्तान के शब्दों का हुस्सार के लिये जर्मन में अनुवाद किया। बात समझ में आने पर जर्मन किसी तरह का विरोध न करते हुए अपने लोगों को यहां से ले गया। कप्तान ने पोर्च में जाकर ऊंची आवाज़ में कुछ आदेश दिये।

कप्तान जब कमरे में वापस आया तो प्येर सिर पर हाथ बांधे हुए पहलेवाली जगह पर ही बैठा था। उसके चेहरे पर व्यथा झलक रही थी। इस क्षण वह सचमुच ही व्यथित-संतप्त हो रहा था। कप्तान के बाहर जाने पर प्येर अचानक चौंका और उसे उस स्थिति की चेतना हुई जिसमें वह इस समय था। बात यह नहीं थी कि मास्को पर क़ब्ज़ा कर लिया गया था, यह भी नहीं कि ये ख़ुशक़िस्मत विजेता यहां अब घर के मालिक बने बैठे थे और उसकी सरपरस्ती कर रहे थे। यह सब बहुत कटु होने पर भी इस क्षण उसे यह चीज़ संतप्त नहीं कर रही थी। उसे अपनी दुर्बलता की चेतना संतप्त कर रही थी। शराब के कुछ गिलासों और इस ख़ुशमिज़ाज आदमी के साथ बातचीत ने उसके मन की उस दृढ़ता को नष्ट कर दिया था जिसमें उसने अपने पिछले कुछ दिन बिताये थे और जो उसके इरादे को अमली शक्ल देने के लिये ज़रूरी थी। पिस्तौल, ख़ंजर और किसानों का कोट – यह सब

कुछ तैयार था। नेपोलियन अगले दिन मास्को में आनेवाला था। प्येर पहले की भांति दुष्ट नेपोलियन की हत्या करना उपयोगी और उचित मानता था, किन्तु अनुभव कर रहा था कि अब ऐसा नहीं कर सकेगा। क्यों – उसे यह मालूम नहीं था, किन्तु उसे मानो ऐसा पूर्वाभास हो रहा था कि वह अपने इरादे को अमली शक्ल नहीं दे पायेगा। वह अपनी दुर्बलता की चेतना के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था, किन्तु उसे अस्पष्ट-सी अनुभूति हो रही थी कि उसपर विजय नहीं पा सकेगा और प्रतिशोध, हत्या और आत्म-बलिदान के वे दृढ़ विचार, जो उसके दिल-दिमाग़ पर छाये रहे थे, पहले ही व्यक्ति से मुलाक़ात होने पर धूल की तरह हवा में उड़ गये थे।

कप्तान कुछ-कुछ लंगड़ाता और किसी धुन पर सीटी बजाता हुआ कमरे में लौटा।

फ़्रांसीसी की बातें, जिनमें पहले उसे मज़ा आ रहा था, अब घिनौ-नी प्रतीत होने लगीं। किसी धुन पर बजायी जानेवाली सीटी, उसकी चाल, उसके हाव-भाव और मूंछों पर ताव देने का उसका ढंग – प्येर को अब यह सभी कुछ बुरी तरह से अखर रहा था।

"मैं अभी यहां से चला जाऊंगा, इसके साथ एक भी बात नहीं करूंगा," प्येर सोच रहा था। वह ऐसा सोच रहा था, मगर फिर भी अपनी उसी जगह पर बैठा हुआ था। दुर्बलता की कोई अजीब-सी भावना उसे इसी जगह पर जकड़े हुए थी – वह जाना चाहता था, लेकिन उठकर जा नहीं पा रहा था।

इसके विपरीत, कप्तान बहुत ख़ुश नज़र आ रहा था। उसने कमरे में दो चक्कर लगाये। उसकी आंखें चमक रही थीं और मूंछें ज़रा फरफरा रही थीं मानो वह किसी दिलचस्प ख़्याल से मन ही मन मुस्करा रहा हो।

"बहुत बढ़िया आदमी है वह," उसने अचानक कहा, "विर्टेमबर्ग के हुस्सारों का कर्नल! वह जर्मन है, लेकिन इसके बावजूद बहुत बढ़िया आदमी है। फिर भी जर्मन है।"

वह प्येर के सामने बैठ गया।

"तो मतलब यह है कि आप जर्मन जानते हैं?"

प्येर चुपचाप उसकी तरफ़ देखता रहा।

"जर्मन भाषा में पनाहगाह को क्या कहते हैं?"

"पनाहगाह को?" प्येर ने दोहराया। "जर्मन भाषा में पनाह को Unterkunft कहते हैं।"

"आप इसका कैसे उच्चारण करते हैं?" कप्तान ने अविश्वास और जल्दी से पूछा।

"Unterkunft," प्येर ने दोहराया।

"Onterkoff," कप्तान ने कहा और कुछ क्षण तक हंसती हुई आंखों से प्येर की तरफ़ देखता रहा। "बड़े उल्लू लोग हैं ये जर्मन। ठीक है न, श्रीमान प्येर?" उसने निष्कर्ष निकाला।

"मास्को की शराब की एक और बोतल मंगवायी जाये न? मोरेल हमारे लिये शराब की एक और बोतल लायेगा। मोरेल!" कप्तान ने चहकते हुए पुकारकर कहा।

मोरेल ने मोमबत्तियां और शराब की एक और बोतल ला दी। कप्तान ने रोशनी में प्येर की तरफ़ देखा और सम्भवतः सहभाषी के चेहरे पर खिन्नता का भाव देखकर चकित रह गया। चेहरे पर सच्चे दुख और सहानुभूति का भाव लिये हुए कप्तान रामबाल प्येर के क़रीब गया और उसके ऊपर झुक गया।

"आप ऐसे उदास क्यों हैं?" प्येर का हाथ छूते हुए उसने पूछा। "शायद मैंने आपका मन दुखा दिया है? सच बताइये, मेरे ख़िलाफ़ तो आपको कोई शिकायत नहीं?" उसने जानना चाहा। "शायद यह हालात का चक्कर है?"

प्येर ने कोई जवाब न देकर फ़्रांसीसी की आंखों में स्नेहपूर्वक देखा। उसकी सहानुभूति की यह अभिव्यक्ति उसे अच्छी लगी थी।

"क़सम खाकर कहता हूं कि मैं न सिर्फ़ आपका बेहद कृतज्ञ हूं, बल्कि आपके प्रति दोस्ती भी महसूस करता हूं। क्या मैं आपके लिये कुछ कर सकता हूं? आप हुक्म दीजिये। आपके लिये तो मेरी जान भी हाज़िर है। मैं सच्चे दिल से ऐसा कह रहा हूं," उसने छाती पर हाथ मारते हुए कहा।

"शुक्रिया," प्येर ने उत्तर दिया। कप्तान ने प्येर को उसी तरह से टकटकी बांधकर देखा जैसे तब देखा था जब उसे यह बताया गया था कि पनाह को जर्मन भाषा में क्या कहा जाता है, और उसका चेहरा अचानक खिल उठा।

"तो मैं आपकी दोस्ती का जाम पीता हूं!" उसने दो गिलासों

में शराब डालते हुए ख़ुशी से चिल्लाकर कहा। प्येर शराब का गिलास उठाकर पी गया। रामबाल ने अपना गिलास पी लिया, एक बार फिर प्येर से हाथ मिलाया और विचारमग्न उदास मुद्रा में मेज़ पर कोहनियां टिकाकर बैठ गया।

"तो मेरे दोस्त, ऐसे हैं क़िस्मत के खेल," उसने कहना शुरू किया। "कौन भला यह जान सकता था कि मैं सैनिक और बोनापार्ट (जैसे कि हम उसे तब कहते थे) की फ़ौज में ड्रगूनों का कप्तान बनूंगा। और अब मैं उसके साथ मास्को में हूं। मेरे प्यारे, मैं आपको यह बताना चाहता हूं," वह ऐसे व्यक्ति की उदास और लयबद्ध आवाज़ में, जो कोई लम्बी कहानी सुनाने जा रहा हो, कहता गया, "कि हमारा कुलनाम फ़्रांस का एक सबसे प्राचीन कुलनाम है।"

और एक फ़्रांसीसी की सरलता तथा भोलेपन से उससे प्येर को अपने दादों-परदादों, अपने बचपन, किशोरावस्था और यौवन, रिश्ते-दारों, धन-सम्पत्ति और पारिवारिक सम्बन्धों की पूरी दास्तान सुना दी। ज़ाहिर है कि इस सारी कहानी में "मेरी बेचारी मां" का प्रमुख स्थान था।

"किन्तु यह सब तो ज़िन्दगी के लिये ज़मीन तैयार करने के समान है और असली चीज़ तो मुहब्बत है। हां, मुहब्बत है! क्यों ठीक है न श्रीमान प्येर?" उसने रंग में आते हुए कहा। "एक गिलास और भर दूं।"

प्येर ने यह गिलास पीकर अपने लिये तीसरा गिलास भी भर लिया।

"ओह, औरतें, औरतें!" और कप्तान चमकती आंखों से प्येर की ओर देखते हुए मुहब्बत और मुहब्बत के अपने कारनामों की चर्चा करने लगा। वे ढेरों थे और कप्तान के आत्मतुष्ट तथा सुन्दर चेहरे को देखते हुए तथा जिस उल्लासपूर्ण सजीवता से वह औरतों का ज़िक्र कर रहा था, उनपर आसानी से विश्वास किया जा सकता था। इस चीज़ के बावजूद कि रामबाल के मुहब्बत के सभी क़िस्सों में वह अश्लील-ता और घटियापन था जिसमें फ़्रांसीसी लोग मुहब्बत के ख़ास सौन्दर्य तथा कविता को अनुभव करते हैं, कप्तान ऐसी सच्ची निष्ठा से अपनी कहानी सुना रहा था कि सिर्फ़ उसी ने मुहब्बत के सारे मज़े चखे हैं, उनका तजरबा हासिल किया है और वह ऐसे आकर्षक ढंग

से औरतों का वर्णन करता था कि प्येर बड़ी जिज्ञासा से उसकी बातें सुन रहा था।

यह स्पष्ट था कि फ़्रांसीसी को जो मुहब्बत सबसे ज़्यादा पसन्द थी, वह ऐसी घटिया और मामूली जिस्मानी मुहब्बत नहीं थी जो प्येर ने कभी अपनी पत्नी के प्रति अनुभव की थी और न मुहब्बत की वह रोमानी भावना ही थी जो उसने नताशा के लिये अपने दिल में पैदा कर ली थी (ऐसी दोनों क़िस्म की मुहब्बत को रामबाल हिक़ारत की नज़र से देखता था – पहली क़िस्म कोचवानों के लिये थी और दूसरी मूर्खों के लिये)। फ़्रांसीसी जिस प्रेम का पुजारी था, वह सबसे बढ़कर तो नारी के साथ अस्वाभाविक सम्बन्धों और घिनौनी परिस्थितियों के ऐसे मेल में निहित था जो भावना को मुख्य आकर्षण प्रदान करता है।

इस तरह कप्तान ने पैंतीस वर्ष की एक बहुत ही सुन्दर मार्क्विसा * और उसकी अत्यधिक प्यारी और भोली-भाली सत्रह वर्षीया बेटी के साथ अपने प्रेम की बहुत ही मर्मस्पर्शी कहानी सुनायी। मां और बेटी की उदारता का संघर्ष आख़िर ऐसे ख़त्म हुआ कि मां ने अपने प्रेम का बलिदान करते हुए अपने प्रेमी से अपनी बेटी के साथ शादी करने का प्रस्ताव किया। इस बहुत पुरानी घटना की याद ने कप्तान को अब भी विह्वल कर दिया। इसके बाद उसने एक ऐसा क़िस्सा सुनाया जिसमें पति ने प्रेमी की और उसने (प्रेमी ने) पति की भूमिका निभायी। इसके पश्चात उसने जर्मनी से सम्बन्धित अपनी यादों के कुछ क़िस्से सुनाये जहां Unterkunft का मतलब पनाह है, जहां पति लोग पत्तागोभी का शोरबा खाते हैं और जहां जवान लड़कियों के बहुत ही ज़्यादा सुनहरे बाल होते हैं।

अन्त में उसने पोलैंड की एक घटना सुनायी जो उसकी स्मृति में अभी बिल्कुल ताज़ा थी। उसने यह घटना ज़ोर से हाथ हिलाते हुए और तमतमाये चेहरे के साथ सुनायी। क़िस्सा यह था कि उसने एक पोलैंडी पुरुष की जान बचायी (कुल मिलाकर कप्तान के क़िस्से-कहानियों में जान बचाने की घटनाओं का लगातार उल्लेख होता था) और इस पोलैंडी ने ख़ुद फ़्रांसीसी फ़ौज में भर्ती होकर अपनी मनमोहिनी बीवी

---

* काउंटेस। – अनु०

(जो दिल से पेरिसी थी) उसे सौंप दी। कप्तान बड़ा खुश था, उस मनमोहिनी पोलैंडी महिला ने उसके साथ भाग जाना चाहा, किन्तु उदारता की भावना से प्रेरित होकर उसने यह कहते हुए उसे उसकी बीवी लौटा दी – "मैंने आपकी जान बचायी और अब आपकी इज़्ज़त बचा रहा हूं।" इन शब्दों को दोहराकर कप्तान ने आंखें पोंछीं और अपने को झकझोरा। इस तरह मानो उसने इस मार्मिक स्मृति के कारण अपने पर हावी हो जानेवाली दुर्बलता से अपने को मुक्त किया।

जैसाकि देर गये रात को और शराब के प्रभाव के फलस्वरूप बहुधा होता है, प्येर उन सभी बातों को ध्यान से सुन और समझ रहा था जो कप्तान उससे कह रहा था, मगर साथ ही अपनी व्यक्तिगत स्मृतियों की तरफ़ भी उसका ध्यान जा रहा था जो न जाने क्यों, अचानक ही उसकी कल्पना में उमड़ आयी थीं। जब वह प्यार-मुहब्बत के ये क़िस्से-कहानियां सुन रहा था तो उसे अचानक और अप्रत्याशित ही नताशा के प्रति अपने प्यार की याद आ गयी और उसने इस प्यार के चित्रों को अपनी कल्पना में उभारते हुए मन ही मन रामबाल के क़िस्सों के साथ इनकी तुलना की। कर्त्तव्य और प्यार के बीच संघर्ष से सम्बन्धित कप्तान की कहानी को ग़ौर से सुनते हुए प्येर की आंखों के सामने सूख़ारेवा मीनार के क़रीब अपनी प्रेम-पात्र के साथ हुई अन्तिम भेंट के छोटे से छोटे ब्योरे सजीव हो उठे। उस वक़्त इस भेंट ने उसके मन पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ा था और उसने एक बार भी उसे याद नहीं किया था। किन्तु अब उसे ऐसा लगता था कि इस भेंट में कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण और काव्यमयी चीज़ थी।

"प्योत्र किरील्लिच, इधर आइये, मैंने आपको पहचान लिया," वह अब नताशा द्वारा कहे गये ये शब्द सुन रहा था, अपने सामने उसकी आंखें, मुस्कान, सफ़र की टोपी और उसके नीचे से निकली हुई बालों की लट देख रहा था... और इस सब में उसे मन को कुछ छूने तथा द्रवित करनेवाला-सा लगा।

मनमोहिनी पोलैंडी महिला के बारे में अपना क़िस्सा ख़त्म करने के बाद कप्तान ने प्येर से पूछा कि क्या उसने कभी प्रेम के लिये ऐसे बलिदान और क़ानूनी पति के प्रति ईर्ष्या की ऐसी भावना अनुभव की है या नहीं।

ऐसा प्रश्न पूछा जाने पर प्येर ने अपना सिर ऊपर उठाया और इस चीज़ की ज़रूरत महसूस की कि अपने मन पर छाये हुए विचारों को अभिव्यक्ति दे। वह स्पष्ट करने लगा कि कैसे वह नारी के प्रति प्रेम को कुछ दूसरे ही ढंग से समझता है। उसने कहा कि वह ज़िन्दगी भर सिर्फ़ एक ही औरत को प्यार करता रहा है और अब भी करता है और यह औरत कभी उसकी पत्नी नहीं बन सकेगी।

"सच!" कप्तान ने कहा।

इसके बाद प्येर ने उसे बताया कि वह अपनी जवानी के दिनों से ही इस औरत को प्यार करता रहा है, मगर इसके बारे में सोचने की हिम्मत नहीं कर पाया, क्योंकि वह बहुत कम उम्र की थी और वह ख़ुद मान-मर्यादा के बिना अवैध पुत्र था। कुछ समय पश्चात जब उसे मान-मर्यादा और दौलत भी मिल गयी तो इस कारण उसके बारे में सोचने का साहस नहीं कर पाया कि उसे बेहद प्यार करता था, उसे सारी दुनिया के मुक़ाबले में कहीं ऊंचा स्थान देता था और इसलिये ख़ुद अपने से तो बहुत ऊंचा मानता ही था। यह कहकर प्येर ने कप्तान से पूछा – "आप यह समझते हैं?"

कप्तान ने ऐसा भाव व्यक्त करनेवाला संकेत किया कि अगर वह समझ भी नहीं रहा है तो भी प्येर अपनी बात जारी रखे।

"निष्काम प्रेम, बादलों में ऊंची उड़ान..." वह अपने आपसे बुदबुदाया। सुरा-पान के प्रभाव या दिल खोलने की आवश्यकता या इस विचार से कि यह आदमी उसके जीवन से सम्बन्धित लोगों में से किसी को नहीं जानता और कभी नहीं जान पायेगा अथवा इन सभी कारणों से प्येर की ज़बान पर पड़ा हुआ ताला खुल गया। बुदबुदाती आवाज़ और चमकती आंखों से कहीं दूर देखते हुए उसने अपनी शादी, अपने सबसे अच्छे मित्र के साथ नताशा के प्रेम, नताशा के विश्वासघात और उसके साथ अपने सीधे-सादे सम्बन्धों की पूरी कहानी सुना दी। रामबाल के प्रश्नों से प्रेरित होकर उसने वह सब भी बता दिया जो पहले छिपाता रहा था यानी सोसाइटी में अपनी स्थिति और अपना नाम भी।

प्येर की कहानी में कप्तान को सबसे ज़्यादा तो यह जानकर हैरानी हुई कि वह बहुत धनी है, कि मास्को में उसके दो महल हैं, कि उसने सब कुछ छोड़-छाड़ दिया है और अपना नाम तथा उपाधि, आदि छि-

पाकर मास्को में ही रह गया है।

रात को बहुत देर से ये दोनों एकसाथ बाहर आये। रात गुन-गुनी और उजली थी। घर के बायीं ओर, मास्को की पेत्रोव्का सड़क पर लगनेवाली पहली आग की चमक दिखाई दे रही थी। दायीं ओर, आसमान में काफ़ी ऊंचाई पर दूज के नये चांद का हंसिया नज़र आ रहा था और उसके सामने की ओर चमकता हुआ वह धूमकेतु था जो प्येर की आत्मा में उसके प्यार के साथ सम्बन्धित था। गेरासिम, बावर्चिन और दो फ़्रांसीसी फाटक के पास खड़े थे। उनकी हंसी और एक-दूसरे की समझ में न आनेवाली दो भिन्न भाषाओं में उनकी बातचीत सुनायी दे रही थी। वे नगर में दिखाई देनेवाली आग की चमक को देख रहे थे।

विराट नगर में बहुत दूरी पर जलनेवाली इस छोटी-सी आग में कुछ भी ख़तरनाक नहीं लग रहा था।

सितारों जड़े ऊंचे आकाश, चांद, धूमकेतु और आग की चमक को देखते हुए प्येर को सुखद, कोमल भावना की अनुभूति हो रही थी। "कितना अच्छा है यह सब, आदमी को और क्या चाहिये?!" वह सोच रहा था। और अचानक अपने इरादे की याद आ जाने पर उसका सिर चकरा गया, उसने बेहोशी-सी महसूस की और इस डर से कि कहीं गिर न जाये, बाड़ का सहारा ले लिया।

अपने नये दोस्त को शुभ-रात्रि कहे बिना ही प्येर लड़खड़ाते क़दमों से फाटक से दूर हटा, अपने कमरे में लौटकर सोफ़े पर लेट गया और उसी क्षण सो गया।

३०

मास्को को छोड़ने और वहां से भागनेवाले मास्कोवासियों तथा पीछे हटती सेनाओं ने २ सितम्बर को मास्को में लगनेवाली पहली आग को विभिन्न मार्गों और विभिन्न भावनाओं से देखा।

रोस्तोव-परिवारवाले यह रात मास्को से बीस वेर्स्ता दूर मितीश्ची में बिता रहे थे। १ सितम्बर को ये लोग बहुत देर से रवाना हुए थे, सड़क पर घोड़ा-गाड़ियों और सेनाओं की बेहद भीड़ थी, बहुत-सी

चीज़ें साथ लेना भूल गये थे जिनके लिये नौकरों को वापस भेजना पड़ा और इन सभी कारणों से मास्को से पांच वेर्स्ता की दूरी पर ही रात बिताने का फ़ैसला किया गया। अगली सुबह को ये लोग देर से आगे बढ़े, फिर से रास्ते में इतनी अधिक जगहों पर रुकना पड़ा कि ये बोल्शीये मितीश्ची तक ही पहुंच पाये। रात के दस बजे रोस्तोव-परिवार और इसके साथ जानेवाले घायलों ने एक बड़े गांव के अहातों और घरों में डेरे डाल लिये। अपने मालिकों के लिये सारी व्यवस्था करने के बाद रोस्तोवों के नौकर-चाकर, कोचवान और फ़ौजी अफ़सरों के अर्दली पोर्च में बाहर आये।

पड़ोस के घर में रायेव्स्की का घायल एडजुटेंट लेटा हुआ था जिसकी टूटी कलाई का भयानक दर्द उसे लगातार और बड़े दयनीय ढंग से कराहने के लिये विवश कर रहा था। पतझर की रात के अंधेरे में उसका इस तरह कराहना बहुत ज़ोर से गूंज रहा था। इस एडजुटेंट ने रोस्तोव-परिवारवालों के पड़ोस के घर में ही पहली रात बितायी। काउंटेस ने कहा कि घायल एडजुटेंट की आहों-कराहों के कारण पल भर को भी उनकी आंख नहीं लग पायी और मितीश्ची में वह इस घायल से दूर रहने के लिये एक कम सुविधाजनक घर में ठहर गयीं।

रात के अन्धेरे में पोर्च के क़रीब खड़ी ऊंची बग्घी के पीछे एक और आग की चमक की तरफ़ एक नौकर का ध्यान गया। एक आग की चमक तो बहुत पहले से ही दिखाई दे रही थी और सभी जानते थे कि यह मालिये मितीश्ची जल रहा है जिसे मामोनोव के कज़्ज़ाकों ने जलाया था।

"अरे भाइयो, यह तो दूसरी आग है," एक अर्दली ने कहा।

सभी ने इसकी तरफ़ ध्यान दिया।

"अरे हां, लोगों ने बताया तो था कि मामोनोव के कज़्ज़ाकों ने मालिये मितीश्ची को आग लगा दी है।"

"हां, उन्हींने यह आग लगा दी है! अरे नहीं, यह मितीश्ची नहीं, उससे आगे है।"

"ज़रा देखो तो, शायद मास्को में है।"

दो नौकर पोर्च से उतरकर बग्घी के पिछले पायदान पर जा बैठे।

"यह आग तो बायीं ओर जल रही है! देखो न, मितीश्ची तो वहां है और यह आग तो बिल्कुल दूसरी तरफ़ है।"

पहले नौकर के इर्द-गिर्द कई लोग जमा हो गये।

"देखो तो बढ़ती जा रही है," एक ने कहा, "भाइयो, यह आग तो मास्को में जल रही है, सुश्चेव्स्काया में या रोगोज्स्काया चौक में।"

इस टिप्पणी के जवाब में किसी ने कुछ नहीं कहा। ये सभी लोग दूरी पर नज़र आ रही नई आग की लपट को देर तक चुपचाप देखते रहे।

बूढ़ा दानीलो तेरेन्तिच (जिसे काउंट का निजी सेवक कहा जाता था) भीड़ के पास आकर मीश्का पर चिल्लाया:

"तुम यहां खड़े हुए क्या देख रहे हो, उल्लू... काउंट बुलायेंगे तो वहां कोई नहीं होगा – जाओ, जाकर मालिक के कपड़े ठीक-ठाक कर दो।"

"मैं तो सिर्फ़ पानी लाने के लिये ही बाहर भागा आया था," मीश्का ने जवाब दिया।

"आपका क्या ख़्याल है, दानीलो तेरेन्तिच, यह आग तो शायद मास्को में लगी हुई है?" एक नौकर ने बूढ़े से पूछा।

दानीलो तेरेन्तिच ने कोई जवाब नहीं दिया और फिर से सभी लोग देर तक मौन साधे रहे। आग की चमक ऊंची-नीची होती हुई आगे ही आगे फैलती जा रही थी।

"हे भगवान दया करें!.. हवा और ख़ुश्क मौसम..." किसी ने कहा।

"देखो तो, कैसे फैलती जा रही है। हे प्रभु! डोम कौवे भी उड़ते दिखाई दे रहे हैं। हे भगवान, हम पापियों पर दया करें!"

"तुम चिन्ता नहीं करो, बुझा देंगे।"

"कौन बुझायेगा?" दानीलो तेरेन्तिच की आवाज़ सुनायी दी जो अभी तक चुप रहा था। वह शान्त आवाज़ में धीरे-धीरे बोल रहा था। "भाइयो, यह तो मास्को ही है," उसने कहा, "यह तो सफ़ेद दीवारवाला हमारा, मां के समान प्यारा मास्को ही..." वह अपना वाक्य पूरा न कर पाया और बूढ़ों के अनुरूप सिसक उठा। ऐसे लगा कि मानो ये सभी इन्हें नज़र आनेवाली इस आग की चमक के महत्त्व को समझने के लिये इसी सिसकी की प्रतीक्षा कर रहे थे। अब आहें, प्रार्थनायें और काउंट के बूढ़े सेवक की सिसकियां सुनायी दे रही थीं।

३१

काउंट के बूढ़े सेवक ने लौटकर काउंट को यह बताया कि मास्को जल रहा है। काउंट ड्रेसिंग गाउन पहनकर आग देखने के लिये बाहर आये। सोन्या और मदाम शोस्स भी, जिन्होंने अभी तक बिस्तर में जाने के लिये अपने कपड़े नहीं उतारे थे, काउंट के साथ बाहर आ गयीं। नताशा और काउंटेस ही कमरे में रह गयीं। (पेत्या अब परिवार के साथ नहीं था। वह त्रोइत्से-सेर्गियेवा लाव्रा * जा रही अपनी रेजिमेंट के साथ आगे चला गया था।)

मास्को में आग लगने की ख़बर सुनकर काउंटेस रो पड़ीं। नताशा ने, जिसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और जो देव-प्रतिमाओं के नीचे बेंच पर बैठी हुई (वहीं, जहां आने पर बैठ गयी थी) एक ही दिशा में टकटकी बांधकर देखती जा रही थी, पिता के शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह तीन घरों की दूरी से लगातार सुनायी देनेवाली एडजुटेंट की आहों-कराहों पर कान लगाये थी।

"ओह, कैसा भयानक दृश्य है!" अहाते से ठिठुरी और डरी-सहमी हुई सोन्या ने लौटकर कहा। "मुझे लगता है कि सारा मास्को जल जायेगा, आग की चमक देखकर दिल दहलता है! नताशा, देखो, अब तो वह खिड़की से भी नज़र आ रही है," उसने अपनी बहन का ध्यान किसी दूसरी तरफ़ ले जाने के लिये कहा। किन्तु नताशा ने उसकी तरफ़ ऐसे देखा मानो उससे जो कुछ कहा जा रहा था, उसे समझ न पा रही हो और उसने फिर से बड़े रूसी चूल्हे के एक कोने पर अपनी नज़र टिका दी। नताशा आज सुबह से, उसी वक़्त से जड़ता की इसी स्थिति में थी, जब से सोन्या ने काउंटेस को हैरान और क्रुद्ध करते हुए, न जाने किसलिये नताशा को यह बताना ज़रूरी समझा था कि घायल प्रिंस अन्द्रेई इनके साथ ही जा रहा है। काउंटेस सोन्या से इतनी ज़्यादा नाराज़ हो गयी थीं, जितनी बहुत कम ही होती थीं। सोन्या रोती रही, उसने काउंटेस से माफ़ी मांगी और अब मानो अपने अपराध का प्रायश्चित करते हुए नताशा की लगातार लल्लो-चप्पो कर रही थी।

---

* त्रोइत्से-सेर्गियेवा लाव्रा – मास्को में स्थित मर्दों का पुराना मठ। – सं०

"देखो तो नताशा, वह किस बुरी तरह से जला जा रहा है।"

"क्या जला जा रहा है?" नताशा ने पूछा। "अरे, हां, मास्को।"

और मानो इसलिये कि इन्कार करके सोन्या के दिल को ठेस न लगाये और उससे पिंड छुड़ा ले, उसने अपना सिर खिड़की की तरफ़ कर लिया और उस तरफ़ ऐसे देखा कि सम्भवतः कुछ भी नहीं देख सकती थी तथा फिर से अपनी पहलेवाली जगह पर बैठ गयी।

"तुमने तो आग को देखा ही नहीं?"

"देख लिया, सच कहती हूं," उसने ऐसी गिड़गिड़ाती आवाज़ में कहा मानो मिन्नत कर रही हो कि उसे परेशान न किया जाये।

काउंटेस और सोन्या को यह समझने में देर नहीं लगी कि मास्को, मास्को की आग और अन्य किसी भी चीज़ का नताशा के लिये कोई महत्त्व नहीं हो सकता।

काउंट ओट के पीछे जाकर फिर से बिस्तर पर लेट गये। काउंटेस नताशा के पास गयीं, उन्होंने उसी तरह से बेटी का सिर छुआ, जैसे कि बेटी के बीमार होने पर छूती थीं, इसके बाद यह जानने के लिये कि उसे बुख़ार है या नहीं, उसके माथे से होंठ छुआये और उसे चूमा।

"तुम तो ठिठुर गयी हो। कांप रही हो। लेट जाओ," काउंटेस ने कहा।

"लेट जाऊं? अच्छी बात है, मैं लेट जाती हूं। अभी लेट जाती हूं," नताशा ने जवाब दिया।

इस सुबह जब नताशा को यह बताया गया कि प्रिंस अन्द्रेई बुरी तरह घायल हो गया है और रोस्तोवों के साथ जा रहा है तो केवल शुरू में ही उसने बहुत-से प्रश्न किये – वह कहां जा रहा है? कैसे घायल हुआ? क्या उसका ज़ख़्म ख़तरनाक है? वह उससे मिल सकती है या नहीं? किन्तु जब उससे यह कह दिया गया कि वह उससे मिल नहीं सकती, कि वह बुरी तरह से घायल है, मगर उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में नहीं है तो इसके बाद सम्भवतः उस सब पर विश्वास न करते हुए जो उससे कहा गया था और यह यक़ीन करके कि वह चाहे कितनी बार ही क्यों न पूछे, उसे वही जवाब मिलेंगे, उसने पूछना और बोलना बन्द कर दिया। फैली-फैली आंखों के साथ, जिनके भाव से काउंटेस इतनी अच्छी तरह परिचित थीं और बहुत डरती थीं, नताशा रास्ते

भर बग्घी के कोने में बुत बनी बैठी रही और अब भी उसी बेंच पर वैसे ही बैठी थी जिसपर यहां आते ही बैठ गयी थी। काउंटेस जानती थी कि वह कुछ सोच रही थी, अपने दिमाग़ में कुछ तय कर रही थी या कुछ तय कर चुकी थी, किन्तु उसने क्या तय किया था, काउंटेस को यह मालूम नहीं था और यही चीज़ उन्हें भयभीत तथा व्यथित कर रही थी।

"नताशा, प्यारी बिटिया, कपड़े उतारकर मेरे बिस्तर पर लेट जाओ।" (केवल काउंटेस के लिये ही चारपाई पर बिस्तर लगाया गया था – मदाम शोस्स और दोनों लड़कियों को फ़र्श पर बिछाये गये फूस पर सोना था।)

"नहीं, अम्मां, मैं यहां फ़र्श पर ही लेटूंगी," नताशा ने झल्लाकर जवाब दिया, खिड़की के पास जाकर उसे खोल दिया। खुली खिड़की से एडजुटेंट की आहें-कराहें अधिक स्पष्ट रूप से सुनायी देने लगीं। उसने रात की नम हवा में अपना सिर खिड़की से बाहर निकाल लिया और काउंटेस ने देखा कि उसकी पतली गर्दन कैसे सिसकियों के कारण ज़ोर से हिल रही थी, खिड़की के चौखटे से टकरा रही थी। नताशा जानती थी कि प्रिंस अन्द्रेई नहीं कराह रहा था। उसे मालूम था कि प्रिंस अन्द्रेई उनके बिल्कुल नज़दीक, ड्योढ़ी के बादवाले घर में था। किन्तु एडजुटेंट की लगातार जारी रहनेवाली भयानक आहों-कराहों ने नताशा को सिसकने के लिये विवश कर दिया। काउंटेस ने सोन्या से आंखें मिलायीं।

"बिस्तर पर चली जाओ, मेरी बिटिया, लेट जाओ, मेरी लाड़ली," काउंटेस ने नताशा के कंधे को ज़रा छूते हुए कहा। "चली भी जाओ बिस्तर पर।"

"ओह, हां... मैं अभी, अभी लेट जाती हूं," नताशा ने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारते और स्कर्ट की तनियां खोलते हुए उत्तर दिया। पोशाक उतारने और ड्रेसिंग-जाकेट पहनने के बाद वह टांगों को अपने नीचे दबाकर फ़र्श पर तैयार किये गये बिस्तर पर बैठ गयी और अपनी छोटी तथा पतली-सी चोटी को कंधे के ऊपर से सामने की ओर करके उसे फिर से गूंथने लगी। उसकी पतली-पतली, लम्बी-लम्बी और अभ्यस्त उंगलियां जल्दी-जल्दी तथा बड़ी चतुराई से बालों को अलग करने, गूंथने और उनकी चोटी बनाने लगीं। ऐसा करते हुए नताशा का सिर

आदत के मुताबिक़ कभी एक तो कभी दूसरी ओर घूम जाता था, मगर उत्तेजना से फैली हुई आंखें एकटक सामने देख रही थीं। सोने की पूरी तैयारी हो जाने पर नताशा फूस पर बिछायी गयी चादर पर दरवाज़े के क़रीब ही धीरे से लेट गयी।

"नताशा, तुम बीच में लेटो," सोन्या ने कहा।

"मैं यहीं ठीक हूं," नताशा ने जवाब दिया। "आप सब भी लेट जायें न," उसने झल्लाते हुए इतना और कह दिया तथा तकिये में अपना मुंह छिपा लिया।

काउंटेस, मदाम शोस्स और सोन्या ने जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतारे और लेट गयीं। कमरे में देव-प्रतिमाओं के सामने ही एक दीपक जलता रह गया। किन्तु दो वेर्स्ता की दूरी पर मालिये मितीश्ची में जल रही आग के कारण अहाता रोशन हो रहा था, सड़क के उस पारवाले शराबख़ाने से, जिसमें मामोनोव के कज़्ज़ाक ताला तोड़कर घुस गये थे, नशे में धुत्त लोगों का शोर और एडजुटेंट का अविराम कराहना सुनायी दे रहा था।

नताशा हिले-डुले बिना बहुत देर तक कमरे की और बाहर से आनेवाली ध्वनियों को सुनती रही। शुरू में उसे मां की प्रार्थना और आहें, उनकी चारपाई की चूं-चर्र, बजती नाक के साथ मदाम शोस्स के खर्राटे और सोन्या की धीमी-धीमी सांस की आवाज़ सुनायी दी। इसके बाद काउंटेस ने नताशा को पुकारा। नताशा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अम्मां, लगता है कि वह सो गयी," सोन्या ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया। काउंटेस कुछ देर तक चुप रहीं, फिर दूसरी बार पुकारा, किन्तु इस बार किसी ने भी उत्तर नहीं दिया।

इसके कुछ देर बाद नताशा को समगति से चलती हुई अपनी मां की सांस सुनायी दी। इस चीज़ के बावजूद कि नताशा का छोटा-सा नंगा पांव रज़ाई से बाहर निकल जाने के कारण फ़र्श पर, जो दरी आदि से ढका हुआ नहीं था, ठिठुर रहा था, वह हिली-डुली नहीं।

हर चीज़ पर मानो अपनी विजय-पताका फहराता हुआ झींगुर दीवार की दरार में से अपना झीं-झीं का राग अलापने लगा। कहीं दूरी पर मुर्ग़े ने बांग दी, उसके जवाब में नज़दीक ही कोई दूसरा मुर्ग़ा

बोल उठा। मदिरालय में लोगों का शोर शान्त हो गया, केवल एडजुटेंट का कराहना ही सुनायी दे रहा था। नताशा उठकर बैठ गयी।

"सोन्या, तुम सो रही हो? अम्मां?" वह फुसफुसायी। किसी ने भी जवाब नहीं दिया। नताशा बहुत धीरे-धीरे और सावधानी से उठी, उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया और गन्दे, ठण्डे फ़र्श पर बड़ी सतर्कता से अपना पतला और लचीला पांव रखा। तख़्ते चरमराये। वह जल्दी-जल्दी क़दम उठाती हुई बिल्ली के बच्चे की तरह कुछ दूर तक भागकर दरवाज़े तक पहुंच गयी और उसने उसके ठण्डे हत्थे को पकड़ लिया।

नताशा को लगा कि घर की सभी दीवारों पर कोई भारी चीज़ लयबद्ध ढंग से चोट कर रही है: यह भय, घबराहट और प्यार के कारण बेहद बेचैन उसका दिल ही बहुत ज़ोर से धड़क रहा था।

उसने दरवाज़ा खोला, दहलीज़ लांघी और ड्योढ़ी की नम, ठण्डी ज़मीन पर पांव रखा। ड्योढ़ी की ठण्ड ने उसे ताज़गी प्रदान की। उसके नंगे पांव ने ड्योढ़ी में सो रहे एक नौकर को छुआ, वह उसके ऊपर से गुज़र गयी और उसने उस घर का दरवाज़ा खोला जिसमें प्रिंस अन्द्रेई था। इस घर में अन्धेरा था। उस चारपाई के पीछे, जिसपर कोई लेटा हुआ था, दूर कोने में रखी बेंच पर एक मोमबत्ती रखी थी, जिसकी जली हुई शिखा एक बड़े कुकुरमुत्ते जैसी लगती थी।

नताशा ने तो सुबह ही, जब उसे प्रिंस अन्द्रेई के घाव और उसके यहां होने के बारे में बताया गया था, यह तय कर लिया था कि वह उससे अवश्य मिलेगी। वह नहीं जानती थी कि किसलिये उसे ऐसा करना चाहिये, किन्तु उसे मालूम था कि यह मुलाक़ात यातना-पूर्ण होगी और इसीलिये ऐसा मानती थी कि इस भेंट को अवश्य होना चाहिये।

नताशा दिन भर इसी आशा को संजोये रही थी कि रात को प्रिंस अन्द्रेई से मिलेगी। किन्तु अब, इस क्षण के आने पर इस डर ने उसके दिल को जकड़ लिया कि न जाने वह अपने सामने क्या देखेगी। कितनी बुरी तरह से विकृत हो गया है वह? क्या बाक़ी बचा है उसका? क्या वह लगातार कराहनेवाले इस एडजुटेंट जैसा ही है? हां, वह बिल्कुल ऐसा ही है। उसकी कल्पना में प्रिंस अन्द्रेई इन भयानक आहों-कराहों का साकार रूप था। नताशा ने जब कोने में एक अस्पष्ट-सा पिंड देखा और रज़ाई के नीचे उसके

ऊपर उठे हुए घुटनों को कंधे समझ लिया तो उसके सामने एक भयानक-से शरीर का चित्र उभरा और वह भयभीत होकर जहां की तहां ठिठक गयी। किन्तु कोई अदम्य शक्ति उसे आगे बढ़ने को विवश कर रही थी। उसने सावधानी से एक, फिर दूसरा क़दम बढ़ाया और अपने को सामान से भरे हुए एक छोटे-से कमरे के मध्य में पाया। इसी कमरे में एक अन्य व्यक्ति देव-प्रतिमाओं के नीचे बेंचों पर लेटा हुआ था (यह तिमोख़िन था) और कोई दो अन्य व्यक्ति भी (डाक्टर और प्रिंस अन्द्रेई का निजी सेवक) फ़र्श पर लेटे हुए थे।

प्रिंस अन्द्रेई का निजी सेवक उठकर बैठ गया और कुछ फुसफुसाया। तिमोख़िन अपनी घायल टांग के दर्द के कारण सो नहीं रहा था और सफ़ेद क़मीज़, ड्रेसिंग-जाकेट तथा रात की टोपी पहने इस लड़की के ऐसे अजीब ढंग से प्रकट होने पर आंखें फाड़-फाड़कर उसकी तरफ़ देख रहा था। निजी सेवक के नींद में डूबे और डरे-सहमे इन शब्दों ने – "क्या बात है, क्या चाहिये आपको?" नताशा को और भी जल्दी से उसकी तरफ़ जाने को विवश कर दिया जो कोने में बिस्तर पर पड़ा हुआ था। यह शरीर बेशक बहुत ही भयानक रूप से मानव जैसा नहीं लग रहा था, फिर भी वह उसे देखे बिना नहीं रह सकती थी। वह सेवक के पास से गुज़री, मोमबत्ती की जली हुई शिखा झड़ गयी और उसने रज़ाई पर हाथों को सीधे फैलाकर लेटे हुए प्रिंस अन्द्रेई को उसी रूप में देखा जिस रूप में हमेशा देखती रही थी।

वह हमेशा जैसा ही था, किन्तु बुख़ार के कारण तमतमाये हुए उसके चेहरे का रंग, उसकी चमकती आंखें, जो उल्लासपूर्वक उसकी तरफ़ देख रही थीं, और ख़ास तौर पर उसकी क़मीज़ के खुले कालर से ऊपर को उभरी हुई उसकी बच्चों जैसी नाज़ुक गर्दन उसे विशेष, भोला-भाला और बाल-सुलभ रूप प्रदान कर रही थी जिससे वह अपरिचित थी। वह उसके क़रीब गयी और फुर्तीले, लचीले तथा जवानी के अनुरूप अन्दाज़ से घुटनों के बल हो गयी।

प्रिंस अन्द्रेई मुस्कराया और उसने अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ा दिया।

३२

बोरोदिनो युद्ध-क्षेत्र के चिकित्सा-केन्द्र में प्रिंस अन्द्रेई के होश में आने के बाद सात दिन बीत चुके थे। इस सारे वक़्त में वह लगातार लगभग बेहोशी की हालत में ही रहा था। घायल प्रिंस के साथ जानेवाले डाक्टर के मतानुसार बुख़ार और अन्तड़ियों की सूजन के कारण, जो घायल हो गयी थीं, उसकी मृत्यु किसी तरह भी टल नहीं सकती थी। किन्तु सातवें दिन उसने ख़ुशी से डबल रोटी का एक टुकड़ा खाया, चाय पी और डाक्टर ने यह भी देखा कि उसका बुख़ार कम हो गया है। प्रिंस अन्द्रेई की मूर्च्छा सुबह के समय दूर हुई। मास्को से रवाना होने के बाद पहली रात ख़ासी गर्म थी और इसलिये प्रिंस अन्द्रेई बग्घी में ही रहा। किन्तु मितीश्ची में उसने स्वयं ही यह मांग की कि उसे घर में ले जाया जाये और कुछ चाय दी जाये। घर में ले जाते समय उसे जितना अधिक दर्द हुआ, उसने उसे बहुत ज़ोर से कराहने को विवश कर दिया और वह फिर से बेहोश हो गया। जब उसे सफ़री चारपाई पर लिटा दिया गया तो वह बहुत देर तक आंखें मूंदे हुए और हिले-डुले बिना लेटा रहा। इसके बाद उसने आंखें खोलीं और धीरे से फुसफुसाया – "चाय कहां है?" ज़िन्दगी की ऐसी मामूली-सी चीज़ को याद रख पाने की उसकी क्षमता से डाक्टर हैरान रह गया। उसने उसकी नब्ज़ देखी और वह इस बात से चकित और दुखी भी हुआ कि उसकी नब्ज़ पहले से बेहतर थी। डाक्टर को दुख इसलिये हुआ कि अपने अनुभव से उसे इस बात का पूरा यक़ीन था कि प्रिंस अन्द्रेई किसी हालत में भी ज़िन्दा नहीं रह सकता और अगर वह अभी नहीं मरेगा तो कुछ अरसे बाद कहीं ज़्यादा दुख-दर्द सहकर चल बसेगा। प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसकी रेजिमेंट का मेजर, लाल नाकवाला तिमोख़िन भी था जो मास्को में उसके साथ आ मिला था और जिसकी टांग बोरोदिनो की उसी लड़ाई में घायल हो गयी थी। एक डाक्टर, प्रिंस अन्द्रेई का सेवक, कोचवान और दो अर्दली भी इनके साथ थे।

प्रिंस अन्द्रेई को चाय दी गयी। उसने बड़ी बेसब्री से चाय पी और बुख़ार से जलती आंखों से अपने सामने दरवाज़े की ओर ऐसे देखता रहा मानो कुछ समझने और याद करने की कोशिश कर रहा हो।

मितीश्ची में नताशा और अन्द्रेई बोल्कोन्स्की।

"बस, और नहीं पीना चाहता। तिमोख़िन यहां है?" उसने पूछा। तिमोख़िन बेंच पर रेंगकर उसके क़रीब हो गया।

"हुज़ूर, मैं यहीं हूं।"

"घाव कैसा है?"

"हुज़ूर, मेरा घाव? वह तो ठीक ही है। लेकिन आप कैसे हैं?" प्रिंस अन्द्रेई फिर से ऐसे सोचने लगा मानो कुछ याद कर रहा हो।

"क्या किताब हासिल करना मुमकिन है?"

"कौन-सी किताब?"

"इंजील! मेरे पास नहीं है।"

डाक्टर ने वादा किया कि वह इसे हासिल कर देगा और प्रिंस से पूछने लगा कि उसकी तबीयत कैसी है। प्रिंस अन्द्रेई ने मन मारकर, किन्तु बड़ी समझदारी से डाक्टर के सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। इसके बाद उसने कहा कि उसके नीचे तकिया रख दिया जाये, क्योंकि उसे बड़ी तकलीफ़ और दर्द महसूस हो रहा है। डाक्टर और सेवक ने उसके बदन को ढंकनेवाला फ़ौजी कोट ऊपर उठाया। घाव से निकलनेवाली सड़े मांस की दुर्गन्ध के कारण नाक-भौंह सिकोड़ते हुए ये दोनों इस भयानक जगह को देखने लगे। डाक्टर को किसी वजह से बहुत परेशानी हुई, उसने पट्टी को कुछ ठीक-ठाक किया, घायल को दूसरे ढंग से लिटाया, जिससे वह पुनः कराह उठा, दर्द के कारण फिर से मूर्च्छित हो गया और सरसाम की हालत में बड़बड़ाने लगा। वह लगातार यही कहता जा रहा था कि वह किताब जल्दी से लाकर उसके नीचे रख दी जाये।

"आपके लिये यह कौन-सी मुश्किल बात है?" वह कह रहा था। "वह मेरे पास नहीं है, कृपया ले आइये और क्षण भर को मेरे नीचे रख दीजिये," वह गिड़गिड़ा रहा था।

डाक्टर हाथ धोने के लिये ड्योढ़ी में गया।

"ओह, तुम लोगों के पास आत्मा नाम की कोई चीज़ नहीं," डाक्टर ने अपने हाथों पर पानी डाल रहे सेवक से कहा। "बस, एक मिनट को ही मेरा ध्यान चूक गया। आपने तो उसे ऐसे लिटाया कि ज़ख़्म पर ही सारा बोझ पड़ गया। ओह, यह तो ऐसा भयानक दर्द है कि मुझे हैरानी होती है कि वह इसे सहन कैसे करता है।"

"क़सम भगवान की, मुझे तो ऐसे लगा कि हमने घाव के नीचे

कुछ रख दिया है," सेवक ने जवाब दिया।

प्रिंस अन्द्रेई को पहली बार यह चेतना हुई कि वह कहां है, उसे क्या हुआ है और उसे याद आया कि वह घायल है और कैसे उस वक़्त, जब बग्घी मितीश्ची में खड़ी थी, उसने घर में ले चलने का अनुरोध किया था। दर्द के कारण उसके विचार फिर गड्डमड्ड हो गये और दूसरी बार घर में उसकी चेतना उस समय लौटी, जब वह चाय पी रहा था। तब उसने फिर से वह सब याद किया जो उसके साथ घटा था और चिकित्सा-केन्द्र का वह क्षण तो उसे बहुत ही स्पष्ट रूप से याद आया, जब उस व्यक्ति को यातना सहते देखकर, जिससे वह घृणा करता था, उसके दिमाग़ में ये नये और सुख की आशा बंधवानेवाले विचार आये थे। यही विचार, जो बेशक अस्पष्ट और धुंधले थे, फिर से उसकी आत्मा पर छा गये। उसे याद आया कि अब उसका एक नया सुख-स्रोत था और यह सुख किसी प्रकार इंजील के साथ जुड़ा हुआ था। इसीलिये वह इंजील लाने का अनुरोध कर रहा था। किन्तु भद्दे तथा नये ढंग से लिटाने के कारण पुनः उसकी चेतना जाती रही और रात की गहरी ख़ामोशी में ही उसे फिर से होश आया। उसके आस-पास सभी सो रहे थे। ड्योढ़ी में से झींगुर की झीं-झीं सुनायी दे रही थी, सड़क पर कोई चिल्ला और गा रहा था, मेज़, देव-प्रतिमाओं और दीवारों पर तिलचटे रेंग रहे थे, एक मोटी-सी मक्खी उसके तकिये पर तथा उसके क़रीब रखी हुई चर्बी की बत्ती के गिर्द, जिसकी जल चुकी शिखा ने एक बड़े कुकुरमुत्ते की शक्ल ले ली थी, भनभना रही थी।

प्रिंस अन्द्रेई का मन सामान्य स्थिति में नहीं था। एक स्वस्थ व्यक्ति आम तौर पर एक ही वक़्त में बहुत-सी चीज़ों के बारे में सोचता है, अनुभव और याद करता है, किन्तु उसमें इस बात की शक्ति तथा दृढ़ता होती है कि वह किसी एक विचार या घटना-शृंखला को चुनकर उसपर अपना ध्यान केन्द्रित कर दे। स्वस्थ व्यक्ति गहनतम चिन्तन के क्षण में भी कमरे में आनेवाले व्यक्ति को शिष्टाचार के दो शब्द कहने के लिये अपनी विचार-शृंखला तोड़ सकता है और फिर से उसी विचार-सूत्र को पकड़ लेता है। इस दृष्टि से प्रिंस अन्द्रेई का मन सा-मान्य स्थिति में नहीं था। उसके मन की सभी शक्तियां किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक सक्रिय और अधिक स्पष्ट रूप से काम कर रही थीं, मगर वे उसके वश में नहीं थीं। एक ही समय में सर्वथा

भिन्न भावनायें और भिन्न विचार उसे वशीभूत किये हुए थे। कभी-कभी उसका मस्तिष्क उसकी स्वस्थ मानसिक स्थिति की तुलना में कहीं अधिक ज़ोर, स्पष्टता और गहनता से काम करने लगता, किन्तु इसी प्रक्रिया के मध्य में वह अचानक कोई दूसरी विचार-तरंग में बह जाता और उसके लिये पहले विचार की ओर लौटना सम्भव न होता।

"हां, एक नयी ख़ुशी मेरे सामने आयी है जो मानव का अभिन्न अंग है," वह अध-अंधेरे, शान्त घर में लेटा हुआ और बुख़ार से जलती आंखों को फाड़-फाड़कर तथा टकटकी बांधकर अपने सामने की ओर देखते हुए सोच रहा था। "वह ख़ुशी जो भौतिक शक्तियों की सीमा, मानव पर पड़नेवाले बाहरी भौतिक प्रभावों की सीमा से बाहर है, केवल आत्मा, केवल प्यार की ख़ुशी है! हर व्यक्ति इसे समझ तो सकता है, किन्तु इसकी कल्पना और इसका निर्देश करना केवल भगवान के लिये ही सम्भव है। किन्तु भगवान ने इसका निर्देश कैसे किया?" और उसकी यह विचार-शृंखला अचानक टूट गयी और प्रिंस अंद्रेई को (उसे मालूम नहीं था कि सरसाम में या वास्तव में) धीमी, फुसफुसाती, लगातार दोहरायी जाती लयबद्ध आवाज़ में यह सुनायी दिया – "पिती-पिती-पिती" और उसके बाद "इ-ती-ती" तथा फिर से "इ-पिती-पिती-पिती" और पुनः "इ-ती-ती"। इस फुसफुसाते संगीत की ध्वनि के साथ-साथ प्रिंस अन्द्रेई ने यह भी अनुभव किया कि उसके चेहरे के ऊपर, चेहरे के ठीक ऊपर बारीक सुइयों या पतली-पतली छिपटियों की एक अजीब-सी हवाई इमारत ऊपर उठ रही है। उसने महसूस किया (बेशक उसके लिये ऐसा करना मुश्किल था) कि उसे बहुत यत्न से अपना सन्तुलन बनाये रखना चाहिये, ताकि यह ऊपर उठती हुई इमारत गिर न जाये। किन्तु वह गिर ही गयी और फुस-फुसाते हुए लयबद्ध संगीत की ध्वनियों के साथ फिर से ऊपर उठने लगी। "उठ रही है! उठ रही है! फैल रही है, बढ़ती जा रही है," प्रिंस अन्द्रेई ने अपने आपसे कहा। फुसफुसाते संगीत को सुनने और सूइयों की इस ऊंची होती और फैलती इमारत को अनुभव करने के साथ-साथ प्रिंस अन्द्रेई का चर्बी की बत्ती के लाल घेरे की तरफ़ भी जब-तब ध्यान चला जाता, वह तिलचटों की सरसराहट तथा उसके तकिये तथा चेहरे से टकरानेवाली मक्खी की भनभनाहट भी सुनता था। मक्खी जब उसके चेहरे को छूती, तो उसे बड़ी जलन अनुभव होती,

किन्तु साथ ही इस बात का आश्चर्य भी होता कि यद्यपि मक्खी उसके चेहरे की उसी जगह पर आकर टकराती थी जहां से हवाई इमारत ऊपर उठ रही थी, तथापि वह उसे गिराती नहीं थी। किन्तु इसके अतिरिक्त एक और भी महत्त्वपूर्ण चीज़ थी। दरवाज़े के पास यह कोई सफ़ेद चीज़ थी, स्फ़िन्कस* की मूर्त्ति थी और यह भी उसपर बोझ डाल रही थी।

"किन्तु शायद यह मेज़ पर मेरी क़मीज़ है," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा, "और ये मेरी टांगें हैं और यह दरवाज़ा है। मगर यह लगातार बढ़ती तथा फैलती क्यों जा रही है और 'पिती-पिती-पिती' तथा 'ती-ती' और 'पिती-पिती-पिती...' बस काफ़ी है, कृपया इसे ख़त्म कर दो," प्रिंस अन्द्रेई ने परेशान होते हुए किसी से कहा। अचानक उसकी भावनायें और विचार असाधारण रूप से स्पष्ट हो गये, अपनी पूरी शक्ति से सामने आने लगे।

"हां, प्यार (वह फिर पूरी स्पष्टता से सोचने लगा), किन्तु वह प्यार नहीं जो किसी चीज़ के लिये, कुछ पाने के लिये या किसी उद्देश्य से किया जाता है, बल्कि वह प्यार जो मैंने पहली बार तब अनुभव किया, जब मैंने मरते वक़्त अपने शत्रु को देखा और फिर भी उसे प्यार करने लगा। (मैंने वह प्रेम-भावना अनुभव की जो आत्मा का सार है और जिसके लिये किसी प्रेम-पात्र की आवश्यकता नहीं होती। परमानन्द की इस भावना को मैं इस वक़्त भी अनुभव कर रहा हू। अपने भाई-बन्धुओं और शत्रुओं को प्यार करना। सभी कुछ को प्यार करना – इसका मतलब है कि सभी रूपों में भगवान को प्यार करना। प्रिय व्यक्ति से मानवीय प्रेम किया जा सकता है, किन्तु केवल शत्रु से ही ईश्वरीय प्रेम करना सम्भव है। इसीलिये तो मुझे उस समय ऐसी प्रसन्नता की अनुभूति हुई, जब मैंने यह अनुभव किया कि मैं उस व्यक्ति को प्यार करता हूं।) उसका क्या हुआ? वह ज़िन्दा है या नहीं... मानवीय प्रेम तो प्रेम से घृणा में बदल सकता है, किन्तु ईश्वरीय प्रेम में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। कोई भी चीज़, यहां तक कि मृत्यु भी उसे नष्ट नहीं कर सकती। वह आत्मा का सार है।

---

* मिस्री पौराणिक कथाओं के अनुसार नारी के सिर और शेर के धड़वाला प्राणी। – अनु०

फिर भी कितने लोगों से मैंने अपने जीवन में नफ़रत की। किन्तु सभी लोगों में से मैंने 'उसके' समान तो न किसी को प्यार किया और न नफ़रत ही की।" और उसने बहुत ही सजीव रूप में नताशा की कल्पना की, पहले की तरह उस सुन्दरी की नहीं जिससे उसका मन खिल उठता था, बल्कि पहली बार उसकी आत्मा की कल्पना की। और वह उसकी भावना, उसकी व्यथा-वेदना, उसकी लज्जा, उसके पश्चाताप को समझ गया। अब पहली बार उसने उससे इन्कार करने की अपनी क्रूरता, उससे नाता तोड़ने की अपनी संगदिली को समझा और अनुभव किया। "काश, मैं उसे एक और बार देख सकता। सिर्फ़ एक बार उन आंखों में झांक सकता, यह कह सकता..."

और फिर "पिती-पिती-पिती", "ती-ती", "पिती-पिती"–धम, मक्खी आ गिरी... और अचानक उसका ध्यान यथार्थ तथा सन्निपात की उस दूसरी दुनिया में चला गया जिसमें कुछ ख़ास चीज़ हो रही थी। इस दुनिया में नष्ट हुए बिना इमारत उसी प्रकार ऊपर उठती जा रही थी, उसी तरह कुछ फैलता जा रहा था, उसी ढंग से लाल घेरा बनाती हुई बत्ती जल रही थी, दरवाज़े के क़रीब स्फ़िन्कस जैसी लगने-वाली वही क़मीज़ पड़ी थी। किन्तु इस सब के अलावा कोई चीज़ चर-मराई, ताज़ा हवा का झोंका आया और एक नयी, सफ़ेद, सीधी खड़ी हुई स्फ़िन्कस दरवाज़े के सामने दिखाई दी। इस स्फ़िन्कस का पीला-सा चेहरा और नताशा की वही चमकती हुई आंखें थीं जिनके बारे में वह अभी सोच रहा था।

"ओह, कैसी मुसीबत है यह लगातार जारी रहनेवाला सरसाम!" इस चेहरे को अपनी कल्पना से दूर भगाने की कोशिश करते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा। किन्तु यह चेहरा उसके सामने एक वास्तविकता बना हुआ था और उसके क़रीब आता जा रहा था। प्रिंस अन्द्रेई ने सुलझे हुए विचारों की पहलेवाली दुनिया में लौटना चाहा, मगर ऐसा नहीं कर पाया। सन्निपात उसे अपनी ओर खींचता जा रहा था। धीमी, फुसफुसाती आवाज़ की लयबद्ध फुसफुसाहट जारी थी, कोई चीज़ उसे दबा रही थी, फैल रही थी और एक अजीब-सा चेहरा उसके सामने खड़ा था। प्रिंस अन्द्रेई ने अपने होश-हवास बनाये रखने के लिये पूरा ज़ोर लगाया, हिला-डुला, अचानक उसके कानों में भनभनाहट-सी हुई, उसकी आंखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया और पानी में

डूबनेवाले व्यक्ति की तरह वह अपनी चेतना खो बैठा। जब उसे होश आया तो नताशा, वही जीती-जागती नताशा जिसे वह उस नये, निर्मल और ईश्वरीय प्यार से, जिससे अब वह परिचित हो गया था, इस दुनिया में सबसे अधिक प्यार करना चाहता था, उसके सामने घुटनों के बल खड़ी थी। वह समझ गया कि वह वास्तविक, जीती-जागती नताशा थी और उसे इससे कोई हैरानी नहीं, बल्कि हल्की-सी खुशी हुई। घुटनों के बल बुत बनी नताशा (वह हिलने-डुलने में असमर्थ थी) डरी-सहमी आंखों से उसकी ओर देखती हुई अपनी सिस-कियों पर क़ाबू पाने का प्रयास कर रही थी। उसका चेहरा पीला और बुत जैसा था, चेहरे के निचले भाग में ही कुछ कम्पन-सा हो रहा था।

प्रिंस अन्द्रेई ने राहत की सांस ली, वह मुस्कराया और उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

"आप?" उसने कहा। "कैसा सौभाग्य है यह मेरा!"

नताशा घुटनों के बल ही फुर्ती, किन्तु सतर्कता से उसकी तरफ़ बढ़ी और सावधानी से उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने अपना चेहरा उसपर झुका दिया और होंठों को उसके साथ ज़रा-ज़रा छुआते हुए उसे चूमने लगी।

"क्षमा कर दीजिये!" उसने सिर ऊपर उठाकर प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखते हुए फुसफुसाकर कहा। "मुझे क्षमा कर दी-जिये!"

"मैं आपको प्यार करता हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया।

"क्षमा कर दीजिये ..."

"क्या क्षमा कर दूं?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"मैंने जो कुछ कि... या था, उसके लिये क्षमा कर दीजिये," मुश्किल से सुनायी देनेवाली, टूटती-सी फुसफुसाहट में नताशा ने कहा और उसके हाथ को होंठों से तनिक छुआते हुए जल्दी-जल्दी चूमने लगी।

"मैं तुम्हें पहले से ज़्यादा, कहीं अधिक प्यार करता हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा के चेहरे को हाथ से ऐसे ऊपर उठाते हुए कहा कि उसकी आंखों में झांक सके।

खुशी के आंसुओं से भीगी नताशा की सहमी-सहमी आंखें, सहानुभूति

और हर्ष-मिश्रित प्यार से उसकी ओर देख रही थीं। नताशा का सूजे होंठोंवाला दुबला-पतला और पीला चेहरा असुन्दर ही नहीं, भयानक था। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई इस चेहरे को नहीं देख रहा था, वह तो चमकती आंखों को ही देख रहा था जो बहुत सुन्दर थीं। इन्हें अपने पीछे कुछ आवाज़ें सुनायी दीं।

प्रिंस अन्द्रेई के सेवक प्योत्र ने, जो अब पूरी तरह से जाग चुका था, डाक्टर को जगा दिया। टांग में दर्द के कारण बिल्कुल ही न सो पानेवाला तिमोख़िन बहुत देर से यह सब देख रहा था और बहुत यत्न-पूर्वक अपने नंगे शरीर को चादर से ढककर बेंच पर सिकुड़-सिमट रहा था।

"यह सब क्या हो रहा है?" डाक्टर ने फ़र्श पर बिछे अपने बिस्तर से उठते हुए पूछा। "देवी जी, यहां से जाने की कृपा करें।"

इसी समय नौकरानी ने, जिसे बेटी को बिस्तर से ग़ायब पाकर काउंटेस ने यहां भेजा था, दरवाज़े पर दस्तक दी।

किसी निद्राचारी की भांति, जिसे स्वप्न के बीच में ही जगा दिया गया हो, नताशा बाहर निकली और अपने कमरे में लौटकर सिसकते हुए बिस्तर पर गिर पड़ी।

इस दिन से रोस्तोव-परिवार की आगे की सारी यात्रा के दौरान, सभी विश्राम-स्थलों और रैन-बसेरों के समय नताशा घायल बोल्कोन्स्की के क़रीब ही बनी रही और डाक्टर को यह मानना पड़ा कि उसने ऐसी जवान लड़की से न तो ऐसी निष्ठा-दृढ़ता और न घायल की सेवा करने की ऐसी कला की ही आशा की थी।

यह विचार दिमाग़ में आने पर काउंटेस चाहे कितनी ही परेशान क्यों न हो जाती थीं कि प्रिंस अन्द्रेई की उनकी बेटी के हाथों में रास्ते में ही मृत्यु हो सकती है (डाक्टर के कथनानुसार ऐसा बिल्कुल सम्भव था), वह नताशा को प्रिंस अन्द्रेई से दूर रखने की हिम्मत नहीं कर सकीं। घायल प्रिंस अन्द्रेई और नताशा के बीच अब फिर से मधुर सम्बन्ध स्थापित हो जाने के फलस्वरूप बेशक सभी के दिमाग़ में यह ख़्याल भी आता था कि यदि प्रिंस अन्द्रेई स्वस्थ हो गया तो वे पुनः सगाई-सूत्रों में बंध सकते हैं। किन्तु नताशा और प्रिंस अन्द्रेई की तो चर्चा ही क्या की जाये, कोई भी इस बात को मुंह पर नहीं लाता

था। न केवल बोल्कोन्स्की, बल्कि सारे रूस के सिर पर मंडरानेवाले ज़िन्दगी और मौत के सवाल ने बाक़ी सभी चीज़ों को महत्त्वहीन बना दिया था।

३३

३ सितम्बर को प्येर की देर से आंख खुली। उसके सिर में दर्द था, जिन कपड़ों को पहने हुए ही वह सो गया था, वे उसके बदन पर बोझ-से बने हुए थे और उसे इस चीज़ की कुछ अस्पष्ट-सी अनुभूति हो रही थी कि पिछले दिन उसने कोई शर्मनाक-सी हरकत की है। कप्तान रामबाल के साथ पिछली शाम को हुई बातचीत के कारण ही उसे शर्म महसूस हो रही थी।

घड़ी ग्यारह बजा रही थी, मगर बाहर ख़ासा अन्धेरा-सा लग रहा था। प्येर उठा, उसने आंखें मलीं और नक़्क़ाशीदार हत्थेवाली पिस्तौल देखकर, जिसे गेरासिम ने फिर से लिखने की मेज़ पर रख दिया था, प्येर को याद आ गया कि वह कहां है और आज उसे क्या करना है।

"कहीं मुझे देर तो नहीं हो गयी?" उसने सोचा। नहीं, सम्भवतः **वह** दिन के बारह बजने के पहले मास्को में प्रवेश नहीं करेगा। प्येर ने इस बात पर सोचने के लिये समय नष्ट नहीं किया कि उसे क्या करना है, बल्कि जल्दी से अपनी कार्रवाई करनी चाही।

कपड़े ठीक-ठाक करके प्येर ने पिस्तौल हाथ में ली और जाने को तैयार हो गया। किन्तु इसी समय उसके दिमाग़ में पहली बार यह ख़्याल आया कि पिस्तौल हाथ में लेकर तो वह सड़क पर नहीं जा सकता। इतनी बड़ी पिस्तौल को चौड़े किसानी कोट के नीचे छिपाना भी सम्भव नहीं था। उसे न तो पेटी के साथ लटकाया जा सकता था और न बग़ल में दबाकर ऐसे ले जाना ही मुमकिन था कि दूसरों का उसकी तरफ़ ध्यान न जाये। इसके अलावा पिस्तौल ख़ाली थी और प्येर उसमें गोली नहीं भर पाया था। "ख़ैर, कोई बात नहीं, खंजर से ही काम चल जायेगा," प्येर ने अपने आपसे कहा, यद्यपि अपने इरादे को पूरा करने के सम्बन्ध में विचार करते हुए प्येर अनेक बार इस नतीजे पर पहुंचा था कि १८०९ में जिस विद्यार्थी ने नेपोलियन की हत्या

करनी चाही थी, उसकी सबसे बड़ी ग़लती यही थी कि उसने खंजर से काम लिया था। किन्तु प्येर का मुख्य उद्देश्य मानो अपने इरादे की पूर्ति नहीं, बल्कि ख़ुद को यह दिखाना था कि वह उस इरादे को छोड़ नहीं रहा है और उसे पूरा करने के लिये भरसक यत्न कर रहा है, उसने सूख़ारेवा मीनार के क़रीब पिस्तौल के साथ ही ख़रीदा गया दांतेदार मोथर खंजर, जो हरी म्यान में बन्द था, जल्दी से उठाकर अपनी वास्कट के नीचे छिपा लिया।

किसानी कोट पर कमरबन्द बांधकर तथा टोपी को आगे की ओर झुकाकर प्येर किसी तरह की आहट न करने और कप्तान की नज़र से बचने की कोशिश करते हुए दालान लांघकर सड़क पर चला गया।

जिस आग को प्येर ने पिछली शाम को कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया था, रात के दौरान वह बहुत बढ़ गयी थी। मास्को विभिन्न दिशाओं से जल रहा था। कारेत्नी र्‌याद सड़क, मास्को नदी के पार के क्षेत्रों, गोस्तीनी द्वोर, पोवर्स्कोया सड़क की इमारतों, मास्को नदी के तट पर बजरों और दोरोगोमीलोव्स्की पुल के क़रीब लकड़ी की मंडियों – सभी में आग लगी हुई थी।

गली-कूचों से होते हुए प्येर पोवर्स्कोया सड़क पर और वहां से अर्बात सड़क पर सेंट निकोलाई के गिरजे की तरफ़ गया। अपनी कल्पना में बहुत पहले से ही उसने यहीं अपने इरादे को पूरा करने की जगह तय कर ली थी। अधिकतर घरों के फाटक और शटर बन्द थे। गलियां-सड़कें सुनसान थीं। वातावरण में धुएं और जलती चीज़ों की गंध बसी हुई थी। कभी-कभी चिन्तित और सहमे चेहरोंवाले रूसियों और शिविर के रंग-ढंगवाले तथा सड़क के बीचोंबीच चल रहे फ़्रांसीसियों से उसकी मुलाक़ात हो जाती। दोनों ही हैरानी से प्येर की तरफ़ देखते। प्येर के लम्बे क़द और मुटापे, उसके चेहरे पर और पूरी आकृति में व्याप्त उदासी और व्यथा के अजीब संकेन्द्रित भाव के अलावा वह रूसियों का इसलिये भी ध्यान आकर्षित करता कि वे समझ न पाते कि यह व्यक्ति किस सामाजिक श्रेणी का हो सकता है। फ़्रांसीसी इसलिये उसे ख़ास तौर पर ग़ौर से देखते रहते थे कि अन्य रूसियों से भिन्न, जो फ़्रांसीसियों को सहमी-सहमी तथा जिज्ञासा की दृष्टि से देखते थे, प्येर उनकी तरफ़ कोई ध्यान ही नहीं देता था। एक घर के फाटक के क़रीब तीन फ़्रांसीसियों ने, जो रूसियों को अपनी

बात नहीं समझ पा रहे थे, प्येर को रोककर यह पूछा कि वह फ़्रांसीसी जानता है या नहीं?

प्येर ने इन्कार करते हुए सिर हिलाया और आगे चल दिया। दूसरे कूचे में एक हरे बक्स के क़रीब खड़ा एक सन्तरी उसपर चिल्लाया, किन्तु सन्तरी के गुस्से से धमकाती आवाज़ में दूसरी बार चिल्लाने और बन्दूक़ हाथ में लेने की आवाज़ से ही प्येर यह समझ पाया कि उसे सड़क के दूसरी ओर चले जाना चाहिये। वह अपने इर्द-गिर्द न तो कुछ सुन और न देख ही रहा था। वह तो अपने इरादे को किसी भयानक और परायी चीज़ के रूप में और पिछली शाम के अनुभव के आधार पर इस बात से डरते हुए कि कहीं कोई गड़बड़ न कर बैठे, उसे सहेजकर अपने लक्ष्य की ओर जल्दी-जल्दी बढ़ता जा रहा था। किन्तु उसके भाग्य में अपने इस मूड को वहां तक बनाये रखना नहीं बदा था, जिधर वह बढ़ता जा रहा था। इसके अलावा, अगर उसके रास्ते में कोई बाधा न भी आती तो भी वह अपना इरादा पूरा न कर पाता, क्योंकि नेपोलियन दोरोगोमीलोव्स्की उपनगर से क्रेमलिन को जाते हुए कोई चार घण्टे पहले ही अर्बात सड़क से गुज़र चुका था और अब बहुत ही बुरे मूड में क्रेमलिन-प्रासाद में ज़ार के कमरे में बैठा हुआ आग बुझाने, लूट-मार को रोकने और नगरवासियों को शान्त करने के लिये फ़ौरन उठाये जानेवाले क़दमों के बारे में सविस्तार और ठोस आदेश दे रहा था। किन्तु प्येर तो यह नहीं जानता था और अपने सम्मुख प्रस्तुत कार्यभार की पूर्ति से सम्बन्धित विचारों में ही पूरी तरह से खोया हुआ उसी तरह यातना सह रहा था जैसे वे लोग यातना सहते हैं जो बड़ी हठधर्मी से ऐसे काम का बीड़ा उठा लेते हैं जो कठिनाई के कारण नहीं, बल्कि उनके स्वभाव के अनुरूप न होने की वजह से उनके लिये असम्भव होता है। वह इस भय के कारण संतप्त हो रहा था कि निर्णायक क्षण में उसकी हिम्मत जवाब दे जायेगी और इस तरह वह ख़ुद अपनी ही नज़र में गिर जायेगा।

वह अपने इर्द-गिर्द बेशक न तो कुछ देख और न सुन रहा था, फिर भी गली-कूचों के मामले में किसी तरह की भूल न करते हुए पोवर्स्काया सड़क की तरफ़ ले जानेवाले रास्ते पर ठीक ढंग से बढ़ता जा रहा था।

प्येर पोवर्स्काया सड़क के जितना अधिक निकट पहुंचता जाता

था, धुआं उतना ही अधिक होता जा रहा था, यहां तक कि आग के कारण उसे कुछ गर्मी भी महसूस होने लगी थी। मकानों की छतों के पीछे से कभी-कभी आग की लपटें भी दिखाई देती थीं। सड़कों पर अधिक और ज़्यादा परेशान लोग थे। किन्तु प्येर बेशक यह अनुभव कर रहा था कि उसके इर्द-गिर्द कोई असाधारण बात हो रही है, फिर भी उसे इस चीज़ का एहसास नहीं था कि वह आग के क़रीब पहुंच रहा है। एक खुली जगह से जानेवाली पगडंडी को लांघते हुए, जो एक तरफ़ तो पोवर्स्कोया सड़क से मिलती थी और दूसरी तरफ़ प्रिंस ग्रुज़ीन्स्की के घर के बाग़ों के साथ, प्येर को अचानक अपने क़रीब ही एक औरत का हृदय-विदारक रोना-धोना सुनायी दिया। वह मानो नींद से जागते हुए रुका और उसने अपना सिर ऊपर उठाया।

पगडंडी से कुछ दूर सूखी और धूल भरी घास पर घरेलू चीज़ों – रोयों से भरी गद्दियों, समोवार, देव-प्रतिमाओं और सन्दूक़ों – का ढेर लगा हुआ था। काला गाउन और टोपी पहने अधेड़ उम्र की एक दुबली-पतली औरत, जिसके ऊपरवाले लम्बे दांत बाहर को निकले हुए थे, सन्दूक़ों के क़रीब ज़मीन पर बैठी थी। यह औरत दायें-बायें हिलती-डुलती और कुछ कहती हुई ज़ोर-ज़ोर से विलापकर रो रही थी। गन्दे, छोटे फ़्रॉक और लबादे पहने दस से बारह साल तक की दो बालिकायें अपने पीले, डरे-सहमे चेहरों पर आश्चर्य का सा भाव लिये अपनी मां की तरफ़ देख रही थीं। कोई सातेक साल का लड़का, जो ओवरकोट और बहुत बड़ी परायी टोपी पहने था, बूढ़ी आया की गोद में रो रहा था। गन्दे कपड़े पहने और नंगे पांव नौकरानी एक सन्दूक़ पर बैठी थी और अपने सन जैसे सफ़ेद-बालोंवाली चोटी को ठीक करते हुए जले बालों को सूंघती जाती थी। नाटा, कुछ झुकी पीठवाला पति, जो दफ़्तरी बाबू की वर्दी पहने था, जिसके गोल गलमुच्छे थे और सिर पर सीधी रखी टोपी के नीचे से मुलायम बाल बाहर निकले हुए थे, भावशून्य-सा चेहरा लिये एक-दूसरे के ऊपर टिकाये गये सन्दूक़ों को हिला-डुलाकर उनके नीचे दबे कुछ कपड़े निकाल रहा था।

प्येर को देखकर विलाप करनेवाली औरत लगभग उसके क़दमों पर ही गिर पड़ी।

"दीन-ईमानवाले भले लोगो, ईसाई धर्म को माननेवालो, मदद करो, मेरे भाइयो!.. मदद करो," वह सिसकियों के बीच कह रही

थी। "बेटी!.. मेरी बच्ची!.. मेरी छोटी बेटी घर में ही रह गयी! वह तो जल गयी होगी! हाय, हाय! किसलिये मैंने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था... हाय, हाय!"

"बस, रोना-धोना बन्द करो, मार्या निकोलायेव्ना," पति ने सम्भवतः एक पराये व्यक्ति के सामने अपनी सफ़ाई देने के लिये धीमी आवाज़ में कहा। "ज़रूर बहन ही उसे ले गयी होगी, वरना वह जा ही कहां सकती है!" उसने इतना और जोड़ दिया।

"राक्षस, चांडाल!" औरत विलाप बन्द करके अचानक चीख़ उठी। "तुम्हारे सीने में दिल नहीं है, तुम्हें अपनी बच्ची पर भी रहम नहीं आता है। दूसरा आदमी तो उसे आग में से निकाल लाता। लेकिन यह राक्षस न तो आदमी है, न बाप है। आप तो सज्जन कुलीन व्यक्ति हैं," औरत ने सिसकते और प्येर को सम्बोधित करते हुए जल्दी-जल्दी कहा। "हमारे पड़ोस में आग लग गयी, वह हमारी तरफ़ बढ़ने लगी। नौकरानी चिल्ला उठी – आग! हम जल्दी-जल्दी अपनी चीज़ें समेटने लगे। हम जो कुछ पहने थे, उन्हीं कपड़ों में बाहर आ गये... बस, यही कुछ ला पाये हैं... देव-प्रतिमायें और मेरे दहेज का बिस्तर, बाक़ी सब कुछ वहीं रह गया। बच्चों की तरफ़ ध्यान देने लगे। कात्या नहीं मिली। हाय, हाय! हे भगवान!.." और वह फिर से विलाप करने लगी। "मेरी प्यारी बच्ची, जल गयी होगी! जल गयी होगी!"

"लेकिन वह कहां, कहां रह गयी?" प्येर ने पूछा। प्येर के चेहरे के सहानुभूतिपूर्ण भाव से औरत समझ गयी कि यह आदमी मदद कर सकता है।

"अच्छे हुज़ूर! मेहरबान मालिक!" प्येर के पांवों से लिपटते हुए वह चिल्ला उठी। "मेरे उपकारी, मेरे मां के दिल को चैन दें... अनीस्का, अरी कमीनी, इन्हें वहां ले जा," वह गुस्से से मुंह खोलकर नौकरानी पर चिल्लाई जिससे उसके दांत और भी ज़्यादा दिखाई दिये।

"हां, मुझे वहां ले चलो... मैं... मैं... मैं यह करने को तैयार हूं," प्येर ने हांफती आवाज़ में जल्दी-जल्दी कहा।

गन्दे कपड़े पहने नौकरानी सन्दूक़ के पीछे से सामने आई, उसने अपनी चोटी ठीक की, आह भरी और नंगे पांवों को पटकती हुई पगडंडी पर आगे-आगे चल दी। प्येर तो मानो गहरी बेहोशी के बाद अचानक होश में आया था। उसने सिर ऊपर उठाया, उसकी आंखें

जीवन की ज्योति से चमक उठीं। वह तेज़ क़दमों से नौकरानी के पीछे-पीछे चल दिया, उससे आगे निकल गया और पोवर्स्कीया सड़क पर पहुंच गया। सारी सड़क धुएं के काले बादल में लिपटी हुई थी। इस बादल में कहीं-कहीं पर आग की लपटें दिखाई दे रही थीं। आग के सामने लोगों की भारी भीड़ जमा थी। सड़क के बीचोंबीच एक फ़्रांसीसी जनरल खड़ा था और अपने इर्द-गिर्द जमा लोगों से कुछ कह रहा था। नौकरानी के साथ प्येर ने उस जगह पर जाना चाहा जहां जनरल खड़ा था। किन्तु फ़्रांसीसी सैनिकों ने उसे रोक लिया।

"इधर जाना मना है," किसी ने चिल्लाकर कहा।

"यहां से चलिये साहब!" नौकरानी ने पुकारकर कहा। "हम निकूलिन के घर के अहाते से होते हुए गली पार करके वहां चले जायेंगे।"

प्येर वापस मुड़ा और नौकरानी के साथ रह पाने के लिये कभी-कभी उछलकर आगे बढ़ता हुआ उसके पीछे-पीछे जाने लगा। नौकरानी भागती हुई सड़क पार कर गयी, बायीं ओर के कूचे में मुड़ी और तीन मकानों को पीछे छोड़कर उसने दायीं ओर का फाटक लांघा।

"बस, यहीं है," नौकरानी ने कहा। वह भागते हुए अहाते में गयी, वहां उसने तख़्तों की बाड़ में छोटा-सा दरवाज़ा खोला और वहीं रुककर प्येर को लकड़ी का वह छोटा-सा उपभवन दिखाया जो रोशनी फैलाता हुआ ख़ूब ज़ोर से जल रहा था। उसकी एक दीवार गिर चुकी थी, दूसरी जल रही थी और खिड़कियों के सूराख़ों तथा छत के नीचे से तेज़ लपटें बाहर निकल रही थीं।

छोटे-से दरवाज़े में दाख़िल होने पर प्येर ने गर्म हवा का झोंका महसूस किया और वह हठात रुक गया।

"कौन-सा, कौन-सा है आप लोगों का घर?" प्येर ने पूछा।

"हाय, हाय!" नौकरानी उपभवन की ओर संकेत करते हुए रोने लगी। "यही, यही है हमारा घर। हमारी प्यारी, हमारी लाड़ली, हमारी नन्ही कात्या, तुम तो जल गयीं, हाय, हाय!" आग को देखते और अपनी भावनाओं को भी व्यक्त करने की आवश्यकता अनुभव करते हुए नौकरानी अनीस्का विलाप करने लगी।

प्येर उपभवन की तरफ़ लपका, किन्तु वहां आग के कारण इतनी अधिक तपिश थी कि वह अनचाहे ही उपभवन के गिर्द चक्कर लगाने को मजबूर हो गया और इस तरह एक बड़े घर के क़रीब पहुंच गया

जो छत के नीचे सिर्फ़ एक ही तरफ़ से जल रहा था। वहां फ़्रांसीसियों की भारी भीड़ जमा थी। प्येर शुरू में तो यह नहीं समझ पाया कि ये फ़्रांसीसी, जो घर में से कोई चीज़ घसीटकर बाहर ला रहे थे, यहां क्या कर रहे हैं। किन्तु अपने सामने ही एक फ़्रांसीसी को एक किसान से लोमड़ी की खाल का कोट छीनने के लिये उसे तलवार के मोथरे सिरे से मारते देखकर उसने कुछ-कुछ भांप लिया कि यहां लूट-मार हो रही है। किन्तु उसके पास इस चीज़ की तरफ़ ध्यान देने का वक़्त नहीं था।

दीवारों तथा छतों के गिरने की आवाज़, आग की लपटों-ज्वालाओं का सीत्कार और सनसनाहट, लोगों की उत्तेजनापूर्ण चीख़-पुकार, इधर-उधर डोलता धुआं, जो कभी तो बेहद घना और काला होकर, कभी चमकती चिंगारियों का उजला बादल बनकर ऊपर उठता था, कहीं-कहीं दीवारों पर चढ़ रही लाल और सुफनों जैसी सुनहरी लपटें, आग, धुएं और दौड़-धूप – इन सभी चीज़ों ने प्येर को वैसे ही उत्तेजित कर दिया जैसे कि आग का दृश्य सामने आने पर सामान्यतः होता है। प्येर के मन पर यह उत्तेजनापूर्ण प्रभाव इस कारण और भी अधिक पड़ा कि आग को देखकर उसने अपने को उन विचारों से मुक्त अनुभव किया जो उसके मन पर बोझ बने हुए थे। उसने अपने को जवान, ख़ुश, चुस्त और दृढ़संकल्प महसूस किया। वह घर के गिर्द घूमकर उपभवन के सामने गया और उसके उस भाग की तरफ़ जाना ही चाहता था जो अभी तक जला नहीं था, जब उसे अपने सिर के ऊपर कुछ लोगों का चीख़ना-चिल्लाना सुनायी दिया और इसके फ़ौरन बाद ही कोई बहुत भारी चीज़ ज़ोरदार धमाके और टनकती आवाज़ के साथ उसके नज़दीक आ गिरी।

प्येर ने घूमकर देखा। घर की खिड़कियों में उसे फ़्रांसीसी दिखाई दिये जिन्होंने धातु की चीज़ों से भरी हुई अलमारी की एक दराज़ अभी नीचे गिराई थी। नीचे खड़े हुए दूसरे फ़्रांसीसी सैनिक दराज़ के क़रीब आ गये।

"यह यहां क्या कर रहा है?" एक फ़्रांसीसी ने प्येर को लक्षित करते हुए चिल्लाकर पूछा।

"उस घर में एक बच्चा है। आपने बच्चे को तो नहीं देखा?" प्येर ने जानना चाहा।

"यह क्या बकबक कर रहा है? दफ़ा हो जाओ यहां से," कई आवाज़ें सुनायी दीं और सम्भवतः इस बात से डरते हुए कि प्येर उनसे कहीं कांसे और चांदी की वे चीज़ें न छीनना चाहे, जो दराज़ में थीं, एक सैनिक धमकी देते हुए प्येर की तरफ़ बढ़ा।

"बच्चा?" एक फ़्रांसीसी ऊपर से चिल्लाया। "हां, मैंने बाग़ में किसी के चिचियाने की आवाज़ सुनी थी। शायद वह इसी का बच्चा हो। हमें इन्सानियत दिखानी चाहिये। आख़िर तो हम सब इन्सान हैं..."

"कहां है वह? कहां है वह?" प्येर ने पूछा।

"वहां, वहां," फ़्रांसीसी ने मकान के पीछे, बाग़ की तरफ़ इशारा करते हुए खिड़की में से चिल्लाकर जवाब दिया। "ज़रा रुकिये, मैं अभी नीचे आता हूं।"

और वास्तव में ही एक मिनट बाद काली आंखोंवाला एक नौजवान फ़्रांसीसी सैनिक, जिसके गाल पर एक धब्बा था और जो सिर्फ़ एक क़मीज़ पहने था, निचली मंज़िल की खिड़की से कूदकर सामने आ गया और प्येर का कंधा थपथपाकर उसके साथ बाग़ की तरफ़ भाग चला।

"तुम लोग जल्दी करो," उसने पुकारकर अपने साथियों से कहा, "आग अब बहुत तेज़ होती जा रही है।"

घर के पीछे बालू से ढकी पगडंडी पर भागने के बाद फ़्रांसीसी ने प्येर के हाथ को झटका दिया और एक गोल घेरे की तरफ़ इशारा किया। वहां बेंच के नीचे गुलाबी फ़्रॉक पहने एक बच्ची लेटी हुई थी।

"वह रहा आपका बच्चा। अरे, वह तो लड़की है, यह और भी अच्छी बात है," फ़्रांसीसी ने कहा। "तो नमस्ते, मोटू। हमें इन्सानियत दिखानी चाहिये। हम सब इन्सान हैं," इतना कहकर गाल पर धब्बेवाला फ़्रांसीसी अपने साथियों के पास वापस भाग गया।

ख़ुशी से हांफता हुआ प्येर भागकर बच्ची के क़रीब गया और उसने उसे गोद में उठा लेना चाहा। किन्तु एक पराये व्यक्ति को देखकर गंडमाला से ग्रस्त, बीमार-सी यह बच्ची, जो अपनी मां से मिलती-जुलती और असुन्दर थी, चीख़ उठी और भागने लगी। लेकिन प्येर ने उसे पकड़कर गोद में उठा लिया। बच्ची बहुत ही गुस्से से बुरी तरह चीख़ने, अपने छोटे-छोटे हाथों से प्येर के हाथों को दूर हटाने और लारदार मुंह से उन्हें काटने लगी। प्येर पर भय और घिन का

वैसा ही भाव हावी हो गया, जैसाकि उसने किसी छोटे से जानवर को छूने पर अनुभव किया होता। लेकिन उसने इस चीज़ के लिये पूरा ज़ोर लगाया कि बच्ची नीचे न गिर जाये और उसे गोद में लिये हुए बड़े घर की तरफ़ वापस भाग चला। मगर अब उसी रास्ते से वापस जाना सम्भव नहीं था। नौकरानी अनीस्का भी वहां नहीं थी और प्येर दया और घृणा की भावना अनुभव करते हुए बहुत ही दर्दीले ढंग से रोती और भीगी हुई बच्ची को अधिकतम प्यार से अपने साथ चिपकाकर कोई दूसरा रास्ता ढूंढ़ने के लिये बाग़ में भाग गया।

३४

बच्ची को उठाये अहातों और गली-कूचों में से भागता हुआ प्येर जब पोवर्स्काया सड़क के नुक्कड़ पर ग्रुज़ीन्स्की बाग़ के क़रीब पहुंचा तो शुरू में तो वह उस जगह को पहचान ही नहीं सका जहां से बच्ची की तलाश में गया था – वहां अब बहुत से लोग और घरों से लायी गयी ढेरों चीज़ें जमा थीं। आग से अपना सामान बचाकर लानेवाले रूसी परिवारों के अलावा यहां तरह-तरह की वर्दियों में फ़्रांसीसी सैनिक भी थे। प्येर ने उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह दफ़्तरी बाबू के परिवार को ढूंढ़कर इस बच्ची को उसकी मां को लौटाने और फिर से किसी अन्य व्यक्ति को बचाने के लिये जाने की उतावली में था। प्येर को ऐसा लग रहा था कि उसे अभी बहुत कुछ और जल्दी से करना है। तपिश और दौड़ने के कारण तमतमाया हुआ प्येर जवानी, सजीवता तथा दृढ़संकल्प की उस भावना को और भी ज़्यादा तीव्रता से अनुभव कर रहा था जो उसके मन पर तब छा गयी थी, जब वह बच्ची को बचाने के लिये भागता हुआ गया था। बच्ची अब शान्त हो गयी थी और अपने छोटे-छोटे हाथों से प्येर का कोट पकड़े हुए उसके हाथ पर बैठी थी तथा एक नन्हे-से जंगली जानवर की तरह अपने इर्द-गिर्द देख रही थी। प्येर कभी-कभी उसपर नज़र डालकर ज़रा मुस्करा देता। उसे लगता कि इस छोटे-से डरे-सहमे और रुग्ण चेहरे में उसे मन को छूनेवाला और कुछ मासूम-सा दिखाई दे रहा है।

पहलेवाली जगह पर अब न तो दफ़्तरी बाबू था और न उसकी बीवी ही। प्येर अपने सामने आ जानेवाले चेहरों को ग़ौर से देखता हुआ लोगों के बीच से जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ा रहा था। एक जार्जियाई या अर्मीनी परिवार की ओर उसका बरबस ध्यान चला गया। इस परिवार में अस्तर लगा भेड़ की खाल का कोट और घुटनों तक के नये बूट पहने पूर्वी चेहरे-मोहरेवाला एक सुन्दर बूढ़ा, इसी तरह की एक बुढ़िया और एक जवान औरत थी। कमान की तरह तनी हुई घनी और लम्बी-लम्बी काली भौंहों, असाधारण रूप से कोमल, लाल-लाल, बहुत प्यारे तथा भावशून्य चेहरेवाली यह एकदम जवान औरत प्येर को पूर्वी सौन्दर्य की साकार प्रतिमा प्रतीत हुई। खुले मैदान में इधर-उधर बिखरे घरेलू सामान और भीड़ के बीच साटिन का बढ़िया गाउन पहने और सिर पर चटक बैंगनी रंग का रूमाल बांधे हुए वह गर्म पौधाघर के ऐसे कोमल पौधे की याद दिलाती थी जिसे बर्फ़ पर फेंक दिया गया हो। वह एक बुढ़िया के कुछ पीछे गठरियों पर बैठी थी और लम्बी-लम्बी बरौनियोंवाली अपनी बादाम जैसी आकृति की काली-काली आंखों से ज़मीन को एकटक देख रही थी। सम्भवतः उसे अपने सौन्दर्य की चेतना थी और उसके लिये डरती भी थी। इस चेहरे ने प्येर को मुग्ध कर दिया और बाड़ के क़रीब से जल्दी-जल्दी आगे जाते हुए उसने कई बार मुड़-मुड़कर उसकी तरफ़ देखा। बाड़ के सिरे तक जाकर और उन्हें न पाकर, जिन्हें वह ढूंढ़ रहा था, प्येर रुक गया और सभी ओर नज़र दौड़ाने लगा।

बच्ची को गोद में लिये प्येर की आकृति की ओर अब पहले की तुलना में कहीं अधिक ध्यान जा रहा था और कुछ रूसी मर्द-औरतें उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये।

"आपका कोई सगा-सम्बन्धी खो गया है क्या, भले आदमी? आप ख़ुद तो कुलीन हैं न? यह बच्ची किसकी है?" लोगों ने उससे पूछा।

प्येर ने उन्हें बताया कि बच्ची काला गाउन पहने हुए उस औरत की है जो अन्य बच्चों के साथ यहां बैठी थी। उसने जानना चाहा कि किसी को मालूम है कि वह कौन है और कहां चली गयी।

"अरे, ये तो अनफ़ेरोव-परिवारवाले होने चाहिये," एक बूढ़े डीकन

ने एक चेचकरू देहाती औरत को सम्बोधित करते हुए कहा। "हे प्रभु, दया करें, हे प्रभु, दया करें," उसने अपनी अभ्यस्त भारी आवाज़ में इतना और जोड़ दिया।

"अनफ़ेरोव-परिवारवाले कैसे हो सकते हैं?" देहाती औरत ने जवाब दिया। "वे तो सुबह ही चले गये थे। यह या तो मरीया निकोलायेव्ना है या इवानोव-परिवारवाले।"

"यह साहब तो औरत कह रहे हैं, लेकिन मरीया निकोलायेव्ना तो महिला है," एक भूदास नौकर ने मत प्रकट किया।

"आप लोग उसे ज़रूर जानते हैं, उसके लम्बे-लम्बे दांत हैं, वह दुबली-पतली है," प्येर ने कहा।

"यह तो मरीया निकोलायेव्ना ही है। जैसे ही ये भेड़िये यहां आ धमके," देहाती औरत ने फ़्रांसीसी सैनिकों की ओर इशारा करते हुए कहा, "वैसे ही वे लोग बाग़ में चले गये।"

"हे प्रभु, दया करें," डीकन ने फिर से ये शब्द दोहराये।

"आप वहां चले जाइये, वे वहां ही हैं। यह तो मरीया निकोलायेव्ना ही है। बहुत कलप रही थी, रो-धो रही थी," देहाती औरत ने फिर से कहा। "वही है। उधर चले जाइये आप।"

किन्तु प्येर अब इस औरत की बातें नहीं सुन रहा था। उससे थोड़ी दूरी पर जो कुछ हो रहा था, वह कुछ क्षणों से उसी को टकटकी बांधकर देख रहा था। वह अर्मीनी परिवार और उसके क़रीब जानेवाले दो फ़्रांसीसी सैनिकों पर नज़र गड़ाये था। इन दो सैनिकों में से एक नाटा, चुस्त-फुर्तीला था, नीला फ़ौजी ओवरकोट पहने था जिसपर उसने पेटी की जगह रस्सी बांध रखी थी। उसके सिर पर रात्रिकालीन टोपी थी और उसके पांव नंगे थे। दूसरा, जिसने ख़ास तौर पर प्येर का ध्यान आकर्षित किया, लम्बा-तड़ंगा, कुछ झुकी पीठ, सुनहरे बालों, ढीली-ढाली गति-विधि तथा चेहरे पर मूर्खों जैसे भाववाला दुबला-पतला आदमी था। वह गाढ़े का फ़ौजी कोट, नीला पतलून और फटे हुए बड़े-बड़े बूट पहने था। नीला फ़ौजी ओवरकोट पहने नंगे पांव और नाटे-से फ़्रांसीसी सैनिक ने अर्मीनी परिवार के क़रीब जाकर कुछ कहा और बुज़ुर्ग के बूटों को हाथ लगाया। बुज़ुर्ग अर्मीनी उसी वक़्त जल्दी-जल्दी अपने बूट उतारने लगा। दूसरा फ़्रांसीसी सैनिक, जो मोटा फ़ौजी कोट पहने था, बहुत ही सुन्दर अर्मीनी औरत के

सामने जा खड़ा हुआ था और हिले-डुले बिना तथा जेबों में हाथ डाले हुए उसे चुपचाप घूरता जा रहा था।

"इसे, बच्ची को ले लो, ले लो," बच्ची को देहाती औरत को सौंपते और जल्दी-जल्दी तथा आदेशात्मक ढंग से उसे सम्बोधित करते हुए प्येर ने कहा। "तुम इसे उन्हें दे देना, उन्हें दे देना!" वह बच्ची को, जो ज़ोर से रोने लगी थी, ज़मीन पर उतारते हुए देहाती औरत पर लगभग चिल्ला उठा और फिर से फ़्रांसीसी सैनिकों तथा अर्मीनी परिवार की तरफ़ देखने लगा। अर्मीनी बुज़ुर्ग अब नंगे पांव बैठा था। नाटे फ़्रांसीसी सैनिक ने उसके पांव से दूसरा बूट भी उतार लिया था और एक बूट को दूसरे के साथ थपथपा रहा था। बुज़ुर्ग सुबकते हुए कुछ कह रहा था, मगर प्येर ने यह तो केवल उड़ती नज़र से देखा। उसका सारा ध्यान गाढ़े का फ़ौजी कोट पहने फ़्रांसीसी पर केन्द्रित था जो इस वक़्त तक धीरे-धीरे डोलता-झूमता हुआ जवान औरत के क़रीब चला गया था और जिसने जेबों से हाथ निकालकर उसकी गर्दन पकड़ ली थी।

बला की ख़ूबसूरत अर्मीनी औरत अपनी लम्बी-लम्बी बरौनियों को झुकाये हुए पहले की तरह ही ऐसे बुत बनी बैठी थी मानो सैनिक उसके साथ जो कुछ कर रहा था, वह उसे देख और अनुभव ही न कर रही हो।

प्येर जब तक भागकर कुछ ही क़दमों की दूरी पर खड़े फ़्रांसीसी सैनिकों के क़रीब गया, गाढ़े का फ़ौजी कोट पहने लम्बू लुटेरा अर्मीनी सुन्दरी के गले से हार उतारने भी लगा था और वह जवान औरत अपनी गर्दन को हाथों से पकड़कर ज़ोर से चीख़ने लगी थी।

"ख़बरदार, जो इस औरत को हाथ लगाया!" प्येर फटी-सी आवाज़ में पागलों की तरह चीख़ उठा और उसने लम्बे, कुछ झुकी हुई पीठवाले फ़्रांसीसी सैनिक को कंधों से पकड़कर एक तरफ़ को धकेल दिया। सैनिक गिर पड़ा, उठा और भाग गया। किन्तु उसके साथी ने बूट फेंककर अपनी तलवार हाथ में ले ली और भयानक सूरत बनाये हुए प्येर की तरफ़ बढ़ा।

"ऐ तुम! अपनी अक़्ल ठिकाने रखो!" उसने चिल्लाकर कहा।

प्येर गुस्से की ऐसी उन्मादी मनःस्थिति में था जब उसे किसी चीज़ का होश-हवास नहीं रहता था और उसकी ताक़त दस गुना बढ़ जाती

थी। वह नंगे पांव फ़्रांसीसी पर टूट पड़ा और उसके म्यान से तलवार निकाल लेने के पहले ही उसने उसे नीचे गिरा दिया और उसपर घूंसे बरसाने लगा। आस-पास खड़े लोगों की भीड़ प्येर को शाबाशी देती हुई शोर मचाने लगी। इसी समय फ़्रांसीसी उलानों का एक दस्ता मोड़ के पीछे से सामने आया। दुलकी चाल से घोड़ों को दौड़ाते हुए उन्होंने प्येर और फ़्रांसीसी सैनिक के क़रीब आकर उन्हें घेर लिया। आगे क्या हुआ, प्येर को यह बिल्कुल याद नहीं रहा। उसे केवल यही स्मरण रहा कि उसने किसी की पिटाई की, फिर उसे पीटा गया और आख़िर उसने यह महसूस किया कि उसके हाथ बंधे हुए हैं, कि फ़्रांसीसी सैनिकों की भीड़ उसे घेरे हुए है और उसके कपड़ों की तलाशी ली जा रही है।

"लेफ़्टिनेंट, उसके पास खंजर है," यही वे पहले शब्द थे जो प्येर की समझ में आये।

"ओह, हथियार है!" अफ़सर ने कहा और फिर नंगे पांव सैनिक को सम्बोधित किया जिसे प्येर के साथ ही बन्दी बना लिया गया था।

"ठीक है, तुम फ़ौजी अदालत में अपना बयान देना," अफ़सर ने कहा। इसके बाद उसने प्येर से पूछा – "फ़्रांसीसी जानते हो?"

प्येर ख़ूनी आंखों से अपने इर्द-गिर्द देख रहा था और उसने कोई जवाब नहीं दिया। शायद उसका चेहरा बहुत ही भयानक लग रहा था, क्योंकि फ़्रांसीसी अफ़सर ने फुसफुसाकर कुछ कहा और चार अन्य उलान दस्ते से आगे आकर प्येर के दोनों ओर खड़े हो गये।

"फ़्रांसीसी जानते हो?" फ़्रांसीसी अफ़सर ने प्येर से दूर रहते हुए अपना प्रश्न दोहराया। "दुभाषिये को बुलाइये।" दस्ते के पीछे से ग़ैरफ़ौजी रूसी पोशाक पहने हुए एक नाटा-सा आदमी अपना घोड़ा आगे बढ़ा लाया। प्येर ने उसकी पोशाक और रूसी भाषा के लहजे से फ़ौरन उसे मास्को की एक दुकान के एक फ़्रांसीसी विक्रेता के रूप में पहचान लिया।

"यह तो आम लोगों जैसा नहीं लगता," प्येर को ग़ौर से देखते हुए दुभाषिये ने कहा।

"ओह-हो! यह तो मुझे आग लगानेवाला जैसा लगता है," अफ़सर ने अपनी राय ज़ाहिर की। "इससे पूछो कि यह कौन है?" उसने इतना और कह दिया।

"टुम कौन होटा?" रूसी भाषा का ग़लत उच्चारण करनेवाले फ़्रांसीसी दुभाषिये ने पूछा। "टुम को अफ़सर को जवाब डेना होटा," उसने यह भी जोड़ दिया।

"मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि मैं कौन हूं। मैं आपका क़ैदी हूं। मुझे ले जाइये," प्येर ने अचानक फ़्रांसीसी में जवाब दिया।

"आह! हा!" फ़्रांसीसी अफ़सर नाक-भौंह सिकोड़कर कह उठा। "तो चलो!"

उलानों के इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। बच्ची के साथ चेचकरू देहाती औरत ही प्येर के सबसे नज़दीक खड़ी थी। जब उलान घुड़सवारों का दस्ता यहां से चलने लगा तो यह औरत आगे बढ़ आयी।

"कहां ले जा रहे हैं ये तुम्हें, मेरे प्यारे?" वह बोली। "अगर यह उनकी न हुई तो इस बच्ची, इस बच्ची का मैं क्या करूंगी!" उसने कहा।

"यह औरत क्या चाहती है?" अफ़सर ने जानना चाहा।

प्येर तो मानो शराब के नशे में था। बच्ची को देखकर, जिसे उसने बचाया था, उसका उत्साह और भी बढ़ गया।

"यह औरत क्या चाहती है? उसके पास मेरी बेटी है जिसे मैंने आग से बचाया है," उसने जवाब दिया। "नमस्ते!" और वह स्वयं यह न जानते हुए कि कैसे यह उद्देश्यहीन झूठ उसके मुंह से निकल गया, बड़ी दृढ़ता और शान से क़दम बढ़ाता हुआ फ़्रांसीसियों के बीच चलने लगा।

फ़्रांसीसी उलानों का यह दस्ता उन दस्तों में से एक था जिन्हें द्‌युरोनेल के आदेशानुसार मास्को की विभिन्न गलियों-सड़कों पर लूट-मार को रोकने और ख़ास तौर पर आग लगानेवालों को पकड़ने के लिये भेजा गया था। फ़्रांसीसी उच्च सेनाधिकारियों के मतानुसार आग लगने का यही कारण था। कुछ सड़कों का चक्कर लगाकर इस दस्ते ने पांच अन्य सन्देहजनक रूसियों को गिरफ़्तार कर लिया जिनमें से एक दुकानदार, धार्मिक विद्यालय के दो विद्यार्थी, एक किसान और एक भूदास नौकर था। इनके अलावा लूट-मार करनेवाले कुछ लोगों को भी गिरफ़्तार किया गया। किन्तु सन्देह पैदा करनेवाले इन सभी लोगों में फ़्रांसीसियों को प्येर ही सबसे ज़्यादा सन्देहजनक प्रतीत होता

था। जब इन सभी को ज़ूबोव्स्की फाटक के क़रीब रात बिताने के लिये एक बड़े मकान में पहुंचाया गया, जहां गारद-चौकी बनायी गयी थी, तो प्येर को एक अलग कमरे में बन्द करके उसपर कड़ा पहरा बिठा दिया गया।

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

वह प्रश्न, जो ... दिन भर प्येर को परेशान करता रहा था, अब उसे सर्वथा स्पष्ट और हल हो चुका-सा प्रतीत हुआ। वह अब इस युद्ध और अगले दिन होनेवाली लड़ाई का पूरा सार और महत्त्व समझ गया था। इस पूरे दिन में उसने जो कुछ देखा था, उसे सैनिकों के चेहरों पर जिन अर्थपूर्ण तथा कठोर भावनाओं की झलक मिली थी, वे अब एक नयी ही रोशनी में उसके सामने आलोकित हो उठीं। उसने देशभक्ति की उस छिपी आग को अनुभव कर लिया था जो उन सभी लोगों के दिलों में थी जिनसे उसकी भेंट हुई थी और जो उसे यह स्पष्ट करती थी कि किस कारण ये सब लोग बड़े इतमीनान से, यहां तक कि ज़िन्दादिली से मरने को तैयार हो रहे थे।

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 307)

"लेट जाओ!" जल्दी से ज़मीन पर लेटता हुआ एडजुटेंट चिल्लाया। प्रिंस अन्द्रेई दुविधा की स्थिति में खड़ा रहा। विस्फोटक गोला जुती ज़मीन और चरागाह की सीमा पर, नागदौने की झाड़ी के क़रीब उसके तथा ज़मीन पर लेटे एडजुटेंट के बीच धुआं उगलता हुआ लट्टू की तरह घूम रहा था।

"क्या यह मौत है?" प्रिंस अन्द्रेई ने घूमते हुए काले गोले से निकलते तथा बल खाते धुएं, घास और नागदौने की झाड़ी को सर्वथा नई, ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हुए सोचा। "मैं मर नहीं सकता, मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीवन को प्यार करता हूं, इस घास, धरती और हवा को प्यार करता हूं..."

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 370)

रादुगा प्रकाशन · मास्को